प्रकाशक—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

मुद्रक—शंभुनाथ वाजपेयी, नागरी मुद्रण, काशी

प्रथम संस्करण, सं० २०३२, ११०० प्रतियाँ

मूल्य -००१७०-००

वक्तव्य

खोज का उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण पाठकों के सामने प्रस्तुत है। खोज का यह त्रैवार्षिक विवरण विक्रम संवत् के क्रम से तैयार किया गया है। इसमें सं० २००१ से २००३ तक (सन् १९४४ से १९४६ ई०) के खोजकार्य का उल्लेख किया गया है। यद्यपि उसका आकार बहुत बड़ा हो गया है, तथापि अनुसंधान की उपयोगिता की दृष्टि से संक्षेपीकरण नहीं किया गया है। यह दो खंडों में प्रकाशित किया जा रहा है। इस विवरण को भूतपूर्व निरीक्षक पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने तत्कालीन खोज अन्वेषकों, विशेषत. श्री दौलतराम जुयाल की सहायता से हिंदी में संपादित किया था। पूर्व विवरण के अनुसार ही इस विवरण में भी ग्रंथों और ग्रंथकारों का अनुक्रम हिंदी वर्णमाला के अनुसार हुआ है।

उत्तर प्रदेशीय राज्य शासन द्वारा दिए गए प्रथम १०,०००) रु० के अनुदान से चार त्रैवार्षिक विवरण (सन् १९२६—३७ ई०) छापे गए थे। उसके पश्चात् चार त्रैवार्षिक विवरणों (सन् १९३३—४९ ई०) के प्रकाशन के निमित्त राज्य शासन ने सन् १९५६ ई० में कृपापूर्वक ७,०००) का द्वितीय अनुदान दिया। यह आशा की गई थी कि इस द्वितीय अनुदान से कम से कम तीन त्रैवार्षिक विवरणों के प्रकाशन का कार्य तो संपन्न हो ही जायगा किंतु दो ही (सन् १९३८–४० तथा सन् १९४१–४३) त्रैवार्षिक विवरणों के प्रकाशन में प्राप्त अनुदान से अधिक व्यय हो गया। फलत आगे के दो तैयार त्रैवार्षिक विवरणों के प्रकाशन का कार्य रुक गया। सन् १९५६ से ही उक्त दोनों त्रैवार्षिक विवरण प्रकाशन की असुविधा के कारण पाठकों के समुख न आ सके।

अनुसंधित्सुओं की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए सभा ने उनके प्रकाशन के कई प्रयत्न किए किंतु द्रव्याभाव के कारण सफलता न मिली। अंत में केंद्रीय सरकार की महती कृपा से उसके शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय की २९ ६ १९७४ की एफ ९–२१७४–एच (डी० आई०) (एल) संख्यक राजाज्ञा द्वारा १२,६७६) का अनुदान प्राप्त हुआ। इससे प्रस्तुत विवरण के प्रकाशन का कार्य प्रारंभ हुआ और यह इस रूप में विद्वत्समाज के समक्ष उपस्थित है। इसका प्रथम खंड पहले ही प्रकाशित हो चुका है। अब इसका द्वितीय खंड भी प्रकाशित करके हमें अपार हर्ष है। केंद्रीय सरकार की इस सामयिक कृपा के निमित्त हम उसके अत्यंत आभारी हैं। और आशा करते हैं कि वह समय समय पर आर्थिक सहायता द्वारा हमारे उत्साह का वर्द्धन करती रहेगी।

विजयादशमी,
वि० २०३२ वि०

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

विषय सूची

द्वितीय खंड

प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज का

उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण

संवत् २००१–२००३ वि०

संख्या १४३क. ज्ञान बारामासा, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—७ × ३$\frac{१०}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—दौलतराम पांडेय, स्थान व पोस्ट–साहिजादपुर, जिला–इलाहाबाद।

आदि—श्री राम जी सहाइ ॥

चैत चिरंजीवं न कोई जीव जम को ग्रास है।
मूढ निहचै समुझि अंधै सपन सो जगजात है।
विषै तृष्णा लोभ वंसी मोह माया जाल है।
तात माता भ्रात वनिता झूठ सब परिवार है।
जठर मे जिन प्रान राषे सो विसारे बावरे।
देषि मृगत्रस्ना जो भूलो जथा धोषो भाउरे ॥ १ ॥

अंत—सिर जटा अरु मौनं धारन गहत जे बन वास रे।
वेद सास्त्र पुरान पढि नहि जात ओसन प्यास रे।
तरो चाहै जीव जोतै त्याग और उपाउ रे।
विस्वास करि कह दास तुलसी प्रेम सौगुन गाउ रे।

इति श्रीज्ञानवारामासी श्रीतुलसीदास कृत सपूर्न।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या १४३ख. बारहमासी, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० अमरनाथ मिश्र, असबरनपुर, पो०–ओडना, जिला–जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वारामासि लिष्यते ॥

चैत चंरजीववौ न कोइ जीव जमको ग्रास है ॥
मूढ निश्चै चेंतु अंधे स्वाप्न सो जगवास है ॥
विषै तृप्ना लोभ फासी मोहमाया जाल है ॥
तात माता भृत्त वनिता झुठ सव परिवार है ॥
जेठ रम जीन प्रान राखेउ सो विसारे वावरे ॥
देषि मृगतृप्ना जो भूले वृथा धोषे धाव रे ॥
राम भजिले पये नर तन वानो अछा दाव रे ॥
अैसा अवसर पाय भलैहि मूढ गोता षाव रे ॥
भाजन कर भागवन को मन आयो वैसाष रे ॥
घटत छिन छिन औधि तेरी जायगो मिलि षाष रे ॥

अंत—मास फागुन धन रतन देव कंचन दान रे ॥
दान वृथा जात नाहिंन पाप मोचन नाम रे ॥

भ्रमत तिरथन सकल ढिग करि जोग संजम सोय रे ।।
जग्य जप तप व्रत ध्याने हरि नाम सम नहिं होइ रे ।।
वेद साहस्त्र पुरान पढि पढि जातन वो सन त्रास रे ।।
तरा चाहै जीव जग को त्यागु आनी उपाव रे ।।
विश्वास करि कहा "दास तुलसी" प्रेम हरिगुन गाव रे ।।१२।।
श्री रामाय दीनदयाला ।। .... ।

विषय--भक्ति महिमा वर्णन ।

संख्या १४३ग. रामजन्म, रचयिता—तुलसीदास, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—३५, आकार—७$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३३, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सवत् १९२७, प्राप्तिस्थान—श्री राम-नरेश जी दूबे, ग्राम–गजहडा, डाकखाना–मुबारकपुर, जिला–आजमगढ ।

आदि— :o: :o: :o: :o:

ते .... । तेही पारस्रवन के दीन्ह सुताई ।।
छन छन उपटंन त्रीथै देही । कवहु ना मारे वावुआ होइ सरेही ।।
पांच मास के स्रवन भयेउ । तीर धनुही लै व...के गएऊ ।।
मारवहु कीती तीर आमाना । तव उन्ह पोसा अधा दुनो प्राना ।।
दसए वरख के स्रवन भएउ । पुछन के पांडीत घर गएऊ ।।
वीद्या पढत वरख दुइ चारी । सुंदरी त्रीअ वीअहीनी नारी ।।
वीधी कै लीपा मेटी ना जाइ । कन्या वीवाही स्रवन लै आइ ।।
वडे भाग एह कन्या होई । मात पिता के सेयजे होई ।।
सुनी के वचन त्रीअ वेजारी । स्वामी के वचन लागु परारी ।।

अंत— ।। चौपाई ।।

राम जन्म सुनौ मन लाई । दुष दलीदर सभ जाए पराई ।।
राम जन्म सुनो मैं कांना । ताकर पुत्र होय कल्याना ।।
रामाजन्म जो नीती जोगाई । सो प्रानी भौसागर तारी जाई ।।
राम नाम जो अम्रीत वानी । पढै सोइ जौ होए गुर ग्यानी ।।
राम लषन दुनो वडा जोधा । मारी तालुका करी वहु क्रोधा ।।

।। दोहा ।।

श्री राम जन्म कथा वीमल पढे सुनै मन लाए ।
सो मनवच क्रम हरष ते भौसागर तरी जाए ।।
दसरथ जन्म सुफल लीए राम पुत्र अस पाए ।
"तुलसीदास" सरनागती राम के रूप लोभाए ।।

इति श्री पोथी राम जन्म कांडा संमपूरंन भाइला संपती सुभा संमत १९२७ ।। मीती भदो सुदी चौथी मुकाम लहउर मीआ मीर छवनी दसषत झगरु राम कै राम राम सव साधान रे ।।

विषय—रामचन्द्र जी के जन्म और विवाह तक की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आरभ का पत्र नही है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १९२७ वि० है ।

ग्रथ की भाषा और काव्य से ऐसा विदित नही होता कि यह सुप्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास

प्रस्तुत रचना निम्नलिखित अन्य रचनाओ के साथ एक हस्तलेख मे है :—

१. सात पतल— :०.

२. वदी मोचन—तुलसीदास

३. भरत मिलाप—तुलसीदासकृत

संख्या १४३घ. भरथ कथा या भरत विलाप, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—७¾ × ६¼ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—प० देवनारायण पाडेय, स्थान व पोस्ट—सेवटा, जिला—आजमगढ ।

आदि— :०: :०: :०: :०:

लै पर उसीसा वर कीन्ह ।
राम के आगे भरथ धर ल्यावे । सो पकरत अवधपुर पावै ॥
भरयही देषी लोग सभ धावे ।
पूछही राम लषन कुसलाइ । रोइ रोइ पूछै राम कुसलाइ ॥
कह भरथ भेटेउ रघुराई ।
राम लषन तुम भेटाहु की नही । नीचैं वचन कही समुझाई ॥
तव भरथ अस कहे वुझाई । राम लषन कह भेटाउ माई ॥
मोसे प्रेम कीन्ह रघुनाथ । चरन कवल सुंदर जल जाता ॥
मैं रोइ परेउ राम के चरना । रघुपति प्रेम जाइ ना वरना ॥

अंत—रामचंदर वन कीन्ह पआना । राजा दसरथ वहुत पछताना ॥
राम चंदर छाडे असथाना । रोवैं नगर सकल प्रधाना ॥
रोवैं सीया सती कुमारी । राम लषन वीनु अवध उजारी ॥
रवी रवी कं कह पत्री लीपावैं । दूत हाथ नेइहर पठावैं ॥
जाहु दूत भरथ के पासा । अवधपुरी के भइल नीरासा ॥
वोय दूत वीद ताव भएउ । आतर वास जो जान सठी गएउ ॥
जहाय भरथ चतुरगुन रहेउ । जाइ तहा डंडवती कीएउ ॥

:०: :०: :०:

विषय—रामायण के आधार पर भरत की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अत्यत जीर्णशीर्ण अवस्था मे है । आदि अत के पत्रे नष्ट हो गए हैं । हस्तलेख के पत्र उलटे सिले हुए हैं । रचनाकाल, लिपिकाल भी अप्राप्त है । रचयिता का नाम तुलसीदास है, जो, जहाँ तहाँ, दोहे, चौपाई, छदो मे प्रयुक्त हुआ है । रचना को पढने से यह विश्वास नही होता कि ये प्रसिद्ध गो० तुलसीदास है । ये कोई दूसरे ही व्यक्ति ज्ञात होते हैं । रचना मे कोई कवित्त नही है ।

संख्या १४३ङ. भरत मिलाप, रचयिता—तुरासीदास, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—६¾ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—प० तामेश्वर मिश्र, ग्राम—डाँगीपार, पोस्ट—भैंसा बाजार, जिला—गोरखपुर ।

आदि—.......................................

कही नारद सुलोक सीधाई ॥
केकइ नीच भल वन आए । आधा रीषी के प्रासाए ॥
सुनी के द्रीस्टी न्रीप के आगु हाय............

केकई के मुष अप्रीत वसइ । तेही सुपा के कही अगुध करइ ॥
अप्रीत वीष भट भया जवही । पीर वथ मीक भए तवही ॥

॥ दोहा ॥

मगु महु केकइ मन दंछ आजु जो होइ ।
मन बीचारी कह राजा तुरीत देउ मे तोही ॥

॥ चौपाई ॥

सो मत नारद केकई के दीन्हा । केकई सो चित्त धरि लीन्हा ॥
वच वंध न्रीप मोही लेक । ऐ तन वचन मोही मागे दीन ॥
राज पाट सव वचन दीन्ह । केकइ मगी तुरीत तव लीन्ह ॥

॥ दोहा ॥

आरथ दरव न मगो राज पट क वासा ।
भरथा चतुर गुन राजा देहु राम लषन वनवासा ॥

अंत—कहो लोग प्रतीती जो जानी । एही वीधी भरथारह मनवानी ॥
भरथा कहे तीनु लोक ही गई । तेकर पापा तुरत छवी जाई ॥
भरथा कथा अह सतभाउ । माहा मुनीना के दरसना पाऊ ॥

॥ दोहा ॥

नीस दीन पुजा दयउ । राम लषन मन लाए ।
"तुलसीदास" मन भीतरा भगती करे मन लाए ॥

श्री पोथी भरथमिलाप सापुरन भइली आगे जो देषा सुलीषा मम दुष न देते पंडीत जन सो मीनती मोर टुटल अछर लेवे जोरि ॥

विषय—भरत मिलाप की कथा वर्णित है । इस रचना मे केकई की मति फेरने के लिये नारद का उपयोग हुआ है ।

विशेष ज्ञातव्य—आरभ का पत्र लुप्त है । रचनाकाल और लिपिकाल दोनो अज्ञात है ।

संख्या १४३च, भरतमिलाप, रचयिता—तुलसीदास, कागज—आधुनिक, पत्र—१७, आकार—७¾ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश जी द्विवेदी, ग्राम–गजहड़ा, पोस्ट–मुवारकपुर, जिला–आजमगढ ।

आदि—श्री राम जी सहाये श्री गनेस जी सहाए श्री गगा जी सहाए ॥ श्री सरोसती जी सहाय श्री पोथी भरत मीलाप लीप्यते ॥

आषर अरथ न जानो नही गुर कुल उपाए ।
राम चरित्र कछ भाषहु श्री गुर होइ सहाए ॥
सुमीरो सामी श्री गनेसा जीन्ह मोही वीद्या दीनऊ ।
श्री गोवींद के चरन मनाए । तव मैं राम भरथ गुन गाए ॥
सुमीरो गनपती मन चीत लाई । जीन पर साध अछर सुधी पाई ॥
सुमीरो व्रह्म वीसुन महेस । सीवा सकर सुमीरो मन लाई ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

भरथ के हृदय सोच भाई । रामचरन लौ लाई ॥
केकई के आ कलंक भाई ॥ कीरपा करो रघुराई ॥

राम भरत के वोधा सीलन्हि
:o: :o: :o:
तेही के जन्म आसरा हो।
सुफल होत संसारा ।।
राम नाम जिनके घट ताकर कुसल तारी जाई।
तुलसी दास भजु राम पद राम नाम लौ लीन (? लाई) ।।

इति श्री भरथ मीलाप संमपुरन भईल सही जो परती देष सो लीषा पडीत जन से मीनती मोरी भुला आकछर लेवँ जोरी समाप्त ।।

विषय—राम और भरत का मिलाप वर्णन किया गया है।

संख्या १५४. भ्रमरगीत, रचयिता—कवि तेज, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—$4\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० महेश प्रसाद मिश्र, ग्राम—लेदहावरा, पो०—अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि.. ।। १ ।।
सो कुविजा वस ह्वै गई देषि कै काली को नाथ्यौ जे डारिकै गोद है।
तोकों पठाए तैं आए इहा तुम ठाढे भयो हो महीना ज्यौं लोदें है।
(? कहे तेज) काहू को राज भए तुम भूले हो वावरे सो नहि भोदें है।
ऊधो जू सांचु उहै उपषान है काका की भैसी भतीजे को तो देहै ।। २ ।।
आपने चित्त मे जानत है सव कान्ह पठावत आवत तोहू।
ठानी उपाधि न वूझत आदि है व्याधि करी कुविजा अरु ओहू।
ऐसे वियोग मे जोग अजोग है लोग कहै औ कहौं फिरि मोहूं।
होती वियोगिनी जोगिनी है कहू ऊधो जू भूतन कें है पतोहू ।। ३ ।।
वृज को उजारि करि धारिका (? द्वारिका) वसाई जिन वार वार लेति तुम तिही को नाऊ है।
आपु करै भोग जोग हमको पठाई देखो और पै न पाई कछू कुबिजा को दाउ है।
तुम हो सदेसी तो सदेस कहि चले जाहु कहै "कवि तेज" थान झगवा को ठाऊँ है।
ऊधौ तुम सांचु उपषान यह सुनो आइ ढोल देत ढोलिआ पै मारत न गाँऊ है ।। ४ ।।
जानती है उनही को वषानती ओर न मानती है हम दूजै।
बात वनी कुविजा की भली विधि तातें संदेस लै आवत भूंजै।
"तेज" कहै अति तेज करै वह टेढी सों सूधी कहा लगु हूजै।
चाहिए भोग पठावति जोग है आँव की साधना आँवलि पूजै ।। ५ ।।
अंत—चाहत वै जोग हम भरी है वियोग विसरायो वह भोग जामे दधि दूध महियो।
आपु करै राज लागै तनिको न लाज इहा जप तप साज हमही सो कहै गहियो।
तुम हो सुजान देष जात जैसो ठान तैसो कहियो निदान ह्वाँ सकुचि मति रहियो।
छोड़ी व्रज वाम कीन्हो कुविजा को काम ऊधो ऐसो घनस्याम सो प्रनाम जाइ कहियो ।।३३।।
केलि करी हरि जू यहु भाति सो दान लियो हमसो दधि दूधो।
प्रीति की रीति विसारि कै "तेज" सदेस पठावत वेद विरूधो।
प्राण पिआरे को छोडि कै काहू कियो तप है हम पूछती सूधो।
जोग सिषावन आवत हो वृजवालन के घर घालन ऊधो ।।३४।।
:o: :o: :o: —अपूर्ण

विषय—गोपी उद्धव सवाद वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक मे प्रथम छंद और अंत मे ३४वें सख्या के पश्चात् के छंद नही हैं। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं।

संख्या १४५. राजनीति के दोहा, रचयिता—त्रिलोक सिंह, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—९ ११/१६ × ६ ५/१६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथा लिख्यते राजनीत के दोहा।

श्री गनपत विनऊ यहै और सरस्वुती माय।
दीजे "सिंह त्रिलोक" कह उत्तम ग्रथ वनाय॥
प्रभु "त्रिलोक" कहं दीजिये मन जन के हित काम।
माता सम हितकारनी नीत ग्रथ सुखधाम॥ २॥
हित उपदेसैं मित सो रुच सौं सुनैं नरेस।
होय जहा अनुकूल विधि सपत करे प्रवेस॥ ३॥
सुभ उपदेस करैं नहिं कोन काम वह मित्त।
कोन काम वह प्रभ कहा हित न सुनै दे चित्त॥ ४॥
वड़े ठोर पहुचैं कहा फल कर मन अनुसार।
वासरु कंठ महेस के करत समीर अहार॥ ५॥
उपवन रचन किन पुनि ज्यौं माली सव काल।
येसो नृप सो होय जहा राज करैं चिरकाल॥
वेद अंग न तग जप होम सो कर्म समाज।
मन वच आसिक वत जों वरनो प्रोहित राज॥

अंत—विवध जतन रक्षा करो धरम समेत सरीर।
अमत धर्म तिहि धर्म ते ज्यौं गिर झिरना नीर॥११५॥
धर्मकाज धन दीजिये कै भय होय विमुक्त।
क्रिपन राज को त्यागिये छिनकि न दीजे चित॥११६॥

विषय—राजनीति वर्णित है।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। पुष्पिका नही दी है। अंतिम दोहे की सख्या ११६ है। इसके पश्चात् कोई खडित दोहा नही है। अत अनुमान से पता चलता है कि इतने ही दोहे ग्रथ मे होगे। इसलिये इसे पूर्ण मान लिया गया है।

संख्या १४६. गीताभाषा, रचयिता—थेघनाथ, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—९ × ६ ३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १५५७, लिपिकाल—स० १७२७ (चतुरदास कृत भागवत एकादश स्कध के आधार पर), प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी-सभा (याज्ञिक सग्रह), वाराणसी।

आदि—श्रीगणेशाय नमः। अथ श्री भगवतगीता भाषा लिख्यते।

॥ चौपई ॥

सारद कहु बंदौ करि जोर। फुनि सिमरौं तेतीस करोर॥
रामदास गुरु ध्याऊ पाइ। जा प्रसाद यह कवितु सिराइ॥
मूढिनि कौं है विष (व) ल्लरी। गुनियनि को अंम्रति मंजरी॥
थेघनाथ अंम्रत विस्तरै। विनती गुनी लोग सो करै॥
आगि माहि डारियै स्वर्न्न। वुरे भले को लीजै मर्म॥
तैसैं संत लेह तुम जानि। मैं जु कथा यह कही वषानि॥
पंद्रसै सतावनि आनु। गढ़ु गोपाचल उत्तम ठानु॥

मानसाहि तिह दुर्ग निरिंदु । जनु अमराति सोहै इंद ॥
नीत पुंन सों गुन आगरौ । वसुधा राषन कों अवतरौ ॥
सबही राजनि माहि अति भलै । तौवर सत्य सलिज्या वलै ॥
ता घर "भान" महाभरु तिसै । हथनापुर महि भीषम जिसे ॥
पाप परहरं पुनहि गहै । निस दिन जपतु कृश्न कहु रहै ॥
सर्व जीव प्रति पालै दया । मानु निरंदु करै तिह मया ॥
ग्यानी पुरुषनि मैं परिधान । एकहि सदा जस्वसी भानु ॥
दयावत दाता गंभीरु । निर्मल जनु गंगा कौ नीरु ॥
जौ बृह्मा गरुवै गुन जागु । तौगुन तंत जोग मनु लागु ॥
जै रूप मंगद द्रिढ वनु लहै । जौ द्रिढु सरु जुधिस्थिर गहै ॥
स्वाम धर्म यो पारे भानु । जा सम भयौ न दूजौ आन ॥
सवही विद्या आहि बहुत । "कीरत सिंध" नृपति कै पूत ॥
षट दरसनि के जानै भेव । मानै गुरु अरु बृह्मनु देव ॥
समद समानि गहरुता हियै । इक बृत पुंन्न बहुत तिह कियै ॥
भले वुरे को जानै मर्म । भानु कुवरु जनु दूजौ धर्म ॥
इहि कलयुग मैं है सव कोई । दिन दिन लोभ चौगनो होई ॥
अनु धनु जमु गाडित तिन गयौ । पैवै क्यौं हूं साथन भयौ ॥
इतो विचारु भान सब कियौ । त्रिभुवन माहि बहुत जसु लियौ ॥
भान कुवरु गुन लागहि जिते । मोपै वर्नै जाहि न तिते ॥
जीभ अनेक जु प्रानी होई । याके जसहि वषानै सोई ।
कै आइर्वलु होइब घने । वरनै गुन सोभा नहि तनै ॥
कै सारद कौ दरमनु होई । प्रादि अति गुन बरनै सोई ॥
"थेघू" इनमैं एकै लहै । ऊची वुधि करि वहु गुन कहै ॥

:o: :o: :o:

कहै भान मो भावै राम । जातै ज्यौ पावै विस्राम ॥
इहि संसार न कोऊ रह्यौ । भान कुवरु "थेघू" सो कह्यौ ॥
माता पिता पुत्र संसारु । यहि सव दीसै माया जारु ॥
जाहि नाम ना कलजग रहै । जीवै सदा मुवौ को कहै ॥
कहा वहुत करि कीजै आनु । जो जानै गीता को ग्यानु ॥

:o: :o: :o:

इतनो वचनु कुवरु जव कह्यौ । घरीकु मनु धोषै परि रह्यौ ॥
सायर को वेरा करि तरै । कोऊ जिन उपहासहि करै ॥
जौ मेरें चित गुरु के पाय । अरु जौ हियै वसै जदुराइ ॥
तौ यह मोपै ह्वैहै तैसै । कह्यौ कृश्न अर्जुन को जैसै ॥
सुनहि जे प्रानी गीता ज्ञान । तिन समानि दूजो नहि आन ॥
संजय लीने अंध बुलाई । ताको पूछनि लागे राई ॥
धर्मक्षेत्र कुरु जंगल जहां । कैरौं पांडव मेले तहां ।
कैसै गूझ कहा तहां होई । मोसो वरनि सुनावो सोई ॥

अत—अर्जुनोवाच

तो प्रमाद अच्यत बर बीर । गयौ मोहु जु हुतो सरीर ॥
तेरौ वचनु हियै सव धरौ । भारथ करत न संका करौं ॥
संजै वचनु अंध सों कह्यौ । ....

:o: :o: :o:

विषय—गीता की भाषा टीका।

रचनाकाल

पंद्रसै सत्तावनि आनु। गढ़ गोपाचल उत्तम ठानु॥
मानसाहि तिहि दुर्ग्ग निरिंदु। जनु अमरावति सोहै इंद॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथात मे पुष्पिका नही दी है। अतिम अश से स्पष्ट होता है कि थोडा सा अश लिखने से छूट गया है। परतु यह अश वहुत ही थोडा है, अत ग्रथ पूर्ण ही माना गया है। रचनाकाल सवत् १५५७ है और लिपिकाल सवत् १७२७। लिपिकाल चतुरदास कृत एकादश स्कध (भागवत) के आधार पर है जो प्रस्तुत ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे था, परतु जिल्द टूट जाने के कारण ग्रथ स्वामी ने इन्हें दो अलग अलग जिल्दो मे बँधवा दिया। इस सवध मे ग्रथस्वामी श्री मयाशकर जी याज्ञिक ने ग्रथात मे निम्नलिखित टिप्पणी लिखी है :—

"थेघनाथ कृत गीता अनुवाद का लिपिकाल स० १७२७ वि० मानना चाहिए, कारण कि चतुरदास कृत एकादश स्कध (भागवत) की प्रति जो इसी जिल्द मे थी उसका लिपिकाल १७२७ वि० है। दोनो के लिपिकार एक ही व्यक्ति हैं। देखो प्रति न० २७८।५०। जिल्द टूट जाने से दोनो पुस्तकें अलग कर दी गई है।"

संख्या १४७. अष्टकाल की लीला, रचयिता—दक्षसखी, कागज—देशी, पत्र—१८. आकार—६$\frac{१}{१६}$ × ३$\frac{२}{१६}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० दौलतराम पाडेय, स्थान व पोस्ट—साहिजादपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री राधारमणो जयति॥ अथ अष्टकाल की लीला लिष्यते॥

॥ छप्पै ॥

जयति जयति राधारमन श्री चैतन्य कृपाला।
जयति सखीगन वृंद जयति श्री भट्टगोपाला।
जै वृंदावन चंद जयति जमुना पटरानी।
जयति जयति गुरुदेव मंत्र पद्धत के दानी।
जै जै वृज की रेनु जाहि शिवनारद जाचे।
जयति रास रस कुंज जहा राधावर नाचे॥ १॥

अंत—भई पूर्ण लीला अतिसुंदर संमत दससे आठ ठयौ हौं।
बर्ष तीस पटमास जु श्रामन कृष्ण द्वादसि यह ग्रंथ कह्यौ हौं।
"दक्षसखी" यह लीला गाई।
पढत सुनत अतही सुषदाई॥ ७॥

॥ दोहा ॥

जे गामे सीखे सुने मन क्रम वचन समेत।
श्री वृंदावन तिनको सदा वास निरंतर देत॥२५॥

इति श्री अष्टकाल की लीला समाप्ता॥

विषय—राधाकृष्ण की अष्ट प्रहर लीला का वर्णन।

रचनाकाल

भई पूर्ण लीला अति सुंदर संमत दस से आथ ठयौ हौं।
वर्ष तीस पट मास जु श्रामन कृष्ण द्वादसि यह ग्रथ कह्यौ हौं॥

संख्या १४८. सूरजमल की कृपाण, रचयिता—दत्त कवि, कागज—बाँसी, पत्र—६, आकार—६½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, (याज्ञिक संग्रह) काशी।

आदि—जहँ कासमीरी कावुली वलक्की औ बदख्सानी,
खुरासानी लोहानी ईरानी इलमान॥
जहँ सूर सूरवंस सोमवंस जातवेद वंस,
वीर वलवान रान मान को घउरान॥
जहँ दक्खिनी सु दल वल हाले छितिपाल माचे,
सिंधु दल दल खाँचे साँचे घमसान॥
तहँ हिम्मत निधान भूमि भार मघवान,
सिंह विक्रम सुजान वर वाही किरवान॥ २॥
जहँ वज्जत निसान सोर गज्जत दिसान,
सूर सज्जत सदान कूर तज्जत गुमान॥
जहँ छुट्टत कमान गोला गोली किरवान,
धूमधार असमान छिप्यो भानु को विमान॥
जहँ होत भाज भाज घोर दुंदुभी गराज,
तोप तरपैं तराज गज घंटा घहरान॥
जहाँ हिम्मत निधान................
............................॥ २॥

मध्य—
जहाँ ढाल की ढनंक तेग तेग की थनंक कोठि कुंड की छनंक झिलि मन झननान॥
जहाँ भभकैं भुसुंड कटि तटि कटि तुड फरकत भुजदंड भरकत विन प्रान॥
जहाँ चरबी के कुंड मचैं शोनित उमड पचैं जुगनी के झुंड नचैं प्रेत करि गान॥
जहाँ हिम्मत निधान घिरि फिरि फिर झिर झिर सोनित नित॥५८॥

अंत— ॥ कवित्त ॥
अरजी आनंद के कंद व्रजचंद सी सुजान नंद कीरति निसानि सी दिसानि फहराति है॥
कहैं कवि दत्त दल दीरघ दरेर दवि दुज्जन जमाति दहि दरनि दुराति है॥
विक्रम सो विक्रम तिविक्रम सौं पाइ वर करन सौं करन की करनी हिराति है।
विश्व इंद्र गाजी केते दीन्हे गज वाजी मोहि दीजे एक वाजी मेरी वाजी ठहराति है॥१४॥
इति संपूर्ण॥

विषय—इसमें भरतपुर नरेश सूरजमल (सुजान सिंह) की कृपाण का ओजपूर्ण भाषा में वर्णन है।

संख्या १४६क. कृष्ण नाम चंद्रिका, रचयिता—दयाराम भाई, स्थान—चाणोद तथा डभोई (गुजरात), कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—६।×५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, ह० वं० सं० ८४, पु० सं० ७।

आदि—श्री गुरु गोपीजन वल्लभाय नमः॥ अथ श्रीकृष्ण नाम चंद्रिका लिख्यते
॥ दोहा॥
बंदूँ श्री गुरु पद्म पद सद्म सकल कल्यान॥
जातें जात सबैं जरी चिंता के सतान॥ १॥

॥ छंद रोला ॥

श्रीमद्गिरिवर धरन चरन पंकज करु वंदन॥
मंगल मोद निधान पाप सव ताप निकंदन॥ १॥
अरु वंदूं श्रीकृष्ण नाम परमानंद-सागर॥
नाम श्याम तें अधिक कृपाकर ओज उजागर॥ २॥

मध्य--पृ० ६८

जीतें माया काल लाल गोपाल नाम तें।
जीवन मुक्त ह्वै जाय वढे रति घनश्याम तें॥११२॥
कृष्ण नाम रस पियें पियें नहि मान पयोधर।
जन्म मरन मिटि जाय पाय जो प्रथम हतों घर॥११३॥
एक वेर नारायन नाम कहत तनुधारी।
त्रिशत कल्प किलमिश तें छूटें सद्य सुखारी॥११४॥

अंत--

जो इह नाम प्रभाव भाव धरि हरि कों गावे।
मनवांछित फल लहें सीघ्र श्रीहरि पद पावे॥२३३॥
दयाराम श्रीमद् वल्लभ सरनागत ब्राह्मन॥
तिन यह वर्नन कियो दियो पठबे कों हरिजन॥२३४॥

॥ दोहा ॥

नाम महात्म घनश्याम को पठत सुनत सुनि पुन्य॥
प्रेम भक्ति श्रीकृष्ण की आसु लहें रति शून्य॥ १॥
दया या पर दया कर करि विहु इह वरदान।
प्रीति प्रतीती नाम निज सेवा राति गुनगान॥ २॥ ॥२३७॥

इति श्रीकृष्ण नाम चंद्रिका ग्रंथ कवि दयाराम विरचित समाप्त ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीः ॥

विषय--इसमे भगवान् के नाम का माहात्म्य वर्णित है।

सख्या १४६ख. दयाराम सतसई (टीका सहित), रचयिता--दयाराम भाई (टीकाकार--वैष्णव वल्लभ दास द्विज), स्थान--डभोई (गुजरात), पत्र--११६, आकार--६।×५।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--४८, परिमाण (अनुष्टुप्)--५५६८, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य-पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८७२, लिपिकाल--स० १८७५, प्राप्ति-स्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ५०, पु० स० ४।

आदि--श्री गुरु गोपिजन वल्लभाय नमः ॥ अथ दयाराम कृत शतसैया सटीक लिख्यते।

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु वल्लभदेव अरु श्रीविट्ठल श्रीकृष्ण।
पद पकज वंदन करों दुःख हर पूरन त्रष्ण॥

अर्थ टीका ॥ प्रथम कवि जन मंगलाचरण करेछे, दयाराम क्वी छे ते वल्लभी वैष्णव छे ते माटे प्रथम तीहांने प्रणाम करेछे, श्री गुरु हे श्री वल्लभाचार्य तदात्मज हे श्री विट्ठल हे श्री कृष्ण तमें चहारे एक स्वरूप छो माटे सर्वना चरण चमल ते साथें वंदन करुंछु ते के हेवा चरण कमल छे दुःखभावना हरनार नें सर्व तृष्णाने पुराण कर्ता छे एहवा इत्यर्थः।

मध्य पृ० १२२—अब संग वरनन सुसंग कुसग महिमा ।।दोहो।।
महिमा बडो सुसंग को मूरख लेहे ना कोय, होत मिलाप दकारकों काग सूं कागद होइ ।१।

टीका—सत्संगनी महिमा मोटे छे पण कोइ सूर मूरख जाणता नथी ते जुवो के दकार दानवाचक छे माटे सज्जन गण वो तीनो मिलाप थता मात्रामा कागजे कागदो ते कागद के कागल ज्हेवो उज्वल थै जाय तेरी त्यें सतसग जाणवो इति सुसंगार्थज्ञेयं ।

।। दोहो ।।

योहि अधम के संगतें वडे छोट पन थाय ।
परसत निष्ट नकार सद यव सु यवन ह्वै जाय ।। २ ।। ।।टीका।।

अंत—दया सतसिया ग्रंथ यह विरचित पर उपकार ।
सव सज्जम दूषन तजी ग्रहन कीजियो सार ।।१०।।

टीका—दयाराम कविनो रचेलो आ सतसैया ग्रथ पर का उपकारनें अरथें रच्यो छे माटे हे सकल सद पुरुषो दूषण सघ लू तजी नें माह्यथी सारमात्र ग्रहण करज्यो इत्यर्थ. ।।१०।।

दोहा—ययामती यह ग्रथ को कीनो अर्थ प्रकास ।।
वैष्णव वल्लभदास द्विज करुनावल अविनास ।।३।। अथ टीका कार वचन छे ।।

दया सतसी ग्रंथ समाप्तोय । सं० १८९५ ना वर्षे फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ७ सप्तम्यां सौम्य वासरे दयाराम कृत सतसाई ग्रथस्य समाप्तिजाता लखकपाठकयोः शुभ भवतु ।।

विषय—भक्ति और नीति विपयक दोहे हैं । गुजराती भाषा में इसकी टीका है, जिसकी लिपि नागरी है । यह सतसई हिन्दी साहित्य में अपना विशेप स्थान रखती है । अन्य सतसइयाँ जहाँ शृगार सवधी विपयो का उल्लेख करती है, वहाँ यह सतसई भक्ति, नीति, उपदेश आदि का वड़े सुदर ढग से प्रतिपादन करती है ।

संख्या १४६ग. श्री मद्भागवतानुक्रमणिका भाषा, रचयिता—दयाराम भाई, स्थान—डभोई (वड़ोदा, गुजरात), कागज—देशा, पत्र—१५, आकार—६। × ५।। इच, पक्ति (प्रति-पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुप्टुप्)—७३५, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ८४, पु० स० ७ ।

आदि—श्री गुरु गोपीजन वल्लभाय नमः ।। अथ श्री मद्भागवतानुक्रमणिका भाषा लिख्यते ।। कवि दयाराम कृत ।। दोहा ।।

श्रीगुरु श्रीवल्लभ प्रभू श्री विट्ठल सहहीत ।
युग पद पंकज रज करों अभिवादन अगनीत ।। १ ।।
कमल चरन कमलद वरन वदूं कमलाकात ।
मंगलमोद निधान सब कलुस कलेस कतात ।। २ ।।
राधावर वल्लभ सदा अष्टसखा कविभूप ।
नमन चरन तिनकें करूं मेरे जीवन रूप ।। ३ ।।
श्रुतीक स्मृति संदोह सब अपर रूप भगवत ।
द्वादशांग श्री भागवत प्रिय सत्तम सब संत ।। ४ ।।

मध्य—पृ० १५

।। दोहा ।।

अब नवम स्कध कि सुनो अनुक्रमनी सब कोय ।
ईशान लीला एहि हैं प्रकरन जामें दोय ।। १ ।।

॥ छंद रसावली ॥

सूर्य वंश प्रकरन मरयादा को धुर लहियें ।
चंद्र वंस पुष्टी प्रकरन सो दुसरो कहियें ॥ १ ॥
बार वार आध्याय दोहुं के जानी लीजें ;
प्रथम वारको भानुवस अव सुनो मनीजें ॥ २ ॥
नव पूरव वैवस्वत मनुदस पुत्र सुधन्या ।
इक्ष्वाकू आदिक अरु एक भई हें कन्या ॥ ३ ॥
नवम अवर कहे च्यार पुत्र भये नहि संताना ॥
तीन पुत्र को वंस भयो वर नां तव खाँना ॥ ३ ॥
नृग नाभाग अरु नरिष्यत तीनो के नामा ॥
अव आगें नृप सुनो कहत हें शुक शुभ धामां ॥ ५ ॥

अंत—श्री नर्मदा तट चडिपुरि श्री शेष शाइ प्रभू जहाँ ।
साठोदरे नागर सुज्ञानी विप्र कवि वसियत वहाँ ।
जन दयाराम जु नाम वैष्णव वल्लभी रचना रची ।
श्री गुरु श्री गिरिवर धरन न चईत सी रसना नची ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पुरन भई अनुक्रमनिका श्री भागवत पुरान ॥
दयाराम के हिय वसो ओर करे जो गान ॥ १ ॥
शक अठार अघन्यासि शुभ फागुन द्वितीया कृष्ण ।
ग्रंथ समापति ताहि दिन पुरन करी प्रभु तृष्ण ॥ २ ॥

इति श्री भागवते महापुराणे दयाराम कृत भाषा निवंधे द्वादस स्कंधानुक्रमनिका संपूर्ण समाप्तोयं । शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

विषय—श्रीमद्भागवत के वारह स्कधो की अध्यायानुसार अनुक्रमणिका लिखी गई है। यह श्रीभागवत पर वल्लभाचार्य कृत निवध के आधार पर है।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक मे अन्य पद कीर्तन भी हैं। मध्य भाग मे यह ग्रथ लिखा है।

संख्या १४६घ. श्रीकृष्ण अनन्य चद्रिका, रचयिता—दयाराम, स्थान—चाणोद तथा डभोई (गुजरात), पृष्ठ—२१ (पृ० १ से ६३ तथा ११७ से १२७ तक), आकार—६। × ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्याविभाग, काँकरोली, हि० व० ८४, पु० स० ७।

आदि—॥ श्रीगुरु गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ अनन्य चद्रिका ग्रंथ लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरु श्री गिरिधर्न की वंदुं चरन रजधाय ॥
जातें अभिमत फल मिलें पाप ताप भजि जाय ॥ १ ॥
प्रश्नोत्तर वध्यतिग्रही शिष्य गुरू सवाद ॥
वरनूं धर्म अनन्य कछु पतीव्रता रसस्वाद ॥ २ ॥

॥ शिष्य के प्रश्न ॥

श्री गुरुदेव कृपाल तुम विनती मेरी एह ।
प्रति उत्तर कुरु प्रश्न को छूटें मम संदेह ॥ ३ ॥

पंथ बहुत कल्यान के बरने वेद पुरान ।
बहुतक अप अपनें मतें मुनिहू कीने गान ॥ ४ ॥

मध्य—पृ० ८४ ॥ शिष्य प्रश्न ॥

हे स्वामी कल्यानकर कृष्णाश्रय इक आहि ।
सबें ओर दुस्साध्य हें कलि मे सफलित नाहि ॥५२॥
आपुन तो यों कहत हो ओर सरावत आन ।
निकें मोहि समुझाइये तिन मे लछन कान ॥५३॥

॥ श्री गुरु प्रतिउत्तर ॥

सुनिहे पुत्र प्रकास करि कहूँ बात जों आहि ।
श्री बल्लभ के बचन हें श्रा कृष्णाश्रम माहि ॥५४॥
कलि मे धर्माचरन सब लोकठगन को हेतु ।
उचित कछू आचर्न कछु उदर भरन करि लेतु ॥५५॥
जो मारग अपवर्ग के भाखे वेद पुरान ।
कर्मरु ज्ञान उपासेना योगध्यान अरु आन ॥५६॥
ते सब नष्ट भये खलू ताको कारन अेह ॥
कलि के द्विज उपदेसकर अति खल नहि सदेह ॥५७॥
शास्त्र अर्थ तें विरुद्धमत आपुन को इक ठानि ।
भये चलावत ताहि ते मोक्षहीन फल जानि ॥५८॥

अत—हें देस गुर्ज्जर नर्मदा तट चारु चडी ग्राम हें ।
ह्वां ज्ञाति नागर विप्र वैष्णव बत्हाभी दया राम हें ॥
बल श्री गुरु तिन ग्रंथ रचना करी सब सुखधाम हें ।
शुभधर्म पतिव्रत कहे अति प्रिये श्री घनस्याम हें ।
जु अनन्य टेको भगवदी तिनकों लगें प्रिय प्रानतें ।
जो बहिरमुख श्रीकृष्ण सों तिनकों अप्रिय अज्ञान तें ॥
तिन सों न मेरे काम कछु काम तो हरि हरि भक्त हें ।
सो तो प्रसन्न यह बात में मम मन्न जहाँ आसक्त हें ॥

इति श्रीकृष्ण अनन्य चंद्रिका कवि दयाराम कृत सपूरण समाप्तं ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री हरी ॥

विषय—वल्लभ सप्रदाय के सिद्धातानुसार भगवान् की अनन्य सेवा का वर्णन । इसी को गीता के सिद्धात मे 'अनन्ययोग' कहा है । अनन्यता (अन्याश्रय से बचने) के उपाय एव उसकी महिमा का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक मे अन्य ग्रथ भी लिखे है ।

संख्या १४६ड. वस्तुवृ द नाम दीपिका, रचयिता—दयाराम भाई, स्थान—डभोई (गुजरात), पत्र—२६ (पृ० २३२ से २६० तक), आकार—६। × ५।।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७४ वि०, लिपिकाल—स० १८६५, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वतीभडार, श्री विद्याविभाग, काँकरोली, हिं० व० स० ५०, पु० स० ४ ।

आदि—॥श्री गोपीजन बल्लभाय नमः । अथ श्री वस्तु वृंद नाम दीपिका ग्रंथ कवि दयारामकृत लिख्यते ॥दुहा॥

बदुं श्री गुरुपद कमल सकल सिद्धि दातार ।
श्री महाप्रभु गोस्वामी श्री सह श्री नदकुमार ॥ १ ॥

सब कलेस जातें हरे हरे सुधी हिय आय ।
पूरन होइ अभिलाष सब अस पद गुरु हरिराय ॥ २ ॥

मध्य---पृ० १६० चतुर्दश महामाया नाम ।
दुलैया दुर्गा भद्रकाली विजया अरु वैष्णवी कुमुदा कहीयें ।
और चडिका कृष्णा माधवी ह्वोर कन्याका लहियें ।
माया नारायनी इशानी पुनि शारदा नाम ।
सहित अंविका कृष्ण दियो वर माया कुं सुख धाम ॥

चतुर्दश मन्वन्तर नाम । छद रोला ।
स्वायंभुव स्वारोचिष उत्तम तामस रैवत ।
चाक्षुस रु श्राद्धदेव सुइवतत वैवस्वत ।
सार्वाणि अरु दक्ष सार्वाणि ब्रह्म सार्वाणि ।
धर्म सार्वाणि रुद्र सार्वाणि नाम ले गणी ।
देव सावर्णी इन्द्र सावर्णी मनु दशच्यार ।
जिनके रक्षत हेतु एक हरिको ओतारा ॥४५॥

अंत---संमत अष्टादश पुनि चोवोतर नभमास ।
कृष्ण जयंती अष्टमी चद्रवार शुभरास ।६।
ग्रथ समापति ताहि दिन भइ इच्छा भगवत ।
सबकों जय श्रीकृष्ण हे जो देया मे चंत ।१०।

इति श्री मत्कृष्णजन कवि दयाराम विरचिताया वरतु वृ द दीपिका नाम ग्रथ समाप्तः ॥ श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । सवत् १८९५ नां वर्षे मासोत्तम अधिक प्रथम ज्येष्ठ मासे शुद्ध पक्षे तिथौ चतुर्थ्यां गुरुवासरे अद्येह दभ वितिस्थ पौराणिक निरभयरामात्मजेन दाजी भाई सज्ञकेन लिखितं ।

विषय---इसमें १०८ स्तवक है और वस्तुओ के नामो का वर्णन है । ग्रथ कोष के ढग का है । स्तवको मे विषयवार प्रत्येक वस्तु के नाम का सग्रह किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य---इस पुस्तक की जिल्द मे दयाराम सतसई, नाम प्रभाव वत्तीसी, वुद्धिवल, खल की कुछ क्रियायें---नामक रचनाएँ है ।

सख्या १५० सुखसागर पुराण, रचयिता---दयालदास, कागज---देशी, पत्र---२०, आकार---६$\frac{6}{10}$ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---११, परिमाण (अनुष्टुप्)---१९२, अपूर्ण (खडित), रूप---प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि---...............अंसो तत्व अनूप ॥
निज अनभव करि जानीयो परमातम निजरूप ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

तो सरूप में नहीं समाधि ॥ नहि सासत्र बाद विवाद ॥
ज्ञान अज्ञान कहो नहो जाई ॥ वुधि विवेक तामैं न समाई ॥
ईस्वर जीव बाद तहां नाहीं ॥ अन्वै व्यतिरेक नहीं ता माही ॥
पंच कोश को लेस न तहा ॥ नही अविद्या विद्या जहाँ ॥
विघन षेद तहां नाही कहीये ॥ सुध सरूपी चेतन लहीये ॥
भाव अभाव भेद भ्रम नाहीं ॥ साधन सिध नहीं ता माही ॥

ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय नहीं तहां ॥ द्रष्टा दरसन दृश्य न जहां ॥
:०: :०: :०:
शिव भागवत तीसरे भाषा ॥ करत हुंकार वीर व्रक्ष साषा ॥
सुवपनै हुंकार जु दीना ॥ चक्रित ह्वै संकर सुनि चीन्हा ॥
इहां पंछी कैसे कर आयो ॥ पसु पंछी वन सवही उड़ायो ॥
:०: :०: :०:

॥ दोहा ॥

शंकर सौं कह्यो कीरनै कीनो कहा उपाय ॥
"लक्षी दास" विनती करै सतगुरु मोहिं बताय ॥

अंत—इति श्री सुषसागर पुराणे गुर सिष्य संवादे सप्तमो अध्याय ॥ ७ ॥ अथ शिष्य-वचन ॥ छप्पै ॥

कौन धर्म कीयो व्यास तास सौं यह फल पायो ॥
न्गीयो गर्भ सुष वास कृपा करि विष्न पठायो ॥
जोग जग्य तप दान कहो ईतनो कहा कीनो ॥
"जासो भनै दयाल" विष्न असो सुत दीनो ॥
सतगुर मोसो भाषिये ॥ वेद व्यास मुनि की कथा ॥
"लछिदास" विनती करै जथा होय बरनो तथा ॥

॥ अथ गुरुवचन चौपाई ॥

सुनै शिष तोहि सव समझाउं ॥ वेदव्यास की कथा सुनाउं ॥
वेदव्यास तप कीनो भारी ॥ कृपा करी तव कृष्ण मुरारी ॥
बोले हर मागो मुन व्यासा ॥ जो मागे सो देहुँ हुलासा ॥
य सुन व्यास विष्ण के वैना ॥ दरसन कियो षोल दोउ नैना ॥
असे ....
:०: :०: :०:

विषय—दयालदास और लछीदास (गुरु शिष्य) के सवाद के रूप में ज्ञानोपदेश वर्णन।

विशेप ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है। समस्त वीस पत्ते उपलब्ध हैं। रचयिता "दयाल-दाम" हैं।

संख्या ३५१क. शव्दलीला, रचयिता—दरिया साहव, कागज—देशी, पत्न—२, आकार—८ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री साधु निरजनदास कुटी भैरोपुर, पो० भीमापार वाजार, जिला—गाजीपुर।

आदि–; सतनाम शव्द लीला प्रसाद

साहव तुम गती अगम अपार दआ वहू कीन्हो जू ॥ १ ॥
प्रथम वंदि सत चरन सीस साहव के नाम आइ ऊह लीला अगम अपार भेद वीरला केहु पाआ ।
अगम पुख सत व्रग है हो सोइ मीले हम आएे ॥
हंसन्हि के सुख कारने होह दहीवो है पाएे ॥ २ ॥
झलकत पदुम वहुत उजीआर वदन छवी सुंदर रेखा ॥
अविगति जोति अेध प्रगाशीत ग्यान अगम गमि पेखा ।
विरला जन कोइ चीन्हि के हो सत चरन सीर नाएे ॥
रहे प्रेम लव लाएे के हो नाम सजीवन पाएे ॥ ३ ॥

बोए जींदा रूप अजर मनी निरमल जोती अमान ।
कहेव स्रवंग अकुफ समन्हिते सुनो स्रवन दे ग्यान ॥
:o: :o: :o:
करे वीवेक वीचारी के हो न्रीमल धरी सो ध्यान ॥
खुलीत कमल गगन झरी लागी झलकत सेत नीसान ॥

अंत—कहें दरीआ सुनु सत सव्द इऊह वानी ॥
कहो छयाइऊह मुल अगम सहिदानो ॥
:o: :o: :o:
धन धन साहव धन भगत जन धन है दाश तुम्हार ॥
कहें दरीआ दरशन को फल है दीस्टि माआ उजिआर ॥ ४ ॥ २ ॥

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश ।

संख्या १५१ख. साखी, रचयिता—दरिया साहव, कागज—देशी, पत्र—४७, आकार—८ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री साधु निरजनदास, कुटी–भैरीपुर, पो०–भीमापार वाजार, जिला–गाजीपुर ।

आदि—सत्यनाम

ग्रंथ साखी के भाखल दरिया साहेव मुक्ति के दाता हंस उवारन नाम निसान ।
वेवा हावे किमती हैं ॥ सिपती कहा नहिं जाऐ ॥
जरा मरन ते रहित है ॥ सो गुन कहा वुझाऐ ॥
शाहिजदा साहेव धन ॥ मति करो सभ दुर ॥
आशिक औ मासुक है ॥ मिलना हाल हजुर ॥
ताहि साहेव से दर्श है ॥ परशि चरन लौ लिन्ह ॥
घेरे धोखा कोई मुढजन ॥ सो जिन सदा मलिन ।
:o: :o: :o:
दरिया दिल दर्पन करो ॥ परसत अैन अनुप ॥
अैन अैना मे दिशे ॥ देखो विमल एक रूप ॥
:o: :o: :o:
दोइत कहे अदोइत कहत है करे गगन की आस
डोरी लगी नैंन मे पलक नहिं विश्वास
राम कृष्ण गुण अतित है ॥ अंत हुवा फिरि भंग
वुन्द परे चुला हुवा फुला माया अनंग
:o: :o: :o:
विज सें विज उतपती कीन्हा सो वीज सवके दीन
जीव जीव सभ जीव है व्रह्म इनते भीन
नागरी ते आगरी भली नागरी सागरी संग
वुन्द परा यह सिन्धु मे कवन परिखे रंग
:o: :o: :o:
दरिया दर्पन दर्स है प्रसत सदा सनिप
अग्र प्रानि धन वुन्द है कवहिन होत अनिप

अंत—ऐता गजन गंजो के तवम जननी जू प्रेम ॥
सदा शोहागिनि पीअपहं छुटीगा आतम नेम ७०६

भजन मइली सो जात है सजन जन की रीति
अघ पातख जरी जायगा करु सतगुरु से प्रीति ॥७०७॥
करम पहार इअ्रह ना टरे टारेगा कोइ संत ॥
ग्यान छेनी सो काटि अै इअ्रह सतगुरु का मंत ७०८
शाखी जमा ७०८ ॥ सपुरनं सन् १२८६ साल समत १९ शै २८ ॥......॥

:o: :o: :o:

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश। द्वैत अद्वैत की व्याख्या एव एकेश्वरवाद का समर्थन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है। समस्त सैंतालीस पन्ने है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल स० १९३८ वि० है। रचयिता "द्वारकधा निवासी" दरिया साहव है। प्रस्तुत ग्रथ "अमरसार" नामक ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे है। कदाचित् दरिया साहव के अठारह ग्रथो मे से ही यह भी एक ग्रंथ है। इसमे समस्त सात सौ अठारह साखियाँ है।

सख्या १५२. सुदामा चरित्र, रचयिता—दलजीत, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—९ × ५½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—..............................

अपर कहौ इतिहास वषानी ॥
दसमुषसुत करि तप भारी। पाइ अचल वर चलेउ सुरारी॥
लंकहि आइ हेतु सव वूझी। पिता पितामह गए सव जूझी॥
तव षल जात भयो सुर लोका। जीति सुरन्ह कीन्हेउ वस सोका॥
देव दनज कर मरे न मारैं। करि वहु जतन सकल सुर हारे॥
गिरि कंदरन जाइ वहु काला। सह्यौ देव वहु विपति विसाला॥
तव सुरपति विधि लोक सिधाए। करि अस्तुति वहु विनै सुनाए॥
कह विधि सुर सव कुस पह जाहू। मिटहि महा दुष दारुन दाहू॥
सुर सुरपति निज स्वारथ हेतू। गयो अवध जह रघुकुल केतू॥
कुस से आपनी विनै सुनाई। सुनि भूपाल वार नहि लाई॥
गये तुरित सुरपति के साथहि। निसिचर वधि वसाइ सुरनाथहि॥

अंत—दंपति प्रेम परस्पर वचना। कहि न जाय यह अनुभव रचना॥
पाइ सुधन सुंदर सुख वासा। करहि विविध विधि भोग विलासा॥

॥ छंद ॥

करु विविध भोग विलास दंपति लाभ लहि प्रभु सरन की।
"दलजीत" परिहरि आस सव अवसर न जदुपतिचरन की॥
दिज दीनता जदुपति कृपा सुमित्त सुजस जो गावही।
सो करहि सुप वहु भाति दरिद्र भव नहि पावही॥

॥ दोहा ॥

सेस सहस मुष सहस सो सहस गिरा गनराउ।
बरनहि हरि गुन कल्पसत तदपि पार नहि पाउ॥
सो जदुपति चरित उदार सुनत सुषद पावन परम।
कहेउ मति अनुहारि निज वानी सुध होन हित॥

इति श्री पोथी सुदामा चरित्र संपूर्णम् संवत् १९१८ कुआर पूर्णिमायां भृगुवासरे।

विषय—सुदामा की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आरभ के ६ पत्ने नही है । लिपिकाल सवत् १६१८ है रचनाकाल ज्ञात नही । रचयिता का नाम दलजीत है जो जहाँ तहाँ छदो मे प्रयुक्त मिलता है कविता दोहे, चौपाई और सोरठा आदि छदो मे की गई है ।

सख्या १५३ चित्रवध काव्य, रचयिता—दादू (? सभवत चैन); कागज—देशी पृष्ठ—१५, आकार—११॥ × ५। इच, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य (चित्रकाव्य), लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, ह० व० ६१, पु स० १ ।

आदि—वृछबंद मनहर छंद—

मध्य—पृष्ठ ८ मे—

अंत—
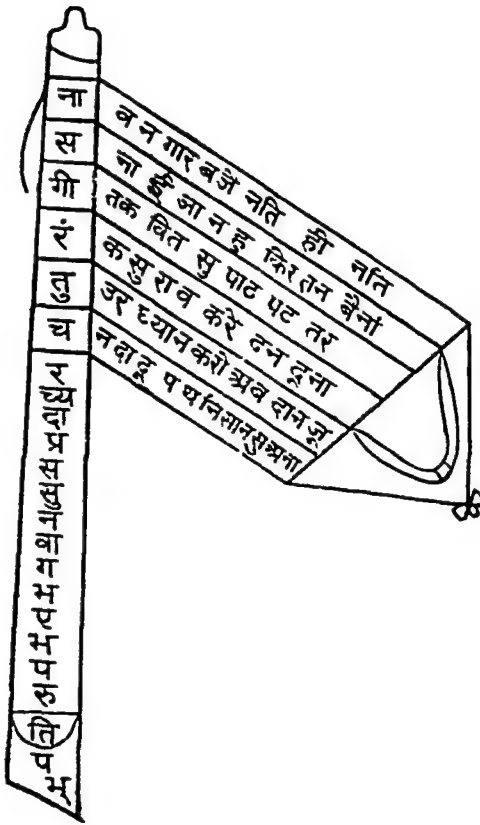
विषय—चित्रकाव्य वर्णन। इसमे निम्नलिखित चित्रकाव्य है —

वृछ बध (मनहर छद), परवत बध २, स्वस्तिक बध, कदली बध, वृक्ष बध २, धनुष बंध, कपाट बध, सर्प बध २, ताला बध, चोपड बध, द्वार बध, कदली बध, कमल बध २, कमल बध २, जहाज बध और ध्वजा बध ।

विशेष ज्ञातव्य—खुले पत्र, चित्र बनाकर उसमे अक्षर लिखे है । लाल स्याही तथा काली स्याही से चित्र बनाए गए हैं।

संख्या १५४ रागनिर्णय, रणयिता—दास, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—१० × ६३/४ इच, पक्ति(प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३५ वि० सभवत, प्राप्तिस्थान—कुवर लक्ष्मण प्रतापसिंह, ग्राम—साहीपुर नौलखा, पो०—हडिया, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥

रागरूपमूरी ताल झंपा

अरी जसोदा तेरो कान्ह हमी सो करै लगरई ।
बाट घाट मोही रोकत टोकत बाँह गहै बरीअइ ॥
पेलतु फगु उमग भरे पिचकारी लिये तन सारी भिगाई ।
'दास' कहै सवही जी कै इन मोही सुधि करी पाई ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अंत—करन चौताला

मेरी विनैए सुनौ जौ तू अभै वरदानी ।
निसवासर सोवत जागतहू विसरो जिनि महरानी ॥
अंतर वाहिर तुमहि निहारत रहौ सदा मनमानी ।
दासहि आस और नही दूजी सुनिए मौज निधानी ॥

इति दीपक पुत्र गारा जलधर भरन अरन करन वर्णनं रागनिर्नय वाइसमो प्रकासा ॥२२॥

काफी तेवरो

एरी गरब गहेली होतन जोवन गरब न कीजो ।
जैसे कुसुंभ रंग चटकीलो छनक छनक छन छीजे ॥
ज्यो तखिर की छाँह मध्य दिन तैसेही गुनि लीजौ ।
कहत 'दास' पिय के मिलवे विन कैसे कै जिय जीजै ॥ ३ ॥

—अपूर्ण

'इति नादार्णवेहि श्री मदुपाध्याय जदुनंदन सूनुना माणिक्येन कृतो रागरत्नः सप्तः ॥'

विषय—सगीत विपय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खडित है । आरभ मे सस्कृत ग्रथ 'राग रत्न' है, जिसका रचयिता माणिक है और जिसमे लिपिकाल स० १८३५ वि० दिया है । उसकी पुष्पिका इस प्रकार है —प्रस्तुत पुस्तक मे रचनाकाल और लिपिकाल उसके खडित हो जाने के कारण अज्ञात है ।

रणयिता का नाम 'दास' है । अन्य वृत्त नही मिलता । इसमे अध्यायो के स्थान पर 'प्रकास' प्रयुक्त हुए है । विपय की दृष्टि से ग्रथ उत्तम है ।

संख्या १५५. व्रज महात्म चद्रिका, रचयिता—दास, कागज—देशी, पत्र—७३, आकार—७१/२ × ५१/२ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० ३८०५, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—............................

नाक पीठ पै डीठि कै ईठ करौ सो ठौर ।
यह साधन वह सिद्धि है सबै चलाचल और ॥ २ ॥ ६६ ॥

॥ कवित्त ॥

धर है विसोक एक रमा रानी जू की ओक और सबै रोक सोक गिनि झरसाने मैं ।
काल के चलाए ते चलत चहूंघां तें जहां तहां रहैं थिरा सबही के थरसानै मैं ।

काहू कौंन बाधा सुष की अगाधा राधा मानि माधव अराधा कहै दास सरसानै मैं ।
तरनि किरनि सी प्रकासमानी वृषभानी कीरति वितांनी राजधानी वरसानै मै ।।१५।।

मध्य— उधौ

राजकाज अभिमानी राजधानी मथुरा तैं "दास" लाज काज साजि व्रज कौं नवायौ हौं ।
कंसकूप अंध तामैं परयो महामद हरि ऐसे बधु प्रेम सिंधु मैं न्हवायौ हौं ।
भागतु हो सषि मोहि दीजै सीष भीष आयौ लषिन सिषावन कौं सीषन कौं आयौ हौं ।
मेरी मोह मैंटन कौं अपनो समेटन कौं दै कै स्याम भैंटन कौ भैंटन ठायौ हौं ।।१३५।।

।। दोहा ।।

ज्ञान रीति कहि प्रीति रहि ऊधौ हरि पै आइ ।
कहि न सके सहसा दसा रही अकलि अकुलाइ ।।१४४।।

अत— ।। कवित्त ।।

लोक वेद रीति कही भैंटन अनीति कही भेंटन कौं परी प्रीति रीति वही वासकी ।
व्रज अनुराग कह्यौ जगत विराग कह्यौ विरह सुहाग कह्यौ जैसी रोकी रासकी ।
अवतार गति कही एकै हरि मति कही सतीपतिनी की वृति कृति कही दासकी ।
अर्थनि सौं भरी ग्रंथ कोठरी की कूंची कही सूचीपत्र करि जो प्रकासै आसै आसकी ।।१७२

कृष्ण चंद्र चंद्रिका कौं कहै नहीं ह्वा सक ।
व्रज निसक है अक भरि लीनौं स्यां कलक ।।३२९।।

इति श्री व्रज महात्म चंद्रिकायामात्मनिवेदनो नाम षष्ठ प्रकासः ।। ६ ।।

।। दोहा ।।

सिव मुख रव वसु सुधामिधि सवतसर आधार ।
कात्तिक कृष्ण चतुर्दसी ग्रथ लिप्यौ रविवार ।। १ ।।

नौमि रामानुजं भाष्यकारं सदा येन कृत ग्रथ शत मेटि पाषंड पथ भेंटि मत वेदवेदात सार ।
कर्ममति ज्ञान जुत भक्ति अद्भुत अमित चित्त वृत्ति नित्य हरि गीत गान ।
शैव शाकत सौरि गानेशलेश विनु वैष्णव धर्म कीरति वितान ।
द्रविड द्विज कुल वर शकर भयकरं धवलायश सकल. दलि कलि कलेस ।
तत्व उपदेस त्रय लेस उपदेश करि करचौ नरवेश आवेश शेष ।
कुहर कशमल हरंत करत प्रफुलोत मनाजन अरविंद वत अनायास ।
दास दिस आसप्रद वासकमलालय तमनिसा नास दिनक(र) प्रकाश ।।११।।

विषय—श्रीकृष्ण की कुछ कथाओ को सक्षेप मे वर्णन कर व्रजमाहात्म्य वर्णन किया है ।

ग्रथ मे निम्नलिखित छ प्रकाश है —

१.	प्रथम प्रकाश	अनुकूल सकल्प	पत्र ९ से १३ तक
२.	द्वितीय प्रकाश	गोपत्व वर्णन	पत्र १३ से २७ तक
३.	तृतीय प्रकाश	प्रतिकूल त्याग प्रार्थना	पत्र २७ से ३७ तक
४	चतुर्थ प्रकाश	व्रजवास विश्वास	पत्र ३७ से ४७ तक
५	पचम प्रकाश	अनन्य साधन कार्य अन्य साक्षात्कारानुसधान योग	पत्र ४७ से ७० तक
६.	षष्ठ प्रकाश	आत्म निवेदन	पत्र ७० से ८० तक

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख के आरभ के ७ पत्रे नही है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८०५ दिया है ।

संख्या १५६. पंथ पारख्या, रचयिता—दास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—३½ × २¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—......कोई नकरियो रिसि ॥ ४ ॥ वाणी अमृत वेलड़ी ।

बहुत किय विसतार ॥ कीरति दादू दास की ॥ चढ़ समंदा पार ॥५॥ दादू ॥ चौपई॥ काष्ट में ज्यूं चंदन सार पाहिन में पारसि निरधार ॥ दूध माहे घृत जैसे नानि त्यूं दरसन में दादू का ज्ञान ॥५॥ दसं औतार मांहि ज्यूं कृष्न ॥ तीन्यू देव माहि ज्यू विष्नु ॥ सकल शास्त्र मै गीता जानि ॥ त्यूं दरसन मै दादू का ज्ञान ॥६॥ कपिन माहि वडे हणवंत ॥ ऋषिन मांहि ज्यूं नारद संत ॥ तीरथ मै ज्यूं गंगा कही । त्यूं सतगुर मै दादू सही ॥७॥ सतगुर कहै सति की बात । जाते पावें हरि साष्यत ॥ डिंभ पाषंड न उपरि भेष । मन मैं सुमिरै एक अलेष ॥८॥

मध्य—दादू पंथी तिसक नाम जीतै लोभ क्रोध अरु काम ॥
माया मोह करै सब दूरि पाचौ इंद्री राषै चूरं ॥२४॥
भिक्षा कारण हठ न कराई ॥ अण वछ्या आवै सो षाई ॥
लूंषा सूंषा कवहु न कहै दादू पंथी ईह विधि रहै ॥२६॥
छाजन भोजन इतना लेह काया व्रतन चहिये जे ॥
संचत करै न लोभी होइ दादू पंथी कहिये सोइ ॥२७॥

अंत—दादू जी के नावपर ॥ वारु पिक प्रशंन ।
दास कहै अरण नहीं गुर गोविंद की आण ॥४४॥
दास कहै अरण नही रत है वीन ॥
पौता सरणि सांई राह दादू जी के चरण की सरज्यो मौको षेह ॥४५॥
षेह सिरज्यौ या चरण की सुनि साई अरदास ॥
मनसा वाचा करमना ॥ रहौं चरण के पासि ॥४६॥

इति श्री दास जी पंथ पारष्या संपूर्ण ॥

विषय—इस ग्रंथ मे दादू पंथियो के सिद्धांतो और नियमो का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रथम पत्र लुप्त हो गया है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

संख्या १५७ सूर्यकांड, रचयिता—दासराम, कागज—देशी, पत्र—३७, आकार—$९\frac{६}{१०}$ × $५\frac{७}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ वि०, प्राप्तिस्थान—पंडित भागवत तिवारी, ग्राम–कुरथा, पो०–पीरनगर (गोरा बाजार), जिला–गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सूर्य्य काण्ड प्रारभ्यते ॥
सिंधुरवदनहि सुमिरि करि वंदि गिरा गुर पाय ।
"दासराम" रविकाण्ड कृत कहि जयराम सहाय ॥
जो अव्यक्ता चिन्त्य है निरगुण गुणमय भार ।
जग समस्त धृत तेहि प्रणत ब्रह्म नत करतार ॥
गुण गुणात्म तनोति जग समन तृविधि अघताप ।
जगत करण कारण हरण ब्रह्माड मित प्रलाप ॥
गिरिजा प्रस्न महेस सुनि जगदुत्पत्ति संहार ।
लगे कहन विस्तार सो श्रीशिव सुमति अगार ॥

॥ चौपाई ॥

ॐ अनादि अज अगुण गुनाल। । परतेज पर ब्रह्म कृपाला ॥
ते प्रभु रचित पंच संसारा । करहि हरहि जग बारम बारा ॥
मध्य—निविषार सुष संपति भ्राता । रहहि मुदित परजाजुत राजा ॥
जव लगि पौष मास नहिं आई । गुज रात अति दुषदाई ॥
जव दस मास वीतिकै जैहै । हरित निरस तव सस्त विकैहै ?।
नहि तौ ता विच देस तिलगा । होइहि विनुकृत रुज रण रंगा ॥
यह अधिकार सकल श्रुति गावा । श्रुति विमुखी कहुँ सुष नहि पावा ॥

॥ दोहा ॥

ताहि अब्द के अतर अन्य महग कहु होइ ।
मास मार्ग की पउष मह वुध गावत सब कोइ ॥

मेष संक्रमन हिमकर वारा । ताहि वर्ष कर सुनु व्यवहारा ॥
देस स्वस्थ नरपति जुत नीती । प्रजा समोद परसपर प्रीति ॥

अंत—तुम अनंत तुव गुण अमित कोउ नहि पावत थाह ।
हौ हौ मग्न भावाब्धि मह गहु रमापति बाँह ॥

इति श्री "दासराम कृतो" मा महेस्वर सम्वादे सर्व गुणालंकृत वत्स रामभरण तृतीयावस्थित सूर्ज काण्ड सम्पूर्ण। विक्रमाब्दी सम्वत् १६११ आस्विन शुक्ल त्रयोदस्या वुधवासरे रामेस्वर कायस्थ लीषा ग्राम भदारी श्री गुर के दया ते प्रगणे चयणपुरा मले अँगरेज के० ।

राशि चारि कुंभादि मे जापर गुर्व्रतिचार ।
पूर्वे नहि वक्री तदा लुग केज्य अस वार ।

विषय—उमा महेश्वर सवाद । जगत की उत्पत्ति तथा नाश का वर्णन । ग्रह, लग्न आदि का विचार तथा फलाफल । इसमे तीन खड इस प्रकार है —

प्रथम खड मे १४ चौदह पत्ते ।
द्वितीय खड मे १६ सोलह पत्ते ।
तृतीय खड मे ७ सात पत्ते ।

संख्या १५८. नीति रत्नाकर, रचयिता—दिग्विजय सिंह, निवास स्थान—वलरामपुर (गोंडा), कागज—देशी, पत्र—२३४, आकार—८$\frac{२}{१०}$ × ५$\frac{३}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७२६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक—डी० ए० वी० स्कूल, वलरामपुर, गोंडा ।

आदि—....................

नवाँर वंशावतस अर्जुन सिंहात्मज दिग्विजय सिंह वहादुर विरचिते ग्रथ "नीति रत्नाकर" मंगलाचरण देश नगर राजवंश वर्नन प्रथम प्रकाश. १

अथ भूमिका वर्णन ॥ चौपाई ॥

सित दशमी कुवार वुधवासर । नभ दृग ग्रह शशि संवत् आषर ॥
ग्रंथ नीति रतनाकर कीन्हे । कवि कोविद मुनिजन मत लीन्हे ॥
काढे रतन मथन छीर जैसे । चौदह वृत्ति ग्रंथ महँ तैसे ॥
कवि कोविद सो विनै हमारो । तजि दूषन भूषनहि सुधारो ॥

मध्य— ॥ दोहा ॥

धन्वंतरि सम धरापति न्याय औषधी सेइ ।
मनि प्रकाश करि नीति पथ नेक वर्दहि लषि लेइ ॥ १ ॥

मंजुल मंत्री मित्र मति धनु संगति गुन लेइ ।
विद्या कामदधेनुवाँ अर्थ कामना देइ ॥
:o: :o: :o:
नाम दिग्विजय सिंह प्रगट विजय भूप धरि जाम ।
पद कोमलता कवित हित आरोपित अभिराम ॥
:o: :o: :o:

अंत--ग्रंथ नीति रतनाकरै पढ़ै सुनै जो कोय ।
रतन पदारथ को लहै चारु चातुरी होय ॥११॥
रतनाकर सो भैं प्रगट रतन चौदहो आय ।
त्यौं प्रकाश चौदह किये नृपति नीति ठहराय ॥१२॥
सवत् शशि दृग ग्रह शशी वुध हरि वासर वेश ।
पक्ष असित फागुन भलो कीन्हें पूर्ण नरेश ॥

इति श्री जनवार वंशावतंस श्रीमहाराज अर्जुन सिंहात्मज श्रीमहाराज दिग्विजय सिंह वहादुर विरचिते नीति रत्नाकरे रसवर्णनं नाम सप्तदश. प्रकाशः १७ समाप्तम् ।

विषय--नीति तथा रस एव अलकार वर्णन ।

रचनाकाल

संवत् शशि दृग ग्रह शशी वुध हरिवासर वेश ।
पक्ष असित फागुन भलो कीन्हे पूर्ण नरेश ॥

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खडित है । समस्त दो सौ चौतीस पन्ने है । रचनाकाल सं० १६२० वि० है । यह मुद्रित हैं, पर मुद्रणकाल का पता नही ।

सख्या १५६क. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—दुखहरण, कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—८ × ३३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत विद्याप्रसाद राजाराम, स्थान व पोस्ट–मुहम्मदावाद गोहना, जिला–आजमगढ ।

आदि--राम १ श्री गनेस जी सहाय, श्री लिष्यते प्रहलाद चरित्र

आरभ ॥ चौपाई ॥

महा असुर हरनाकस राजा । काह कहो जस ताकर साजा ॥
ऐसो कठिन तपेसा कीन्हा । सकर होइ प्रसन्न वर दीन्हा ॥
राती देवस नहीं श्रीतु तुम्हारी । नहि तुअ मरन अकास पताला ॥
वाहर भीतर होइ न काला । ....
जे वूंद रुधिर परै मही माही । तेतिक हरनाकस होइ जाही ॥
जस वर मागसी तस वर पाएसी । अववंत होए सीस वोनाएसी ॥
सुर नर मुनी सव कहँ दुष देई । मारी डाटी सरवस हर लेई ॥

॥ दोहा ॥

लागे करन उपद्रो भा मन महं हकार ।
अव को मारि सकै मोहि अस को है बरिआर ॥

अंत-- ॥ दोहा ॥

कवनी वड़ाई कागए ऐसे प्रभु के भाषी ।
"दुखहरन जन वंदही सीर पुहमी पर राषी ॥

॥ चौपाई ॥

चौथे प्रहलाद काज अवतरे नरासिघ रूप छेत्र सुलतानपुर पटन पुनीत है।
माता चद्रावती औ पीता हरी ब्रंह्म रीषी गुरु अर्चीत तेज जाही के नमीत हैं।
मारो हरनाकस असुर वलीवंड सुर जग्र मे भक्त के गाठे हरी मीत हैं।
"जनदुखहरन" सुजस तीहुपुर भए सुर नर मुनी गावत जो गीत है॥ १॥

इती श्री प्रह्लाद चरीत्र सपुरन प्रती जो देष्या सो लीष्या पंडीत जन कु वीनती मोरी टुटल अछर लेव सव जोरी। श्री समत १९३४ मी० वैसख वदी ६ वार वुध के॥

विषय—प्रह्लाद की कथा वर्णित हुई है।

संख्या १५९ख. प्रहलाद चरित्र, रचयिता—जन दुखहरण, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१०, आकार—७$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सन् १२४० हि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (ग्रथदाता—प० स्वामीनाथ दुबे, ग्राम—दुर्बाली, पोस्ट—खखुंढ़ू, जिला—गोरखपुर)।

आदि—श्री गनेसाएनमह पोथी प्रहलाद चरीत्र॥

॥ दोहा ॥

उतर दीसा हरीनाकस असुर अगम अपार।
ताको चरित्र सुनहु कहो सहित वीस्तार॥
श्री हरि चरन रेनु को आसा। जनदुषहरन कथा परगासा॥
महा असुर हरीनाकस राजा। काह कहो जस ताकर साजा॥
सीव को सेवा वहुत वीधी कीन्हां। तव सीव प्रसन्य होइ वर दीन्हा॥
देव दइत नर सकही न मारी। राती देवम नहि श्रीतु तुम्हारी॥
नाही तुव मरन अकास पताला। बाहर भीतर होइ नाही काला॥
तव जहा रुधीर परै महि माही। तेती हरीनाकस होइ जाही॥
जस वर मागेसी तस वर पाएसी। हरषवंत होइ सीस उठाएसी॥
सुर नर मुनी सभ कह दुष देई। मारी डाडी सरबस हरी लेई॥
लागेव करन उपद्रव मन मंह भया हकार।
अव को मारी सकै मोही अस को है बरीआर॥

अंत—धन्य धन्य भक्त वछल सुखदाई। जीन्ह एह जन की पैज पुराई॥
दुस्ट अधरमी को छए कीन्हा। जन कह लेइ इन्द्रासन दीन्हा॥
मारत जल थल माह उवारा। जन नीत भए नरसीघ अवतारा॥
कवनी वड़ाई करिए ऐसेहि प्रभु कह माषी।
दुषहरन संतन सुष पुहुमी सीस पर राषी॥

॥ कवीत्य ॥

चौथे प्रहलाद काज अवतरे नरसीघ सुलतानपुर पाटन पुनीत है।
माता चंद्रावती पीता हरी व्रह्म रीषी गरु अर्म्रीत है।
तेज जाको जगत माह रहै मारेउ हरीनाकस असुर वली वडसुर जगत मो भगत को गाढे हरी मीत है।
"जन दुषहरन" सुजस तीहु पुर भए सुर नर मुनी सब गावत गीत है॥
उधरे चारी वेद लै सास्तर वो षट संध्या धरम अचार जी।
नवो व्याकरन व ग्रह रासी वारह अठारह पुरान तीथी पन्द्रह सात वार जी।

बीथा चौदह सताइस नछत्र मूल निछत्र गंगा गीता गाइत्री चौबीस मंत्र सार जी।
थापे रीषी साधु धर्म संधारे जुग जुग दुषहरन दास कारन अवतार जी॥
सन् १२।४० साल

विषय—प्रहलाद चरित्र का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सन् १२४० (?) है।

संख्या १५६ग. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—दुखहरनदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—१०½ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० अवधनारायण त्रिपाठी, ग्राम—बल-भरनपुर, पो०—मेँहगाँव, जि०—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः। पोथी प्रह्लाद चरित्र

कथा दु कृत दुषहरनदाश लिषा प्रह्लाद चरित्र॥

॥ दोहा ॥

आपर अर्थ न जानौ नहि गुर ग्यान उपाइ।
राम चरित कछु वरनौ श्री गुर होहु सहाई॥

॥ चौपाई ॥

महा असुर हरिनाकुश राजा
काह कही जश ताकर आजा।
शिव कि सेवा वहु विधि कीन्हा
तव शिव होई प्रसन्न वर दीन्हा।
देव दैत नर सकहिं न मारी
राति देवस नहिं मृत्तु तुम्हारी॥

अंत— ॥ चौपाई ॥

अग्या प्रभु के सिर पर लीन्हा।
प्रह्लादहि इन्द्रासन दीन्हा।
गिति नाद भौ वाजन वाजा।
भा जन निर्मल पातक भाजा।
:o: :o:
धन्य भक्त वत्सल सुषदाई।
जेन्ह पह जनक पैज पुराई।
दुष्ट अधरमी कै छै कीन्हा।
जन कह लै इन्द्रासन दीन्हा।
:o: :o:

॥ दोहा ॥

कवन वड़ाई करिये ऐसी प्रभु की भाषि।
"दुषहरन जन वंदिये" शिर पुहुमी मे राषि॥

॥ कवित्त ॥

चौथे प्रह्लाद काज अवतरे नरसिंह रूप छत्र मुलतान रूप पाठन पुनीत है।
माता चंद्रावती औ पिता हरि ब्रह्म ऋषि गरु अमित तेजहीं कवन रीत है।
मोरउ हरिनाकुश असुर वलीवंड सुर जक्त मे भक्त के गाड़े हरि मीत है।
जन दुष हरन सुजस तिहु पुर भऔ सुर मुनि गावत जो गीत है॥

विषय—प्रह्लाद चरित्र वर्णन ।

संख्या १६०. वोलार चरित्र, रचयिता—दुखीराम वरनवाल, निवासस्थान—गोठनी (सारन, विहार), कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—८ × ५$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी कैथी मिश्रित, रचनाकाल—सवत् १८५३ वि०, लिपिकाल—स० १८५३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रघुनदन प्रसाद चौवे, ग्राम–तिलिया वडी, पोस्ट–सतराँव, जिला–गोरखपुर ।

आदि—श्री भवानी जी सहाइ ।। श्री गनेस जी सहाइ ।। श्री पोथी वोलार चरित्र ।।
मैं वीनवो कर जोरी कै श्री गुरु चेरन तोहार ।
जनम जनम तुव महीमा गावहा एही संवसार ।।
परथम वरनो श्री गुर चरना । मोही जनीत संसै सभ हरना ।।
मम हीरदेए प्रभु पथ देषायो । पडोकृत सुजस वीसतारो ।।
जग जननी तुम्ह होहु सहाई । आषर अरथ मोही देहु मेराई ।।
सकल साधु के रेनु मंझारो । हरीमुन कथा सुजह वोसतारो ।।
कवरो पडो आहें भाई । कपट सनेह सदा चली आई ।।
पंडो कह जगदीस नेवाजा । पापी गेआन जुरजोधन राजा ।।
देषी सहाय सो गरभ भुलाना । आपुन काल सो नाही अनुमाना ।।
येक देवस सकुनी के वोलाई । सौ भाइ लीन्ह सग लाई ।।
करन दरोन संग लीन्हा और असथामा वीर ।
सएल सगुनी सभ आए म्हाम्हा रनधीर ।।

मध्य—ठाढ भए कुरछत्र मझारा । सौय भाइ वोलार प्रचारा ।।
तवही द्रोन गुरुवान सधाना । जाकर सवद तिहुपुर जाना ।।
वीहसी द्रोन कहा प्रचारी । अव वालक करू हम सन मारी ।।
तव हसी द्रोन छाडा सर साता । दे आसीस चुंवी के माथा ।।
वीवोधी वान वोलार प्रचारा । के प्रनाम तव चरन पषारा ।।

अंत—पाँचो वंधु गोद के लीन्हा । वहुत असीस वोलारही दीन्हा ।।
हम आछत सुत तुम रन करहु । एह अन उचित कहा उर धरहु ।।
पेलहु जाइ तुम षाहु तमाला । पुनिएह रन मह करहु न पेला ।।
हमरो नाम हानि पुनि होई । आपु आछत बालक रन करई ।।
।। दोहा ।।
जो देखा सो लीषा पडीत जन सो वीनती मोरी ।
टुटुल अछर लेव वटोरी ।। ....

इति श्री बोलार चरित्र दुषी राम वरनवार साकीन मोठनी परगने चोवारमी भादो वदी १४ रो वुध के पइआर भेआ समत १८५३ सन् १२३ शाल मोकाम वलुआ कोठी नई ।।

विषय—नागकन्या से उत्पन्न भीमसेन के पुत्र वोलार का चरित्र वर्णन ।
विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नही दिया है । लिपिकाल सवत् १८५३ है ।

संख्या १६१. निर्गुन नहछुर, रचयिता—दूलनदास, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—७$\frac{15}{16}$ × ६$\frac{7}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् भोलानाथ जी 'भोरेलाल' ज्योतिषी, ग्राम व पो०–धाता, जिला–फतेहपुर ।

आदि—श्री सतगुर साहेव ए नम नीरगुन नहछुर लीषते ॥
सगुन सुमगल एह वड़ एह वड़ कुसल छेम रे ।
नीत नव वढ़े अषडित चरन कंवल दीढ़ प्रेम रे ॥
दुइ कर जोर मनावो सतगुर संत सांच दीन ।
सुफल मनोरम कीन्ह चुक छमा जनी जनी नहछुर प्रभु जगजीवन ॥
विनय मै चरन मनाए रे ॥
समरथ सत सीध दाएक होए सहाए रे ।
करहु कीपा पन वढे सत नेह रे ॥

अंत—
सुनी एह प्रीतमकार सवतीअ । हमै भलेउ सुषी तज रहै सवतीअ ॥
पीअ के वतीआ हीय मेरे जमी प्रीती ।
वेलहारी हरदुनो पतीअ ॥
सषा "दुलन" पीअ कार सव तीअ ॥
घुमेउ मैंहर चुनी चुनी मोतीअ ।
सषा मोरे सजन के हार ए सबतीअ ।
नीरगेन नेह छुर संपुरन भए ॥

विषय—निरगुन ब्रह्म का नेह वर्णन ।

संख्या १६२. रामाश्वमेध, रचयिता—देवकृष्ण, कागज—देशी, पत्र—८७, आकार—६¾ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्र), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री रामचंद्राय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रामास्वमेध लिख्यते ॥
॥ भाषा ॥ श्लोक
मंगलं भगवन् विष्णुः । मंगल गरुडध्वजं ॥
मंगलं पुडरिकाख्य । मंगलायतनो हरिः ॥ १ ॥
श्री रामचद्र सुद्ध गुणान्वित भासा उनमीलितं ।
दीपं ज्ञान प्रकास सुज नयं आनंद दान शुभं ।
कलिकलमषमखिल मथनं सौख्यार्थं लाभप्रदं ।
देव कृष्ण निज सुमत्यो अनुरूप भाषां करोत् ॥ २ ॥
॥ दोहा ॥
गणपति सारद शेस शिव सियाराम गुर मोर ।
इनके चरन सरोज जुग विनय करू करु जोर ॥
:o: :o: :o:
मोरे मनमें अभिलाष महा शुभ चाहत प्राकृत ग्रंथ भनी ।
रघुवीर सुधाजस अकित ते जनपावन दावन सोक भयं ।
अस जानि जिये जु कृपा जु करो मतमद ज मोर भरोस नयं ॥
॥ दोहा ॥
सवत् अठारा स(त) वरष वहुरि वीस त्रीयेपच ।
मंन मास व्रध्रु इंदुपरिव रामा जनम तव मंच ॥
अतिसै अधम कठिनि मैं स्वामी । सव जग दोप वोध अनुगामी ॥
नही भरोस मोहि तोहि भरोसा । गति लिपि दोउ उर भयोउ हरोसा ॥

मैं अति दीन दीन तुम बंधु । मैं श्रोगुन गृह तुम गुन सिंधु ॥
मैं अति पतित पतित तुम पावन । मैं दुषन तुम दोष निसावन ॥
मैं कुधात तुम पारिस रूपा । मैं अतिरक भवन तुम भूपा ॥
:o: .o: :o:

॥ दोहा ॥

ऐसे प्रभु कु छाडि करि "देव" भजहि तेह श्रान ।
ता सम मुढ न अध कोउ किंकर मन तेह जान ॥
:o: :o: :o:

कवि कौन जो परबध नाहिन सभा सतन आदरी ।
तिन वृथा किय परिषेद तत्वु विचार कर नाहिन करी ।
रस मधुर सगुन जुक्त बिनु जस राम भनित अपावनी ।
गुन रहित सब गुन एक रामहि सजन सोहि मनभावनी ।
एहि कौन दृढ हित जानि नीज एहि सभा सतन मै सुनी ॥
सब ग्रथ सार सु राम जस गति हेत सब सुख को गुनी ।
तिहि कहुं मति अनुस्वार बानी करन पावन मोहिसो ।
पुनि सजन आनद दंन नर कृत हेत सब जिय जानि सो ॥

॥ दोहा ॥

कहुं वरनि रघुपति सुजस पावन गग समान ।
सब सुखदायक हरन अघ चहु फल दायन दान ॥
इति श्री रामासुमेघ प्रथम मगलाचरण स्तुति करुनारस वर्णननाय सपूर्ण ॥

॥ दोहा ॥

व्यात सान रिष शेष को कहु संवाद सुचारु ।
सुनतहि नासं मोह भ्रम कहु मोर मति सारु ॥

॥ चौपाई ॥

एक वार रिष दोउ कर जोरी । बचन कहोउ मृदु अतिरस बोरी ॥
सुनु शेष मन बिनती जोई । राषु नाहि तुमु सुन गोई ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

बहोरि कहेउ रिपु सुदनहि सुनु समद महिपाल ।
चढोउ सेनि निज साजि सब एह सहसा करिकाल ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि प्रभु वचन समंद सुत एका । दीन राजपुर चरि अभिषेका ॥
बहोरि सेनि निज बहो विधि सा................॥
:o: :o: :o: —अपूर्ण

विषय—रामाश्वमेध का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित और जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है । रचनाकाल स० १८२८ है । लिपिकाल ग्रथ के अत से खडित होने के कारण अज्ञात रह गया ।

संख्या १६३क. हनुमत वीर रक्षा, रचयिता—देवीदत्त शुक्ल पडित "धीर", निवास-स्थान—हसराजपुर (सोराव तहसील, इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१०६/६ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०७ वि०, लिपकाल—स० १६०७ वि०, प्राप्तिस्थान—प० छोटेलाल जी मिश्र, ग्राम—हसराजपुर, पो०—होलागढ, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री महाकाल्यै नमः ।। हनुमते नमः ।। छप्पय ।।

रक्त जलज सम नयन सुभग सिर मुकुट विराजत ।
मेचक कुंचित केश वेश श्रुति कुंडल छाजत ।
भ्रकुटी कुटिल विशाल भाल उर माला सोहत ।
चन्द्र वदन सुख सदन मदन सत कोटि लजावत ।।
उर भुज विशाल भूषन सहित तडित वसन कटि पट लसैं ।
रघुवीर मूर्ति भनि धीर मम उर अंतर निसुदिन वसैं ।। १ ।।
हेम पद्म छवि नव्य भव्य प्रद तुल्य उष्नकर ।
वज्र अंग नख वक लंक निश्शक पक कर ।
दोर दंड उद्दंड दनुज दल दलन प्रचडन ।
पिंग अच्छि अति स्वच्छ वक्ष विस्तीर्ण सुमडन ।
लागूल कठिन जिह्वा रदन सहित वदन भ्रकुटी विकट ।
श्री धीर भनय मारुत तनय भजे न आवत दुख निकट ।। २ ।।

अंत—

थ मैं गरीव तूं गरीव को निवाज खास आस मोहि रावरी न जानौ छल छन्द को ।
द श्री पुरानन मैं गावन विलंद यश भावन ऋषीरान के रूप जो अनन्द को ।
व कोर मेरी ओर कृपा कै निहारो वेगि निज जन जानि कै विदारो दुख दद को ।
ोर जू भनत मै न काहू को गनत कहूँ तेरुई भरोस से दुलारे रघुनन्द को ।

।। कुंडलिया ।।

अग्नि कोण मह कोश नग तीरथ नृप अभिराम ।
अमरावति सो लसत है हसराजपुर ग्राम ।।
हंसराजपुर ग्राम हंसनिभ कोविद जामैं ।
धर्म नेम विद्याविवेक सरसीरुह तामैं ।।
देवीदत्त सुधीर वीर रक्षा एह कीन्हा ।
होइ सो निरदुख भक्त पाठ जौं चित दै लीन्हा ।।१५।।

।। दोहा ।।

एक ऊन दश दून करि नभ अरु अब्धि मिलाय ।
मार्ग शुल्क दशमी सुतिथि कियो विनय हर्षाय ।।१६।।

इति श्री देवीदत्तकृता हनुमत वीर रक्षा समाप्ता ।।

विषय—हनुमान जी की स्तुति ।

रचनाकाल

एक ऊन दश दून करि नभ अरु अब्धि मिलाय ।
मार्ग शुल्क दशमी सुतिथि कियो विनय हर्षाय ।।१६।।

संख्या १६३ख. अलङ्कार दर्पण, रचयिता—प० देवीदत्त शुक्ल "पडित", "धीर", स्थान—हसराजपुर (सोराव तहसील, जि०—इलाहावाद), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—१०$\frac{9}{16}$ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १६१० वि०, लिपिकाल—१६१० वि०, प्राप्तिस्थान—प० छोटेलाल जी मिश्र, ग्राम—हसराजपुर, पो०—होलागढ, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गुरु गणेशाभ्यां नमः ।। श्री महाकाल्यै नमः ।।
भाले चन्द्रन्दधानङ्कूर मृग परशुभूति का।क्षम्प्रशान्तम्
दृप्ताहि व्यूहरग्यडःकुशमित वदुङ्कोटि पुषप्रभाढ्यम् ।।

:o: :o: :o:

।। षट्पदी ।।

व्याघ्र अजिन करि वसन भूरि जीमूत श्याम तन ।
शोण नलिन दस नयन मयन मद लाजत प्रतिछन ।
कर कपाल करवाल भाल शशिबाल विराजत ।
दुष्ट दरत भय हरत करत पालन जन छाजत ।।
लोल ललित रसना दशन विकट प्रकट त्रयतापहर ।
सोइ पडित देवीदत्त को रचना करैं सो सिद्धिकर ।। ५ ।।

:o: :o: :o:

सुकुलनाथ विख्यात पढे श्रुति शास्त्र तन्त्रवर ।
सुत गगाधर तासु तरणि सम तेज जाहि कर ।
तासु भवानीचरण विदित दश चारि भुवन जस ।
ता सुत ठाकुरराम कियो तप बल हरिहर बस ।
पुनि रामदत्त ताके तनय श्रुति पुराण रस शास्त्रवित ।
पुनि ता सुत देवीदत्त भो ग्रंथ कियो चाहत विदित ।। ६ ।।

:o: :o: :o:

शिवप्रसन्न नृप है तहाँ सो प्रोत्साहन कीन ।
अलंकार रचना करो जो अल्पै श्रम लीन ।।११।।

:o: :o: :o:

नृप धानी होला नगर सोहत अति अभिराम ।
चारि वरण आश्रम तहाँ विलसत आठौं याम ।।१७।।

:o: :o: :o:

कंज से सुरभि औ चप से अंग छवि पद्मिनी असी सो वयन जानो ।
नाचिवो चारु अरु चाउरी गाइवो चित्रिणी चित्त की हारिणी मानो ।
पातुरी देह अरु आतुरी केलि मो सखिनी कर्क्कसा कूर सानो ।
पीन है देह तनु नाहि कारण कछू हस्तिनी कीर्ति तरु कान्ति खानो ।।४४।।

अंत—शास्त्र चमत्कृत चातुरी चद्रकला कर धार ।
हौ तथापि आज्ञा लिए कह्यौं नृभाषा चार ।।११२।।
व्योम चंद नवभूमि मित सवत कार्तिक माह ।
शुक्ल सप्तमी मे कियो ग्रंथ पूर्ण नृप चाह ।।११३।।

इति श्री सकल सामंत चक्रवर्ति चूडामणि दिल्लीश्वराकब्बर साहदत्तप्रतिष्ठ चौधुरी नरेंद्र शिवप्रसन्न सिंह प्रोत्साहित सुकुलोपनामक देवीदत्त विरचितेऽलंकार दर्प्पणेऽलंकार निरूपक-स्तृतीयोल्लासस्समाप्तोयं ग्रंथः ।। सम्वत् १६१० ।। कालिकायै नमः ।।

विषय—अलकार वर्णन । इसमें तीन अध्याय (उल्लास) है ।

रचनाकाल

० १ ६ १
व्योम चंद्र नव भूमि मित सवत कार्तिक माह ।
शुक्ल सप्तमी मे कियो ग्रंथ पूर्ण नृप चाह ।।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है । दूसरे अध्याय के सब पत्ने लुप्त हो गए हैं ।

संख्या १६४. रचयिता—देवीदास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७१५/१६ × ६६/१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री युत् भोलानाथ जी, उप० भोरेलाल, ज्योतिपी, ग्राम व पोस्ट—धाता, जिला—फतेहपुर।

आदि—कजानाम साहेव देवीदास क लीष ॥ तेहराह जरती ॥ गुरह जरती ॥ मोहोवक सीषत ॥ चौगुन अरज अमद ॥ गुरजमंद ॥ कुमती दरमा अन है ॥ इमान कहसु ॥ अपनीहय अदोसर दील की सकत ॥ मेहरा भूप को दआ ॥

:o: :o: :o:

अंत—कुरवन जाने देवीदास अपनी काआ करखो कइ तरीष बंदगी कहो।
एकनाम अलाह अलषरोज अषना चहो ॥
॥ समपुरन कजानाम ॥

विषय—ज्ञानोपदेश।

संख्या १६५ सोमवंश वंशावली, रचयिता,—देवीदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१०१/२ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३१ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्रीकृष्णाय नमः अथ सोमवंश की वंशावली वर्णनं

॥ दोहा ॥

गुर गनेस पग वंदि कै प्रणमि सारदा माइ।
सोम वंस वरनन करौं सवकौं सरस सुनाइ ॥ १ ॥
प्रथम देषि हरिवंस कूं श्री भागवत निहारि।
निरषि भविष्य पुरांन कौं तव ए कहे विचारि ॥ २ ॥
श्री नारायण प्रथम ही जलसाईं भगवांन।
तिनकै इछा ऊपजी रच्यौ जगत उनमांन ॥ ३ ॥
नारायण की नाभि तै उपज्यो कमल उदार।
ता ऊपर ब्रह्मा भए च्यारि वदन आकार ॥ ४ ॥

॥ छंदपाधरी ॥

तिनके मरीचि रिषिराइ हूव। तिनकें जु अत्रि भए सरस सूव ॥
भए अत्रिदेव के सोमदेव। भए सोमदेव के बुध अभेव ॥ ५ ॥
तिनके पुरूरवा गुणनिधांन। अजु भये आइ तिनके सुजान ॥
अजु के भये जु नृप नहुपराइ। ते सवनि इंद्र कीनें बनाइ ॥ ६ ॥
अंत—भये छत्रपाल के धर्मपाल। ते दांनि जांनि अरु प्रजापाल ॥
भये धर्मपाल के रतन पूत। ते भांति भांति विधि विधि सपूत ॥७४॥
कुलि जुगहि मांझ भयौ महादांनि। गुनगीत राग कौं महाजांनि ॥
घोरे दिये सु कंऊ हजार। मुहरें दई सु कंई हजार ॥७५॥

:o: :o: :o:

जापर कृपाल श्री नदलाल। या रतनपाल के रीछपाल।
गुन गन अपार वरनै सु कौन। सवकौ सहाउ सव गुननि भौन ॥८०॥
राजाधिराज करी अटलराज। तौलौं विरचि सिव सुर समाज ॥
तिहिं घर कुमार श्री कुंवरपाल। जिनिकैं नपाल गोपाल पाल ॥८१॥

जदु वंस सहित करियौ सुकेलि । दिन दिन प्रताप वढियौ सुवेलि ॥
दोउ पिता पुत्र कौं यह असीस । देवी कहै सु जीऊ लष वरीस ॥८२॥

इति श्री देवीदास कृत सोमवंस की वंसावली समाप्तम् ॥१॥ लिखितं मिश्र कनही रामगढ़ भरथपुर मध्ये स्वात्मज पठनार्थं सवत् १८३१ मिती फाल्गुन शुदि २ रविवासरे रामः रामः ॥ रामः

विषय—सोमवश के राजाओ की वंशावली वर्णन की गई है। (रचयिता करौली के राजा रतनपाल के आश्रित थे जो सोमवश के राजा थे)।

वशावली इस प्रकार है —

विकृति
|
भीमरत्थ
|
रतनरत्थ
|
सकुनि
|
करमसेनु
|
देवरात
|
देवछत्र
|
मघु
|
कुँवरराज
|
अनु
|
आपु
|
श्रुति
|
अंधकुभ
|
भगवान
|
विदरथ
|
हरदीकराइ
|
देवमीढ
|
सूरसैन
|
वसुदेव
|
श्रीकृष्ण
|
प्रद्युम्न
|
अनिरुद्ध
|
वज्रनाभ
|
सुवाहु
|
सतसेन
|
रविसेन
|
विसाल
|
सुमत्र
|
सुखेन
|
त्रिसेन
|
श्रुतायु
|
सुचायु
|
छेमधर्म
|
रुचिकराइ (इनके समय मे कलियुग आया। व्यास देवजी लोप हुए। अपने शिष्य वैशपायन को सब पुराण दिए और कृष्ण वश का वर्णन करने का उपदेश किया)।
|
सुवृतराई
|
सुश्रम
|
सुमतिराइ
|
दृढसेन
|
सुवल
|
सिवजीत
|

विश्वजीत
|
रिपुजीत
|
हैहयकुमार
|
धर्मपूत
|
कालजीत
|
सवलराइ
|
भूरिश्रवा
|
लोकजीत
|
कुतिभोज (साहनजीत वादशाहो को जीतने वाले)
|
भद्रसेन
|
सुमत
|
धनेस
|
सुनाभि
|
दिनेस
|
छेमधर्म
|
छत्रधर्म
|
वेदधर्म
|
वीरसारि
|
समिहिजए
|
चद्रसेन
|
सहससेन
|

वीरवाहु
|
अकवाहु
|
भीमसेन
|
उग्रसेन
|
धर्ममूर्ति
|
देवदत्त
|
देवानीक
|
रुचि अपार
|
विश्वकेतु
|
विवस्वान
|
वीरवाहु
|
व्रजवाहु
|
अरिमर्द
|
अरिकलु
|
लोकेस
|
कुसविद
|
ससिविंद
|
सग्रामजीत
|
जैदर्प्पराई
|
हैमंगद
|
अनंग
|
नद

|
विरचि
|
नद
|
सल्य
|
श्रीरग
|
रिपुमर्द
|
रवितेज (?)
|
भद्रसेन
|
नदराई (?)
|
वीरसेन
|
सिंधुपाल
|
जगतपाल
|
नरपालदेव
|
सग्रामपाल
|
केतुपाल
|
भूमिपाल
|
तुछपाल
|
पाल
|
ब्रह्मपाल
|
जैदपाल
|
विजयपाल (बहुत प्रसिद्ध हुए)
|
तिहुनपाल
|
धर्मपाल
|
कुँवरपाल
|
अजैपाल
|
हरीपाल
|
साहनपाल
|
प्रथीपाल
|
राजपाल
|
तिल्लोकपाल
|
वापल्लदेव
|
आसल्लदेव
|
सहसदेव
|
घ्घल्लदेव
|
अरजुनदेव
|
विक्रमाजीत
|
अभयचद
|
पृथीराज
|
उदयचद
|
परतापरुद्र
|
चन्द्रसेन (अकबर इनके पास गए)
|
भारथीचद
|
गुपाल
|
द्वारिकादास

संख्या १६६. पहौप प्रकाश (पुष्प प्रकाश', रचयिता—देवेश्वर माथुर, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—७½ × ५½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३६ वि०, विपिकाल—स० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), क शी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पौहौप प्रकास पहौप सिंह प्रति प्रस्तूयते ॥

॥ सोरठा ॥

दिपत दंत दुतिवांन सिंधुर सिंधुरवदन वर।
उदै भयौ निसि भांन सरद मेघ सझ्या समैं ॥ १ ॥

॥ छप्पय ॥

सुंडाडंड उडंड उडित दुति मोदिक मंडित।
वलित ललित लघुचंद भ्रग मदमत्त घुमडित ॥
सिंधुर सिंधुर वदन रदन राजत छविवता।
सरद मेघ संझ्या सुसमय शोभित निशिकंता ॥
सुमिरत 'देवेश्वर' जोरि कर गुन अनत विघनन हरहु।
मुप चरित पौहौप चाहत कह्यौ ग्रंथ सकल पूरन करहु ॥ २ ॥

:o: .o: :o:

॥ दोहा ॥

विघ्न राज अष्टक कह्यौ पौहौप सिंह गुन हेत।
विघनहरण हित सुष करण कारन काव्य सचेत ॥
व्रज नरिंद्र कौ कुवर प्रताप। ताकौ सिंह वहादुर आप ॥
पौहौप सिंह ताकै परगास। तहित किय यह पौहौप प्रकास ॥
इति प्रथमोदल ॥ १ ॥ ॥

मध्य—छंद पारसी कौ नाम वैहैर तवील

वौहौत है आध पल झाकी भुजै वांके विहारी की।
पियारे सांमरे सुदर निकट सकट विदारी की ॥
अजायव माधुरी मूरति गरायव सांवरी सूरति।
लटक वरनीन जानै तुज मुकट सुदर उदारी की ॥
वसत जुगराम कहलाए व कलघनस्याम वनि आए।
अजव अथ कथकथा है नंद के नंदन कुमारी की ॥

:o: :o: :o:

अथ प्रीत पावस ॥ दोहा ॥

सजनौ सजनीरद निरषि हरषि नचत इत मोर।
पीव पीव चात्रग रटै चितवत हरि की ओर ॥

॥ सवैया ॥

सीतल मंद सुगध समीर सरीर लगै धुनि वोल तुहोपि ।
भूमि हरी जलदेषि भरी सुधि सरव हरी सुष की गति लोपि ।
"देवेसुर" आन कहा कहियै चपला चमकै सुमनौं असि ओपि ।
प्यारी हमारी गुहार लगौ लग आजु घटा घन घोरि कैं कोपि ॥

:o: :o: :o:

अंत—अथराजकुल काव्य प्रस्तूयते ॥ दोहा ॥

अरि कंस वंश भासतु भीयावदन स्यह भुवपाल ।
हरषिराज ताकौ दयौ व्रज कौ श्री नदलाल ॥

॥ छप्पै ॥

व्रज व्रजेस वदनेश देस दपिन दल दष्विय ।
तिहि सुजान सुलतान थाण थाणी थपि लष्यिय ।
तिहि भनि अनुज प्रताप तापता वैरि आपदिय ।
तिहि सुवहादुर स्यंह सिद्धि परसिद्धि भोज विय ।
तिहि कुमर कविन कौ कल्प तरु अविलवित धरि ध्यान ध्रुव ।
भनि "देवेसुर" गढ़ वैरिपति पहुप स्यंह अवतार हुव ॥ १ ॥

अथ नग्र वर्णन

अति पुनीत रवनीक अवनि सुषमा कौ सागर ।
सवै वरण विधि वेद यथा ध्रम परम उजागर ।
आस पास वन वाग फलित कमलनि कमलाकर ।
वापी कूप तडाग सरित सरल सति तरल तर ।
कहि राजहंस कलहंस कुल दुर्ग दीह व्रजयेस कौ ।
भनि देवेसुर सुरपुर सम वैरिनग्र पहौपेस कौ ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

ताही छिन उत्पंनि कीय उनमनमतो उपाइ ।
सिंह सुजान वैठ्यौ हुतौ हुतौ परपाटी कौ प्यार ॥
पिता पिता के नाम के द्वै स्कंद उधारि ।
वेउ हित करिकैं करैं पौहौप प्रकाश प्रकार ॥
सिंध सुजान सुभ गौर कुल राज स्यह कौ भाय ।
कहौ क्यौ न विधि पूरवक देवेश्वर हौं जाय ॥
ठाकुर ठहराई उतैं इत अभ्यास उपाउ ।
देवेसुर सत कविन कौ पौहौप स्यंह कै चाउ ॥
उठ्यौ सुमन अकुलाइ अति सुन्यौं सुजस जसवान ।
७० ३० ५० १०
सत्तरि तीस पचास दश पायनि पति पति मान ॥

:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

इम सुजान मम आइ सुपाइव । गिरा गनेस ध्यान धरि धाइव ॥
जुक्त उक्त तिन तैं तव पाइव । यथा यथा परसंग रचाइव ॥

॥ दोहा ॥

टिपन देवेसूर कियन जुरति जुगति सौं साठि ।
वासुदेव वसुदेव सुत बरसगाठि कौं गाठि ॥
:o: :o: :o:
सिंह वहादुर कौ तनय दिल देवे सुर देत ।
पौहॉप प्रकाश किय ता पठिवे के हेत ॥ १ ॥
दूजौ पद पद प्रथम पद हितू ग्राकलै ग्रादि ।
वरग वरग व्यौपाइकै कह्यौं सिंह भष साधि ॥ २ ॥
शुक्ल पक्ष तिथि ससि सरव अर्द्ध निसा शनिवार ।
६ ३ ८ १
खंड लोक वसु वद है सवत तत्वविचार ॥
समझि मष करि भाषियौ भई होय जौ भूलि ।
पै जिनकै वुधि वोध है जिनकौ कह्यौ कवूलि ॥ ४ ॥
अर्जुन विपति सुथान कौ वासी परम सुजान ।
मौज सु मौजीराम की लिवनु भयौ परमान ॥३५॥

॥ चौपाई ॥

व्रज नरिंद्र कौ कवर प्रताप । ताकौ स्यंह बहादर ग्राप ।
पौहौप स्यंघ ताकै परगास । ताहित कीनौ पौहौंप प्रकाश ॥ ६ ॥
इति श्री अष्ट दल कवल पौहौप प्रकास सपूर्ण ॥ १ ॥

भजै सौ पुस्तक देषि कै तैसो लिष्यौ सवारि ।
कवि पडित सुजान नर लीजौ चूक सुधारि ॥

शुभं संवत् १८३९ शा १७०४ वर्षे माघ शुदी ११ वुध वासरे लिषत मिश्र षुवराम गढ़ भरयपुर मध्ये गोपाल गढ़े शुभं ।

विषय—सारदा स्तुति, श्रीकृष्ण ग्रौर श्री राधिका का गुण वर्णन, प्रीतपावस, वसत-वर्णन, राजकुल वर्णन, नगरवर्णन आदि विषयो पर कविता की गई है ।

ग्रथ मे 'दल) नाम से आठ अध्याय है जिनके नाम नीचे दिए जाते हैं —

१.	प्रथम दल—मगलाचरण तथा आश्रयदाता का वर्णन	पत्र १ से २ तक
२	द्वितीय दल (पापुरी)—सारदा स्तुति	पत्र २ से ६ तक
३	तृतीय दल—श्रीकृष्ण गुण वर्णन	पत्र ६ से ८ तक
४	चतुर्थ दल—श्री राधा गुण वर्णन या मानमजरी	पत्र ८ से १० तक
५	पचम दल—प्रीत पावस वर्णन	पत्र १० से ११ तक
६	षष्ठ दल—वसत वर्णन	पत्र ११ से १३ तक
७.	सप्तम दल—राजकुल वर्णन तथा ग्रथ निर्माण कारण वर्णन	पत्र १३ से १५ तक
८	अष्टम दल—श्री कृष्ण विषयक काव्य	पत्र १५ से १६ तक

रचनाकाल

शुक्ल पक्ष तिथि सशि सख अर्द्ध निसा सनिवार ।
६ ३ ८ १
खंड लोके वसु चंद है संवत तत्व विचार ॥ ३ ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल एक ही स० १८३९ है ।

संख्या १६७ द्वारिकादास की वानी, रचयिता—द्वारिकादास "जन", कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० वशिष्ठ उपाध्याय, स्थान व पोस्ट—चिरैंयाकोट, जिला—आजमगढ़।

आदि— :o: :o: :o:

भूलि गै तन वन (? मन) की सुधिवाल ॥ ३ ॥
बजति रसमौहरि और सितार । झूमक पग घुघुरन की झनकार ॥

॥ दोहा ॥

झाझ मृदंग सो वासुडी कि वाजत येकैं तार ।
रीझि रहत घनस्याम निरषि छवि निरुवारत है हार ॥
चलैं सव चंचलता की चाल ॥ ४ ॥
छकी सव छवि मे वृज वाला । मगन भई चितवनि वेहाला ॥

॥ दोहा ॥

द्वारिका दास आस सत गुरु की मागत है यह दान ।
स्यामा स्याम रहस लीला छवि रहै सदा उर ध्यान ॥
मिटै सव दुष दुरमति जजाल ॥ ५ ॥

मध्य—अथरेखतासब्द लिष्यते

मन के वहे से क्या भयौ जाके नाम है आधार ।
तकु नेक प्यारे गगन मे जह लैंनि दिन अमृत झरैं ।
त्रिकुटी महल के द्वार मे नित सत जह सुमिरण करैं ॥ १ ॥
चित्त पंचु सूरति स्वाँस को जह जोति वह झलकति अहैं ।
धुनि सुनि अनाहद नाद की मन मगन होय देषत रहैं ॥ २ ॥
गहि डोरि सोहग सरा की तव उठति रारंकार हैं ।
षिरकी षुली दिशि दाहिनी छवि लषत अपरंपार है ॥ ३ ॥
दल सहस को यक केवल है यह रूप पुर्ष विदेह को ।
लषि मिटत सव जजाल आवागवन छूटो देह को ॥ ४ ॥
जन द्वारिका मत दीन सतगुरु लीन करि निजु चरन मे ।
सतसंग भक्ति प्रसग मे मन रहै नित आनंद मे ॥ ५ ॥ ६ ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अद्धासब्द

सुर्ति से नैना फेरि लगावो ।
नाभी मूल स्वास के मारग केवल कली विकसावो ॥ १ ॥
पवन डोरि गहि चढो अधर का विन रस नार......

—अपूर्ण

:o: :o: :o:

विषय—भक्ति और विनयपूर्ण पदो का सग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खडित है। आरभ मे पहला तथा अत मे ग्यारहवें पत्र के पश्चात् के पत्रे नही है। रचनाकाल और लिपिकाल भी अप्राप्त है।

संख्या १६८. सात स्वरूप के कीर्तन, रचयिता—गो० श्री द्वारकेश जी, स्थान—काँकरोली, कागज—देशी, पत्र—१½, आकार—५ × ६। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ४३, पु० स० ३७ ।

आदि—श्रीकृष्णाभ्या नमः ॥ अथ कीर्त्तन श्री जी सात स्वरूपन के प्रथम श्रीजी को राग विलावल ।

देखो हो मैं श्याम स्वरूप ।
वाम भुजा ऊचे कर गिरधर दाहन भुज कट धरे अनूप ॥
वाध मुष्टि अगुष्ट दिखावत सनमुख दृष्ट सुहाये ।
चर्ण कमल दोऊ समधर कें कुंज द्वार मन लाये ।
अति रहस्य कुंजन की लीला हिय मे स्मरन कीजिये ।
द्वारकेश मन वचन अगोचर चर्ण कमल रज लीजे ॥ १ ॥

मध्य—राग विलावल ।

देखो अद्भुत रूप सखी री सूरसुता के साथ ।
विवस्था देख सुदरता कटि कर व तन रहेगे दोऊ हाथ ।
जाते चित्र गौर शाव रत्न उपमा कहन न आवे गाथ ।
द्वारकेश प्रभु या विधि देखो मय तो कर लीयो जन्म सनाथ ॥ ४ ॥

अंत—राग कानरो ।

वेणु बजात सुंदर वदन सुनत सभे आई तेह औसर ।
पूछत है छा दे कि उस दन धर्म छोड निज धर्म धर्म कीये है ।
अब उगौउ भये नंद नंदन द्वारकेश प्रभु हम सव जानत न्याय कहत मनमथ मन कदन ॥ ८ ॥

विषय—श्रीनाथ जी, मथुरेश जी, विट्ठल नाथ जी, द्वारकाधीश जी, गोकुल चद्रमा जी, गोकुलनाथ जी, मदनमोहन जी, इन सात भगवत्स्वरूपो का वर्णन है । द्वारिकेश जी सप्रदाय के उद्भट आचार्य थे । ये वल्लभाचार्य के वशज थे । अत इनके रचित पदो मे साप्रदायिक सिद्धातो का प्रामाणिक निरूपण होता है ।

संख्या १६९. भविष्यदत्त कथा, रचयिता—धनपाल, स्थान—माएसर (? गुजरात), कागज—देशी, प्राचीन, पत्र—२, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि.............लिलउ दे संतरु ।

तेण वहह तेण सहएं सघडकज्जइ । यहु सिझंति अजु निखज्जइ ।
तांणि सुणे विसरूअए वुच्चइ । आय हो सरल सहाउण सुच्चइ ।
एहु महतु पुतु तव वष्ष हो । सा मिउ धण हो पउर मा हष्ष हो ।
सहु जणणि ए गेह हो सीसारिउ । अच्छइ कढकदंतु भणे खारिउ ।

॥ घत्ता ॥

जइ रंजो ...पहु निम्मल गुणे ह । जणणि वयण हिय वइ धरइ ।
तो पहरे विकस्य महा विसेण । अम्हह पडि परिहउ करइ ॥ १५ ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ घत्ता ॥

आलिंगिउ लेवि राए नेह निरंतरेण । अद्धासप्षु दिप्पु सुघसणेह गुणंतरेण ॥६॥

पुष्पु पुष्पु पहु दरिसइ णियलोय हो। अहो नवल्लु पडिवाइउ जोय हो।
एहु सुघणवइ पुत्तु महं तउ। कमल हे तणउ सुद्धु गुणवंत्तउ॥
:o: :o: :o:
तोपि.....री विभव अवह्योएवि। थियणि दुहिय हे वयणु पलाएवि।
॥ घत्ता॥
तहि काले सुमित्त...
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—अपभ्रश भापा का काव्य है जिसमे भविष्यदत्त की कथा का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है। केवल सख्या ८ और ७२ के दो पत्ने उपलव्ध हैं। अपूर्ण होने से न तो रचनाकाल और लिपिकाल का ही पता चलता है और न रचयिता का ही, पर ग्रथ "भविष्यदत्त कथा" के नाम से छप गया है। श्री निरीक्षक जी (प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र) के यहाँ इसकी छपी प्रति है। ग्रथ अपभ्रश भापा मे है जो हिंदी का अति प्राचीन रूप है। इस दृष्टि से प्रस्तुत ग्रथ महत्वपूर्ण है। छपी प्रति मे रचयिता का नाम धनपाल है। राहुल साकृत्यायन कृत "हिंदी काव्यधारा" के पृष्ठ २६० पर धनपाल का उल्लेख है जिसके अनुसार वह सवत् १००० ई० मे वर्तमान माएसर (गुजरात ?) देश का रहने वाला धाकड़ वैश्य था। गायकवाड़ ओरिएटल सीरीज़ से ग्रथ छप गया है।

संख्या १७०क. चेतावनी, रचयिता—धरनीदास, कागज—देशी, पत्न—७, आकार—७½ × ३¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४१, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, (ग्रथदाता—प० वासुदेव तिवारी, ग्राम—भीरा, पो०—मुहम्मदाबाद, जिला—आजमगढ)।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ श्री रामचंद्राय नमः॥

ॐ जै जै उचारो धरनि ध्यान धारो।
तजो मन वेकारो भजो प्रान प्यारो॥
महाराज राजा भगति भाव काजा।
जवहि गर्भ वासा कियो मानुषासा॥
वनो माथ हाथा चन्द्रन पीहि साथा।
लगे पेट गृवा अहुठ हाथ सिवा॥
रकत मासु हडि त्वचा रोम गडि।
नयन जिमि नाशा श्रवन इद्रि आशा॥
वोझि अंत जेजा फूफेशा करेजा।
कियो दसो द्वारा पवन प्रान धारा॥
तहा प्रान प्यारा दियो आनि चारा।
मलोमुत्न किडा अग्नि आच पीडा॥
वधो अष्ट गाता अधोमुष झुलाता।
भयो कष्ट भारी कहता पुकारि॥
नरक ते निकारो मै वंदा तिहारो।
करो भक्ति पेसि कहो आजु जैसी॥

अंत—
सुषदेव जयदेव सोभा सोहाई।
रयदास रोना धना घिरताई॥

अपर नाम अधम तजि पातिसाहि ।
दुनि मे प्रगट प्रेम ताको शराहि ॥
फकिरि करै सोइ साचो अकिदा ।
मसाले रहेमा वजिदा फरिदा ॥
निके नानि के चत्रुभुज चित्त लाया ।
भजि लोक लाजा तजि मोह माया ॥
विराजो जहा ले भगत लोक माहि ।
कहा ले कहो सत को अत नाहि ॥
सकल सत दाया चेतावनि चेताया ।
"धरनिदास" आया सरन राम राया ॥

इति श्री धरनिदास कृते चेतावनी पण्डते सुनते गुनते मोक्ष मुक्ति फल लभ्यते श्री नारायन गुर गोविन्द के चर्णारविन्द पादका नमस्ते नमो नम सवत् १८४१ ॥ मीति श्रावण कृष्ण तृतीया या महंमिद पुस्तक समाप्तक ॥

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १७०ख. "निर्गुन लीला", रचयिता—धरनीदास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—९$\frac{७}{१०}$ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सवत् १९१० वि०, प्राप्तिस्थान—प० भागवत तिवारी, ग्राम–कुरथा, पो०–पीरनगर (गोरा बाजार), जिला–गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशआए नम्ह श्री सोस्ते नम्ह श्री सुभ देवता नम्ह श्री हनुमान जीव सहाइ ।

करता राम कौ सोई जुग जुग दूजा अवर न कोइ ॥

॥ चौपाई ॥

घर एक जो सीरिजनी हारा । उतरे हरिजन सो वनिजारा ॥
ता घर व्रह्म वीस्न महेसा ॥ रज तम सत तीनिउ कर भेसा ॥

॥ चौपाई ॥

ताघर पाचव तत्व समानी ॥ गुरु परसाद भेद कछु जानी ॥
धरती नीर अग्नी अव वाई ॥ पचए आइ अकास समानी ॥
पाचव को परक्रीत पचीसा ॥ समुझि क्रीपा करहि जगदीसा ॥

अंत—

मुए मुकुती समन्ह के होइ ॥ जीवन मुकुती संत जन जोइ ॥
ऐसो सवद करो निरूवारा ॥ धरनी सो गुरुदेव हमारा ॥
परम जान समुझै समुझावै ॥ धरनी सोइ परम पद पावै ॥

इति श्री निरगुन लीला सपूरन ॥

विषय—निर्गुण ब्रह्म का वर्णन और सतमतानुसार ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ मे केवल तीन पत्रे है । रचयिता धरनीदास हैं । रचनाकाल ज्ञात नही । लिपिकाल स० १९१० वि० इससे सयुक्त अन्य ग्रथ के आधार पर है ।

रचयिता के एक शिष्य, सरवेश्वर दास ने इस ग्रथ की प्रतिलिपि की है ;

संख्या १७१. धरमीनामा, रचयिता—धरमादास, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—४$\frac{१}{२}$ × ३$\frac{३}{४}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६६, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रथदाता—प० रामचरण दुवे, ग्राम–वसगीत, पोस्ट–चडेसर, जिला–आजमगढ) ।

आदि— :o: :o: :o: :o:

माई बाप भाई सव देपहि घरी घरी छीपही वाही हो ।
वरवस लै डोला वैठारेन्हो हेरही धुप न छाही हो ।
गावन्ह की सव सखी सहेली सुनत मीलन उठी धाई हो ।
दीन दास छाडी जाहु पीव धनी के फीरी पाछे हम आइव हो ।
मन दस सोध वीस गज लुगा स्यामा करै न पावा हो ।
नही दीन वीदा न लगन सो धावा वड़े अचानक आवा हो ।
जो कछु वार अहै नैहर कर सो एको नहीं कीन्हा हो ।
चुरी हाथन तरकी कानन को सग भाति पठाइव हो ।
देषी लोग अहै सासुर कर कवन वडपन पाईव हो ।
ऐसी भाति वुझावो पीयके पीय वाते नहीं वुझा हो ।
काहुक कहा सुना नही मानै करै अपाना सुझा हो ॥

मध्य—

नही आरती नही संध्या तरपन एकै धरम वषानौ हो ।
नीरंकार नीर्गुन नीरमाआ पारब्रह्म पहीचानी हो ।
नही अचवो नही भुय लगावै वीना नहाने षावो हो ।
गंगाराम राम के पीछे धरमादास कहावो हो ।
मटीका एक वना मंजुसा तामो वोलै तोता हो ।
उस तोते को वोली षाती साहेव नाम न होता हो ।
:o: :o: :o:

अंत—

एक दीली एक वंग सजावे एक आगरा पआना हो ।
एक लका एक मानीक गावै एक मारै मुलताना हो ।
काछी पटी सहर मानीकपुर तहा भया है धरमा हो ।
आने वाव वठाया साहेव आया वीवीपुर मा हो ।
राम एक धरी ग्यान आपने सीर मो दाग दगाया हो ।
वोन्ह वीनु कोई वात न पुछै वडा परुंघा पाआ हो ।
है घासी का वेटा धरमा गंगाराम क चेला हो ।
नान्हे माई वाप कह षाएसी आपुही रहा अकेला हो ।
जैसा घ्रच महीना तैसा वीना उजुर पहुचावै हो ।
:o: :o: :o:

भला औ बुरा एक कै जाने सो मेरा दीलजोई हो ।
षाक सवारी षाक की ताहै नाम धरावा धरमा हो ।
गंगाराम गुरु दुआ दीआ है तव पावा कछु मरमा हो ।

इति श्री धरमीनामा कथा सपुरन जो देषा सो लीषा मम दोषो न दीयते संमत १८६६ मीती भादो वदी ८ वार सुर्क(? शुक्र) वार कह पोथी लीषा रामदास काएथ मोकाम मउनाट-भंजन श्रीराम जी ।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का प्रथम पत्र नहीं है । रचनाकाल का उल्लेख नही । लिपिकाल सवत् १८६६ है ।

संख्या १७२क. 'महाभारत (भीष्मपर्व, द्रोणपर्व), रचयिता—धर्मदास, निवासस्थान—मऊ ग्राम, ताल्लुका—डहार, जिला—रीवाँ, कागज—आधुनिक, पत्र—३४, आकार—९¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०१, खंडित, रूप—प्र.चीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६४ वि०, लिपिकाल—सं० १६५० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जनार्दन प्रसाद जी एम० ए०, एल० टी०, ग्राम—कठौली, पोस्ट—मँजा रोड, जिला—इलाहाबाद।

आदि.................. . .. ...

तेही पाछे रथ भीषम केरी। कौरौ सबै रहे जेहि घेरी॥
तेही पाछे कुरवै नरनाहा। आयुध लीन्हे पहिरि सनाहा॥
रतन जडित रथ होइ उजियारा। देव सहित जनु सोह पहारा॥

॥ दोहा ॥

कुरवै केर महाबल सैन समुद्र उलथान।
आपनी अनी जानि लघु पडुपुत्र अकुलान॥ ५॥

:o: :o: :o.

"धर्मदास" एहि भातिन प्रथमो देवस सिरान।
डेरा परे दुऔ दल घन घूमरे निशान॥ १५॥

इति श्री महाभारथे भीषम पर्व धर्मदास कृत प्रथमोध्याय॥ १॥

अंत— ॥ दोहा ॥

भीषम कर स्वभाव सुनि धर्म सुनाई नीति।
सब कहु जानि परा अस मरन कीन परतीत॥ २८॥

सबही कीन्ह प्रदक्षिण आई। टेकि चरन पुनि बिदा कराई॥
भीषम कहु राखे रखवारा। डेरन बहुरे सबै भुआरा॥
कौरव पंडव दल बिलगाने। वसन सनाह श्रोणितन साने॥
कौरो करुणा करत सिधारे। हिय महु राम मौन मन मारे॥

॥ दोहा ॥

छांडत सांस सेष सम द्रोण दया अकुलान।
निशा बैठि मत ठानत कुरवै कर्णहि आनि॥२९

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—महाभारत के भीष्म और द्रोण पर्व के अनुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आदि अंत से खंडित है। रचनाकाल और लिपिकाल का पता नहीं चलता। जिस गाँव में यह विवरण लिया गया है वहाँ ग्रंथ की और प्रतियाँ बतलायी गई हैं, पर बहुत प्रयत्न करने पर भी वे देखने को न मिली सकी। प्रस्तुत प्रति उन्हीं से नकल की गई है। नकल करने वाले ग्रंथस्वामी के पिता श्री रूपनारायण जी शर्मा हैं।

जब मैं (अन्वेषक) गाँव छोडकर कुछ दूर आ गया तब प्रस्तुत ग्रंथ स्वामी श्री जनार्दन प्रसाद शर्मा साइकिल दौडाते हुए मेरे पास आए और मुझे वह प्रति दिखाई जो गाँव में थी और मुझे देखने को न मिल सकी थी। उस प्रति को देखने से पता चला कि ग्रंथ की रचना सं० १६६४ वि० में हुई। पश्चात् 'कर्ण पर्व' की रचना रचयिता के पुत्र श्रीपति ने सं० १७१९ में की जब धर्मदास वृद्धावस्था में पहुँच कर अशक्त हो गए थे। ग्रंथ उस समय सरसरी दृष्टि में देखा गया था। परंतु उससे कई बातों की जनाकारी मिलने की संभावना हुई। कवि परिचय में गंग, दलपति एवं श्रीपति के नाम आए हैं। गंग को प्रसिद्ध महाकवि कहा गया है। दलपति और

श्रीपति की फुटकर कविताएँ मिलती है, पर उनका वृत्त नही मिलता। ये सब रचयिता के ही पुत्र थे।

इस प्रति में केवल 'भीष्म' और 'द्रोण' पर्व है जिनके आदि, मध्य और अंत के कुछ उद्धरण यहाँ दिए जाते हैं —

भीष्म पर्व

आदि—श्री गणेशायनमः। अथ महाभारत भीषम पर्व धर्म्मदास कृत लिख्यते ॥

भीषम पर्व केर परवेसा। डेरहि आए सवै नरेसा
भीषम के सिर बांधेउ पाटा। सौंपेउ आनि रथन कै ठाटा
चदन कुसुम आनि नरनाहा। प्रभव प्रभजन पूंजी बाहा
दस दिन कर वीरा नृप दीन्हा। आदर सो उठि भीषम लीन्हा
राय के हृदय अनंद वढावा। रथ चढि सख सरोख वजावा
वीरन सबन कहा समुझाई। स्वर्ग क द्वार नियर भै आई
कर्णहि पाछे घाले राजा। भा दल दमक मारू आवाजा
है अनत मैंमस्त समूहा। महारथी चढि दिसन अरूहा
पूरब दिसा सैन भै ठाढी। मानहु चली जलानिधि बाढ़ी

॥ दोहा ॥

चारिहु अग साजि दल रन कर कीन अगेर।
छुपे अकास मजीठी वान पितामह केर।

मध्य—

वेधे वान विषम तन वीर परे मुरुछाई
भीषम सिंह ससा सरिस संमुख सहा न जाइ
असमसान रन वाजे भारी। जे गैंराछस करैं फेकारी
जोगिनि रकत पियैं गिव लागी। गावहि मेद माति अनुरागी
गिधिनि अत विहर लै घाहीं। बैठी अघान स्वान गुरराही
प्रेत पिसाच कहाँ कत वरनी। रुधिर की धार धोइ गै धरनी
देखु देखु कृष्ण कहा मुष मोरी। अर्जुन पैंज झूठि भै तोरी
मारु मारु भीषम कहं आरत सैन तोहारि
वूढ़े कर वल देषहू करत भयानक मारि

अंत—

मरि भारथ अरजुन तजि चारी। तेन्है समर नहि वधवेउ भारी
कीन्ह प्रदिछन विदा कराई। डेरन चले कर्न सिर नाई
भीषम के तन पुनि भै पीरा। मूंदि नैन दिढ धरे सरीरा
वोहि निसि भीषम के उतजोगा। जो चित लाइ सुनै सब लोगा
तेन्ह जनु तीर्थ अठरहौं कीन्हा। तेन्ह जनु दान असंपन दीना
तेन्ह जनु धर्म दया प्रतिपारी। तेन्ह पूरन जनु भए मुरारी
नवधा भक्ति भजन तें पावा। भारथ कथा चित्त जेन्ह लावा
कोटि जग्य कृत कर्म कराए। सो फल भारथ सुनतें पाए
साथ पुरंदर निज हरि धामा। जहाँ देवता है अभिरामा
तीनि लोक जस गावहि सुर नर मुनि गंधर्व।
धर्मदास एहि भांतिन भाषा भीषम पर्व ॥ २६४

इति श्री महाभारथे भीषम पर्व भीषम सरसेज्य परनो नाम दसमो अध्याय १० इति श्री कथा सपूरन जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष न दीवते सवत् १९५० विक्रमी मिती एगहन वदी ४ सन १३०१ फसली व-सन १८९३ ईस्वी हस्ताक्षर वृज मगल सिंह कठौली ॥

आदि—श्री गणेशाय नम. । श्री कथा महाभारथ द्रोन पर्व लिख्यते ॥

जेहि दिन भारथ भीषम मारे । ताही देवस होतु भिनुसारे
विहरी रैंन तिमिर गै फूटी । ललित लपट दिनएर कै छूटी
जागत चिंता उदधि अथाहा । भारी भै समान मन माहां
राजै सवही दीष बिलोई । अब सग्राम समर्थ न कोई
कुरवैं करन समुझि भुज भारी । कठिन काल वंधु हितकारी
भैकर सरन हरन मन आवा । करन करन सबही गोहरावा

॥ दोहा ॥

वासुदेव देवन्ह कहं जैसे सदा सहाय
ऐसेह आजु करन रन नाहिन आन उपाय

मध्य—

॥ दोहा ॥

चेदिराज रन जूझे सहित सतग मतग
दारुन द्रोण दवानल जरहि जुझार पतग

जरासिंधु सुत मगह क राऊ । नृप सहदेव ताहि कर नाऊ
सो करि कोह तजत सर धावा । अतरहि द्रोण निपाति षसावा
दल चतुरंग मारि महि पारा । षलल षेत भय लाल अपारा

॥ दोहा ॥

वाए दहिने सन्मुष सब दर गये सिराइ
मानहु द्रोण धरिग रन मह पैठे धाई

अंत—

तेन्हकर तनै महाकवि धर्मदास कविराज
चद्रभान तेनके कुल बरनत लागत लाज

विस्नु भक्त पुरुषन्ह चलि आई । जप तप नेम धर्म अधिकाई
पडित गुनकर पारव पारा । भाषा मह कवि रीति रसारा
मृथा वाद दोष कह डरऊ । तेहि बरे कवीत नहि करऊ
अपने कहे न फिरती होई । परमुख अस्तुति सोभा सोई
अपने मुष कर षान समाई । इन्द्रौ कहै हरू होइ जाई
विना कहै घटि जानै लोगा । उदै क आषर जीभि जमोगा
हरिहर देव हरिहि लै आया । चन्द्रभान तेन्ह के कुल जाया
तेन के वंस धर्म कर धामा । धर्मदास कविराज क नामा

॥ दोहा ॥

तासु तनै कुल मंडन कवि सेषर कवि गंग
जेन्हके भाष बिलास कै बानी तरल तरग

इति श्री महाभारथे द्रोणपर्वनी द्रोण वधनो नाम पंचमो अध्याये ५ इति श्री द्रोण पर्व संपूर्ण जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष न दीवते सम्वत १९५० विक्रमी मिति एगहन सुदी ११ सन१३०१ फसली वा सन १८९३ ईस्वी हस्ताक्षर वृज मंगल सिंह साकीन कठौली जिला इलाहाबाद प्रगना खैरागढ़ डाकखाना मेजा रोड ।

॥ दोहा ॥

द्रोण पर्व एहि भातिन तीनि पहर दिन चारि
धर्मदास कवि वरना कुर पडव कै मारि
श्री नरसिंह कृपा भै जवहीं । वर्ष पचीस केर कवि तबहीं
संवत विक्रम भूपक भैऊ । सौरह सौ औ चौसठि गैऊ
जह लगि उगवै अथवै भानां । ताहि सलाम सकल सुभ नाना
महि वघेल विक्रम कै साके । उपमा सचु आहि नहि जाके
मउ नगर तसा देस उहारा । वासुदेव जहां भुम्य भुवारा
रितु वसत औ माधव मासा । पुन्य देवस तंह कीन्ह प्रगासा
भारथ सुने तवन फल होई । पाछे वरनि कहा सब कोई

संख्या १७२ख. महाभारत (सभ पर्व, वनपर्व और उद्योगपर्व), रचयिता—धर्मदास, निवासस्थान—ग्राम—देस, उहार—वघेलखड, जि०—मऊ, कागज—देशी, पत्र—२७६, आकार—९$\frac{3}{4}$ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५८८, खडित (उद्योग पर्व के अत मे सख्या १०९ का पत्र नही है), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी और कैथी, रचनाकाल—स० १७११ वि०, लिपिकाल—सवत् १८७७ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० रघुनाथ सिंह, ठा० शिववरन सिंह, ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री राम ॥ पर्व दुसर ॥ २ ॥ श्री गनेसायनमः कथा समार्पवा ॥

॥ सोरठा ॥

वंदौ पवन कुमार पलवन पावक ग्यान घन ।
जासु हृदै आगार वसहि राम सीआ चापधर ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

प्रथमहि वंदौ दिनमनि देवा । आदि सिस्टि जाकहु जग सेवा ॥
जेकरे उदै राति दिन होई । त्रीभुवन का जग भजै सव कोई ॥
सध्या प्रातः पुनि कइ रासी । रिषि सब करहि वेद अभियासी ॥

:o: :o: :o:

धर्मदास कवि जेहि सव जाना । तेन कर तनै गुनी सग्याना ॥
तेन महि एकहि श्रीपति नामा । गुनगन विद्याकर अभिरामा ॥
तेन हसि वचन कहा कर जोरी । तात सुनहु विनती एक मोरी ॥
कवरौ पडव उपजैउ कैसे । दुनहुन दुसह वैर भा कैसे ॥

॥ दोहा ॥

सो सव मोहि सुनावहु जस जानतहहु तात ।
व्यास कहा जो भारथ पर्व इगारह औ सात ॥

:o: :o: :o:

॥ पर्वांत ॥

संवत साह असोक कर भैउ । सत्रह सै इग्यारह गएउ ॥
वसुधा साहिजहा कै साके । उपमा रिपु वरिआर न ताके ॥
विंध्य उपर इहा देस उहारा । सेगर साहि प्रताप भुआरा ॥
महासींध ताकर जुवराजा । दान जुध्य कै जासौं लाजा ॥
आसान देव कवि इक जाहा । कुसुम विस्टी वरषहि सुर ताहा ॥
सो नरसिंघनि सुआएसु दीन्ह । धर्मदास कवि तव एह कीन्ह ॥
पुन्य कथा यह पातप हरइ । नरनारी जेहि सुनतै तरइ ॥

॥ दोहा ॥

धर्मदास एहिभातिन्ह भारत सभा प्रसंग ।
तावे तनं लोकमनी कविगन महँ जनु गग ॥ १८ ॥

मध्य—

वन पर्वांत

छद हरिमोतिका

दुष हरब रमानेवास सो मुनि राधीका पति बोलेउ ।
मम अग जानेहु आपु सब को भग कवौ न बोलेउ ।
अब अजर अमरा अछेहु वरदै दान हरी गवनेव घरे ।
सुनि हर्ष धर्मनेवास श्रीपतिदास वन भाषा करो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सव विवेक दिसि धन कै एक दिसि भारथ ढोइ ।
तौंली तूला तारहू वीवुधा हवौं न पूरन होई ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अंत—

उद्योग पर्वांत

आउध वाहन अंभर झीना । जे जस तेहि तैसे सब दीन्हा ॥
बालगुरेज वरनी नही जाइ । चमकै अन्न चपला की नाइ ॥

॥ दोहा ॥

धर्मदास एहि भातिन्ह साथहि वीर परोग ।
भीषम पर्व आगै है इहा लगी भाउत जोग ॥ १ ॥

इति श्री महाभारथे उतजोग पर्वनीनाम कवि धर्मदास क्रीत वीर डेरन्ह वासनो नाम षस्टमो अध्यायेह ॥ छंद ॥ ६ ॥ ६ ॥

मीति चैत्र सुदी ६ सवत् १८७७ की साल मा लीषा मोकाम लवऐन तालुके अरइल प्रगने इलाहाबाद ।

विषय—महाभारत (सभापर्व, वनपर्व और उद्योग पर्व) की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत साह असीन कर भैऊ । सत्रह सै ग्यारह गएऊ ॥
वसुधा साहिजहा कै साके । उपमा रिपु वरिआर न ताकै ॥

संख्या १७२ग. महाभारत (उद्योग पर्व, भीष्म पर्व, द्रोण पर्व), रचयिता—धर्मदास, स्थान—मऊ ग्राम, (देश, डहार, बघेलखड), कागज—देशी, पत्र—२८७, आकार—६¾ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६४ वि०, लिपिकाल—स० १८८४ वि० (१८८८ वि० उद्योगपर्व), प्राप्तिस्थान—ठा० रघुनाथ सिंह, ठा० शिववरन सिंह, ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—उतजोग श्रीगणेशायन्म्ह ॥ श्री देवियान महा ॥ पोथी लीषा उतजोग पार्व प्रति घामदास कै ।

कवि कह प्रथमहि व्यास बताही । जेहि सुमिरत उर सुमति समाही ॥
सुष समूद्र दुष दुसह के भजन । रुचिर रूप राजत मनरंजन ॥
अंबर लोहित सोहित त्राहा । गज मुष मह सोभित ससि राहा ॥

पाक हेत दुइ कुंभ सुठाना । तीनि नएन भुज चारिअ जाना ॥
पंचवदन सुत षटमुष भाई । पुरुष अनाद आदि नहि पाई ॥
वंदही पद इंद्रादिक देवा । पावहि सिध्य करहि जे सेवा ॥
सकल मनोरथ दाएक धार्मदास पद ध्यान ।
जे उर जपं नीरतर पावै फल निर्वान ॥

:o: :o: :o:

धार्मदास एहि भांतिन्ह साधही वीर प्रयोग ।
भीषम पार्व आगे अहही इहा लगे उतजोग ॥

इति श्री महाभारते उतजोग पार्वनी कवि धार्मदास कीति सिविखास नो नाम षष्टमो अध्याए ॥ ६ ॥ ६ ॥

उतजोग पार्व लीष धर्मदास कीत जो देषा सो लीषा मम दोष न दीअते पंडित जन सो बिनती मोरि वाचव अंछर जोरि कर टुटेउ अंछर लेव वटोरि इहै वड़ाई वुधन की ॥ संवत १८८८ के साल मीती माघ वदी सतमी वार मगल के सपुरन भा दसषत सीउवकस सोमवंसी कइ ॥

:o: :o: :o:

मध्य—

भीष्मपर्व

एतना कहत गए चली ताहा । बैठे पाट पीतामह जाहा ॥
कै दंडवत कीन्ह परनामा । देषि तेज जस निधि कर धामा ॥
उठि कै मीले परसी हीअ लाए । आदर कै आगै वैठाए ॥
दै आसीस पूछा सुभ काजा । कहां चले राजन्ह कए राजा ॥
कुशल पूछि केसव सन चीतै चरन चीत दीन्ह ।
पुनि हसी कहा पीतामह कहा बीजै न्रीप कीन्ह ॥

:o: :o: :o:

द्रोण पर्व

द्रान पार्व एहि भातिन्ह तीनि पहर दीन चारि ।
धार्मदास कवि वरना कुर पडव कइ मारि ॥
श्री नरसिंह कीपा भई जवही । वार्ष पाचीस केर कवि तवही ॥
संवत वीक्रम भूपक भएऊ । सोरह सए औ चौसठी गएऊ ॥
जहं लगि उगवै अथवही भाना । ताहि सलाम सकल सुठाना ॥
महि वघेल वीक्रम कइ साके । उपर सात्रु आही नहि जाके ॥
मऊ गाऊ औ देस डहारा । वासुदेव तेहि भुम्या भुआरा ॥
रीतु वसंत औ माधव मासा । पुन्य देवस तेहि कीन्ह प्रकासा ॥
भारय सुनेही जवन फल होइ । पाछेहि वार्नो कहा रहा सोइ ॥
धार्मक तनए महाकवि धार्मदास कविराज ।
चाद्रभान तेन्ह के कुल वर्नत लागहि लाज ॥
आपन मइ नहि कहा वषाना । जगत विदित जसु जेहि सव जाना ॥
वीस्न भाक्ति पुरुषन चलि आइ । जप तप नेम धार्म अधिकाई ॥
पंडित गुन कर पारव पारा । भाषा मह कवि रीति रसारा ॥
श्रीयावाद दोष कहं डरउ । तेहि वरे नर कवित्या ना करउ ॥
आपने कहे न कीरती होइ । परमुष अस्तुती सोभा सोई ॥
इंद्रौ कहइ हरू होइ जाइ । अपने मुष कर षान समाइ ॥
बीना कहे घटि जानही लोगा । हीदै एक आपर जीभी जमोगा ॥

हरि हरदेव हरिहि लए लाए । चंद्रभान जेन्ह के कुल जाए ॥
तेन्ह के वस धार्म कर धामा । धार्मदास कविराजक नामा ॥
तासु तनए कुल मंडन कविसेषर कवि गग ।
जेन्ह के भाष वीलास कें वानी तरल तरग ॥

इति श्री महाभारथे द्रोन पार्वनी कविस्रौ श्री धार्मदास कीतौं द्रोन वधनोनाम पंचमो आध्याये ॥ ५ ॥ द्रोन पार्व संपुरन ॥

द्रोन पार्व सपुरन जो प्रति देषा सो लीषा मम दोस ना दीआते संवत १८८४ मीती पुस वदि ७ रविवासरे प्रति उतारा सीउवकस सोमवसी ॥

विषय—महाभारत (उद्योग पर्व, भीष्म पर्व और द्रोण पर्व) की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—द्रोण पर्व मे रचनाकाल सवत् १६६४ उल्लिखित है, लिपिकाल उद्योगपर्व छोडकर सवत् १८८४ है । उद्योग पर्व में सवत् १८८८ दिया है ।

संख्या १७२घ. उद्योग पर्व (महाभारत), रचयिता—धर्मदास, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—१२¾ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११००, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६३ वि०, प्राप्तिस्थान—कुवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—साहीपुर नंलखा, पोस्ट—हडिया, जिला—इलाहावाद ।

आदि—श्री गणेसायनमः ॥ पोथी उतजोग पर्वनि महाभारत ॥

॥ चौपाई ॥

कवि कह प्रथमहि प्रनवौ ताही । जेहि सुमिरत उर सुमंति समाही ॥
सुष समुद्र दुष दुसह के भजन । रुचिर रूप राजत मन नदन ॥
अवर लोहित सोहित देहा । गजमुष मह सोभित ससिरेहा ॥

॥ दोहा ॥

.......भारथदाएक "धर्मदास" पद ध्यान ।
जो उर जपं निरतर सो अब ही फल पाव ॥ १ ॥

घट घट भुगुति स्वाद सव लेई । आपनु मिन्न नर्क तेहि देई ॥
अजा अविद्या जाकर नामा । सचर अचर सव घट विस्रामा ॥
नारायनी विस्न के माया । जेइ निज काजे जग भर्माया ॥

अंत—

आउध वाहन अंवर भीना । जेजे जस तेहि तैसं दीना ॥
वालगुरे जव नीर्नहि....चमक अन्न चपला की नाइ ॥

॥ दोहा ॥

'धर्मदास' एहि भातिन्ह साधहि वीर प्रयोग ।
भीषमपर्व आ......हा लगे उतजोग ॥ १६८ ॥

इति श्री महाभारते उद्यमपर्वनि कवि श्री धर्मदास कृतौ शीवीर प्र....षटमोऽध्याय ६ ॥ संवत १८६३ श्रावण मासे कृष्णपक्षे नवम्यां भृगुवासर पुस्तकं स० ।

विषय—महाभारत उद्योगपर्व की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के वीच वीच के कई पत्ते लुप्त है । रचनाकाल अविदित है । लिपिकाल सवत् १८६३ वि० दिया है ।

संख्या १७३. प्रबोध चद्रोदय नाटक, रचयिता—धौंकल मिश्र, कागज—देशी, पत्र—१२४, आकार—९ × ५$\frac{3}{8}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह ६५।५२ वस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ छप्पै ॥

शकरनंदन इदुभाल गणपाल महामति।
मुत्तिमाल गल चारु हारु झमकत उरि विरतृति।
हरत विघन वर जाल हाल पूजित नवनिधि धर।
तुंदि विशाल निहाल करत ध्यावत सव सुर नर।
गजवदन रदन इक सुषसदन मदनदहन मूषकगवन।
जय शिवानंद आनंद निधि अति अमद भारति भवन॥ १॥

:o: :o: :o:

॥ वस वर्नन ॥ अनुगीत छद ॥

भूपति भयौ जदु वस मे इक वदन स्पघ उदार।
जल निधि सुता जिहि भुवनमे प्रगटी अमित विस्तार।
भूपाल भूमि जिते सकल वंदत चरन अरविंद।
नदन वहुत जाके भये पूजत सदा गोविंद॥ ४॥
द्वै सुत उदार सुचारु ते सिरदार छवि जितमार।
गुनग्राम मडित जुद्ध पडित षडि शत्रु अपार।
वय करि वड़े महराज सूरज मल्ल उज्जल रूप।
जीती अनेकन वार सेना म्लेछ वोरे कूप॥ ५॥
तिनतें भये परताप लघु जिन कीअ लघु परताप।
श्री रामचरण सरोज वंदत प्राप्ति पद दुरवाप॥
तिनके वहादुर सिंघ राजा भये गुन गंभीर।
गुणि जन समुद्र आनंद करह मुकर सरस रस धीर॥ ६॥
सुत श्री वहादुर कै पहुप परसिद्ध विपुल स्वरूप।
जगमगत जाको तेज उज्वल लपत भज्जत भूप॥
श्री पुष्प के सुत तीन प्रगटे जे महा परवीन।
महाराज श्री रणजीत स्यह प्रताप रक्षित पीन॥ ७॥
सुदर पुरंदर नंद मनु जिमि उदधि नंदन चद।
प्रगट्यौ कुसुम नंदन वड़ौ श्री तेजस्यंह अनंद।
रघुवर चरण युग नित्य वदत लहत परमानंद।
गावत सुनत निरमल चरित ध्यावत गुनन के वृंद॥ ८॥
तवही अनुज्ञा पाय धौंकल मिश्र मति अनुसार।
रचि वर्ण भाषा के धरे सज्जन पढौ करि प्यार॥ १०॥

अंत— ॥ मोहिनी छंद ॥

विष्णु भक्ति उचरी तिहि वैन सुनाय।
उठौ पुत्र कछु चहियैं लेव सुभाय॥ ९१॥
पुरुष उच्चरयौ मात न यातें और।
भलो कियौ उपकार कहौं सिरमौर॥ ९२॥
सांति अराति भए भूपति के आज।
भो कृतकृत्य विवेक लहे सुषसाज॥ ९३॥

निरमल आनद पद मैं कियौ प्रवेस ।
यातैं परैं न कारिज और सुवेस ॥ ६४ ॥
श्री पुष्प नंदन तेज राजत इदु वस प्रदीप है ।
रघुवीर पद अरविंद कौ हिय ध्यान और प्रतीप है ।
तिहि आनि मान सुछंद "धौकल मिश्र" रचित निसक है ।
परबोध चद्रोदय सु नाटक भयौ षष्टम अक है ॥ ६५ ॥

विषय—सस्कृत के प्रवोध चद्रोदय नाटक का अनुवाद ।

संख्या १७४क. अनुरागलता, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृंदावन, कागज—देशी, पृष्ठ—२ (७८ से ८०), आकार—७ × ११ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६० लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० ब० ८३, पु० स० ६१२० ।

आदि—अथ अनुरागलता लिख्यते ॥ दोहा ॥

॥ चौपाई ॥

प्रेम वीज उपजै मन माही । तव सव विषै वासना जाही ॥ १ ॥
जग तैं भयो फिरैं वैरागी । वृंदावन रस मे अनुरागी ॥ २ ॥
सो अनुराग परम सुखदाई । तिहि विन ताहि न और सुहाई ॥ ३ ॥
नवल प्रेम रस अटक्यौ जोई । धन्य वैराग ताहिको होई ॥ ४ ॥
निसप्रह होइ देह तें न्यारा । जहां मन लग्यौ सोइ इक प्यारा ॥ ५ ॥
ताही के रस घूमत डोलै । भरैं नैंन जल मुखहु न वोलै ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

तीन लोक कौ राज सुख देख्यौ तुला चढाइ ।
निमष प्रेम सुष गरुव अति तिहि आगैं घटि जाइ ॥ ७ ॥

मध्य—पृ० ७६

॥ दोहा ॥

प्रेम रासि दोउ रसिक वर विलसत नित्य विहार ।
ललितादिक नित लेतहैं तिहि रस कौ सुखसार ॥ ३८ ॥

॥ चौपै ॥

नित्य किशोर रूप की रासी । विलसत प्रेम निकुंज विलासी ॥ ३६ ॥
ऐसें दोऊ रस मे भीनें । चद चकोर नैंन मन कीनें ॥ ४० ॥
एक प्रान द्वै देह विहारी । तिनके वीच प्रेम अधिकारी ॥ ४१ ॥
सहजहि ताके रसबस प्यारे । एक सुभाउ दुहुन मनहारे ॥ ४२ ॥
तिहि रसकौ रस अद्भुत आही । ललितादिक दिन लेत है ताही ॥ ४३ ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

परम सनेही जुगलवर जानत प्रीति की रीति ।
मन वच कै ध्रुव जिन भजे तेई गये जग जीति ॥ ६६ ॥
सत्तरि दोहा चौपई भई अनुरागलताहि ।
जो कोउ उर मे आनिहै फिरि है प्रेम लताहि ॥ ७० ॥

इति श्री अनुरागलता संपूर्णम् ।

विषय—हित सप्रदाय की सेवा सिद्धात भावना के अनुसार भगवत्सवधी प्रेम का माहात्म्य और उसकी प्राप्ति के उपाय के साथ श्री प्रभु के युगल स्वरूप का वर्णन किया गया है ।

संख्या १७४ख. आनंदाष्टक, रचयिता—ध्रुवदास, निवासस्थान—वृंदावन, कागज—देशी, पृष्ठ—१ (८१), आकार—७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० वि० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ८३, पु० सं० ६।२३।

आदि—अथ आनंदाष्टक लिख्यते ॥ दोहा ॥

सखी सबै उडगन मनौं अंकि वारि आनद ।
पिय चकोर ध्रुव छकि रहे निरखि कुवरि मुख चंद ॥ १ ॥
ऐसी अद्‌भुत समा बनी इकछत सुख की रासि ।
फूले फूल आनंद के सहज परस्पर हासि ॥ २ ॥
देखि लाल के लालवहि लालचंद ललचाइ ।
नवल कटाक्षित रंग रस पीवतहू न अघाइ ॥ ३ ॥
एकहि पैगुन प्रेम रस रूपरु सील सुभाउ ।
अद्‌भुत जोरी बनी ध्रुव देखि बढ़त चित चाउ ॥ ४ ॥
या रस के जे रसिक जन तिनकी कौन समान ।
बिना मधुर रस माधुरी परसत नहि कछू आन ॥ ५ ॥
रसिक तबहि पहिचानिये जाकै यह रस रीति ।
छिन छिन हिय मे झलकि रहै लाल लाडिली प्रीति ॥ ६ ॥

मध्य—

यह रस जिन समझ्यौ नहीं ताको ढिग जिन जाहु ।
तजि सतसंग सुधा रसहि सिवसुतहि जिन खाहु ॥ ७ ॥
वृंदावन रस अति सरस कैसें करो बखान ।
जिहि आगें बैकुंठ को फीको लगत पयान ॥ ८ ॥

अंत—

यह अष्टक जो पढ़ै ध्रुव संध्या और सवार ।
ताकें हियें प्रकासि रहैं मिटै त्रिगुण अंधियार ॥ ९ ॥

इति श्री आनंदाष्टक संपूर्णम् । समाप्तः ॥

विषय—पुस्तक की सपूर्ण नकल दी गई है। इसमें हित सप्रदाय की सेवा सिद्धांत भावना के अनुसार भगवत्स्वरूपानंद का वर्णन है।

संख्या १७४ग. प्रेमलता, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृंदावन, कागज—देशी, पृष्ठ—२ (७६ से ७८ तक), आकार—७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८ परिमाण—(अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, ह० बं० ८३, पु० सं० ६।१६।

आदि— ॥ अथ प्रेमलता लिख्यते ॥ चौपई ॥

प्रथमहि सुभगुरु पद उर आनो । बात प्रेम की कछुक बखानो ॥ १ ॥
और कृपा रसिकनि की चाहो । तव या रस को सर अवगाहो ॥ २ ॥
लाल लाडिली जो उर आनि । तैसी मोपै जात बखानी ॥ ३ ॥
घटि बढि अक्षर जो कहूँ होई । लेहु बनाइ कृपा करि सोई ॥ ४ ॥
रसिक रसिकनी को जसु जानौं । और कछु जिय जिन उर आनो ॥ ५ ॥

कहो प्रेम की गति ध्रुव यातें । सुनतहीं सरस होत हिय तातें ॥ ६ ॥
अरु रस रीति पथ पहिचानें । तब या रस के स्वादहि जानें ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

जिन नही समुझयौ प्रेम यह तिनसो कोन अलाप ।
दादुरहू जल मे रहै जानें मीन मिलाप ॥ ८ ॥

मध्य—पृ० ७७

अद्भुत नित्य अभूत रस लाल लाडिली प्रेम ।
छिन छिन नख मनि चद्रिकनि सेवत है सुख नेंम ॥ ३८ ॥

॥ चौपाई ॥

प्रेममई रसमेन विनोदा । नव नव उपजत है दुहु कोदा ॥ ३९ ॥
तिहि विहार रस मगन विहारी । जानत नहीं कित द्योस निसा री ॥ ४० ॥
जो कोऊ कोटिक भाति बखानें । विन स्वादी या रसहि न जानें ॥ ४१ ॥
रहत है दिनहि प्रेम रस साई । तहा मान की नाहि समाई ॥ ४२ ॥
सुक्षम प्रेम न मन मे आवै । स्थूल रूप सबही कों भावै ॥ ४३ ॥
महामधुर रस सब ते न्यारौ । जिहि ठा दुहुनि अपनपो हारयौ ॥ ४४ ॥
तिनहु देखि आसक्त हू भूली । ह्वै आसक्त सुख रस मे झूली ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

लाल लाडिली प्रेम तें सरस सखिनि कौ प्रेम ।
अटकी है निज प्रीतिरस परसत तिनहि न नेम ॥ ४६ ॥

अत—

ऐसी छवि ध्रुव नेंननि माझ । रह्यौ निरतर भोररु साझ ॥ ६४ ॥
प्रेम वेलि वृदावन फूली । पिय तमाल असनि पर झूली ॥ ६५ ॥
देखि महा छवि सुधि बुधि भूली । सब सखियनि की जीवनि मूलि ॥ ६६ ॥
तिनि सखियनि की कृपा मनाऊ । या रस की कनिका जो पाऊँ ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

निसि दिन तौ जाचत रहो वृदावन रस रेंन ।
छिन छिन दपति छवि छटा छाइ रहो ध्रुव नेंन ॥ ६८ ॥

इति श्री प्रेमलता सपूर्णम् समाप्त ॥

विषय—हित सप्रदाय के सेवा भावनानुसार भगवत्स्वरूप सबधी प्रेम तथा युगल स्वरूप की लीलाओ का वर्णन हैं।

सख्या १७४घ भजनाष्टक, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृदावन, कागज—देशी, पृष्ठ—२ (८०–८१ तक), आकार—७ × ११ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य , लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्याविभाग, कांकरोली, हि० ब० ८३, पु० स० ६।२१।

आदि—॥ अथ भजनाष्टक लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान सांत रस तें अधिक अद्भुत पवई दास ।
सखा भाव तातें अधिक जिनकें प्रीति प्रकास ॥ १ ॥

और न कछू सुहाइ ध्रुव यह जाचत निसि भोर ।
याही रस की चटपटी लगी रहौ हिय मोर ॥१६२॥
दोहा कवितरु चौपई इकसत साठिरु दोइ ।
जुगल केलि हीरावली हिय गुन माला पोइ ॥१६३॥

इति श्री रस हीलावली सपूर्णम् ।

विषय—हित सप्रदाय के सेवा-भावनानुसार युगल स्वरूप का ऋतु विहार वर्णन ।

संख्या १७४छ. हित सिंगार लीला, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृंदावन, कागज—देसी, पृष्ठ—४ (२८ से ३२), आकार—७ × ११ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ८३, पु० स० ६।६ ।

आदि—अथ हित सिंगार लीला लिख्यते·

॥ दोहा ॥

सहज सुभग वृंदा विपिन मिथुन प्रेम रस ऐंन ।
सेवत सरद वसंत नित रति जुत कोटिक मैंन ॥ १ ॥
फूली फूलनि की लता रही जमुन जल झूमि ।
तैसीय अद्‌भुत झलमलै कंचन मनिमै भूमि ॥ २ ॥
जलज थलज विगसत सहज नील पीत सित लाल ।
हेम बेलि रही लपटिकै सुंदर सुभग तमाल ॥ ३ ॥

मध्य—पृ० ३१

॥ कवित्त ॥

मधुर तें मधुर अनूप तें अनूप अति रसनि कौ रस सब सुखनि कौ सार री ।
विलास को विलास निज प्रेम की है राज दसा राजे इक छत दिन विमल विहार री ।
छिन छिन तृषित चकित रूपमाधुरी में भूले सोई रहे कछु आवै न विचार री ॥
श्रम हू को विरह कहत जहां डर आवै ऐसे हैं रंगीले ध्रुव तन सुकुवार री ॥६५॥

॥ दोहा ॥

दिन दूलह दिन दुलहिनी परम रसिक सुकुवार ।
प्रथम समागम रहत दिन नवल निकुंज विहार ॥६६॥

॥ सोरठा ॥

कोक कलानि प्रवीन नव किशोर दंपति सदा ।
सुरत सिंधु सुख लीन अति विचित्र नागर कुवर ॥६७॥

अंत—

॥ दोहा ॥

मन वच जो गावै सुनें हित सो हित सिंगार ।
तिहि उर झलकत रहैं विविपद अंवुज सुकुवार ॥८०॥
यह रस जिनिके सुनत मन नाहिन होत हुलास ।
सपने परस न कीजियं तजि ध्रुव तिनिकौ पास ॥८१॥
अस्सी दोइ दोहा कवित हित सिंगार के कीन ।
जाके उर मे वसै ध्रुव जुगल चरन ह्वै लीन ॥८२॥

इति श्री ध्रुवदास विरचितं हित सिंगार लीला संपूर्ण समाप्ता ॥

विषय—हित हरिवंश सम्प्रदाय की सेवा भावना के अनुसार श्रीकृष्ण और राधा के संयोग शृंगार का वर्णन ।

संख्या १७४ज. व्रजलीला, रचयिता—ध्रुवदास, निवासस्थान—वृंदावन, कागज—देसी, पृष्ठ—६ (५२ से ५८), आकार—७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ८३, पु० सं० ६।१२ ।

आदि—अथ व्रजलीला लिख्यते

॥ चौपई ॥

एक समे विहरत वन माही । कियौ मनौ विवि द्रुम की छाही ॥ १ ॥
यह निज रस कीजै विस्तारा । रसिक जननि को अति हीं प्यारा ॥ २ ॥
नंदलाल वृषभान किशोरी । रसिकनि हित प्रगटी यह जोरी ॥ ३ ॥
नित्य केलि दिन ऐसेंहि करिही । अति आनद प्रेम रस ढरिहीं ॥ ४ ॥
रसनिधि लीला व्रज प्रगटाई । रसिक जननि कौं अति सुखदाई ॥ ५ ॥

मध्य—पृ० ५५

॥ दोहा ॥

सहचरि मन आनंद बढ़यौ सुनत वचन अति चारु ।
प्रेम मगन आनंद उर मिलवन नदकुमार ॥१०६॥

॥ चौपाई ॥

नंदगाऊँ तेही छिन आई । मनमोहन को सैंन जनाई ॥१०॥
सैंन बूझि लालन उठि आये । ललिता देखि कछुक मुसिक्याये ॥११॥
बूझत सखी चतुर सब बातें । काहै मोहन हो कृसि गातें ॥१२॥
तब मोहन मन की सब कही । ज्यो ज्यो पाछे ही गति भई ॥१३॥
ललिता एक किशोरी देखी । मनो रूप की सींवा पेखी ॥१४॥
कोन भाँति मुख की छवि कहिये । चितवत सखी चित्र ह्वै रहियें ॥१५॥

अंत—

॥ चौपै ॥

सखियनि जुत तब मतौ कराही । नित्य मिलहि हम वा बन मांही ॥८८॥
यह मत जब मन मे करि लीनौं । निज सखियनि कौं अति सुख दीनौं ॥८६॥
तबतें खेलत वा बन मांही । सुंदर सुभग सरोवर पाही ॥१६०॥
यह लीला ध्रुव जो नित गावें । प्रेम भक्ति सो दृढ़ करि पावें ॥१६१॥

॥ दोहा ॥

प्रथम नेह ऐसे भयो विना जतन अनियास ।
यह यस गावत सुनत ध्रुव होत जु प्रेम प्रकास ॥१६२॥

इति श्री ध्रुवदास विरचितं प्रथम समागम व्रजलीला संपूर्ण ।

विषय—हित सम्प्रदाय की सेवा भावना के अनुसार श्रीकृष्ण और गोपियो की व्रज वन-लीला का वर्णन ।

संख्या १७४क. वैदक ज्ञान लीला, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृंदावन, कागज—देसी, पृष्ठ—२ (८४ से ८६), आकार—७ × ११ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६० के लगभग, लिपिकाल—स० १७६१, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० स० ८३, पु० स० ६।२४।

आदि—अथ वैदक लीला लिख्यते

॥ चौपै ॥

वैद एक पंडित अति भारी। ठाढौ सबसो कहत पुकारी॥ १॥
जैसौ रोग होइ है जाको। तैसी ओषद दैहो ताको॥ २॥
यह सुनि एक गयो तिहि नेरे। ऐसो बल ओषद को तेरे॥ ३॥
मेरे विथा बढी अति भारी। कहि मोसो कछु सोच विचारी॥ ४॥
तेरे रोग कहा है भाई। ताको ओषद देउँ बताई॥ ५॥
पाप कर्म अधिक मे कीनें। महा दुखित तिहि रोग के लीनें॥ ६॥
विषै विषम विष तन रह्यौ छाई। भव भुवग तें लेहु छुडाई॥ ७॥

मध्य—मन लाग्यौ अति जूठ सो तजि सांचहि सुख मूल।
छाडि सुधा के रस फलहि गही जाइ विष सूल॥२५॥

॥ चौपई ॥

ज्यौं ज्यौं तन अति जीरन भयो। त्यौं त्यौं रोग लोभ बल गह्यौ॥२६॥
अब तुम जतन करहु चित लाई। जातें कछु इक हियौ सिराई॥२७॥
तबही वैद तासो यो कही। करहु जतन दुख जैहै सही॥२८॥
इंद्री निग्रह जो पथ करई। तिय इमली तें मन परहरई॥२९॥
लोभ खटाई मोह मिठाई। दधि क्रोध के निकट न जाई॥३०॥

अंत— ॥ दोहा ॥

नारदादि प्रहललाद ध्रुव कीनों यहै विचार।
या जग मे या रोग कौ सिद्ध यहै उपचार॥५८॥
अब तरिहैं केते तरे याही ओषद्र षाइ।
तातें विलंब न कीजियै वेगिहि करहु उपाइ॥५९॥
मनके समझन को कह्यौ अद्भुत वैदक ज्ञान।
तन मन के सव रोग ध्रुव सुनतहि करें पयान॥६०॥

इति श्री ध्रुवदास विरचितायां वैदक ज्ञान लीला संपूर्ण॥

संवत् १७८१ वर्षे अगहन मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यायां श्रीमद् वृंदावन निजधामे लिखितं। श्री हित जू के आश्रित प्रियादासेन हस्ताक्षरे पठनार्थ नामामिधान हरी भाइ जू नें पोथी लिखाई लीला २२॥ इति श्री॥

विषय—हित सप्रदाय के सिद्धात सेवा भावना के अनुसार भगवद्ध्यान तथा प्रेम मे मन लगाने के लिये वैद्यक निदान के आधार पर भवरोग की चिकित्सा और पथ्यापथ्य का वर्णन किया गया है।

संख्या १७५क. रूपमजरी, रचयिता—नददास जी, कागज—देसी, पत्र—१३, आकार—७॥ × ५॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली,

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रूपमंजरी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमहि प्रणऊँ प्रेममय परम जोति जो आहि ।
रूप उपावन रूप निधि निति कहत हे ताहि ॥ १ ॥

॥ चोपाई ॥

परम प्रेम मधुपति इकु आहि । नद जथामति वरनो ताहि ।
जाके सुनत गुनत मन सरसै । सरस होइ वस्तुहि परसे ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १३ ॥ चौपाई ॥

कुंवरि कहति या सजन सयानी । सुपन की वातनि क्यों मुरझानी ॥
सखि कहै वलि या सुपन न होइ । सत्ति आहि अव सुनि लै जोइ ॥१३३॥
तेरो रूप अनूप सुभाइक । जान्यौ जात विरथ दिन नाइक ॥
तामैं इह इक देव मनायौ । सो वलि तो कह सपने आयो ॥१३४॥

अंत— ॥ दोहा ॥

जदपि अगम ते अगम अति निगम कहत हे जाहि ।
तदपि रगीले प्रेम ते निपट निकट प्रभु आहि ॥२७९॥
कथनी नाहिन पाइये करनी पूरा सोइ ।
वातन दीपग ना वरै वारै दीपग होइ ॥२८०॥

इति श्री रूपमजरी समाप्त ॥

विषय—प्रेम कथानक काव्य है । इसमे रूपमजरी की भक्ति का वर्णन है जो अत मे श्रीकृष्ण की नित्यलीला मे सम्मिलित हो जाती है ।

विशष ज्ञातव्य—लाल रेशमी जिल्द मे रखी हुई पुस्तक है । इसमे 'रूपमजरी' के अतिरिक्त "रसमजरी", "विरह मजरी" और "कोक मजरी" नामक ग्रथ भी हैं ।

संख्या १७५ख रसमजरी, रचयिता—नददास जी, पृष्ठ—२२ (२५ से ४६ तक), आकार—७। × ५॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६३, पु० स० १ ।

आदि—॥ अथ रसमंजरी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

नमो नमो आनन्दघन सुदर नंदकुमार ।
रसमै रसकारन रसिक जन जाको आधार ॥ १ ॥
रस मजरी अनुसरी के नदमति अनुसार ।
बरनत वनिता भेद जह पैमसार विस्तार ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ३४ ॥ अथ खडिता लक्षन ॥

प्रीतम अनत रैनि सव जागै ॥ अंग अग रति चिह्नन पागै ॥ भोर भये जाकै ग्रह आवै ॥ सा बनिता खडिता कहावै ॥६२॥ मुग्धा खडिता जथा ॥ पीय उरज अकन पहिचानै ॥ कुंभनि चिह्न सेसकुल जानै ॥ नख छत छती चितै चकि रहै ॥ ते प्रीतम कहू पूछ्यौ चहै ॥६३॥
पीय हसि ताहि कठ लपटावै ॥ सो मुग्धा खडिता कहावै ॥

अंत—यह सुंदर बर रस मंजरी । नददास रसिकनि हित करी ।
करन आभरन करिहै जोई । परम प्रेम रस पैहै सोई ॥१६२॥

॥ दोहा ॥

जदपि अगम ते अगम अति निगम कहत हैं जाहि ।
तदपि रंगीले प्रेम ते निपट निकट पिय आहि ॥१६३॥

इति श्री रस मंजरी नंददास कृत संपूर्ण ॥

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक लाल रग की रेशमी जिल्द मे रखी हुई है। इसमे 'विरह मजरी' और 'रूप मजरी' भी लिखी हैं ।

सख्या १७५ग. स्याम सगाई, रचयिता—नददास जी, पत्र—५ (२८ से ३२), आकार—७। × ६। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० २४, पु० स० १ ।

आदि—अथ स्याम सगाई लिख्यते ॥ राग विलावल ॥

एक दिन राधे कुवरि नद घर खेलन आई॥
चंचल ओर विचित्र देखि जसुमति मन भाई॥
नद महरि एसे चरचो देखि रूप की रासि॥
यह कन्या मेरे स्याम को गोविंद पुज ये आस
के जोरी सोहनी ॥

मध्य—सखी कही समझाय कहो तो गोकुल जाऊ॥
मन मोहन घन कहो तो वाको लाऊ॥
वह ढोटा अति सोहनो जो पठवें वाकी माइ॥
वडो गाडरू नंद को वेगि भली करि जाइ॥ गाडरू चतुर हें ॥१५॥

अंत—सुनत सगाई स्याम ग्वाल सब अगन फूलें। नाचत गावत चले प्रेम रस में अनुकूलें ॥ जसुमति रानी ग्रह सज्यो चदन चोक पुराय॥ वटत वधाई नद के नददास वलि जाय॥ के जोरी साहनी ॥२६८॥ इति नंददास जी कृत स्याम सगाई सपूर्ण ॥

विषय—श्रीकृष्ण की राधा जी के साथ सगाई होने का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख के मध्य मे यह पुस्तक लिखी हुई है । आदि अत मे अन्य ग्रथ लिखे है। केसरी छीट की जिल्द मे सिली हुई पुस्तक है।

संख्या १७६. नजीर की रचनाएँ फुटकर एव सुदामा चरित्र, रचयिता—नजीर, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—६ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—प० हनुमान प्रसाद मिश्र, ग्राम—सोनई वडी, पो०—करछना, जिला—इलाहावाद) ।

आदि—दुन्या अजव वाजार है कुछ जिस इहा की साथ ले ।
नेकी का दरजा नेक है वद से वदी की वात ले ।
आराम दे आराम ले आफात दे आफात लें ।
मेवा दिये मेवा मिलै फल फूल दे फल पात ले ।
कलजुग नही करजुग हे यह इंहा दिन को दे औ रात ले ।
क्या खूब सौदा नगद है इस हाथ दे इस हाथ ले ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

॥ रोटियां ॥

रोटी की फिक्र ना किसी तदबीर से रुकं ।
तीरो सिनान षजर समसेर से रुकं ।
तसषीर से न सीहंन तासीर से रुकं ।
वोह सषस फिर न तौक न जजीर से रुकं ।
पंचे हुए जिसे लिये जाती हं रोटियां ॥ ७ ॥

मध्य—॥ दया गुरु की ॥
सब धोके की टट्टी है ।
यह पेट अजब है दुन्या की यहा क्या क्या जिंस इकट्ठी है ।
और माल किसी का मीठा है और चीज किसी की पट्टी है ।
कंही पकता है कही भुनता है पकवान मिठाई पट्टी है ।
जब देषा षूब तो आखिर को ना चूल्हा भाड़ न भट्ठी है ।
गुल सेर बवूला आवहवा और कीचड पानी मिट्टी है ।
हम देष चुके इस दुन्या को सब धोषे की सो टट्टी है ॥ १ ॥
:o: :o: :o:

अंत—सुदामा चरित्र
याद करं केश्न मुरारी ॥ ५ ॥
औरत की बात सुन के सुदामा दिआ जवाब ।
तुझको है जर की चाह यह पानी का है हुबाब ।
जब इसत्री यह वोली कहा हमको हैगी ताब ।
जब हाल देषा आपका हमने निपट षराव ।
एक अर्ज की है जान कं तकसीर हमारी ।
हरदम सुमादा याद करं केश्न मुरारी ॥ ६ ॥
:o: :o: :o:
अब तो "नजीर" को बी मेरा एही ग्यान है ।
ऐ भगत मुकत दीजे मुझे जोग ध्यान है ।
सुनते औ पड़ते इसको तो सबका कल्यान है ।
श्री कृश्न नाम लीजे तो यह आन बान है ।
वैकुंठ धाम पावंगे ये हर के पुजारी ।
हरदम सुदामा याद करं केश्न मुरारी ॥
॥ सुदामा चरित्र संपूरन ॥

विषय—ज्ञानोपदेश और सुदामा की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाएँ सब खडित हैं । रचनाकाल, लिपिकाल के उल्लेख नही है । रचयिता का नाम नजीर है जो उर्दू साहित्य मे प्रसिद्ध है ।

विशेष देखिए, दत्तलाल की वाराखडी का विवरण पत्र ।

संख्या १७७. चौवीस तीर्थंकर की विनती, रचयिता—नयमल, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—अथ विनती लिख्यते ॥

ढालवदौ चौवीस जिनेस की मै ॥ वदौ चौबीसौ जिनेस ॥ काल अतीत विषै जे भजे ॥ प्रथमहि जिन निर्वान ॥ सागर वदौ जिनवर दूसरो ॥ १ ॥ महासाथ जिनदेव ॥ बदौ मैं चतुरथ बिमल जिनद ॥ नमौ सुधा मजिनद ॥ श्रीधर नमताभवरदधि तिरं ॥ २ ॥ दत्तनाथ भगवान ॥ चिमल प्रभु सुमिरत अति आनद वढ़ं ॥ उधर जी जिनदेव ॥ प्रणमौ मै अगिनि नाथ चितलाय कै ॥ ३ ॥

मध्य—करणे जसोधर सेव ॥ पूजौ मै किस्न जिनेस्वर भाव सौ ॥ ज्ञान मती जी जिनराय ॥ वदत विसुधमत्त विमल सुमति करै ॥ ६ ॥ लडूनाथ शिवकंत ॥ साति जगतबंत सुष उपजै ॥ राचौ वीसौ जिनेस ॥ काल अतीत विषै वह सिव गयौ ॥ ७ ॥ तिनं न मौतिर काल ॥ मन वच तन करि उत्यम भासौ ॥ यह वीनती सुषकार ॥ जो नरनारी गावैहि तथ की ॥ ऐसो पासी भव पावपार ॥ नथमल ज्यो सम्यक् निधरै ॥ ८ ॥

इति श्री चौवीस तीर्थंकरां की वीनती संपूर्ण ॥

अत—जैनधर्म को जो कोइ साधै कंद मूल सब त्यागै जी ॥
तरकारी हाथि कदे नहीं वीवतू पैस सदारस त्यागै जी ॥
कविन पंथ है जैन धर्म को जिसके मन कौ लागै जी ॥
देषे ते दलदल सब नासै जिहां पारसनाथ विराजै जी ॥ १ ॥

॥ इति जैन कवित्त ॥

विषय—इसमे जैन तीर्थकरो की स्तुति है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित दो ग्रथ है :—

१ अठारह नाते की चोढाल्यो—लोहट कृत ।
२ चौवीस जैन तीर्थंकर की वीनती—नथमल कृत ।

संख्या १७८. सारगधर वैद्यक, रचयिता—नैनकवेस्वर (नैन कवि ?), कागज—देशी, पत्र—३७, आकार—६ × ५$\frac{3}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६० वि०, प्राप्ति-स्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

कर अगुष्ठ के मूल ते देषहु नशा आकार ॥
जानहु शुष दुष जीव के पंडीत करहु वीचार ॥ १ ॥
मंडुक काक कुलींग गती पीत नाशा एही भाइ ॥
हम मयुर कपोत गती नाग जलौका वाइ ॥ २ ॥
तीतीर लवा लटेर गती साध मनीश नीपात ॥
चले पीन अरु शीत दुई नाश करै वहुवात ॥ ३ ॥
सप्त दीवस ज्वर वाई वश वासर ज्वर पीत को ॥
कफ ज्वर द्वादश जाई ज्वर परी पक्क जौ होई तव ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

सोठी कटाई पुस्कर मूल ॥ ककरा शूगी कटु कचूर ॥
मह लेटी गोलोई अवरा ॥ शाली जु परणी हरद पीपरी ॥
मरीची कलौंजी आही मान ॥ पीत पापरा पत्रज आन ॥
अगर घमासा कुट मीलाई ॥ लोचन वाला मू वी पाई ॥

:o: :o: :o:

गद अंगद तासु हिय जानि ॥ "नैन कवेस्वर" कहो वपानी ॥

अत—पृ० २३ ॥ अथ नीर्गुडी कल्प ॥

सनीवार पुष्य जौ होई ॥ तव आनी जै ॥ सीव पुजा की भवती से ॥ तव नीगुडी आनी ॥ छाया सुषा खाइ जे ॥ पाताल जल्र अग्नी दीजै नीरोध न कीजै ॥ ब्राह्मण कन्या नेवती जेवाई जै ऐक १ ॥ :o: :o: .o: गाई के छाछ सो दीजै पींडरोग जाई ॥१६॥ सहत सो दीजै तो राज रोग जाई ॥२०॥ गो दुध सो दीजै पुष्ट होई ॥२२॥ सम्वत ११८६० समै नाम भाद्रपद ....सारगधर वैद्यक ॥०

विषय—वैद्यक ग्रथ है जिसमे रोग, उनके लक्षण ओर ओपधो का वर्णन है।

संख्या १७६. नरसीमेतानी माला, रचयिता—नरसी मेहता, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—$7\frac{3}{4} \times 4\frac{13}{16}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८६३, प्राप्तिस्थान—श्री ओकार नाथ मिश्र, ग्राम—अर्का, पोस्ट—करारी, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री जानकीनाथाय नम. ॥ श्री गणेशाय नम॰ ॥

राग आसावरी

आवो गजानद आनंद स्वामी, कथारंग मे आवो जी।
लप लाभ सुधि वुधिना दाता गवरी पुत्र कहावो जी॥
वक्र तुड एक तुंड विराजै णयन घुघुर घुमकावो जी॥१॥
सुरनर सिध मुनि जन ध्यावै गन वछित फल पावै जी।
धूप दीप लै पोहोपनी माला नित नित मोदक लावो जी॥२॥
तुम थकी सभा सुहावणी लागै मन माही आनद आवो जी।
कृपा करो गणपति अमृत पर नित गोविद गुण गावो जी॥३॥

अंत—राग रामगिरि

धन्य धन्य तु इम कहे श्री हरी नरसैया तुमारो भगत साचु।
मेलि पुरुसातम सघी रूप थई रह्यो तेह नेहु तारे प्रेम राचु॥
तुज थकी मुज थकी भेद न थी नागरा सामलो रे मारी वेद वाणी।
अजी परतीत या नथी सारी तुजने हार आप्यो परतप भूपे।
चौदे लोक मायतो समको नही ताप मायरु एक रूपे॥३॥
जारे मे मो कल्पु ठाडो पाणी मामेरू की धुते वीतरयो तु जनें।
ताहरो अषर गावेन सामलै कुल सहित पवित्र थाये।
भणे नर सैयो मीठु बोली सु रीझवो न्यारे कर जोडी ने कृष्ण समपाय॥४॥१०४॥

इति श्री नरसीमेता जीनी माला सपूर्ण. ॥ शुभ सभवतु कंल्याणमस्तु ॥

॥ दोहा ॥

लिखी अवति के विषै विप्र तुला राम नाम।
जो याकुं वाचै सुणै जिनकु जे श्री राम॥
भसींग पठनार्थी पठै ग्रथ करि प्रीति।
आवै समझ अनेकवि... होय भक्ति की रीति॥२॥

संवत् १८६३ मिती अगहन सुदी ॥१३॥ वार वुध ॥

विषय—भक्ति विपय वर्णन।

संख्या १८०क. अवतार गीता या विजै अवतार गीता, रचयिता—नरहरदास बारहट, कागज—देशी, पत्र—३४५, आकार—११$\frac{3}{4}$ × ७$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७६७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, (ग्रंथ स्वर्गीय श्रीलज्जाराम जी मेहता, बूंदी निवासी के पुस्तकालय से सभा को प्राप्त हुआ) ।

आदि—॥ ६० ॥ श्री महागणपतएन्मः ॥ श्री रामायन्मः ॥ श्री कृष्णायन्मः ॥ श्री शारदायन्मः ॥ श्री गुरुभ्यौन्मः ॥ अथ साटक ॥ अथ बारहट जी श्री नरहरदास कृत विजै अवतार गीता लिख्यते ॥ स्त्री ॥

सुडाडंड प्रचंड मेकडसण मुदगध गल्लस्थलं ।
सिंदूरारुण तुंड मंडित मुषं भ्रंगस्य गुजारनं ॥

:o: :o: :o:

य प्रथम गुरदेव सेव सुक्र दंष्टं विद्याय प्राप्याम्यहं ।
श्री मान् झम्म सुदीक्षतं गिरिधर तस्य प्रसादे वर ॥
तं दृष्ट सतपंथ काव्य करणं विघ्नस्य हरण पर ।
श्री सुरसेव्य पदारविंद विमलं सरणागत जाच्यह ॥ ३ ॥

॥ आर्ज्या ॥

गणपति गहर ग्यांन गुंन अपन । सरसति सुदति सुमति समपन ।
गुर परसाद पाइ गुर ग्यानं । भूत भाव जुग जुगति वषानं ॥

॥ छंद पधड़ी ॥

इक समय सेष सज्या समांन । हरि सयन करत वल अप्रमान ।
धरि भुवन चतुर्दश उदर वास । सोभा सेपसज्या निवास ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

सोरह सहस अरु आठ सै इकसठि उपर आंनि ।
छंद अनुष्टुप कलि सकल पूरन ग्रंथ प्रमानं ॥
मौ जौंई सुन्यौ पुरान महिं क्रम सौंई वर्णन कीन ।
श्रौता पाठक हेत सौं पावै भक्त प्रवीन ॥

॥ कवित्त ॥

भगति पाल अनभंग रामगीता मानसर ।
निजसर्धा सौपांन भाव मिलि नीर गहर भर ॥
तहां अर्थ तरन रत्न विवध नवरस जु विहंगम ।
अदभुत उकति तरग सकर बहु छंद सुसगम ॥
डर नाहि दुष्ट अघ दुवन की सजण ज्ञांन सुसगरे ।
करि सरि विहार नरहर कहै हंस महं जामुठरे ॥

इति श्री चौईस अवतार चरित्रे ॥ बारहट नरहर दासेन विरचतं ॥ ग्रथ अवतार गीता संपूर्णं ॥ संवत १७९७ वर्षे मति माह वद ४ दिनै भृगुवारे सूर्येदियात गत जल घटी १७ ॥ समये मेषलग्न मध्ये लिपिकृता ॥ वाच्यमान ॥ चरनिद्यात् ॥ सकल पंडित सिरोमणि पंडित श्री षिमा चंद्र जी तत् सिष्य श्री फतैचंद्र जी भातृवाल चंद्रेण लिपिकृता ॥ चोधरी लूणपुत्र सुजा वाचनार्थं ॥ वीसलपुर वासतव्यां. श्रीरस्तुः ।

॥ दूहा ॥

पढण गुणण कु पुस्तिका लिष दीनी चित लगाय ।
सुगने सजन समझि कै लीज्यौ कंठ लगाइ ॥ १ ॥

मात पिता मोहन मदिल कोड वरस कायंम ।
पोथी वचणहार की दीर्घ जसदा इम ॥ २ ॥
मन रंजण वाणी गमण उक्त जुक्त आसीस ।
पोथी वंचणहार की जय राखो जगदीस ॥ ३ ॥
ज्या लगमेर अडग है तांलग उगत सूर ।
ज्यांलग आ पोथी सदा रहि ज्यौ गुन भरपूर ॥ ४ ॥
गोगन धरा विच मेरु गिर धरं संहेस , उरभार ।
जुग च्यारौ चिरंजीव ज्यों पोथी वचणहार ॥ ५ ॥
जो रस समझौ जीव में वानी वर विचार ।
राजा हमेसं राखीयौ. पोथी सुं वहुप्यार ॥श्री ॥

विषय—चौवीस अवतारो की कथाएँ वर्णन की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल उल्लिखित नही है । लिपिकाल सवत् १७६७ है । इस ग्रथ की एक प्रति (सवत् १८५८ की) पहले भी खोज मे मिल चुकी है, (खोज विवरण ६–२१०) । प्रस्तुत प्रति उससे वहुत पुरानी है । इसका प्रथम पत्र जीर्णावस्था मे है ।

सख्या १८०ख. अवतार चरित्र, रचयिता—वारह नरहरदास, कागज—देशी, पत्र—३३०, आकार—१२½ × ८½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७२६३, खडित (केवल आदि का पन्ना नही), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १७३३ वि०, लिपिकाल—सवत् १८१२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत रामचद्र टडन एम० ए०, एल० एल० वी, १० न० साउथ रोड, इलाहावाद ।

आदि—:o: :o: :o: :o:
संगीक लिविनां : हीय विष्याद दुतिहीन. ज्यो विन नीरही मीन. १ ॥

चारजाति जे बारहट नरहर मति अनुसार ।
मैं सागर पैरन लयौ कहन चरित अवतार ॥
:o: :o: :o:
नरहर प्रभु बाराह भो अवनि उधारन हेत ।
निरमूलनि दिति जाति कुल देह सत्य भय सेत ॥

इति श्री प्रथम आदि थल ॥ कवि लघुता वरनो नाम ॥

अंत—सत्तरह सं तैंतीस नियत सवत लेतरायन ।
रितु ग्रीषम आषाढ मास पष कृष्ण सपावन ॥
:o: :o: :o:
सोरं सहसरु आठ सं इकसाठि ऊपर आन ।
छद अनुष्टुप करि सकल पूरन ग्रंथ प्रमान ॥ १ ॥
मैं जोइ सुन्यौ पुरान महं क्रम सोई वरनन कीन ।
श्रोता पाठक हेत सौं पावं भक्ति प्रवीन ॥

इति श्री पौरुषेय भाषा श्री अवतार चरित्रे महा मुक्ति मारगे बारहट नरहर दासेन बिरचितं । श्री श्री अवतार चरित्र ग्रंथ संपूरन ॥ शुभ भवत् ॥ कल्याणमस्तु ॥ लिषतं मिश्र किरपाराम सुमति डौड ग्राम कोट मध्ये परगनं वनावडके ॥ लिपाइत जोसी जी श्री ५ बिरजलाल जी तस्य पुत्र चिरंजीव नंदलाल जी आत्महेत पटवर्म्य मासोत्मासे मार्गश्रमासे कृष्ण पक्षे तिथौ त्रयौदसी १३ चंद्रवासरे संवत् १८१२

॥ दूहा ॥

जव लगि मेरु अडिग है तव लगि ससि अरु सूर ।
जव लग यह पोथी सदा रह्यौ गुन भरपूर ॥

विषय—भागवत दशम स्कध के अनुसार चौवीस अवतारो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख का केवल प्रथम पत्र लुप्त है । रचनाकाल सवत् १७३३ वि० तथा लिपिकाल सवत् १८१२ वि० है ।

सख्या १८१. मनोरथ मुक्तावली, नवनीत कवि (मथुरा), पत्र—१४, आकार—११ × ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुप्टुप्)—७७०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, कांकरोली , श्री विद्या विभाग, हि० व० ५३, पु० स० ८ ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री द्वारकेशोजयति ॥

॥ दोपेहा ॥

श्री गुरु चरण प्रणाम करि वक्रतुण्ड सिर नाय ।
विप्र वाल नवनीत उर सादर शेष मनाय ॥ १ ॥

अथ मनोरथ मुक्तावली प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

श्री गोवर्द्धन धरण के चरण कमल की नाव ।
रे मन भवसागर उतरि वहुरि न दूजो दाव ॥ १ ॥

मध्य—पृ० १५

॥ कवित्त ॥

आपु कुल वालक विचारौ नेक मन माहि नगन उघारी नारी पट कस लीजिये ।
कौन कहे वालक विचित्र गुन तेरे मीत भीत कर कंस की अनीत छवि छीजिये ।
भोरे वलदाऊ भोरी मात है यशोदा दानी भोरे नदराय कौ उजागरनी कीजिये ।
टेर टेर हरि वलिहारी हो विहारी लाल हा हा अव वसन हमारे गेर दीजिये ॥१४५॥

अंत—इति श्रीमत् द्वारिकानाथ पद पद्म परागानुरक्त गोस्वामी श्री बालकृष्ण लाल हेत विरचितायां मनोर्थ मुक्तावल्यां कवि नवनीत कृते अष्टम प्रकाश, हस्ताक्षर भैरव दत्तेन श्री मथुरा गी मध्ये गोविंद घाटे समाप्तोऽय ग्रंथ. । लेखक पाठक्योः शुभं ।

विषय—श्रीकृष्ण की अनेक लीलाओ का वर्णन कवित्त, दोहा, सोरठा और चौपाइयो मे किया गया है ।

संख्या १८२. नवनीत नवसई, रचयिता—मुशी नवनीतराय, कागज—देशी, पत्र—८७, आकार—४। × ३।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुप्टुप्)—१२११, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० स० ७१, पु० स० ५ ।

आदि—श्री गणेशाय नम· ॥ अथ नवनीत नवसई कृति नवनीत राइ मुन्शी लिख्यते ॥ श्रीराधिका वर्णनं ॥

मेरी भव वाधा हरो श्री राधा सुभगात ॥
जोन्ह अधक जिद छाह ते ह्वै है सांझ प्रभात ॥
तजि तीरथि हरि राधिका मुखद्युति दृग अनुराग ॥
केस स्याम दृग ध्यान धरि लहि पल सांहि पराग ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ७५
जरी उढोनो पीत पट वास छारि ज्यौं अंग ।
पहिरें हरिहर रूपधर विहरो निडर निसग ॥३५॥३८३॥
कहा करौं तेरे विरह बीत्यौं मोहि सरीर ।
साखी है या वॅन कै नॅना धरत न धीर ॥३६॥३८४॥
मोसो चतुराई करन महामूट जिय जानि ।
तीन लोक तुम लोक के वाजें दाहि निनानि ॥३७॥३८५॥

अत—जाकी छाई राति दिन दया मया मोहन प्रिया ।
रोवति जागति राति दिन जपि स्यामा रामा रमा ॥११३॥६१६॥
सुरगुरु मुनि जन भक्त पुनि वरने भाति अनेक ।
लखि तें एकिउ कहि सकें वानी स्यामा एकि ॥११४॥६१७॥

नखसिख समाप्त ॥ अथग्रथ सपूर्ण कर्तव्या । सुपनदर्श श्री सूर लखि मनके सहविकास नवनीतिराइ मुनिसी लिखी नविसई भरी विलासा ॥१॥

शिवप्रसाद गिरिजा कृपा हरि राधा की प्रीति ।
कीने नवसत दोहरा सूरि वँसि नवनीति ॥ २ ॥
दिनकर निसि सुपनें लसे नवनीति कृष्ण प्रसाद ।
कीनें नवसत दोहरा जीयके सहज सवाद ॥ ३ ॥
१ ८ ७ ७
संवत् सुरतरु सिद्धि अरु दीप चक्र रवि जान ।
तिथि तृतीया वैशाखा सुदि वारि सोम सुत जानि ॥ ४ ॥
कृपा करें निंदें नहीं दूषन रखै छिपाइ ।
कवि जन सो विनती करो हाथि जोरि सिरि नाइ ॥५॥

विषय—नायक नायिकादि का वर्णन ।

ग्रथ मे कवि ने "विहारी सतसई" के अनुकरण पर नं. सौ दोहे और सोरठो मे राधा कृष्ण की लीलाओ को आलवन वनाते हुए सयोग वियोग शृगार का वर्णन किया है ।

संख्या १८३ लीला प्रकाश, रचयिता—नवरगदास स्वामी, कागज—देशी, पत्र—११३, आकार—$6\frac{1}{6} \times 6\frac{1}{6}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टप्)—१६७७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—धामी पथ (प्रनामी) का मदिर विशुनपुरा, पोस्ट—भागलपुर, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री किताब लीला प्रकाश ॥
प्रथम प्रनाम निज मूल स्वरूप । चिदानद जो रूप अनूप ॥
परम अखंड निज करौं प्रनाम । मम पिड सदा सोयधाम ॥ १ ॥
सो सतगुरु करि कृपा अनुसरयो । अपनो मूल बीज लै मोमे धरयो ॥
ते बीज भयो उदै अकर । तेज पुज प्रगट्यो सत सर ॥ २ ॥
तिन किन्हो मूल तिमिर को नाश । पिड वृह्मांड मैं कियो प्रकाश ॥
बोली आतम दिस्टि अपार । पोहोची छर अछर के पार ॥ ३ ॥
जब गुन तत्व नहीं ए कोए । माया मोह अहकार न सोय ॥
नाहीं प्रकृति पुरुष जीव ए तबै । मल इछ्या उपजी नाही जबै ॥ ४ ॥
तब ए अखंड वृह्मपुर अनूप । अक्षर अक्षरातीत स्वरूप ॥
इहां सत चित आनंद रूप है सार । एश गुप्त ईं भेद अपार ॥ ५ ॥

अकथ कथा यहाँ की है । जेह वेद विव गुप्त कहो तेह ।।
ए गुप्त छमक्या लपी जी ने जाप । ते ब्रह्मपुर को भेद जो पाए ।। ६ ।।

अंत—करी कृपा धनी जो मोही ते जाने धनी की धनी जी सोए ।
सुंदर साथ कहो मै कौन । पार न पावो अही मे मौन ।।७३।।
पांच सरुप अतर मे रही । लिला प्रकास कहो ते सही ।।
श्री देव चंद्र और श्री राज । सो वैठे मेरे सिरताजा ।। ७४
श्री सुंदर श्री इंद्रावती । निज 'नवरंग" जुगल रंगरती ।।७५।।३०।।

जीला गोरखपुर पोस्ट भागलपुर अस्थान वीसुनपुरा श्री ५ महाराज वृजदास जी का एह ग्रंथ है लीला प्रकास है द॰ वलीराज दास ।।

विषय—धामी पथानुसार ब्रह्म के अवतारो की लीलाओं का वर्णन ।

संख्या १८४. कहरनामा (ककहरानामा), रचयिता—नवलदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—७$\frac{15}{16}$ × ६$\frac{1}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत भोलानाथ जी (उप० भोरेलाल)) ज्योतिषी, ग्राम व पोस्ट–धाता, जिला–फतेहपुर ।

आदि—श्री गनेसहाए नम ।। श्री कहरनामा लीषते ।। प्रभु जगजीवन समरथ सई ।।
भवन भवन वीसर मरे "दास नेवल" जेन्ह के एक चल ।
गावत कहर नाम रे मदिर जोती जोतते ।।
नीरगुन फीरी रहे सुनी समइरे "दास नेवल" जो सुनंही मीलेजं ।।
फीरि नहीं आवा जाइ रे ।।

अंत—अस वेदर दीन्ही दुष दीन्ही देषत सव नरनरा रे ।
गुर साहेव समरथ का भेंटो रहो चरन लपटाइ रे ।।
वर वर प्रभु चरन मनय "दास नवल" वर पइ रे ।

कहर नाम सपुरन समापत सुभ समत १९२३ सल महीन कुआर सुदी नोमी दीन अतवार मोकाम वेनु कं छावनी वषतावर दास वैरागी के मकान प्रतऐर भए है रूपन दास महत गरंथ के मालीक है ।। संमपुरन भए जगजीवन सहेव के प्रताप से लीप दषत वर दास वैरागी ।।

विषय—ककहरा रचकर ज्ञानोपदेश दिया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—वोधकृत 'भक्ति विनोद' और प्रस्तुत रचना एक ही हस्तलेख मे है ।

सख्या १८५ नागरीदास जी के कवित्त सग्रह, रचयिता—नागरीदास जी, पृष्ठ—२ से ७२ तक, आकार—८।। × ६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७३, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग कॉकरोली, हि० व० स० ६४, पु० स० १२ ।

आदि—

एक जरीदार सेत ओढनी को ओढें दोऊ नृत्यत सुधंग गति मिलि ततकार मे ।
मुख नेंन भूषन चिकुर कल काति पुली चांदनी सरद स्वच्छ सागर के वार मे ।
नागर मयंक मीन मानो मनिगन सिवार कंज काम धीवर गहे हें रूप जार मे ।। ४ ।।

मध्य—पृ० ४७–४८

जमुना कें वीच फैली झलमल छपाकर की पावत न पार तिहिं सोभा के वखान को ।
चली जात मधु धार नवका विहार चारु कैंधो प्रतिविव यह ताके रतनान कौ ।

किधों दीपमालिका को उत्सव वरन ग्रह नागर प्रकास यह जोति सरसान को ।
किधो कोरिक अन्हात चद चारु किधो चमकं चपल भयो चूर चपलान को ॥१७७॥

अत---इति श्री नागरी दास जी के कवित्त संपूर्ण ॥ सवत् १८७३ मे चैत्र सुदि ६ शुक्रवार श्री गोल मे लिखे देवर्षि लडेंती लाल भट्ट नें लिखाये श्री गोस्वामी व्रजपति जी महाराज नें स्वार्थ परार्थ ॥ शुभम् ॥

॥ दोहा ॥

लिखि दीने हें कवित्त ये अपनी प्रति अनुसार ।
सोधि लीजियौ रावरे श्री व्रजपति अवतार ॥ १ ॥
कोरिक देत असीस हम हो व्रजपति महाराज ।
लाल लहौ आँनद गहौ करौ सु अविचल राज ॥ २ ॥

विषय---नागरीदास जी के बनाए हुए शरद, दिवाली, गोवर्द्धन पूजा, होरी, फागुन, ग्रीष्म, गगा जी, वर्षा, मान, वाल लीला प्रभृति विषयक कवित्त सग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य---पुस्तक का प्रथम पृष्ठ नही हैं । अत मे कुछ पत्ने खाली छूटे हुए हैं । अक्षर सुवाच्य हैं ।

संख्या १८६. समै प्रवध सेवा सात समे की भावना, रचयिता---नागरीदास (हित सम्प्रदाय), कागज---देशी, पत्न---२०१, आकार---४$\frac{1}{8}$ × ६$\frac{1}{8}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---७, परमाण (अनष्टुप्)---१४६५, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---स० १८६३, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह ५०७।५५ वस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि---श्री राधा वल्लभोजयति ॥ श्री हितहरिवंशो चद्रो जयति ॥ अथ समै प्रवध सेवा सात समै की भावना वाणी अनुसार लिख्यते ॥

तृपदछिंद

श्री हरिवश चद्र सुभनाम । सब सुष सिंधु प्रेम रस धाम ।
जाम घटी विसरै नहीं यह जु परचो मोहि सहज सुभाव ॥
श्री हरिवश नाम रस चाव ।
नाम सुदृढ भवतरन को नाम रटत आई सवसोहि ।
देह सुवुद्धि कृपा करि मोहि ॥
पोइ सुगुन माला रचो ॥
नित्य सुकंठ जु पहरो तास । जस वरनो हरिवंश विलास ॥
श्री हरिवंशहि गायहो ॥ १ ॥

मध्य---राग मन भावतौ
जै जै श्री हरिवश कहो मिलकें ।
सुंदर व्यास सुवन जन वल्लभ करि दरसन पायन चलिकें ॥ १ ॥
प्रेम पियाला परगट कीया पीया सत सगत मे रलि कें ।
चढी षुमारी महामधुर रस जुगल रूप नेंननि मे झलकें ॥ २ ॥
करुणा करकें अभै पद दीयौ कीये पावन या कलि कें ।
मेटी आनि कान व्रत संजम एक धर्म राधा वर कें ॥ ३ ॥
अगनित जग मे रंक जिवाए श्री राधा वल्लभ नाम अमृत फलकें ।
सरनाए अपनाए निज करि कृष्ण दास हित वलि वलि कें ॥ ४ ॥।८५॥

इति श्री समे प्रबंध सेवा सात समे की भावना श्री वाणी अनुसार सपूर्ण संमत १८६३ भादो सुदी ८ ॥

विषय—हित सप्रदाय के अनुसार सात समय की सेवा की भावना ।

संख्या १८७. रामविहार, रचयिता—नाथ कवि, कागज—देशी, पत्र—७२, आकार—६½ × ४¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—प० घुरवल जी पाठक, ग्राम–सोनपाल, पोस्ट–मुबारकपुर, जिला–आजमगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ सोरठा ॥

गणपति गौरि मनाय सुमिरि हिये विच सारदा ।
सव मिलि होहु सहाय वरनौ रामविहार कछु ॥ १ ॥
कहि हौं सोइ सवाद जो गायो है सूत ने ।
सुन्यो सहित अल्हाद सौनकादि नैमिष विषै ॥ २ ॥
आए राम विवाहि तवते अवध अनंद भल ।
सुखसागर अवगाहि छके नारि नर मुदित मन ॥ ३ ॥
एक समै रघुवीर सहित सिया बंगलें वैठि ।
निरपत पुरी गंभीर कहत जानकी सो हरषि ॥ ४ ॥
सुनु मिथिलेस कुमारि पुरी अवध एह सुभग ।
निर्मल सरजू वारि लेत हलोरा हरत मन ॥ ५ ॥
गुर वशिष्ट लै आय मान सरोवर सो नदी ।
रहेउ सुजस जग छाय वासीष्टी यह गग है ॥ ६ ॥

मध्य—रनिवासन्ह अस्नान करावा । दियो दान जेहि जस मनभावा ॥
गई पट मदिल सव रनिवासा । भई सुचित तव कीन्हो वासा ॥
रघुवर भाइन्ह सहित नहाए । द्विजन तुरित गोदान कराए ॥
आए वेगि सुमंत नहाई । कियो दान वहु विधि सुप पाई ॥
मखशाला की पूजा करहीं । जाती सकल मोद मन भरहीं ॥
आए डेरा राम सुजाना । विप्र जेवाय दियो वहु दाना ॥
करि भोजन तव चारों भाई । रनिवाँसन समेत सुप पाई ॥
वजी नौवतें दुपहर ढरिगे । जाता ठाँव ठाँव सव परिगे ॥
करत कोलाहल दिन सव वीते । राति जाग्रन कियो सप्रीते ॥
भयो भोर द्वा तव वोला । उठि सुमत कह वचन अमोला ॥
करहुँ सोच रघुवीर तुरता । सुनत वचन उठिकै भगवता ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

अष्टोतर सत पाठ जो करै हृदै हरषाय ।
ताके हिय सीता सहित रामराय वस आय ॥ ८९ ॥
अष्टादश शत अठसठै संवत सुचि इषु मास ।
सुक्ल पक्ष द्वैजी गुरौ वेला अमृत प्रकास ॥ ९० ॥
पूरण भौ रघुवीर जस चूरण भवरुज केरु ।
नाथ कृपाल दयाल वड़ सुमिरौ साँझ सवेर ॥ ९१ ॥

:o: :o: :o:

एहि विधि राम विहार की कथा कही कछु "नाथ" ।
कविता रोचक नहि वनी गायो प्रभु गुनगाय ॥
कह्यौ सूत हरषाय सुन्यो सौनकादिक सवै ।
रामविहार सोहाय मगलमय रघुवीर जस ॥ २६४ ॥

इति श्री सुन (? सूत) सौनक सवादे राम विहारे प्रथम परिच्छेद परिपूर्णमस्तु शुभमस्तु ॥

विषय—रामचद्रजी ने स्त्री और भाइयो सहित जो जो आनद विहार किए उनका वर्णन ।

रचनाकाल

अष्टादशशत अठसठै संवत सुचि ईपुमास ।
सुक्ल पक्ष दूईजि गुरौ वेला अमृत प्रकास ॥ ६० ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८६८ है । लिपिकाल दिया नही । रचयिता का नाम नाथ कवि है । रचना दोहे, सोरठे और चौपाई छदो मे की गई है । भापा अवधी है ।

पुष्पिका के अत मे प्रथम परिच्छेद की समाप्ति की सूचना है जिससे पता चलता है कि आगे भी कुछ परिच्छेद होगे । ग्रथ सूत शौनकादि ऋपियो के सवाद के रूप मे है । यह किसी पुराण के आधार पर लिखा गया विदित होता है।

पुष्पिका मे लिपिकाल नही दिया है जिससे पता चलता है कि प्रस्तुत प्रति रचयिता के हाथ की ही लिखी गई होगी ।

संख्या १८८. कवित्त, रचयिता—कविनाथ, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—$9\frac{3}{10} \times 6\frac{4}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पडित विश्वनाथ दुवे, ग्राम—रेकवारे डीह, पो०—मऊ, जिला—आजमगढ ।

आदि—

सुन्दर मनोहर कविताई कलाप गुण नहि हिय मेरे एक लालसा अमोल है ।
सुकहि दरसायो आततायी समान यह एते वज्र पापी मतवादी कुड गोल है ।
नान्हक कवीर दरियादासी अतीत गण भीषा शठकोप जो अनेक पंथ टोल है ।
वैरागी औ अचारी शिवनारायनी समूह एते धर्म कर्म दूषक दयानदी पापमोल है ।
असही नवीन औ विचित्र पथ वाले यह कहँवा से आए एको वुझ ना परत है ।
वेद और शास्त्र सव वर्णका व्यवस्था लिखी आश्रम सहित तामे एको ना करत हैं ।
कहत वैरागी अचारी हम साध है पूछै कोई वर्ण आश्रम क्रोध से भरत हैं ।
भनत 'कविनाथ' यह देखिए विचारि समै कौन शास्त्र आवै सभ अलगै धरत हैं ॥

:o: :o: :o:

अंत—

आश्रमी सुसाधु को नमसकार वार वार सुनिके गृहस्थ पुनि आश्रम बिसारो ना ।
ब्रह्मचर्य गार्यहस्थ वानप्रस्थ आश्रम पै चौथा संन्यास एक आश्रम विचारो ना ।
लखिके सभ आश्रम एक अनाश्रमी विचाराको करन साकारहेतु तिनिकोपुकारो ना ।
भनै कविनाथ मोक्ष..................तुम दांत को विचारो ना ॥

:o: :o: :o:

विषय—कवीर आदि के मतो का खडन तथा वर्णाश्रम धर्म की पुष्टि का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के केवल दो ही पत्ने उपलब्ध है। रचयिता कवि नाथ हैं। रचना-काल तथा लिपिकाल अज्ञात है।

सख्या १८६क "सलोक महलानो" (?), रचयिता—नानक, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७ ६/१० × ५ ४/१० इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री युत गोपालचद्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर, अवध।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ सतगुर प्रसादि ॥ सलोक महलानौं ॥

गुन गोविंद गायो नहीं जनम अकारथ कीन।
कहु "नानिक" हरि भजि मना जिह विध जल को मीन ॥ १ ॥
विषीअन सो काहे रचो निमष न होइ उदास।
कहु नानिक हरि भजन मा परें न जम की फोस ॥ २ ॥
तरणापैं यूँ ही गयो लयो जरा तन जीत।
कहो नानिक हरि भज मना अवध जात है बीत ॥ ३ ॥
व्रिध भयो सूझे नहीं काल पहूँचो आन।
कहु नानिक नर बावरे क्यूँ न भजो भगवान ॥ ४ ॥
धन दारा संपत सकल जिन अपनी कर मान।
इनमें कछ संगी नहीं नानिक साची जान ॥ ५ ॥
पतत उधारन भैहरन हरि अनाथ को नाथ।
कहु नानिक हित जानि यो सदा वसत तुम साथ ॥ ६ ॥

अंत— ॥ दोहरा ॥

बल टूटयौ वंधन परयौ रह्यौ न कछू उपाइ ॥
कहो नानिक अव ओटहर गज ज्यूँ होउ सहाइ ॥ ५३ ॥
राम नाम उर मै गह्यो जाके सम नही कोइ ॥
जिह सुमरत सकट कटै दरस तिहारो होइ ॥
वध सखा सभ तजि गए कोई न निभयो साथ ॥
कहु नानिक इह विपति महि ऐक टेक रघनाथ ॥ ५ ॥
नाम रह्यौ साधू रह्यौ रह्यौ गुर गोविंद ॥
कहु नानिक यह जगत मो क्यूँ न भजो भगवंत ॥ ५६ ॥

महल ॥१०॥

वल हूवा वंधन छूटे सभ कछ होत उपाइ ॥
सम कछ तुमरे हाथ है तुमही होत सहाइ ॥ ५७ ॥

(संभवतः अपूर्ण)...... .....इसके वाद अन्य ग्रंथ इसी से संयुक्त है।

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण प्रतीत होता है। इसके केवल चार पत्ते उपलब्ध है। अत मे महल दस के पश्चात् केवल एक दोहा उद्धृत है। इससे विदित होता है कि अगला महल (ग्यारहवाँ) अपूर्ण है। रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता "गुरु नानक" है

संख्या १८६ख. वद्यक (नानक जी ग्रथ का मतु), रचयिता—नानक कवि, कागज—देशी, पत्र—७८, आकार—६ ५/१० × ४ १/१० इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०४२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्यसम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—१ ॐ सति नाम करता पुरखु निरभउ निरवैर अकालि मुरति अजु नीसै भंगुर प्रसादं ॥

गिरंथ वैद्य (नानक) नकाना जिआ गिरथा का मतु । नवल खास कलम ॥ सरव रोग का अउखधु नाम ॥ नाडी की परीखिआ लिखतें ॥

कर अगुष्ट जु मूल ही देखहु नस आकार ।
जानहु दुखु सुखु जीअ को पडित करहु वीचार ॥

:o: :o: :o.

भूष हीन मुष फीका रहे । उष्ण पीति कफै जुवर रहै ॥
"नानक कवि' जो कहिओ बषान । मारत लछन राते जान ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

विरछ लगावरण की विधि

रयपर १ बट २ निम ३ कचूर ४ अंब ५ कैथ ६ वेल ७ तउ नरक न देषे ॥१॥ जवाइरण की टिके पुणे लेणी आरास पाणी वीचि पैसा इकु सहतु पावणा चूरन महि पाइके ऊपरहु एहु पाणी पीणा दिने राती एते तरह षाणा नफा वहुत होइ ॥ ५ ॥

अत— जुलाव सनाय ॥

जगी हरउ । सौंफ ॥ पैसा पैसा भर ॥ चार पैसा सकरा ॥

॥ धातुपुष्ट ॥

तुक मलंगा अधेला भर शरकरा के रस साथ । अथवा दुध के साथ ॥ धातुपुष्ट ॥ नौग ३१ म्रिति २१ कपुररस २१ अदरष के रस ॥ निवु का रस खरल फरणा गोली ७ ॥ पथ ॥ मुंग का दाल कनक की रोटी घीऊ । पटाई प्रहेज ।

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—आयुर्वेद चिकित्सा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही । रचयिता का नाम नानक कवि है । पता नही, इनका सवध प्रसिद्ध सत नानक जी से है या नही । ग्रथ के आरभ मे तथा आगे जहाँ तहाँ सतो की शैली अपनाई गई है, यथा —

॥ ॥१ ॐ सति नाम करता पुरखु निरभऊ निरवक अकालि मुरति अजु नीस भगुर प्रसाद ॥ ॥

गद्य मे 'न' के लिए 'ण' लिखा मिलता है । ऐसा राजस्थानी और पजावी मे होता है । अत सभव है, सुप्रसिद्ध सत "नानक" ही ग्रथ के रचयिता हो । गद्य भी पुरानी खडी बोली या है । लिपिकार ने शब्दो को बहुत अधिक मात्रा मे अशुद्ध लिखा है ।

संख्या १६० ककहरा, रचयिता—नामदेव, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—५ × ४¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—प० श्री कल्लू पाटे, ग्राम-गोराजू, पो०—पश्चिम सरीरा, जिला—इलाहावाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।

कहत ककहरा एक संदेसा । गोरजा व्याहन चले महेसा ॥
खाख लगाय डमरु को लीन्हा । भाग धतूर पजाना कीन्हा ॥
गरे नाग शिर लीन्हे गंगा । भूषन भसन चढ़ायो अंगा ॥
घर नहि दूसर भूत बराती । चले चवात बेल कै पाती ॥

"नामदेव" इशर अस राजा । करत निहाल गाल के बाजा ।।
चंद्र लिलाट जटा फन काढ़े । लोचन तीन लोक उजियारे ।।
छाडि नगरि की लाष सोसऊ । वाहन वयेल महेस मगाऊ ।।
जतन कीन वे लोकी वानी । सोनो सींग मेढा दुइ आनी ।।
झालर औ गज मोतिन माला । धन्य वयल शिव शकर पाला ।।
नाथ हाथ आपँ पहिराइ । कंचन से पुर लेत मीठाई ।।
टेकट पाव भँय अवन वानी । चले महादेव जग के दानी ।।
ठाड़ भये इस्वर अस राजा । करत निहाल गले के बाजा ।।
डूहका वैल लवादँ वूकी । को जाने महिमा शिवजी की ।।
ढाढोल फिरँ नहिं डंका चले महाजोगी शिव शंकर ।।
नारहर वेग वेग विन लछन । तहा तुलछन तहा हेवंचल ।।
तहा पवर भँ शकर आए । नग्र के लोग देषन सव धाए ।।
थान सूत कचन के नीके । माड़व राचा हेवचल जी के ।।
धामधूम धवराहर ऊचा । देष सरूप नयन भर नीचा ।।
नाहक व्याह हेमंचल कीन्हा । गौरा रूप डिगवर लीन्हा ।।

अंत—

पारवतीन से पवर जनाई । वरवाडर तर भाग चवाई ।।
फासी दँ जिव सजौं भवानी । सषी सोच गौरा मुसकानी ।।
उला देषी चली सहेली । पारवति नकाढ़ छाडो अकेली ।।
वयल चढ़ा एक आवँ नगा । आठौं अंग सकल तन भंगा ।।
भांग धतूर कँ पाष लगाये । काली नाग गरे लपटाये ।।
मनसा सोच करँ नहि कोई । करम लिखा भर पावा सोई ।।
जवँ वरात दुआरे आई । विचका वैल वाघ गुर्राई ।।
रानक गिरिजा देषि तमासा । सपी सोच हेवान हुलासा ।।
लालीत पाव हेवान पधारे । मोतीन चौक जहा वैठारे ।।
वारे हीरा करँ नेवछावर । शंकर गौर फिरँ दुइ भावर ।।
सोस भपति तुम देउ लुटाई । अचल कीन हेवंचल जाई ।।
हरषे देव फूल वरसाइ । व्रह्मा विष्णु तमासे आई ।।

।। इति शिव विवाह संपूरण ।।

:०: :०: :०:

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—प्रत्येक अक्षर पर चौपाई रचकर शिव पार्वती विवाह वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल दोनो अज्ञात हैं । रचयिता का नाम भी स्पष्ट नही होता । एक स्थान पर नामदेव लिखा मिलता है जिससे वही रचयिता का नाम मान लिया गया है ।

संख्या १६१. रामाश्वमेध, रचयिता—नारायणदास, कागज—देशी, पत्र—२५८, आकार—१०$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७३६ वि०, लिपिकाल—स० १६१५ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नम. ॥ अथ रामास्वमेद लिषते ॥

॥ दंडक ॥

कोमल नवल जलजात से अमल जग विमल विरागप्रद राग के हरन ये ।
तीरथ सिधारे कर्म ग्यान अनुसार तातं अमित्त सवारे जग तारन तरन ये ।
सचर अचर सुचि असुचि नरायन से साधहू असाध असरन को सरन ये ।
प्रपति विचारें नंन नैसक निहारे देत कविराजन के पार सेस आनद चरन ये ॥ १ ॥

॥ छप्पं ॥

वंदि पर्म गुर चरन सर्व गुरको सिर नावहु ।
रामानुज पद कमल चारु सतत उर लावहु ।
नौमि पराकुस दास वहुरिया मुनि मुनि कायक ।
राम मिश्र दगकल नाथ निज सुषदायक ।
श्रीसठारि पद वदि कै विस्वकसैन उदार मति ।
सेवहु जगदंबा चरन श्रीनिवास पद कमल रति ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

परमपरा निज गुर की वरनी आदि वनाय ।
जिनको सरनागत पये भवसभ्रत दुष जाय ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

अतरवेद के वीच नगीच वहै जमुना को प्रवाह सुहायो ।
पडित मडित भीर भलौ जह सर्व थली सुष सपति छायो ।
धूम व सिष्य मुनीसउ के तप कौ थल शुद्ध सर्व मनभायो ।
देषत द्वेवपुरी सो लसै सुवसै इक उत्तिम नग्र इटायो ॥ ८ ॥
तापुर मे हरि मंदिर एक अनेक विवेकन को उपजावै ।
श्री नरसिंघ वसें नृप आप लषै नर सौ प्रभु को पदु पावै ॥
होहि तहा निगमागम अर्थ अनर्थन को कछु लेसु न आवै ।
सत समाज विराजत ता थल श्री पतिराज कौ कूट कहावै ॥ ६॥

॥ दोहा ॥

तिहि समीप दुज मडली माथुर वस उदार ।
श्री वसिष्ट गोती वसै रिगवेदी ज उदार ॥ १० ॥
उपजे तिहि के वंस मे लघुमति उगर नाम ।
श्री वैष्णव कुल सिष्य सो भयो जानि सुषधाम ॥ ११ ॥
तिन श्री गुर निज करि कृपा हरि सन मजु प्रकास ।
भयो मान चित सोधि कै कहो नारायन दास ॥ १२ ॥

॥ चौपाई ॥

एक बार तिहि मंदिर जाई । सुनी राम मुष कथा सुहाई ॥
सुनत भयौं हिय हरष अपारा । भाषा करि बहु चरित उचारा ॥
गुग पंगु अनुतक अधमादी । कवित विवेक कहत कवि आदी ॥
सो विचार कछु एक न राषा । रामचंद्र जसु पावन भाषा ॥
जथ देवसरि धार सुहाई । मिलहि आनि जल नीच निकाई ॥
होहि सकल ते गंग समाना । धरहि सीस ता कहँ वुधिवाना ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

संवउ दसु दस सत गनौ अप्ट अधिक इकतीस ।
नभ सित पछ एकादसी वारु वरनि रजनीस ॥

:o: :o: :o:

मध्य— ॥ त्रोटक छंद ॥

सुनि वैन कपिंद्र सरोष भयौ । अरिमर्दन के पद सीस नयौ ।
तन पर्भ विसाल कराल लसै । रन धाय चलौ धर धुध्ध धसै ॥ ५२ ॥
जनु काल बली निज रूप धरयौ । लषि चपक हू अनुमान करयौ ॥

:o: :o: :o:

॥ छप्पय ॥

सुरथ वचन सुनि कान कहत हनुमान हरषि हिय ।
तुम प्रवीन नरनाह राम के भक्त प्रानप्रिय ।
अवस होय प्रन सत्य तोर रन मोहि वाधु अव ।
तदपि न मैं मन मैं डरौ धरौ धनुहाथ जव ।
अतिसमरथ रघुवंस मनि प्रनत जानि मोचन करै ।
लषि न सकै दुष वास के परब्रह्म सव तैं परै ॥ ६ ॥

:o: :o: :o:

॥ चौपही ॥

रन मंडल कपि वधन होई । सुनि आचर्ज करौ जिन कोई ॥
सदा सुतंत्र एक रघुराया । तासु विवस सव विस्व निकाया ॥
जिमि नट विवस दारु की रमा । तिहि विधि सवहि नचावत रामा ॥

:o: :o: :o:

अत— ॥ डंडकु ॥

भवभय हारी पर उपकारी हरि लोकहि कौं दारिद विदारी सो विहारी दिसि दसु है ।
कविन विचारी अधिकारी है वान सव कहत सुनत सुष देत सरवसु है ।
ग्यान कौ समाज ग्यान मानन कौ साजु जोग जप कौ जिहाज सुधा सार कौ सरसु है ।
चापउ कौ चाव है नरायन कौ जीतौ दाउ मेरे मन भाव सियाराम जू कौ जसु है ॥ ६१ ॥

इति श्री पद्म पुराणे पातालषंडे सेस वात्सायन संवादे नरायनदास विरचिताया अरसठ कौ अध्याय ॥ ६८ ॥ इति श्री रामास्वमेद जग्य कथा संपूर्णम् ॥ श्री राम....पुस्तक पठनारथी मोतीराम पुजारी श्री गोपीनाथ जी के रूप वासमध्ये समापत संमत ॥ १६१५ ॥ जेठ बदी ॥ १० ॥ सोमवार लीषतं गोविंददास ॥ श्रीराम जी..... ॥

विषय—पद्म पुराण के आधार पर रामाश्वमेध वर्णन ।

रचनाकाल

संवउ दसु दस सत गनौ अप्ट अधिक इकतीस ।
नभसित पछ एकादसी वारु वरनि रजनीस ॥

संख्या १६२क. गोवर्द्धन लीला, रचयिता—दास नारायण (व्रजवासिया), कागज—देशी, पृष्ठ—१३ (६६ से १०८), आकार—५।। × ६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० २२, पु० स० ४।

आदि—राग बिलावल ॥

गोद वेठी गोपाल कहें तव व्रजराज सों,
अहो तात एक वात सुनो दे श्रवन हमारी ॥
भवन माझ हूं गयो धरी जहाँ सोंध घनेरी,
मे हसि मांग्यो पाय पे मेंया दे री मोय,
कर लकुटि लियें खीजि कह्यो रे यह क्यो देऊ तोहि ॥ १ ॥

मध्य—

कान्ह गए हें पटपीत आनि जव घोरी वोली ।
हूं कत लेहडो फेरि वछ के सन्मुख हो री ॥
छुव वछ अकुलायकें डाढ मेलिस महा आय ॥
भली भली खेली कहें हो कोन गोप की गाय ॥ २० ॥

अंत—

तव वृज वासी लोक देत व्रजराज दुहाई ॥
जे जे शव्द उचारि हमारो देव कन्हाई ॥
दे अशीस घर कूं चले ग्वाल गोप व्रज नारि ॥
व्रज जन गिरधर रूप ये हो वारचो तन मन डारि ॥
कहत व्रज वासिया ॥ ४० ॥

इति गोवर्द्धन लीला संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ लिखतं वनसीधर संवत् १८२८ के आसोज सुदी १२ रवौ ॥

विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

संख्या १६२ख. स्वामिनी जी को व्याह, रचयिता—दास नारायण, कागज—देशी, पृष्ठ—६ (३२ से ३८), आकार—७।×६। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० २४, पु० स० १ ।

आदि—अथ श्री स्वामिनी जी को व्याह लिख्यते ॥ राग विलावल ॥

व्रज वेद वदित वरसानो, वृषभान गोप तहा आनो ॥ १ ॥
ताकी राधा रुचिर कुमारी, पिता मात हे प्रानपियारी ॥ २ ॥

मध्य—

तव हसि उठि व्रज वाला, भले डहके नदलाला ॥ ६७ ॥
एक कहे कह्यो सुनि मेरो, एछूयो नरवेहे तेरे ॥ ६८ ॥
तेरो देह काति अति कारो, ये कंचन वरन कुवारो ॥ ६९ ॥

अंत—

वाढ्यो विविध विनोद अपारा ॥
कवि वरने कोन प्रकारा ॥ ११८ ॥
जहाँ सेस सारदा हारें ॥
तहां कवि जन कोन विचारे ॥ ११९ ॥
जाको अंत न कोउ पावें ॥
ताको दास नरायण गावें ॥

इति व्याह खेल संपूर्ण ॥

विषय—राधा जी के विवाह का वर्णन ।

संख्या १९३. नाम कुसुममाला, रचयिता—नारायण सिंह नृप, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—१३ । × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२९०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १७२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० ब० सं० ६१, पु० सं० ४।

आदि—श्री कृष्णाय नम. ॥ अथ नाम कुसुम माला लिख्यते ॥

॥ लील्हा छंद ॥

श्री नारायण मंगल कारक विघ्न अमंगल मूल विदारक ॥
वहु करुनाकर अतमत दायक दे प्रज्ञा प्रभु होइ सहायक ॥ १ ॥

अथ पिंगलोक्ति लील्हा छंद ॥ लहु गुरु अछर नेम न सधिग पय पयमता षट दस बंधिग लील्हा छंद सरस फण मंडिग सुनखग राज वैरमन छंडिग ॥ २ ॥

मध्य—पृ० २०

अथ कूर्मनाम दोहा ॥

कमठ कूर्म कछप यहे अमर बतायो भाष ॥
प्रणम कूर्म वलवान जिहि धरा धरी दृढ़ राख ॥ १४ ॥

अथ जलौका नाम दोहा ॥

कहत जलौका नाम पुन यहे रक्तपा जान ॥
ग्रंथ गुल्म रस पान कर होत अंत सुखदान ॥ १५ ॥

अंत—अथ समान नाम दोहा ॥

सम साधारण तुल्य निभ प्रतीकास संकास ।
सहक सहस जु सदृष्य पुन यह समान नीकास ॥ ३० ॥

इति शूद्र वर्गः ॥ दोहा ॥

स्वर्ग वर्ग ते अंत लो शूद्र वर्ग इति जान ॥
नृप नारायण दास किय विस वर्ग अभिधान ॥ ३१ ॥

नृप विरचिते नाम कुसुम माला समाप्तम् ।

विषय—कोश विषयक ग्रंथ । इसकी रचना हलायुध, धनंजय कोश, हेमचंद्र कोश, अमर आदि ग्रंथों के आधार पर हुई है ।

संख्या १९४ माया को अंग, रचयिता—नित्यानंद, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, अपूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—

.... ॥ ज्यो ज्यो भागा प्रात स प्यास चौगुनी होय ॥७४॥
माया रस ज्यूं ज्यूं पीवै त्यूं त्यूं वाढ दुष ॥ नितानंद कहि किन पाया सुष ॥७५॥
मायारस ज्यूं ज्यूं पीवै त्यूं त्यूं वढै पियास ॥ जनम जनम गटकै पड्या पहर गले... ॥७६॥
माया सुष संसार मैं नितानंद दिन चारि ॥ देषत ही चलि जाइगा फिर दुष वारंवार ॥७७॥
माया कासु......नंद मत भूल ॥ इक छन सुष दिखलाइ कर मार मिलावै धूर ॥७८॥
यह सब माय मृग जल क......... ॥ झूठा चिलका देषकर हुवे जीव हैरान ॥७९॥
माया का सुष दुष भरचा भोगै सो पछिताय ॥ हरि विन ...दुनिया से दिल लाय ॥८०॥
माया मोहे मुगध नर साहिब दिया विसार ॥ वाजीगर वाजी रची असा ज.... ॥८१॥

मध्य—

माया के हित तप करै सबै जाहि वन माह ।। माया के हत दुप सहै साहिब से हित नाहि ।।१८।।
...कै हित साधना माया कै हित जाय ।। माया सैं हित लग गया विसर आप मे आप ।।१९।।
माया के हत धरम.........हत दान ।। नितानद फल भोगवै फिर माया मैं आन ।।२०।।
माया के हित व्रत करै माया सजग ध्यान ।। मा......लगै जग मैं आवन जान ।।२१।।
माया के तीरथ वने माया के हित न्हाय ।। नितानद फल फूल मैं मूरप दि..... ।।२२।।
मोटी माया प्रगट है कीनी घट के माह ।। जित तित माया विस्तरी जितानद कित जाह ।।२३।।

अंत—विष का अमृत नाम धरया.. किनहूं भोगी ।।
ब्रह्मा विष्नु महेस लौ तपसी अरु जोगी ।।७०।।
माया दीन्ही आसिका हरिजन की दासी ।।
विलवै नहि आदरी जिभ जिग्र विनासी ।।७१।।
साकत कै सिर पै रहै साधन कै पाई ।।
साकत सेती भंडणी सतन सुष (दा) ई ।।७२।।
गुरू गुमानी दास जी मस्तक करि दीय ।।
माया वीषै समुह सैं पारागत कीय ।।७३।।

इति श्री निदानंद जी कृत माया को अंग सपूर्णः सवत् १८६८ पौष सुदी ६ भौमवार शुभं मस्तु ११

विषय—इसमे सासारिक जीवो को माया जिस प्रकार घेरे हुए है, उसका वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आदि के ७३ पद लुप्त है । यह अत्यत जीर्ण शीर्ण दशा मे है । अक्षर भी यत्र तत्र मिट गए है और उनकी स्याही उड गई है ।

संख्या १६५. रस रत्नाकर, रचयिता—निरमल कवि, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—$६\frac{१४}{१६} \times ४\frac{६}{१६}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामधारी जी चौवे, ग्राम—पैना, पोस्ट—वरहज, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशायेनम. ।।

देवी पूजि श्वरसती पुजे गुर के पाए ।
नमस्यकर कर योरी पु कहे महा कविराए ।। १ ।।
विविधी गर्थे वहु युगते आइरुवेद पुपाए ।
भाषा चिकित्सा समुझि चित दोह छंद बनाइ ।।
एहि विधी ते मन ललित भौ कलि के कविन्ह मनाइ ।। ३ ।।
नाम धरचौ एहि ग्रंथ को लोइ ।।
नारि लछन सव दोष के जाते प्रगट होइ ।।
सव(?त) सतरह सै तीहतरी समै मास कातीक ।
वारयु भौम वपान तीथ तेरस मन देइ ठीक ।।
गाउ चडे सवस कछुक दी(?व) स पक्ष अधियारे होइ ।
रसरतनाकर नाम ही प्रगट कीयो नर लोइ ।।
प्रारा आदि यु धातु कही सिद्ध कीया सव जानी ।
एक ही एक यो रस विधि वानि पै जानि ।।
सुरवानी ते प्रगट कै रन(?नर) बानि भाषा आनी ।।
निरनमल काएथ नाम कवि कृपाल सव जानु ।
वनु वादो यो इही ग्रंथ मे ताते कही सुजान ।

॥ अथ नारि परिक्ष्या ॥

कर अगूठा जु मूल ही धमिनी जिव की साज ।
ताहि थिम्रादी जो दीजिय पंड भापत राज ॥

:o: :o: :o:

अंत—— ॥ अथ मंद नवीश्वर औपधक नाउ ॥

कास्वाप्त छार दीरकत वीकार पीतराज रोग पंडु रोग माथै कै पीरा सर्व व्याधी नवारौ। चीची ढासेर ऽ॥ अरुसे की जरी का वोकला पाउ ऽ। अठैया जरी पात समेत सेर ऽ॥ अवराठा पव ४ जठामासी ठा १ वोही पानी पीसी घीउ मह पकु करवै घीउ कर नास चीइ के पद्य नाभयेलोउ वै पंथ प्यावै साठी का चाउर मलहम नाउ एकर नीका होइ दीन १४ मह ॥

इति श्री पडित रत्नाकर वैद्य निरमल (?कवि) वीचीताया द्रुतीयोपान ॥ २ ।

:o: :o: :o:

अथ औपधवाल के पंट उप का सोटीटा ५ मधु टा ५ वरीआर के जरी टा ५ धनिआ टा ५ जीरा टा २ गजर के जरी ट ५ पोसता २३ सव अस्ट वीप कै देव मधु मेली पीआइव दीन ३ नीका होइ ॥

विषय——आयुर्वेद विपय का वर्णन ।

ग्रथ अध्यायो (सोपानो) मे लिखा गया है । दूसरे सोपान के आगे कुछ अश और लिखा हैं जो विना पुष्पिका दिए छोड दिया गया है । रचनाकाल सवत् १७७३ है । लिपिकाल नही दिया है ।

रचनाकाल

सव(?त) सतरह सै तीहतरी समै मास कातीक ।
वार यु भौम वपान तीथ तेरस मन देइ ठीक ॥

विशेष ज्ञातव्य——ग्रथ अपूर्ण है । रचनाकाल सवत् १७७३ है ।

संख्या १६६. हरितालिका व्रत कथा, रचयिता——निर्मलदास, कागज——देशी, पत्र——६, आकार——८१/४ × ४१/२ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)——८, परिमाण (अनुष्टुप्)——७५, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——स० १८३६ वि०, लिपिकाल——स० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान——प० राम गिरोमन तिवारी, उपनाम 'दादू', ग्राम–वहादुरपुर, पोस्ट–पच्छिम शरीरा, जिला–इलाहावाद ।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शारदा सहाँई ॥

अथ पूजामत्र

सिवायै सर्व मगल्यै शिवायै च नमोस्तुते ।
सिवायै च नमस्तुभ्यं सिवायै सततन्नमः ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

सम्वत टारह सव क्षतीस भाद्र शुदी अरु वुद्ध ।
क्षठि विशाप भापा करौं शुमिरि राम अतिशुद्ध ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

वंदौ रघुवर पद जलजाता । प्रणतारत भंजन सुखदाता ॥
शिव उर मानस मंजु मराला । शुमिरित जिन्है मिटै जगजाला ॥
ते पद विनै करौं कर जोरी । जासो भनित होइ नहि पोरी ॥

गुर दयाल पद करौं प्रणामा । शुमिरत जिन्है पाव विश्रामा ॥
:o: :o: :o:

अत— ॥ छंद ॥

पति सग सहित सोहाग सुष ममलोक अंत सिधावइ ।
यह उमाँ सिव सम्वाद कहि नर नारि शुभगति पावइ ।
कह "दास निर्मल" जयामति कर जोरि विनै सुनावई ।
रघुवीर पद रति होइ जेहि अस जानि तव गुण गावई ॥

॥ दोहा ॥

मो सम दीन न दीन कोउ तुम समान उपकारि ।
अस जिअ जानि सुस्वामि मोहि कृपा करहु त्रिपुरारि ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

प्रणतपाल यह बानि तव सुनहुँ स्वामि रघुवीर ।
महानंद जन जानि मोहि हरहु सकल भवभीर ॥१०॥

इति श्री भविष्यपुराणे उमामहेस्वर सम्वादे ॥ हरतालिका व्रत कथा निर्मलदास विरन्चिते सुभ मस्तु सम्वत १८३६ षष्टमी भृगुवारे च मूल च सोभनस्तथा । साधारणो समाप्तच अस्वनीमास सुक्लयो ॥ मिद पोस्तिक जवाहिर मिश्र टेवा ग्रामे त्रिप्टति ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—हरितालिका व्रत की कथा वर्णन की गई है ।

रचनाकाल

सम्वत ठारह सव क्षतीस भाद्र शुदि अरु वुद्ध ।
क्षठि विशाष भाषा करौं शुमिरि राम अति शुद्ध ॥ १ ॥

सख्या १९७ श्री महाप्रभु जी के स्वरूप चितन को पद, रचयिता—निश्चयदास, कागज—देशी, पृष्ठ—१, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ३६, पु० स० १६ ।

आदि—॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥
अथ श्रीमदाचार्य महाप्रभु के स्वरूप को चितन पद ॥ राग ॥
श्री मद्वल्लभ अगाधि रूप ॥

बिन निज कृपा कोउ नहिं जानें ए आनद अपार स्वरूप ॥१॥
श्री गोपीजन भक्तवर्य जिनको सेवन के अर्थ विचार ॥
श्री जी करत ही तापात्मक परब्रह्म श्री महाप्रभु साकार ॥२॥

मध्य—

अरु श्री नाथ जुगल रूप विशिष्ट साक्षात् श्री गोवर्धन पें ॥
आय विराजे शो जु विचारहु तापें श्री वल्लभ क राय धरत पें ॥१४॥
आप प्रगट ही सेवा स्वल्प करी हें यातें जु गुप्त निहारि ॥
अधिक कहा कहेंनो अब श्री गोस्वामी जो हुं यह उर धारि ॥१५॥

अंत—

ए ना भूतो न भविप्यति निश्चय हे अफलित अशं भवित ॥
ताहि तें ब्रह्मा शिव शेष व्यास आदि अग्यात याके चरीत ॥३६॥

देवी जन जूदनहि के चर्ण शरण रहि ईन कि आग्या पें ॥
रसहू शदा तो अतारथ हो निग्चदास जू ओर कहाया पें ॥
॥३७॥ १ ॥पूर्ण॥

विपय—श्री आचार्य जी महाप्रभु जी के स्वरुप का वर्णन ।

विशेप ज्ञातव्य—केवल एक पत्न क एक तरफ यह पुस्तक लिखी है और दूसरी तरफ श्री हरीराम जी कृत 'दान लीला' लिखी है ।

संख्य १६८. इद्रावत, रचयिता—नूर मुहम्मद, निवासस्थान—भादो (जि०-आजमगढ), कागज—वासी, पत्न—२०८, आकार—११¾ × ७¾ इच, पक्ति (प्रतिपृ.ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३६६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—शेख अब्दुल हमीद साहव, गाँव-चितारा, पोस्ट-सुरहन, जिला-आजमगढ़ ।

आदि—॥ विसमिल्लहि रहमाने रहीम ॥
धनि आप जग सिरजन हारा । जे अकाश विन खंभ संवारा ॥
दोउ जग को आपुही राजा । राज दोऊ जग को तेह छाजा ॥
दीन्हा नैन पंथ पहचाना । दीन्हा रसना ताहि वखाना ॥
वात सुनी तिन श्रवनन दीना । दीन्हा वुध ज्ञान तेहि चीन्हा ॥
गगन के सोभा किन्हो तारा । धरती सोभा मुख संवरा ॥
आप गुपत औ परगट आप आदि औ अत ।
आप सुनै औ देखे लीन्ह मुख वुधवंत ॥

अंत—
भयो सपूरन आधी कहता । मानो ज्ञान समुँदर मे वहता ॥
तीन सहस चौपाई भई । देख आई फुलवारी नई ॥
तिन आगे जो सुख सो रहूं । तीन सहस चौपाई रहू ॥
हूं अभी वहुतेरी दिन केरा । करत वहुत दिन के मैं हेरा ॥
विद्या ज्ञान वहुत जहा होई । अरथ छिपानी वूझो सोई ॥
नूर मुहम्मद यह कहता हैं प्रेम की वात ।
ई प्रेमरस जिहमह वुद्धि सोई दिन रात ॥

तमाम शुद जिल्द अव्वल किताव इंद्रावत वतारीख २५ महरम लह राम रोज पंच सनबा ॥

विपय—सूफी प्रेम-कथा-काव्य ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ ग्रस्त व्यस्त अवस्था मे मिला है । रचनाकाल तथा लिपिकाल का पता नहीं चला । प्रस्तुत प्रति मे ग्रथ का केवल प्रथम भाग है ।

संख्या १६६ वाराणसी विलास, रचयिता—पचोली देवकर्ण, निवासस्थान—उदयपुर, कागज—देशी, पृष्ठ—३११, आकार—११॥ × १० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३६६५, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०७ वि०, लिपिकाल—स० १८०८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ५४, पु० स० २ ।

आदि—॥ श्री गणपतये नमः ॥ श्री काशी विश्वेश्वराय नमः ॥ अथ वाराणसी विलास लिख्यते ॥ श्लोक ॥

तं मन्महे महेशानं महेशान प्रिया भकं ॥ गणेशानं करि गणेशाननमनामयं ॥१॥

॥ छप्पय ॥

सुंडा दड प्रचड रग मडित सिंदूर वर ।
भालचद जगवद शुभ्र तिरपुड तास तर॥
मनिमय सुवन किरीट हेम सिर छत्र विराजित ।
अलि गुजत मद लोभ लोल कुडल श्रुति राजत॥
भुज चारि चारु भूपन कलित लवोदर असरन सरन ।
नित देवकरन वदित चरन हरनदन आनंद करन॥ २॥

मध्य—पृ० १३६ श्री विश्वेश्वराय नम. ॥ सोरठा ॥ दोहा ॥
पेंतीसें उल्लास मे नित प्रति को आचार॥
चारि बरन को कहन हें समस विशेष विचार॥ १॥

अगस्त्युवाच ॥

॥ दोहा ॥

महाक्षेत्र अविमुक्त हे महा मुक्ति को दानि॥
क्षेत्रनिहू को क्षेत्र यह नगल मगल मानि॥ २॥
सकल मसानन मे प्रगट कहियतु' महा मसान ।
पीठनि मे वर पीठ यह ऊपर ऊपर मान॥ ३॥
जिनकी मति चाहै करहि तिनहि धर्म की रासि ।
अर्थिन काजै अर्थदा सिषिरय परम प्रकासि॥ ४॥
कामिन कामद है सही सुकृतिन मोक्ष सरुप ।
जहां जहां सुनियतु तहा कथासु अमृत रुप॥ ५॥

अंत—

॥ छप्पय ॥

ब्राह्मण माथुर एक जाति जाकी घर वारी ।
हरजी मिश्रह नाम भक्त गणपति के भारी॥
तिनसुत उद्धव दास आहि जो चतुर सिरोमनि ।
लछीराम तिन पुत्र देववानी प्रवीन गनि ।
जिन समन बियौ भाषाय मे उन असीम की शक्ति सो ।
मुहि करचौ कवी तव मे रच्यौ यहै ग्रथ शिवभक्ति सो॥६७॥
श्री विक्रम तें वर्ष वीतिगे जवही इतनें ।
७ ० ८ १
मुनि नभ बसु अरु इन्दु जानि लीज्यौ चित तितनें ।
माधव शुक्लह पक्ष वार रजनीश वषानो ।
मन्मथ तिथी बिहान सिद्धियोगहि मे जानो ।
यह ग्रंथ पूर्ण किय ता समे सबन वृद्धिदायक अमल ।
कहि देवकर्ण याकें सुनें फूलें नित निज चितकमल॥६८॥

इति श्री मत्सकल भूमंडलाखंडलेश्वर श्री मन्महाराणा श्री जगत्सिहामात्य पंचोली देवकर्ण बिरचिते श्री मत्काशी खंड श्लोकार्थानुकृति निवद्ध व्रज वाक् पद्धती वाराणसी विलासे अनुक्रमणिकाख्यानं नाम शततम उल्लासः ॥१००॥ श्लोक सं० २०१ सर्वप्रथा ग्रंथ संख्या २२००० सं० १८०८ वर्षे प्रथम आषाढ वद १२ वौ लिखितं जोशी रुप जी ।

विषय—स्कद पुराणातर्गत काशीखड का हिंदी पद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—चमडे की जिल्द मे यह पुस्तक सुंदर लिपि मे लिखी हुई है ।

संख्या २००. पाराशरी जातक या उडुदाय प्रदीप, रचयिता—परमसुख दैवज्ञ, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६८ वि०, लिपिकाल—सं० १९०१ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता—पं० सुरेशधर जी द्विवेदी, ग्राम—अजगरा, पो०—मदियारपार, जिला—आजमगढ)।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥

श्री गजास्यं नमस्कृत्य सिद्धि बुद्धि प्रदायकम् ।
पाराशरी जातकस्य भाषा च क्रियते मया ॥
क्षत्रान्वये विष्णुदासस्तेनाहं प्रार्थित विल ।
पारासरी जातकस्य भाषा कृत्वा ममार्थया ॥ २ ॥
गूढ़ार्थात्प्रगटीकृत्य मशेषं सुखवोधकृत् ।
पाराशरी जातकस्य भाषा लिख्यतेऽधुना ॥ ३ ॥

सिद्धांत और उपनिषधनमे प्रतिपाद्य ब्रह्मा को शुद्धांतप्करण रक्त ओष्ट वीणा को धारन करे एसा जो कोई तेज हय उसको उपासना करो हो ॥१॥ ऐसी मेरी मति हय उसकी बुद्धि से पाराशर होरा को विचार करके उडुदाय प्रदीप नाम ग्रथ को करत हो। जोतिषिन के हर्ष वास्ते ॥ २ ॥ और नक्षत्र दशा प्रकार कहके फल कहने का प्रकार कहत हो और भाव को अदले के जो सब विचार हय हो सामान्य शास्त्र से वृहज्जातक से जानना ॥

अंत—और नवम स्थान का स्वामी दशम स्थान मे होय और दशम स्थान का स्वामी नवम स्थान मे होय तो इसको राज योग कहय इस योग मे जीसका जन्म होय सो मनुष्य विख्यात होय और सर्वत्र विजयवान होय ॥४१॥

पारासरी जातकस्य व्याख्यानं भासया कृतम् ॥ १ ॥ श्री विष्णुदासस्य मुदेयन् माघ सुखेन च ॥ १ ॥

८ ६ ८ १

वसु रस गज चन्द्रे विक्रमार्कस्य वर्षे शिव तिथि शित पुष्ये चाश्विने कृष्ण पक्षे। लिखितमिह हितार्थं विष्णुदासस्य पूर्वं तदनु जयपुराख्ये पत्तने ब्राह्मणानां ॥

इति परम शुष दैवज्ञ कृतं पारासरी जातकस्य देश भाषा व्याख्यानं समाप्तम् ॥ सम्वत् १९०१ शाकाव्या: १७६६ मिति आषाढ़ कृष्ण पक्षे पञ्चम्याम् ॥

विषय—फलित ज्योतिष का वर्णन।

रचनाकाल

८ ६ ८ १
वसु रस गज. चंद्रे विक्रमार्कस्य वर्षे।
शिव तिथि शित पुष्ये चाश्विने कृष्ण पक्षे॥
लिखित मिह हितार्थं विष्णु दासस्य पूर्वं।
तदनु जयपुराख्ये पत्तने ब्राह्मणानां॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८६८ और लिपिकाल सवत् १९०१ है।

संख्या २०१क. आत्मबोध टीका, रचयिता—मूलकार श्री शंकराचार्य, टीकाकार—परमानंद, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—७ × ४$\frac{5}{6}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० महानंद पांडे वैद्य, ग्राम—पंडित का पुरा (गढवा), पोस्ट—हंडिया, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री वासुदेवाय नमः ।। आत्मबोधः ।।

यह भगवान शकाचार्य उत्तम अधिकारियो के लिये श्रुतिस्मृति सूत्र वेदांत के इन इन तीनों प्रस्थानो को वनाकर उसके देखने मे सपूर्ण वेदात के सिद्धात का सग्रह असमर्थ मंद वुद्धियों पर अनुग्रह करिके आत्मवोध नामक ग्रथ जिससे सपूर्ण देदात क सग्रहै दपलाने के लिये प्रतिज्ञा करते है कृच्छ्र चाद्रायण नित्त नैमित्तिक उपासना आदि रूप तपो से जिनका पाप नष्ट हुआ है और जिनका हृदय शात है और जिनका इहलोक परलोक के भोग मे विराग है असे मुमुक्षू अर्थात् ससार का बंधन छूटने के वास्ते उपाय करने वालो के लिए यह आत्मवोध नामक ग्रंथ वनाया जाता है ।१।

कदाचित कोई कहै तप मत्र कर्मयोग आदि अनेक साधन मोक्ष के लिए हं तो आत्मज्ञान ही प्रधानता से मोक्ष के लिए क्यों कहा जाता है इस पर कहते हैं कि तपमत्र आदि साधन परपरा से ज्ञान द्वारा मोक्ष को सिद्ध करते हैं ज्ञान तौ उत्पन्न होत ही सव अज्ञान को नाश कर मुमुक्षूको उसके फल को पहुँचाई देता है । इसलिए दूसरे साधनो से ज्ञान हीं को मोक्ष मे प्रधान कहा है इसी को दृष्टात से दृढ करते हैं जैसे पाक क्रिया मे काष्ट जल पात्र आदि साधन रहते हुए भी अग्नि के विना पाक नहीं सिद्ध हो सकता जैसे ज्ञान के विना मोक्ष नहीं सिद्ध होगा ।२।

अत—दिसादेशकाल इनकी अपेक्षा न करके दु खादिक नाश करने वाला सब जगह मे व्यापक नित्य सुख स्वरूप अपनें आतमा रूप तीर्थ को सेवता है वह सवका जानने वला सब जगह व्यापक औ मुक्त हो जाता है ।६७।

इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य गोविन्द भगवत्पूज्यपाद शिष्य श्री मच्छङ्कराचार्य्य कृत आत्मबोध समाप्तः च पुनः आत्मबोध भाषा टीका समाप्त श्रीयुत पडित राम अवतार जी के सहायता सें परम आनन्द जी के तिलक भया अ० शु० ३ श्रीमच्छकराचार्य्यंयनम. ।।

विषय—वेदात विपय वर्णन ।

सख्या २०१ख. तत्ववोध टीका, रचयिता—मूलकार—श्री शकराचार्य जी, टीकाकार—परमानद (सभवत), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—७ × ४$\frac{५}{६}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० महानद पाडेय, ग्राम–पडित का पुरा (गटवा), पो० हडिया, जिला–इलाहावाद ।

आदि—वासुदेवेन्द्र योगीन्द्र गुरुको प्रणाम करिकैं मुमुक्षो के हित के लिए तत्वबोध नामक ग्रथ किया जाता है उन अधिकारियो के लिए कि जिनका चारों साधन सिद्ध हो चुका है उनके लिए मोक्ष साधन का उपकारी तत्व वोध विवेक को प्रकारों को कहूगा। प्रश्न—चारो साधन कौन है उ०—नित्य औ नित्य वस्तुओ का विवेक१ इस लोक परलोक के फल भोग मे विराग २ सम आदि क्ष प्रकार के संपति ३ मोक्ष होने की इच्छा ४ प्र०—नित्य औ अनित्य वस्तु किसकें कहते हैं उ०—एक ब्रह्म वस्तु नित्य है उसमे भिन्न वस्तु सब अनित्य है उसी को नित्य औ अनित्य वस्तुओ का विवेक कहते है ।

अंत—अथवा चांडाल के घर मे ज्ञान के सम्पूर्ण प्राप्ति होने पर सब तरह को इच्छा को रहित वह मुक्ति ही है :—

इति श्री तत्वबोध भाषा टीका श्रीयुत् पडित रामअवतार जी को सहाय से तिलक किहा गया संपूरणम् ।।

विषय—वेदात विपय वर्णन ।

संख्या २०२क. परमानद सागर, रचयिता—परमानद दास, कागज—देशी, पृष्ठ—१५४, आकार—१० × ८।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३८६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० व० ५७, पु० स० ३ ।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नम. । अथ परमानद दास जी के पद लिख्यते ।। मंगलाचरण । राग कान्हरो ।

चरण कमल वंदौ जगदीस जे गोधन के सग धाए ।
जे पद कमल धूरि लपटाने कर गहि गोपिन उर लाए ।। १ ।।
जे पद कमल युधिष्ठिर पूजित राजसूय मे चलि आए ।
जे पद कमल पतामह भीषम भारत मे देखन पाए ।। २ ।।

मध्य—पृ० ७४

कान्ह अकेलेइ सोवत ।
सपने मे तेरो मुख देखत तव उठि म रग जोवति ।। १ ।।
सीतल छाह कदव की . तेरोई रूप विचारत ।
कवहू मोह ह्वे रहत ध्यान धरि कवहूक दृष्ट पसारत ।। २ ।।
नव पल्लव सुमन कमल .ल रचि रुच सेज सवारति ।
परमानंद प्रभु तेरोई कारन अति संचित हरि आवत ।। ३ ।।

अंत—राग विलावल ।

माई री सावरो सो ग्वालबाल नंदगांउ खेलें ।
देखत सुधि भूलि जात मोहनी सी मेले ।। १ ।।
मृगछोना से नैंन न उरते वन सिडारो ।
तवहीं मन करखि लेत गतिमत सव टारो ।। २ ।।
झनझुन पाइन पेंजनी अरु ठुंमक ठुंमक डोलें ।
तोतरे से अमृत वचन भैया कहि वोले ।। ३ ।।
एसो जो होय कवहू वहुरो वाल पैयें ।
निरखि निरखि नैंन सुख हस हंस उर लैयें ।। ४ ।।
जसुमती को पूत भाग एसे सुत जायो ।
परमानंद वलिहारी निगम छंद गायो ।। ५ ।।

विषय—पुष्टिमार्गीय मदिरो मे गाए जाने वाले पदो का सग्रह ।

संख्या २०२ख. परमानद सागर, रचयिता—परमानद दास जी, कागज—देशी, पृष्ठ—१७४ (६ मे १८३) आकार—१०।। × ७।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ट)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०००, अपूर्ण, रूप—दीमक से जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० व० ० ५७, पु० स० ४ ।

मध्य—पृ० ८५

चलि री मदन गोपाल वुलावैं ।
तेरोई नांउ लै लै वेन वजावैं ।
इह सकेत वह्यो वन महियां ।
सघन कदंव मनोहर छहियां ।
मिलत पर्मसुख अद्भुत लीला ।
परमानंद प्रभु भावन सीला ।

विषय—परमानद दास जी के वनाए हुए विरह के पद हैं, जो पुष्टिमार्गीय मंदिरों में अनोसर के वाद गाए जाते हैं ।

संख्या २०३क. पद, रचयिता—विप्र परगन, स्थान—चौंबोली (आजमगढ), कागज—देशी, पत्र—१ (खरांकार), आकार—१४½ × ८¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनष्टुप्)—२२ पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८०—६० (लगभग), लिपिकाल—स० १८८०—६० (लगभग), प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—प० जानकी चौबे, ग्राम—चौबोली, पोस्ट—अहरौला, जिला—आजमगढ) ।

आदि— ॥ राम ॥

हरिहर प्यारे मैं तेरी वली जाऊ ।
दोउ भगवान दोउ प्रभु शाहेव जन जग रखवारे ॥
हरी विश्वनाथ जग्रनाथ गोशाइ दीन दरीद्र वीदारे ॥ हरि ॥
गौरीजापती श्रीपति शुरशाई भैरव हनु प्रति···रे ॥
रावनारी त्रिपुरारी कहावत निश्चर अमीत सघारे ॥ हरि ॥
"परशन वीप्र" कहत कर जोरे जिय की जरनी नीवारे ॥ हरि ॥
नरहरि प्यारे मैं तेरी वली जाऊ ।
जन प्रहलाद भयो महिमडल श्रीपति नाम शुधारे ॥ नरहरि ॥
पीतई कहा कुल धर्म पढ़हु शुत शुत प्रति दिवम करारे ।
वाधी चढायेहु गीरीवर उपर गारी ते नीपटी पवारे ॥ ४ ॥
षंभ वाधी पीतु षड्ग प्रहारे उन नरशीह उदर वीदारे ॥
परशन वीप्र कहत कर जोरे भव की जरती नीवारे ॥
भृगुपति प्यारे मैं तेरी वलि जाऊ ।
शुरन्ह शहाए धेनु हीत लागी शहशवाहु शघारे ।
अमीत वार छीति वीप्रन्ह दीन्हौ वध करी अमीत भुआरे ॥
पाच वान प्रभु करनहि दीन्हौ एक ते एक जुझारे ।
धनुषभग शुनि तेरहुति धाए काधे फरशु शुधारे ॥ ५ ॥
परशन वीप्र शीथील प्रभु भएउ नीरषत रूप अगारे ॥ ६ ॥
मैं तेरी वली जाऊ दशरथ प्यारे ।
दपतिमनु गवने वन माही तप वीधी आशन मारे ।
लागे चरन तपस्या जवही वीतेउ काल घनेरे ।
हरीहर वीधी शवतीन्ह जुत आए अलीत जानी नीवारे ।
पारब्रह्म श्री संजुत आए अम्रीत वचन पुकारे ।
पुष्ट भए तनु मनु सतरूपा अभक पोली नीहारे ।
मनभावत वरदान दीयो प्रभु दपति भवन शीधारे ।
परशन वीप्र दीन जन जानो नीरषहु द्रीग रतनारे ॥

अंत—नरतन रतन शीरान जात मन शीताराम भजहु शुषदाई ।
शीव ब्रह्म शक्रादिक शुमीरत शनकादीक नीशि वाशर ध्याई ।
नर मतिमंद भजहु भगवानहि जीवन थोर दुराश दुराई ।
चौराशी अमीहौं नर जवही जम जातना करत लै जाई ।
वैतरनी उतरै नही पैहौ विविध पंथ को करीहो सहाई ।
जड़ चैतन्य जग.....।वीवीध पंथ निगमागम गाई ।
भक्ति शुगम पंथ "परशन" गावत शीताराम शरन गोहराई ॥

मध्य—पृ० ६४

लला रे नेंक हमारें आउ ।
जो मांगो सो देउं मनमोहन लै मुरली कल गाउ ।
मगल चारु करो गृह मेरे सग के सखा वुलाउ ।
करहु विनोद जुवति सुदरि सो प्रेम पीयूष पिवाउ ।
वलि वलि जाउ मुखारविंद की तेउ त्रिभग दिखाउ ।
परमानद रसभरी सहचेरी लै चली करत उपाउ ॥ २ ॥

अंत— राग मलार ॥

रेनि पपीह वोल्यो माई ।
नींद गइ चिंता चित उपजी सुरति स्याम की आई ॥ १ ॥
सावन मास मेघ की वरखनि हो उठि आगन आई ।
गरजत गगन दामिनी चमकत ताते खरी डराई ।
राग मलार अलाप्यो काहू मुरली मधुर वजाई ।
विरहनि विकल दास परमानद धरनी परी मुरझाई ॥ ३ ॥

विषय—श्री पुष्टिमार्गीय मदिरो मे गाए जाने वाले परमानददास जी के वनाए कीर्तनो का सग्रह । इसमे भागवत दशम स्कध की कृष्ण लीलाओ का वर्णन है । परमानद दास जी कृत पदो का इतना विशाल सग्रह अन्यत्र अप्राप्य हे ।

विशेष ज्ञातव्य—विद्या विभाग, काँकरोली मे इसका सपादन हो रहा है । विद्या विभाग, सरस्वती भडार मे इसकी कई प्रतियाँ उपलब्ध है । सवसे प्राचीन जिसका अनुमान लगाया गया है स० १६६६ के लगभग की लिखी हुई है ।

संख्या २०२ङ. विरह के पद, रचयिता—परमानद दास, निवासस्थान—गोवर्द्धन, कागज—माधोपुरी, पृष्ठ—५५ (७ से ६१ तक), आकार—६। × ५। इच, पक्ति (प्रति-पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१५, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—स० भ० विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० स० २०, पु० स० ४ ।

आदि—प्राप्त नहीं ।

मध्य—पृ० ३१

अहो तुम गोविंद सो कहियो जाई ।
वहुत दिवस प्यारे मनमोहन मैं नाहिन सुधि पाई ॥
नंद ग्राम तें अपनी दासिका मथुरा गुपत पठाई ॥
सहय पत्रिका लिखि मृगनैनी अपनी प्रीति जनाई ॥
चरन कमल गहि विनती कीवी वैठे जहां कन्हाई ॥
ताको कोन हाल नंद नंदन अपने संग खिलाई ॥
उहि तो तन मन तुमहि समर्प्यो चरन कमल लै लाई ॥
परमानंद प्रान आतुर हरि वारक देहु दिखाई ॥६७॥

अंत—जिन गोपालहि जान देहि ।

अव व्रजनद वगदि आए हूं इह मन पछसा वोलेहि ॥
मोहन कान्ह मोहनी मथुरा मोहन लोग मोहनी नारि ॥
मोहन गति मोहन हरि लीला मोहन गतिलै लोग मझारि ॥
वसुदेव पिता देवकी माता इह सभ प्रगट भई नरलोक ॥
परमानंद स्वामी कत आवे सुंदर स्याम विनासन सोक ॥ ६ ॥

मध्य—पृ० ६४

लला रे नेंक हमारे आउ ।
जो मांगो सो देउ मनमोहन लै मुरली कल गाउ ।
मगल चारु करो गृह मेरे सग के सखा बुलाउ ।
करहु विनोद जुवति सुदरि सो प्रेम पीयूष पिवाउ ।
वलि वलि जाउ मुखारविंद को तेउ त्रिभंग दिखाउ ।
परमानद रसभरी सहचेरी लै चली करत उपाउ ॥ २ ॥

अंत— राग मलार ॥

रेनि पपीहु वोल्यो माई ।
नींद गइ चिंता चित उपजी सुरति स्याम की आई ॥ १ ॥
सावन मास मेघ की वरखनि हो उठि आगन आई ।
गरजत गगन दामिनी चमकत ताते खरी डराई ।
राग मलार अलाप्यो काहू मुरली मधुर वजाई ।
विरहनि विकल दास परमानंद धरनी परी मुरझाई ॥ ३ ॥

विषय—श्री पुष्टिमार्गीय मदिरो मे गाए जाने वाले परमानददास जी के वनाए कीर्तनो [का संग्र]ह । इसमे भागवत दशम स्कध की कृष्ण लीलाओ का वर्णन है । परमानद दास जी कृत [पदो] का इतना विशाल सग्रह अन्यत्र अप्राप्य हे ।

विशेष ज्ञातव्य—विद्या विभाग, कॉंकरोली मे इसका सपादन हो रहा है । विद्या विभाग, [कॉंकरोली की पो]थी भडार मे इसकी कई प्रतियाँ उपलव्ध हैं । सवसे प्राचीन जिसका अनुमान लगाया गया है [वह सं० १]६६६ के लगभग की लिखी हुई हैं ।

संख्या २०२ड. विरह के पद, रचयिता—परमानद दास, निवासस्थान—गोवर्द्धन, [कागज]—माधोपुरी, पृष्ठ—५५ (७ से ६१ तक), आकार—६। × ५। इच, पक्ति (प्रति-[पृष्ठ])—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१५, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, [लिपि]काल—स० १६४२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—स० भ० विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० व० [...]०, पु० स० ४ ।

आदि—प्राप्त नहीं ।

मध्य—पृ० ३१

अहो तुम गोविंद सो कहियो जाई ।
वहुत दिवस प्यारे मनमोहन मैं नाहिन सुधि पाई ॥
नद ग्राम तें अपनी दासिका मथुरा गुपत पठाई ॥
सहथ पत्रिका लिखि मृगनैंनी अपनी प्रीति जनाई ॥
चरन कमल गहि विनती कोवी वैठे जहां कन्हाई ॥
ताको कोन हाल नद नदन अपने संग खिलाई ॥
उहि तो तन मन तुमहि समर्प्यो चरन कमल लै लाई ॥
परमानंद प्रान आतुर हरि वारक देहु दिखाई ॥६७॥

अंत—जिन गोपालहि जान देहि ।

अव व्रजनंद वगदि आए हैं इह मन पकुसा वोलेहि ॥

विषय—परमानद दास जी के बनाए हुए विरह के पद हैं, जो पुष्टिमार्गीय मदिरों में
: के बाद गाए जाते हैं ।

सख्या २०३क. पद, रचयिता—विप्र परसन, स्थान—चांवोली (आजमगढ),
—देशी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—१८¾ × ८½ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८,
ग (अनष्टुप्)—२२ पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—
८८०—६० (लगभग), लिपिकाल—स० १८८०—६० (लगभग), प्राप्तिस्थान—
नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—प० जानकी चौबे, ग्राम–चोवोली, पोस्ट–
ा, जिला–आजमगढ) ।

आदि— ॥ राम ॥

हरिहर प्यारे मैं तेरी वली जाऊ ।
दोउ भगवान दोउ प्रभु शाहेव जन जग रखवारे ॥
हरी विश्वनाथ जगनाथ गोशाइ दीन दरीद्र वीदारे ॥ हरि ॥
गौरीजापती श्रीपति शुरशाई भैरव हनु प्रति'''रे ॥
रावनारी त्रिपुरारी कहावत निश्चर अमीत सघारे ॥ हरि ॥
"परशन वीप्र" कहत कर जोरे जिय की जरनी नीवारे ॥ हरि ॥
नरहरि प्यारे मैं तेरी वली जाऊ ।
जन प्रहलाद भयो महिमडल श्रीपति नाम शुधारे ॥ नरहरि ॥
पीतई कहा कुल धर्म पढ़हु शुत शुत प्रति दिवस करारे ।
वाधी चढायेहु गीरीवर उपर गारी ते नीपटी पवारे ॥ ४ ॥
षंभ वाधी पीतु षड्ग प्रहारे उन नरशीह उदर वीदारे ॥
परशन वीप्र कहत कर जोरे भव की जरती नीवारे ॥
भृगुपति प्यारे मैं तेरी वलि जाऊ ।
शुरन्ह शहाए धेनु हीत लागी शहशवाहु शंघारे ।
अमीत वार छोति वीप्रन्ह दीन्हो बध करी अमीत मुआरे ॥
पाच वान प्रभु करनहि दीन्हो एक ते एक जुनारे ।
धनुपभग शुनि तेरहुति धाए काधे फरशु शुधारे ॥ ५ ॥
परशन वीप्र शीथील प्रभु भएउ नीरपत रूप अगारे ॥ ६ ॥
मैं तेरी वली जाऊ दशरथ प्यारे ।
दपतिमनु गवने वन माही तप वीधी आशन मारे ।
लागे चरन तपस्या जवही वीतेउ काल घनेरे ।
हरीहर वीधी शक्तीन्ह जुत आए अलीत जानी नीवारे ।
पारब्रह्म श्री सजुत आए अम्रीत वचन पुकारे ।
पुष्ट भए तनु मनु सतरूपा अभक पोलो नीहारे ।
मनभावत वरदान दीयो प्रभु दपति भवन शोधारे ।
परशन वीप्र दीन जन जानी नीरषहु द्वीग रतनारे ॥

त—नरतन रतन शीरान जात मन शीताराम भजहु शुषदाई ।
शीव ब्रह्म शक्रादिक शुमीरत शनकादीक नीशि वाशर ध्याई ।
नर मतिमंद भजहु भगवानहि जीवन थोर दुराशा दुराई ।
चौराशी अमीहो नर जवही जम जातना करत लै जाई ।
वैतरनी उतरै नही पैहौ विविध पंथ को करीहो शहाई ।

विषय—भगवद् भक्ति वर्णन ।

संख्या २०३ख. पद, रचयिता—परसन (विप्र), स्थान—चौवौली, जिला–आजमगढ, कागज—देशी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—$८\frac{3}{4} \times ३\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८०–९० तक, लिपिकाल—स० १८८०–९० तक, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।(दाता–प० जानकी चौंवे, ग्राम–चौं वोली, पो०–अहरौला, जिला–आजमगढ)।

आदि—छवि निरषहु शालिग्राम कै ।
करि स्नान सिंहासन वैठे चदन पुष्प ललाम कै ।
तुलशी धूप कपूर की वाती आरती करि शुपधाम कै ।
घटा संष मृदग मजीरा पद गावहु हरिनाम कै ।
वाल भोग चरणामृत पावो "परशन" शरन शिराम कै ॥ १ ॥
भादो वदि तिथि आठौं रोहिनि राजहि रे ललना ।
अर्ध रइनि हरि जन्म नों भवन शोहावहि ।
वध कपाट खुले कोउ भेद न पावहि ललना ।
वसुदेव हरि हिय लाई जमुन तट धावही ।
घन गरजहि अति वरसहि.......... ।
फनिगनि आइ निहारि हरिहि उर लावहि ।
रविनंदनि हरपाहि चरन सिर नावहि ललना ।
उतरि गए हरि पार नीयरावहि ।
देवि चरन शिर नाइ हरिहि वहलावही ललना ।
जशोमति परम उछाह अनंद वढावही ।
......काध गरि चलि आवहि ललना ।
निगलेहि मन वछित नार छिदावहि ।
नगर भए अति सोर वधाव वजावहि ललना ।
नर नारिन्ह करि साज हरिहि शिर नावहि ।
अगर धुम रंग छुटहि जिमि घन गार्जहि ललना ।
मुनिहुक मन भए मोर चतुर्भुज लाजहि ।
जे एहि मंगल गावहि गाई सुनावहि ललना ।
परशन भनत मनाई पुत्र फल पावहि ।
नंद के वीर हरो जनपीर लगावहु तीर लटी मेरी नैंआ ।
भवनिधि वेपरमान शुगोने शुनो विनती वलिभद्र के भइआ ।
द्रोपति की पति राषि लियो जह कोटिन्ह भूपन की दुशहइआ ।
परसनदाश विचारि कै जनपीर हरो प्रभुनंद के दोहइआ ॥
—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—श्री कृष्ण-जन्म-लीला-वर्णन ।

संख्या २०३ग. पद, रचयिता—विप्र परसन, स्थान—चौंवोली (आजमगढ जिला), कागज—देशी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—$१५\frac{1}{2} \times ८\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८०–९० तक, लिपिकाल—स० १८८०–९० तक, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—पं० जानकी चौवे, ग्राम–चौवोली, पो०–अहरौला, जिला–आजमगढ) ।

आदि—बैठि राधेस्याम विरह मन मारी ।
पद अगुष्ट नष लेषत धरनी नुपूर रव झनकारी ।
मदन सहाइ शमेति चढे जीमि विश्व विकल नरनारी ।
बेसरि की मोतिआ अति राजित शारी जरद कानारा ।
शिंदुर बेंदी भाल वीराजे तरिवन चुनि चमकारी ।
केस भ्रमर चुडामणि शोभित मोतिन्ह माग शवारी ।
कज्जल हार माल को वरनै दृग षजन अनुहारी ।
बृजमोहन कुवरी रगराते मेरी शुरति वाशारी ।
दीन दआल दया कव करिहो परशन प्रभु शुपकारी ॥ १ ॥
स्याम करत ठगहारी वीरीज अली ।
शोअ रहिउ मदिल अपने मैं फुलन्ह शेज शवारी ।
ढीठ कधआ वडे धाती है लान्हेउ हार नाकारा ।
जदि हम जाहि जमुन जल भरने रोकत पथ हमारी ।
वाह गहत अगीआ दरकानी मनिमय अचल फारी ।
गई करन अस्नान जमुन तट अभरन चीर उतारी ।
सब लेइ धाइ कदम चढि बैठे हम जल मध्य उघारी ।
॥ वीरी ॥
—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—श्रीकृष्ण लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत खर्रो की सख्या दो है । इसके एक ओर 'पद' लिखे है और दूसरी ओर कुछ औषधो के नाम एव एक जन्मकुडली लिखी है ।

संख्या २०३घ. पद, रचयिता—परसन दास विप्र या द्विज, स्थान—चांवे ली (जि०—आजमगढ), कागज—देशी, पत्र—२ (खर्राकार), आकार—१७ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८०–६० तक, लिपिकाल—स० १८८०–६० तक, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—प० जानकी चौबे, ग्राम—चांवोली, पो०—महरौला, जिला—आजमगढ) ।

आदि—राम ॥ १ ॥
को कहै बालकेलि रघुराई ।
दुइ दुइ दशन अधर अरुनारे दृगन्ह कमल छवि छाई ॥
कच घुघुरारे झगुआ वितै धावत मनि अगनाई ॥ को कहै ॥
नाशा हास वदन को वरनै कानन फूल शोहाई ।
चिवुक कपोल कवु कल ग्रीवा षेलत चारिउ भाई ॥
भाल विशाल तिलक केशरि को नुपुर पाव वजाई ।
जननी गोद षेलावत गावत लै पलना पवढाई ॥ को कहै ॥
पै पोअत मुशुकात रुदन करि गोद ते उतरि पराई ।
उझुकत चलत झुकत धरनीतल दधि वोदन लपटाई ।
शिव ब्रह्मादि ध्यान नहि पावहि जननी हृदये लगाई ॥
परशन विप्र बाल प्रभु भजिए अवध महानिधि आई ॥ १ ॥
शीताराम बीवाह वीलोकन चलिय शषी गृह गृह ते धाई ।
शजि नव शप्त बली मृगनैनी मगल दर्व लेहि कर गाई ॥

भुप द्वार अति भीर भई है शोढि गए लोग लोगाई ।
शोव ब्रह्मादी देव शभ धाए दुर्गा शहित शक्ति शभ आई ॥
नीज नीज भाग प्रगट होइ लेहीं रवि शशि कुल कह देहि वडाई ।
कन्यादान जनक नृप दिन्हों तिहु पुर वाजत विविध वधाई ॥
शीताराम भावरा देहीं वेद पढहि तह वुध शमुदाई ।
नारपत रूप देव मुनि हरपहि दशरथ जनक विभव बहुताई ॥
नृप वितान तोरन प्रतिद्वारे शकल लोक शभ गएउ भुलाई ।
...गली कीन्ह जय रघुवर कोशलपति वहु दईजा पाई ॥
विप्र व्रिद जाचकन्ह हकारी शकल वस्तु तव दीन लुटाई ।
वेद पुरान शत शभ गावहि रघुवर मगल शभ शुषदाई ।
"परशन विप्र" कहत कर जारे गौरि गनेश महेश मनाई ॥ १ ॥

हरिहर प्यारे मैं तेरि वलि जाउँ ।
दोउ भगवान दोउ प्रभु शाहेव दोउ जन जग रषवारे ।
विश्वनाथ जग्रनाथ गोशाई दीन दरिद्र विदारे ।
गीर्जापति श्रीपति शुरशाई भैरव हनु प्रतिहारे ।
रावन अरि त्रिपुरारि कहावत नीश्चर अमित शघारी ।
"परशन विप्र" कहत कर जोरी जीय की जरनी निवारो ॥ २ ॥

सीताराम अयोध्यावासी षेलत शरजु कीनारे ।
अविर गुलाव उडावन लागे छुटत रंग पीचुकारे ।
शोभित ताल पपाउज वीना लागत डफ नगारे ।
शीताराम रग रस भीने होरी मची प्रतिद्वारे ।
"परशन विप्र" कहत कर जोरे निरपहु द्रोग रतनारे ॥ ३ ॥

—पूर्ण प्रातलिपि

विषय—राम वाल लीला, राम विवाह तथा सीताराम केलि क्रीडाओं का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत 'पद' खर्रा सख्या ७।८ मे है । इ। दोनों पत्रो के 'पद' एक दूसरे से सवधित हैं । अत इनका एक ही विवरण लिया गया है ।

सख्या २०३ङ. कवित्त, रचयिता—परसन द्विज, स्थान—चौवौली (जि० आजमगढ), कागज—देशी, पत्र—१ (खर्राचार), आकार—१३$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८०–९० तक, लिपिकाल—स० १८८०–९० तक, प्राप्तिस्थान—प० जानकी चौवे, ग्राम—चौवौली, पोस्ट—अहरौला, जिला—आजमगढ (हस्तलेख, ना० प्र० सभा के लिये प्राप्त हो गया) ।

आदि—॥ राम ॥ १ ॥

संकर के नाम ते भएकर नसात जात वार वार शुमिरो मनमाह महरानी के ।
रामभक्ति दानी जगजानी प्रभु आरत हर स्वारथ विसारि परमारथ महारानी के ।
जटा जूट गग तह छुटत हे तरङ्ग छवि कोटिन अनग सशि भालपंच वदन के ।
आसन असन जम त्रासन के सेस अंग विमल विभूति छवि शजए प्रभु परसन के ॥१॥
नटीनी के पास जात सकल विनास वात मात विनसात जैसे दारु घुन पाइकै ।
गवो लोक लाज प्रलोकहु न भो समाज कजा कहाइ धनधाम हु लुटाइ कै ।

पित्र भए प्रेत व्रत धर्म के न रहे चेत गुरु ग्यान गयो जग वृथा एहि आइ कै ।
परसन दिज कहै हरि दरसन जो चाहो नर करो घर हिए सिव शिवा के मनाइ कै ॥२॥

विषय—शकर की भक्ति विपयक कवित्त ।
विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत खर्रा की सख्या ६ है ।

संख्या २०३च. कवित्त, रचयिता—परसन विप्र, स्थान—चौंवोली (जिला-आजमगढ), कागज—देशी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—१६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८०-९० तक, लिपिकाल—स० १८८०-९० तक, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—प० जानकी चौबे, ग्राम-चौंवोली, पोस्ट-अहरौला, जिला-आजमगढ) ।

आदि—पशुपति नाथ सनाथ कीयो जग पेलत है रग होरी ।
गगन बेवान आई नव दुर्गा मुरती अरु करोरी ।
भैरव शहित शदाशिव आये भुत वेताल वटोरी ।
वाजत ताल पषाउज वीना लागत डफ टीकोरी ।
चोआ चनन अवर अरगजा अत्र कुमकुमा रोरी ।
उडत अवीर लाल भए वादर वरपत रग झकोरी ।
गगन मगन अमरागन निरपत शुभन झरहि कर जोरी ।
शभु द्वार अति भीर भई है झडत नगार वहोरी ।
छुटन लागी कनक पीचकारी परशन भनत नोहोरी ॥
माई वृजराज दुलारे अवचक आनि परे ।
पनिघट पट गहि कर लीन्हे कनक पीचुकारे ।
रग-सुरग भरो मेरो वरवस वदकै अगिया पर डारे ।
माई छैल अनोपे वने मन मोहन गोहन के सभ है अधिकारे ॥

मध्य—कोउ गावे कोउ ताल वजावे कोउ गावे डफ के धुधुकारे ।
जहा हम जाहि सिहाहि मनोहर नोहर है जसुदा जिकिहारे ।
आनि करो वृषमान ववा जिकी मानि जु कस भुआरे ।
हो नदरानी विर विरा निहुरिआ अमित वार कहते है महारे ।
परसनदास वेलास सवरी शुनु सपिरी वरजै हम वारे ॥
शयिराम के तु भजि लेहु नर अव जात वेलाटरो ।
.........सर्व सहस्त्र रन मधुकैटभी शीस हरो ।
:o: :o: :o:
.........हरी के वलि छलि पातालहि करि ।
धुअ के अचल शउराज दै प्रहलाद की वनी परी ।
सीयराम अचलराज विभीषना तेहि.......... ।
:o: :o: :o:
गौरी जाहि माल सिषर परतप करत है शुप भरी ।
गंगा लहरी अस्नान करि ....धरी ।
अस्तुति शुनत तव सुरन्ह की गुनि महा आपद परी ।
धूम्र लोचन आइकै हुंकरत सैना जरी ।
काली भई महाकाली कावंडादि जीवन हरी ।
रक्तवीज निसुंभ शुंभहु छिति निराक्षस करी ।

नारायनी वर दीधो तव शुर शुरी भए बरवरी ।
परशन भनत जो गाइ तेहि विधेश्वरी फल फरी ॥
एह जन्म रतन सिरात नर भजि लेहु सारगपानी ।
नर्क त्यागि वितर्कना दिढ छोडि कपट सयानी ।
दिन रैयनि प्रेम पीश्रास करि तुम शुमिरु मन क्रम वानी ।
सनकादि मुनि प्रहलाद नारद भजहि प्रभु जीय जानी ॥
तुलसी सहित जो साधु जन शुमिरेउ हरिहि मनमानी ॥
गनिका अजामिल गीध गति तरि गएउ सभ नर ग्यानी ।
धुंधुकारी वेवान चढ़ि परसन भनतु उर आनी ॥
—पूर्ण प्रतिलिपि

विपय—ईश्वर-भक्ति-वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत खर्रा की सख्या ३ है। इसके आरभ मे किसी की जन्मपत्नी लिखी जा रही थी, पर फिर उसे छोड दिया गया । उसमे सवत् १८८० दिया है ।

सख्या २०४. कोकशास्त्र, रचयिता—पर्मल (?), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—९$\frac{1}{8}$ × ४$\frac{3}{8}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६३, अपूर्ण, ग्राम–तालामझवारा, पो०–जलालगज, जिला–जौनपुर ।

आदि—.. .... ।
मान असंग वर्नन ।

सन्यासनी रोगनी गर्भवती अरु जो हत्यारी
सत्र मित्र की भाय और गुरु मिष की नारी
इनते जोवरी होइ और धोवन जो कामिन
सोक दत सी होइ और जो दिज की भामिन
पर नारी सो रति किये पर्म दोष जिय जानियो
जो मन चंचल वस नहीं इनसो केल न टानियो

इति नवम पड ॥
अथ औषद वर्नन

शिव वीरज लोहा कनक ताँवा हन्यो जु होइ
चारो धात मिलाइ कै पात रसिक जन कोइ
॥ दोहा ॥
पंघत्र अमिप जु मघूमिरच मनि मूसली स्याम
मुंटी असगंध मोचरस लक्ष दूधी अभिराम
॥ दोहा ॥
संपा होली गुर उरद गेहूँ पीपर वाड
पच गुंज सेधा मठा अरु भहुलेठी भाड़
॥ दोहा ॥
तन मर्दन तिल तेल को पर्मल पान गिलोइ
और कछू जो तिल वला धात सवन ते होइ

अंत............... ।
॥ छंद ॥
अति विमल ठौर सुवास जिह तिह विमल सेज विछाइ
तिह पहुप चंदन चार परमल पान धरै मगाइ

कादंवरी मुप वास तिह लै लौंग आदि सुजान
तिह सुभग निमल वसन तन तन परम परमल गान
सोरह सिंगार संवार सुदर गवन सोहै मराल
वैठे सनमुष जाइ ससमुष सरस रूप रिसाल

॥ आलिंगन आमोद दोहा ॥

भाम कध कर वाम घर वैठावत पिय गोद
पान पवावत प्रीत कर आलिंगन आमोद
मुदित आलिंगन तरुनि जघविव जघ मैं मधू पावत लै तास ॥
सो आलिंगन मुदित कहि टपजत पर्म हुलास (? उपजत)

प्रेम आलिंगन

पति कंठ लपटै एक पग दुतीयं जघ पर जानै
परमल लै तावै उरज प्रेम आलिंगन नाम
.... ।

:o: :o: :o:

विषय—कामशास्त्र विपयक रचना।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित तथा अपूर्ण है। समस्त आठ पत्ने उपलब्ध है। खडित होने के कारण रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या २०५. वानी, रचयिता—पलटूदास, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता—प० हनुमानप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—सोनई वडी, पो०—करछना, जिला—इलाहाबाद)।

आदि—.....................

(क) हवो पंद सूर है कहवा कहवा सुरत समानी हो॥ ३॥
कहवा वोलै सोहग सोहग कहा सब्द की पानी हो॥ ४॥
कहवां वैठा सहज समाजी कहवा पवन अहारी हो॥ ५॥
कहवा वैठा जागृत जोगी कहवा लागी तारी हो॥ ६॥
कहवा वैठा सतगुर वोलै कहवा वोलै चेला हो॥ ७॥
कहवां सेती दुतीया छूटी कहवा भया अकेला हो॥ ८॥
कैसा सन समत है सीका हमते वे पहिचानी हो॥ ९॥
पहुचा कहै सघ की वातै झूठा कहै जवानी हो॥१०॥
ये टकसार साच है भाई मीले न झूठ कहानी हो॥११॥
"पलटू" जव मेरी कसठै हेरै तव मैं कहो ठेकानी हो॥१२॥

अंत—फूटि गया असमान सब्द की धमक से।
लगी गगन मे आग सुरति चमक से॥
सेस नाग और कमठ लगे दोई कापने।
हारे पलटू सहजै लगी समाध वैठ घर आपने॥५७॥
गाड ज्ञान का वास सुरति की. डोर है।
चढा पीलारी धाये जक्त मे सोर है।

अमर लोक के पार हरी येक दूब है।
हारे पलटू हद अनहद के पार तमासा खूब है॥५८॥
सत सोई है कंद और गुर लोट है।
मनधर सोई सरप और सब कोट है।
गज मुक्ता जे सीस सोइ गजराज है।
हारे पलटू और हथि सब भेड ओहि सीरताज है॥५९॥

पलटू दास की बानी सम्पूरन॥

विषय—संत मतानुसार ज्ञानोपदेश।

संख्या २०६. फूल मजरी या पहोप मजरी, रचयिता—पुरुपोत्तम, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७ × ५$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह ६७५।५६), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ फूल मजरी लिप्यते॥

सीस मुकट कुडल झलक संग सोहत व्रजवाल।
पहरै माल गुलाब की आवत है नंदलाल॥ १॥
चंपक वरन सरीर सुष नैन चपल द्रग मीन।
जब दुलहनि तब रूप लखि लाल भये आधीन॥ २॥
फल रही जहा विविध रति (? रितु) वहौत सघन वन वेलि।
कुंज पहोप उर माल धरि करत कुंज मध केलि॥ ३॥
सेत वरन सोभा अधिक मानौ मधु की धूप।
लसत राधिका कुवरि पै करकै वरो अनूप॥ ४॥

अंत—कहत फिरत सब सषीन मै सौतिन लोचन सूल।
आज लाल हम है दयौ सूरजमुषी को फूल॥३०॥
पीतांवर की छवि वनी सोहत स्याम सरीर।
कुसुम केतकी मुकट धरि आवत है वलवीर॥३१॥
पहोप वंध धरि ग्रंथ है कह्यो पहोपन को नाम।
"परसोतम" याको भजै लै लै पहोपन के नाम॥३२॥

इति श्री पहोप मंजरी संपूर्ण॥ १॥ शुभमस्तु श्रीरस्तु॥

विषय—३१ दोहो मे राधा कृष्ण की भक्ति और शृगार वर्णन के साथ साथ प्रत्येक दोहे मे एक फूल का नामोल्लेख हुआ है।

संख्या २०७क. उत्सवमालिका भाषा, रचयिता—श्री पुरुषोत्तम जी, स्थान—कॉंकरोली, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—६$\frac{3}{4}$ × १०$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४५, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६० के अनतर, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० व० स० ६०, पु० स० ३।

आदि—श्री गोपीजनवल्लभाय नमः॥ अथ उत्सव मालिका श्री पुरुषोत्तम जी कृत लिख्यते॥ श्री कृष्णाय नम.॥

जन्माष्टमी सप्तमी मुक्ता सूर्योदय विद्धरन करनो। उवरती अष्टमी होयसो करनो। अष्टमी थोडीहू न होय तब शुद्ध नवमी को उत्सव करनो। अष्टमी क्षय होइ तो दूसरे दिन थोडीहू होइ तो उत्सव प्रथम दिन होय।

मध्य—पृ० १६

मगसर वदि ७ श्री गोकुल नाथ जी चोथे को उत्सव वागा वाट को कुलहीतेसी, ओढनी केसरी, राज भोग मे सामग्री, आरती मोती की कीर्तन जा दिन भेट न्योछावरि नाम रतन होय। सर्वोत्तम होय। न्योछावरि पावें। वधाई दिन ८ की वदनवार कपडा की जा दिन नगार खानो वाजें ॥

अंत—

जो ग्रस्तास्त होइ तो मोक्ष काल शास्त्र तें जानियें। पाछें जल मगाय कें स्नान सिंगार भोग उत्सवादिक करें। आपु जेवें नहीं। जव चन्द्र सूर्य सुद्ध देखें तव जेवें। चद्र सूर्य मेघादि सो आच्छादन होय तो शास्त्र तें मुक्ति समय जानिकें जेवें। जो ग्रस्तोदय होइ तो ग्रास तें १ पहर पहलें अन्नकूट करि रहें। वा द्वादसी पर्यंत दिनातर करे। रासी डोल अन्नकूट रथ पें तीनो जो ता दिन होय न आवे तो उपरात पक्ष भीतर करे। इति श्री उत्सव मालिका भाषा मे श्री पुरुषोत्तम जी कृत सपूरणं ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय सिद्धातानुसार सेवाक्रम तथा वर्षभर के उत्सवों का निर्णय।

संख्या २०७ख. द्रव्य शुद्धि भाषा, रचयिता—श्री पुरुषोत्तम जी, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—५॥ × १०। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८० पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८१, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० स०—६०, पु० स० ६।

आदि—॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ नत्वा श्री वल्लभाचार्यम् हरिसेवोपकारिका ॥ बाह्याभ्यान्तरी द्रव्य शुद्धिरत्र विचार्यते ॥ १ ॥ द्रव्य शुद्धि सस्कृत मे है सो भाषा मे लिखियत हैं। तामे अति अशुद्धि कहियत हैं। रजस्वला ।१। चाडाल २, महापातकी ३, सूतिका ४, शव ५, शवस्पर्शी ६, शावाशौची ७, कूकर ८, चिताधूम ९, चिताकाष्ट १०, देवद्रव्योपजीवी ११, ग्रामयाचक १२, सोमवल्ली विक्रय १३, मद्यभाड १४, चीकनो हाड १५, इतनेन के छूए तें सचैल स्नान करनो।

मध्य—पृ० १०

अब इकट्ठे पात्र धरे होइ तिनकी शुद्धि कहियत हें। पात्र एकठे धरे होइ, वा पात्र समूह होइ तो जाको अमेध्य दुष्ट सवध भयो होइ सो छुयो जाइ और छीये न जाइ। जाकी शुद्धि को विचार। वचन मे कह्यो न होइ तवहू एसें जाननो। काठ के पात्र जूठा भयो होइ तो रेत सो घसिले चिकनाई न छूटे तो छुडा लें।

अंत—अब आत्म शुद्धि कहेत हें। आत्मा के वलभ भगवद्भक्ति ते या भगवद्गान ते शुद्ध सो जो निष्कपटशु करे तो अंत. करण के इंद्रियन के शुद्धता भगवत्प्रसाद शुद्धान्न चरणामृत इनते होइ निष्कपट निर्हेतुक करे तो, यातें आत्मा सोधनार्थ भक्ति सर्वथा करनी, यह शुद्धि वचन को अर्थ ले कें भाषा मे लिखी हे। याते प्रमाण वृद्धि न उपजे। सशय होइ तो सस्कृत मे प्रमाण पुरस्सरहे देखोगे। इति श्री पुरुषोत्तम विरचिता द्रव्य शुद्ध दीपिका भाषा सपूर्णनम् ॥ सवत् १८४१ ज्येष्ठ कृष्ण २ सनि वासरे सपूर्णा ॥ लिखितंग जीवण भट्ट अवदीच्य ब्राह्मण श्री स्याहाड मे लिखी ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति के अनुसार धर्मशास्त्रीय आधार पर वस्तुओं की शुद्धि का प्रकार तथा अन्य आवश्यक ज्ञातव्य विषयों का समावेश किया गया है।

संख्या २०७ग. वनयात्रा, रचयिता—श्री पुरुषोत्तम जी, पत्र—१७ आकार—७½ × ६¼ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६०, पूर्ण, रूप—साधारण; पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१६, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ५६, पु० स० ७।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नम. ॥ श्री गोपीजनवल्लभायः ॥ अथ श्री पुरुषोत्तम जी कृत वन यात्रा परिक्रमा लिख्यते ॥ राग काफी ॥

यह व्रज मेरे मन भाई री।
प्रथम न्हाय विश्रात घाटहि जनम स्थल जहा जाई री।
श्री केसव राय मदिर अति नीको तहा दरस सुख दाई री॥ १॥
कंस मारि विश्राम किए जहां व्रज भक्तन श्रुति कीए री।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत राति निवास सुख लीये री॥ २॥

मध्य—पृ० १६

ताके आगें रामघाट हैं विलास वन तहा कीए री।
श्री वलदेव जी अपने भक्त सहित तहा रास रमन सुख दीए री॥१६०॥
तव श्री यमुना जी यो कहे हें तुमको रास नहीं सोहें री।
रास लीला पति श्री ठाकुर जी हें मुनि भृकुटी रोस कीये मोहे री॥१६१॥

अंत—यह परिक्रमा करी पूरन पाठ करने प्रभु जी पैये री।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखि कें तव अनुदिन लीला गैयें री॥
इति श्री पुरुषो जी कृत वन यात्रा समाप्त ॥ मिती चैत्र वदि ६ भृगुवार सं० १६१६ ॥

विषय—व्रज चौरासी कोस की परिक्रमा का वर्णन।

संख्या २०७घ श्री द्वारकाधीश के शृगार, रचयिता—श्री पुरुषोत्तम जी महाराज, स्थान—कांकरोली, पत्र—६, आकार—१० × ६$\frac{3}{8}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४७, पूर्ण, रूप—साधारण (प्राचीन), गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६५, लिपिकाल—स० १८६५, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६०, पु० स० २।

आदि—॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नम ॥ श्री द्वारकेशो जयति ॥ श्री द्वारिकानाथ जी के सिगार लिखित हे श्री कॉकरोली मध्ये सवत् १८६४ वर्षे।

तिथिवार	श्रीमस्तक	वागा०	पटका	ठाढे वस्त्र	आभरण	कडा	सांगारी	उछव
भा. कृ. ८ सोमवार	स्वेत-कुलही	केसरी-वागो	लाल पटका	लाल ठाडे वस्त्र	भारी आभरण	जोडी ३	श्री लाल जी	उत्सव जन्माष्टमी
भा. कृ. ६ भौमे	स्वेत कु.	केसरी	लाल प	लाल ठा.	भारी सी.	जोडी ३	श्री लाल जी	उत्सव श्री व्रजभूषणजी
भा. कृ. १० बुध	स्वेत कु.	केसरी	लाल प.	लाल ठाढ़े व	भारी सी.	जोडी २	श्री लाल	

मध्य—

फा. व. ७ शुकर	केसरी कुलही	केसरी रेशमी	लाल	स्वेत	माणकक	केसरी	श्री महाराज	श्री नाथ जी को पाटोत्सव
फा. व. ८ शनो.	पतंगी पाघ	पतंगी रंगवाधा	केसरी	स्वेत ठा.	सोना के	केसरी	श्री महाराज	

श्री पुरुषोत्तम जी महाराज तथा श्री वल्लभ जी के लाल जी तथा मुखीया मालिके श्री कांकरोली मध्ये श्री द्वारिका नाथ जी के शृंगार मास १२ के कीये सो लिखे हैं। लि० शोदन रामशंकर बल्लभ रामेण पुस्तक हमारो हे श्री काकरोली मध्ये लिख्यो हे। संवत् १८९५ मार्ग-शिर शुक्ल ७ शनीवारे संपूर्ण ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति के अनुसार तृतीय गृह (पीठ) श्री द्वारिकाधीश, काँकरोली के सेवा शृंगार का तिथिवार वर्णन। जो उस समय के तिलकायित श्री पुरुषोत्तम जी महाराज (समय १८४९ से १९०३) ने प्रस्तुत कराया।

संख्या २०७ड उत्सव निर्णय भाषा, रचयिता—पुरुषोत्तम, पत्र—१३, आकार—९ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८९८, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या-विभाग, काँकरोली, हि० ब० सं० ८९, पु० सं० २।

आदि—॥ श्री गोस्वामी श्री पुरुषोत्तम जी कृत उत्सव निर्णय संस्कृत मे हैं सो संदेह भाखा मे लिख्यो हैं। जन्माष्टमी सप्तमी विद्धा न करनी। सूर्योदय समय जब सप्तमी होइ सो सप्तमी विद्धा कहीये। ताको विवेक जब विद्धाधिका होय तब दूसरी करे। शुद्धाधिका होइ तब पहली करें। जब विद्ध न्यूना होइ तब वह छोडि शुद्ध नवमी को उत्सव करे।

मध्य—पृष्ठ १३

पौष वदि ९ ॥ श्री गुसाई जी को उत्सव तिथि वृद्धि क्षय होइ तो पहली नहीं दूसरी करनी। अभ्यंग नयो रूई को वागाफरगुल नई वागा पीत। अतलस सूथनहू पीत केसरी कुल्हे पटुका कसुंभी लाल जी होइ तो ओढनी सूतरु। पीत दरियाई को लाल हमिदा साडी केसरी दोऊ वस्त्र खुलने पाटके। गुंजाचद्र का नई आभरण विशेष गोपी वल्लभ मे सेव दूध जलेबी बड़ी बडाकी छाछि मोती की राजभोग आर्ती ताही मे कुंकुमा क्षत बीटा रधरि तिलक धरि मुठिया वारि आर्त्ती करियें। प्रनाम करि अनोसर वाहिर श्रोय प्रसादी तिलक परस्पर धरि प्रसाद लीजे।

अंत—अन्नकूट को भोग ऐसें आवें जो स्पर्श पहिलें घडी १ पहिले भोगसर चुकें त्यो १ पहर छोडनो कह्यो हें। उत्सव हू बडो हें। समय प्राप्त पहिलें न होइ। यह आवश्यक। तातें या भोग को दोष नही। डोल तो उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्राधीन हें। तोऊ तैसा होइतो। वैसे होइ तो भलो हे। अपनो तो यही निर्णय हें। इति ग्रहण निर्णय ॥ आर्य नाल पय तक्र दधि स्नेहाज्य पाचित। मणिकस्थोदक चैव न दुस्येद्राहुसूत के ॥ १ ॥ कांजी, दूध, छाछि, घृत, तैल, पक्व बडे मथना को पानी तिल कुश डारि छोडियें छुई न जाय ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा क्रम में वर्ष भर के उत्सवों का धर्मशास्त्रीय निर्णय।

संख्या २०७च उत्सव सेवा प्रणाली (उत्सव निर्णय सहित), रचयिता—पुरुषोत्तम, कागज—माधोपुरी, पत्र—९, आकार—५¾ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परि-माण (अनुष्टुप्)—१९२, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० सं० १९, पु० सं० ७।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्रावण वदि ८ जन्माष्टमी सप्तमी युक्ता सूर्योदय विद्धा न करनी। दूसरे दिन उवरति अष्टमी होई ता दिन उत्सव करनो। अष्टमी घरा न होइ तो नवमी के दिन करनो अष्टमी पेहलें दोन शुद्ध संपूर्ण होय और दूसरे दिन न होइ तोउ पहले दिन करनी ॥

मध्य—प्रबोधनी के दिन जो रात्रि भद्रा होइ तो रात्रि नहीं दिन को करनो नही तो रात्रि को उत्सव करनो ताकी विधि ॥ पहिले सर्वत्र मंदिर मे तिवारि तथा आंगन मे कोठा मे नहीं

भाति चौक पूरिये खडी को, ता पाछे सोरह गडेरीको मडप वनाय वीच सागा मांचो धरि ग्रास-
स ग्राठ दीवी ग्राठ दीसी प्रगट करि पाछें ठाकुर पधराइ नमस्कार करि सालिग्राम को पचामृत
ान कराइ पास वैठाइ चदन चोवा ग्रवीर छीर किमाला पेहेराइ सालिग्रामहु कु सव इतनो ही
ी धूप दीप करी भोग पकवान तथा फलाहार समर्पि भोग सराई वीडी धरि ।

ग्रंत—श्रावण पूर्णिमा के दिन ग्रभ्यग पर्व की सामग्री साडी पिछोडो नयो पेहेर पाछे
ा न होइ ता समे तिलक मात्र करिये ग्रार्त्ती नहीं राखी वाधे पाछें गुल पापडी भोग समर्पिये ॥
त्सव सपूर्ण ॥

विपय—पुष्टिमार्गीय मदिरो मे मनाए जाने वाले उत्सवो का विधि सहित निर्णय ।

संख्या २०८. सिंहासन वत्तीसी, रचयिता—पुरसोत्तम दास, कागज—देशी, पत्र—
, ग्राकार—६¾ × ६¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—२०६,
डत, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा,
ाणसी । (ग्रथदाता—श्री शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट–वरदह, जिला–ग्राजमगढ) ।

ग्रादि—.......... ....

सुनु राजा मम वचन रसारे । कामदेव नृपता हमारे ॥
पुहुपावती हमारी है माता । ताके घर मैं जन्मेउ कता ॥
वारह वर्ष पिता घर रहेउ । मातै पिता स्राप दै कहेउ ॥
ग्रग्या भंग एक मै कीन्हा । तव उह मोहि जती कह दीन्हा ॥
जती ग्रानि मोहि इह वैसाई । वदरीडार वहो दिन जाई ॥
निमिष एक ग्रावै मम पासा । कथै जोग यह ग्यान उदासा ॥
वरवस मोहि रतिकै वन जाई । कै वदरी मोहि उथ चन्हाई ॥

॥ दोहा ॥

वरिस देवस मोहि एहिठा केउ न करै उदघाट ।
जो कीछु लिपा विधाता भुजन ग्रक कपाट ॥

नृपति कहा ज्यों मैं लै जाऊ । ग्रावस संग मैं कहत लजाऊ ॥
कामिनि सुंदर संग ग्रनुसारे । सात समुद्र पार को करै ॥
नृपति कहायं नाघौ पारा । तौका हम दह देवे व वारा ॥

मध्य—

तैंता कह लघुता कै जानेसि । ये तना सुनि गर्भ जिय आनेसि ॥

॥ दोहा ॥

"पुरुषोतिम" कवि गावा विक्रम चरित्र अपूरि ।
पंडित सुनहु कान दै कथा आगु वडि दूरि ॥

इति श्री सिंघासन वत्तीसी सहस सोकनिसकमल चरित्ने पुरसोतिमदास विरचिते अष्टमो
री समाप्तम् ॥ ८ ॥

ग्रंत—

तैं भूपति रापै मोर धर्मा । कुल लजा वो तप को कर्मा ॥
जसमैं सत आपने राया । तस असीस राजा के भाषा ॥
सहस वरष तुम जीअहु राया । काहु के वस्य जिनि होए काया ॥

॥ दोहा ॥

वाढ़ो सत्य हरिचंद सम भीम समा वल देउ ।
साहस ताही समर्थ हसी तेहि सरि होय सव कोय ॥

पुनि राजा कह मया जनाई। पुत्री कं राजा हिय लाई॥
गोद उपर कन्या वैसाएन्हि। मन मोहनी के पाछ चलाएन्हि॥
ले उपव वैताल तुरता। ग्रतहपुर वंसु हरपता॥
ततपन राय मत्री सो कहा। ....

:o: :o. :o:

—अपूर्ण

विषय—सस्कृत ग्रथ 'सिंहासन द्वात्रिशिका' का भापानुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है। ग्रादि के ५० पत्रे तथा ग्रत मे ६१वें के ग्रागे के पत्रे नहीं हैं। रचनाकाल ग्रौर लिपिकाल भी ग्रज्ञात है।

संख्या २०६. विपिक्षय तथा स्पुट रसायन, रचयिता—पुरुपोत्तम, कागज—देशी, पत्र—२, ग्राकार—८¾×४¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—८७, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० रामेश्वर मणि त्रिपाठी, ग्राम व पोस्ट–देवरिया खास, जिला–गोरखपुर।

आदि.......................

पिडारु काठ फल जरी पिसि गोटिका धरिये विपिउ ए पाएं घीव मरीचि घांस लाइ र्निविषि होए। भोजन क्रोध निद्रा मेथून करे त विषि क्षाडल लेहु चारीउ सव सर्वथा कं जाति विसेषतः॥ स्ये ताके नसातानि विपि होये। चित्र विपेनरि अरक पानी कपूर मीसो विजिए तौ मरेः॥ देसरी आकेजरी लाउ विपि से मरः॥

इति श्री पुरुपोतम विरचिते विपि क्षये कृत्वा समाप्तम्॥ सूभमस्तु॥

अथ सुकुटानि विद्यारसाये ने लिप्यते॥

उत्तम रंगा सेर भरी ऽ१ भंरवष की वरटी माटी यह मुदिये अवटि कं छेरी का दूध मह सात दीन सात वेरी वताइ॥ पुनि पत्र काराइ पुनि वरारीम छेरी का मुप मेलिये आधा मुप मेलिये अवटि तव रूप होये॥

ग्रत—

नागार्जुन कहे हैं किन्न होए॥ अवस्यक होए॥ काला धतुरा को रस तामा सोहागा डारिके अवटव ग्रोहि रस मे वताइव सुदर हेम होइहि॥ सोहागा मिलाइ अवटव चौथाइ जमुन के लासा डारि देव दीव्य सोन होये। हरदि मुटि जामुनि के गाछ पोलाइ के डारि देव निमुद करव वारह मास मे निकारव ताम अवटि के तव ग्रोपरा के डारि देव सोवरन होए॥ सेहुडते धुरा षोलाइ के मुडि हरदि डारि देव वारह महिना पर निकारव तामा अवटि के डारि देव हेम सोना होए॥

इति श्री रसिक रसायेन उस्फूट विद्या रसायेने समाप्तम्॥ शुभमस्तु॥

विषय—विप निवारण ग्रौर रसायन विपयक वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—सपूर्ण ग्रथ मे १२ से ग्रधिक पत्रे थे। जिनमे से केवल दो पत्रे रह गए है। इन्हें देखने से पता चलता है कि इनमे विप उतारने ग्रौर धातु ग्रादि मारने तथा सोना ग्रादि वनाने की विधियाँ दी हुई थी।

विपक्षय वर्णन मे पुरुपोत्तम का नाम ग्राया है ग्रौर रसायन विपय वर्णन मे किसी का नाम नही है।

ग्रथ की लिखावट यद्यपि देखने मे ग्रच्छी है तो भी ग्रशुद्धियाँ उनमे बहुत हैं। ग्रथ गद्य मे है।

संख्या २१०. यमुना नवरत्न, रचयिता—"पूरन" कवि, पृष्ठ—३ (२० से २२ तक), आकार—७। × ६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० म० ६८, पु० म० ६१३ ।

आदि—श्री कालिंद्यै नमः ॥ कवि ॥

चवर तरंग छत्र भमर अभंग जल भाई छवि अंग अंतरंग वधू वन की ।
सेवत सुदेश सेस वनिता दिगेसन की पाव तन छेह छिन छाह हूछुवन की ।
मुनिमन मानी जगपूरन प्रमानी सदा सिद्ध वसु दानी दीह दाहक दुवन की ।
वृज रजधानी विधि वेदन वखानी जाणी कृष्ण पटरानी ठकुरानी त्रिभुवन की।।१२२

मध्य—

जन्म के पातक नसात दरसात रूप जात छूटे फंद भवसागर विथा केतें ।
सुमिरन कीनें अमरन को अमर हाइ मरम न पावें कोऊ कोटि परिपाकें ते ।
पूरन कहालो पटरानी को प्रभाव कहो अगम अभेद वेद पावत न जा केते ।
तेज अधना के धूम लोक विधिना के दूर जात जमुना के नेक न्हात जमुना के ते ।।१३७

अंत—

एहो सूरत नया तिहारे तट आइ परचो अधिक अधिन दीन मूढ़ अभिमानी में ।
तुम तो उदार जस प्रगट पुराणन मे वसति मुनीसन के उर वर वांनी में ।
पूरन सरनि जन जानि कें निकट निज दीजिए निवास यहें आसन तही आनी में ।
कीजियो प्रमान मात दीजियो न आनांकांनी कृष्णपटरानी यहे विनय वखानी मे ।।१३०।।

॥ दोहा ॥

श्री यमुना नवरत्न जो पढे सदा सविलास ।
तिहि नवधा विन यत्न सो पूरन होत प्रकास ॥ १३१ ॥

इति श्री यमुना नवरत्न सपूर्ण ॥

विषय—श्रीयमुना जी का माहात्म्य वर्णन तथा स्तुति ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक में प्रस्तुत रचना के साथ 'फुटकर कवित्त' और "वलदेव पटक' भी हैं ।

संख्या २११. वेलरा (श्री कृष्णदेव रुक्मिणी वेलि), रचयिता—पृथ्वीराज, स्थान—मारवाड, कागज—माधोपुरी, पत्र—५, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५३, अपूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० स० २१, पु० स० १ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ वेलरा पृथीराज कृत लिख्यते ॥

कृष्ण देव नमस्कृत्य सर्व देव शिरोमणि. ।
वल्ली नाम्नी प्रयत्ता च गीता तस्मादुदीर्यते ॥ १ ॥
परमेश्वर प्रणम्य प्रणमि शर शंति पणिशत गुरु प्रणामित्रिणेततशार ॥
मंगल रूप गाईजे माह वच्या रस राहीज मंगल चार ॥ १ ॥

टीका—

प्रथम कवि श्री परमेश्वर ने नमस्कार करे छे, पछे शरशति ने पछे
सतगुरु ने नमस्कार करे छे, ए तीनो ततसार छे ।
अरु ए मगल रूप माहव छे तिहारो गुणानिवाद छे ।
तिण उपरांत मंगलचार कोइन छे ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ४

कामिनि कुच कठिण कपोल करी किरिवेस नवी विधि वाण वपाण ॥
अति श्यामता विराजत ऊपजो वनदाण दिखाल्या जाण ॥ २४ ॥
रुक्मिणी जी रास्तन वेसु हस्तीण कपोल करि वर्णया छे वयनवी
कही जे वाणी तिणकर भला पीया छे । अर स्तना ऊपर स्यामता
विराजे छे सुजाणो जोवन डाण दिखा लीया छे ॥ २४ ॥
धर धर श्रृंग सधर सुपीन पयोधर घण पीण कटि अति सुघट ॥
पदमणि नाभ प्रियाग तणी परि त्रिवल त्रिवेणी श्रोण तट ॥ २५ ॥
धर धर कहता मेर गिरि सुं रुक्मणी जी रास्तन मेर रा शृंग करिके वर्णीया छे ।
अने कटि छे सु अति क्षीण छे अने सुघट छे, ने रुक्मणी जी रो नाभ छे ।
सु प्रयाग जी समान कर वखाण्यो छे, अने त्रिवली वेणी कहेता नितब ॥
सोई तट हुआ ॥ २५ ॥

अंत—

विषय—रुक्मिणी हरण सवधी वर्णन किया गया है ।

संख्या २१२क. प्रेम प्रकाश, रचयिता—सवाई प्रताप सिंह जी, स्थान—जयपुर, पत्र—४, आकार—८ × ६६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८४८ वि०, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ६२, पु० स० ८।१ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ प्रेमप्रकाश ग्रथ लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

चित गणपति बुधि सारदा कृष्ण जानि शिरताज ।
मति मेरी तैसो कियो सफल भये सब काज ॥ १ ॥
सुख अनद मगल करन सदा करत प्रतिपाल ॥
निहचै कवि भजि लेहु तुम व्रजनिधिरूप रसाल ॥ २ ॥

मध्य— पृ० ४ दोहा ॥

दइ निरदई कहा करी नेह नगर की रीति ।
फिर फिर वाही मारिये करै जु चित सौ प्रीति ॥ २४ ॥
सूकि गयो वोलोहु सबै नीर द्रगनि अति आत ॥
प्रान नहीं नारी चलै अचरज की यह वात ॥ २५ ॥
इस्क यहै सबतै वुरा करो न कोइ भूल ।
प्यारे की यह भेंट मैं शिर देना है मूल ॥ २६ ॥
अरी भटू हिय ह्वै लटू खाय रह्यो चकफेर ॥
व्रजनिधि मन कौ ले गयो नेक न लगी अबेर ॥ २७ ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

अष्टादश चालीस अठ सवत फागुनि जानि ।
कृष्ण पक्ष नवमी गुरू ग्रंथ कीयो मनमानि ॥ ५४ ॥
कियो ग्रंथ जयनगर मे नाम सु प्रेमप्रकाश ।
पढै कढै पातक सकल वढै प्रेम हय तासु ॥ ५५ ॥
सुखद सवाई जय नगर माझि कियो यह ग्रथ ।
जरनि मिटै हिय नरनि कै प्रेम परन को पंथ ॥ ५६ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराजा राजेंद्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देव विरचितं प्रेमप्रकाश ग्रंथ संपूर्णम् ।

विषय—प्रेमविषयक दोहे और सोरठे लिखे हैं ।

संख्या २१२ख. नीतिमजरी, रचयिता—सवाई प्रताप सिंह जी, उपनाम 'व्रजनिधि', स्थान—जयपुर, पत्र—६, आकार—६३/४ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५२, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६४, पु० स० २११ ।

आदि—॥श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नीति मंजरी लिख्यते ॥ छप्पय ॥

जाको मेरे चाह वही मोसू विरक्त मन । और पुरुष सो प्रीति पुरुष वह चहत और धन ।
मेरे कृत पर रीझि रहो कोऊ ईक औरहि । यह विचित्र गति देखि विचित्र ज्यो तजत न ठौरहि ॥
सब भांति राज पत्नी सु धिक जार पुरुष को परम धिक ।
धिक काम याहि धिक मोहि धिक अब व्रजनिधि की सरन इक ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ६ ॥ छप्पे ॥

तृष्णा को तजि देहु क्षमा को भजन करो नित ।
दया हिये में धारि पाप सो राखि दूरि चित ।
सत्य वचन मुख वोलि साध पदवी जिय धारहु ।
संत पुरुष की सेव नम्रता अति विस्तारहु ॥
सव गुन सु आपनें गुप्त करि कीरति परिपालन करहु ।
करि दया दुखित नर देखिके संत रीत यह अनुसरहु ॥ ४६ ॥

अंत—छप्पे ॥

करत उवटनो अंग न्हाय के अनल लगावत ।
चंदन चर्चित गात वसन वहु भांति बनावत ।
पहरि फूल की माल रतन के भूपन साजत ।
ये नहि सोभा देत नेक वोलत जो लाजत ॥
सवही सिंगार को सार यह वानी वरखत अमृतझर ।
तिहि सुनत सवन के मन हरत रीझि रहत नित नृपति वर ॥ १०१ ॥

॥ दोहा ॥

नीत मंजरी पढत ही प्रगट होत रहें नीत ।
व्रजनिधि के परताप यह करी प्रताप प्रतीत ॥ १०२ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह देव विरचित नीतिमंजरी सपूर्णम् ।

विषय—भर्तृहरि कृत सस्कृत ग्रथ 'नीति शतक' का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या २१२ग. वैराग्य मजरी, रचयिता—सवाई श्री प्रताप सिंह जी 'व्रजनिधि', स्थान—जयपुर, पृष्ठ—२० (३३ मे ५२ तक), आकार—६३/४ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५० पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५२, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६४, पु० सं० २१३ ।

आदि—अथ वैराग्य मंजरी लिख्यते ॥ सोरठा ॥

सर्व दिसा सब काल पूरि रह्यो चैतन्य घन ।
सदा एक रस चाल वदन वा परब्रह्म को ॥ १ ॥

॥ कुडलिया ॥

पडित मच्छरता भरे भूप भरे अभिमान । जीव···या जगत के मूरख महा अजान ।
मूरख महा अजान देखि के संकट सहिये । छद प्रवध कबित्त काव्य रस कासो कहिये ॥
वृद्ध भई तन माहि मधुर वानी गुण मडित । अपने गुनको मारि मोन गहिवे वे पडित ॥२॥

मध्य—पृ० ४२ दोहा ॥

सत सगति सुच्छदता विना कृपणता भछ ।
जान्यो नहि किहि तप किये यह फल होत प्रतछ ॥ ४८ ॥

॥ कुडलिया ॥

जैसे चचल चंचला त्योही चचल भोग ।
तेसे ही यह आय है ज्यो घन पवन प्रयोग ।
ज्यो घन पवन प्रयोग तरल त्योही जोबन तन ।
विनसत लगत न वार गात ह्वै जात ओस कन ।
देख्यो दुस्सह दुष्य देह धारिन को एसे ।
साधत सत समाधि व्याधि सो छूटत जेसे ॥ ४९ ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

करी भरथरी सतक पर भाषा भली प्रताप ।
नीत महल रस गोखपे वीतराग प्रभु आप ॥ १०१ ॥
श्री राधा गोविद के चरन सरन विश्राम ।
चंद्र महल चित चुहल मे जयपुर नगर मुकाम ॥ १०२ ॥
संवत अष्टादश सतक वावना शुभ वर्ष ।
भादो कृष्ण सुकला तीज प्रति ग्रंथ करि हर्ष ॥ १०३ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देव विरचिता वैराग्य मंजरी संपूर्णम् ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

विषय—भर्तृहरि कृत सस्कृत ग्रथ 'वैराग्यशतक' का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या २१२घ. स्नेह विहार, रचयिता—सवाई प्रताप सिंह जी, (जयपुर), कागज—देशी, पृष्ठ—५ (८ से १३), आकार—८ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ६२, पु० स० ८।२ ।

आदि—अथ स्नेह विहार ग्रंथ लिख्यते ॥

दोहा—गन नायक वरदान है सारद वुद्धि प्रकाश ।
राधे कृष्ण विहार कहु पुरवो मन की आस ॥ १ ॥
कहा कहो कहनि कहा मुख तै कही न जाय ।
इश्क कुल्प जुल्फ लगी हाय हाय फिरि हाय ॥ २ ॥

मध्य—पृ०—१०

इश्क आय आफत अरे करे दिलो के टूक ।
नयन नोक झोकि झगरि उठी हुक करि कूक ॥

तेई आया खलक में कीनौ इस्क कमाल ।
जिगर तडफते धडपडे शिर न लगे जगाल ॥ १५ ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

संवत् अष्टादश शतक पंचासत शुभ वर्ष ।
माघ शुक्ल द्वितीया सु तिथि दीतवार मन हर्ष ॥ ४४ ॥

इति श्री स्नेह-विहार ग्रंथ संपूर्णम् ॥

विषय—राधाकृष्ण प्रेम विषयक काव्य ।

विशेष ज्ञातव्य—इसमें पहले 'प्रेम प्रकाश' और फिर यह ग्रथ लिखा है ।

सख्या २१२ड. शृगारमजरी, रचयिता—सवाई श्री प्रताप सिंह जी 'व्रजनिधि', (जयपुर), कागज—देशी, पृष्ठ—१५ (१८ से ३२ तक), आकार—६ × ६इंच, पक्ति (प्रति-पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५२, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ६४, पु० स० २१२ ।

आदि—अथ शृगार मजरी दूसरी लिख्यते ॥

छप्पै—चंद कलामय वाति काति बहुभातिन वरसत ।
जारचो कास पतंग अग विन भयो जु परसत ।
महामोह अग्यान हृदय को तिमर नसावत ।
अपनो आतम रूप प्रगट कर ताहि दिषावत ।
दुति दिपत अखडित एक रस अद्भुत अतुलित अधिकवर ।
जगमगत संत चित सदन मे ज्ञान दीप जय जयति हर ॥ १ ॥

मध्य—पृ० २७ ॥

कामनि हुकमी काम यह नैंन सैंन प्रगटात ।
तीन लोक जीत्यो मदन ताहि करत निज हात ॥ ६६ ॥
दीप अगनि मनि चंद्रमा जगमग जोति सुठार ।
मृगनैंनी कामिन विना लागत सबै अंध्यार ॥ ६७ ॥
चद्रकाति सम मुख लसत नीलम केसहि पास ॥
पुसपराग सम कर लसैं नारीरत्न प्रकास ॥ ६८ ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

महामत्त या प्रेम को जब तिय करत उदोत ।
तव वाके छल वल निरखि विधिहू कायर होत ॥ १०० ॥
काहू के वैराग रुचि काहू के रुचि नीति ।
काहू के सिगार रुचि जुदी जुदी परतीति ॥ १०१ ॥
इह सिंगार की मंजरी पढ़त होत चित धीर ।
सुनत गुनत वाचत लिखत हरत जगत की पीर ॥ १०२ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देव विरचिता शृंगार मजरी संपूर्ण ॥

विषय—भर्तृहरि कृत सस्कृत ग्रथ "शृगार शतक" का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या २१३. अंगद रावण संवाद (आनुमानिक), रचयिता—परधान (?), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—५¾ × ८¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि— रामजी सति ॥ दंडक ॥
आव रघुवीर की सरण अंगद कहै मानि मतिमूढ या वचन मेरो।
जाहु रे जाहु जव कोप लंकेस कह्यौ भुजन मेरी वस्यो काल तेरो ॥ १ ॥
सुर असुर नाग वलईन तें वसि कीयो इंद्र ब्रह्मादि सवही नवाये।
वात अद्भुत यहे और पीछै रहे रीछ कपि लंन गढ लंक आये ॥ २ ॥
वाम कर की अलप अंगुरी अंक भरि लंक गढ वंक छिन माहि ढाहु ॥
का करू नंक मोहि संक रघुवीर की टंक तोहि मारि अवही उडाउ ॥ ३ ॥
होहि ऐसो वली मुगध कपि काहि नं वालि से वाप को वैर लीनू ॥
तात के भ्रात की मात पतिनी करी सत्रु की सरण जाई सीस दीनू ॥ ४ ॥
हूते मम तात के रावरे से लछित धर्म की मेंड जिह फोरि डारी ॥
धूरि परि है अवं राजिहू के वदन राम अवतार वल उडधारी ॥ ५ ॥

मध्य—
सुनत ही वचन मानू फनग को फन चप्यों सिंह पूछ सोवत मरोरयो।
पर जरी आगि उर वीस लोचन विकल पाकि भुज उठत मत्रनि निहारयो ॥ ६ ॥
जौ लौं यह ऐंड अभिमान मद की भरनि ग्रीव में वंक हैं दिपि पेषो ॥
सर सरन वाकरी भुजा रघुवीर की जौ लौ मूर्त्ति मूढ तैं नाहि देषी ॥ ७ ॥
चपल वन चरन को जाति चवोर अति कहा राजान सौं वोलि जानें ॥
छत्ना की छाह इंद्रादि थर थर करैं वक्त तहा धीठ नहि संक मानें ॥ ८ ॥
ईस गिर सेर अधसेर सम गिनत तू आपनौ वल न जीय मो विचारें।
कहत परधान महाराज रावण वली आभ सों वाप मारें ॥ ९ ॥

अंत—
परचो वलि द्वार वलिहारि वावन गदा विकनो कोर दं दं जिवायो।
ता विसम पालनें आनि वाध्यो तवें रह पान मारि कें वार रवायो ॥ १० ॥
मर्म के वचन सुनि छेद हिय में भयो चटपटी जीय भृकुटी चढावें।
हैरे कोऊ सूर सावत मेरी सभा मारिल्यो मद नहि जान पावें ॥ ११ ॥
एक रहपट दिये मुकुट उडि जाहिगे सभा सब चरन सो चापि डारूं।
वालि को पूत यह सोच जिय में करू सिंह होइ मेढकन कहा मारूं ॥ १२ ॥
सुनत अपराध उतपात छोटेन को बडन को छिमा नृपन कहावें ॥
जान धौ दूत अवलौं न मारयो कहू पशुन लरत जीय लाज आवें ॥ १३ ॥
सूर किसोर जव वालिनंदन कह्यौ कौन अव सीस तोसो पचावें ॥
नंक धर धीर रणधीर रघुवीर मनि देषि तरवार कैसी वजावें ॥ १४ ॥

विषय—इसमें रावण अंगद संवाद वर्णित है।

संख्या २१४. कवित्त, रचयिता—प्रधान, कागज—देशी, पत्र—१ नहीं आकार—८¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि---श्री गणेशायनमः ॥

स्वारथ श्रौ परमारथ माह जथारथ वात अहै सब जानी ।
राउ श्रौ रंक को एकहि भाउ निसंक निपाउनि पाटहि आनी ।
सकट प्रान परेहू "प्रधान" तऊ मुष आन न भाषहि बानी ।
लोभ की पौंर लवै न कवौ अस पचन के परमेश्वर जानी ॥
आवै न न्याउ न दाउ कछू लहि संपति पचन्ह मे गनि जाही ।
राजदुआर लषै जेहि चार तेहो रुख टारि प्रसग बताही ।
भाषै "प्रधान" चलै एहि भाँति अनेति अधर्म कि मुरति आही ।
पूरि अभागि भई तेन्ह की जेन्ह के घर पच ए भापन जाही ॥ २ ॥

॥ वैद ॥

रोगी त नाम सुनै जौ कहू सहसा निज डोलन्ह सो उठि धावै ।
जाइ कै ताहि भरोस दे भूरि सो नारी नीरेषि कै रोग बतावै ।
नीक करै लघु वोषध मे गृह रकहु के निज दर्वि लगावै ।
भाषै प्रधान ए वैद सुजान जे कालहु के घर सो धरि ल्यावै ॥ ३ ॥

अत---

जाइ तो न आवै वात वातन ठरकावै दैव जोग से जो आवै न वतावै रोग नाम हय ।
भेद न बतावै तात पानी पिआवै व्रत डेठ सै करावै कहै याही मे अराम हय ।
भाषत प्रधान सान चौगुनौ धनतरि ते एक वेर देषि कै न ताकै धाम ताहि कय ।
आपुना करै अराम रोगी को कहै निकाम ऐसे वैदराजन को दूरि ते प्रनाम है ॥ ४ ॥

आक धतूर घमोइ भरे कषरी ये. .ट की जग वैद कहावै ।
जानै नही कछु रोग के लछन सीत भए पर मठ पिआवै ।
हीसा करै महा ब्राह्मन ते गुन ताके "प्रधान" कहा लगि गावै ।
कुरिसत वैदन की करनी वैतरनी लीही तवही घर आवै ॥ ५ ॥
पीठि पिराय तौ पेटहि होवै पेट पिराई तो नारी निहारै ।
दे पुरिया पहिले विष की पुनि पाछे मरे पर रोग विचारै ।
वीस रुपैया सगुन लै लेहि न देहि जवाव न त्यागहि द्वारे ।
भाषै "प्रधान" ए वैइद कसाइ जो दैव न मारै सो आपनु मारै ॥ ६ ॥

---पूर्ण प्रतिलिपि

विषय---अच्छे श्रौर बुरे पचो एव वैद्यो पर कवित्त रचे गए हैं ।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत रचना मे केवल छ छद हैं । पता नही चलता कि यह पूर्ण है या अपूर्ण ।

संख्या २१५. बारहखडी, रचयिता---"प्रभुलाल" (?), कागज---देशी, पत्र---४, आकार---८$\frac{3}{10}$ × ५$\frac{3}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---६, परिमाण (अनुष्टुप्)---६५, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि---ॐ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

ॐ कका कलिजुग नाम अधारा ॥ प्रभु शिमरो भव उतरो पारा ॥
साध संगत करि हरि रस पीजे ॥ जीवन जन्म सुफल कर लीजे ॥

:o: :o: :o:

ख खा खोजो सकल जहाना ॥ जाको गावै वेद पुराना ॥
नीर्भे नाम हरी को लीजे ॥ चरन कमल को ध्यान करीजे ॥

:o: :o: :o:

ग गा गुण गोविंद के गावो ॥ माया जाल भूलि जिन जावो ॥
धन जोवन तन रंग पतगा ॥ छिन मे छार होइ यह अंगा ॥
:o: :o: :o:
घ घा घट घट वोलव भाई ॥ जल थल मे प्रभु रहे समाई ॥
ऊच नीच ज्ञानक करि देखो ॥ ऐकहि ब्रह्म सकल मे लेखो ॥
:o: :o: :o:
न ना निगम खोजि कर देखो ॥ दुजा और नहि कोई लेखो ॥
सप्त दीप अरु ब्रह्मडा ॥ माहि छाई रहो नव खडा ॥
:o: :o: :o:
च चा चित निहेचे करि रापो ॥ मिथ्यावाद झूठ मति भाषो ॥
सत्य सब्द तव होई प्रमाना ॥ झूठ वचन सोई पाप समाना ॥
:o: :o: :o:

"प्रभु लाल" गुरुदेव लपायो ॥ त्रिश्मालोभ सव दूरि गमायो ॥

अंत—
ह हा हरि गये पाप पराछत तापा ॥ श्री गुरु चरण कमल प्रतापा ॥
:o: :o: :o:
ल ला ले नेकुं हरि नामा ॥ देने कुं है अन्न को दाना ॥
:o: :o: :o:
क्ष क्षा छुहो विप वंधन चाहिये ॥ सत गुरु चरन सरन होय रहिये ॥
नाम मधुर रस पिवो सुजाना ॥ जासे गर्भ वास नहि होय पयाना ॥
बाराषडी ज्ञान गुन गावो ॥ सव सतन कु सीस नवाऊ ॥
दीन प्रति दास सुमाना ॥ नमस्कार करू गुरुदेव प्रनामा ॥
इति श्री सुदामा जी की वारापरी ज्ञान गुनवान संपूर्ण ॥ ३५ ॥ श्री ॥

विषय—ज्ञानोपदेश ।

संख्या २१६. दधिलीला, रचयिता—प्रमादास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६½ × ३¼, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—श्री गनेसाए नमह ॥ श्री पोथी दधी लीला ॥
प्रथम सनद अपार के प्रभु दान लीला गाइए ।
जो कहत सुनत अनद उपज प्रम पद को पाइए ॥
व्रीषभान सुता सुकुमारी । दधी गोरस वेचनि हारी ।
ह्रीदए धरी अतर ध्याना । चली सुमीरत श्री भगवाना ॥
जह सीतली कदम जुडी छाहा । तह वेठ कुअर नर नाहा ॥
सष्पी गेंडुरी पेलत आइ । तव कोरन जी मुरली वजाइ ।
दधी वेचन चली व्रीज वाला । वीच आइ मीले नदलाला ॥
देहु देहु गुजरी दधी दाना । नही अंचल रोकत कान्हा ॥
तुम छाडु गुमान गवारी । फरिहों कुच कंचकी सारी ॥
सब भूषन लेउ छीनाई । मटुकी दधी देउ लुटाई ॥
तुम वहुत कीहो चतुराई । छोड़ीहो नहीं नद दोहाई ॥

॥ छंद ॥

छोड़ीहौं न नद दोहाइ गुजरी जान केव करी पाइहौं ॥
अव देषीहौं वल ग्रभ तेरे कवन आइ छोड़ाइहौं ।
सबन दीनो दान मोको तुम वहुत सरवरी करो ।
चतुर चचली ढीठी लगरो देषा न ऐसी गुजरी ॥ १ ॥

सुनी गुजरी हरि मुष वैना । त्रीअ वक भए मुष नैना ॥
तुम समझी न वोलु मुरारी । हम हैं मथुरा की गुआरी ॥
जह ठाकुर कस भुआरा । सुधी सुनतहो करीही सघारा ॥
न हम लादे लवग सोपारी । हम गोरस वेचन हारी ॥
जव कस राइ सुनी पैहै । तव नद ही पकरी मगैहै ॥
सव गौअन लैहै छीनाइ । गोकुला धन दैहौ लुटाइ ॥
तुम हौ अपने मदमाते । ताते करहु अटपटी वाते ॥

करत अटपटी वात मोहन घात कछुउ न लागीहै ।
हम न होहि गवारि गुजरी डर तुमारे भाजीहै ॥
अव चीत चेतु वीचारु मोहन छाडु अचल वाम की ।
लाइ कलक धराइ मागौ तौ सुता वृषभान की ॥

सुनी गुजरी वचन रिसाला । हसी वोले नंद के लाला ॥
काहु झूठ कलक लगैए । अपनो परलोक नसैए ॥
वीना दान जान नही पैहो । जौ कोटिक त्रास दिषैहो ॥
हम आदी व्रंभ अवतारा है । क्रीस्न जी नाम हमारा है ॥
हम ही सव दैत सघारा । वसुधा कर भार उतारा ॥
पुनि करव गऊ प्रतीपाला । है नाम हमार गोपाला ॥
सुषीयन के सुष दैहौं । श्रीतु मंडल मे जस लैहो ॥
है त्रीभुवन नाम हमारा । का करीहैं कंस बेचारा ॥
यसें त्रीया चरीत्र न लागै । हमसे चतुराइन फाबै ॥

॥ छंद ॥

चतुराइ न फावै सुदरी जौ जान आतुर घर चहो ।
मानी रही रस करहु कीडा हरी भले तुमहु भलो ॥
नग्र सुनी उपहास करी हे कवन इत उत कीजिए ।
अव आपनो राषु सुदरी दान हमरो दीजिए ॥

॥ चौपाई ॥

जव कापै कहा अस वाता । तव गही फटी फारेसी हाथा ॥
हम मातु पिता घर वारी । अस वोल न वोल मुरारी ॥
वरु षाहु दही भरी पेटा । आने वातन ते नही भेटा ॥
मटुकी सीर ते उतराई । करु वोढे कुअर कधाइ ॥
नही ग्वाल दधी दीसी मागै । तह इत उत पैचन लागै ॥
दधी देत गुजरी अकुलानी । प्रभु नेकु न चीतवनी मानी ॥
एक भाजन लै भजी जाई । गेडुरी एक ग्वाल चोराई ॥
तह काध करै विचवानी । मुष अचल दै मुसुकानी ॥

॥ छंद ॥

मुसुकाइ मुष पर देत अंचल चतुर चंचली भामीनी ।
स्याम घटा घन घेरी आइ मनो दमकंत दामीनी ॥

कहती राधे चरन गहीके काध अब घर जान दे ।
ककन मोतीन माल मुकुता कछुक आपन दान ले ॥
जव देन लगी सपी दाना । तव अति इतराने काना ॥
प्रभु मौनी साधि कै बैसे । जोगी मुनी जगम जैसे ॥
करी जुवती अनेग चलावै । प्रभु नैनन्ह मे चीत लावै ॥
तव राधे निकट चली आई । सुनो लीजै वीनती गोसाई ॥
हसही सव दास तोहारी । अत चरन सरन वनवारी ॥
धनी जीवन जन्म हमारा । जव दरसन पावो तोहारा ॥
अव जो चाहे सो लीजे । प्रभु क्रीपा आपनी कीजै ॥
कोइ बैठी बआरी डोलावै । कोइ वीरा पोली पीलावै ॥
हरी देपी गुजरी...... । हसी वोले सारग पानी ॥
हसि वोले सारंग पानी मुंदर मानी रती रस भै रही ।
कर केलि कलोल कीन्हो सहस रग रस नै रही ॥
करहु क्रीपा दरसन मोहन कवल लोचन राजही ।
"दास प्रभा" प्रेम सोभा कहत कलीमप भागही ॥

—प्राप्त प्रति की पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—श्रीकृष्ण और गोपियों की दानलीला का वर्णन ।

संख्या २१७क. कृष्ण वृत्त चद्रावली, रचयिता—प्रवीन कवि, कागज—देशी, पृष्ठ—११, आकार—८ × ६¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६२, पु० स० ८।१ ।

आदि—॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
सुमिरत हीं जाके चरित टरत विघ्न निसेस ॥
वदहि किन्नर नर अमर सकट हरन गनेस ॥ १ ॥

॥ त्रिभंगी ॥

वदे गजवदन सुदर रदन सुभमति सदनं विघ्नहरं ॥
विद्याखिल दान प्रगट प्रमान भवति ज्ञानं यद्रुचिर ॥

मध्य—पृ० ८अ. हरिनी ल-दोहा ।
नसमरसहि क्रम सो धरो लघु गुरु देउहु अंत ॥
षट् श्रुति मुनि सो विरति जहँ उह हरिणो कहि कत ॥३४॥

मध्य—तब हँसि कह्यो एरी लीजे दुकूलनु आइकें ।
तुम कत रहीं पानी ही में महा दुखु पाइकें ।
जब कुंवर सो नारीं हारी सबे सिसु जानिकें ।
कुँवर तवही दीनी रु.ारी महारसु पाइकें ॥३५॥

अंत—कृष्ण वृत्त चंद्रावली तिहितें रची प्रवीन ॥
जाहि लखें जिय को तिमिर होत करोई छीन ॥१८॥
जोलो सिव सिर गंगजल जोलो ध्रुवधर भानु ।
कृष्ण वृत्त चद्रावली तोलो होहु प्रमान ॥१९॥

सुनत गाज गजराज की विपती हरी जो ग्राइ ।
भक्तवछल सो हरि ग्रवे मेरे होहु सहाइ ॥२०॥
मेरे ग्रोगुन सकल जेहें यह निरधार ।
कृष्ण वृत्त चद्रावली जिहि तें करचो सिगारु ॥२१॥

इति श्री कृष्ण वृत्त चद्रावल्या गणादि नाम कथनं नाम षोडशः कलाभेदः ॥ इति कृष्ण वृत्त चंद्रावली समाप्ता ॥ शुभं ॥

विषय—पिंगल विषय वर्णन । पृष्ठ सख्याएँ गडवड हैं । ग्रारभ मे १८ से २१ तक ग्रौर वाद मे १ से १७ तक हैं । ग्रथ मे १६ कला भेद हैं, जो उसके प्रकरण विभाग हैं । प्रथम कला भेद मे छदो के नाम, द्वितीय में गणो के नाम, तृतीय मे एकाक्षरादि त्र्यक्षरात्य वृत्त, चतुर्थ मे चतुरक्षरादि षडक्षरात्य वृत्त, पचम मे सप्ताक्षरादि नवाक्षरात्य वृत्त, षष्ठ मे—दशाक्षरादि द्वादशाक्षरात्य वृत्त, सप्तम में—त्रयोदशाक्षरादि पचदशाक्षरात्य वृत्त, ग्रष्टम मे—षोडशाक्षरादि ग्रष्टादशाक्षरात्य वृत्त, नवम मे—एकोनविंशाक्षरादि द्वाविंशत्यक्षरात्य वृत्त, दशम मे—द्वाविंशत्यक्षरादि चतुर्विंशत्यक्षरात्य वृत्त, एकादश मे—पच विंशत्यक्षरादि षड्विंशत्यक्षरात्य वृत्त, द्वादश कला भेद मे—द्वितीय त्रिभग्यादि वृत्त कथन, त्रयोदश में—चडवृष्टि प्रतापादि दडक कथन, चतुर्दश मे—द्विपथादि, पचदश मे—ग्रर्द्धसमाधि, सोलहवें मे—गणादि नाम कथन ।

इस प्रकार सोलह कलाभेद हैं । वृत्तो के लक्षण पहले देकर वाद मे उदाहरण लिखे हैं। छदो मे भगवान् का चरित्र वर्णन किया है ।

संख्या २१७ख. श्री द्वारकाधीश के विचित्र विलास, रचयिता—'प्रवीन' कपव, कागज—देशी, पृष्ठ—४८, ग्राकार—८ × ८½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—७२०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८१७, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ५२, पु० स० ३ ।

ग्रादि—श्रीकृष्णाय नम. ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ श्री द्वारकाधीश के विचीत्र विलास लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरन प्रनाम करि, गणपति को सिर नाई ।
वानी को सुमिरन करों परम महा सुखदाई ॥ १ ॥
पूरन गिरा प्रसाद तें रचना रच्यो नवीन ।
द्वारावती नरेस की सोभा सरस प्रवीन ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १६

पूरन हो सव भांति प्रसिद्ध काहालो प्रभू रसना को नचाइये ।
ग्रोर सुहात न वात कछू जुहवे हमन को धन दे ललचाइये ।
नेह प्रवीन लाग्यो तुमसो या नेह कहो कीत जायी जगाइये ।
प्रीति लगाइ गिरा के प्रसाद श्री द्वारवती के नरेश को गाईये ॥१२१॥

ग्रंत—

रिखि विधि वसु ससि संवत ही द्रुतीया गुरु सुद महि ॥
यहे ग्रंथ पूरन कीयो भयो प्रवीन उछाह ॥८५॥

इति श्री द्वारिकाधीस विचित्र विलास वर्नन नाम दसमोल्लास श्री सुभं भवतु । श्री कृष्णाय नमः ॥

विषय—कांकरोली के श्री द्वारकाधीश भगवान् का ग्रौर राय समुद्र तालाव का वर्णन। श्री द्वारकाधीश जी का ऐतिहासिक विवरण भी दिया है ।

संख्या २१८. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—प्राणचंद्र चौहान, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६¼ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८० वि०, प्राप्तिस्थान—नाना नरयू प्रसाद श्रीवास्तव, ग्राम–रुखसराई, पो०–सराय अकिल, जिला–इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥

॥ चौपाई ॥

श्री राम नाम प्रह्लाद जो लीन्हा। ताके पिता बहुत दुष दीना॥
बहुत जतन कै पढै बैठावा। श्री राम नाम बिनु और न भावा॥
राजा पूछा निकट बोलाई। का विद्या तोहि गुरू निपाई॥
तब प्रह्लाद कही कर जोरी। विनती सुनहु तात एक मोरी॥
विद्या पढि सबं हम वाचा। एकै श्री राम नाम है साचा॥
सुनि कै राजा उठा रिसाई। निंदि गुरू तन भौंह चढाई॥
ऐ अस कहा दोस सब तोरा। एह बालक का जाने मोरा॥
जेहि की आदि अंत नहि जाती। ताकर नाउ लेत दिन राती॥
वोह गुरु छोडि और गुरु दीन्हा। मत्रिन बहुत सिखावन दीन्हा॥

अंत—

जेहि के म्या मै रहौ भुलाना। मनुज रूप कैसे के जाना॥
कबहु न दरस भगवाना। सकार जोग करहि धरि ध्याना॥
समाधान जो एहि मन लावै। प्रभु प्रसाद जो भक्ति वर पावै॥

यह कथा भाषी प्रानचंद चौहान। यह प्रहलाद चरित्र जो देषा सो लिषा। पडित जन सो विनती मोरी अछर टूट मिलाउ जोरी। संवत् १८८० मीती भदौ सुदी २॥ लिषा भगवान दास काएस्थ॥

विषय—प्रह्लाद-चरित्र-वर्णन।

संख्या २१९. अजीरारास (धामी पंथ का ग्रंथ), रचयिता—इंद्रावती और महामति (? प्राणनाथ), कागज—देशी, पत्र—४५६, आकार—१२½ × १०¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८४६५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८५३, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी। (दाता—कुँवर सुरेश सिंह जी, कालाकांकर, अवध)।

आदि—.......... ....

हार होसी तब ॥१८॥
ना कछु कात्या रात मैं ना कछू कात्या दिन।
सोवत न वीच सैयन मैं मुष उचार होसी तिन ॥१९॥
जो मोटा या वारीक तिन भी पाया मूल।
पर जिन कछुए न कातया तिन सु कछुए ना मूल ॥२०॥
हुकुम धनी की विध विध अनेक किये पुकार।
जिन सुनी न तिनकी वतन मैं वातें हुई पिकार ॥२१॥
सुनते पुकार धनी को काल गया दिन ले।
पीछै मुष नीचा होएसी क्यों न कात्या चित्त दें ॥२२॥

अंत—

जिन पाइ राह रोज कयामत। तो उठे फजर के नूर दउत॥
फजर पीछे जब उगा दिन। तब तो तोपा तोया हुई तम तन॥४॥

तव तो दरवाजा मूद के गया । पीछें तो नफा काहू को न भया ॥
सव जले जल्या अजाजील । जाए उठाया असराफील ॥ ५ ॥
एक सूरें उठाए के दिए । दूसरे तेरं में काएम किए ॥
यो क्यामत हुई जाहिर दिन । महमदे करी उमत रौसन ॥ ६ ॥२४॥५३१॥
॥ तारीष नामा तमाम ॥

॥ संवत् १८५३ ॥ के जेठ वदि ५ गुरो को ॥

विषय—धामी सम्प्रदाय की रचनाओ का सग्रह ।

रचनाओ के नाम नीचे लिखे जाते हैं :—

1. किताव जवूर—लक्ष्मी जी का दृष्टात, प्रगट वानी, वेहद वानी, दूध पानी का वेवरा, भागवत्त को सार, पप पुष्ट मरजाद पखा—पत्र ४६–६१ तक
2. किताव पट्‌ऋतु और वारामासी—पत्र ६२–६६ तक
3. किताव तौरेत श्री कलस हिन्दुस्तानी—पद विरह का प्रकरण, अवतारो का प्रकरण, गोकुल लीला, जोग माया के प्रकरण, दया को प्रकरण, हासी का प्रकरण, जागने का प्रकरण—पत्र ७०–८६ तक
4. सनधे—पत्र ६०–१३१ तक
5. किताव कीर्तन—पत्र १३१–१८६ तक
6. खुलासा फुरमान—गिरोह दीन का, मेहेराज नामे का, खुलासा इस्लाम का, भिरत सिफाएत का व्योंरा, हकी सूरत का, नाजी फिरका, रहो की विनें, नूल नूरत, जलाकी पेहेचान, जहूर नामा, दुनामा, मीजान की सूरत, अरस अजीम की हक, मारफत महाकारन, मोमिन आये अरस अजीम से—पत्र १८६–२११ तक
7. खिलवत—पत्र २११–२३८ तक
8. परिक्रमा—पत्र २३६–३०२ तक
9. किताव आठो सागर—पत्र ३०२–३३२ तक
10. श्री राज जी का वडा शृगार—पत्र ३३२–३६० तक
11. वानी आखर की सिंधी भाषा मे तथा उसकी हिंदुस्तानी—३६१–४०५ तक
12. किताव मारफत सागर—पत्र ४०६–४३३ तक
13. कयामत नामा छोटो—पत्र ४३३–४३६ तक
14. क्यामत नामा वड़ो तथा तारीख नामा—पत्र ४४०–४५६ तक

संख्या २२०. जेहली जवाहिर, रचयिता—प्राननाथ सोती, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८¾ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७६०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आ द—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जेहली जवाहिर लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

वानी वानी दीजिये वानी कहो वनाइ ।
रानी तीन्यो लोक की मांनी मानों पाइ ॥ १ ॥
जेहरिपुर में जेहली वसें सवं सुप पाइ ।
कातर पुर ता पास पुनि वस्यो नयो ही आइ ॥ २ ॥

॥ चौपई ॥

नित उठि झगरो लाग्यो होन । इहिं ठाँ आइ वसे तुम कौन ॥
कातर किसवुरु जाति अनंत । देव कृपा तें एकै तंत ॥ ३ ॥

जौब कहौ तौ इंहिठां वसियें । नाही तौ इंहि कालहि नसियें ॥
मतौ करन कों कियो विचार । तामे लगो तनक सी वार ॥ ४ ॥
वरस छसातक ह्वै कै गए । तव सव मिलि इक ठौरें भए ॥
नयौ गांउ कातर पुर नांउ । आनि वरयो है याही ठाउ ॥ ५ ॥

अंत—— ॥ चौपाई ॥

धसिकं मारेंगे निसि सवैं । तव हम भाजि सकेंगे कवैं ॥
अमलिनु कियो विचार सुनं.कौ । जायें जानुन काहू जी की ॥४८॥
२। परवत तें पय नदी जु छोडी । सिगरे वहे परी नहि ओडी ॥४६॥
१। परवत तें पय नदी वहाओ । रहेव तिनकों मारि वहाओ ॥
अमलिनु अमलिन सों यों कही । नामरदन की रैयति सही ॥
अमल करें सैलन कों जाहि । नामरदन पै तें लै याहि ॥५०॥
जौ ए कह्यो हमारो डारें । तौ इनको वातनु सों मारें ॥५१॥

॥ दोहा ॥

मारे सोफी जेहली फते लही है आपु ।
कचन रैयति प्रभु दई मिटयो सकल सतापु ॥५१॥

इति श्री कवि प्राननाथ सोती कृत ॥जेहली जवार समाप्त ॥ शुभमस्तू ॥ सवत् १७६० मिति आषाढ शुक्ला १ रवौ लिपित मिश्र नीलकठस्यात्मज मिश्र सोमनाथ स्वपठनार्थ ॥

विषय——मूर्ख (जेहली) और सुकुमार (सोफी) तथा व्यसनी (अमली) और नपुसक लोगों की लडाई का वर्णन किया गया है। मूर्ख और सुकुमार एक ओर थे और व्यसनी तथा नपुसक दूसरी ओर। पूर्वोक्त पक्ष लडाई मे नष्ट हो जाता है। कथा हास्यरसयुक्त है। इसमे उपदेश कुछ नही।

विशेष ज्ञातव्य——रचनाकाल उल्लिखित नहीं है। लिपिकाल सवत् १७६० है।
रचयिता का नाम पुष्पिका के लेख के अनुसार प्राणनाथ सोती है। इनका और परिचय अप्राप्त है। परतु इसमे सदेह नही कि ये सवत् १७६० के पहिले हुए ह।

प्रस्तुत प्रति महत्वपूर्ण है। इसकी प्रतिलिपि हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि सोमनाथ ने की है। इससे उस समय के प्रसिद्ध कवियो की शुद्धाशुद्ध लेखन शैली के विषय मे पता चलता है। अनुस्वार की जगह सर्वत्र चद्रबिंदु प्रयुक्त हुआ है। प्रति शुद्ध जान पडती है। एक महाकवि को दूसरे के ग्रथ की नकल करने मे अपने दायित्व का किस प्रकार निर्वाह करना चाहिए, यह प्रस्तुत प्रति से प्रकट होता है।

सख्या २२१क. मनमोहन लीला, रचयिता प्रेमदास, कागज——देशी, पत्र——३, आकार——७ 6/16 × ४ 14/16 इन्च, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१८, परिमाण (अनुष्टुप्)——५४, खडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी कैंथी मिश्रित, प्राप्तिस्थान——का० ना० प्र० सभा, वाराणसी, (दाता——प० शिवप्रसाद जी भट्ट, ग्राम–खोपा, पोस्ट–सराय अकील, जिला–इलाहाबाद)।

आदि——......................

मानो सखी सिपवन मेरो गेंद स्याम को दीजे ।
जमुना जी मे मजन करिकै गवन भवन को कीजे ॥३७॥
चलो वेगही घरै आपनें सुनिये विनय हमारो ।
तनीक भूल पंइहे जो फेरी घर घोर्क महतारी ॥३८॥

हसी के दीनो गेद राधिका लीजे मदन गोपाला ।
मैं दासी हौं कीस्न तुम्हारी सुनीए दीनदयाला ॥
कालींदी को चली राधिका फिर फिर चितवत पाछे ।
इहा कीस्न जू पेलन लागे सषा सग पुनि आछे ॥
नंदलाल वृषभान लडीली सुनीए वींनै हमारी ।
कृपा कटाछ हरीए जन परै "प्रेमदास" वलिहारी ॥

इति पंचरतन गेंद लीला प्रेमदास विरचितं सुपुरन ॥
अथ लीला लीषते महादेव कीस्न को

॥ दोहा ॥

प्रथम लाडीली लाल के चरन कँवल सीर नाए ।
पुनो वदो जलजात से सीउ परसाद के पाए ॥ १ ॥
गुना राम के पद गुर पकज तीनको. . .लगाई ।
राधा कीस्न चद की लीला के धरन मनाइ ॥ २ ॥
एक समै कैलास सीषीर पर तरु तमाल की छाही ।
तहा अनीकै वैठे संकर जु अधीक प्रेम मनमानी ॥ ३ ॥

अत—सव घर सव आदी अंत ते जसुदा तुरीत पथने ।
सुनी के महर धीआ की वाते हरहर कै पछीताने ॥
धन्य धन्य नर नारी सवै सुफल नैन नीज कीन ।
मोही कली कै पातषी सउ दरसन नही दीना ॥६०॥

इति श्री मनमोहन लीला प्रेमदास वीरचीतं महादेव दरसन वरनो नाम प्रथमोध्याय ॥

विषय—श्रीकृष्ण की गेदलीला और शिव दरसन लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना आदि और अत मे खडित है । केवल तीन पत्र उपलब्ध हैं । रचनाकाल और लिपिकाल का भी कोई पता नही ।

संख्या २२१ख. प्रेमसागर, रचयिता—प्रेमदास, स्थान—विरजपुर, पत्र—२८ पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२७ वि०, प्राप्तिस्थान—सेठ गुलाब चद जी, सुहाने, ८-८-छतरपुर ।

आदि—श्री गनेस जू श्री सरसुती जू श्री महादेव जू श्री पारवती गौरामहारानी जू श्री लछमो जू श्री राधा कैस्न जू श्री राजा रामचद जू । सदा सहाइ अथा प्रेमसागर छद ललित लिपते ॥

जय विरच जल जय नारायन जय महेस गनेसा ।
जय सारद गुर जय जय देवा उर मै करहि प्रवेसा ॥

मध्य—पृ० सं० २८

लगीं लिपन मन के दुप सवरे हती जौंन जियै वाधा ॥
श्री मोहन नदलाल दुलारे जसुदा जू के वारे ॥
हितै श्री राधा गोपिन सवकी हे प्रानाम प्रिय प्यारे ॥
उति के स्माचार सुभ चहिये सुनो कैस्न जे वैना ॥
हित के स्मांचार सुभ जा दिन ता दिन देपे नैना ॥

अंत—पृ० सं० ५६

. . . .
. . . .

. . . .

प्रेम सहित मे मत्रन करहिं जानहि पं विस्वाम ॥
ताके भौंन दलिद्र ना रेहैं करं लछमी वाला ॥
प्रेम कहे हरदरस मिलन हैं सकर केस्न विधाना ॥

विषय—गोपी उद्धव सवाद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ये कवि खोज मे नवोपलब्ध हैं । 'प्रेम सागर' की दूसरी प्रति भी मिली है जो पूर्ण है । दो अन्य पुस्तकें भी इनकी प्राप्त हुई हैं । उनमे मे एक का नाम 'नागवेत पुरान' है और दूसरी का 'पचरतनी गेंद लीला' ।

सख्या २२१ग. गेद लीला, रचयिता—प्रेमदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१७ वि०, प्राप्तिस्थान—१० लक्ष्मीकात त्रिपाठी, एम० ए० (प्रिवियस), ग्राम—डुकसहा, पो०—करछली, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गनेसाय नमः ॥

जय जय कृष्ण कमल दल लोचन दुष मोचन सुषदाई ।
जै गुविंद ब्रजनद चद सुत आरत हरन कन्हाई ॥
जै राधे व्रषभान डाडिली पूरन करिये साधा ।
जे नर आवत सरन तुम्हारी तिनकं रहत न वाधा ॥
अपनं हिय यह धरिकं राधं जिय दुविधा जिन राषौ ।
लीला ललित लाड़िली जू की प्रेम सहित कछु भाषी ॥
ये सम प्रभु गेंदन पेलत श्री वृंदावन माही ।
जमुना कुज सघन की लीन्हे वसी वट की छाही ॥
तहा आई निकसी श्री राधे पाचो सग सहेली ।
तिनकी लषि रभा रति लाजं कचन कैसी वेली ॥
देषी गेंद परी मोहन की राधा तुरत उठाई ।
हरि की दीठ' वचाइ लाडिली ललिता हाथ गहाई ॥

अंत—चलो वेगि अब घरं लाडली सुनिये अरज हमारी ।
तनक भेल जो हुहै प्यारी तौ वदिहै महतारी ॥
हसि कं दीन्ही गेद राधिका लीजे मदन गोपाला ।
हम दासी है कृष्ण तुम्हारी सुनिये दीन दयाला ॥
कालिद्री को चली राधिका फिरि फिरि चितवत पाछे ।
इहा कृष्ण जू षेलन लागे संग सषा सव आछे ॥
नदलाल व्रषभान लाडली सुनिये अरज हमारी ।
कृपा कटाक्ष हेरिये जन पं प्रेमदास वलिहारी ॥

इति श्री गेंदलीला संपूर्ण ॥ श्री चित्रकूट सीतापुर ग्रामे लिष्यत लाः सीताराम राम ॥ ॥फागुन॥ सुदी ॥ १० संवत् १६१७ ॥

विषय—श्रीकृष्ण की गेदलीला का वर्णन ।

सख्या २२१घ. पचरतनी गेंद लीला, रचयिता—प्रेमदास, ग्राम—विरजपुर, पत्र—१६, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—स० १८४५, प्राप्तिस्थान—लाला भगवान दास जी पटवारी, तहसील—रामनगर, जिला—छतरपुर ।

आदि—॥ अथ पंचरतनी गेंद लीला ॥

जय जय कृष्ण कमल दल लोचन दुख मोचन सुखदाई ॥
जय गुविन्द व्रजचन्द नन्दसुत आरतहरण कन्हाई ॥

मध्य—

तहाँ आन बैठी श्री राधा ललता जानत जी की ॥
तव ललता जानी मन केरी श्री फल टोर मगायौं ॥

अंत—

....
....
....
संवत् कहो अठारा सौं की पैंतालिस की साला ।
मार्ग वदी वार शनि को भई पूरन कथा रसाला ॥

इति श्री पचरतन गेंद लीला नाइन रूप वरननो नाम प्रेमदास विरचितायाम् पचमोऽध्यायः ।

विषय—पहली लीला—कृष्ण जी ग्वाल वालो सहित यमुना के तीर पर गेंद खेलने गए, वहीं राधा भी थीं । राधा नें गेंद ले ली । भगवान् कृष्ण नें राधा से कहा कि तुमने गेंद चुरा ली । राधा जी भी कहने लगी कि जैसे तुम चोर हो वैसे ही मुझे समझते हो । प्रेम वार्तालाप होने लगा । वाद मे राधा जी ने गेंद दे दी । ग्वाल वाल गेद खेलने लगे । राधिका जी भी सहेली, ललिता सहित जमुना की ओर चल दी ।

दूसरी लीला—चीर हरण लीला का वर्णन ।

तीसरी लीला—राधा कृष्ण विहार और श्रीफल माँगन लीला ।

चौथी लीला—मान लीला ।

पाँचवीं लीला—भगवान् कृष्ण का राधा जी को देखने के लिये नाइन का रूप वनाना ।

सख्या २२१ड. नासकेत पुरान, रचयिता—प्रेमदास, ग्राम—विरजपुरा, पत्र—६४, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—वा० रघुनदनप्रसाद खरे, मुहल्ला—हटवारा, राज्य—छत्तरपुर ।

आदि—श्री गनेस जू सदा सहाइ अथा नासकेत पुरान लिप्यते

॥ दोहा ॥

प्रथम कद गननाइकहू गुर दुज सारद ईस ।
कृपा करत सो मात तुम्है चरन कमल धर सीस ॥ १ ॥

मध्य—

.... प्रांनी ।
ठाढो करत सुनो यह वानी ॥
तव नृप चित्त गुपित्र निकेता ।
पठवे तुरतहि दूत समेता ॥

अंत—

सुनै सुनावै कोई । नासकेत विष्यान यह ॥
मन वाछित फल होइ । प्रेमदास असो कहत ॥

इति श्रीपद्मपुराणे नासकेत विष्यने प्रेमदास विरचितायां पोडसमोऽध्यायः ।

विषय—पद्म पुराण के आधार पर नासकेत कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रथ मे चित्र भी दिए गए है ।

संख्या २२२क आभास रामायण, रचयिता—प्रेमरंग (विप्र), निवास स्थान—काशी, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत १८५८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—.........साल हिय सेल धसी ॥११॥

पेहली रात वसे सव जनमें विना कहे चुपके सटके।
उठत राम नहि देखत रोवत घर आवत तिय जग झटके॥१२॥
गंगा दसर तरस हिय हरषेव शृंग वेर की मंजल लिया।
गुह मलाह की जात कौन सी दिल भर अपनो पार किया॥१३॥
गुह से मिलकर नदि उतरकर भरद्वाज सों जाय मिले।
एक दिन रहे फलार खाय कर चित्रकूट मों गए चले॥१४॥
दंडक वन को धसे विहारी वनचर मृग मुनि अभय दिये।
कुटी वनाय भुलाय राज कों अचल अचल पर वास किये॥१५॥
वहां सुमंत्र वसत सुन मे रोवत रथ को फेर लिया।
रोये तुरग कुरंग भृंग जल थल वन पछि रोय दिया॥१६॥
पुछत नरनारी सव मिल मिल कहा राम तुम त्याग किये।
कौसल्या नृप जव पूछेंगे कौन वचन तुम कठ किये॥१७॥

:o: :o: :o:

मुनिपद परसे अनुसूया ने सियमुख सुना स्वयंवर कों।
"प्रेमरंग प्रभु" सुख सो वसे धसे वन घन सर धनुधर कों॥४६॥

इति श्री वाल्मीकीय आभास रामायणे अयोध्याकांड समाप्त॥

अंत—

चले सव देव मिल सान्ताग। भये दिव्य देह चढे हैं विमान॥
अवध मे लेखत देखा प्रान। कहा वाल्मी पद अनिवन॥३५॥
अघमोचन कोट जनम का जान। ईती आभास अंतर्धान॥
कहा "प्रेमरंग" सियापत ग्यान। गायन् सो राम मिलेंगे शात॥३६॥

इति श्री वाल्मीकीय आभास रामायणे उत्तरकांड समाप्त॥ अथ फल प्रस्तुति॥ रामायण आभास यह सात कांड वाल्मीक॥

:o: :o: :o:

छंदन रचन जानत नही नहीं जानत सुधराज।
छमा कीजे मोहे चतुर नर लखि रघुवर अनुराग॥५॥
कासी वासी विप्र हो रहत राम तट धाम।
पवनकुमार प्रसाद सो गाय रिझावत राम॥७॥
अज शिव शेप न कहि सकें महिमा सीताराम।
इंद्रदेव सुरदेव सुरदेव सुत नागर कवि अभिराम॥८॥
संस्कृत प्रकृति दोउ कहे इंद्र पछ के वोल।
वाल्मीकीय प्रसाद सो गाये रिसखिनि वोल॥९॥
अठारह सें अठावना विक्रम शक मलमास।
कृष्ण पक्ष एकादशी रविकुल नंदन पास॥१०॥
जहां रा..........................।

विषय—वाल्मीकि रामायण के अनुसार संक्षिप्त रामकथा का वर्णन ।

रचनाकाल

अठारह सें अठावनां विक्रम शक मलमास ।
कृष्ण पक्ष एकादशीं रविकुल नदन पास ॥१०॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । आदि में पत्र सं० ६ है और अंत में ३७ । रचनाकाल संवत् १८५८ वि० है । लिपिकाल ग्रंथ के खंडित हो जाने से अज्ञात है ।

रचयिता का नाम प्रेमरंग है, पर फलस्तुति के अंत में नागर कवि का भी उल्लेख हुआ है । ऐसा जान पड़ता है कि नागर 'कवि प्रेमरंग' के गुरु थे । रचयिता काशीवासी थे और जाति के ब्राह्मण थे ।

रचना राग रागिनियों में रची गई है । वालकांड का समस्त अंश खंडित है । अयोध्या कांड का आरंभ छोड़कर शेष उपलब्ध है । पश्चात् उत्तर कांड तक की कथा क्रमपूर्वक है । फलस्तुति, रचयिता का परिचय और रचनाकाल भी प्राप्त है । आगे थोड़ा सा ही अंश त्रुटित हुआ जान पड़ता है ।

संख्या २२२ख. आभास रामायण, रचयिता—प्रेमरंग, कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—११$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९७, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५८ वि०, लिपिकाल—सं० १८६७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी । (यह ग्रंथ बूंदी निवासी पं० लज्जाराम मेहता के पुस्तकालय से उनके भानजे ने सभा को प्रदान किया) ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ वाल्मीकी रामायण अनुसारे ॥ आभास रामायण प्रारंभः वालकांड प्रारंभः ॥

राग अहंग ॥ ताल ॥ १ ॥
॥ छंद रेखता ॥

ॐ तत्सत श्री सीतारामचंद्र परब्रह्म परमात्माय नमः ॥ श्री हनुमते नमः ॥ श्री गुरुभ्योन्नमः हरि ॐम् ॥

गणपति के चरण पूज लाल वदन दूव सों ।
सुभ काज करन सिद्ध सिद्धि वुद्धि घरणिसों ।
वानी वचन विसाल और सालर भरी...... ।
दिल्यें करों खुशाल शब्द जाल ख्याल सों ॥ १ ॥
:o: :o: :o:
हनुमान हुकम माँग कहों राम की कथा ।
वाल्मीक ने कहा सो संक्षेप सजन सों ॥ ७ ॥
कहता हैं गाय भजन सजन रंजन राम ।
रघुवर सों रजा पाय सिर नवाय चरन सों ॥ ८ ॥
:o: :o: :o:

अंत—आसराम को कर अचल पास खड़े हैं जान ।
मान त्याग कर भगत हो मनस्वरूप धरि ध्याँन॥ ६ ॥
कासी वासी विप्र हों रहों रामतट धाँम ।
पवनकुमार प्रसाद सों गाय रिझावत राम ॥ ७ ॥
अज शिव शेष न कहि सकें महिमा सीताराम ।
इंद्रदेव सुर देव सुत नागर कवि अभिराम ॥ ८ ॥

संस्कृत प्राकृत दोउ कहे इन्द्रप्रस्थ के बोल ।
वाल्मीकीय प्रसाद सों गाय गगनि चोल ॥ ६ ॥
अठारह सों अट्ठावनां विक्रम शक मलमास ।
जेष्ठ कृष्ण एकादशी रवि कुल नदन पास ॥१०॥
जहाँ रामायन कहत कोइ सुनत कपी कर जोर ।
पुलकित अग नयन स्रवत आनि रिपु अरु घोर ॥११॥
प्रभू सग तज्यो नर सत ज्यो राख्यो कतिपन चाम ।
"प्रेमरग" हनुमत धन सुनत अर्हनिस राम ॥१२॥

इति श्री वाल्मीकीय आनास रामायणे फल स्तुति समाप्त. ॥ श्री राम शरण मम ॥ श्री हनुमते नम. ॥ अथ. . . . .

विषय—रामायण की कथाओं की सूचनिका वर्णित ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८५८ और लिपिकाल सवत् १८६०८ । हस्तलेख पत्राकार रूप में है । यह अपूर्ण है, समस्त ३० पत्र उपलब्ध है ।

सख्या २२२ग. गरवावली रामायण (वाल्मीकि रामायण के अनुसार), रचयिता—प्रेमरग, कागज—देशी, पत्र—३८ आकार—११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इन्च, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी नागरीप्रचारिणी सभा (यह ग्रथ प० लज्जाराम जी मेहता बूदी निवासी के पुस्तकालय से सभा को प्राप्त हुआ है) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री सीतारामचद्राय नम ॥ श्री हनुमते नम. ॥ श्री हनुमते नम. ॥ अथ वाल्मीकीय रामायणे अनुसारे गरवालख्या छे ॥

रागनी सोरठ ताल ॥ १ ॥

गणपति सरस्वति गाई ।
श्री गुरु नमिये, श्री हनुमत मने समाइ ।
रघुपति चित्त धरिये ॥ १ ॥
जेणे रचिया चौदे लोक ।
निज माया व्यापी ।
जेणे राख्यो मारुत तोक ।
अमर करयो पापी ॥ २ ॥
एवो दशरथ नदन राम ।
रमाडे मुनि मन ने ।
पुरे मननां वांछित काम ।
तरावे निज जन ने ॥ ३ ॥

अत—हनुमान सहाय थाय जेहने ।
रघुनाथ चरित्र बने तेहने ।
गाइ सभलावूछू सदा एहने ।
करु कोट प्रणाम प्रेम रग तेहने ॥

इति श्री वाल्मीकीय श्रीमद्रामायण अनुसारे गरवावला रामायेणे उत्तर काड समाप्त. ॥ अथ फल स्तुति प्रारंभ ॥ दोहा ॥ एवांचे सांले शिखे शिखाते जेह "प्रेमरगप्रभु" पद मले जीवन कृत कृत्य तेहा ॥

इति श्री फलस्तुति समाप्तः अजनानंद नदन वर जानकी शोक नाशन ॥ कपोदन-क्षहतार वदे लका भयकर ॥

विषय—रामायण के लकाकाड और उत्तर काड की कथाओं का वर्णन ।

संख्या २२३. वैताल पचीसी, रचयिता—फकीर सिंह, कागज—देशी, पत्र—८७, आकार—६ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२१८, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८२ वि०, लिपिकाल—स० १८४७ वि०, प्राप्तिस्थान—सरजू स्वर्णकार, ग्राम–डेहमा, पोस्ट–डेहमा, जिला–गाजीपुर ।

आदि............... ।

तव एह कथा रसाएन कहुँ ।। ठीकई पंडीत लोग सहैगो ।। विनु वुझे जड़ जीव हसेगो ।।

॥ दोहा ॥

स्रुती रस वरत ग्रंथ मे चाहत दुख न दुप्ट् ।
जौ रे भावन पैठिकै उठ काठ सो तुस्ट ।।

२ ८ ७ १
लोचन वसु मुनि भुअ वरष माघ सुकुल ससीवार ।
तीथी वसत की पचीमी भवो ग्रथ अवतार ।।

॥ चौपाइ ॥

प्रतितृानपुर नगर एक ।। तहाँ मुदीत प्रजा अपने वीवेक ।
भुप भवो तह गध्रप सेन ।। र.जनीति रत वसै सुखेन. ।।
एक समै गीरी कानन चारी ।। खेलत रहो सीकार सीकारी ।।
तापस एक नींवो तर तरे ।। लगी समाधी तपेस्वा करै ।।
न्रीप सुत रहीत तारी लखी डरै ।। मन मह कहै राज एह हरै ।।
फीरै नगर आए गृह अपने ।। भए वीकल कल परै न सपने ।।
होत प्रात सींहासन वैसे ।। हुकुम कीवो सेवक सन ऐसें ।।
गनीका नगर माह की लावो ।। औरौ पलकी- टेकी मगावो ।।
जीतनी मीलै आनी दै मोहीं ।। हीरा हेम देउ गो तोहीं ।।
....

:o: :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥

सीर नवाइ सीखवन लगे वीक्रम डारचो काटी ।।
टुक टुक करि मासुको गीधनी दीनो वांटी ।।
साती सील के रुधीर ते कीवो त्रीपीत वैताल ।।
उन्ह दीन्ही वसु सीधी तव हरखे वीक्रम लाल ।।

इति श्री वैस वंसावतंस फकीर सींघ कारीते भाषा वैताल पचीसी सपुर्न ।। सुभ संवत ।। १८४७ समै नाम दुतीआ अखाड़ मासे कृप्ण पक्षे........ ।।

विषय—सस्कृत ग्रथ वैताल पचीसी का हिंदी अनुवाद ।

रचनाकाल

२ ८ ७ १
लोचन वसु मुनी भुव वरख माघ सुकल ससीवार ।।
तीथी वसत की पंचीमी भवो ग्रंथ अवतार ।।

संख्या २२४. वाक्भूपण "वा० भू०", रचयिता—"फणि नृपति" (?), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—११३/८ × ६५/१०, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४०, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—...............।

तर्जित पछि कागना निव हृदय तल स्वधक।
पट्कल तुरगा त्रिकल मनि विषम पदव निर्धोहि।
सप्त पादाते वंक कल मिति दोहा नवधाहि।
॥ यथा ॥ चरण सरोरुह मस्तु हृदि मद्वदन नव नाम।
चतुर्पि रूप या वद सुरभय ना मम राम।

॥ दोहा ॥

द्विज वर युग मिहरचय। त्रिलघुक गणमय कलय।
सुललित फलित तरस यहि। सरसिज मुखि नवति यहि॥
जगति विदित ललित मति। वर फणिपति रिपि ददाति॥
॥ यथा ॥ प्रविचल कुवलय नयन। जलनिधि कृत वर शयन।
दिति तनय निवहद मन। शमन विविध भय शमन।
मयिवर भुपनय सुचिर। मनिनव जलधर रुचिर।
॥ अरिल्ल ॥ रोला वृत्तम वेहि नागपति पिंगल भणितम्।
प्रति पद मिह चतुरधिक कला विंशति परिगणितम्।
एकादश भधि विर तिर खिल जन चिन्ताहरणम्।
सुललित पद मद कारि विमल कवि कठाभरणम्।

:o. :o. .o:

भणिता फणि नायक पिंगलेन प्रकटिका सा षोडश कलेन यथा।....

अंत—॥ हंसी वृत्तम् ॥

कर सगि रुदर्ण द्वय वलया ताडक मनोहरा रत्नधरा।
कुसुमत्रय राजश्रवण विलोवत कुंडल मंडित रत्नधरा।
भुज सगत केयूर यस विलासा पिंगल नाग समालपिता।
किलमुदरि कासानवनि तहा पद्मावती का कविराज हिता।
.... अपूर्ण ....।

:o: :o: :o:

विषय—पिंगल विषय।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण तथा खंडित है। केवल अठारह पत्रे (संख्या ४-२१) उपलब्ध है। रचनाकाल और लिपिकाल का कुछ पता नहीं चलता।

संख्या २२५. पंचायत का न्याय पत्र, रचयिता—फणीन्द्र मिश्र, पत्र—१, आकार—६×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—..., पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०१ वि०, लिपिकाल—संवत् १७०१ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी. (ग्रंथदाता—पं० दूधनाथ पाठक, ग्राम—..., डाक—सुहौली, जिला—आजमगढ़)।

आदि—श्रीकृष्णश्शरणम् ॥

"लि० फणीन्द्र मिश्र" आगे हमने इहां भूमि के विवाद मे नितासरा पूछ ... नाम वादी धाय राम प्रतिवादी विजयी राम से वद दुनो वादि.. सुनल दुनो वादी मांधलिश लिखि

दिहल मिताक्षरा कै पूजा शैलि गिताक्षरा देपल मिताक्षरा की उक्ति तें धारु राय के दिव्य उतरल धारुराय लोहें आपन सत्व साधि लेहि वैशाख सुदि मह आदित वार कें दिव्य होइ ।। तथा च वाक्यं ।।

भोगे नष्टे ततः कश्चिद सोय मे भुलत्तचुत ।।

तद्विवा देदिधातव्य दिव्य विसारदं रिति वचना देवेति किवहु विस्तरेण—संवत् १७०१ चैत्र वदि चतुर्दशी शनैश्चर—लिखनक वृतान्त दशी रेवती राम पाठक—

विषय—धारुराम और विजयीराम नाम के दो व्यक्तियों के भूमि सबधी विवाद के विषय में पचायत का न्याय ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख ग्रथ न होकर 'पचायत का न्यायपत्र' है । यदि इसका नाम रख दिया है । यह सवत् १७०१ मे हुए एक पचायत का न्याय है जो प्राचीनता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है । इसमें लोह द्वारा दिव्य (सत्य) होने का उल्लेख है । यह नेवादा गाँव (आजमगढ) मे मिला है । जहाँ सभवत पचायत हुई थी । इसकी भाषा स्थानीय (अवधी भोजपुरी मिश्रित) है और सरल गद्य मे है ।

संख्या २२६. चिरई चेतनी, रचयिता—फेंक द्विज, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—$10\frac{1}{6} \times 4\frac{2}{6}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, ग्राम–नदना वरहज, पोस्ट–वरहज, जिला–गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ।।

आये मास अखाट सखि स्याम गये परदेश ।
पीय पीय करत पपीहरा को ले आवे सनेस ।। १ ।।
सावन आयउ हे सखि स्याम घटा चहुं ओर ।
दादुर सब्द सुनावहि नहि आए पिय मोर ।। ३ ।।
भादव रैनि भयावनी है सखि नहि भावण गृह सेज ।
पियरोइआ पिय विनु भई विहरत करेज ।। ३ ।।
घरही रहत सुप नाहि लहत योज्न रहत हलाक ।
नहि चित सो विसरत सखि सुगा अस पिय नाक ।। ४ ।।
अस्विन आयउ हे सखि नदीअन जल भव थोर ।
अजहु न आए स्याम गृह चितवत चंद्र चकोर ।। ५ ।।
वारहि पिय परदेश गये अजहु न आये स्याम ।
चकवाक जोवन भए पीडत मम तन काम ।। ६ ।।
चंचल चितवत दुपित अति नहि भावे कछु काज ।
वोलहु कागा छुलछना जो पयि आवे आजू ।। ७ ।।
चहु दिस गरजत सघन घन उठतु जनू कपहार ।
जोवन जुग टेटिहा भए थभन के एह भार ।। ८ ।।
पिय खोजत मै चली सरिय सरित मिले अथाह ।
उडत वुडत पार भइ जस गौरी जल माह ।। ९ ।।
पिय मोहि चुनरी दे गए जव उन्ह के रही संग ।
कवन वरण भारयो सपि जस मुतीया को रंग ।। १० ।।
जैसे सर्पया देपि सखि सगंटा चिचियात ।
तैसे परपति हेरिय सपि विकल होत मम गात ।। ११ ।।

गवरहि षोता लाइआ वहु विध करत प्रसग ।
हस योग विचारिके तन अति चढे अनग ॥ १२ ॥
जव तुअ पिय गृह आइ हे पुलकत वदन हजूर ।
तव तुम सभ दुप हरि लिहे जैसे विपय गरुए ॥ १३ ॥
जव हमको कोई कहत कछु प्रिय स्तुति परत ३ वाज ।
तुरिते धावत तात पर जैसे झपटत वाज ॥ १४ ॥
एक दिन पिअ आइउ सखि मो पर करि अभिलाप ।
सतेकयरणा वेधि के जस वकुला के पाष ॥ १५ ॥
पिय विन् छूटत प्रान अव को एह पवर जताउ ।
जैसे हारिल भू तजै तैसे मोहि विसराउ ॥ १६ ॥
दसो दुआरा षुलि गए अवरषा को अत ।
नीलकठ देषन चले अजहु न आए कत ॥ १७ ॥
दुती भेजी हो (हे सखि) स्वामी के मालूम ।
प्रभु पर ध्यान लगाइ हो जस पडुक के तुम ॥ १८ ॥
रितु वसंत आयहु सषि तेह देषि डरपत जीव ।
कोइली सब्द सुनावहि अजहु न आए पीय ॥ १९ ॥
नाचत वोलत वहुत विधि भल सहरस को रग ।
धनि उहकी तिय जानि अति कवहु न छाणत सग ॥ २० ॥
धनि उह प्रीति कपोत की उडत जात अकास ।
मेदि कारण गिरि परत जिअन को नही आश ॥ २१ ॥
आवत जानि अषाढ सषि सभन वनायो धाम ।
चोचा पोता लावहिअजहु न आयो स्याम ॥ २२ ॥
पछी वहुत अनेक स्वर तरु पर लेत न वास ।
हमरी जस गती हस की मानसोवर ले वास ॥ २३ ॥
स्याम हिकोला लाइआ सभ कोइ झूलत वाम ।
स्यामा पकरि झुलइआ पुरन मन को काम ॥ २४ ॥
प्रियतम चले नहान सषि हमसे विदा मागि ।
मयना जानो हे सखि पिय जइहै मोहि त्यागि ॥ २५ ॥
जस बोलत तोतल वचन अयसि मोरि वात ।
भल तेरो कुदरति सषि पिय चाहत कुसलात ॥ २६ ॥
कमल का लेसि कुव जुगल चपा दल सम गात ।
खजन अयसो नयन सषि पिय विन् निफल जात ॥ २७ ॥
पिय मोहि सउपे लाल एक मय लिहो कर जोरी ।
कवन उत्तर देहु सषि पेल गए कपटि चिल्होरि ॥ २८ ॥
सभ सखि घर घर सुख करे जाको हय गृह स्याम ।
तस क्रीडा वहु विधि करौ जस परिहर जल माह ॥ २९ ॥
सगुन विचारन हे सषि साजहु सकल समाज ।
वहु विधि मोरा वेधि के तुम प्रभु अइहे आजु ॥ ३० ॥
कहत फेक द्विज समुझि चित्त पेमकर्णी विश्राम ।
नृपति सभा मे वैठिके चिरइ चेतनि नाम ॥ ३१ ॥

॥ समाप्त ॥

—पूर्ण प्रतिलिपि

पपीहा । गोरी सुगा । गवरा । नीलकंठ । मोर । पीग्ररो- स्यामा । मयना
नीलकठ । मैना । सहरस । हारील । पडुका । इग्रा । चकवा । तितिल । पजन ।
पियरोइया । चिल्होरी । कोइली । काग । नील । गवरा । गरुड ।
सरगटा । चकोर । गरुड । सहरस । सरगटा । वाज । वाज । वकुला ।
कोइली । खंजन । कपोत । पनिहर । कपोत । चौचा । वकुला । पंडुक । टेटिहा । गैरी ।
चकोर । गरुड । चकवा । वाज । हंस । श्यामा । कोइलि । चोचा । मुनिया । सर-
कपोत । पनिहर । चोवाजोरा । मयना । तीतील । हस । तीतीर । गटा । चिल्हो-
काग । वकुल । काग । वकुला । षजन । खजन । जोरा । रीरि । पनिहर ।
हंस । षेमकरी । हस । षेमकरी । चोल्होरी । परि- हरजोरा षेमकरी । जोरा । षेमकरी ।
षेमकरी ।

विषय—विरह शृगार का वर्णन करके प्रत्येक दोहे मे गुण सादृश्य ग्रथवा श्लेष से एक पक्षी का नामोल्लेख किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल ग्रौर लिपिकाल ग्रज्ञात है, परतु कागद ग्रौर स्याही को देखने से रचना प्राचीन जान पडती है। रचयिता का नाम "फेकद्विज" है जो ग्रतिम दोहे मे प्रयुक्त है। ग्रन्य परिचय नही मिलता। उक्त दोहे से इतना ग्रौर विदित होता है कि ये किसी राजसभा मे रहते थे —

कहत "फेकद्विज" समुझि चित पेमकर्णी विश्राम।
नृपति सभा मे बैठि के 'चिरइ चेतनी' नाम॥

रचना का नाम "चिरई चेतनी" भी इसी दोहे से प्रकट हो सका है।

संख्या २२७. भोज प्रबंधसार, रचयिता—प० वशीधर, कागज—ग्राधुनिक, पत्र—४२, ग्राकार—८½ × ५⅙ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—११८१ पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सन् १८७७ ई० के लगभग, प्राप्तिस्थान—प० शिवनाथ पाडेय, ग्राम—वरुई, पोस्ट—मिसरौली, जिला—मुलतानपुर।

आदि—भोज प्रबंधसार॥

विक्रम के वंश मे एक राजा सिंधुल हुवा उसके वुढापे मे भोज एक लडका पैदा हुआ वह पाँच ही वर्ष का था कि जब उसके वाप ने मरने के समय अपने मंत्री वुद्धिसागर को वुलवाया ग्रौर कहा कि जो भोज को राजगद्दी देता हूँ तो मेरा भाई मुज्ज जो वलवान है इस लड़के को वृथा मार डालेगा ग्रौर आप राज भोगेगा क्योकि लालच वुरी वस्तु है—यथा,

लोभात्क्रोधः प्रभवति लोभाद् द्रोहः प्रवर्तते।
लोभान्मोहश्च मदश्च मानोमत्सर एव च॥१॥

क्रोध ग्रौर वैर मोह ग्रौर तोड फोड़ अहंकार ग्रौर इषा ये सव लोभ ही से उपजते हैं, लोभ की एक ग्रौर भी वहुत वुरी प्रकृति है कि—

ग्रंत—रानी यह दशा देख कर एक को जो कि कुछ भी अक्षर सीख गए थे पारितोषिक दिया ग्रौर जिन्होने धन के अभिमान से कुछ भी अक्षर न सीखे थे उनके लिए यह दण्ड ठहराया गया कि हर एक चौकीदार अपनी अपनी गली के ऐसे धनवान मूर्खो को लेकर निरतर दो घण्टे गति अर्थात् वरावर टहलाने मे रक्खे ग्रौर दो दिनो मे हर रोज चार चार अक्षर सिखावे जो कोई चौकीदार के कहने से न आवेगा एक महीने सरकारी कैदखाने मे रहेगा। इस दण्ड के सुनते ही सबके कान (खडे) हो गए ग्रौर थोड़े ही दिनो मे वारह खडी पूरी की। इस राजा भोज ग्रौर रानी लीलावती ने क्रम२ से उज्जैन नगरी में विद्या का प्रचार किया ग्रौर नाम पाया॥

आगे साहब डैरेक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन बहादुर की आज्ञा होगी तो दूसरा भाग भी बनेगा।

पहिला भाग समाप्त हुआ ॥

विषय—राजा भोज और रानी लीलावती की विद्याभिरुचि का वर्णन किया गया है।

संख्या २२८. इश्क शतक, रचयिता—श्री महाराजा जी श्री उमेद सिंह जी सुत महाराजा श्री बखत सिंह जी, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—५। × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ७४, पु० स० १०।

आदि— ॥ श्री गोपी जन वल्लभाय नमः ॥ दोहा ॥

मुरलीधारे अधर पर नागर निपट प्रवीन ॥ तुम पर वारू ए सबै सुर नर खग मृग मीन ॥१॥
मेरा तू महबूब हे दिल भर सचे यार। बखता की वीनती सुनो नंदनंदन रीझवार ॥२॥
मेरे हीय की बात सब जानत हो व्रजराज। तुम्हसे ठाकुर सीस पे बखत सिंघ की लाज ॥३॥

मध्य—पृ० ८—९

मेरा मन मस्तान हे सुनियो दिल भर यार। रसिक सिरोमन लाडिले तुम सूं मेरा प्यार ॥५५॥
देख्या मे महबूब को गल विच चोला लाल। जरद दुपटा हाथ मे बिथरे सुथरे बाल ॥५६॥
लगन लगी महबूब सो अब कोई बरजो लाख। बिन देखें कल ना परें तिस्कि कादर साख ॥५७॥
दिल जानी महबूब मसीना रखियो माफ। आसिक मैं तकसीर सो आप करोगे माफ ॥५८॥
अजब खूब महबूब हो मेरे जीवन यार। आशिक आए दूर सें देखन को दीदार ॥५९॥
ते कीन्हों महबूब सब मुसकिल तें आसान। तुही जीवन मुर है तो सो लपटे प्रान ॥६०॥

अंत—

अजब नेंन महबूब के कमल पत्र के रंग। देखे आसक दिल दीयें पे होय ऊमग अग अंग ॥९९॥
नही तुमसा महबूब कहि दिलकी जानन हार। अछे आसिक ऊपरें दिल सरेंखो प्यार ॥१०१॥
बखत बरन दूहन विषें कही इसक की रीति। जो बाँचें समझे अरथ लगे ब्रह्म सो प्रीति ॥१०१॥

इति श्री महाराजा जी श्री उमेद सिंह जी सुत महाराजा श्री बखत सिंह जी कृति इश्क शत संपूर्ण शुभ ॥

विषय—इश्क (प्रेम) वर्णन। कवि ने फारसी मिश्रित हिंदी भाषा मे भगवान् कृष्ण तथा राधा के प्रेम का वर्णन किया है।

संख्या २२९. अनभी प्रकास, रचयिता—बदलीदास, कागज—देशी, पत्र—५८, आकार—८ × ६$\frac{7}{6}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५० वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेसायन्मः अथ लिष्यते अनभौ प्रकास ॥

॥ सोरठा ॥

गुर पद रज सिर राषि अनभौ ग्यान प्रकास करि।
तुम्हहि कहौ प्रभु भाषि दास हिदें बसि विमल गुन ॥
मोहि करु आपन दास गुर साहेब सुषदानि तुम्ह।
देहु मोहि विश्वास नाम जिकरि छूटै नहीं ॥ २ ॥

गुर साहेब सुषदानि नाम "जलाली" सुषसदन ।
भक्ति ज्ञान गुनपानि पेवक भवजल के सदा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

मायातकि मन सडर अति निडर करौ करतार ।
"वदलिदास" कहैं दीजिए केवल नाम अधार ॥
कवि गति मति नहिं रमि सकै विन पाये कछु छाह ।
अनभै वानी सो कहै जेहि सिर रापौ वांह ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु चेला गत अघ हित वानी । भव तारन समुझत सुषपानी ॥
जीव कृतारथ जेहि विधि होई । सो उपदेस कहत हाँ सोई ॥ २ ॥

मध्य—
भागि चले ते वहुरि न आये । नाम सरोवर सतपुर पाये ॥३८३॥
नहिं सव हंस वझे यहि जारा । काल वधिक धरि धरि नित मारा ॥
विन गुर ग्यान गली को पावै । काल कठिन भर्म फासि वझावै ॥
है दुष मूल सूल अति भारी । यह जग माया की फुलवारी ॥
ताते यह मन लेहु सकेली । सत गुर ग्यान पंथ रस षेली ॥
जेहि मारग सव सना सिधारे । सुषित भये दुप नगर उजारे ॥
तेहि मग चलत वहुत सुष पावै । समन फाँसि प्रान न आवै ॥
जग भरोस आसा सव त्यागी । यह मनु रापु नाम ते लागी ॥३९०॥

अंत—
॥ दोहा ॥

जो चित पावै संत गति तौ मन होइ निरास ।
जथा देह पौरुष थकै है इद्री रुचि नास ॥
चित की थिरता तोष गति मन की थिरता चित्त ।
मन थाके कारज मिटै भेटै आतम मीत ॥

इति श्री अनभौ प्रकास सम्पूरनं शुभमस्तु ॥ इस्लोक ॥
जगंनाथं मगोदिसा पद्मनाभ जनार्दन । कोटि जन्म भयो विप्रा वेदपाठ धनार्धनं ॥१॥
मारकंडे वटे क्रिस्ना रोहिन्या च महोदधी । इंद्रदयन करते पुरनेत जन्म नहिं विंदते ॥२॥

॥ दोहा ॥

विकर्म को साका लिपी संवत याको नाम ।
वनइस सै पच्चास भे सुमिरन आठौं जाम ॥ १ ॥
जेठ सुक्ल सुभ दसमी गुर वासर को पूर ।
साई ते यह मागऊं सर्व दुप्प करु दूर ॥ २ ॥
अनभौ प्रकास लेषन कियौ "दास फकीर' के हेत ।
जाति ठठेर रघुवर अहै नाम हिदै महँ लेत ॥ ३ ॥
दास फकीर सुप आपने कहिन मोहि समुझाई ।
तव रघुवर लिपते भये नाम मे सुरति मिलाइ ॥ ४ ॥

विपय—ब्रह्म ज्ञानोपदेश किया गया है ।

संख्या २३०क. अनुराग विवर्द्धक रामायण, रचयिता—वनादास (अयोध्या), कागज—देशी, पत्र—८५, आकार—१० × ५$\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०९, पूर्ण, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० २०वीं सदी का प्रारंभ, लिपिकाल—स० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक, डी० ए० वी० हाईस्कूल, बलरामपुर, गोंडा।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुरुचरण कमलभ्यो नमः श्री जानकी वल्लभो विजयति ॥ अथ अनुराग विवर्धक रामायण उत्तर कांड लिष्यते ॥ घनाः ॥

राम वन गवन कि अवधि वर्ष चौदह की चौदह भुअन माह ऐसो कौन जाने है ॥
भरत करार चित्रकूट की विदित जग सब कोउ करैं सदा मनन सयाने है ॥
जानिकै सुसमय सिद्ध मुनि सतगन चले तीरथ विलोकइ के सकल पयाने है ॥
"वनादास" ऐहैं राम निज रजधनी अब ह्वै है राजगादी हिय माह हरषाने है ॥१॥
देस देस के नरेस राजन के राजा सारे साजि कै समाज पुर अवध सिधाये है ॥
हाथी घोड़े रथ नाना जान मनि चीर चारु मंगल दरब हेम कमल सोहाये है ॥
बहु षग मृग नाम कहा ले गनावै क.................... ॥

:o: :o: :o:

अंत—इति श्री राम चरित्रे कलिमल मथने अनुराग विवर्धक रामायणे उत्तरकाडे एकदसो अध्याय ॥ ११ ॥ सुभमस्तु—

सन संमत जानो नहीं बूझन काहु ते जाउ ॥
इन सबते मतलब नहीं राम नाम लउ लाउ ॥

सुभ संवत १९२२ ॥ वैशाष कृष्ण—

:o: :o: :o:

विषय—राम चरित्र वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। बीच के कुछ पत्रे लुप्त है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल स० १९२२ वि० है।

संख्या २३०ख. मात्रा मुक्तावली, रचयिता—वनादास (अयोध्या), कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—१३$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामरक्षा त्रिपाठी, "निर्भीक", अध्यापक, फार्ब्स हाई स्कूल, फैजाबाद।

आदि—श्री जानकीवल्लभो जयति ॥ अथ मात्रा मुक्तावली ग्रंथ लिषते ॥

कर्म वचन मन वंदिये गुरु सिय रघुवर पाय ॥
सोवत जागत नाम गति दूसर नाहि सहाय ॥ १ ॥
का कहिए गुन नाम को पाए मुपनि करोरि ॥
वनादास एकै वदन तापै मति अति थोरि ॥ २ ॥
को जानेउ संकर कछुक रामनाम परभाव ॥
वनादास श्रुति सारदा गावत पार न पाव ॥ ३ ॥
फिन का सम सब लागिहै जब ऐहै उर ज्ञान ॥
ताते हरदम नाम जपि निसि दिन धरिये ध्यान ॥ ४ ॥
कुलि साधन कों छोड़िकै रामनाम जपि लेहु ॥
बनादास वादे कहै परम तत्व है येहु ॥ ५ ॥

अंत—

येन पाचौं के कारने लागत नहीं ठेकान ॥
काम क्रोध मद लोभ हैं मोह वर्ण वलवान ॥ २३ ॥
यारौ गाफिल मति परौ मारा चाहत काल ॥
कोउ उपाय ते वचव नहि भजिले दसरथ लाल ॥ २४ ॥
येक भरोसा येक वल येक आस विस्वास ॥
वनादास येकै कि गति सो अनंन्य हैं दास ॥ २५ ॥
यौही यौही वीतिगै रही तनिक सी आय ॥
वनादास अजहू भजै करिहैं राम सहाय ॥ २६ ॥
यह संसार असार अति गहिये ज्ञान जो सार ॥
भाति और वैराग गहि राम कृपा तें पार ॥ २७ ॥ ३३४ ॥

इति श्री माला मुक्तावली ग्रंथ सम्पूरन सुभमस्तु समत १६२० अनुष्टुप् ३८३ ॥

:o: :o: :o:

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश ।

संख्या २२०ग. ब्रह्मायनद्वार, रचयिता—वनादास (अयोध्या), कागज—देशी, पत्र—३७, आकार—१३ × ५३/४ इंच, पंक्ति(प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक, डी० ए० वी० स्कूल, वलरामपुर, गोंडा ।

आदि—अथ वनादास कृत ब्रह्मायनद्वार ग्रंथ लिष्यते ॥ श्री रामो जैति ॥

॥ सोरठा ॥

आदि अन्त मधि हीन नाम रूप गुन ते रहित ।
सत चित आनद पीन वार वार तेहि वंदिये ॥ १ ॥

गुर मूरति सूरति लागि रही ॥
नष सिष रूप अनूप वपुष हरि को महिमा कहि पार लही ॥
सरनागत पालक पद पकज ध्यान करत भवताप दही ॥
गुर पद वेमुष न सपन लहै सुष भव सागार मे जाय नही ॥
ससि आनन चकोर चित त्रिषित न वार वारहि अचाह चही ॥
हरिपद सहज सरूप के दाता अव दुसरी ठाव नही ॥
जासु कृपा त्रैताप नसावत सोक मोह जरि जाय सही ॥
रिधि सिधि सम्मति की अटकर चरन धरि श्रुति चारि कही ॥
"दासवना" गति अवरि न दूसरि निसिदिन पल जिन सरन गही ॥

॥ सुमिरत तुलसिदास पद पावन ॥

भादौं मास पछ सीत पूनप भौम सुवार ॥
दस नौ सत सम्मत अहै वर्ष वीस नौसार ॥
सन वारह सै असी में ग्रंथ होत निरमान ॥
अवध धाम धामन परे को करि सकै वषान ॥

ब्रह्मायन को द्वार यह विचार करिकै याही करि पैठार लहै परम विश्राम को ॥

अंत—

ईस्वर अव्यक्त राम प्रेरक परम पद अव छिन्न एक रस गाये है ॥
अजय अकंटक कूटस्त निहसंग श्रेष्ट नि.कलंक निःप्रपंच पार कौन पाये है ॥

निराधार सर्वाधार नृविकार नृविकल्प नेतिक है निगम सो जानि किमि जायो है ॥
"बनादास" अगम अगोचर गोतीत गुह्ज वरन विहीन वुद्धि मनहु न आए है ॥२२८॥

इति श्री वनादास कृत ब्रह्मायन द्वार ज्ञान विज्ञान मिश्रित अग निरूपन नाम एकादस परिकर्न समाप्त सुभमस्तु श्लोक ८०० अनुष्टुप् ॥

विषय—ज्ञान-विज्ञान निरूपण। ग्रथ ग्यारह ग्रध्यायो मे है।

रचनाकाल

भादौ मास पछ सीत पूनष भौम सुवार ॥ दस नौसत सम्मत अहे वर्ष वीस नौसार ॥

सख्या २३०घ. "विज्ञान मुक्तावली", रचयिता—वनादास (ग्रयोध्या), कागज—देशी, पत्र—८, ग्राकार—१० × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—२२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६२४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामरक्षा त्रिपाठी "निर्भीक", ग्रध्यापक, फार्व्स हाईस्कूल, फैजाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सतगुर अथ पाहारा लिप्यते।

एक एक कै लरै दुसरे सव्द सतन की गहै ॥
दृष्टि नासिका अग्र सदाही। "वनादास" भवमूल नसाही ॥
दुआसदा द्वैत मत नासै। जव अद्वैत प्रम पद पासै ॥
अनहद माह सदा चित राषै। वनादास सुख को सुष चाषै ॥
तीआ तृगुन फादी काहै। गुनातीत ह्वै कमन डाटै ॥
तिरवेनी के घाट नहावै। वनादास द्वौविधा नसावै ॥
(अस्पष्ट)

चौथे चेति चारि विसरायै। चौथे घर मा पट विछावै ॥
चारि चारि को कवहुं न चाहै। "वनादास" चौरासी दाहै ॥

अंत—(अक्षर मिटकर अपठनीय हो गए हैं)।

अन अविनासी आतमा सव घट एक प्रकास ॥
कातिक सुदि सुक्रवार.......तिथि भारी परम ॥
भयो ग्रंथ अवतार उर प्रेरक सीतारवन ॥ ८३ ॥

इति श्री "विज्ञान मुक्तावली ग्रथ" कृत महाराज वनादास कृत्य सपुरण सुभमस्तु मिती अगहन सुक्ल १४ दसी समत १६२४ साल।

विषय—भक्ति ग्रौर ज्ञानोपदेश।

सख्या २३१ दशकुमार चरित, रचयिता—वलदेव कवि, कागज—देशी, पत्र—६४, ग्राकार—$11\frac{11}{16} \times 5\frac{6}{16}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—६२४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कुँवर लक्ष्मणप्रताप सिंह, ग्राम—साहिपुर (नौलखा), पो०—हडिया खास, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सीता रामाय नमः ॥

श्रीगननायक ध्याइ हिय मंगल काज सवारि।
सकल सुरासर नाग नर देव पुरारि मुरारि ॥
दीन्हो आयसु करि कृपा श्री विक्रम महिपाल।
दस कुमार की सब कथा भाषा करो विसाल ॥ ५ ॥

पाइ हुकुम वलदेव कवि कीन्हो ग्रंथ प्रकास ।
जाते जानै जगत के नृप नृप नीति विलास ॥ ६ ॥

ग्रंत— कह्यो सये अव समय तुम्हारा ।
कह्यो आपनी कथा उदारा ॥
हसि प्रनाम करि विनय अनेका । लग्यो कहन मोउ सविवेका ॥

इति सकला राति जना की कीर्ति छपा मुवाभ्युदित यसश्वद्र चद्रिकानदित मित्र चकोर वघेल वंसावंतस श्री महाराज कुमार चरिते अपहार वर्मा चरितं नाम सप्तमो च्छासः ॥ ७ ॥

॥ उपहार वर्मा ॥

फिरत मही जो मै एक वारा । देषी मिथिला जाइ उदारा ॥
जो विदेह नृप की रजधानी । भूमि स्वर्ग सी विवुध वषानी ॥
निकट जाइ नहि कियो प्रवेसा । वाहर लषि एक कुटी सुदेसा ॥
·o: :o: :o:
चिरजीव यह गिरा निकारी । कह्यो सभाग सु.......
:o: :o: :o:
—अपूर्ण खडित

विपय—सस्कृत ग्रथ दशकुमार चरित का हिंदी ग्रनुवाद ।

संख्या २३२. गीता ग्रथसार, रचयिता—वलराम दास, कागज—देशी, पत्र—२७ ग्राकार—११ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—१११४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य—गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पिट वधः ॥
श्री कृष्ण कहे अर्जुन सुर्णो गीता ग्रथु सार ।
से योगै वलराम दास भणीयें आज्ञा देले जगन्नाथ ॥ १ ॥

॥ द्वतीय पीठवध ॥

श्री हरि घेनीण पाडेव वल जाईं प्रवेश रण रंगस्थान ॥
भीस्म सहिते सग्राम भुमी आसि मीलिले कैरवमान ॥ १ ॥

॥ तृतीय पीठवंध ॥

एस नेंक समयें व्यास मुनि विजए धृतीराष्ट पास ॥
कल्याण करिण वोलई रापे युध्य देखि वुटी कि आस ॥

॥ चतुर्थ पीठवंध ॥

जहु से व्यास कृष्ण आज्ञा पाईण कष्ट कराइवा पाई ॥
पुत्र मीत्र देखि वाकु तेपु नृपति की राई ॥ ० ॥

॥ गीत ॥ भारथवाणी वर्ये ॥

नयन नाहिं देखिवि काहिं ॥ एमतविचार अवा ॥
सरधा मिलें कहसि नृपवर ॥ दिव्य चक्षुतो ते देवा ॥
एमत रोल हाइव गोल जेहु जाहा कइ जुझि ॥
लाहि पाहि साही केहु काहा काइ सकल कथा तु वुझि ॥ ३ ॥
आखिरं लोह पुछे कुती पुय अमनेण धर्म सुमरी ॥
दया रें खेद पाई वड विकल तलकु वदन करी ॥ १२३ ॥

के वेहें युध्यन करीए सय वाहुडी जिवा कुइछा ॥
श्री हरि डरें कथा न कहि पोर नो होई आपणाइछा ॥१२४॥
प्रथम अध्या गीता प्रश्नुधावल रामदास भणी ॥
नील गिरी जगन्नाथ प्रसने परम रस वखाणी ॥ १२५ ॥

अंत—जे मोर भगत लोक ताकु एहा कहि से मोर अत्यत प्रीति सेहु मोक्ष पाई मोहोर सेवक आगे एहा जे वरवाणी ताहा तहु आने प्रिति मोते नाहि जाणि ५०

:o: :o: :o:

५६ धृतिराष्ट आगेए सजए एहा कहा वासुदेव आज्ञाए अर्जुन तोस होये सुणघिरे एथुं अनंतरे आनरस श्री जगन्नाथे सेवि भणे वलरामदास ५७

:o: :o: :o:

राम राज्य लक्ष्मि भोग करु थाईं श्री जगन्नाथ प्रसने गिता शास्त्र एहि अष्टादश अध्या गितासार ए संपूर्ण पुठिला सुणिला लोकंकर वउ पुन्य लिल गिरी विजये मो प्रभु जगन्नाथ मुकुट कुंडल हार सख चक्र हस्त स्थूल जोग भोग पुन्यर प्रकास निलमुख भावि भणे वलराम दास ६०

मन्त्रीवर महापात्र सोमनाथ नाम ताहार तनये मुंहि "वलराम" जगन्नाथ ठाकुरे सुदया मोते कले विप्णुर पिरित वोलि लोके प्रते गले ६१

मंथन चतुरो वेदा सार उद्धार षाडसि लवणी भुंजति ज्ञानिनो तित्त भक्षति पंडिता ॥

विषय—गीता का अनुवाद ।

संख्या २३३. विवेक कली, रचयिता—वलिराम, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८३/४ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२, पूर्ण, रुप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभापा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—विवेक

परब्रह्मणे नम॰ अविघ्नमस्तु ॥

॥ चौपई छद ॥

बोध कली जव मन मैं फूलै ॥ जन्म मर्न का झगरा भूलै ॥
विधि नषेद की कथा न जानै ॥ पुन्य पाप की वात न मानै ॥ १ ॥
हंता ममता कौं तव त्यागै ॥ त्रिगुन नींद सौं सोयो जागै ॥
मन कौं गगन मगन करि मोलै ॥ ओ सोहं हसो वोलै ॥ २ ॥
अवगति ध्वनि मै आस न करै ॥ उनमन अमृत सौं लै भरै ॥
सुरति निरति कै परै विलासी ॥ अनुभव सागर जोति प्रकासी ॥ ३ ॥
आदि अंत मध्य सम पावै ॥ ज्यो कात्यूं देपैं छकि छावै ॥
द्वैत द्वंद द्विविधा नहिं जानै ॥ अद्वै अज अक्रिय पहिचानै ॥ ४ ॥
निराकार गति सहज समावै ॥ पाच पचीस रुती न भुलावै ॥
सव मैं वहि उसमैं सव अेषै ॥ कनक विना भूषन नहि पेषै ॥ ५ ॥

मध्य—उतपतु परलै तहाँ न पैये ॥ आदि अत दिन प्रगट दतैये ॥
तहाँ देह गुन इंद्री भूलै ॥ निर्भै गगन हिंडोले झूलै ॥३३॥
चित चितवनि तव जावै त्यागि ॥ रोम रोम उपजै वैराग ॥
चिंता चाह रहै नहिं कोई ॥ द्वंद्वं चाल सव जावै पोई ॥३४॥
मधुर मधुर ध्वनि अमृत सु वरसै ॥ वड़भागी कोई या गति दरसै ॥
सहज समाधि तहाँ वसि रहै ॥ अवगति गति कोउ विरला लहै ॥३५॥

जो पावै सो फिर नहिं आवै ।। जो आवै पोजै सो पावै ।।
तिल तैं तैल जतन विन नाही ।। घृत को वास सदा दधि माही ।।३६।।
गंध पुष्प महि करै विलास ।। पाथर माहिं अग्नि को वास ।।
पुष्प सग जो तिल को वासै ।। दधि तैं घिरत विलोय निकासै ।।३७।।

अंत—हममैं सव सव मै हम एकं ।। हम सौं वरनरु भेप अनेकं ।।
अनेक भेप मै हमही पथा ।। ज्यौं के त्यौं हम जल थल सथा ।।६९।।
हमहीं वरनाश्रम आचारी ।। हमहीं तत्वं असि स्व विचारी ।।
हमहीं मुनकर हमहीं साकर ।। हमहीं सेवक हमहीं ठाकर ।।७०।।
हमहीं सिध साधक घरवारी ।। नहि अवतार हमहीं अवतारी ।।
निराकास हमही आकास ।। निराभास हमही आभास ।।७१।।
हमहीं कर्त्ता कारज कारन ।। हमहीं तरन रूप अरु तारन ।।
हमहीं वैरागी अरु जोगी ।। अनभोगी हमही सव भोगी ।।७२।।
पट दर्शन मै हमही छाजै ।। वली रूप निर्द्वंद विराजै ।।
जो कोई हमरी गति पावै ।। चौरासी मै फेरि न आवै ।।७३।।

सर्वाधिप्टान वलीराम विरचितं विवेक कली ।। समाप्त ।।

विपय—ब्रह्मज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २३४. रेखता तथा कीर्तन (खडी वोली मे), रचयिता—गो० श्री वल्लभ जी, कागज—देशी, पृष्ठ—२६, आकार—६३/४ × ७३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१६, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या-विभाग, काँकरोली, हि० व० ४२, पु० म० ४ ।

आदि—श्री कृष्णाय नम· ।। राग सोरठि ताल पिस्तो
'सु' आदि खलादीदार जु होहे दिलदार वे ।
प्यारी ज्यान प्यारी मेरी तुजसे मेरा प्यार वें ।। १ ।।
तेराहु सन देखे विन रहेता न करारवें ।
सीनें सें लिपटाना प्यारी जद मिटेमार वें ।। २ ।।

मध्य—पृ० १४
प्यारी प्यारी अरजी मेरी सुनना हजूर ।
दिल फस्या हे तुज मे कहा रहति हो दूरि ।।
फिदवी चाहता प्यारी अव राखीये हजूर ।। १ ।।
हर दिल अजीज सेली कहने की क्या जरूर ।
टुक महर की नजर सो प्यारी आनि दिखावो नूर ।
वीवी वनाय विध सें सुदर रखो कपूर ।
लोंग इलायची जायफल जिनो का धरा चूर ।
मुखडे रंग केमरि जैसे वनी हे हूर ।

अंत—तिखी चितवन तेरी प्यारी लीया हे मन मुष्ण ।।
तेरी अदा आगे प्यारी कोई न आवें पुष्ण ।।
कोजे महर मुजपे प्यारी का कठ अव तुस्मे ।।
तावेदार तेरा प्यारी किया हे मो वस्मे ।। ३ ।।
एक चाह हमकूं प्यारी चाहा तेहें तो हुष्णे मुराद पुरी मेरी प्यारी वाधे क्यो कुच कसन ।।

संदल लगावो अंग प्यारी लाऊ सुदर घम्ए ॥
वल्लभ के संग रग करो महदी लगावो लप्न ॥ ५ ॥

इति श्री बल्लभ जी कृत रेखता तथा कीर्त्तन सपूर्ण ॥ श्री शुभं ॥

विषय—नायिकाभेद का वर्णन ।

संख्या २३५. वारह वाट अठारह पैंडे, रचयिता—वल्लभ रसिक, कागज—देशी, पृष्ठ—६ (१० से १६), आकार—७¾×४¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुप्टुप्)—८७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ११८, पु० स० २।२ ।

आदि—॥ श्री राधा वल्लभो जयति ॥

श्री गुरु चरणि प्रताप ते गयो उरणि अधियार।
कुंज घरनि विहरति लखो जुगल रूप घनसार ॥ १ ॥
रसिक अनन्या नन्यपिय हिय जिय की सुखदानि ।
प्यारी रूप घटा उमगि वरखी वानी आनि ॥ २ ॥
वल्लभ रसिक सहचरी वानी ।
जुगल लगनि आसव को सानी ॥ ३ ॥
मतमत वारी अखिमनि वाचो मतवारे की अखियनि वाचो ॥ ४ ॥
अधरम धरम जहां अधरम एसी कछुक रसिकता आहि ।
इन दोऊन के मरमहि जाने तो रसिक सरम को सके निवाहि ॥ ५ ॥

मध्य—पृ० १३–१४

झूलत फूलत रहें निरतर । महा स्वतंत्र महा परततर ॥६२॥
ओरो सुनि अँखियन के काम । नेकु न ठाली आठो जाम ॥६३॥
सरस रसिक हिय करें खजानो । ताते उमगे रस सव जानो ॥६४॥
कुलवा उर हिय कंथ वखाने । सात ठोर मे आइ झुलानो ॥६५॥
सात फुहारे छूटन लागे । तिन मे तीन जुर अनुरागे ।
एक अकेलो वोलिन जाने । वोलनि ही मे सव रस माने ॥६७॥
द्वे मिलिया वोलिन को सुने । जुगल सुगधहि द्वे मिलि चुने ॥६८॥
द्वे पुनि गुगल रूप रस पागे । इनि सम कोऊ नाहि सभागे ॥६९॥
एसें तिनि जुगल ह्वै छूटे । एक अनेक परम सुख लूटे ॥७०॥

अंत— ॥ दोहा ॥

वल्लभ रसिक लही कही सहीक करो जो कोइ ।
यारस यारस होइ तो वारस वारस होइ ॥१०७॥
जव लगि अखियाँ लखिया नाही राखो पकरि पकरि सव मेडे ।
जव अखियनि अखिया लखि पाई तो वारह वाट अठारह पैंडे ॥१०८॥
पेरी करी एक सो आठ । वल्लभ रसिकनि को जप पाठ ॥
जो कोऊ जपे रु पढ़े पढावे ॥ जुगल रूप दरसन को पावे ॥१०९॥

इति वारह वाट अठारह पैंडे ग्रथ संपूर्णंतागतः ॥श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—वल्लभ रसिक ने युगलस्वरूप (राधाकृष्ण) का वर्णन काव्य की विचित्र शैली मे किया हे ।

संख्या २३६. अद्भुत रामायण, रचयिता—वहोरन (द्विज), कागज—आधुनिक, पत्र—११, आकार—१३ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० महादेव मिश्र, ग्राम–वटसरा, पोस्ट–कसिया, जिला–गोरखपुर।

आदि—श्री गणेसाए नमहः श्री भवानि जि सहायः श्री गंगा जि सहायः श्री शंकर जी सहाय, श्री सरोस्वती जि सहायः ॥

गजमुप सनमुष होत है से विघिनि वेमुष होए जात ।
जव पगु परत प्रयाग मग त पाप पहार विलात ॥
:o: :o: :o:
श्री गनेस गुर द्विज चरन साधुन्ह जुत सिर नाइ ।
जग जननि को जस विमल कहौं–म सव पाइ ॥

॥ सोरठा ॥

दीजवर विमल कुलीन सुकवि "वहोरन" नाम रत्न ।
जनकसुता आधीन कहत तासु महिमा कछुक ॥

मध्य— ॥ दोहा ॥

वहु प्रकार निसचर कपि रहि समर सूर वहुरंग ।
रघुवर वान अनल मह परे है होइ पतंग ॥

इति श्री अद्भुत रामाएन जानकि विजै वहोरन दीज विरंचीते चौथे जुध्यः

विधि वानी सुनी कान हर्ष राम रीषीवर ।
...ही तजही अग्यान जोरी पानी वीन करत ॥
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—सीता जी द्वारा युद्ध में सहस्रवाहु रावण के मारे जाने का वर्णन ।

संख्या २३७. द्रष्टिकूट के पद भाषा टीका, रचयिता—सूरदास जी, टीकाकार—वालकृष्ण वैष्णव (भावनगर), कागज—देशी, पृष्ठ—७१, आकार—८ × ७½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४६१, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ८८, पु० स० १।

आदि—श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ सूरदास जी कृत द्रढ गूढ के पद तिनकी टीका अर्थ लिख्यते ॥

श्री गोवर्द्धन धरन जय करन सरन जन मोद ।
वृंदावन वंदित सकल वृंदा विपुन विनोद ॥ १ ॥
श्री वल्लभ विट्ठल वंदत विसद विचारि ।
वढत सुविद्या वुद्धि वल विनसत विकट विहार ॥ २ ॥
भक्तन के पद हिय धरत जोय को प्रीय कर होत ॥
तम जिन ऊतिमता ऊदित विदित जगत को पोत ॥ ३ ॥
यह संसार असार मे हरि कीर्त्तन सुखसार ॥
कहै त करत सव अवहू सो वडडे रेवे कवर विसार ॥ ४ ॥

मध्य—पृ० ३५ ॥ राग सारग ॥

विधु म देखे वहोत प्रकार ।
जमरह कनक लता ऊदयो ढिग मोतिन को हार ॥ १ ॥
कीर कमठ अलि मृग मन्मथ धनु झलकत हेम तुवार ॥
बिंब अनार बीजत तितहि मिलि कोकिल सब्द ऊचार ॥ २ ॥
मणिधर सिखिर रक्त रेखा जुत. विविधि कुसुम सिगार ।
मध्य प्रवाह स्वहत सुर सुरि को चितवत जात विकार ॥ ३ ॥
सुनि कौतुक चकि चितवत मोहन मन मे करत विचार ॥
ऊदित भयो ससि सूर स्याम हित स्याम स्यामा वदन उदार ॥ ४ ॥

याको अर्थ :—श्री स्वामिनी जी को श्री मुख चद्रमा को वर्णन सखी को उक्ति । श्री ठाकुर जी सो कहि के मिलायो चाहत हे । श्री मुख रूपी जो विधु चद्रमा तामे अनेक प्रकार हैं । सो मेनें देखे श्री ठाकुर जी सो कहत हैं ।

अंत—कोकिला सो कोमल वचन हे । जिनके ओर तिमिजो राव ताको रिपु सूर्य, ताको सुत कर्ण, ताको भ्राता अर्जुन, ताको पितु इन्द्र, ताको वाहन हस्ती, ताको सत्रु सिंघ, ताके कटि समान सूक्ष्म हे, कटि हे जिनकी वनी ।३। पीन सा उजो ऊचो पर्वत तद्वत हे । कुच जिनके तापर अहिरिपु जो काचली सो कंचुकी राजत हें । विहार करत ताके तनी टूट रही हे । एसे सूरदास प्रभू को निरषि हरषि आनद भयो ॥ अत्यत प्रीत वाढ़ी ॥४॥ इति श्री आश्रय के द्रष्टिकूट के पद सपूर्णम् ॥

विषय—सूरदास जी के प्रसिद्ध कूट पदो की टीका की गई है । जिनमें पदो का भाव समझाकर भगवान् श्रीकृष्ण की लीला, प्रेम, माहात्म्य आदि का प्रतिपादन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—श्री जवाहर लाल जी चतुर्वेदी निम्नलिखित सूचना देते है —कठमणि जी ने इन्हें भावनगर का माना है जो गलत है, य महानुभाव काशी के ही थे गुजराती-वनियां (वैश्य) । हस्ताक्षर, ज० चतुर्वेदी, मथुरा ।

संख्या २३८. राम नाम गुण सागर, रचयिता—विट्ठलदास, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—६३/४ × ४१/२ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१०, परिमाण (अनुष्टुप्)–३०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १७९५ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—

जाहि निमष रति राम चित ताहि परम प्रिय मानु ।
जाहि छिनक प्रभु वीसरे सु कोटु सत्रु सम जानु ॥ १ ॥
जिहि सगत कीये कछू जो मनु होइ हलाउ ।
कृपा करो रघुबीर जी ताहि न मोहि मिलाउ ॥ २ ॥
जिहि संगत कीएे कछू जो मनु होइ गिलान ॥
मन वच क्रम रघुबीर जी करियो जिन पहिचान ॥ ३ ॥
जिहि संगत कीएे कछू जो मनु होइ प्रकासु ।
त्योही त्योही जतन रति छाइ जाइ करि वासु ॥ ४ ॥
छिन मे मनुआ यो रहे छिनहो और को ओहु ।
अेसी रघुबर कब करहु जैसी चंद्र चकोर ॥ ५ ॥

मध्य—

ग्यान भरोसो लागि के जनम गवावहु अंद ।
के उठि कोसलनाथ भजु के वृंदावन चंद ॥११४॥

भक्ति पदारथ छाड़ि करि मत कूटो तुषधानु ।
हाथनि वहुते श्रम भग्रो कतहू न निक्यो ग्रानु ।।११५।।
वेद पुरान समृति सभे भरनति हे सव कोहि ।
राम तिहारे नाम को वड़ो भरोसो मोहि ।।११६।।
राम चरण गति राम रति राम सुमति दे मोहि ।
नाथ क्रिपा करि दीजिए जाचत हो नित तोहि ।।११७।।

ग्रंत—

घटती वढती देषि के राप न मन (मे) मेल ।
जो ग्रपने जीय ना रुके सु भेग कढियो पेल ।।२४०।।
सोक मोह की पोषणी प्रेम पोषणी ग्राहि ।
जोति वढ़ावनि तमहरनि भान किरन जिम चाहि ।।२४१।।
वुधि निपुन ग्रौर सुध मनु जो जनु ऐसी होइ ।
इह पोथी के ततु को ग्रधिकारी हे सोइ ।।२४२।।
रामाइ राम भद्राय रामचद्राय मेधसे ।
रघुनाथाइ सीताइपतए नमः ।।२४३।।

इति श्री राम नाम गुनसागर भीठल दास कृत लिष्यते संभतु १७६५ पोह १६७ ।।

विषय—इसमे रामचद्र जी की महिमा का वर्णन ग्रौर उनका गुणगान किया गया है ।

संख्या २३६क. श्री यमुनाष्टक की टीका भाषा मे, रचयिता—श्री गुसाईं विट्ठलनाथ, कागज—देशी, पृष्ठ—१३ (२८ से ३८), ग्राकार—७ × ८३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३६, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—२३४, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १५८५ से १६४० के लगभग (ग्रनुमान), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या-विभाग, काँकरोली, हि० व० स० ४५, पु० स० ७ ।

ग्रादि—ग्रथ श्री यमुनाष्टक की टीका भासा मे लिख्यते ।। श्री ग्राचार्य जी महाप्रभू ग्राठ श्लोकन करि श्री यमुना जी की स्तुति करत हें । ताकी टीका श्री गुसाईं जी करत हें तहा श्लोक कहत हें । श्लोक ।

विश्वोद्धारार्यमेयाविर्भृत वृंदावन प्रिया ।
कृपयतु सदा तात चरणामय विट्ठले ।। १ ।।

याको ग्रर्थ ।। याको ग्रर्थ श्री गुसाईं जी कहत हें । एसे जे श्री ग्राचार्य जी महाप्रभू ते हम पर कृपा करो ।

मध्य—पृ० ३१

।। याको ग्रर्थ ।। श्री ग्राचार्य जी महाप्रभू श्री यमुना जी सो कहत हें । ग्रहो श्री यमुना ऐसे जे श्री पूर्ण पुरुषोत्तम तिन विषे तुम हमारे मन कहं मिलायो हें केसे हें पूर्ण पुरुषोत्तम ग्रनद जे गुण तिन करिकें परम सोभित हें फिरि केसे हें महादेव ग्रौर व्रह्मा ग्रौरहू देवता सव कोई जिनकी स्तुति ही करत हें ।

ग्रंत—

ग्रोर श्री ग्राचार्य जी महाप्रभू तो श्री ठाकुर जी के साक्षात् सवंधी हे ताही ते श्री ठाकुर जी कें स्वरूप को ज्ञान इन कहं भली भांति सो हें ता हीते श्री यमुना जी को जेसो स्वरूप हतो ते सोई ग्राप निरूपन कीये हें ग्रौर प्रतिज्ञा हू किये हें ताते या वात मे कछू सदेह न करनो । ग्रोर या ग्रंथ को पाठ सो तो नित्य ही करनो ।। इति श्री वल्लभाचार्य विरचितं श्री यमुनाष्टक की टीका श्री गुसाईं जी कृत भासा में संपूर्ण ।।

विषय—श्री यमुना जी की स्तुति । श्री वल्लभाचार्य कृत 'यमुनाष्टक स्तोत्र' संस्कृत मे है । उसकी टीका संस्कृत मे ही उनके पुत्र श्री विट्ठलेश्वर जी ने की । उसी संस्कृत टीका का व्रजभाषानुवाद प्रस्तुत ग्रंथ है । वास्तव में हिंदी टीका गुसाईं जी कृत नहीं है । प्रसिद्धि है कि यह भाषा टीका श्री हरिराय जी कृत है जो संप्रदाय के एक अन्यतम विद्वान् आचार्य थे ।

संख्या २३९ख. यमुनाष्टक की टीका, रचयिता—श्री गुसाईं विट्ठलनाथ जी, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—७ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२९, परिमाण (अनुष्टुप)—२३४, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्याविभाग, काँकरोली, हि० ब० ५९, पु० सं० ११२ ।

आदि—।। श्री कृष्णाय नमः ।। अथ श्री यमुनाष्टक लिख्यते टीका श्री आचार्य जी महाप्रभु आठ श्लोक करि श्री यमुनाष्टक यमुना जी की स्तुति करत है । ताको टीका श्री गुसाईं जी करत हैं ।

।। श्लोक ।।

विश्वोद्धारार्थ मेवा वीर भूत वृंदावन प्रिया ।
रूपयतु सदा तात चरणार्मयी विट्ठले ।। १ ।।

याको अर्थ श्री गुसाईं जी करत है, ऐसें जे श्री आचार्य जी संपूर्ण विश्व के उद्धार के लिये प्रगट भए । काहे तें श्री आचार्य जी के प्रागट पहलें वेद सो सबन को उधार हतो स्त्री सूद्रादिकन को उधार न हतो, काहे तें उनको वेद मे अधिकार नाहि । तातें सबन के उधार के लिए श्री आचार्य जी प्रगट भए ।

मध्य—पृ० ९ ।। श्लोक ।।

भुव भूवन पाविनी मधिगता मनेच स्वनैः ।
प्रियाभि रवि सेविता शुक मयूर हंसादिभि. ।
तरंग भुज कंकणः प्रकट मुक्तिका वालुका ।
नीतंव तट सुंदरी नमत कृष्ण तूर्य प्रिया ।। ३ ।।

या श्लोक को अर्थ—श्री आचार्य जी कहत हैं श्री यमुना जी केसें हैं । जे कृपा करि व्यापि वैकुंठ तें भूलोक पधारे । सो कहा प्रयोजन, सब लोकन को पवित्र करिवे के लिये सो केसें हैं श्री यमुना जी जो भांति भांति के शब्द जिनके ऐसे जो सूवा मोर हंस इनादिक जे पछिन करि ध्वन है । तेउ पछी जब एकांत समे ठाकुर को रमण होत है तब बोलत नाहि । सो कोन भांति जेसें एक मुख्य नायिका होई सो अपनी प्रतिवत सखी तिनको मिलके जेसें अपने पति पास आवें ते सखी, हू जब उनको एकान्त हो समे रमण को होई तब कोउ बोलत नाहीं । गानादिक करे नाहि । काहू के आगें बात करे नाहि । ता भांति श्री यमुना जी सूवा, मोर, हंस इत्यादिक पक्षीन सो मिलि करि ठाकुर पास आवत हैं यह जाननो ।

अंत—तातें श्री यमुना के स्वरूप को ज्ञान भली भांति हे । तातें यह जेसो स्वरूप हतो तेसो निरूपण हू कियो । और फल या स्तोत्र को इतनो निरूपण कीयो पाठको, और प्रतिज्ञा हू कीये । तातें या बात मे संदेह न करनो ।

विषय—श्रीयमुना जी की आठ श्लोको में श्री आचार्य जी महाप्रभु जी ने स्तुति की । उसकी टीका श्री गुसाईं जी श्री विट्ठलनाथ जी ने की ।

संख्या २३९ग. चतुश्लोकी टीका, रचयिता—गो० विट्ठलनाथ जी (मूल संस्कृत टीकाकार), कागज—देशी, पृष्ठ—३३, आकार, ६×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०२, अपूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८८ के अनन्तर, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ६१, पु० सं० १–१।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥..........टीका लिख्यते :: श्री गुरु......यं जी महाप्रभून को नमस.........तुश्लोकी की टीका कहत हें।.........जेश्वर लीला या हृदयागाध सागर। निज जन कृपा दृष्टि वृष्टि प्रेम महारस ॥ १ ॥ याको अर्थ ॥ श्री आचार्य जी सो श्री गुसाई जी कहत हे। जो तुम केसे हो श्री व्रजेश्वर जो श्री पूर्ण पुरुषोत्तम श्री कृष्ण चन्द्र जी तिनको जो लीला को समुद्र सो तुम्हारे हृदय मे भरो हे। अथवा तुम्हारी जेसी ईछा होइ तेसी लीला श्री ठाकुर जी करे काहे तें लीला के पति तो एक तुमही हो।

मध्य—पृ० १८ ॥ श्लोक ॥

अत. सर्वात्मना शश्वद्गोकुलेश्वर पादयोः।
स्मरण भजन चापि न त्याज्यमिति मे मतिः॥ ४॥

याको अर्थ ॥ अतः अपनी जो आत्मा सो श्री ठाकुर जी को समर्पन करि गोकुलेश्वर के चरणारविंद को सुमिरन भजन करनो। यह श्री आचार्य जी के मत मे सिद्धांत हें। तहा कोई संदेह करे जो ओर देवतान को अनादर भयो; तब ओर देवता याको भक्ति करन मे विघ्न करे तो भक्ति केसें सिद्ध होय। यह कोइ संदेह करे सोऊ न करे। काहे तें श्री भागवत मे अमरीष राजा पास दुर्वासा रषि आये हें। तिन मे रीस करिहें। सो उलट्यो दुर्वासो विपत्ति परी। सो कोई राखि सकें नाही। श्री ठाकुर जी हू यह कहें। जो मेरो अपराध तो हू क्षमा करू। ओर मेरे भक्तन को अपराध करे तो मे नाही सहो।

अत—संदेह हे सो आसुर भाव हें। ओर विश्वास हे सो भगवद्भाव हें तातें वैष्णव को संदेह कबहूं न राखनो। ओर अपनें मन मे श्री आचार्य जी के वचन को दृढ विश्वास राखनो यह वैष्णव को धर्म हें। ताते वैष्णव को विवेक संयुक्त रहनो। यह श्री गुसाई जी अपनें वैष्णव को कृपा करिकें सीक्षा दीऐ। ताते वैष्णव को यातें अधिक भाव राखनो। काहे तें या मे श्री आचार्य जी श्री गुसाई जी के दोऊ जने के वचन मिले हें। तातें या ग्रंथ को निरन्तर पाठ करनो। यह टीका भलीभांति संपूर्ण भई।

इति श्री वल्लभाचार्य विरचितं चतुश्लोकी ग्रंथ ताकी टीका श्री गुसाई जी कृत भासा संपूर्णम् ॥१॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

विषय—श्री पुष्टिमार्गीय सिद्धांत के अनुसार श्री वल्लभाचार्य जी नें चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का प्रतिपादन इस चतुश्लोकी ग्रंथ मे किया है। उस ग्रंथ की संस्कृत टीका उनके पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी ने की हे, जिसकी टीका प्रस्तुत हिंदी भाषानुवाद है।

विशेष ज्ञातव्य—आरंभ के तीन पन्ने उनके ऊपरी कोनो पर चूहो के कुतरे हुए है।

संख्या २४०. रामायण माहात्म्य, रचयिता—बिहारी "रमणेश", कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{3}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

नलिन नयनमीशं शप्रद जानकीशं शुभदमपि हि नत्वा दिव्य माहात्म्यमस्य।
दुरित दमनमद्धा पावन शकरोमी प्रभतुष्टस्तेन रामः स एव॥ १॥

सोरह पावन परम पवित्र रामायन माहात्म्य सुचि ।
भव पाथोधि वहित्र वरनहु सिय रामहि सुमिरि ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

सीतावर चरित्र अति पावन ॥ प्रथम कौन विधि रचि मनभावन ॥
ललित अनुष्टुभ छंद प्रमाना ॥ पद्य कीन्ह सतकोटि सुजाना ॥ ३ ॥
देखि ग्रंथ कर वड विस्तारा ॥ पुनि मन मह विधि कीन्ह विचारा ॥
मनुज लोक जे मानेस देही ॥ जियहि सताऊ धर्म प्रिय जेही ॥ ४ ॥
ता मह तीश वस रलि लाई ॥ वीश वरस भोगवहि वृद्धाई ॥
वर्ष साद्रि रहे मध्यम जोई ॥ ता मह युग विभाग पुनि होई ॥ ५ ॥
निंद्रा विवश तीस तहँ खोई ॥ शेष जु तीस वर्ष रहे जोई ।
ईन मह भोजन आदि उपाई ॥ करतहि करत काल वहु जाई ॥ ६ ॥
जाते अल्प काल रहि जावें ॥ या की वार मनुज कसि पावें ।
असि विचारि विधि शिवहि वुलाई ॥ यहि वाटहु कह भागव भाई ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि शंकर विधि वयन तव मन मह करि अनुमान ।
भाग विचारे तीन पुनि वाटन लाग सुजान ॥ ८ ॥

मध्य—

॥ दोहा ॥

नारी केर सुभाव अव कहहुं सुनहु चित लाइ ।
पति अपनावन काज ते वोलहि नयन मिलाय ॥ ५८ ॥

॥ चौपाई ॥

खांहि वहुत सोवहि दिन राती ॥ करही वात अपने मन भाती ॥
गृह कूरा कचरा नहिं झारें ॥ वेस्या जिमि निज रूप सवांरें ॥ ५९ ।
दुहु हाथ वजवावहि सीसा ॥ हँसहि देखावत दाँत वतीसी ॥
पति से पहिले भोजन करहीं ॥ पति लै जई उच्छिष्ट लै धरही ॥६०॥
औरन से हंसी हसी वतरावें ॥ पतिहि देखि पाखंड वनावें ॥
पेट सीस की पीर वतावें ॥ पति से मलवावें दववावें ॥६१॥
कवहुं कहैं सुनु पीतम प्यारे । पग दुख निकसत प्राण पियारे ॥
अस कहि पद सेवा करवावें ॥ नवपियार करि हिये लगावें ॥६२॥

अंत—

नहिं कलि जप तप योग विरागा ॥ केवल राम चरित्र अनुरागा ॥
देई परम गति कह सव कोई ॥ यहि विधि आन उपाय न सोई ॥२३॥
ताते तुम तजि सकल उपाई ॥ राम चरित्र रहहु लव लाई ॥
सो तुम्हार सव भाँति सुधारी ॥ सत्य सत्य यह रमण विहारी ॥२४॥
कनक भवन श्री अवध मझारा ॥ तह महंत रसिकेस उदारा ॥
तिनकर मै लघु शिष्य कहायऊं ॥ रमण विहारी यथा मति गावहुं ॥२५॥

॥ दोहा ॥

श्री रामायण कृपा यह माहात्म्य मैं गाव ।
प्रेम सहित सज्जन सकल सुनहु राखि चित चाव ॥१२६ ॥

इति श्री रामायण विहारी विरचितं सकल कलि कलुद विध्वंसन मानसरोवराख्य तुलसीकृत रामायण माहात्म्यं संपूर्णम् ॥ श्री रामचद्रार्पणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ सवत् ॥ १९३८ ॥ सन् ॥ १८८१ ॥ पौस मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दस्यां भौमवासरे लिखेत्वा विध्येश्वर पांडे ॥
॥ श्री रामचद्रार्पण मस्तु राम ॥

विषय—इसमे गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस का माहात्म्य वर्णित है।

संख्या २४१. नीलकठ स्तोत्र, रचयिता—वैजनाथ, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८×५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० महादेव मिश्र, ग्राम—वटसरा, पोस्ट—कसिया, जिला—गोरखपुर।

आदि—....................

ल आसन मासनं पद आसनं ॥ श्री नीलकंठ० ॥ ७ ॥
मथत दधिजल सेस विगलित घुमत मेरु सुमेरुतं।
सर्व विपि जल दिपक प्रान वुत घुमत नेत्र सघुरितं।
महादेव सुदेव सुरपति सर्व दीप विसंभरं ॥ श्री नीलकंठ० ॥ ८ ॥
ऋतु वसंत सुचक्रम चहुं दीस प्रापते फल दाएकं।
पुरव कासि भए उपासी प्रात मंगल गाएनं।
अंब के तट वैजानाथ ससैल सीषिर विसंभरं।
श्री नील कंठहि भाल जल थल विस्वनाथ विसेसरं ॥ ९ ॥

इति श्री वैज्यनाथक्र ठं निलकंथ मृकं सुभं श्री निलकठाए नमः।

विषय—श्री नीलकठ महादेव की स्तुति की गई है।

संख्या २४२. झूलना, रचयिता—वोधदास या वोधीदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६१⁄२×५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी और नागरी मिश्रित, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रथदाता—प० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट—वरदह, जिला—आजमगढ)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ इती सी नवनीत चरणे कमलाभ्या नमः राम श्री हृषिकेशाय नम राम राम ॥

'क' काम औ क्रोध का संग परीते जीए नाम गोविंद का गाइए जी।
मोह अनीनान मद ढाही मैदान करी प्रेम के भवन मो जाइए जी।
सीज सतोष अनुराग उरधारी हेरकत होइ नाम ल लाइए जी।
कहे दास वोधी एह पेल नीरवान को गगन के सवद सुष पाइए जी ॥ १ ॥
"क" काज ऐसो जीव काहो होगा राम से और नर धरो सव झूठी आसा।
साहेव सव गीव का एक नीरवान है और ताही लोक मे सकल दासा।
सो पुरुष परने जो नरदेव दानो सेवै परोगा अंत जम काल फासा।
कहे दास वोधी एक अलप के नाम विनु छुटे ना जीव की ग्रववासा ॥ २ ॥

अन—

राम्ही तात अरु मात गुरु राम्ही राम्ही पीव अरु राम प्यारा।
राम्ही जाती अरु पाती कुल राम्ही इस्ट औ राम्ही राम यारा।
राम्ही देन सेवा सम राम्ही राम्ही वंधु अरु राम वारा।
"कहे दास वोधी" मोही सरन गती रामही रामही जीवनाकंत सारा ॥ ५० ॥

'ल' लागु वे लागु तुम श्रापु में उलन कै श्रौर सव लागु वे भ्रम माया ।
जोहीले द्वीस्ठ मो वस्तु जो श्रावता सकल वीनसाए जो मेघ छाया ।
श्रजर श्रवीकार श्रा देष जो व्रह्म है हीए मो ताही कोई सत पाया ।
"कहै दास वोधी" संत सवद जो जानीए श्रानद घर होइगा कीयो दाया ॥५२॥
"ल" लोक श्रौ वेद की राह सव छाडी कै चलतु है प्रेम को पथ माही ।
पाप श्रौ पुन्य का षेल सव डुरी कै राम को षेल मो श्रालन माही ।
नरक श्रौ सोरग का श्रास वीसराइ के सुरत रघु राम रघुनाथ पाही ।
"कहै दास वोधी" पुरुप नर ना......................॥

:o: :o: :o:

—श्रपूर्ण

विषय—सत मतानुसार भक्ति श्रौर ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खडित है । पत्र सख्या ९ तथा सख्या १२ के पश्चात् के पत्र नही हैं । लिपिकाल श्रौर रचनाकाल भी श्रप्राप्य हैं ।

रचयिता का नाम वोधीदास हे । श्रन्य परिचय नही मिलता । ये सत जान पडते हैं । इनकी रचना सतोचित विचारो से युक्त है । कविता झूलना छदो मे की गई है । प्रति कुछ श्रसावधानी के साथ लिखी गई हे । वहुत सी श्रशुद्धियाँ हैं । ग्रथ का नाम नही दिया है । रचना झूलना छदो मे होने के कारण यही नाम रख दिया गया है ।

संख्या २४३. सोना लोहा वाद, रचयिता—वोधलाल, कागज—देशी, पत्र—१ (खरीकार), श्राकार—१२ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (श्रनुष्टुप्)—२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महत ईश्वरशरण भारती, ग्राम–वाँसी, पोस्ट–भाटपार रानी, जिला–गोरखपुर (रचना सभा के लिये प्राप्त हो गई है) ।

श्रादि—श्री सूर्य्यायनमः ॥

कहत सोवर्ण लोहा हयत चेरा । वड़ वड माने वचन मेरा ॥
छनही मे करो भुपति रक के । पहिरे पोसाक जस देत कक के ॥
श्रभरन वनाव माला राषत गले । माने श्रादर जस मोर के भले ॥
सुन सुन रे सोना के । पूछे तोके तोहरोके ।
ठोक ठाकि हमही गढ़ी । पावक मे डारिके ऊपर करि ॥
तोहरो के पहिरि नारि सेज ऊपर जाय । हमरा के पहीरि विर रण फहराय॥
गवरी वचन सुनि वोले सोना जगती के । नाति भल चाहे मोके ॥
सुन खन वारी विच राषे गले ।
राधे वो रुकुमिनि लिये । हिये हर्प नरे सजो सिर पर दिये ॥
कोटि कोटि हस्ती मेरे श्रागे चले । लोहा गवार का मोसे वोले ॥
ते त हउ वंक्यदर सोना हम होइ मरद । छनही मे लुटि पाटि कइ दिले गरद ॥
सगरे संसार वसे हमरे दोहाइ । विना लोहा नेक्हु करे कमाइ ॥
झमके तरु श्रारि दे पी रहे सोना । ना सरवरि करे का रहे कोना ॥
तेत होवे लोभी लोहा धुरि पर धावेल । से श्रधिक श्रपार होये जान श्रति मारेल ॥
सि छुरी कतर्नो नहरनी हजाम के थोर थोर मोलहो एक उडी पर श्रावेल ।
सि दरजी की घर जाइ लुगा सिवावेल ॥
सिपापी चंडील के श्ररई तेरी । ऐसी ऐसी जाति करै सरवर मेरो ॥

अंत—

लोहा कहे कोपि वात । सुन सोना मोरि बात ।।
एतना वकवाद का करते मोसे ।।
हमहु गोवी(?न्द) जी के होइ चकरपानी । वाधि लेत दानो असुर अभिमानी ।।
हमहु त्रिसूल गौरी नाथ कि करे । वज्र घहरात इन्द्रव हाथ के धरे ।।
महिषासुर दानो जो मारे भवानी हमरोके भीम से ।
निकर गहि लीन गदा किन्ह जुद्धि भिमसेनि राय सरहीसे ।।
राम मारे रावण के जाय । हस्ती के मस्तक पर आकुश सोभा विना लोहे नाही जग निरवाह ।।
गडुर कढि आये जहा जादो मुरारि । "वोधलाल" कृष्ण जहा समत विचारि ।
सोना लोहा हव देहे हमार ।। १ ।।

इति सोना लोहा वाद समाप्तः ।।

विषय—सोना और लोहे का विवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना 'किसान सिपाही झगरा' नामक रचना के साथ एक ही खर्राकार पत्रे मे है ।

संख्या २४४. व्रजविहार (द्वितीय सोपान), रचयिता—ब्रह्म ज्ञानेन्दु, कागज—देशी, पत्र—६१, आकार—१०½ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—स० १८४४ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री नमो भगवते व ...... ।।

श्री मत्सकल कलि कल्मष क्षालि न्यैषारंगिनी महा अध्यात्मिकादि तापत्रयोन्मूलिनी सकल कल्याण कारिणी अनिमित्रा भागवती भक्ति प्रवोधिनी वैराग्य ज्ञानोद्‌वोधिनी चतुर्वर्ग फल प्रदायिनी विरूपसाक्षात्कार कारिणी अज्ञानांधकार विध्वंसनपरायिणी ।। श्री शुक्राचार्य शिष्येण श्री भागवत व्रह्मज्ञानेंदुना कृता श्री भागवत सार ग्रंथे श्री वृजविहार नाम दुतिय सोपाने वशमे भक्त्योपासना प्रेम प्रकाशिका श्रीकृष्ण चरित्र संवाद संवधिनी सुयुग्या कथा प्रस्तूयते तत्र श्रोतारः सावधानतया शृण्वंतु श्री पुराण पुरुषोत्तम प्रसन्नोस्तु ।। श्रीमता वचन ।। छंद छप्या ।।

अहो धन्नि रचना अनूप श्रुतिसार सुगाथा ।।
जासु श्रवन मुदभावदेव मै भई सनाथा ।।
अव वानक वर वृज विहार विस्तार सुनैयै ।।
भक्ति वतसलता जहाँ परम सर्वेस्वर पैयै ।।
प्रेम प्रभावहि ताहि प्रति लसतय चरित कौने कवन ।।
कहिय सकल रावर समहि को वक्ता मंगल भुवन ।। १ ।।

।। श्री भागवत वचन ।। सोरठा ।।

सुनिय अंव चित लाय व्रजविहार मजुल कथा ।।
अविरल प्रेम प्रभाव सुठि विधान वर्नन करौं ।। २ ।।
मध्य—जैसे स्वागी कोय जिहि विधि स्वांग सम्हारहीं ।।
सोहन अधिक न होइ विन प्रगटे सव अंग तिहि ।।७८।।

।। चौपाई ।।

पुनि रितु सिसिर सीत को आगर ।। भई आन निज समय उजागर ।।
नित प्रति अतुलित श्रवत तुषारा ।। पवन झकोरति विविधि प्रकारा ।।
ऐसो रितु हू में व्रजराजा ।। मुदित रमत वन सहित समाजा ।।

ऊंचो ठौरि विलोक सुहाई ।। जहाँ तेज रवि अधिक दिपाई ।।
लै मित्रनु बैठत सुखदाई ।। गउँवाँ सकल विपन छुटिकाई ।।
करत परस्पर पर्म किलोलें ।। संजुत रहसि वचन वहु वोलें ।।
कबहू धुधि रहति नभ छाई ।। भान तेज सबही दुरि जाई ।।
तब नित सघन हेत हरि देवी ।। प्रगटत आनन प्रभा विशेषी ।।७६।।

अंत— ।। चौपाई ।।

ब्रज विहार छंदनु गिनती अब ।। जोरीं विधिवत बनक तासु सब ।।
सौ सैंतीस सोरठा जसई ।।१३७ ।। चौपाई सततेरह रहई ।।१३३।।
मालू छद वीसद्वै भाषे ।।२२ ।। पुनि सै डेढ़ दोहरा राये ।।१५०।।
पंच त्रिभंगी विव चौवोला ।। ७ ।। येक आरती शब्द अमोला ।। १ ।।

तोमर—

।। १ ।। भुजग प्रयाता १ मनहरन १ ।। पुनि त्रोटिक १ प्रजुलिय १ जोवरन ।।
छप्पा १ जुतये जिषट निज निजही ।। चतुर्वधायी ४–सुखद सहजही ।।
अष्टपदी अरिल्ल जेहि नामा ।। गने चारि ४ तेऊ इहि ठांमा ।।
अरु चौवीस चक्षु वैगाए ।। २४ ।। दंडक कवित पचीस गनाए ।।२५।।
ऐसी विधि सव पाच सै अरु ऊपर विवि जान ।।
गनति ब्रह्म ज्ञानेन्दु सव वृज विहार पहिचान ।।५६२ ।।

।। छंद छप्ता ।।

वहुरौं गन अक्षिरनु छद पुस्तक इक ठांही ।।
जोरे सत सठि सहस और सत चतुर तहांही ।।६७४००
तिनहि अंक बत्तीस भाग जो थय श्लोका ।।
विव सहस्र सत एक षष्ट ।।२१०६।। तव तिहि अवलोका ।।
गिनति ब्रह्म ज्ञानेंदु गुनि गति श्लोक अरु छदही ।।
गुनै गुनी रति भक्ति श्रीकृष्ण सच्चिदानंद ही ।।

इति श्री शुक्राचार्य शिष्येण श्री भागवत ब्रह्मज्ञानेंदुना विरचित श्री भागवत सार ग्रंथ श्री वृज विहार नाय द्वितिय सोपाने भक्त्योपासना प्रेम प्रकाशिका श्रीकृष्ण चरित्र प्रथम निवास व्याख्या समाप्ता ।। शुभमस्तु ।। संवत् ।। १८४४ ।। प्रतिलिखितं मनीराम ब्रथरोय ।। शुभ भूयात् ।। श्री गुरु चरणक यह सोपान किसोरतन्दि भाजवती कौं दयो पठन समझनार्थं सदी ।।२।।

विषय—भागवत के अनुसार इसमे श्रीकृष्ण चद्र के व्रज विहार का वर्णन है ।

संख्या २४५. शृगाररस सिंधु, रचयिता—भागवतदास, पत्र—११३, आकार—७।।×४।।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७०, लिपिकाल—स० १७७७, प्राप्ति-स्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ७१, पु० स० ३।१ ।

आदि— ।। श्री गोकुलेशो जयति ।।

अंकुर हे भाव प्रेम कंदल प्रणय साखा पल्लव हं राग सोई नीके कर जानीए ।
अनुराग कलिका सो झुकि रह्यो चहू ओर बिसन कुसम नित प्रफुलित मानीए ।
नेह फल नूतन अखण्ड हे विराजमान कहे रिझवार भाव पूरन प्रमानीए ।
लपटि रहो हैं व्रजसुंदरी लगनि जहाँ एसो रस रूप सुरतरु उर आनीए ।।१।।

मध्य—पृ० ८७ आलिंगन रूप संभोग शृगारो यथा ।। दोहा ।।

आठ भाति की हे कही आलिगन की रीत । अथ रीति सो कहत सुनो रसिक करि प्रीत।।१।।
वृक्षारूढ़ सो प्रथम कहि लतावेष्टितक जानि । तीजो लाघव हे कह्यो चोथो त्रिजक मानि ।।२।।

उरुप गूढ सु पाचमो तिल तंदुल सुख कारि। क्षीर नीर लालाटिक वर नारि ॥३॥
तत्र प्रथमं यथा ॥

एक पाइ सो चापि पग दूजे दूजो पेलि।
वृछारूढ सो जानिये पिअ भुज अंतर मेलि ॥४॥
छातीसो लपटाइ कें लटकी रहे जो नारि।
वल्लरि वेष्टितहू कह्यो आलिगन सु विचारि ॥५॥

अंत—कविता रस भगवान के भई जु कछु इहिं वार ॥
नवरस मधि वहु प्यार करि वरननु कियो सिंगार ॥१६॥
हो सवको रस रीति के पदरजहू निरधार ॥
वरनत भूल परी कछू सो छमियो इहि वार ॥२०॥
संवत् सत्रहसे सुभग सत्तर वरष वखानि।
माधवसित तृतीया गुरौ धाता सोभन मानि ॥२१॥

इति श्री कृष्णदास वंस संभव भगवद्दास प्रकासिते शृंगार रस सिंधौ द्वादसमास वर्णनं नाम द्वादश कल्लोल संपूर्णं ॥

इति श्री सिंगार सिधु सपूर्णं ॥ सवत् १७७७ आपाढादि वर्षे शाके १६४२ प्रवर्त्तमाने आषाढसुदि १५ शुक्रे सपूर्णं ॥

विषय—इसमे द्वादश अध्यायो (कल्लोलो) मे शृंगार रस का वर्णन है। शृंगार रस का शास्त्रीय रीति से विवेचन सोदाहरण किया गया है। कामशास्त्र सबधी कलाओ के भेदोपभेदो का भी वर्णन है।

संख्या २४६. राम साविन्नी, रचयिता—भगवतदास, कागज—देशी; पत्र—६, आकार—६ × ४$\frac{2}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० राधेश्याम, ग्राम–कूडा, पोस्ट–जटरामपुर, जिला–इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम साविन्नी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री मन्नारायण चरण अस्मद गुरु परजत।
श्री रामानुज आदि दै वंदौ श्री गुर संत ॥
साविन्नी श्री राम की पाविन्नी श्रुति मूल।
विरची भगवतदास सुनि मिटै मूल भव सूल ॥ २ ॥
ब्रह्मा ते नारद सुनी वीनाधर ते व्यास।
कहि वसिस्ट हनुमंत तें जग जिमि सुर्ज प्रकास ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥

सत्य सनातन व्रह्म वेद जेहि नेति पुकारा।
धेनु धरासुर साधु हेत तेहि नर वपु धारा ॥
चैत्रमास सितपक्ष पुनर्वसु सोम नौमि जुत।
कर्कट लगन सुमध्य देव सम राम भूप सुत ॥
चतुर्व्यूह चहूं वंधु राम अरु भरत सूर्यसम।
लक्ष्मण अरु शत्रुघ्न कलानिधि सद्रस हरत तम ॥ १ ॥

अंत—

नव सं सरसठि वरष सिया तह किये विश्रामा ।
रिपिन्ह पठाये पुत्र सुमृति श्रुति हरि गुण ग्रामा ।
रामहि पुत्र समर्पि सिया किय भूमि प्रवेसा ।
अयुत वर्ष करि राम राज्य पुत्रन्ह उपदेसा ॥ ४२ ॥
अमत यज्ञ तपदान धर्म विप्र लडाये ।
प्रजा वधु पुर सहित हरपि निज लोक सिधाये ॥
यह श्रीराम चरित्र प्रेम जुत सुनै जो गावै ।
सर्व पाप मिटि जाइ चारि फल सहजहि पावै ॥
विरची भगवत दास राम सावित्री येहा ।
सुनै येकहू वार लहै श्रीराम सनेहा ॥ ४३ ॥

इति श्री भगवतदास जी कृत राम सावित्री सपूर्ण ॥ सवत् १६१२ कार्तिक मासे शुक्ल १ तिथि हस्थ अक्षर पीतावर दास ॥ शुभमस्तु ॥ रामकृष्ण ॥ रामकृष्ण ॥

विषय—श्री रामचद्र जी की लीलाओं और घटनाओं का तिथिक्रम वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खडित है । बीच के पत्रे, सख्या ३ से लेकर सख्या ५ तक नहीं है । इसकी दूसरी प्रति भी मिली है जिसका केवल प्रथम पत्र खडित है । परतु दोनो को मिलाने से पुस्तक पूरी हो जाती है ।

संख्या २४७. दीप रामायण, रचयिता—भगवतदास (आवास, अयोध्या), कागज—देशी, पत्र—४१, आकार—११½ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर जयराम सिंह, ग्राम—तिहिसा, पोस्ट—महमूदपुर (सेमरी), जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री रामयनमः ॥ अथ रामायण दीप लिख्यते ॥ दोहा ॥

एकरदन पद कमल जुग प्रनवो वारवार ।
सुमिरे करतल मिलत वुद्धि विभूति विचार ॥ १ ॥
गिरिजा सहित महेश पद वन्दो सुखधाम ॥
जो...ने पुर जीव कह देत अत कहि राम ॥ २ ॥
जासु कृपा जन मूकहू होत निगम वाचाल ।
पंगु शैल दुर्गम सुमिरु सो राम कृपाल ॥ ३ ॥

राम कथा जलनिधि अवगाहा ॥ शारद सेश कि पावहि थाहा ॥
सो किमि कहो वाल मति रंकू ॥ उतरु कि सिंधु पपील असकू ॥
छमिहि सज्जन मोर ढिठाई ॥ वाल वोल इव मातु सोहाई ॥
पारस मणि सतसंग प्रभावा ॥ कोन भुवन सुदर जस पावा ॥
कहहुं कथा रघुनाएक केरी ॥ सुनहि जाहि सव तीरथ घेरी ॥
यद्यपि काव्य भेद कछु नाहीं ॥ तदपि राम महिमा एहि माहो ॥
शुनिहहि सज्जन मन चित लाई ॥ राम चरित पर चाह शोहाई ॥
काव्य दोष गुण शोध जो करहीं ॥ राम हीन वुध नहि आदरहीं ॥
जेहि सर वक मडूक विराजा ॥ किमि तह जाइ मराल समाजा ॥
अस विचारि कीरति मन हरणी ॥ कहिहो जोह विमल की वरणी ॥
नारदादि मुनि थाह न पावत ॥ मति अनुरूप राम जस गावत ॥

॥ दोहा ॥

अस विचारि मम हृदए मे चाह भयो अवगाह ॥
कहिहो कछु रघुनाथ जस पावन विश्व सनाह ॥ ७ ॥
अवधपुरी ते जाम्य दिशि पावन आसव वास ॥
तह वसि रघुवर की कथा रचत भागवत दास ॥ ८ ॥

॥ शोरठा ॥

रामायण सुषसार वालमीक मुनि आदि कृत ॥
महिमा तासु उदार सूत कहेउ मुनि जन सभा ॥ ९ ॥
भाषा भणित सो ग्रंथ करो सकंद पुराण की ॥
रामधाम को पंथ रामायण दीपक रतन ॥ १० ॥

अंत— ॥ शोरठा ॥

तेही "प्रसाद" की हेत वाल वुद्धि मैं एह रचिउ ॥
जेहि प्रिय रघुकुल केतु दीनवंधु अशरण शरण ॥ ७१ ॥
श्री रामायण दीप भाषा वंध सु तरल पद ॥
श्री रघुनाथ समीप कृपा हेतु अरपन किहेंउ ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

राम उपासक चरण युग कमल पराग सुवास ॥
रापि हृदं एह रचि कियो सुगम भागवत दास ॥ ७३ ॥
पढ़हि सुनहि जो प्रेम करि हृदय सुमिरि श्रीराम ॥
सुर दुर्लभ सुष भोग करि राम धाम परिनाम ॥ ७४ ॥

इति श्री रामायण प्रकास करण रामायण दीप समाप्तः शुभमस्तु ॥ श्री सम्वत् १८९९ भाद्र शुक्ल चतुर्दश्यामर्क वासरे ॥ लिः भवानी दीन पंडित रघुवर दास श्री

विषय—रामकथा और रामायण की महिमा का वर्णन तथा ईश्वरभक्ति का उपदेश ।

संख्या २४८. प्रयाग शतक भाषा, रचयिता—भगवतदास या भागवतदास महात्मा, (स्थान–प्रयाग), कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—२९, आकार—८ $\frac{2}{10}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—संवत् १९१९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० भगवतीप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम–जूडापुर वीहर, पोस्ट–होलागढ, जिला–इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ तीरथराज महात्म प्रयाग शतक भाषा लिख्यते ।

॥ दोहा ॥

रामानुज पद रामपद सिय पद पदुम सुवास ।
भवरुज गद गति उच्च पद वंदत "भगवतदास" ॥ १ ॥
गंगा यमुना सरस्वती श्रीमाधव पद रेणु ।
कामद शिर धरि नरनि हों प्रयाग शतक सुर धेनु ॥ २ ॥

॥ अथ प्रयाग निवास महिमा ॥

॥ दोहा ॥

सुलभ स्वर्ग अपवर्ग गति अक सुरधेनु ।
प्रयाग निवासी नरन्ह की है दुर्लभ पद रेणु ॥ ३ ॥

यज्ञादिक शुभकर्म जे तप तीरथ व्रत दान ।
प्रयाग माहि एक तुटि वसै सब नाहि ताहि समान ॥ ४ ॥
आवत मज्जे प्रयाग जो अथवा मज्जे जात ।
तेहि दरशे परशे तुरत पाप पहार बिलात ॥ ५ ॥
तीरथपति की रेण ढिग कचन मणि केहि काम ।
कतहु परी झूरी वसन अधम गयो हरि धाम ॥ ६ ॥

अंत—

प्राग शतक यह जो पढै सुनै मानि विश्वास ।
सर्व तीर्थ अस्नान फल पावै भगवत दास ॥ १८ ॥
नित पढिये अस्नान कै करि सुकर्म उपवास ।
प्राग शतक सुरधेनु सम वरनो भगवत दास ॥ १९ ॥
तीरथराज प्रयाग मे टहलदास सुप्रास ।
तिनके दासन दास को दास भागवत दास ॥ २० ॥

इति श्री तीर्थराज महातम प्रयागशतक भागवतदास भाषा कृते प्रयाग महिमा वर्णनो नामः पंचमो विश्राम :: ॥ ५ ॥

समाप्त शुभमस्तु

विषय—प्रयागराज का माहात्म्य वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक मे रचनाकाल का उल्लेख नही है । यह सवत् १९१९ मे प्रयागराज मे बा० काशीदास मिश्र के लक्ष्मी विलास छापेखाने मे सशोधित होकर पहली वार छापा गया ।

सख्या २४९. बोधरतन, रचयिता—भागवतदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—७$\frac{6}{10}$ × ४$\frac{2}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि,—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

रामानुज वदत गुर चरन कमल उर धारि ।
जय सचिता नद श्री दीने ग्रथ सुधारि ॥ १ ॥
बोध करन जमे भए व रतन करन शो नाम ।
जेहि पढे ते श्रम मिटै मन पावै विश्राम ॥ २ ॥
मन दुखिया कगाल सो सुख पावै कहू नाहि ।
बोध रतन धन पाइकै तौ पुनि धावत नाहि ॥ ३ ॥
मन तुरंग मुख जो रहै शश लगाम चबात ।
चाबुक..........ताहि देखि डरि जात ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:
सदन कंदरा गिरिन्ह के अजित सो रक्षक जान ।
सब संकल्प विकल्प तजि करु मम चरनन ध्यान ॥ ३२ ॥

इति श्री बोध रतनाकर जीव ईश्वर सवादे वैराग्य वरननो नाम प्रथमो विश्राम ॥ १ ॥

अंत—

बोध भयो जब जीव को पायौ परम प्रकास ।
राम सचितानंद को जान्यो "भगवत दास" ॥ ३६ ॥

बोध रतन संचित करैं पढ़ैं सुनैं मन लाइ ।
लहें भक्ति धन साधु मम सब दरिद्र मिटि जाइ ॥ ३७ ॥
एहि जग सूपे रूप को मन विहग मति भूल ।
राम नाम जिमि कल्पतरु भजौ मिटै सब सूल ॥ ३८ ॥
..............कामधुक राम नाम के दास ।
परम बोध यह जानि कैसे वहु "भगवत दास" ॥ ३९ ॥
बोध रतन निरमोल है मूरष को न देषाव ।
ज्यों वनवासी नरन मे नहि.............. ॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेशक वर्णन ।
विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ बीच और अंत से खंडित है ।

संख्या २५०. रमलसार, रचयिता—भगवान दास, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—६३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, मैनेजर अमेठी राज्य, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः मंत्र ॐ पार्वती वो सिद्धिदये नमः अथ रमल ॥

॥ दोहा ॥

गननायक अरु सरस्वती संभु उमा पद नेह ।
सुमिरि वदि अछर धरौं विमल बुद्धि मुहि देह ॥
सिया राम पद राषि हिय सर्व देव सिर नाइ ॥
रमल सार भाषत प्रगट सब मिलि होतु सहाइ ॥
चारि तीनि द्वै एक पुनि यासे अंक निहारि ॥
वार तीनि करि डारिए देखहु प्रस्न विचारि ॥
सात वार पढि मंत्र कंह रमल अगोचर प्रस्न ॥
अक्षत पुगीफल धरहु अस्नान ध्यान करि विस्न ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

वेदशास्त्र कलि गुपत जब तव वाचै यह कोइ ॥
ताहो कह जग जानीवी है वह पंडित सोइ ॥
आगे जे कवि ह्वै गये भाषा के जग माहि ॥
तिनसो कै हैं देवता हम सी कवि ठहराहि ॥
विश्वाकरन अरु संसकृत भाषित वांचत जोइ ॥
विधि हरिहर अवतार कहि अस हू बै कलि सोइ ॥
"भगवानदास" सिव सक्ति को वरनी रमल विचार ॥
सगनीती जे जगत मंह तिन तै हैं सुभसार ॥

इति श्री रमलसार संपूर्ण मिति फागुन सुदी १० सनीचरु सं० १८९९ सन् १२५० ॥

विषय—रमल विषय वर्णन ।

संख्या २५१. गीता माहात्म्य, रचयिता—भगवानदास "निरजनी" कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—६५/८ × ४५/८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ गीता माहात्म पद्मपुराणे वेदव्यास उक्ति लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

गुरु गोविंद परणाम करि शारद पुनि गन ईश ।
चरन कमल रज संत के धारों अपनें सीस ॥ १ ॥
गीता की महिमा कहौं कही प्रथम जो व्यास ।
निकसी पद्मपुरान तें सबको पूरन आस ॥ २ ॥
गीता बाचें जो सुनें नेननि देखें जोइ ।
नयननि को दरसन करें भुक्ति मुक्ति फल होइ ॥ ३ ॥
सो इतिहास सुनें गुनें कहि पुरातम साषि ।
लक्ष्मी सों वैकुंठ में नारायन जू भाषि ॥ ४ ॥
उत्तम गिरि कैलास निति तहा रुद्र को धाम ।
प्रष्ण करी तब सैलजा सबको पूरन काम ॥ ५ ॥

॥ पार्वत्युवाच ॥

मैं प्रभु तुमकों पूछौं सोई । कातें तुम पवित्र तन होई ।
सकल जीव तुमही कों ध्यावें । तुमरी दई मुक्ति सब पावें ॥
बैल चढे ओढे मृगछाला । अंग भस्म रुंडन की माला ॥
विषधर सर्प कंठ मह सोहैं । विष धतूर को भक्षन जो हैं ॥

:o: :o: :o:

सकल सार को सार है सकल ज्ञान को ज्ञान ।
सकल धर्म सुभ कर्म हैं कह्यो भाषि भगवान ॥ २ ॥

इति श्री पद्मपुराणे सतीईश्वर संवादे उत्तरकाडे गीता महात्म्ये भगवानदास निरजनी जथामति भाषा कृते प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

अंत—

हाथी मरेउ दर्व्य पुनि गएऊ । और जगत में हासी भएऊ ॥
सब मिलि कहहि राय गज हारो । राजा सोच आपु में धारो ॥ ६ ॥
योही सोच बहुत दिन करेऊ । सोचहि माहि सो राजा मरेऊ ॥
ताहि बाधि जमपुर लै गयऊ । धर्मराज तब पूछत भएऊ ॥ ७ ॥
धर्मराय याकों गज करेऊ । गज के मोह माह यह मरेऊ ॥

—अपूर्ण

विषय—गीता का माहात्म्य वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । सख्या ३८ के पश्चात् के पत्ते उपलब्ध नहीं । रचना-काल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं ।

सख्या २५२क. रुक्मिणी मगल, रचयिता—भगवान हितुराम राय, कागज—देशी पत्र—२१, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्णाय नमः

राग सूहा विलावल

जै जै जै गिरधरन नाथ करुनामई ।
सरणागत वत्सल मनहर कीरति मई ॥ १ ॥
गोकुल मधुपुरी द्वारका विविध लीला करी ॥
भक्तन पूरण काम विज रुकिमिनि वरी ॥ २ ॥
सो सुंदर हरि को विवाह उत्सव अति ॥
निज जन सदा लडाव कृष्ण रुकमनी रति ॥ ३ ॥
विदर्भ देस कुंडन पुर परम सुहावना ॥
नरपति भीषमक नाम धर्म धज पावना ॥ ४ ॥
रुकम आदि है पांच पुत ताके अति वली ॥
कन्या एक रुकमनी सव भांतिन भली ॥ ५ ॥
सुंदरता की रासि सील गुन आगरी ॥
मानो सव मंगल हरि हित लेय छवि धरी ॥ ६ ॥
नव जोवनी हरिगुन सुन होयें अति रति वढ़ी ॥
हरि नाग रहित भरत कोक पिंगल पढ़ी ॥ ७ ॥

मध्य—

॥ छंद ॥

जै जै कमल लोचन कलानिधि कामिनी रति वर्धनी ॥
तुम सरण सदा वार वार कर परनाम दासी रुकमनी ॥ १ ॥
कल्याण गुन प्रभु के श्रवन सुनि रची रूप विचारि कै ॥
तुम दस कारण किंकरी भोइ लाज काज विच्यारि कै ॥ २ ॥ ११ ॥
सोई कन्या भली जो तुम को अनुसरे ॥
सो क्यो है भली नाहं जो तुमको ना वरे ॥ १ ॥
मोहि अपनावत जिन लजौ ॥
दीन उधारण सरणागत कौं जिन तजौ ॥ २ ॥
महापुरष वली सिद्ध भाग तेरो तोहि लवै ॥
ग्रहै ससि पाल सेयाल लै जाय क्यो संभवै ॥ ३ ॥

अंत—

महुताप कन्या रुकमनी की सो व्रत धरी ॥
कृष्ण कथा श्रवण में पैठके हीयो हरचौ ॥ ७ ॥
कृष्ण गुण सुन लुभाय यह व्रत धरी ॥
रीझ आपनपौ वार स्यामघन वरवरी ॥ ८ ॥

॥ छंद ॥

वर वरौ हरि वडभागनी पति प्रीत मंडन पाइयौ ॥
तिनहू कौं यह पद निज भजे यह भा उधर हरि ध्याइयौ ॥ १ ॥
ते धन्य सव विधि रूप कमनी मंगल तन मैं गावहीं ॥
श्री राम राय गिरधरन भज भगवान प्रभू मन भावहीं ॥ २ ॥
इति श्री रुकमनी मंगल संपूर्ण लिख्यते शुभमस्तु ॥

विषय—कृष्ण रुकिमणी विवाह का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ अन्य ग्रंथो—रामदास वरसानिया कृत राधाविलास और अली रगीली कृत, रास पचाध्यायी के साथ एक हस्तलेख मे है ।

संख्या २५२ ख. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—भगवान हित, रामराय, पत्र—२, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, कांकरोली, द्वि० बं० १३२, पु० सं० ११३, है ।

आदि—प्रह्लाद चरित्र । राग गौरी ।

हरि इ जप । प्रहलाद । हरि के भजन बिन पढ़िबो नाह ॥ १ ॥
पढ़ि नित लाल प्रहलाद जु पढ़े । कृष्ण गोविंद राम नाम रटे ॥ २ ॥
पाढे मुनि हृदि खावे वासु । शक न माने हरि को दासु ॥ ३ ॥
पूछे सखा अहो निज मित्र । कहाँ पायो तुम कृष्ण चरित्र ॥ ४ ॥
नारद मुनि मोसों कह्यो हे भेव । कृष्ण भजन हरि सुमरन नेव ॥ ५ ॥

मध्य—पृ० १३

क्यों रे निडर शंक नहीं मारे । हरि को नाउ हित सो उचारे ॥ २८ ॥
राजरीति को पढनो बिसारयो । मम रिपु श्रीपति तें उर धारयो ॥ २९ ॥
अहो बाबा मे हरि न बिसारो । इहीं तेरो काज राम पर वारो ॥ ३० ॥
सुनि हरनाकुस रीस भरयो । तिमे जिन प्रहलाद न डरयो ॥ ३१ ॥

अंत— ० ० ० —

प्रेम सहित हरि कंठ लगाए । चुंवत चांटत अति सुख पाए ॥ ५६ ॥
कृष्ण भजो भैया इह जानि । हरि पीतम सो नाहिन आनि ॥ ५७ ॥
भक्त वछल गुनरूप निधाना । राम राइ हित कहे भगवाना ॥ ५८ ॥

प्रहलाद चरित्र संपूर्णम्

विषय—कवि ने प्रस्तुत चरित्र में प्रह्लाद की भक्ति और भगवत्कृपा का वर्णन किया है ।

संख्या २५३. वृहत्संहिता भाषार्थ, रचयिता—भट्टोत्पल (?) कान्यकुब्ज देशी, पत्र—२६३, आकार—९$\frac{6}{10}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०४१, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८७८, प्राप्तिस्थान—पं० रामप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—अदकी, पोस्ट—बिसुंडी, जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि—

......सो डराय के यह कहत भये कि एक ओर ते मार्ग देहो यह सुनि के मुनि क्रोध करत भये अरु यह कहत भये हमारो आज्ञा अब जे कबहूं न रहिहो ताते विधि डराइ के पूर्वरूप होत भये अरु यह कहत भये जो लौं तुम ऐहौ तौलौं न पढिहैं याते नाहीं आवत ॥

केतु की राहु की नाही उत्पति जानिये तथा च भगवान् गर्गः ये जे है थोरे प्रयोजन के तिनको छाडिके और जे है गणित गोल ते वाहिर असार भूत तिनहूं को छाडि केसें कौन जैसे भुवन के विभाग से महा-प्रमान दर्पन के स्वरूप पृथ्वी को कहत है और सुमेरहू को तत्प्रमान अरु गोल स्वरूप है तापर ध्रुव है और गृह नक्षत्र सुमेर ही के अवलंब है सो परासर मुनि कह्यो है जैसें कोटि सत मठ हजार जोजन भूमि है जाको भूमंडल कहियत है ताके आगे बडो अंधकार है भूमध्य सुवर्ण को सुमेरु है सो कैसो है ८४ चौरासी हजार योजन ऊपर चौकोर है ताही को स्वर्ग कहत है सुमेर के अर्द्धभाग तें सूर्य चंद्रमा पर्यटन करत है अरु ताही को ज्योति चक्र पर्यटन करत हैं ग्रह नक्षत्र तारका सहित सूर्य चंद्र इनको काल विभाग कौन हो ।

अंत—ये इतनी वस्तु चारि सहस्र श्लोकन करि कहो याही मे सत्तईस प्रयोजन है बहुत आश्चर्यकारी जातक करण शरद रितु के द्वितीया के चंद्र सम स्वेत डाढ सों बुद्धि कों धरै अरु इव

के फणिमंडल पर रत्नावली किरणन मे पद धरि कै कुमत तें बहुत काल तें ज्योतिष रूपी भूमि को निकासत भमें सो वराहमिहिर के मिस ह्वै विष्णु रक्षा करें ॥

इति श्री भट्टोत्पल विरचितायां संहिता वृत्तौ श्री महाराज कुमार अचल सिंहाज्ञया भाषार्थं कथनं नाम अनुक्रमणिकाध्यायः ॥ १०६ ॥ सपूर्णम् शुभमस्तु संवत् १८४८ वर्षा कृतौ ॥ श्रावणे मासि कृष्णे पक्षे द्वितीयायां रवौ विष्णुवंधु पुर्य्यां लिखित सीताराम सनाढयेन श्रीरस्तु ॥ गोविंदाय रामाय कृष्णाय वामना नृसिंहाय ॥

विषय—वराहमिहिराचार्य कृत वृहत्सहिता का भाषा गद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है । कुल ३२८ पत्रो मे से २६३ पत्रे उपलब्ध हैं । रचना-काल का कोई पता नही । सभवत. आरभ मे दिया रहा होगा । जो अप्राप्त है । लिपिकाल सवत् १८४८ वि० है ।

संख्या २५४. भड्डुली ज्योतिष (टीका), रचयिता—भड्डुली (?), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—$8\frac{3}{16} \times 6\frac{7}{16}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० राघवराम द्विवेदी, ग्राम—घूरेडीह, पोस्ट—सराय ममरेज, जिला—इलाहाबाद ।

आदि— :o: :o: :o:

......मागीसर रै महीने विजली चमक गाजे वादला होवे तो गर्भ रहा जाए जे आवतो जमानो सषरो होसी हे भड्डुली तु चिंता मति कर मति कर मतो तुन साच कहु छु ॥२॥

॥ दोहा ॥

, मगसीर फल पौस मास विजली चीमक ।
गाज वायरो बाज भडली जलहर पंथ्यो गभ ॥ ३ ॥

पोस के महीने विजली चीमक पुरव की पवन वाज : वादला होवती वार जाणज हे भडली गर्भ रहो जाए जे ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

अंत—वीस्पतिवारी संक्राति होइ तो ते मंदाकनी नाम कही जाइ व्यापारी लाभ घणा पामै प्रजानै वंल घणा हुवई हलदी सोनो पीलो वस्त्र सव सौहगी होइ लोक सुषी पावै ॥ ५ ॥ इति गुरूफलं ॥ शुक्रवरी संक्रांति ए नाम मोश्रा का कहीजे तीणनै शुभ मंगलीक घणा हाथी घोडा ऊट भैसी गाय वो पद नीट द्वी अन्न सोहागा घीर तेल सर्व सौहगा ॥

॥ इति शुक्रवार फलं ॥

शनीसर वारी संक्राति होइ तो तेहनो नाम राक्षसी कही जइ लीस मास....मुह गा सु पुनी............

—अपूर्ण

विषय—खेती, वर्षा, वार, नक्षत्र और सक्राति आदि के सवध मे शुभाशुभ फल कथन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है । केवल पाँच पत्ते, सख्या २, ४, ६ और ५४ तथा एक विना सख्या के उपलब्ध है ।

संख्या २५५. नलोपाख्यान, रचयिता—भरसी मिश्र रामनाथ पडित (मेहा ग्राम, आजमगढ), कागज—देशी, पत्र—८६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६५५, खडित रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० देवराज पाडेय, ग्राम—नोनरा, पोस्ट—रामपुर, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ १ चौपाई ।
बंदौ गनपति चरन पुनीता । विघन हरन तिहु पुर मह गीता ।
जाकह.....................रता पदवी कह पाएउ । २
सहस किरिनि ह्वं रवि वहुतएउ । गनपति कृपा परम जव पएउ । ३
:o: :o: :o.
......ह नल कथहि वपानं । वेद व्यास महा प्रभु जानं । ६
नौषध कवि श्री हर्ष वनाए । विघामानन्ह के..... ।
ताहि विलोकि कियो हम भाषा । भारथ कथहि कछुक तह राषा । ८
"उपाख्यान नल" को यह कीन्हा । नाम ग्रंथ को कोइ धरि दोन्हा । ६
:o: :o: :o:
आजमगढ के दछिन अहई । मेहा ग्राम विदित जग कहई । ११
ताके दखिन महदेवपारा । तापर राम दयाल कृपाला । १२
:o: :o. :o.
राम नाथ पडित तह रहई । राम कृपा ते वह सुख लहई । २४ ।
:o: :o: :o:
सोम वंस एक राजा भएउ । वीरसेनि नामा जगतएउ ।
जस सागर नागर सुख धामा । वीरसेनि राजा शुभ नामा । २७

॥ दोहा ॥

धर्मसील नल सम नृपति भयो न ह्वंहै जानु ।
दाता सुजस प्रताप जुत कीरति तें अनुमानु ।
:o: :o: :o:
नल को तेज दिवाकर तएउ । जस राका ससि निहिचं भएउ ।
:o: :o: :o:

अंत—
चित चकमक छतिआ पथर काम अ......पू गात ।
नंन नीर वरषत नहीं तौ तन जरि वरि जात । १४
होत रहै दिन दिन रहै विसुच.......हरि नेह ।
यह अचरज जल नंन को सींचे सूंकति देह । १५
मन रंजक छाती तुपका वरह पलीती लाल ।
आपु आवाज न निकसती जाती फूटि जमाल । १६
देखो जागि तवं सि.....ति द्वापर मह नल नाम ।

॥ दोहा ॥

सुछम कथा हिए अभिलाषा । कहिवे कह सोई हम रा... ।
ग्रंथ माह विस्तार न कीन्हा । स्वल्प कथा नल को लिखि दीन्हा । २

॥ दोहा ॥

भयो न ह्वंहै कोउ नृपति नल समान जग माह ।
दानी ज्ञानी जस वली नेत्रवंत नरनाह ॥ १ ॥

इति श्री भरसी मिश्र रामनाथ पडित विरचिते नलो पाख्याने दशमोऽध्यायः समाप्तोय ग्रंथः ॥

विषय—श्री हर्षकृत नैपध का हिंदी मे पद्यानुवाद किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है ॥ समस्त छियासी पत्रे उपलब्ध हैं। बीच बीच से कई पत्रे लुप्त हो गए हैं। कुछ पत्रे आपस में इस प्रकार सट गए हैं कि उन्हें छुड़ाना कठिन हो गया है। लिखावट भी अस्पष्ट है।

संख्या २५६क. रामजी के बारहमासा, रचयिता—भवानी (अयोध्या), कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—६, आकार—७३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९४१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीमती चौरासा देवी, धर्मपत्नी, स्व० रामशंकर पांडे, ग्राम—सुरहुती (कांडीहार), पोस्ट—अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गनेस जी सहाए ॥ श्री महादेव जी सहाए ॥ श्री सीताराम जी सहाए ॥ श्री काली जी सहाए ॥ श्री दुर्गा जी सहाए ॥ श्री पोथी राम जी के बारहमासा ॥

॥ चइत ॥

चइत अजोध्या जनमे राम। चनन सो लीपवाएउ धाम ॥
गज मोतीअन के चोका पुराए। सोने के कलसा दियो भरवाए ॥
बरेघट मंदीर।
पठए तुम नार बैरन वन बालक मेरो ॥

॥ वैसाप ॥

वैसाप मास रीतु ग्रीषम लाग। पवन चले जैसे बजर के आग ॥
जैसे जल बिनु तलफत मीन। सो गती हमरी केकई कीन ॥
पठए तुम नार बैरन वन बालक मेरो ॥

॥ जेठ ॥

जेठ मास लोह लागत अंग। राम लखन औ सीता संग ॥
रामचंद्र पद कमल समान। तलफत धरती औ असमान ॥
चलो कहो कैसे
पठए तुम नार बैरन वन बालक मेरो ॥

अंत—॥ फागुन ॥

फागुन मे रचल रंग। चोवा चनन लाएउ अंग ॥
रतन सिंघासन बैठे राम। ठाढ़े भरथ जी करे परनाम ॥
अनंद बधाए।
पठए तुम नार बैरन वन बालक मेरो ॥

॥ भोग ॥

जो नर गावही बारह मास। तेही कर होए बैकुंठ हीं वास ॥
गावै भवानी अवधपुर धाम। वन से आए लछुमन राम ॥
मील कौसीला सों
पठए तुम नार बैरन वन बालक मेरो ॥

इति श्री पोथी बारहमासा संपुरन ॥

जो देषा सो लीपा मम दोष न दीअते संमत् १९४१ मीती पुस वदी एको लीपा है दसषत हनुमान पांडे।

विषय—राम के वन चले जाने पर कौशिल्या का विलाप वर्णन।

सख्या २५६ख. कौशिल्या की बारहमासी, रचयिता—भवानी (?), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४१/७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १९३३ वि० सन् १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—मुशी मदनकिशोर लाल, ददरीघाट, पोस्ट–गाजीपुर, जिला–गाजीपुर।

आदि—श्री गनेस जी सहाए॥ श्री सुरसती जी सहाए॥
श्री कौसिल्या की बारहमासी।
पठए तुम नार बैरन वन बालक मेरो॥

:o: :o: :o:

— १ —

चैइत अजोध्या जनमे राम। चदन से छिरकावत धाम।
की गजमोतीअन के चौक पुराए। सोने के कलश दीअना धराए।
पठए तुम नार बैरन वन बालक मेरो॥

अत—
फागुन मास सरसाने अग। रंगा चोवा चदन लावत अग।
की लीही भरथ जी घोरे अबीर।
केही पर छीरकौं विना रघुवीर।
पठए तुम नार बैरन वन बालक मेरो॥

:o: :o: :o:

जो यह गावही बारहमाला। सो पावही वैकुठ नीवासा।
की कहत भवानी अवधपुर धाम।
वन से आए लछमन राम।
मीलती कौसिल्या
पठए तुम बार बैरन वन बालक मेरो॥

कौसील्या की बारहमासी सपूरन लीखा सुभ महीना जुलाई तारीख २३ सन १८७६ ईसवी।

विषय—राम के वियोग मे कौशिल्या की अवस्था का बारामासा वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है। कुल आठ पत्रे है। रचयिता तथा रचनाकाल अज्ञात है। एक स्थान पर "कहत भवानी" आया है। इसके आधार पर रचयिता भवानी प्रतीत होते है। अन्य कोई परिचय नही मिलता। लिपिकाल सन् १८७६ ई० (सवत् १९३३ वि०) है। रचयिता ने भगवान रामचद्र जी की अनुपस्थिति मे कौशिल्या की अवस्था का वर्णन सरल भाषा मे बडी उत्तमता से किया है। यह दिखलाया कि वर्ष के बारह महीनों किस प्रकार उनकी वियोगाग्नि (दुख) मे परिवर्तन हुआ था।

ग्रथ की लिपि कैथी है। काव्य की दृष्टि से ग्रथ उत्तम है।

संख्या २५७. सत कविकुल दीपिका, रचयिता—भारथ साहि या भारथ सिंह (स्थान—देउरा), कागज—देशी, पत्र—७४, आकार—११३/४ × ५१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१० परिमाण (अनुष्टुप्)—२७१४. पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९७ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० लाल सत्यपंरा सिंह, ग्राम–सुदरपुर, पोस्ट–बारा जिला–इलाहाबाद।

आदि..............अस्तोत्र लिषते ॥

॥ त्रोटक छंद ॥

ससि सीस गज मुख कर्न जुतं । गिरिजाज गणेस स.......॥
उ................वित। उर घ्यान धृत कृततु कवित ॥
सुभ कंचन कुकुम काए वरं । इभ मुक्त मई सुभ माल गरं ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

श्री जगदंम कदम वल मोहि जासु विस्वास ।
एह सत कवि कुल दीपिका तेहि वुधि कीन प्रकास ॥
वाधव गढ़ सव गढ़नि वर विरच्यौ जेहि सौमित्तु ।
दुर्गम दुसह दुरुह अति उन्नत अमित पवित्तु ॥
दीर्घ कोस लौ उच अति कोस चकरई चारि ।
केदली केतकि आदि वन चहुँदिसि पूरित वारि ॥ ४ ॥
घेरि सिषर चहुँ फेरि जहँ सिध्यन केर निवास ।
होम धूम प्रगटत महा निसि वासर चहु पास ॥
अस गउ के वर भप भै सालिवाँह तेहि नाव ।
ताहि सहोदर पुन्नि मे प्रीथीचद भै राव ॥
वाड पदंवा पाइ तिन कीन अमलिआ धाम ।
जमुना तट पावन परम सुष समूह वसु जाम ॥ ७ ॥
रवितनुजा पुनि हरिप्रिया जमअनुजा कहि सोइ ।
गुनावाद को कहि सकै सेस सारदा सोइ ॥ ८ ॥
प्रिथी चंद के प्रथम सुत कर्नराए जेहि नाम ।
छोड़ि अमिलिआ सो वसे देउरा गुनमै धाम ॥ ९ ॥
ताके सुत वर पुन्नि मैं नाम मेदिनी सिंघ ।
तेहि सन्मुष खलहु हृदै भुलिहु रहै न रिंघ ॥ १०॥
ताके प्रथम कुमार भे मानसिंघ जेहि नाम ।
ताके सुत वर पुन्निमै राइसिंघ जसुधाम ॥ ११ ॥
तासु तनै वर जुध्य कृत जसी राव कल्यान ।
फते सिंघ ता सुत भए सुदर सीलनिधान ॥ १२ ॥
ता सुत भे पुनि राइ जिव महासुभट ,रनधीर ।
दानि पानि गुन मानि हित अति भरि ग्यान गंभीर ॥ १३ ॥
सत्रुसाल ता तनुज भो जाचक करत निहाल ।
गाऊपाल व्रहमन सहित सत्रुन के वर काल ॥ १४ ॥
प्रिथीपति ता सुत भए महा सुभट रनधीर ।
तेज देवाकर रूपससि सारग ज्ञान गंभीर ॥ १५ ॥
ताके प्रथम कुमार भो नाम विक्रमाजीत ।
जनपालक घालक द्रुमन व्राभन कुल के मीत ॥ १६ ॥
प्रतापदित्य ता तनुज भो जग्रराज सुत ताहि ।
छत्रपती ता सुत भए दाता सील निवाहि ॥ १७ ॥
हरी,सिघ विक्रम अनुज ता सुत भारथ साहि ।
एह सत कवि कुल दीपिका कीन्हौं ग्रंथ निवाहि ॥ १८ ॥

छंद चौपाई जाति सव सवके वर्न प्रमान ।
दूपन भूपन नाएका समुझेहु चतुर सुजान ॥ १९ ॥
अलंकार रस हावजुत भाव अनेक कवित्त ।
सोरठ छप्पै दोहरा सो सव समुझेहु चित्त ॥ २० ॥
अरुन असित सित पीत पुनि मिश्रित नील सु धूम ।
प्रथमहि सतकवितो कहा सो सव भाषेउ भूम ॥ २१ ॥

॥ अथ कवित्त दूपन वर्नन ॥

दुज नेगी मूरप सपा दोपित कवित समाज ।
भनि भारथ एह परिहर्यो कहत सकल कविराज ॥ २२ ॥
पंगु वधिर आंधर मृतक नग्रन कीजे मित्त ।
भनि भारथ एह भाति सव दूपन कहत कवित्त ॥ २३ ॥

मध्य---अथ भाव अभाव मुग्धा अभिसारिका के उदाहर्न ॥

॥ घनाक्षरी छद ॥

नवल सलोनी लोल लोचन विसाल जाके उरज माल मुप सोभित मयक है ।
आई वृजवाल वाल वोल निसु शैन कार्ज चलहु गोपाल लाल बैठे परजक हैं ।
प्रथम जुवति जानि प्रीतम सनेह पुरे समुझि कलेस वड पाछे किअ सक हैं ।
"भारथ" भनत भामयी रथं निधान रंगो परिहि निदान कोन्हें दीन्हों विधि प्रक हैं ॥६४॥

॥ दोहा ॥

गवन कीन निज पति भवन अली ढकेलति ताहि ।
मांनहु मत गयंद वर लिहे महावत जाहि ॥२८२॥

॥ अथ विरोधाभाव लछन ॥

वरनत होहि विरोध जहं उहे विरोधाभास ।
प्रथमहि ग्रथनि वूझि मत कविजन कीन प्रकास ॥२८३॥

अथ विरोधाभाव अलकार मध्या अभिसारिका के उदाहर्न ॥

॥ सवैआ ॥

केलि के भौन तहा तकिकै पति सांझहि ते हठि सेज बिछायो ।
आइ गई ललना पलना ढिग धं चोलना तह लाल वतायो ।
प्रेम अनद समूह वढयो हसि लाजनते तिन दीठि छिपायो ।
माल सवारति लालन हो मुप वाल रसाल महा छवि छायो ॥ ६५ ॥

॥ अथ विसेपा अलंकार लछन ॥

॥ दोहा ॥

जेहि कारज की साधना विरह विकलता होइ ।
भनि भारथ भै सिद्धि सो कहव विसेपा सोइ ॥ २८४ ॥

अंत---

सारथ मधु वुध्य रस जानी । कुसुम सार्क मकरंद वपानी ॥
द्वीगो ह्रिपिक पुनि इंद्री होई । एहि प्रकार भाष्यौ कवि सोई ॥
जुगल जमल जुग दुद वपानी । उभै मिथुन विवि द्वौ विअ जानी ॥
माल्य कहिस श्र्क कवि भाना । दाम गुनवतो नाम वपाना ॥
हे कवि जन एह मोर निहोरे । वाचेहु टूटव वरन मव जोरे ॥
मोर विनै एह मानव भाई । विसरे वरन सुदेउ बनाई ॥

॥ दोहा ॥

लवोदर श्री सारदा तुअ पद करत प्रनाम ।
त्राहि त्राहि भापत तुम्हें करहु हिदै मम धाम ॥ ६७१ ॥

इति श्री मत विविधि विधि सत कविकुल दीपिकाया श्री भारथ सिंह विरचिताया ग्रंथ समाप्त संमपुने सुभस्तु । कवित दुपन भेद गनागन देवता फलाफल भूठ साँच वर्न टेढ भृको अवर्त सौतिन्ह कठिन सुप दुष चंचल वर्न रितुराज श्री राजारानी राजकुमार प्रोहित सेनापति आयेटक मंडन भेदजुक्त जुक्त भरि अतिसयो उपमा अलंकार किलकिंत्रित हाव नसिका भृगुटी वेनी केस नाक मुक्ता लोचन मुष पद नषसिष सर्व ग्रंग भूषन वसन सर्व सिंगार राग अनुराग अर्थ विधान नाम निधान भरि वर्ननो नाम नौमो अध्याई ९ जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष ना ॥

॥ दोहा ॥

जो प्रति देषा सो लिपा वौर वुध्य नहि मोहि ।
लंवोदर श्री सारदा विनै करत मैं तोहि ॥ १ ॥
ग्रंथ समाप्त कीन है कृष्ण पक्ष कह सोइ ।
वुधजन सो एह विनै करि दोप न दीजै कोइ ॥ २ ॥
समत एक आठ सए नव्वे सात कहाइ ।
भौमवार वौ त्रयोदसि ग्रंक महीना आइ ॥ ३ ॥

राम....राम....राम....राम....राम....राम....

विषय—पिंगल, भूठ, सत्य, टेढा, त्रिकोण, ग्रावर्त, सौत, कठिन, सुख, दुख, चचल, वर्ण, ऋतुराज, राजा, रानी, कुमार, पुरोहित, सेनापति, ग्राखेट, जुक्ताजुक्त, ग्रतिशयोक्ति, उपमा ग्रलकार, किलकिंचित हाव, नखशिख, शृगार, राग ग्रनुराग ग्रौर ग्रर्थ विधान ग्रादि विषयो का वर्णन किया गया है ।

ग्रथ मे निम्नलिखित नौ ग्रध्याय हैं —

१ ग्रध्याय—कवित्त दोप वर्णन—पत्र १ से ४ तक
२ ग्रध्याय—देवता, फलाफल, भूठ, साच, टेट त्रिकोण ग्रादि वर्णन—पत्र ४ से ११ तक
३ ग्रध्याय—ऋतुराज, राजा, रानी वर्णन—पत्र ११ से १९ तक
४. ग्रध्याय—राजकुमार, पुरोहित, सेनापति ग्रौर ग्राखेट वर्णन—पत्र १९ से २७ तक
५ ग्रध्याय—मडन, भेदकरि युक्तायुक्त वर्णन—पत्र २७ से ३५ तक
६ ग्रध्याय—ग्रतिशयोक्ति, उपमा, किलकिच हाव वर्णन—पत्र ३५ से ४३ तक
७ ग्रध्याय—नखशिख वर्णन—पत्र ४३ से ५२ तक
८. ग्रध्याय—मुखपद, नखशिख, सर्वग्रग, सर्वभूपण वसन, सर्व शृगार, ग्रनुराग ग्रौर ग्रर्थ विधान वर्णन—पत्र ५३ से ६४३ तक
९ ग्रध्याय—वस्तुग्रो के नाम वर्णन—पत्र ६३ से ७३ तक ॥

संख्या २५८. डगवे पुरान, रचयिता—भीम, कागज—देशी, पत्र—३१, ग्राकार—८१⁄६ × ६१⁄२ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—६९७, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—स० १५५० वि०, लिपिकाल—स० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—प० राम ग्रनद तिवारी, ग्राम—दरवेशपुर, पोस्ट—भरवारी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—

श्री गनेस नमह भवनी मत सहोइ । गुर गोविंद ए नमही ॥
प्रथमी वंदौ गुर कै पव । जेती उपदेस जगती की छुट्टी ॥

नवन नरायन गनपती देवा । सद सुमन कं वदों पाआ ॥
वीगुन हरन सीव सकर सोहे । हरो लट चद्र तोनुपर सोहे ॥

:o: :o. :o:

सुमीरं स्वामी गनपती कुछ सुमती गती पऊ ।
भर्य कथा उगर्व पचा कुरमो रउ ॥

सारद और गनेस वर दीन्ह । तो मं कथ अरनेन कीन्ह ।
तेही पछे सवरं गन नहा । करं सहस जग पर गहा ॥
कोस्न कस कीन्हो हररा । केसे पडवन लोन्ह उवरा ॥
कवने रूप उरभसो कवइ । कंसे उगी हो पारा लगइ ॥
सो सव 'भोमी" कहा समुझाइ । यादे धर्म पाप छं जाई ॥
केसे भउगो केल्हो लगी । सत्य यचन कहो सुभगो ॥
जेहेरे कहे अगेग कली रोपुन च परं परो ।
कोस्न चत्रो कछु गवं भरथ कथ वोचरो ॥

सवत् पद्रह सं पचास जव भएउ । द्रुमुप नम सवत चला गयेउ ॥
सावन सुकुला सतोमी आइ । उगव कथा "भोम" सुनाइ ॥
कवन नग्र कंस्नो ठाऊ । कान देस कान सो गाऊ ॥
जहय भए कवो सर वोचरा । तह वसत है कोन नुअर ॥
पुहुमो धर्म प्रन एक देसा । वस लोग नीमल रेह ॥

:o: :o: :o.

तव वसही भोपती मन असे । जकरी कोत्रो चहुपउ मे वसं ॥
अती उरहा भं अनसन । नरपता अहान कोउ सन ॥
सुवत नीह्न देन वहुत सो दीन्ह । कसी गव करवट कोन्ह ॥
तकर पुरुप कहे वीचार । जकर मडन सव ससार ॥
तेही सगत मनीक देरनी । प्रतछक द्रुग्र अदोन पनी ॥
दोउ पछसो नग्र मिलो जेहो के गारी जरधग ।
पुर्वाल फल सो पावं प्रतछय देवी गग ॥

नसं कवी दोसन को देही । जो फर्वा अपन नाउ न लेइ ॥
कवीत तहवां भं उतपतो । कंसन नग्र कोन सो जतो ॥
नग्र अमर सच वंरे कहा । वसुक इद्र देय तोस लहा ॥
जती के कएथ करन कुवेरु । मही मतहो कलो नेम अचरु ॥
तासुत नौरतन वर वीरू । अतो प्रचड नीक सुसरोरू ॥
मत मतग वोरु मन दीन्ह । तव तेनह सव गवरह लीन्ह ॥
तेही कुल भीम वरीआरा । वंरी वुधी वहु वंसरा ॥
कहे चहे कछु कथ सुभउ । भरथ कथ उगवे गऊ ॥
चहु उप फीरो अवे कम्हइ । सोइ प्रोती कठ मन लइ ॥

मंज अभं व्रतो पालहु जनो कोउ होइ अरोच ।
वोछ सवरेहु....धो जन मुरप के नंन सोच ॥

:o: :o: :o:

अंत—

कहे भीम सुनु स्वामो प्रसन दोलदयाल ।
प्रत कल नहो वचं कोपवत जन जाल ॥

इति श्री महभरथ डंगी.....सरन संपुरन सुभवस्तु सुभरस्तु ।। संवत १७७७ समं नम संवतसरे मीती जेठ वदी पचनिकि पोथी उत्तर नरएन षी....म....जो देष सो लीष मम दोस न दीजं.....।......

विषय—महाभारतातर्गत डगवे कथा का वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

१५ ५०

संवत पंद्रह सं पचसं जव भएउ । द्रुमुप नम संवत चली गयेउ ।।
सावन सुकुल सतीमी आइ । डगवे कथ 'भीम' सुनाइ ।।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है, पर अत्यत जीर्णावस्था मे । यह पत्राकार रूप मे लिखा गया है। रचनाकाल सवत् १५५० वि० है और लिपिकाल सवत् १७७७ वि० ।

सख्या २५६. हरि लीला सोलह कला, रचयिता—भीम, कागज—देशी, पत्र—१००, आकार—६१५/१६ × ५१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १५४१ वि०, लिपिकाल—सवत् १७२६ वि०, प्राप्तिस्थान—सग्रहालय हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्री सरत्यं नमः ।। श्री गुरूचर्नकमलेभ्यो नमः ।। भीम कला भागवत लषूं छे ।।

श्रीकृष्णाय नम.स्तुभ्यः भक्तान्त गृह कारणे ।
न्म पत्रय नीवारणे वासूंदेव नमोस्तुतेः ।। १ ।।

।। पूरव छाउ ।।

प्रथम श्लोक पाचे करी कीधो कृष्ण प्रणाम ।
वीघ्न रहीत वाणी वीषे गांसू हरी गुंण ग्राम ।। ६ ।।

।। चोपई ।।

मूष जीह्या वीष वेली समान्य । येणे नही गोव्यद गुंण गान ।।
कथा शुंणे नहीं को तरसूं कर्णः । वक्ष तणाते कोटर कर्ण ।। ६ ।।
तूंवी फल नर मस्तग तेह । वोलूं चर्णेन मे नही येह ।।
हरी कथा जे आदर नही । पुरुष स्थाणू ते कहिए सही ।।

मध्य—गीतराग वसत वेराठी

अनद एक अभी नवोरि वृंदावन मो झारय ।
वंश वजावे वठिलोरी तेणि छदि नाचे नार्य ।। ३५ ।।
वृंदावन गोपी नाचेरि तेणि एये राचे राम ।
राग मधूर स्वर अलवेरि गाए हरी वीलास ।।
सूंदरी श्रवन व पाव नारि रग मरच षेल्ये रास ।। ३६ ।।
पायन्य वृंद वीनती तणूंरि । माहे सामल वनः ।
"भीम" भणे अतर्य ले लागेसि घ्यन्य घ्यन ते गोपी जन ।। ३७ ।।

अंत—

भक्त वैराग्य वीवेक वीचार । सम्यक पाया पोहोता च्यारः ।।
सोल कला समरस ए कथा । सोहे स्वजन तणं मन यथा ।। ६ ।।
आसो मास तणी पूर्ण्यमा । जाण्ये करच ऊग्यो चंद्रमा ।।
सोल कला शशी हरनी कलंक । एह श्रीकृष्ण कथा सकलंक ।। ७ ।।

संवत १५ रुद्रनी वीस । अर्प एक उपर्य च्यालीस ॥
ऊतमे ऊत्तरायण वीशेष । रतू वसतः सक्रात्य मेष ॥ ८ ॥
पत्य मदसूदनः मास वैईसाष । तीथी सप्तमी अजूआलो पाष ॥
गडयोग पूष्य रूपी गुरुवार । व्यग्ण कर्ण शुभ लग्न अपार ॥ ६ ॥
सीध्य क्षेत्र माधव सरस्वती । रुद्रदेव श्री कर्दम ज्यती ॥
अलप गणेशनि ईश केदार । गोव्यद स्वामी भक्त साधार ॥ १० ॥
सानीध्य समस्त वईष्णव तणी । कथा अनोपम शोभा घणी ॥
हरी लील्ला सोल कला नाम । वीष्णु भक्त केरो वीश्राम ॥ १ ॥

:o: :o: .o

"भीम" भणे भागवत वीचार । अत रुमणी रमणी उपार ॥
ब्राह्मण तणे प्रसादे करी । की धी कथा सतोषी हरी ॥ १८ ॥

इती भागवत स्यानूक्रमणी रमणी कृता। ब्राह्मणना प्रसादेन । भीमेनानत प्रीलए ॥ १६ ॥

इती श्री हरी लील्ला सोल कला भीम वीरचिते सोल कला सकल सपूर्णमिति ॥२०॥ स्माप्तः शुभ भवतु । श्री कल्याणमस्तु ।

:o: :o: .o:

यादृश पूस्तक द्रष्टा तादृस लिषत मया । यदी शुद्धमशुधं वा मम दोषो न दीयते ॥३॥

सवत १७२६ वरषे अश्वन वद पचमी शूक्रे वाराणषी वास्तव्य । श्रारे लासा तीवत्र वाडी पूंजी आसूत त्रवाडी प्रेमानद लषीत । स्वय पठनार्थं ॥ श्रीरस्तु ॥ ६ ॥

विषय—भागवत का विषय सक्षेप मे वर्णन किया गया है। ग्रथ सोलह अध्यायो (कलाओ) मे है।

रचनाकाल

संवत १५ रुद्रनी वीस । वर्ष एक ऊपर्य चालीश ॥
ऊतमे ऊत्तरायण वीशेष । रतू वसतः सक्रात्य मेष ॥ ८ ॥
पत्य मदसूदन मास वैईसाष । तीथी सप्तमी अजूआलो पाष ॥
गड योग पूष्य रूपी गुरुवार । व्यग्णज कर्ण शुभ लग्न अपार ॥ ६ ॥

संख्या २६०. चक्रव्यूह, रचयिता—भीमसेन, कागज—आधुनिक मोटा सफेद, पत्र—१६, आकार—११½ × ८ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १६०८, प्राप्तिस्थान—ठा० राजाराम सिंह जी, ग्राम–जगतपुर, पोस्ट–मरदह, जिला–गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री पोथी चकरावुह लीष्यते ॥
विघन विनासन भयहरन होत वुधी परगास ।
नाम लेत गनेस को होत सवु को नास ॥

॥ चौपाई ॥

गननायक मोहि कीजे दाया । केस छोरि वदो तुम पाया ॥
लेउ देवी अव नाम तुमारा । असुर जिति महिषासुर मारा ॥
भीम सुमिरिकै कीचक मारा । कृष्ण सुमिरि कसासुर मारा ॥
राम सुमिरि रावन कहु मारी । महायुध कीन्हा वनवारी ॥

॥ दोहा ॥

दोइ कर चरन मनावो मोहि सुमति मति देहु ।
कंठ मोरे निवासहु जग जननी जस लेहु ॥

अत— ॥ चौपाई ॥

जो फल कीन्हे तीरथ केदारा । चक्रावुह सुने वेवहारा ॥
जेइ सुनै मन हुवै वीचारी । जनु दरसन भये वाल मुरारी ॥
परसौती सुनै जो मन चीत लाई । सुनतहि कन्या मोछ होय जाई ॥
गउ धन माह जो कहै बुझाइ । पसु के रोग तौ सवै नसाइ ॥
नर के रोग जो कैसहु होई । सुनतेहि कथा सुफल तेहि होइ ॥

॥ दोहा ॥

चक्रावुह कथा जो सुनै एक चीत लाय ।
भीमसेन कविता कहै वीष्णलोक सो जाय ॥

इति श्री पोथी चक्रावुह संपूर्ण जो देषा सो लीषा मम दोष न दियते ॥ पडित जन सो वीनती मोरी टूटा अछर लेव सव जोरी ॥ संवत १६०७ चैत सुदि २ सुकर वार के राम ॥

:o: :o: :o:

विषय—महाभारत के अतर्गत चक्रव्यूह की लडाई का वर्णन ।

संख्या २६१. माधव विलास या माधवानल काम कदला, रचयिता—भीष्म, कागज—देशी, पत्र—५७, आकार—६$\frac{1}{2}$ × ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०० वि० (सभवत), प्राप्तिस्थान—कुवर लक्ष्मणप्रताप सिंह, ग्राम–साहिपुर (नौलखा), पोस्ट–हडिया खास, जिला–इलाहावाद ।

आदि..............................

नंभ वसु विधु वरष गणिए सुप्रद कातिग मास ।
सुरगुर सुकुल त्रयोदसी कीन्हो ग्रंथ प्रकास ॥
अति पुनीत पुष्पावती पुरी रुचिर सव काल ।
पुन्य पु ज तह अवतरचो गोविंद चद भुवाल ॥

:o: :o: :o:

जुवती तिहि क्षितिपाल की कहै सुकवि से सा. ।

....

......सील जौवन गुण सो सव क्यो कहि जात ॥

....

:o: :o: :o:

॥ कुंडलियाँ ॥

जैसे मे संसार की रचना रचत अनूप ।
तैसे सुरपति सारदौ रचत सु अद्भुत रूप ॥
रचति सु अद्भुत रूप कृपा जापर अनुसरई ।
अति मति मंद सुरेस ताहि मोसम हरि करई ॥

अंत— ॥ सवैया ॥

मूरति माधव की उर रापि रही हठिकै नरनायक सौं जव ।
चंदकला जीय जानि नरेस हरे हिय उपर पाप धरयौ तब ।

संकट सौंह दिवाइ रिसाइ कह्यो इमि प्रीतन क्यों परस्यो अब ।
धेनु धरासुर को पग सो परसे नसे पुण्य पुरातम को सब ॥ ४०१ ॥

कलहस

सुनि तासु असभव वैन नैसो नृपना................
:o: .o: :o.

—अपूर्ण

विषय—माधवानल कामकदला की कथा का वर्णन ।

संख्या २६२क. गीता, रचयिता—भुग्रान, कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—४१/१० × ३१/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—पंडित रामलछन पांडेय, ग्राम व पोस्ट—नवली, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेस सए णम· ॥ श्री रमजीउ सहइः श्री हणमणजीउ सहइ. ॥ श्री पोथी अरजुण गीत लीखतणमः ॥

सुमिरौ अदी एक करातर । सुमिरे नम होइ णीसतर ।
सुमिरौ गुरु गोविंद के पउ । अगम अपरा है जेहकरा नउ ।
करणम प्रभु अतराजमी । अगम अपर है जेह कर नम ।
भगत भउदे गरुरागमी । दीणदअल तुम वल कनइ ।
अपने जन क होहु सहइ । कीरप करहु तुम सरगपती ।
नीरमल अछर कहौ वखनी ॥

॥ दोहा ॥

कीराप करहु जग जीवन, वीनती सुनहु प्रभु मोरी ।
अपने नम प्रगसहु कहै भुअल कर जोरी ।
:o: :o: :o:

संवत सुनै कहे परावण । सहस्त्र रूप तीन्ह वहौ जन ।
मझ मस जो कीसन पछ भएव । दुतीए अरथ रहसुए गएव ।

अत—

मन चक्रीत के राखेहु परवम मन लाइ ।
त्रीवीधी पाप सव नसै कीसन कहै समुझाइ ।

श्री भगवनो वचः इती श्री भगवत गीता सुपनेस असतुति वभ वीरव लोग सहरव श्री कीसनो अराजुनो समध नम अठरहमो अध्य ॥१८॥ इती श्री भगवन गीत भगवन भरव अराजुनो समधा ॥ ग्यान पत्रं सपूरनः जो सुनै श्री पढै तेही क गग असनन् ॥ श्री पुत्र क्लपन ॥

पडित जन सो वीनती मोरी । टूट अछरा लेव जोरी ।
सव संत कै सोत राम । श्री व्रह्मन को प्रनम ।

प्रती देखा सो लीख मम दोख न दीअते । महीन पूस सुकुला पछी तीथी पचम को सपूरन ।

:o: .o: :o:

विषय—भगवान् श्रीकृष्ण का अर्जुन को ज्ञानोपदेश करना ।

संख्या २६२ख. भूगोल पुरान, रचयिता—अज्ञात, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—९३/४ × ६१/६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८६२, प्राप्तिस्थान—ठा० [illegible] सिंह व ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री भूगोल पुरान ॥ श्री गनेस अएनम्ह ॥ श्री सारदा भषनीअएनम ॥ श्री भ्गोल पुरन ॥

वार्नो अदी अलष करतार । सुमीरहु नाम होए नीस्तार ॥
सुमीरौ गुर गोवींद कर पाउ । अगम अपार जही कर नाउ ॥
करुनामं तुम्ह अंतरजामी । भगती भाव दे गरुडगामी ॥
कीपा करहु तुम सारंगपानी । नीरमल अछर कहो वषानी ॥
दीन दआल तुम वाल कन्हाइ । अपने जन कह होहु सहाई ॥
कीर्पा करहु तुम सामी वीनती सुनहु हमारि ।
भगतीभाव देहु स्वामी कहै "भुआल" कर जोरि ॥

अंत—

राज वीक्रम भये ॥ राज वीक्रमाजीत भए ॥ वीक्रमजीत के भावी भए ।
भावी के करकु भए ॥ करकु के महीपानी भए ॥ मही पानी के पानी भए ।
पानी के मही दुपानी भए । मही दुपानी के वीक्राम देव भए ।

:o: :o: :o:

तन कुर के राजा सुक्रकेतु भए । एते राज उत्पन्न भए । तीप्रकह को सके ॥

इती श्री भोगल पुरान संपुरन समात पंडीत जन सो वीनती मोरी टुट अछर सव लेहु जोरी सवत १८६२ ॥ कं सल समं नम माती अषट वदी तेरसी १३ वरा वुध वराके ली० सीउचकस सींघ सोमवंसी कथ सामातुल ॥

विषय—भूगोल का वर्णन किया गया है ।

संख्या २६३. महाकवि भूपण के कुछ नवीन छद, रचयिता—भूपण, कागज—आधुनिक रुलदार, पत्र—१३, आकार—८ × ६¼ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभापा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—जयपुर के महाराज रार्मासह की प्रशंसा ।

अकवर आयो भगवंत के तनय जू सो वहुरि जगत सिंह महा मरदाने सो ।
"भूपन" यो पायो जहागीर महासिह जू सो शाहजहाँ पायो जयसिंह जग जाने सो ।
अव अवरंगजेव पायो रार्मासह जू सो औरो दिन दिन पै है कूरम के माने सो ।
केते राव राजा मान पावें पातसाहन सो पावें पातसाह मान मान के घराने सो ॥१॥

जयपुर के महाराज जयसिंह की प्रशंसा

भलो भाई भासमान भासमान भानजा को भानत भिखारिन के भूरि भय जाल है ।
भोगन को भोगी भोगीराज कैसी भाँति भुजा भारी भूमिभार के उवारन को ख्याल है ।
भावतो सभानि भूमि भामिनी को भरतार भूपन भरतखड भरत भुवाल है ।
विभौ को भंडार और भलाई को भवन भासे भाग भरे भाल जयसिंह भुवपाल है ॥२॥

अंत—

आपस की फूट ही ते सारे हिन्दुवान टूटे टूटचो कुल रावन अनीति अति करे ते ।
पैठिगो पताल वलि वजधर ईरपा ते टूटचो हिरनास अभिमान चित धरे ते ।
टूटचो शिशुपाल वासुदेव जू सो वैरि कर टूटचो है महीश दैत्य अधरम चरे ते ।
रामकर छूवन ते टूटचो ज्यो महेश चाप टूटी पातसाही शिवराजे संग लरे ते ॥२६॥

विषय—महाराज राम सिंह (जयपुर) महाराज जयसिंह (जयपुर), शिवाजी और साहू जी के प्रशसा के तथा नायिका भेद-विषयक कवित्तो का सग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। रचयिता भूषण हैं जो शिवाजी के आश्रित थे। प्रस्तुत कवित्त नए प्राप्त हुए हैं। "प्रभा" में प्रकाशित भी हो चुके हैं।

संख्या २६४. सुमनप्रकाश, रचयिता—भोलानाथ (भरतपुर ?), कागज—बाँसी, पत्र—५०, आकार—८½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुमन प्रकाश लिष्यते ॥

ए मन मधुकर रसिक तूं जो चाहै सुष मित्त ॥
तो विहार करि कृष्न के चरण सरोरुह नित्त ॥ १ ॥
ब्रह्मादिक कीनो विनय क्षीरोदधि के तीर ॥
जदकुल मे अवतार मो ह्वै हे परह (र) पीर ॥ २ ॥
तह लीनो अवतार प्रभु करे सर्व सुर काज ॥
व्रज लीला कीनी प्रथम लीने सुष के साज ॥ ३ ॥
प्रगट भये तिहि वंश मे श्री वदनेस नरेस ॥
मथुरा राजधानी लई कीनो राज सुदेस ॥ ४ ॥
तिनको पुत्र प्रसिद्ध भो सूरज मल्ल महीप ॥
सूरज लों परताप तिह सवही जंवू दीप ॥ ५ ॥

मध्य— ॥ उत्तमा लछन ॥

पिय के हित सों हित सदा अनहित सों नहि काम ॥
ताही सों सब कहत हैं नारि उत्तमा नाम ॥ ३१ ॥

यथा—

चितवत चौहू कोद चारो जाम वीने इन्है पलन लगाये पल एको यों बितयियां ॥
रही धरि ध्यान सही वियातें कहि न जाहि लाष लाष भांति आन भांत के न लषियां ॥
प्रात आये प्रीतम सुजान तुम मेरे गेह एतो भोला शंकर जोरे रुप रषियां ॥
रावरो सलोनो रूप देषें न अघातो मेरी पतीव्रतो जू उपासी प्यासी अषियां ॥ ३२ ॥

॥ मध्यमा लछन ॥

पति हित कीनें हित करें अनहित कीनें मान ॥
ताहि मध्यमा कहत हैं जे हैं रसिक सुजान ॥ ३३ ॥

अंत— ॥ प्रवास लछन ॥

किहूं काज के हेत सों गयो पीय परदेश ॥
सो प्रवास जिय जानियो जानत रसिक नरेश ॥ ३६ ॥

॥ यथा ॥

जवतें गये हैं तवतें न नींद नैनन मे नोदत है दिन रैन वैन गुन गथ के ॥
चैन चित मे न इत आवत न काहे हरि यति के विदेन वस भए हैं अरथ के ॥
रथ के चढे तक ही आये इह आशा लगें रहत हैं भोलानाथ प्रान नित अथ के ॥
अकथ कथा है वाकी विपत विथा है रही नेकु न तथा है वीर पथिक वा पथ के ॥ ३७ ॥

॥ करुण रस लछन ॥

मिलिवो क्यो हू वनत नहिं दुष मे जिय अकुलाय ॥
करें दुष्प करुणा विरह कहियतु है सनुभाय ॥

—अपूर्ण

विषय—इसमे रस, नायिका भेद और काव्याग आदि वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रथ अपूर्ण है । इसके अत के कुछ पन्ने नष्ट हो गए है ।

संख्या २६५. वारामासी, रचयिता—मडन, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—५¾ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभापा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वराणसी ।

आदि—अथ वारामास्यो

प्रथम चैत को आदि कें चितुराई चित आइ ।
याही क्रमकी आदि सूं कहियत सवनि सराहि ॥ १ ॥

चैत्र मास यथा

आयो यह चैत चित चेत ले चतुर चित चिहु ओर चाइ सो चलत पौंन मंद मंद ।
फूले वन उपवन सरिता सरस फूली सहज सुवाल फूलि फूलि अति अरविंद ।
मडन मराल फूले फूल्यो है विहग वृ द फूले अति गु जरत कैं कैं पान मकरद ।
फूलि फिर ग्वाल ग्वाल वालगन फूले फिरैं गाइ गाइ गोकुल मैं नद ॥ ३ ॥

अत—

रैंन लिष दिरघ दूराइ दल दोरि हैं एक छन वसैं है विरह निधाम को ।
सीरे सीरे सव ताते ताते ताल लागि जैंहै सरस सवाद धन धाम को ।
कैंसैं कैं विदेस कु गवन ऐसैं करियत है रूसनो न सह्यो परैं वयोहू एक जाम को ।
मंडन रसाल व्रजराज विन जानि परैं पोस नाहि आयो है जसूस यह काम को ॥२०॥

माघ मास यथा

माघ रित आयो यह सकल सवादिन को वन उपवन खग वोलत......

—अपूर्ण

विपय—शृगार विपय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के दो पन्ने सख्या १८ और २३ नही है । रचनाकाल और लिपि-काल भी अज्ञात हैं ।

संख्या २६६. वारहमासी, रचयिता—मगन जी, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ५½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभापा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—वारैंमासी..................

लग्यौ है असाढ जव उमगि वादर उठैं मोर दादुर करैं टैर गहरी ।
पीव ही पीव चात्रिक रटैं मास तन कौ घटैं कोकिला कुहक सुनि भई वहरी ।
सुनी है टैर जव मदन जोरचौ धरचौ विरह की नदी जहा वहत गहरी ।
धरकैं हियो और फरकैं भुजा सोइ तलफैं नैंन अव कहा ठहरी ।
कियौ जी मगन अव स्याम गाढो हियौ सांवरी देह अजहू न लहरी ॥ १ ॥
लग्यौ है सावन सव ताल सरवर भरे दामिनी दमकैं इंद्र गरजैं ।
पीव परदेस मैं सेज सूनी परी सुनत घनघोर जोवन लरजैं ।
जात अहीर पर पीर जानैं नही भूलि कैंसे गयौ विरह दरवैं ।

द्यौस तौ कढि गयौ राति दुर्लभ मई हमैं कहो विधना ऐसी निरजै।
काप मैं कतरनी वचन मीठे कहैं देषि जौ मगन या देस विरजै॥२॥

मध्य—
कृष्ण गोपीन की कहा महमा कहू कही नहि जाय वरनी न आवें।
कृष्ण गोपीन की मिलनि विछुरन कथा वहौ जानें और कान पावें।
कृष्ण गोपी मिलें बौहत आनंद भयौ "मगन" कू मौज दई मगन करिकै।
कृष्ण गोपी कथा सुनें सीषें र गावें ते नर वैकुंठ वसेरो पावें॥१३॥

विषय—कृष्ण के द्वारिका चले जाने पर गोपियों का विरह वर्णन। जेठ मास में कृष्ण से मिलन हो जाता है।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल शालिग्राम स्तोत्र के आधार पर सं० १८२५ से पूर्व जान पड़ता है।

ग्रंथ के साथ निम्नलिखित ग्रंथ भी सम्मिलित हैं —

१ बारहमासी—अवधूत कृत
२ ,, —लालदास
३ ,, —रघुजी
४ ,, —अज्ञात
५ ,, —घैरासाह कृत
६ जानकी मंगल—गो० तुलसीदास
७ कृष्ण मंगल—गो० तुलसीदास
८ भक्त विरदावली—अग्रदास
९ माँझै—अग्रदास
१० फुटकर (माधोदास कृत "हरषै जानदे" की टेक का पद)
११ शालिग्राम स्तोत्र—संस्कृत

रचयिता का नाम मगन है। उनका और विवरण नहीं मिलता। उनका यह ग्रंथ साधारणतया अच्छा है।

प्रस्तुत ग्रंथ की एक दूसरी प्रति भी है जो अपूर्ण है। दोनों प्रतियाँ एक ही बंधे में हैं।

संख्या २६७. गोविंद स्तुति, रचयिता—भट्टक मनि, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—पं० महादेव मिश्र, ग्राम-[illegible]नरा, पोस्ट-[illegible]निरा, जिला—गोरखपुर।

आदि........................ ....

प्रभुजी सुदर सील नोधान।

गोविंद सिरोमनी हे॥

भूषन वस विभूषन रघुवर दसरथर सोरहारो।
दीनानाथ दोष भयभंजन जन रजन होतकारो॥ गोविंद०॥
करुनामए कसा सिर पडन केक पछ सोर सोभ।
कंज ललीत मुष कोटि काम छवि देषत त्रिभुवन मोहे॥ गोविंद०॥
भृकुटी बीलास लोष्ट लयकारो कहाँ नावहो धृति धारो॥
संसेए मोचन विस्व विलोचन अगम अपड बरारो॥ गोविंद०॥

अभिनासी मन मोहन मुरती अगुन सगुन अनुगामी ।
मन व्यापक हरी अलष अगोचर नाम नीरजन स्वामी ।। गोविंद० ।।
सेवही सेस सक्र कमलासन पती गोरीराज कुमारी ।
चरन रेनु परसत पद पकज भए सीला ते नारी ।। गोविंद० ।।
राम नाम मन विमल वारी धर वरनी ना जात विचारी ।
दास मटुकमनी सरन राषु प्रभु कथका कहत पुकारी ।। गोविंद० ।।
:o: :o: :o:

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—गोविंद की स्तुति ।

संख्या २६८. कठाभरन टीका, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पृष्ठ—३६, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६१, पु० स० ७ । /

आदि—अथ कठाभरन की टीका लिख्यते मतिराम जी कृत ।।
कक कवित्त के प्रथम जानियें । पीछे तुक के अक जानियें ।
अंक १ तुक २ प्रीति क्ष्यो करी ३ थोरे क्रम सौं जो अक्षर सो क्रम तें कहौं हौं अलंकार रीति सौं । २ ।। कविता कैसी हैं चरन छद कौ चोथो वाटो । वरन जो अक्षर लक्षन जो लक्ष लछन ये सुंदर हैं करतार जो कवीस्वर रचिकै रीज्यौ पै अलंकार विना सो मान पावै ।

मध्य—पृ—२१
असगति अलंकार प्रकार । पहलो भेद । कारन और जगौ होय कारज और जगै होय मध्याधीरा नायका, रैंनि तुम जागे आलस हमारे अग मे छायौ । दूसरौ भेद । और ठौर करिवे की वस्तु और ही ठौर करे वह ही मध्याधीरा है दीजै जावक पानि मैं सो लाल भाल मैं दिवायौ है ।। २ ।।

अंत—यह अत्युक्त भई । उदात्त कै अरु याकै भेद । उदात्त मे संपति वर्नै । यामैं दांन वर्नै । कल्प वृच्छ तो देख्यो तेरे तेज तें सिधु सूकि गये । पर तेरे रिपुन की रानी रोई यातें फेर भरि गये तो यह सूरता भई, पहली सूरता चाहियै । पीछे उदारता इहा उलटे सुलटे हैं । निरुक्ति । नाम के योगतें और अर्थ थापै सोच गोपाल जो गवार अये राधे सौं वियोग कियो यातें । १ ।। प्रलिखे धं विधि सिद्धे हेते ए अनुजो पीछें कहैंगे । काहू राजा के नाम के लियें राखे आछी चीज है सो पहलै चलि गयौ अथवा इनमै नायका भेद हें तातै न कहे आछी बस्तु कही ग्रंथ वन्यो हैं यातें प्रसिद्ध वहुत भयो । ली

विषय—नायिका भेद और अलकार वर्णन ।

संख्या २६९ व० ना० (वरवै नायिका भेद), रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{16}$, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४२, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, (दाता—प० प्रसिद्धिधर जी द्विवेदी, ग्राम–अजगरा, पोस्ट–मदियापार, जिला–आजमगढ) ।

आदि—(१ स्वकीया) लक्षन दोहा
लाजवंती निसु दिन पगी निज पति के अनुराग ।
कहत स्वकीआ सील मैं ताको पति वड़भाग ।। ४ ।।

॥ उदाहरन बरवा ॥

रहत नैन के कोरवा चितवनि छाये ।
चलत न पगु पंजनिआ मगु ठहराये ॥ ५ ॥

॥ मुग्धा लक्षन दोहा ॥

अभिन (? व) जोवन आगमन जाके तन मे होइ ।
ताको मुग्धा कहत है कवि कोविद सब कोइ ॥ ६ ॥

॥ उदाहरन बरवा ॥

लागी आनि नवेलिहि मनसिज बान ।
उकसनु लागु उरोजवा द्रिग तिरछान ॥

मध्य—॥ पडिता लक्षन दोहा ॥

पिअ तन ओरं नारि के रति के चिन्ह निहारि ।
दुषित होइ सो पडिता बरनत सुकवि विचारि ॥ ६६ ॥

॥ मुग्धा पडिता उदाहरन ॥

सषि सिष सापि नवेलिआ कीन्हेसि मान ।
पिअ लषि कोप भवनवा ठानेसि ठान ॥ ६७ ॥

॥ यथा ॥

सीस नवाइ नवेलिया निचवा जोइ ।
छित षनि छोरि छिगुनिआ सुसुकन रोइ ॥

अत—॥ दरसन दोहा ॥

दरसन आलवनहि मे "कवि मतिराम" वषानि ।
श्रवन स्वप्न पुनि चित्र अरु तौ परतक्ष वषानि ॥ १५५ ॥

॥ जथा ॥

प्रीतम मिलेउ सपनवा भौ सुष पानि ।
जाए जगाएउ चेरिआ भौ दुष षानि ॥ १५६ ॥

॥ जथा ॥

पिअ मूरति चितसरिआ देषत बाल ।
सुमिरत औध बशेरवा जपि जपि माल ॥ १५७ ॥

:o: :o: :o.

॥ परिहास बरवा ॥

विहसत भौह चटाए धनुष मनोज ।
लावत उर अपठनवा ऐठि..........

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—नायिका भेद कथन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खंडितावस्था मे है । आदि अंत और मध्य के कई पन्ने लुप्त हो गए हैं । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या २७०.नीति विलास, रचयिता—[illegible] कवि, कागज—[illegible], आकार—७ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११० [illegible]—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६२६ प्राप्तिस्थान—श्री [illegible], श्री विद्या विभाग, कांकरोली, पद्द० ब० ६२, पु० सं० २३ ।

आदि—॥श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ नीति विलास लीखतें ।

॥ छप्पय ॥

श्री गोपी जन देव नाथ प्रभु सकल सिधकर ।
सेस आद दे देव रहे चरणन के वस हर ।
श्री वल्लभ के चरण जांवे गोपीनाथ हे विठल ।
सकल श्रेष्ठ सुख करण देव व्यापे प्रभु जल थल ।
नरदेव सकरा चरणन रहें देव रूप दीखे हृदा ॥
दासान चित चरण धरे दुद देयो वॉनी सदा ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ७ दोहा ॥

जो नर अपने नाम ते भोत होय प्रसिध ।
सुख संपत आनद मे सदा रहें धर रिध ॥

॥ छप्पै ॥ १६ ॥

पीता नाम प्रसिध होय वो पुत्र रहीयें ।
माता ते प्रसिध होय वो खोटो कहीये ।
नारी ते प्रसिध होय सो निप्ट माननो ।
ससुर नाम प्रसिध होय फेर निप्ट जाननो ।
वेर व्याह अरु प्रीत ये लायक नर जिनसो करो ।
नागे मनुप्य जगमे वसे वेन शुचित मन मे डरो ॥ १७ ॥

अंत— ॥ कवित्त ॥

आनद उमंग सो उछरत उछाह लीये गोपी संग ग्वाल वाल वाचत के लोल सो ॥
मदन मोन राजा देव देवन नरेस वली झुलत हे पलनां माहा मगल हीलोर सो ।
नद आनंद भयो दोले व्रजवासी सव देव नरेस सदा प्रेम अरु चोल सो ।
दास चरण रेणु की सरण प्रभु वार वार आप अव राखो दया मे तो रज मोल सो ।३३॥

सवत् १८२६ पोष वुदि १ लीख्त मथुरा दास नीतविलास संपूर्णम् ॥

विषय—नीतिविषयक दोहे, कवित्त और छप्पय आदि का सग्रह ।

संख्या २७१. गीतगोविंद भाषा पद्यानुवाद, रचयिता—भारद्वाज मथुरानाथ, पत्र—१६, आकार—८।×६। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३५ (सभवत), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉकरोली, हिं० व० ६३।६४, पु० स० ४ ।

आदि—श्री राधा वल्लभाय नमः ॥ अथ हरिगीत छंद ॥

नव जलद मेदुर गगन घनवन द्रुमन स्यामा मेदिनी ।
तदु उपरि तिमरावलि निशा चहु ओर कज्जल भेदिनी ।
इह कृष्ण वालक भीरु है वृषभानुजे निज सत्थ लै ॥
सुभ हत्थ लै निज हत्थ में गृह गवन कीजै यथ्रलौं ॥ १ ॥

मध्य—पृ० १७ अथ विप्रलब्धा नायका वर्ण्यते ॥

वृजपति आगम जटित सवाधालखि परिताप प्रकरमति राधा शशधरि विव
शशधरि विव उदित ज्यौं दरसै । अग अग आसीविष परसै ॥
हैम मचित सखीजन वचननि । इह वन आइ ठगी हरि रचननि ।
हरि विन रूप व्रथा मम योवन। विफल सकल शृंगारनि जो जन ॥ ३ ॥

अंत—छंद सोरठा ॥

श्री पद पूरव भोज देव जनक आनंदमय । रामा देवी सो जगत सुक विजय देवकी ॥३८॥

आदि—चौवीसौ अवतार को जस लिप्यते ॥

धर्मदास गुरुदेव कौं तन मन अर्पो सीस ।
पाहन सौ पारस करो सुमर सुमरि जगदीश ॥
हरि गुरु दोउ एक हे यो मति जाणो दोय ।
जे जाणोगा दूसरा जाकी मुक्ति न होई ॥ २ ॥
परसीन के द्वार मै कहुं न पावै ठोर ।
धर्मदास गोपाल को हरि गुरु कै सरनै होय ॥ ३ ॥
विज्ञानी वन मै वसै थिर हे मड माहि ।
ज्ञानी पावै ज्ञान कौ वसै गाव कै माहि ॥

मध्य—

जोणी संकट वोहोर न आवै । जै आवै तो हरि का दास कहावै ॥
मनसा राम परम पद पावै ॥ ६७ ॥
निराकार सौ रहै छै नीडा । प्रभु आवागमन मिटावै मेरा ॥ ६८ ॥

इति श्री चोवीस ओतारा कोस सपूर्ण ।

यथा—

जोणी संकट वोहोर न आवै । जै आवै तो हरिका दास कहावै ।
'मनसा राम' परम पद पावै ॥ ६७ ॥
निराकार सौ रहै छै नीडा । प्रभु आवागमन मिटावै मेरा ॥ ६८ ॥

विषय—चौवीस अवतारो के यश का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नह है । रचयिता का नाम भी सदिग्ध है । ग्रथ स्वामी श्री मायाशकर जी याज्ञिक ने सदिग्ध अवस्था मे गोपाल को रचयिता लिखा है । परतु मेरी समझ मे "मनसा राम" रचयिता विदित होता है । यह नाम ग्रथात मे दिया है —

यह ग्रथ नव विवृत ग्रथ "धर्म सवादे" के साथ एक हस्तलेख मे है ।

सख्या २७३क. वैताल पचीसी, रचयिता—मनिकठ मिश्र, कागज—देशी, पत्र—६७ आकार—१३$\frac{8}{10}$ × ५$\frac{6}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८२ वि०, लिपिकाल—स० १८८१ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी (डाता—स्वामी देवानद सरस्वती, परसपूरा, शहर–गाजीपुर) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वैताल पचीसी कृत मनिकंठ मिश्र ॥

॥ दोहा ॥

वरषा रितु जल जलद देक वहु जोग सुभ पाए ।
जाके कर जाचकन को प्रति दिन वरषत आए ।

॥ दोहा ॥

कवि कोविद मनिकठ तहाँ ता ढिग वसै निसक ।
फकीर सिंघ सेवन कियो कथा वनावन अक ।

॥ दोहा ॥

फकीर सिंघ मनिकंठ कह कीन्ह प्रेम अति पुष्ट ।
भूमि हेम वाजिन दियो करि रापेव संतुष्ट ।

॥ चौपाई ॥

बहु धन दै उन कीन्ह निहोरा । विनती यही एक द्विज मोरा ।
आवर कथा मोसो नाही वचीमो । करु भाषा वैताल पचीसी ।
हुकुम राषि सिर उपर मह्नु । तव इह कथा रसायन कह्नु ।
ढीठ पडित लोग हसेंगे । धिन बूझे जड जीव हसंगे ।

॥ दोहा ॥

श्रुति रस वरन मे चाहत दुषन दुष्ट ।
जैवर भावन वैठिकैं नट काट सो तुष्ट ॥
लोचन वसु मुनि मुक्ष मे माघ सुकुल ससिवार ।
तिथि वसत की पचमो भएव ग्रथ श्रौतार ॥

श्रत—

॥ दोहा ॥

स्वाती सील के रुधिर ते, विपित कियो वैताल ।
उन दीन्हो वस्तु सिद्धि तव हरषे विक्रम लाल ॥

॥ दोहा ॥

सिर नवाइ सिषवन लगे विक्रम डारी काटि ।
टूक टूक करि मास को, दीन्हीं गिद्धन बाँटि ॥

इति श्री वैस वस अवतस फकीर सिंध कारिते भाषा वैताल पचीसो ग्रथे पच विंशति कथानकं ॥

समत को परवान इह सत मेष अष्ट सिगार ।
पूस मास कृष्ण पक्ष पचमी सुभ रविवार ॥

॥ दोहा ॥

तादिन सुभ पुस्तक लिषो महा विचित्र सुठारि ।
अधीन दास लेषिता हुतो आजमगढ के बीच ।
वचक सो विनती करो हो करनो को नीच ।

॥ सोरठा ॥

अधीनदास अस नाम भीषा को चेला हुतो ।
सुमिरचौ सीता राम गुरु अग्या ते लिषि गई ।

श्री सम्वत १८८१ भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदाया भौम वासरे । राम नेवाज अवस्थी ना लेषि पुस्तक लिषाया भैया राधाकृष्ण मोहन लाल वेचूं लाल जो । श्री कृष्णो विजयतेतराम् । हरिः————

विषय—सस्कृत ग्रथ वैताल पचीसी का हिंदी पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

लोचन वसु मुनि मुक्षमे माघ सुकुल ससिवार ।
तिथि वसत की पचमी भएव ग्रथ श्रौतार ॥

संख्या २७३ग. वैताल पच्चीसी, रचयिता—[illegible], कागज—[illegible], पत्र—१०६, आकार—१० × ६¾ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८१ वि०, प्राप्तिस्थान—प० चद्रचारुमणि त्रिपाठी, ग्राम—मिरजम, पोस्ट—[illegible] बाजार, जिला—[illegible] ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरवे नमः ॥ श्री गुर रहित हरि गीता छंद ॥

गाधिपुर सरकार मैं नगरा नगर विष्यात ।
वहु भू सिरोमनि पुर वसै आनद मय सुष सात ॥
वेद विधि चारो चरण नर चलत वेद विचारि ।
रथनेम जो मग आपनी नीज धर्म रत शुषकारि ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

तहा राजनीति प्रतीति द्विज पद प्रेम उर मे चाहि ।
वैश वंस सरोज पूषन भये गाजन साहि ॥

कुडलिया

मरदाने ताको भयो वाणशींह सुष धाम ।
दाता दीन दयाल अति सुदर तन ज्यौ काम ॥

:o: :o: :o:

वाना केहरि को भये कृष्ण सिंह मरदान ।
ताशो लहुरो विदित जश विस्नुसिह जग जान ॥
दूनो ते लहुरो वहुरि भयो वीर वर वीर ।
पातष मैं कलिकाल लषि गयो सो त्यागि सरीर ।

:o: ।o: :o:

विष्णु सिह के पुत्र है करते दयो विचारि ।
फकीर सिह जेठो भयो जिन्ह रिपु हन्यो प्रचारि ॥
अनुज भयो वलभद्र साहि । निज राज राषि के लाज जाहि ॥

:o: :o: :o:

श्री फकीर सिह हिदयो राज तिलक को भार ।
साम दाम दंड अरु भेद अनुग्रह वीति ॥

:o: :o: :o:

कवि कोविद "मनि कंठ मनि" तहवा वसै निसंक ।
फकीर सिह को निरषि के अभय वजायो डंक ॥

:o: :o: :o:

वहु धन दै उन्हि कीन्ह निहोरा । वचन एक मानि लै मोरा ॥
अवर कथा मो सो न वची सो । करु भाषा वयताल पचीसो ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

कह्यौ महीपति काहु को कीन्ह न मैं प्रणाम ।
कीजै जवने जुक्ति ते सिषै देहु गुण धाम ॥
शिर नवाय शिष वन लगै विक्रम डारयौ काटि ।
टूक टूक करि वाहि तन दियो गिधनी वाटि ॥
साति शील के रूधिर तें किन्हो वृत वेताल ।
उन्ह दीन्हे वहु सिषि वहुरि हर्षे विक्रम लाल ॥
अगिअन मे तेली भयो कोइला नाम कोहार ।
दोउ विक्रम वसि परे कहै करै वेवहार ॥

इति श्री वैसवंसावतंस फकीर सिंह कारिते भाषा वैताल पचीसी ग्रंथे पंच विसंति कथानक मूः ॥२५॥ समाप्तोयं ॥ १८९॥ शा ॥ १७५७ ॥ मार्ग सिर्प कृष्ण पक्षे चतुर्दश्यां गुरोर्दिने ॥ श्री प्रगासमणि त्रिपाठिना आत्महस्तेण लेषणियं स्व पठार्थम् ॥

विषय—संस्कृत ग्रंथ वैताल पच्चीसी का हिंदी पद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल का पता नहीं । लिपिकाल संवत् १८६२ है ।

संख्या २७४. वरन चरित्र, रचयिता—मनोहरदास, कागज—आधुनिक, पत्र—६, आकार—७$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—संवत् १६३५ वि० (लगभग), प्राप्तिस्थान—पं० छोटकधर जी द्विवेदी, ग्राम-अटनी, पोस्ट-सरायममरेज, जिला-इलाहाबाद ।

आदि—श्री गनेस जी सहाए ॥ श्री राम जी सहाए । श्री काली जी सहाए । श्री सुवसती जी सहाए ॥ श्री पोथी ब्रन चरीत्र ।

घोबी	वड़ही	बहेलिआ	मद्दुआ
तेली	हजाम	मुसलमान	कलवार
बाम्हन	रजपूत	नेटुआ	कमरवानी
काएथ	ततवा	रसतोगी	कुरमी

॥ दोहा ॥ १ ॥

ग्यान के सावुन लेइ के घस घोबीआ मन मीत ।
अंत बीच सफा करए सरल बाजी लगे जीत ॥

॥ दोहा ॥ २ ॥

नीर छीर एक संग बसे ग्वाला मथी के नीकार ।
झूठ साच मन मे कहे जुदा जुदा करी डार ॥

॥ दोहा ॥ ३ ॥

पकासरी सो तेलीआ पेरे चुए पका तेल ।
कचासरी सो पेरी के करहु आनही तेल ॥

अंत— ॥ दोहा ३० ॥

सबद अगरवाला होइ रहा देषो मने बीचार ।
मोह भरम सब त्यागी के उतरी चले भौपार ॥

॥ दोहा ॥ ३१ ॥

वरन चरीत्र के भेद एही कहे "मनोहरदास" ।
कुरमी करनी भगवत की पढ़हु नीसचत पास ॥

समापता

दसषत पंचमराम ॥ साकीन कलकत्ता ॥ मछुआ बाजार ॥ माडो छपरा ॥ समत १९३७ ॥ मीती चइत वदी ५ दीन रवीवार को तइआर ॥

विषय—प्रत्येक दोहे में एक वर्ण (जातिगत) का नाम लेकर ज्ञानोपदेश किया गया है ।

संख्या २७५. साखी, रचयिता—मलूकदास, (कडा मानिकपुर, इलाहावाद जिला), कागज—देशी, पत्र—१६५, आकार—१०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी कैथी मिश्रित, प्राप्तिस्थान—वावा मथुरा प्रसाद और महेश प्रसाद, स्थान व पोस्ट—कडा, जिला—इलाहावाद ।

आदि—भैरो

राम कहु राम कहु राम कहु वावरे ।
औसर न चुकु भोदु पाओ भलो दाऊ रे ॥
जीनी तोको तनु दीन्ह ताको न भजनु कीन्हो ।
जनमु सीरानो जात लोहे को सो ताउ रे ॥
कहत मलूक दास छोडी देही झूठि आस ।
आनद मगन होइकै हरी गुन गाउ रे ॥ १ ॥

अंत—वीलावल

अव काहे वहीरे भए हरी सुनते नाहीं ।
वरसहु मेहु अघाइ कै नीके जग माहीं ॥
वुरा जोत कै आन क सुष कवहु न सोवै ।
उघरी जाइ जरयूल ते सार धुनी धुनी रोवै ॥
कहा हमारा मानीए अव वोल वन कीजै ।
टके पसेरी अन करी सभनी सुष दीजै ॥
कलजुग ते सतजुग कीअ सभ कटक मरे ।
पापु वढ़त उडी गआ राम भले सभले ॥
कीरपा कै गोपाल जीउ वरस ओपनी ।
कही मलुक अनंद भओ सभ जरनी वुझनी ॥ १ ॥

साषी सव एक सए छोअतर १७६ साषी सभ २७६ ॥ पत्रा १६५ ॥ आरती कहइ ५६ ॥

विषय—भक्ति, उपदेश, नीति और चेतावनी आदि विपय वर्णित हैं ।

संख्या २७६. वैत सरमद की, रचयिता—महम्मद औलिया (? सरमद), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ४$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—प० हनुमान प्रसाद मिश्र, ग्राम—सोनई वड़ी, पोस्ट—करछना, जिला—इलाहावाद) ।

आदि—दया गुरु की ॥ लिष्यते वैत सरमद ॥

सभी पलक मे हम फीरै देपा पूव पैछानिकै ।
एक रोग गाल्य पलक मे छाया है जाल्म आनिके ॥ १ ॥
देपा पूव पहिचानि कै एहि आग घर घर जरै ।
एक नाम रोग के वीच मे देपी सभी दुनिया मरै ॥ २ ॥
देपा सुपन पैछानि कै दील वीच मे माने कीया ।
एक नाम रोग के वीच मे मुये वुजरुष औलिया ॥ ३ ॥
एक लाष असी हजार ईस रोग मे मरि मरि गये ।
कलमा एहि नामा आपने को भिन्य भिन्य कर धरि गये ॥ ४ ॥
कर कर उमत आपनी नाम कारन सिर दीया ।
दूजी मजहपै तरक कर अपना मजहव काएम कीया ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

कीयौ न मन मैं ज्ञान कछू श्रवनन सुनी पुरांन ॥
जनम अकारथ ही गयौ वढि वढ़ि अभिमान ॥

॥ सोरठा ॥

हरि सुं लावौ हेत गुंगा गहिला आंधरा ॥
भक्ति विना नर प्रेत चतुराई जर जान दै ॥

॥ दोहा ॥

सव तजि भजि राधा रमनि जव लग घट मे प्रान ॥
मन वच कर्म करि द्विज कहैं पावै पद निर्वांन ॥

इति श्री रुक्मिणी मगल संपूर्ण ॥

विषय—रुक्मिणी के विवाह की कथा का वर्णन है।

रचनाकाल

सवत सत्रैसै वरस गये गुणीसी वीति ॥
पोस सुदी तिथि पचमी सोमवार सप्रीति ॥

संख्या २७८. गनगौर के ख्याल (गीत), रचयिता—महादास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७, अपूर्ण, रूप—साधारण, तद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९२३, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० व० स० २२, पु० स० ८।

आदि—श्री द्वारकेशो जयति ॥ सवत् १९२३
अथ गन गोर के ख्याल लिखते ॥ राग लुर सारग ॥

लोयन हो लाग नाजी प्यारा मोया जी सलोना मारा स्याम ॥
आयो गोरल को दिन नीको तातें कीयो री सिंगार ॥ १ ॥
सव व्रज वनता वन वन आई सिर पर ऊमां धार ॥
चलो जमुना विसरात घाट पर मिलदर पेला ऐक सार ॥ २ ॥

मध्य—

गोरल सांवलडी मारे आज रहोनी मिजमान ॥
आगरा री घाघरो दखणीरो चीर सिर विंदुली मुख पान ॥ १ ॥
केसरी यारा करोनी कसुंभा गाओनी मीठी तान ॥
राधा जु के महल पधारो व्रजनिध चतुर सुजांन ॥ २ ॥

अंत—प्राप्त नहीं। ...

विषय—चैत्र शुक्ल ३ को गनगौर नामक त्यौहार होता है। उस पर गाये जाने के पदो का सग्रह।

संख्या २७९. निघट मदनोदै (ग्रथ वैद्यक), रचयिता—महाराज कवि, कागज—देशी,

आदि—श्री गणेशायनमः श्री रामचंद्राएनमः अथ लिप्यते निघट ॥

॥ दोहा ॥

छीर सिंधु मे वास जेहि पीत वसन भुज चारि ।
ताहि वदि "महाराज कवि" नाम लिखित निरधारि ॥
वैद्य वेद विद्या सुगम औषध नाम निघट ।
ता हित जानन हार के कीन्हो नाम निघट ॥ २ ॥

अथ हर्रै नामगुन

कयेथ्या पथ्या अव्यथ्या शिवा श्रयेसी जानि ।
अम्र चेतकी हरित की अभया हरर वखानि ॥ ३ ॥
प्रमदा मोद विजया जया पूतज पूतन हो[illegible] ।
तुघ रोहिनी हरितकी हैम जीवन मोद ॥ ४ ॥
हररी सात प्रकार की फल श्री पात्र सरूप ।
जीवन्ती फल सोर्ण सम विजया तुवद रूप ॥ ५ ॥
अम्र अम्र लाल फल रोहिनि जाने जान ।
भया पूतजा चेतकी अष्ट पच व्रंताप ॥ ६ ॥
वसत कालिन्द्री तीर मं जहां नित्य मच जोग ।
वात पित्त कफ तीनि को हरत उदर को रोग ॥

अंत—अथ एलाइचि नाम गुन

एला लाइची निहपुटी त्रिपुटि चेलिना चेलि ।
तन सुगंध ससि कन्यका दाह पित्त मह रेलि ॥९८॥

तावूल नाम गुन

तावूल अहिवेलि दल द्विज युद मदन पान ।
हरत रोग सब दोष कफ वंदन गुन अभिमान ॥९९॥

॥ अथ नारिअर नाम ॥

वानर मुष लागूल पुनि नारियेलि सुभ नाम ।
नारियर कहि विवि लोचनो राज ठोर विश्राम ॥१००॥

अथ सुपारी नाम गुन

पुंग............................ ....

:o: :o. :o:

—अपूर्ण

विषय—औषधो का नाम तथा गुण वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अंत मे खंडित है । केवल ५ पन्ने का भाग है ।

संख्या २८०. वाल चरित्र, रचयिता—महादान (नागरदास) [illegible],
पत्र—४, आकार—९ × ५.१/० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८ परिमाण (अनुष्टुप) [illegible],
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—[illegible] ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः अथ वाल चरित्र लिख्यते ॥

॥ राग मारु ॥

वृह्मा जेनो पार न पामेरे वखांणे वेद मारे ।
हरि गुण गालाने ईछुरे पिछु नहीं धेद मा ॥ २ ॥
नंद जसोदा जी नुरे के मोटु भाग्य छे ।
श्री कृष्ण जी पुत्र न भावेरे नये नित्य पाग्यने ॥ ३ ॥
महा सुख सागर प्रगट्यो रे भलो व्रज वास मा ।
कोए जोनी वरसे वाधेरे प्रभु एक मास मा ॥ ४ ॥

अंत—

हुतो गोर जमा चालुरे वैकुंठ थी व्रजमुने वालुरे ।
जगत नेहु अंतर मा राखु रे आहिर डानु वोटु चाखुरे ॥३५॥
भुल लीला वीस्तारीरे गोकुल राख्यु नीर धारी रे ।
पवित्र वाल चरीत्र गाएरे महावदास भामणे जायेरे ॥ ३६॥

लीखीतः ॥ व्यास लक्ष्मी शंकर ॥ सहस्त्र अवदीत्र श्री कासी मधे वाल चरीत्र संपुरणं ॥

विषय—कृष्ण की वाललीला का वर्णन ।

संख्या २८१क. रससिंधु, रचयिता—महावदास वैष्णव, (गोकुल), कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—१०।×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३५, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० व० १०७, पु० सं० ७।२ ।

आदि—॥श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ रस सिंधु ग्रंथ लिखियतु है ।

एक समे मोटा जी तथा महाव जी ये दोऊ भगवदी श्री गोकुल मे एकांत वैठे हते । तहां महाव जी भाई ने मोटा जी सो पूछी, अजी मोटा जी मोको एक वडोही संदेह उत्पन्न भयो हे । जो श्री विठ्ठल कुमार श्री वल्लभ जी के दरशन करियतु हें । और श्री यमुना जी को जलपान हू करियत हें । वडोही सुख होत हे ।

मध्य—पृ० १८

और सब कहत हें जो वैष्णव मार्ग खाडे की धार हे एसें सब ही कहत हें । पर याके भेद तो कछु जु देइ हें । सो एक चित्र ते सुनो, जेसे खाडे की धार एक तो शत कोस लांवी हे और एक कोस ऊंची हे और वाकी धार अति तीखी हे । या प्रकार की खाडे की धार उतर करि पेले पार गयो तव उहां महा सुख पावें । उहा सव सुख हें ।

अंत—यह तो मोटा जी की कृपा ते जान्यो मोटा जी भक्तशिरोमणि हें । उनकी कृपा मोपर वोहत हे । तातें श्री गोकुलपति मे जानो ॥ इति श्री गोकुल वासी महावदास कृत रस सिंधु ग्रंथ संपूर्ण संवत् १८३५ चंद्रादि मिती श्रावण सुदि ११ भौमवारे लिखत मोहनदास. सुत गोवर्धनदास कार वान मे लिखी है ।

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ संवादात्मक है जिसमें वैष्णव धर्म (पुष्टि मार्ग) के संबंध मे सैद्धांतिक प्रश्नोत्तर है ।

संख्या २८१ख. रससिंधु, रचयिता—महावदास वैष्णव, (गोकुल, मथुरा), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—१०॥×६॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, अपूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० व० ११८, पु० सं० ६ ।

आदि— ॥श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥

अथ रस सिंधु ग्रंथ लिखियत है। एक समै मोटा जी तथा महावजी ये दोऊ भगवदी श्री गोकुल मे एकांत बैठे हुते तहा महावजी भाई ने मोटा जी सो पूछी अजो मोटा जी मोको एक बड़ो ही संदेह उत्पन्न भयो है। जो श्री विठल कुमार श्री वल्लभ जी के दरसन करियतु हैं। और श्री यमुना जी को जलपान हू करियत हैं। बड़ो ही सुख होत है अति आनद उपजत है, परन्तु स्नेह उपजत नहीं याको कारण कहा सो मो पर कृपा करि समझायके कहो।

मध्य—पृष्ट ५

अब अभिमान को कुटुंब कहत हैं। अभिमान तो राजा, क्रोध प्रधान, प्रतिष्ठा रानी, निंदा दासी, लोभ आसन, दोष गादी, हठ सखा, मद मत्सर दंभ दोष छल बनादिक ये पुत्र, असत्य भाई, गर्व भूषण, मोह ग्रह, यह जानियो, चिद्रूप गारियो इन्में कोई नहीं याहूते क्रोध बुरो। याते क्रोध चाडाल है तातें याहूतें बुरो। याते ऐसे को हृदय में राखनो, मोहन कहनो जो मेरे अन्य आसिरो कछु नहीं, क्रोध होय तहा आनद न होय। जहा आनद नहीं तहा ठाकुर नहीं भगवदीन कोहू वल्लभ सो आनंद सो हृदय कमल में रहत है।

अंत—तातें श्री वल्लभाचार्य जी ने विवेक धैर्याश्रय ग्रंथ मे कहे हैं सो अब अर्द्ध श्लोक कहत हैं। प्रार्थना कार्य मात्रे पि ततस्त्याज्य त्व विवर्जयेत् ॥ याको अर्थ—कार्य मात्र में कितनी विपत्य पड़ेतो कहा करें सो कहत हैं। जैसें ललिता जी श्री ठाकुर जी को प्यारे हैं तैसें ही भगवदीहू श्री ठाकुर जी को बोहोत प्यारे हैं तातें भगवदीय आगें दीनता सर्वथा करिये। और भगवदी की सेवा करिये।

विषय—पुष्टि सप्रदाय के भक्ति-विषयक उपदेश।

संख्या २८२. कवि कुल तिलक प्रकाश, रचयिता—महीपति या महीप (गयपुरा, गढ अमेठी, सुलतानपुर), कागज—आधुनिक बादामी, पत्र—१०८, आकार—६१/२ × ६१/२ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०४५, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १९६६ वि०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर [illegible], पो० अमेठी (ई० आई० आर०), जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि—श्री चण्डिकायै नमः श्री गणेशाय नमः ॥

चारि भुजा अरु चक्र तिसार लसै रद एक महा गुनती को।
दै मुष मंडल वदन देप धरैं हौं उदार रहै ही जती को।
सेवत जाहि सदा सनकादिक प्रातीन लागि करैं [illegible] को।
आदि "महीपती" को सुखदायक लायक पूत है पारवती को ॥ १ ॥
सवत सत्रह से मिले तापर [illegible] दोय।
भादौ सुदि दसमी गुरौ लिखित ग्रंथ लय [illegible] ॥ ७ ॥
गढा अमेठी देस है रायपुरा सुभ थान।
आश्रम चारि बसैं तहां सब पंडित [illegible] जान ॥ ८ ॥
सुललित ताही नगर मे [illegible] "महीपति" नाम।
तिन्ह कीन्हो नृप रामि पर "कविकुल तिलक प्रकास" ॥
नवहू रस के भाव जे [illegible] [illegible] [illegible] ठौर।
आगे हौं कहि ही सबै है [illegible] मन की दौर ॥१०॥

॥ अथ शृंगार रस निरूपनम् ॥

नवहू मे रसराज यह [illegible] [illegible] [illegible] हेत।
स्याम देवता स्याम रंग [illegible] [illegible] [illegible] ॥११॥

ग्रंत—

काव्य करत कल्यान को काव्य सुपनि को देतु ।
काव्य करत उपदेश को सकल सुभनि को हेतु ॥३५॥
चरनन राधारमन को कहूँ कहूँ रघुनंद ।
"कविकुल तिलक प्रकास" पढि वाढै सदा अनद ॥
चारि पदारथ देत हैं पढ़त याहि गोविंद ।
ज्यौं दिनकर की किरन तें वढ़त जात अरविंद ॥३७॥
संकर सारद सेस हूँ सवत होत सहाइ ।
"कवि कुल तिलक प्रकास" को पढ़ै सवै चित लाय ॥
"कविकुल तिलक प्रकास" को आदि ग्रंत लो देषि ।
ग्राह त्याग मैं जानिवो जानि अजान विसेषि ॥३६॥

इति श्री महीप (?ति) कृते कविकुल तिलक प्रकासे छंद भेद वरननो नाम ऊनवींशो लोकः ॥ शुभम्भूयात् ॥

विषय—नायिका भेद, रस, ग्रलकार, काव्यगुण दोप ग्रौर पिंगल ग्रादि का वर्णन । ग्रंथ मे 'लोक' नाम से निम्नलिखित ग्रध्याय हैं :—

१.	मगलाचरण, कवित्त ग्रौर स्वकीया वर्णन	पत्र	१ से	६ तक
२.	नायिका परिच्छेद	,,	६ ,,	११ ,,
३.	ग्रप्टनायिका	,,	११ ,,	२१ ,,
४.	सयोग वियोग शृगार तथा मान वर्णन	,,	२१ ,,	२७ ,,
५.	उत्तमादि सखी तथा दूती भेद वर्णन	,,	२७ ,,	२६ ,,
६.	नायक परीक्षादि	,,	२६ ,,	३३ ,,
७.	चित्रदर्शन ग्रौर हाव वर्णन	,,	३३ ,,	३७ ,,
८.	स्थाईभाव कथन	,,	३७ ,,	३६ ,,
६.	ग्रनुभाव वर्णन	,,	३६ ,,	४३ ,,
१०.	ग्रनुभाव, सात्विकभाव, व्यभिचारी भाव वर्णन	,,	४३ ,,	५१ ,,
११.	सपूर्णरस वर्णन	,,	५१ ,,	५३ ,,
१२.	वृत्ति निरूपण	,,	४३ ,,	५४ ,,
१३.	रसनिरूपण	,,	५४ ,,	५७ ,,
१४.	समस्त रम निरूपण	,,	५७ ,,	५६ ,,
१५	दोप (काव्यदोप) निरूपण	,,	५६ ,,	६६ ,,
१६	गुण (काव्यगुण)	,,	६६ ,,	६६ ,,
१७	ग्रलकार निरूपण	,,	६६ ,,	८३ ,,
१८.	रीति, वृत्ति लक्षण	,,	८३ ,,	६२ ,,
१६.	पिंगल ग्रतर्गत गणागण नियम वर्णन	,,	६२ ,,	६३ ,,
२०	मात्रिक छद वर्णन	,,	६३ ,,	१०० ,,
२१.	वर्णवृत्त तथा ग्रथ समाप्ति	,,	१०० ,,	१०८ ,,

रचनाकाल

संवत सत्रह मैं मिले तापर छासठि दीन्ह ।
भादौ सुदि दशमी गुरौ विदित ग्रंथ तव कीन्ह ॥

ग्रंथ मे एक ग्रध्याय महत्व है ।

संख्या २८३क. रस सारिणी, रचयिता—मातादीन शुक्ल, अजगरा, प्रतापगढ़, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१०, आकार—१०१/८ × ६३/४ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३ वि०, मुद्रणकाल—सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० देवनाथ उपाध्याय, स्थान—सेमरौनी, पोस्ट—धम्मौर, जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥

मदन कदन सुत गजवदन विघ्नहरन जनपाल।
एकरदन गुनगन सदन पाहि बाल मतिमाल ॥ १ ॥
उदाहरन संछेप अति जाते बढ़ै न ग्रंथ।
बाल हेतु रस सारिणी भाषा रचो सुपंथ ॥ २ ॥
॥ अथ नवरसा. ॥
रस शृंगार अरु हास्य कहि करुण रौद्र पुनि वीर।
भयानको वीभत्स लहि अद्भुत सांतहि धीर ॥ ३ ॥
॥ उदाहरन ॥
लक्ष्मी लखि लोभी जोई हंसत निगम को पेखि।
शोक करत मख पशुन्ह को शोधित क्षत्रिन्ह देखि ॥ ४ ॥
पुलकित रन लखि रावनहिं दधि चोराय अति भीत।
म्लेछ रुधिर जुत क्षिति दरान सो गहाय पद पीत ॥ ५ ॥
रस प्रधान शृंगार है यहाँ भेद कछु तासु।
आलम्बन उद्दीपनो है विभाव द्वै जासु ॥ ६ ॥
:o: .o: :o.
॥ अभिसारिका लक्षन ॥
समय जोग्य भूषन पिहे सकल चतुरता धाम।
जाय सहे टहिं पिय मिलन अभिसारिका सु बाम ॥७१॥

अंत— अथ विरह की दश अवस्था

अभिलाषा चिन्ता स्मरन गुन कीर्तन उद्वेग।
अरु प्रलाप उन्माद रुज जड़ता निधन अनेग ॥९६॥
निंदक दुरजन जदपि हैं तदपि कहा नहि सोच।
पशु घर शूकर चरत भय कृषी तजत नहिं पोच ॥१००॥
१ ९ ३
एक सहस नव सै त्रिजुत संवत मिति वदि जेष्ठ।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ ॥१०१॥
माधो तारो दीन नर सुनो कृपाल का देर।
सब प्रभुता को पद गयो हरषो अरज पग मेर ॥१०२॥
एक एक अक्षर पढ़ै एक एक तजि देव।
या दोहा मो नाम कुल देश धाम लखि लेव ॥१०३॥

इति रस सारिणी पूर्तिमगात् ॥ आषाढ पौर्णमास्यां लिखितेयं रस सारिणी सकल दर्शनाभिज्ञ विबुध नाथूराम त्रिपाठिना शुभम् ॥ सम्वत् १९२२ ॥

विषय—नायिका भेद का संक्षेप में वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

एक सहस नव सै त्रिजुत संवत मिति वदि ज्येष्ठ।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ ॥१०१॥

संख्या २८३ख. रस सारिणी, रचयिता—प० मातादीन शुक्ल, (अजगरा, प्रतापगढ), कागज—आधुनिक, पत्र—१६, आकार—६१/४० × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०३ वि०, लिपिकाल—स० १६३१, प्राप्तिस्थान—प० सरस्वती प्रसाद उपाध्याय, ग्राम–सुदीकपुरा, पोस्ट–फूलपुर (तारडीह), जिला–इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

मदन कदन सुत गज वदन विघ्न हरन जन पाल ।
एक रदन गुन गन सदन पाहि वाल शशि भाल ॥ १ ॥
उदाहरन संक्षेप अति जातें वढ़ें न ग्रथ ।
वाल हेतु रस सारिणी भाजा रची सुपन्थ ॥ २ ॥

(अथ नवरस)

रस शृंगार अरु हास्य कहि करुण रौद्र पुनि वीर ।
भयानको वीभत्स लहि अद्भुत शातहि धीर ॥ ३ ॥

अंत—

एक सहस नव सै त्रिजुत संवत मिति वदि ज्येप्ट ।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेप्ट ॥१०१॥
माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर ।
सव प्रभुता को यह पद गन्यो हरयो अरज पग नेर ॥१०२॥
एक एक अक्षर पढ़ै एक एक तजि देय ।
या दोहा मो नाम कुल देश ग्राम लखि लेय ॥१०३॥

इति रस सारिणी पूर्तिमगात् ॥ आषाढ वदि १३ लिखितेयं रस सारिणी सकल दर्शनाभिज्ञ विबुधवर चरण सेवक नागर ब्राह्मण मुरलीधर सवत् १६३१ ॥

विषय—रस और नायिका भेद का सक्षेप मे वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

एक सहस नव सै त्रिजुत संवत् मिति वदि ज्येप्ट ।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेप्ट ॥

संख्या २८३ग. रामायण माला, रचयिता—प० मातादीन शुक्ल (अजगर, प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—६१/४० × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६६ वि०, प्रकाशनकाल—स० १६३१ वि०, प्राप्तिस्थान—प० सरस्वतीप्रसाद उपाध्याय, ग्राम–सुदीकपुरा (तारडीह), पोस्ट–फूलपुर, जिला–इलाहाबाद ।

आदि—॥ दोहा ॥

श्री गोपाल चरन सरन विघ्नहरन हिय आनि ।
हरि गुनगन वरनन करो होय सकल अघ हानि ॥

॥ चौपाई ॥

मधु शुचि ग्रह तिथि अदिति वलीना । दशरथ गृह नर तन हरि लीना ॥

॥ दोहा ॥

कौशल्या के रामसुत भरत केकई जात ।
लछिमन अरु शत्रुघ्न द्वौ लही सुमित्रा मात ॥

रामचंद्र अरु लषन तें बाढ़ी प्रीति अपार ।
भरत अवर शत्रुघ्न तें पिटमाग अनुसार ॥

अंत—

जोजन चारि प्रयाग तें उत्तर अजार ग्राम ।
तासु दून है अवध तें दक्षिन जहँ मम धाम ॥

मा	धो	ता	रो	दा	न	न	र	र	
सु	नो	कु	श	ल	का	दे	र		
स	व	प्र	भु	ता	वो	प	द	ग	ध्यो
ढ	रचो	अ	र	ज	प	न	ने	र	१

एक एक अक्षर पढ़े एक एक तजि देत ।
या दोहा मो नाम कुल देश ग्राम [illegible] लेय ॥
अट्ठारह सै छानवे सवत [illegible] [illegible] ।
रामायन माला रची एकादशि [illegible] ॥

इति श्री रामायन माला सपूर्णम् ॥
सम्वत् १६३१ ज्येष्ठ शुक्ल १५ लि० नागर ब्राह्मण मुरलीधर ॥

विषय—राम चरित्र का सक्षेप में वर्णन ।

संख्या २८३घ. राम गीताष्टक, रचयिता—प० माताप्रसाद [illegible] ([illegible] प्रतापगढ), कागज—आधुनिक, पत्र—११, आकार—६¾ × ६ [illegible] ([illegible])—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, [illegible] लिपि—नागरी [illegible] १८६६ वि० (लगभग), लिपिकाल—स० १६३१ वि०, प्राप्तिस्थान—[illegible] उपाध्याय, ग्राम—सुदीकपुरा (तारडीह), पोस्ट—[illegible], जिला—[illegible] ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथराम गीताष्टक लिख्यते ॥
॥ सोरठी राग ॥

रघुवर अस कैसे वनि आवै ।
जब निज तन सु धरत जन तन धरि सो सपनेहूं नहि भावै ॥ १ ॥
सहन शील सतोष दया हरि भजन भलो [illegible] मावै ।
कोह क्रूरता द्रोह मोह तन पोहन हो मन गावै ॥ २ ॥
असमंजस सब भाति पाप परि दाप ताप [illegible] पावै ।
श्री रघुनाथ अनाथ नाथ बिनु को हिय तपनि बुझावै ॥ ४ ॥

अंत—

अबहि तें अकुलात मैं [illegible] [illegible] ।
फस्यो बूक बिनु भेद धावे पाल पर्‌यो आय ॥ ६ ॥
उचित शम दम दान जप तप नियम आगम [illegible] ।
आपु सम सब लोक जानहु सहज [illegible] [illegible] ॥ ७ ॥
अजहूँ भल है भजहु चित दै तजहु [illegible] [illegible] ।
दीन जानि रघुलोन करिहै कबहुँ [illegible] ॥ ८ ॥

इति संवत् १६३१ लि० मा० मुरलीधर ।

विषय—राम की स्तुति की गई है।

संख्या २८३ड. राम गीताष्टक, रचयिता—मातादीन शुक्ल, स्थान—अजगर; प्रतापगढ, पत्र—७, आकार—१०½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० देवनाथ उपाध्याय, स्थान—खेटकुरी, पोस्ट—धम्मौर, जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि—अथ राम गीताष्टक लिख्यते ॥

॥ सोरठी रागे ॥

रघुवर अस कैसे वनि आवै।
जब निज तन सुधरत जन तन धरि सो सपनेहुँ नहि भावै ॥ १ ॥
सहन शील संतोष दया हरिभजन भलो श्रुति गावै।
कोह क्रूरता द्रोह मोह तन पोहन ही मन धावै ॥ २ ॥
ठवर अवर दिशि गमन अवर दिशि कवन भवन पहुँचावै।
निज अचरन विपरीत देषि एह रीति भीनी सतावै ॥ ३ ॥
नयन कोन मम ओर निरषि सुनि कै निहोर अपनावै।
कौतुक तोर न थोर मोर हित अव प्रभु भोर न लावै ॥ ४ ॥
असमजस सब भांति पाप करि दाप ताप तिहुँ तावै।
श्री रघुनाथ अनाथ नाथ विनु को हिय तपनि बुझावै ॥ ५ ॥
विषयलीन मतिहीन दीन की बिगरी कवन वनावै।
अगुन गीध गुह गज गनिका गति सुनि भरोस दृढ आवै ॥ ६ ॥

अंत—

हे मन मरत नाहक धाय।
दुख हरन सुख करन रघुवर चरन सरन विहाय ॥
उचित शम दम दान जप तप निगम आगम गाय।
आपु सम सब लोक जानहु सहज शोक नशाय ॥ ७ ॥
अजहुँ भल है भजहु चित दै तजहु जग की वाय।
दीन जानि स्वलीन करिहै कवहुँ कोशलराय ॥ ८ ॥

इति ॥ सम्वत् १९२२ आषाढ शुक्ल पौर्णमास्या लिखितेयं रामगीता सकल दर्शनाभिज्ञ विवुधवर नाथूराम त्रिपाठिना ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—रामभक्ति वर्णन।

संख्या २८४. अध्यात्म रमायण (वाल तथा अयोध्या कांड), रचयिता—माधव दास (मध्वादास), कागज—बासी, पत्र—४३, आकार—१३½ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०५, पूर्ण, रूप—जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री सरस्वत्यै नमः श्री राम चरणाय नमः ॥ अथ रामायण लिप्यते ॥

॥ चौपाई ॥

सुत वर्णैरर्पणं ॥ केवल ब्रह्म अम्रतपानं ॥ टेक ॥
नारद गये ब्रह्म लोक मझारी ॥
संका सहत कीन्हीं.....ब्रह्मा कूँ कीन्ही संतवन ॥
नमो देवाधि देव प्रभु भगवन ॥ १ ॥

पाप हंता दोउ रामाइण ॥ सीख गुणत करै पारायण ॥
श्री दामोदर को सिषि वषांणत ॥ मधवा दास कछ् नहीं जाणत ॥१६॥

विषय—बालकाड और अयोध्याकाड तक रामचरित्र वर्णन ।

संख्या २८५. तत्व चितामणि, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—५¾ × ८⅜ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५६०, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० २६, पु० स० ५ ।

आदि—अथ तत्व चितामनी लिखते ॥
सत्य सब्द श्री गुर के उर धरि । हरि किन भजीये मन वचक्रम करि ॥ १ ॥
अपावन बुंदतें पावन वप भयो । ताको मरम कछु नहि लयो ॥ २ ॥
गरभ वाम मै किहि विधि होतो । गरवीत भयो विसरि गयो सोतो ॥ ३ ॥
नीचो मुख ऊंचे हे पाय । तहा तू वदत ऐक चित लाय ॥ ४ ॥

मध्य—
धनि धनि भाग व्रज नारि ॥ तिन संग रमत कृष्ण मुरारि ॥ ११॥
सुर नर नहि न पावत पार ॥ सो हरि षेलत नंद द्वार ॥१२॥
विस्व करमा वियकित भयो देषि देषि नंदनंद ॥
घुटरनिलनि किलकत हसत अवगति आनंद कद ॥१३॥

अंत—
निस दिन गावत है हरिदास ॥
तुम न मांनि करि व्रज वास ॥१८॥
व्रजरज सुभग जिवनि मेर ॥
सरनै राखि नंदकिसोर ॥१६॥
सब विधि कारन करन तुम जान राय जगदीस ॥
माधौदास वछित इहै चिन्हन चरन को सीस ॥

इती श्री ततु चितामनी संपुरन शुभ ॥

विषय—भक्ति और ज्ञान विषयक वर्णन ।

संख्या २८६क. मुरली की लीला, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—५¾ × ८⅜ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० २६, पु० स० ५। ।

आदि—अथ मुरली की लीला लिखते ॥
श्री गुर गोमिद कौं सिर नाऊं ॥ तुम्हरी कृपा मुरली गुन गाऊं ॥ १
मुरली मोहन कुं अति प्यारी ॥ छिन न रहत गिरिधर तें न्यारी ॥ २
कबहुक कबहुं कटि सोहै ॥ मुखि बैठी मोहन मन मोहै ॥ ३
अचल चलै चल धीरज गहै ॥ प्रेम प्रवाह सबनि उर वहै ॥ ४
नदनंदन ऐसें वस कीनें ॥ भए त्रिभंगी अति रस भीनें ॥ ५

मध्य—
फुनि बुझन लग्यो पुत्री ममझाय ॥
सब अपनी परकरन सुनाय ॥१०५॥

तब मैं कहा पाछली बात ॥
सिरधुनि धुनि नाइक पछितात ॥१०६॥
पुनी जीय दुख अन जिनि धरौ ॥
पति अपने को चितवन करौ ॥१०७॥

अंत—

कुंडल मुकट पीतावर राजै ॥ मुक्त माल वैजती विराजै ॥२०६
नाचत भए कृष्ण नटनागर ॥ सर्व भेद जानैं गुनसागर ॥२०७
भावतो वर दीनो नदलाल ॥ परमानद लह्यो सब बाल ॥२०८
यह लीला जो सुनै सुनावै ॥ चितत फल निश्चै करि पावै ॥२०९
माधौ दास जाय बलिहारी ॥ चरन दास दीजै गिरधारी ॥२१०॥

इति श्री मुरली जु की लीला सपूरन समापता ॥

विषय—श्री कृष्ण का वन मे मुरली बजाना, वहाँ गोपियों का आना और मुरली सुन लेना इत्यादि वर्णित है।

संख्या २८६ख. दशम स्कध सक्षेप लीला, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१०½ × ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० १७, पु० स० ६ ।

आदि— ॥श्री गोपीजन वल्लभाय नम. ॥ अथ श्री भागवत मे दशम-स्कध लीला सक्षेप जो माधवदास कृत सूचनिका पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध की लिखियत है ॥

जय जय जय श्री जगन्नाथ श्रुति नाम मुरारी ॥
दिव्य दीव्य कर्म करि कलिमल अपहारी ॥ १ ॥
भूमि सहित ब्रह्मा इन्द्र की जब सुनी गुहारी ॥
तब जदुकुल अवतरे आय मधुपुरी मधुहारी ॥ २ ॥
जगन्निवास श्री वासुदेव देवकी गर्भ पाला ॥
पुरब दिसा जानु उदित भानु तिहु लोक प्रकासा ॥ ३ ॥

मध्य—

सात बरष के बाल कृष्ण कर्म कीयो अधिकाई ॥
नंद प्रवोधित चकित गोप गर्ग वचन सुनाई ॥३०॥
सक्र सुर अभिषेक करचो देवन दुदुभी बाजी ॥
गोरक्षा तें नाम भयो गोविंद सुर राजा ॥ ३१॥
नद वरुन तें आँनिए बैकुंठ दिखाई ॥
रास विलास कियो हरि मनमथ हरिराई ॥३२॥

अंत—प्राप्त नहीं ।

विषय—श्रीमद्भागवत दशम स्कध लीलाओं का सक्षेप से वर्णन ।

संख्या २८६ग. नारायण लीला, रचयिता—[illegible] दास जी, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—५।।। × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—३४७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भडार श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ७[illegible], पु० स० [illegible] ।

आदि—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

जय जय जय श्री जगन्नाथ नारायण स्वामी ।
ब्रह्मादि कीटान्त जीव सर्वान्तर्जामी ।। १ ।।
सचराचर वहिरावृता अभिअतर होई ।।
सर्वात्मा सर्वज्ञ नाम नारायण सोई ।। २ ।।

मध्य—पृ० १७

हाथ न हरिके कर्म करि पायन प्रदक्षिणा दीजै ।
नयन निरखि श्री जगन्नाथ आत्मा समर्पण कीजै ।।३८।।
कोटि ग्रंथ को इहै अर्थ श्रुति स्मृति पुकारा ।
वासुदेव की भक्ति विना प्राणी नाहि निस्तारा ।।३९।।
यह प्रहलाद के वचन सुनत असुर उठ्यो रिसाई ।।
मारि मारि दुष्ट ब्राह्मन को जिन इह वुद्धि सिखाई ।।४०।।
विप्र कहै सुनु महाराज मिथ्या दोस न दीजै ।
याको यहै सुभाव जो भावै सो कीजै ।।४१।।
तव वोले हिरनकसिपु पुत्र तोहि इहै वुधि कौंन सिखाई ।।
अंजलि जोरि प्रहल्लाद कहै सुनो दैत्य के राई ।।४२।।

अंत—

प्रफुल्लित कमल लोचन विसाल भाल तिलक विराजै ।
चंदन –पन सकल गात्र वनमाला छाजै ।।९४।।
शंख चक्र गदा पद्म मुकुट कुंडल पीतांवर धारी ।।
नील सिखर श्री् व्राजमान सेवक सुखकारी ।।९५।।
श्री जगन्नाथ को रूप देखि मन भयो उलासा ।।
श्री जगन्नाथ को दास गावै गुसांई श्री माधव दासा ।।९६।।

इति श्री मद्भगवद चरित्र नारायण लीला गुसांई श्री माधोदास कृत संपूर्ण ।।

विषय—श्री भगवान् के अवतारो की कथा पद्यो मे वर्णित है । जिसमे भगवत्स्वरूप, उनके अवतार धारण का कारण, भक्तो की महिमा और भक्ति का वर्णन है ।

संख्या २८७. दानलीला, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—५ x ४।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० स० ३२, पु० स० १४१५ ।

आदि—दान लीला लिख्यते ।। राग विलावल ।।

हमारो गोरस दान नदानत होई मोहन लाडिलें हो ।
कव कें तुम दानी भये लाल कव तुम लीनो दान ।।
गाय चरावें नंद की तुम सुनो अनोखे कान्ह ।। १ ।।मो०।।
हम दानी तिहूं लोक के तुग च्यारों जग जुगु वार ।।
दान न छाडो आपनो तेरो गहनो राखो हार ।। २ ।।
ग्वारि हठ छाड दें हो हमारें ममत फिर गुदार ।।

मध्य—

नेंन चाचों चातुरी लाल वोलो साचे वोल ।
मेरो हर करोरिको तेरी सव गायन को मोल ।। ३ ।। मो० ।।

सास कांम तो राम सुधरसी साइक मेक वालि संधरसी
वडा वडां सी देप वडाई मोटां सुं कीजै मित्राई ॥२५॥
ए कपिराव काजि अपाणं उदधि उलंघे सीता आणी ।
अतारे गिरि जु पति आरति मेले राम सुग्रीव हराउ मंति ॥२६॥ „

अंत—— ॥ दोहा ॥

रासी जस श्री रामरी वदं विदुप सुवेद ।
करण कुं कवि जाणं किसुं सौरंभ कव सुभेद ॥ १ ॥
नर मट्टुक जिमि नाचवं जंत्री जंत्र वजेव ।
कहिया पैं तिम मैं कये दासन दूषण देव ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ ॥ गिरनारी भरथ पासव रघुनाथ वडाई ।
व्रधि कपि वलि सुग्रीव निवाजे के कंधाव कुराई ॥ १ ॥ टेक ॥
मम वलहीण अलप सापा मिनि कट सलितन कुदाई ।
राम प्रताप स्यंघ सी जोजन उलंघत पलक न लाई ॥ २ ॥
उह जलही पायर तलि बूड़त तिलक प्रमाण कुणराई ।
लिय श्री राम नाम गिरि डारत दधि सिर जात तराई ॥ २ ॥
ऐंद्रजीत कुंभ दसाणण सुर ग्रहि वंधि वीडाई ।
सकल संग्राम मृत के कपि सेना अमृत सींच जीवाई ॥

विषय——इस ग्रथ मे लका के सेतुव्रधन तक राम चरित्र वर्णित है। शेप भाग अप्राप्य हैं।
विशेष ज्ञातव्य——ग्रथ अत मे खडित है।
हस्तलेख मे निम्नलिखित चार ग्रथ है :——
१ कोकशास्त्र भापा——आनद कवि कृत
२ सदैवच्छ सावलग्यारी वात
३ ढोला मारु चौंपाई——कुशल लाभ द्वारा सपादित
४ रामचद्र जी रो राम रासो——
प्रथम तीन ग्रथ ही पूर्ण है ।

संख्या २८९. भापा कोप (हिंदी सस्कृत मे), रचयिता——माधवदास भट्ट, कागज——देशी, पत्र——२३, आकार——४ × ७½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)——४४, परिमाण (अणुष्टुप्)——६३२, अपूर्ण, रूप——साधारण, गद्य, पद्य, लपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भडार——श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ९२, पु० स० २ ।

आदि——प्रणम्य द्वारिकानाथं भक्त नां सुख हेतवे । इयं विरच्यते भापा माधवेन मनोहरा ॥ १ ॥

स्वतो भजामि	स्वर्ग
देयते शर्मा	देवता
अरचित्व या जगत	असुर
दैनान्मिलां	दैत्य
अनमद्धाता त्वाच	अपछरा
अस्मानव ध्रुवं	आकाश

मध्य——पृ० २३

पौलस्त्य नाशकां	पोता
धर्मादव	आजा

दानव नांशन	दादा
भाविश्वानयमे	भानेज
भावं देहिमे	भाभी
वरयामिते	वहिनि
शावंरंह	शालक
मोद्गोत	मोगा
सादरं मित्र	साढ़
जेम ह्निन्	जमाई

अंत—

अहो अये	करयो करे
अयि पुनि	परि
अर्द बहुरि	करी
अये अचार	करे
बहुरयो अंसो	मेते
अंग भो	मे ते
ह्रांतर्नेपि	हाँ
निहार	॥ ए ॥

विषय—शब्दकोप विषय। यह अमरकोप की शैली पर है।

सख्या २९०क. राग प्रकाश, रचयिता—राधामाधव सिंह, (अमेठी, सुल्तानपुर, अवध), कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—७८, आकार—८ × ६, ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—शकाब्द १७८०, प्राप्तिस्थान—रतन सदन, पो०—अमेठी (... ...), जिला—सुल्तानपुर, अवध।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥

श्री सत गुरपद पंकरह प्रनवो सहित सनेह।
दास विनै सुनि करि कृपा विसद विमल मति देह ॥ १ ॥
भवतारनि कारनि जगत सुयस विहारनि मातु।
अधम उधारिनि अघहरनि गुजस वेद विख्यातु ॥ २ ॥
:o: :o: :o:
दिनकर कुल कछवाह तें बंधुल गोत प्रसिद्ध।
"नृप माधव छितिपाल जू" कियो राग की वृद्धि ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

विदित अमेठी देश अवध प्रजा मध्य में।
कीन्ह्यो वास नरेश रामनगर आश्रम सुभग ॥ ५ ॥
गुरु पंचमी मधुमास साके सरह में छन्यो।
विरच्यो राग प्रकाश ... ॥ ६ ॥
बुध जन सर्व म दानि ... ।
... देखि सुधारि हैं ॥ ७ ॥

अंत—राग देश ताल कच्ची होरी

सजि भानु तनै गृह होरी।
मुनि क्रोध प्रगट की जोरी।
निसि वीति समय जो होवै।
दोऊ लै लै अग भिजोवै॥
प्रथमहि जो माता षोवै।
सो लपटि प्रीति सो तोरी॥
जमन शोक विच होई है भूषित वा थल सोई॥
तप्त पति शिर जोई उडि दिशा पूरि चहुँ वोरी॥
तू देव सदा उपकारी सुन हे मिथिलेश दुलारी॥
यह दास विनै अति भारी "क्षितिपाल" क्षमों भुमषोरी॥४४०॥

विषय—राग रागिनियो कासग्रह।

रचनाकाल

गुर पंचमि मधुमास साके सत्रह सै असी।
विरच्यो राग प्रकाश वहु ग्रंथनि अवलोकि कै॥ ६॥

संख्या २९०ख. स्तुति (?), रचयिता—नृपति माधव, पत्र—१०, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कु० हाकिम सिंह, ग्राम–खजुराहा, तहसील–रामनगर, राज्य–छतरपूर।

आदि—

गिरजा अति सोहन सुंदर सुष मय प्यारी॥
मुंड माल गर चद्र भाल लषि गरल कंठ छविवारी॥
सीस जटा अहि मुकटि विराजति निकल गंग जलधारी॥
नंदी गन वांघवर सोभित भस्म अंग सुभकारी॥
भाग धतूर अहार करन नित अवढर दांन दारी॥
कह लग कहों त्रिलोचन तुव गुन सारद की मति हारी॥
माघव नृपति चरन सेवक लष अलवेली छवि भारी॥ ६॥

मध्य—१२ सं० पृ०

......वारघ मैं रैन दिन क्यों भटकत मतिमंद॥
माधव नृपति सीष सुनि भनि श्री गोकुल चंद॥३८॥

अंत—प्रभु दस अवतार धरे।

मछ्छ रूप ह्वै वेद अवारे धर्म हि प्रगट करे॥
कछ्छ रूप भूमि के भारहि आपुन लै निवरे॥
सूकर रूप दसन धर धरनी जल ऊपर निसरे॥
नरहर ह्वै हिरनाकुस..................॥
..............................॥
..............................॥
..............................॥५६॥

विषय—भगवती, भगवान शकर, भगवान् कृष्ण, भगवान् राम आदि देवी देवताओं की स्तुति की गई है।

भूचर गगनचार पशु पंछी चित्र के से होइ ताकें सुनें चुकें चितकी चगनता ॥
पंचमोपवेद ताको अगम अपार भेद सुगुन कूं सुगम है ठगीले कूं ठगनता ॥ ४ ॥
मध्य—पृ० २ प्रथम नायक वचन
मेरो मन आतुर अधीर अति प्रानप्यारी मन में भुलायो जानुं धाय मिलु अवही ॥
लांवी वांहि करिकें लगाय लेहु कठ २ चुवन अधर पान तृषा मोहि सवही ॥
कर सौं मसकि कुच कुंभ की कठिनताई देखहुं कहत मान जक परें तवही ॥
छिन एक जास्यो तो वरसें विहात सात तुम कहो राति प्रराति परें कवही ॥३०॥

तदनंतर नायका के वचन सवैया ॥ ३१ ॥

जोइ तुम कही सोइ लिखी है करेजा वीचि मेरे वस नाहि प्यारे मोहि व्याही रली है।
जानत जगदीस कें यो जानत हमारो जीव पीउ तन वारि डारु ओर कहा चली है।
गए विहु जाम तिहुं याम जात कौंन देर हाथ अध हाथ मे यो वात आय मिली है।
इतनी अधीरताई छोरि देहु प्रानप्यारे तुम हो सुजान मान लोक लाज भली है॥३१॥

अंत— ॥ सवैया ॥

आदि सुराग सुभाषित सुदर रूप अगूढ रु गूढ वतीसी ।
पंच संयोग कहे तदनंतर प्रीत की रीत वखान तीसी ।
संवत चद्र समुद्र शिवाक्ष सशी युत वर्ष विचारत तीसी ।
चैत्र सिता वसु छवि गिरापति मांन रची युं संयोग वतीसी ॥७३॥

इति श्री मन्मान कवि विरचितायां संयोग द्वात्रिंशकायां नायक नायिका परस्पर संयोग नाम चतुर्थोन्माद. ॥ पं० केसरीचन्द्रेण लिपि कृतं ॥

विषय—सयोग शृगार के भेदोपभेदो का वर्णन सक्षेप मे किया गया है। ग्रथ की भाषा परिमार्जित और टकसाली है।

संख्या २६२ख कवि कोविद, रचयिता—मुनिमान जी, (वीकानेर), कागज—देशी, पत्र—११८, आकार—६$\frac{2}{10}$ × ६$\frac{1}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७४५ वि०, प्राप्तिस्थान—प० सुरेद्रनाथ चौवे, ग्राम—लगडपुर, पो०—पीरनगर, जिला—गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशानभ अथ श्री कवि विनोद लीख्यते।
उदित उदोत जगमग रह्यौ भानु कवि ओसे ही प्रताप आदि रिख्यव कहत है ।
ताको प्रतिविंव देखि भगवा न रूप रेख ताहिन मो पाप पेषि मंगल चहत हैं ।
ओसे करो दया मोहि ग्रथकरो टोहि टोहि धरो ध्यान तोहि उमगत हैं ।

॥ दोहो ॥

परम पुरुख परगट वहुति त्रिभुवन रवि सम वीर ।
रोग हरण सव सुख करण उदधि जमे गंभीर ॥

:o: :o: :o:

गुरु प्रमाद भाखा करी समुझ सकें सव कोइ ।
और वध रोग निदान सभ कवि विनोद यहि होइ ॥

:o: :o: :o:

संवत सतरह सैय पैंतालीश वैसाख शुक्ल पक्ष येमी दिनें सोमवार दैं भाख ।
और ग्रथ सभ मथन करि भाषा कही वखान ॥

जाको गछवासी प्रगट वाचक सुमती मेर ।
ताको सिम "मुनिमान जी" वासी वेकानेर ॥

अंत—अथ पुरा पट कथनं ।

शास्त्र दान न दान वह दान अभय नित यहि ।
भोजन दें तो गुण अधिक भेदज निरख्या प्रीति ॥
रोग हरण तातें अधिक लोभ छाडा र्म देह ।
वधं सुज समार में परभव गुण का गेह ॥

इति श्री खरत स्य छ प वाचनाचार्य श्री सुमति मेर गरिात शिष्य "दुर्गमान जी" कृत कवि विनोद नाम भाखा सप्तम खड समाप्त ।

वधेज का औषध गोद किकर की गाजर बीज गोप्रक्षर बीज वद [illegible] सब मलेणे सम सम मिश्री दुरगक पंना १ औषध न जने तो [illegible] टीम ते ८ [illegible] मासे ४ गाडी कूं मासे ३ धतूरा का तामरच रत्या ३ लौंग माले २ आमलनाम रती ८ मे ॥

विषय—वैद्यक ग्रंथ रोग और औषधियों का वर्णन ।

संख्या २९३. पाडे लीला, रचयिता—मानिक [illegible]—[illegible], पत्र—८, आकार—४¾ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १७११, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible], श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ७, पु० न० ३ ।

आदि—प्राप्त नहीं .. ..

मध्य—पृ० ४

परम प्रवीन पाक करि लीन्हो । व्रजरानी जी आय दीन्हों ॥३७॥
पनवारे की रचना करी । दृत पाति [illegible] की धरी ॥३८॥
लीवू पाच कागदी आने । दूना बीनक धरे सयाने ॥३९॥
पनवारो कीनो परस्यो सब । जीवो जगजीवन मेरे प्रभु ॥४०॥

अंत—

पाडे कह्यो सो जसोदा जान्यो ।
जसोदा कह्यो सो पाडे मान्यो ॥१०१
पाय प्रसाद मोद मन आन्यो ।
जीवन जन्म सुफल करि मान्यो ॥१०२
बार बार यह गाथा गाई ।
मानिक महरि गोद भरि लाई ॥१०३
कहे सुने हरि लीला गावे ।
सो हरि नाम परमपद पावे ॥१०४

समाप्त. ॥ संवत् १७११ वर्षे मार्गसर मास [illegible] प्रतिपदा दिने [illegible] समाप्त लीखत चरणरज मात्र गोकुल दास सोम जी ॥

विषय—श्रीकृष्ण की पाडे लीला का वर्णन ।

संख्या २९४ [illegible] रचयिता—[illegible] देशी, पत्र—४, आकार—१०¾ × [illegible] परिमाण [illegible] १०९, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी [illegible] काशी नागरीप्रचारिणी सभा वाराणसी। [illegible] पोस्ट—[illegible], जिला—[illegible]) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ डाक चक्रम ॥

कवित्त

भानु के भादि को आदि करो रजनीपति लै गनना करिये ।
हर नएन ३ के भाग सो शेष रहै एक पंथ चलै न धरै डरिए ।
भूमि भयानक है दुसरे तिसरे सब सिद्धि सदा कहिए ।
शिर शत्रु हू के रन खडन को मत गुप्त विचारि सदा रहिए ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

रजनीपति आदि गनै भटभादि किए ग्रह शेष वचै नव एक न ग्राम मे शत्रु सिवान कही ।
नेत्रा २ पृ ८ वचै पुर मध्य रहै मुनि ७ राम ३ महीपंथ जात सही ।
वेदा ४ ग ६ वचै गृह मध्य रहै शर ५ शेष नचै निज सैन्य कही ।
एह "छत्रपती चौहान" भनै "वलिराम प्रताप" ते सिद्ध यही ॥ ६ ॥

जन्म पंचमे सप्तमे उदय अस्त स्वर जाहि ।
"मिहिर" कहे कवि काम सो संगम लीजै ताहि ॥

अंत— ॥ अथ क्षेत्र पाली ॥

पूरव ते मधुमास दई अपसव्य चतुष्ट दिशा ठहरानी ।
मघवा दिशि ते पुनि मारग मास चलै दहिने गुनवास वपानी ।
भुक्ति चतुर घटिका कहिए दहिने अरु पृष्टि रहै मनमानी ।
नरमध्य हजार के वीच हराउ लहै न हिए भय मानी ।
द्वादस १२ पत्र अजा १ दि लिपी अप सव्द जहा रवि भादि परै ।
कोनन पांच घरी को नेवास दिशा मे अढाइ घरी न टरै ।
एन्ह की गति सव्य सदा कहिए यह चारु विचारि के युद्ध करै ।
नर केहरि है परसैन्य के वीच परै गज यूथ हजार हरै ॥

इति समर सार समाप्तम् ॥ सं १६१२ आश्विन वदी ६ आजमगढ़े ली० ॥

विषय—युद्ध मे विजय पाने के निमित्त शुभाशुभ फल वर्णन ।

संख्या २६५. गगा पुरान, रचयिता—मुकुद, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गंगा पुरान लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चर्न शरोज रज शिर पर धारन कीन ॥
सिव मुकुंद वर गुन कहे सरस्वती वर दीन ॥ १ ॥

॥ चौपई ॥

तीन नैन उपवीत भुजंगा । सदाँ पार्वती तन के गंगा ॥
सशि लिलाट माँथे में राजै । भागीरथी जटामें गाजै ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

संकर दीन दयाल, विन्ती मेरी मानियें ॥
निज्जन होउ कृपाल, आसख दीजै पर्म हित ॥ ३ ॥

॥ चौपई ॥

सुनहुँ नांथ एक विन्ती मोरी ॥ स्तुति कवन मति करौं तोरी ॥
मैं मतिमंद सर्व गुन हींना ॥ कैसें संकर गुनगन चींना ॥ ४ ॥

कवित्त

माघ सुभ मास शुध पक्ष पाचैं सोमवार सवत गुणीस आठ उग्र काज कारी को ॥

मध्य—पृ० ११५

श्री गौरीपति महाराज शंभु वडे देवा ॥
आप आहार करत विजिया को देत जनन कूं मेवा ॥
सुर नर मुनि जिहँ ध्यान धरत हैं करत निरतर सेवा ॥
रूप अनूपम वरनि सकै को निगम न पावत शेवा ॥ ७ ॥

हिमतनया शंकर की प्यारी ॥
पीतम अर्द्ध अंग मधि राजत विडद धरत अति भारी ॥
जासु नाम जन जपत निरतर तन मन पावक हारी ॥
लहत सुरूप अनूप रिद्धि सिधि कहि पुरान श्रुति चारी ॥ ८ ॥

अत—

में तो होरी खेलूगी सुख रग जोगी रग भीना सग ॥
जोग जुगत वनायकै सजनी पीतम प्रीत उमग ॥
जोगन नाचन चायकै डफ डरु वाजन चग ॥
रुप सजगी जोग अनोखा निरमल नीर सुगंग ॥

इति श्री रूपदेव्या विरचिते रूपमजरी ग्रथ सपूर्णम् ॥ श्री माजी महाराज रहा्पुर वाला लिखायतम् । अलवर मध्ये माघ कृष्णा ५ सवत् १६२८ ॥

विषय—स० १६०८ माघ, शु० ५ सोम को विनय भूप की रानी राणावत ने मदिर वनवाकर उसमे ठाकुर जी को पधराया, उसी का प्रस्तुत ग्रथ मे वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—लिपि सुदर है । पुस्तक के आदि भाग मे 'रूप मजरी' नामक ग्रथ लिखा गया है ।

संख्या २६७. भ्रमरगीत (प्रेमरस पुजनी लीला), रचयिता—मुकुददास, जनमुकुद (नददास), पत्र—७, आकार—६॥ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० व० स० २४, पु० स० ८ ।

आदि—उधो के उपदेश सुनो व्रज नागरी ॥
रूप शील लावन्य सर्वे गुन आगरी ॥
प्रेम धजी रस से रूप नी उपजा रमा निरसपुज ॥
सुंदर स्यांम विलासनी नव वृंदावन कुंज ॥ १ ॥

मध्य—चोर चीत ले गए, कोऊ कहे ऐं निठुर इन्हें पातकु नहीं लागे ॥
पाप पुन्य के करन हार ऐइ आयें ।
इनके निर्दे रुममे नाहीन कोऊ चीत्र ।
पप्यावत प्रानन हरे पुतन वालि चरीत्र ॥३५॥

अंत—तरंगनी वारी जो ।
गोपी आपु दीखाय ऐक कीनी वनवारी ॥
ऊधो भएे माइ वारी डारी व्यय मोह कचारी ॥

विषय—पिंगल विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । केवल संख्या ५ से १७ तक के पत्ते उपलब्ध है ।

संख्या २९९. संतान कल्पलतिका, रचयिता—मुन्ना, कागज—आधुनिक, पत्र—४, आकार—१०¾ × ५⅓ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस (दाता—कृष्ण सेवक मिश्र, ग्राम—सहनुडीह, पोस्ट—बरदह, जिला—आजमगढ) ।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ संतान कपलतिका (?लि) ष्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमहि नारि पुरुष की लेइ परिछा बूझि ।
फिरि पीछे सह्य युक्ति करि करैं परैं सो सूझि ॥
सेत सर्प या मूत्र मे ढूनो देइ भिगोइ ।
तिसरे दिन जामें नही दोष जाहि मे होय ॥
वध्या सात प्रकार की सुनहु तासु कर नाम ।
ताकी विधि जो लिषत हैं करें साइ सिद्धि काम ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

वध्या प्रथम नाम हैं सिलिर । उदमा दूजे सुनिए तिसर ॥
यहै माली अनीली चौथी को । चर्चा दीप चई को टीको ॥
छटई कृम सतई संतानी । सातौ नाम क्रम ते जानी ॥
लक्षण पृथक पृथक सकेरा । कहत उमा सो सुनहु निवेरा ॥

अंत—होइ है सुपुत्र सुंदर जाहिर जहान मे ।
यह बात सत्य मानो आइ "मुन्ना" के मन मे ॥

:o: :o: :o:

वनवाय के सोहाग सोठि नारि पाय जब ।
इससे किए से वेगि तासु रोग जाई सब ।
तव सुद्ध होय चौथे दिन तब नहाइ कै ।
फिरि सो विलास करैं मर्द संग जाइ कै ।
लोहवान कोटि आस्रो इलाज औ जीज पुनरनवा ।
लेप वाटि लिंग लावैं यह तीनो दवा ॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—वध्या रोग की औषध आदि का वर्णन ।

संख्या ३००. मेघमाला, रचयिता—मुनि मेघराज, (स्थान—फगवाड़ा), कागज—देशी, पत्र—५३, आकार—८ × ६⅓ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७९५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१७ वि०, लिपिकाल—सं० १९३९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामसुंदर पाडेय, ग्राम—पाडेपुर चक, पोस्ट—बक्सा, जिला—जौनपुर ।

आदि—ओं श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री भडली मेघमाला लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

परम पुरुष घट घट रम्यो ज्योति रूप भगवान ।
सकल सिद्धि सुख देन प्रभु नमो मेघ धर ध्यान ॥ १ ॥

॥ चरपटछंद ॥

श्री जटमल मुनिस जी सब सब साधन राजा ।
परमानंद ससो जहे गृंथन गुन साजा ॥
सदानद भयो शिष्य ताहितें उपमा भारी ।
चौदह विद्या जुक्ति सुगुरु के अज्ञाकारी ॥६५॥

चौ० तासु शिष्य नारायन नाम, ताको शिष्य सुनरोचम, तिनकी दया भई मुझ पर।
मुनि ससि वसु महि जान विक्रमदित संवत आषत।
कातिक सुदी गुरुवार पंचमी तिथि सुभभाषत ॥

इति श्री मेघ माल मुनि मेघराज विरचिते...पचमोध्याय भडली ग्रंथ समाप्तम सुभ संवत् १६३६...... .... ।

:o: :o: :o:

विषय--दिन, मास और बादलों को देखकर वर्षा का वर्णन ।

रचनाकाल

मुनि ससि वसु महि जान विक्रम दित संवत आषत ।
कातिक सुदी गुरवार पचमी तिथि सुभ भाषत ॥

विशेष ज्ञातव्य--ग्रथ पूर्ण है । केवल चौबीसवाँ पत्र लुप्त है ।

संख्या ३०१क. ऊपा चरित्र, रचयिता--मुरलीदास, कागज--देशी, पत्र--३३, आकार--५¾ × ३½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६१, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सवत् १८८८, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नम. ॥ अथ ऊखाहरन लिख्यते ॥
सब संतन की आज्ञा पाऊ । सत मन सत गुरु को सिर नांऊ ॥ १ ॥
सारद मोहि बिसरि मति जाइ । भूले अक्षर देहु बताइ ॥ २ ॥
जे जे कृष्ण रुक्मणी राणी । रटत परद मुनी के मन मानी ॥ ३ ॥
ऊखा अनरद को संजोग । चित दे सुनो कटे जो रोग ॥ ४ ॥
बाणासुर प्रेहेलाद को पंती । बल को सुत लोचन को नाती ॥ ५ ॥
जिनकी उतपति कुवरि भई जो । जिनके निमति अनग्र सुत आई जो ॥ ६ ॥
जनमत अग्य मदीए जनाई । असुर भुजा कापी अकबाई ॥ ७ ॥
एरे पडित चतुर बिवेकी । लगन घडी जन मोती देखि ॥ ८ ॥

मध्य--
जीनसो अरस परस ह्वै बोले । अतर कमल किवारी पोले ॥२०२॥
राधावर रुकमनी कुत्रजावर । धरनीधर मुरलीधर गिरिधर ॥२०३॥
सदा रहित हमारे मस्तक पर । बिप्रत सुवत बरनी उनमाना ॥
ऋपा करो कछू गुरु भगवाना ॥२०४॥
गुरु भगवान कृपाकरी बानी होत प्रकास ।
कछूक गुन ऊखा अनरद के बरनत मुरलीदास ॥२०५॥

इति श्री ऊखा चरित्र सपूर्ण ॥ शुभ भवतु ॥ हरि ॥
विषय--ऊपा अनिरुद्ध की कथा का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रथ चत्रभुज दास कृत 'मृग कपोत की लीला' के साथ एक हस्तलेख मे है ।

नगर तमारो मनरहु मारचो ॥
दर्शन विना दु.ख पाअं भुनत मोरली दास आयो मेरे चाईआ ॥ १ ॥

मध्य—
माहु मनकी मनहि जाने मनहि नन करवट वही ॥
देखो री सखी हम मरे न जीवं ॥
जेसी परी तेसी सहि कसन कस सीस धमके ॥
सीत मेल्यो सान के पेले दाख दिखाय आछे जहर दीयो हर जानके जरन मिटगर नीज कतज भइ ॥
कहो कहा वाते भइ भनत मुरलीदास वल जाउ मनही मन करवट वही ॥ ८ ॥

अंत—हर आये मेरे मन भाये मुतियन चोक पुराइय्यां ॥
अठसठ तिरथ नाहे को सोन्नहि फल वारोमासी गांइया ॥१३॥

विषय—वियोग और सयोग शृगार पूर्ण वारामासी ।

विशेष ज्ञातव्य–हस्तलेख मे पृष्ठ सख्याएँ लगी हुई नही है । आदि मे अन्य पद और अन्त मे पत्नो मे भी अन्य पद लिखे हैं । मध्य के पत्नो मे यह वारामासी है । पुस्तक जल से भीगी हुई प्रतीत होती हे ।

संख्या ३०३. भागवत भाषा पचम स्कध, रचयिता—मुरलीधर, कागज—देशी, पत्न—५५, आकार—१०$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४०, खडित, रूप—प्राचीन (अत्यत जर्जर), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेश. . .मः ॥ अथ भागवत पंचम स्कंद भाषा लिप्यते श्री मुरलीधर कृत्य ॥

॥ छप्पै ॥

परम जोति पूरण प्रकास भूतल अकास गति ।
नित्य शुद्ध चैतन्य अधिक सूछम असेप मति ।
जलयल रह्यो समाइ लोक लोकनु कौं वासी ।
आदि अनत अगाध अखिल व्यापक अविनासी ।
नायक अखंड व्रह्मंड को वहै जसोमति सुत भयो ।
सुमिरतु मुरलीधर जोरि कर प्रतिपालक जिनि पन लयो ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

वरनो श्री सुकदेव करी वृष्टि जिनि अमृत की ।
परम भागवत भेव जगत कृतारथ कौं कियौ ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

जाहि विरंचि समाधिनि साधि अगाध अनंत न भेद वतायौ ।
जाके लियें सव सिद्ध प्रसिद्ध सदा धरचौ ध्यान नहीं मन आयौ ।
जाकहु वेदहू सोधि रहे अनुमान हीं तें सुमिरचौ गुण गायौ ।
सो मुरलीधर श्री शुकदेव परीछत कौं परतछि सुनायौ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

नवल सिंह नृप नैं कह्री मुरलीधर कविराइ ।
स्कंध पांच यौं भागवत भाषा देहु वनाइ ॥ ४ ॥

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ नल चरित्र लिप्यते ।।

।। छड़पय ।।

मुप मतंग उत्तग रग चर्चित सुरंगवर ।
सुड दड सिदूर भूरि पूरित प्रचंतु कर ।
जगमगात दुति दसन रस्तन मधि वाना राजे ।
मुरलीधर शशिवाल भाल पर सदा विराजे ।
सवत सुरेश गधर्व गन गुन मडित पडित सरन ।
नवनिद्धि वृद्धि दायक वरद गननायक वदहु चरन ।। १ ।।

।। दोहा ।।

एक समे उरमे उठी कठिन विरह की लाय ।
जेतो ताहि वुझाइये तेती वाढति जाय ।। २ ।।
अकसमात सतसग तें सुनी कथा दे कान ।
वहुत नृपति की विपति सुन समुझन लागे प्रान ।। ३ ।।
आपधि कौ करिवौ उचित जसे दीरघ रोग ।
तेसेंही विपदा परें धीरज धरिवौ जोग ।। ४ ।।

मध्य—

।। छप्पय ।।

एक आपु कछु देहि और पै नाहि दिवावै ।
एक दिवावै दानु दैन में नहि मनु लावै ।
एक दिवाहि देह वेंन मृदु वोलि न जाने ।
"मुल्लिधर" इहि भांति दान गुन गनन वखाने ।।
कछु देहि दिवावहि इते पर मधुर वचन मुप पर लसहि ।
गुन सहित तीन ससार मे कहूं कहू सुपुरुप वसहि ।।६८।।

।। सवैया ।।

हेरत हूँ नहि हेरत हौं हम वात कहैं तुम वोलत नाहीं ।
मागत मैं मन रूपो करी चरचा मे लपै छल की परछांही ।
पूछत हौं नलराय तुमे तुम भूंठ की वीथी किती अवगाहीं ।
चंद तौ रापत एकही अक अनेक कलंक वसे तुम मांही ।।६९।।

।। तोमर ।।

यह सुनत नृप नलराय । लिय ललित नेंन नवाय ।
सुरराज सौं यौं वैन । हँसि कहि उठे सुपदेंन ।।७०।।
हम होहि तौ तव दूत । तुम देहु शक्ति अभूत ।
लहि चहै मंदिर जाय । नहि नेक होय लपाय ।।७१।।

।। दोहा ।।

तवै सुरन मिलि वर दियो तुम्हे लपै नहि कोय ।
हम चहुंन मे एक की दमयंती तीय होय ।।७२।।

:o: :o: :o:

अंत—वेद भूमि वसु ससि लपौ सवत माघ सुमांस ।
कृष्ण पक्ष कुज सप्तमी कीनौ ग्रंथ प्रकास ।।८८।।

अथ कवि कुल वर्णनं ।। दुमिल छद ।।

विप्र माथुर वंश भारद्वाज प्रगट्यो आय ।
पिता दिनमणि पढ़े ज्योतिप भए ज्योतिप राय ।।

पुत्र मेने पढो कविता भयो रघुवरदास ।
नाम मुरलीधर दियो उन कियो जगत प्रकास ॥८९॥
दई करिकें जीविका उन गेह दिल्ली ईस ।
भयो अब उत्पात उनके वस विस्वावीस ॥
ह्वै गयो है राज औरे गई गुन की चाह ।
रहत बेठ्यो सदन रघुवर करत सहज निवाह ॥९०॥

॥ सवैया ॥

जिनको जनम भरि वनज न करि आयो साहु मन भायो सेवानूर तामेको परै
ह्वै सके न पच परपचहू न करि जान्यो मान्यो तिनहू सौं स्वाद मुर्ष कह्यो न परै ।
देवन अराध्यो कोऊ वृत्त नहि साध्यो "मुरलीधर" रघुवर सोच एते पै रचे हरे ।
ऐसे ऐसे कायर कपूतन के पेटन कौं पूत दशरथ के सपूत दिन को भरै ॥९१॥

॥ गीतिका ॥

पुरिषा सदा तें वसत आए आगरे सुभथान । टोला मथुरिया कोटि के ढिग निकट तनथान ॥
अवलो वन्यो है वास ह्वाही कृपा रघुवर पाय । नल भीम जाकी कथा वरनी हिये हर्ष बढाय ॥

:o: .o. o.

पवित्रता सरीर मे सदा वनी रहे सुभाय । अनेक भोगभाग पुत्र मित्र के लहे बनाय ।
वढे प्रभाव ठौर ठौर शभु की प्रसाद पाय । नलेस भीमजा कथा रटे सुने जु चित लाय ॥९२॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते नलोपाख्याने नल दम्पती स्वदेशागमनो नाम षो डशो विलास. ॥१६॥ समाप्तायग्रथश्च ॥ सवत् १९१० मिति माघ शुक्ला १२ गुरौ लि० भोलानाथ पठनार्थ वनस्याम ।

विषय—महाभारत के आधार पर नल चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

४ १ ८ १
वेद भूमि वसु ससि लयो सवत माघ सुमास ।
कृष्णपक्ष कुज सप्तमी कीनो ग्रथ प्रकास ॥८८॥

सख्या ३०४ख रामचरित्र, रचयिता—मुरलीधर, कागज—आधुनिक कागज, पत्र—९२, आकार—१२ × ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३७, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सभवत १८१८ वि० लिपिकाल—सवत् १९०९, प्राप्तिस्थान—भारती भवन (पुस्तकालय), इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ छप्पय छद ॥

विघ्न विनासन हेत जिन्हे ब्रह्मादिक ध्यावें ।
जिनके गुन गन गनत शेष नहि पारहि पावें ॥
शंकर सुत कुल कलश कठिन कल्मष कुल नासें ।
सेवक सतत जानि सुमति दें वुद्धि प्रकासें ॥
सुमिरत "मुरलीधर" जोरि कर गनपति विनती चित धरो ।
मुष चरित राम चाहत कह्यो सकल ग्रंथ पूरन करो ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अवध पुरी के भूप भए दशरथ उदार मति ।
जीति लई दिशिचार जो अपनी भुजानगति ॥

जग के जिते नरेश रहे कर जोरे ठाढे ।
सिंधु पारहु वार तेज ससि जिनके वाढे ।
जगमगत जग मे राज अति महादान षोडश दिये ।
"मुरलीधर" भूषन भूमि के कोटि जग्य जिन जग किये ॥ ३ ॥

मध्य—भुजग प्रयात छदेन

दसग्रीव के चित्त मे रोस वाढ्यो । वड़े जोर सौ अक्ष प्रत्यक्ष काढ्यौ ॥
अवै वा कपी कौं करौ प्रानहीनो । इहा आय वानै इतो जोर कीनो ॥७५॥
तवै अक्ष सोहै लिये रक्ष आयो । हनूमान कौं वोल वाकौं सुनायौ ॥
अरे मूढ तैं क्यौं कियो सोर भारी । कहा जायगौ साग हेरी हमारी ॥७५॥
तही रक्ष दौरचौ लिये रक्ष सेना । हनूमान ठाढौ किये क्रुद्ध नैना ॥
जही भाल कौं एक भाला चलायौ । लियो हाथ सौ ऐंचि के सौ गिरायौ ॥७७॥

:o: .o: :o:

॥ दोहा ॥

यह रावन कानन सुनी लियो अक्ष कौं मारि ।
तव चिंता चित मे करी लियो प्रहस्त पुकारि ॥८२॥

॥ छद हरिगीतिका ॥

यह सुनी रावन सिंधु पर रघुनाथ आये सैंन लै ।
मग वालि मारचौ सग अगद राज सुष सुग्रीव लै ।
कपि पुंज कीनो सोर भारी चहूँ अद्रिन आयकैं ।
लगूर दौरे फिरत दिसि दिसि रहे जहँ तहँ छायकैं ॥ २ ॥

अंत—॥ अथ कविवश वर्णनं ॥

गगा जमुन के मधि गभीरा पुरीन कौ गाऊ है ।
वहु कोट ऊंचौ सुघर नीकौ परम उत्तम ठाऊ है ॥
शुभ सरोवर तट विराजत सिद्ध वीरेश्वर थली ।
उन अधिप कौ धर्मज्ञ कीनौ कृपा की भातिन भली ॥
माथुर वसै जायकै तहाँ सजै सदन सुहावनें ।
मुनि से लसत है निगम आगम गुनन ज्ञान वढावने ॥
उनही मे परमानद प्रगटे पढ़ी विद्या जिन भली ।
गुनगन सुनत ही वोलि लीनौ आगरे अकवर वली ॥
चरचा भई दरवार के मधि रीझि कैं अकवर कह्यौ ।
हम कह्यौ तुमहि सतावधानी आन मे नहि गुन लह्यौ ॥
वकसीस कीनी वहुत उनकौं मिश्र की पदवी दई ।
उन वास अपने ग्राम राष्यौ चाकरि लाकरि लई ॥
उनके सनाभि कपूरचंद तिन वास अर्गलपुर क्यिो ।
टोला मथुरिया कालिदी तट सदन वसिवे को लियो ॥
वे वसे आय कुटुव के जुत सील गुन मति षानि हैं ।
सवहीन जान्यौ सवन मान्यौ सवन सौं हित वांनि है ॥
तिनके तनय "पुरुषोत्तम" सु जिनकी सुनी कविता अति भली ।
दिल्लीस के सैनापती की चाकरी तिनकौं फली ॥
वे मिले साहिजहा वली सौं मिली वक्सीस प्यार मे ।
सोभा वढ़ाई साहि जिनकी कविन के दरवार में ॥

तिनके भये सुत "प्रेमराजन" चाकरी चित मे धरी ।
मिलवो करें सज्जननही सौं जीवका महर्जे वरी ।।
तिनके सु "पृथ्वीराज" तिनने लह्यो गुन ग्रन ग्यान है ।
सवही सराहे सुघरता कौं परम बुद्धि निधान है ।।
तिनके तनय "दिनमणि" भए जिन ग्रथ ज्योतिष के पढे ।
. . . . ।।
तिनके सुतन मे भयो "मुरलीधर" कछुक गुनवान है ।
कवि कोविदन ने कृपा करिकें लई कविता मानि है ।। ४ ।।
दिल्लीस महम्मद साहि सौं मिलि चाकरीहू करि लई ।
औरो अमीरन कृपा करि मन रीझि कें वकसिन दई ।।
यह कथा अपनी कही मे अव ग्रथ कौ कारन कहौं ।
इक वार समयौ भयो ऐसौ थिर न काहू कौं लहौं ।।
पश्चिम दिशा ते प्रवल आयौ शत्रु शोर वटाय कें ।
उन दावि लीनौ राज दिल्ली भर्ज नव रुच पाय कें ।।४६।।
उन किते मारे किते लूटे किते फीने वदि मे ।
केतेक अपने सग लीनें फसे वाकी फदि मे ।।
वह गयौ ह्वाहि दुवान के मधि राज औरे ह्वै गयौ ।
सव मिटि गई गुन ग्यान चर्चा प्रपन जग सिगरो भयौ ।।४७।।
तव चित्त आई हौहु चाकर चरित वरनौं राम कौ ।
सभै कहू जो कृपा करिहैं तो सवं ही काम कौ ।।

:o: :o. :o:

८ १ ८ १
वसु ससि वसु ससि मे लयौ संवत कातिक मास ।
शुक्ल पक्ष एकादशी रवि भौ ग्रथ प्रकाश ।।६४।।

हरिगीता छप्पय

यह चरित्र...... ....जल है ।।६५।।

इति श्री मन्मूर्त्ति मिश्र मुरलीधर विरचिते श्री रामचरित्रे श्री राम गुणानुवाद वर्णनो नाम चत्वारिषतमः प्रभाव. ।।४०।। समाप्तोय ग्रथ श्र. . . .संवत् १६०६ वर्षे प्रसाद शुक्ल ८ भौम वासरे लिखित चौवे भोलानाथ पठनार्थ पंडित घनश्याम लालस्येदम् ।। पोथी राम चरित्र की लिखी विचारि प्रचारि । भूल चूक करिहैं क्षमा बुधजन सुघर निहारि ।।

श्री रामचद्राय नमो नम. ।। श्रीरस्तु ।।

विषय—श्री रामचरित्र वर्णन किया गया है । ग्रथ मे निम्नलिखित ४० प्रभाव हैं —

१ प्रभाव	—दशरथ यज्ञ वर्णन	पत्र १ से २ तक
२ ,,	—दशरथ पुत्र जन्म	,, २ ,, ४ ,,
३ ,,	—विश्वामित्र समागम	,, ४ ,, ६ ,,
४ ,,	—विश्वामित्र यज्ञ रक्षा वर्णन	,, ,, ८ ,,
५ ,,	—श्री राम जनकपुर आगमन	,, ८ , ११ ,,
६ ,,	—दशरथ जनकपुर समागम	,, ११ , १५ ,,
७ ,,	—चत्वारि राजकुमार विवाह वर्णन	, १५ ,, १६ ,,
८ ,,	—दशरथ विदा वर्णन	,, १६ ,, १८ ,
६ ,,	—दशरथ अयोध्या आगमन	,, १८ ,, २० ,

रचनाकाल

वसु ससि वसु ससि में लखौ संवत कातिक मास ।
शुक्ल पक्ष एकादशी रवि भौ ग्रंथ प्रकाश ॥६४॥

संख्या ३०५. वाराखडी, रचयिता—मोकमदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार —७½ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३५ वि०, लिपिकाल—स० १८४० वि०, प्राप्ति स्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

सवत अठारे सै पैंतीसोतरा मगसिर वदी तिय दूज ।
सुभ दिन सुकरवार कौं लिदूं सुरसुती पूज ॥ १ ॥
समरपुर बावन जग पधान ।
सुखवासी जोगीपुरा खडेल नगर सो थान ॥ २ ॥
प्रथमं सुमरौं सुरसुती फुरत देह निहार ॥
जननी जनपं दया कर रिध सीध की दातार ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

मध्य—अपनातो कोइ हे नही स्वारथ को ससार ।
"मोकमदास अपाहजी" सतगुर पार उतार ॥१०॥

:o: :o: :o:

सुर नर मुन धावे तुभे विद्या निगम विचार ।
"मुकमदास" अधीन हैं सतगुर पार उतार ॥१४॥
"कके" करता ये सकलघर माही । बिन हरभगत मोकत हों नाही ॥
करो याद गोविंद गुन गावो । मानष जन्म पदारथ पावो ॥
सत सोइ चरनन नित ल्यावे । बस वैकुंठ मुकत फल पावे ॥
मोहकम हर को भगत पियारी । जो सुमरे सोइ अधिकारी ॥१६॥
"षषे" पोल कपट मन भाई । दुभधा दिल से देह वहाई ॥

अंत—छछे छत्रपति राजा हैं सोइ । जाको सरवर करै न कोई ॥
हुतो कछुवन ज्ञान वुध मम दइ विधाता । सुमरो गुर गनेस धन सुरसुती माता ॥
दीनदयाल दया कर भाई । तव यह बारापडी बनाई ॥५१॥

॥ दोहरा ॥

भगतहेत बारापडी पढे सुनै चित लाय ।
सतगुर के परताप से कोट पाप मिट जाय ॥
डाडे राउ करै कछु हाय न आवे । महनत करै मजूरी पावे ॥
दुवधा दिल से दूर भगावे । जब सतगुर का दरसन पावे ॥
बारापडी सुनो मन लाइ । बाढे पुन्य पाप छो जाइ ॥

इति श्री बारापडी सपुरन सवत १८४० आसुन वदी १३ श्री सुभमस्तु ॥ राम ॥ राम ॥

विषय—'क' से लेकर 'क्ष' तक के प्रत्येक अक्षर पर कविता रचकर भगवद्भक्ति का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८३५ और लिपिकाल सवत १८४० है ।

प्रस्तुत रचना के साथ 'रुक्मिणी मगल' भी लिपिबद्ध है, जो अपूर्ण है ।

संख्या ३०६क. गणेश पुरान, रचयिता—मोतीलाल, (नौबस्ता, प्रयाग), कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—८½ × ४½ इन्च, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—४१४, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८७२ वि० सन १८[illegible] प्राप्तिस्थान—प० रामधन बिल्हौवां द्विवेदी, ग्राम—दोवा, पोस्ट—[illegible] जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्री गुर चरणेभ्यो नमः ॥ श्री सीतरामानुजाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

येकरदन गजवदन कर पद बंदौ कर जोरि ।
करहु कृपा सिवनंदन वढं वुधि जेहि मोरि ॥ १ ॥

विधि वानी हरि इंद्रि खृषभछिज गिरि जातु ।
करहु क्रिपा जन जानि कैं सकल जगत पीतुमातु ॥ २ ॥

अंत— ॥ दोहरा ॥

गननायेक की कथा येह संक्रुत मध्य विसाल ।
जथा बुधि भाषा रची जड़मति मोतीलाल ॥४८॥

॥ दोहा ॥

नाग नगर के प्रगणः नौवस्ता सुभ ग्राम ।
सुरसर के तट वसत न तहा है कवि को धाम ॥ ४ ६॥
पट जोजन हैं प्राग ते पछिम दिसि सो गाउ ।
वसैं विप्र वुद्धिमान तह नौवस्ता जेहि नाउ ॥५०॥

इती श्री महाभारते श्री गणेश कथा संपूर्न ॥ मार्ग वदी तिथि पंचिमी पुष्परिक्ष भृगुवार। मारुत सुत की ध्यान करि कियो कथा विस्तार ॥५१॥ इति श्री महाभारते श्री गणेश कथा संपूरनं सुभमस्तु संवत १८७२ साके १७३६ अपढ शुक्ल नउम्यां रविवासरे क लिखितं यीद पोरहकं भवानी दीन उपाध्यायेन ॥

विषय—श्री गणेश कथा का वर्णन ।

संख्या ३०६ख. गणेश पुरान, रचयिता—मोतीलाल, कागज—आधुनिक, पत्र—२४, आकार—७ $\frac{11}{16}$ × ४ $\frac{2}{16}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—शक सवत् १७६६, प्रोप्तिस्थान—प० रामसरण मिश्र, ग्राम–तिल्हापुर, पोस्ट–तिल्हापुर, जिला–इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री भवानी जी सहाये नमः ॥ श्री पोथी गणेश पुराण लिखते ॥

॥ दोहा ॥

एक दर(? रदन) गजवदन को पगु वंदो कर जोरि ।
कृपा करो सिवनंदना वुधी वढैं जेहि मोरि ॥ १ ॥
व्यास आदि कवि पुंगवा नारद आदि मुनीस ।
जो कर ब्रह्म सेम गुरा सव कहनावउ नीस ॥

॥ चौपाई श्री राज जदुदीस्टल उवाच ॥

सुनो स्वामी तुम मदन गोपाला । उदा करो संतन प्रतिपाला ॥
विपति हमारी विलोकोउ स्वामी । क्रीपा सीधु उर अंतरजामी ॥
छल कीनो जीराजोधन राजा । जीती लिन्ह मेरो राज समाजा ॥
आनुज सहित जुवती संघ लाई । वन नीकारि दीन्ह दुपदाई ॥
तेहिते प्रभु वीनवी करा जोरी । केहि विधि पावी राज वहोरी ॥
अंत—नारी पुरुष करें व्रत कोई । सकल सिधि फल पावे सोई ॥
जो यहा कथा मुनाई जो गावे । अंतकाल सुरापुर पाहुचावें ॥

॥ दोहा ॥

गनपति की कथा एहा संमक्रीता मध्या वीसाल ।
जाया विधि भाषा राचेउ जाडमति "मोती लाल" ॥

इति श्री गनेस पुरान की कथा सपूर्णम् ॥ शाके शालिवाहन ॥१७६६ ॥कुवर प महिना श्रोस्न पछ ऐतवर दसमिका शंपूर्णम् ॥ जो प्रति देप सो प्रति लिपा मम दोप न देते ॥ पढ़िन जान सो विनती मोरी ॥ टुट अछर वचेव जोरी ॥

विषय—गणेश कथा का वर्णन किया गया है।

संख्या ३०७क. आनद लहरी रचयिता—मोहन कागज—देशी पृष्ठ—२४ (३८ से ६१), आकार—६½ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८६, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० ब० ७३, पु० स० ६।

आदि—अथ मोहन कृत आनद लहरी लिखियत हैं। अथ चोपाई ॥

सहजें सुमिरो नित्त विहारी। व्यापक सोध पुरुष श्रो नारी।
सवतें दूरि सवन तें नेरो। लखे न कोऊ तहाँ उर नेरो॥
आनद मगन कलोल विलासी। विहरे सव ठां नेंह निवासी॥
सव खेलनि मे खेले न्यारो। सकल जगत कर लोइन तारो॥

मध्य—पृ० ५४ ॥ छद ॥

भावता सगही रहे यो सग छाडहु सग।
नाउ तो तवहीं मिटै जानाउ देखा ध्रग।
रूप तो तवहीं लखो जो वात पेपहु नैंन।
चैन तो तवहीं लहो जो बैंन भूले चैन।
रीति तो तवही लखो जो रीति राखहु गोइ।
सो प्रीति जाने मोहना जो मोहना ही होइ॥५२॥

॥ दोहा ॥

जिय भूलें पिय भेटियें पिय भूलें जिय होइ।
दोऊ भूले मोहना तो मोहन सव कोइ॥५३॥

अंत—मनु श्रौ नैंन पेंम हि गए। तिहि दोऊ न्यारे केंदए।
मनुलें पहुचायौ पियपासा। नैंन एक ले रहे निरासा॥
ए वहि लोइन दिन श्रो राती। एहुन सपनो याल सघाती॥७१॥

॥ दोहरा ॥

मन पिय पें नेना अनत। तेवहि सोवहि नाहि।
पेम पथ रोके सवे। क्यो वत हो लें जाहि॥७२॥

इति श्री मोहन कृत आनद लहरी समाप्ता ॥

विषय—प्रेम (आनद) का आध्यात्मिक वेदात के ढग पर वर्णन है और सयोग श्रृंगारातर्गत अद्वैत भावना की विशेषता वर्णित है।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख मे प्रथम 'मोहन हुलास' वाद मे प्रस्तुत ग्रथ और अत मे "कलोल केलि" रचना है।

संख्या ३०७ख. कल्लोल केलि, रचयिता—मोहन, कागज—देशी पृष्ठ—१६ (६१ से ७६), आकार—६½ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२० परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८६ प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ७३, पु० स० ६।

आदि—अथ मोहन कृत कल्लोल केलि लिखियत हैं ।

॥ चौपाई ॥

नमो प्रेम परमातमा प्यारे । ससि ज्यों सकल जगत उजियारे ॥
वढे घटे नहि कला तिहारी । राजित रेन द्योस उजीयारी ॥
निहकलंक निरमल सुखदाई । सदा सुथिर अथवे न उगाई ॥
नही केत श्रम रथ परछाही । वुधि वादरउ पार नहि जाँही ॥
घट घट मे प्रतिविव कलोलें । ज्यों जलु डूले तउ नहि डोलें ॥

मध्य—पृ० ७० ॥ कवित्त ॥

सर वासर सतन सरूप सनेह मन वाली वातें मोहनी सुभाइसी कछेरीये ।
जोवन प्रकास ज्योति नेंन निज जगमगाति अंचर ही कुज सहचरी करि फेरिये ।
यहे नेंम पेंम परगट पाइवें को जगि चाहे जोई ऐसी ताहि वाति हित नेरीये ।
नेहर सजो हिये तवही इन लोइननु देह दीप राधे नाम स्याम धाम हेरीये ॥२३॥

॥ दोहरा ॥

पेम तिमर अो दीपको इक रस सहज सुभाइ ।
जवही चाह्यो दीप तुम निमट रहो तर पाइ ॥२४॥

अंत—जवही मोहन प्रेम सो सहज भई पहचानि । अदला वदली होत हें रसना लोइन कानि ॥५०॥

इति श्री मोहन कृत कलोल केलि समाप्ता ॥ श्रीरस्तु ॥ गोस्वामी श्री गिरिधर लाल जी सुत श्री व्रजभूपरण जी पठनार्थं ॥ तत्प्रतिपालित्त परमानन्देन लिखितमिदम् ॥ श्रीरस्तु ॥ संवत् १७८६ वर्षे चैत्र सुदि २ सोमे । कल्याणं भूयात् ॥ श्री राइ श्री नथमल्ल जी की पोथी मेते उतारे अहमदावाद मध्ये ।

विषय—प्रेम (आनद) का, सयोग शृगार की अद्वैत भावना रूप मे, माहात्म्य प्रतिपादन किया गया है। ग्रथ महत्वपूर्ण एव उपादेय है।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख मे प्रथम 'मोहन हुलास', फिर 'आनद लहरी' और वाद मे यह ग्रथ लिखा है।

गो० श्री व्रजभूपरण जी काँकरोली वालो का समय स० १७६५ से १८३३ तक है।

संख्या ३०७ग. मोहन हुलास, रचयिता—मोहन, कागज—देशी, पृष्ठ—३७, आकार—६$\frac{1}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुप्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—स० १७८६, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ७३, पु० स० ६ ।

आदि—॥श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ मोहन कृत मोहन हुलास लिख्यते ॥

॥ चौपाई ॥

नमो रूप आतम नव नेही । सव घट प्रगट्यो धरि हित देही ॥
दृष्टि अगोचर लख्यो न जाई । पूरन जहाँ तहाँ रह्यो समाई ॥
दारु अगिनि फूलन ज्यों वासा । त्यो जग लोइन लीन निवासा ॥
व्यापक जहाँ तहाँ आहि कलोलें । अंजुल वजुल मुख नहि वोलें ॥

मध्य—पृ० १७

॥ दोधक छंद ॥

आउ कहो सतभाउ सहेली । जो तू चाहे प्रेम पहेली ॥
जिहिं जिहि ठाहरि लागहि नेंनां । तेंहं तेंहं ठाँ सोई मूरति मेनां ।

! तिहि चारि चिन्हा रन रहई । उपजत हाँजिय पिय दुख जई ।
रहे न प्रीति रीति मन माहो । प्रीत रूप आये न जाही ।
प्यारे सो ऐसें मिलि रहिये । हितके मनको भाया कहिये ।

॥ सोरठ ॥

भावता की भाति भाति भाति ने पाइयें ।
लोइन सदा अमाति कांति निहारन्त रैन दिन ॥६२॥

॥ दोहा ॥

अंत—मति पातर हित श्रम परी नाचे अन छन ताल ।
ता अक प्रेम सुभाइ जग खेलति अपुनें ख्याल ॥१२६॥
नाउ गाउ सुमरन सुरति नाता पिय मनुहारि ।
रा भूली भूले नहो मोहन वाल चिन्हारि ॥१३०॥

इति श्री मोहन कृत हुलास मोहन संपूर्ण ॥ श्री हरि ॥

विषय—विविध छंदो मे संयोग और वियोग शृंगार का मंजुल भाषा मे प्रतिपादन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे मोहन कृत "आनंद लहरी" और "[illegible]" ग्रंथ भी हैं ।

संख्या ३०८. दत्तात्रेय लीला, रचयिता—मोहनदास [illegible]—[illegible] पत्र—४, आकार—७¾ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७ परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible] [illegible] नया, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५३ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—कृष्णाय नमः ।

॥ चौपाई ॥

द्वारावती एकांत निवासा । हरि कों पूछं उधव दासा ॥ १ ॥
ज्ञान विचार विवेक सुनाओ । मेरे मन को तिमिर नसाओ ॥ २ ॥
कौन पुरुष कैसी तेरी माया । कहो कृपा करि त्रिभुवन राया ॥ ३ ॥
कैसें यह प्रानी सुधि पावें । काल व्याल भय दूरि गमावें ॥ ४ ॥
श्री भगवान कहे निज ज्ञान । तत्व उपदेस सुनों दै दान ॥ ५ ॥
सकल चराचर मोमे देषे । मोतें भिन्न कछु नहि लेषे ॥ ६ ॥
भाव अनन्य करै मम सेवा । जाचें नहीं आन कोउ देवा ॥ ७ ॥

मध्य—

ऐसे साध सो संग्रह जाना । जो कछु लहै सो करि दाना ॥२४॥
कपोत एक सो वनहि मझारा । संग कपोतिनी कर्यो अहारा ॥२५॥
दोउ मिलि प्रीति निरंतर बाढी । अधिक सनेह रुचि उपजी गाढी ॥२६॥
तन सौं तन नैननि सों नैना । मन सों मन बैननि सों बैना ॥२७॥
भोजन सेन करैं एक साथा । कही न जाइ प्रेम की गाथा ॥२८॥
प्रथम प्रसूति इक पुत्र उपायो । तासों देषि अधिक सुख पायो ॥२९॥
ज्यों ज्यों बोलें तोतली बानी । जीमन जनम सुफल करि मानी ॥३०॥

अंत—मन मै करै जानि विस्तारा । जग सोजें छन करें पिरारा ॥६६॥
ऐसें देषा ज्यों सरकारा । चरण कमल से चित नहि टारा ॥६७॥

भुजंग ज्यौं आश्रम न कराहीं । ऐसी विधि मुनिवर अनुसरही ॥६८॥
ऐसं ज्ञान कह्यौ नाना विधि । तव भर्त्ता कौं सौंपी अपनी निधि ॥६९॥
ऐसं जानि तजे जदुराजा । करि हरि भजन सवारे काजा ॥७०॥
जो यह लीला सुनै अरु गावै । ज्ञान वैराग भक्ति उपजावै ॥७१॥
सेस महेस पार नहीं पावैं । मोहन दास जथा मति गावै ॥७२॥

इति श्री एकादश स्कधे भगवान उद्धव संवादे दत्तात्रेय लीला संपूरण सुभंमस्तु श्री वासुदेवाय नम. संवत् १८९३ मिती असाढ सुदी १३ भौम वार वयानै सुभ स्थान लिखी सीताराम मिश्र पठनार्थं शुभ भुवात् श्री राम माधव जी वासुदेव भीषा भट्ट ॥

विषय---दत्तात्रेय लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत ग्रथ 'नलदमयती चरित्र' के साथ एक ही हस्तलेख मे है ।

सख्या ३०९ भाव चद्रिका, रचयिता---मोहन मिश्र, निवासस्थान---चद्रप्रभापुरे पत्तन, कागज---आधुनिक, पत्र---७९, आकार---६ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---११र परिमाण (अनुष्टुप्)---८९९, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, रचनाकाल---स०, १८५१, लिपिकाल---स०१९१५, प्राप्तिस्थान---ठा० कामता प्रसाद सिंह जी, स्थान--विशनपुर पोस्ट--सेवटा, जिला--आजमगढ ।

आदि---श्री गनेसाय नम. ॥ लिख्यते गीत गोविंद कौ टीका ॥

भाल लसत सिंदूर पूर मंडल ससि मडन ।
सुडादंड प्रचड चड दुष षड विहडन ।
दारिद्र वन दावाग्नि दुरित करि चय पचानन ।
मारतड प्रनते सु प्रफुल्लित पकज कानन ।
कहि मोहन जो चाहत विमल वुध्धि सेव पद कमल रज ।
लंभव सुखद जगदव सुत लवोदर हेरव भज ॥ १ ॥
श्री जयदेव कवीस कृत देवगिरा गति गूढ़ ।
कोपि विवुध भाषा कियो अर्थ विमोहन मूढ ॥ ३ ॥
ताहि निरष निज वुध्धि वल वर्नत सुषद सुछद ।
"भाव चद्रिका" नाम यह अर्थगीत सुपकंद ॥ ४ ॥
मै लघुमति रुचि अति प्रवल साधन परम असाधु ।
भूल परै जह छद मैं छमिजो कवि अपराधु ॥ ५ ॥
१ ५ ८ १
इंदु वान वसु भूमि सुचि मास सुक्र तिथि आदि ।
भाव चंद्रिका ता दिना आरंभी सुष सादि ॥ ६ ॥

॥ विजय ॥

राज सिंघासन चंद्रप्रभा पुर पत्तन कौ जस सुंदर तीकौ ।
भूपति दै सनमान समेत तहां सुषवास प्रकास कवी कौ ।
ताढिग जोजन अंतर दोय कहै ललितापुर सुंदर नीकौ ।
ता मधि सिंघ प्रवोधन हेत कियौ सुभ गीत गुविंद सटीकौ ॥ ७ ॥
रूप मनि मधुकर साहि कौ वंस कुमुद राकेस ।
रामचंद्र कौ राज अव राजत जगत सुवेस ॥ ८ ॥
ताकुल के प्रोहित प्रगट मिश्र कपूरे नाम ।
तिनकौ मानै सिंघ नृप गुरु ज्यौं सुरपति धाम ॥ ९ ॥

तासु वंस मोहन भयौ कुटिल महा मतिमंद ।
भाव सुगीत गुविंद की बरनत भाषा छंद ॥१०॥
गुरु पद पंकज धार उर सकल कविन गिर नाय ।
बरनत गीत गुविंद कौ भाव अर्थ सुपदाय ॥११॥

अंत—कहत राधिका सुनहु न माधव हौ जु परी तुव चरना ।
तुम विन मोहि सुधाधर दाहत रापहु अनरन सरना ।
जग पर श्रवत सुधा की धारा मो पर अनिल वहावत ।
जान स्वसा की सवत मोहि तिहिय हटकं तन तावत ॥ ६ ॥
तुव वियोग थैं होत चित्त भ्रम आगे तुमहि विलोकत ।
विलपत हसत विषाद करत वहू जलपत आनुनि मोचत ।
ध्यानहि ध्यान मिलत क्रीडा हित मात सुलोचन लोचन ।
जब तुम देत आलिंगन निर्भय तयन ताप त्वं मोचन ॥ ७ ॥

:o: :o: o.

॥ घनाक्षरी ॥

गए हो मधुर परी मिठास कौन चिंता कछू सर्करा समान कर्करान के लगत है ।
दाष तुमैं देषं है भकोउ हे अम्रत तुम म्रतक समान रही छीरनीर गत है ।
नूत करौ रुदन अधर कामनी के तुम जाव न पताल जो मिठाइन की मत है ।
आदर तुमारौ कोउ करे है न जौ लग हौ तोलौ जयदेव जू की वानीया जगत है ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

वरनी श्री जयदेव नं स्वाधीना पति वाम ।
"मोहन" द्वादस सर्ग यह पीतांबर सुभ नाम ॥१२॥

इति श्री गीत गोविंद टीकायां समाप्त ॥ मिति जेठ सुदि ११ ॥ संवत् १९१५ ॥ मुकाम वानपुर ॥ राम ॥

विषय—संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथ गीत गोविंद का भाषा में पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

१ ५ ८ १
इंदु वान वसु भूमि सुचि मास सुक्र तिथि आदि ।
भावचंद्रिका ता दिना आरभी सुप तादि । ६४ ॥

संख्या ३१०क. फूलमंजरी, रचयिता—मोहनलाल, स्थान—कुम्हेर (भरतपुर), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१० परिमाण (अनुष्टुप्)—८४, पूर्ण, प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८८५ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह) काशी ।

आदि—अथ फूल मंजरी लिष्यिते ॥

॥ दोहा ॥

कमल नैन कन्हर लला ॥ सुंदर स्यामल गात ॥
वन तैं आवत सुरभी संगि ॥ मंद मंद मुसकात ॥ १ ॥
पीति पगा झीनो झगा ॥ कर पहुप रसाल ॥
नगनि जटति कर मुरलिका ॥ वाजति सब्द रसाल ॥ २ ॥

हौं न गई हरि सँग अली ॥ मो मति की अति भूल ॥
संग सुंदर करिके वरो ॥ आवत रस के मुल ॥ ३ ॥
भवर विलवे केतगी ॥ लेत सुपरिमल वास ॥
ऐसे मौहन लाल तें ॥ नित मिलि करत विलास ॥ ४ ॥
न्हात सवै लषि सुदरी ॥ नैक न करचौ विलंव ॥
चीर चोरि लंगर लला ॥ लैके चढ्यौ कदंव ॥ ५ ॥

मध्य—हूं तोहि पुछु हे भटु ॥ कौन से वर्त ते कीन्ह ॥
ताते वर कान्हर लहे ॥ हमंहूं ताको कीन्ह ॥२३॥
चक्र सुदर्शन धारि प्रभु ॥ मुर मारचौ तैंहि काल ॥
गीरधारचौ तारचौ दुरिद ॥ हत्यौ कंश नंदलाल ॥२४॥
रूपमंजरी हौं अली ॥ मौतैं अधिक न और ॥
सवैं वासुना छाडि कैं ॥ मोतन आयौ भौर ॥२५॥
लैं गुलाव कर सुदरी ॥ मो सौं क्यौं इठिलाय ॥
पानीहिं की आगि धौं ॥ पांन शौ न सिराय ॥२६॥

अंत—सीस मुकुट कटि काछनी । पहरैं पीत दुकूल ॥
वनि मन तैं आवत लला । कर वरना कौ फूल ॥२८॥
कंधा कामरि कर लुकट । चलत अटपटी चाल ॥
कारामत वरौ गरे । वौरसरी की माल ॥२९॥
पाउर कौ वन देषि यह । फूहि रही फुलवार ॥
छिनक यहाँ वैठचो भटु । अव आवैं सुषकारि ॥३०॥
दाऊदी फूली विमल । अलि मिलि लेत सुवास ॥
पीय प्यारी मिलि आजु हीं । हिलि मिलि करौ विलास ॥३१॥
पंडु वेद वसु चंदु ये । वसत कुम्हेर सुगाम ॥
केसव सुत मौहन रची । फूल मंजरी नाम ॥३२॥

येती श्री फुल मंजरी संपुरन ॥ प्रति प्रमान ॥

विषय—दोहो मे कृष्ण की प्रेमकथा और चीरहरण लीला का वर्णन है ।

संख्या ३१०ख. रगमजरी, रचयिता—मोहनलाल, निवासस्थान—गढ कुम्हेर (भरतपुर), पत्र—४, आकार—७$\frac{1}{4}$ × ५$\frac{1}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६, पूर्ण, रुप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १८३७, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—अथ रग मजरी लिष्यते ॥

सीस कीट सारंग धरैं मृगमद केसरि भाल ।
पेलत ष्याल वसंत कौ मडि मौहन सुरवाल ॥ १ ॥
गो गोपी सवही सषा नंद नंदन जसुधा जु ।
व्रंद व्रद आवत सवैं करि केसरिया साज ॥ २ ॥
सारी सोहै सोसनी वनी वाल सुभ रंग ।
झूलत रंग हिडोरना मानौ चढचौ अनग ॥ ३ ॥
वोढ कसूमल चुंदरी पेलन चाली तीज ।
संग सषी नवजौवना सिर सोहति रति भीज ॥ ४ ॥
वनी वाल ठाढी अटा घटा रही घहराइ ।
गुडी उडावत कर गहैं सिपतालू रंग लाइ ॥ ५ ॥

मध्य—अग अग अति जगमगं ससि दुति सरि होति होति ।
नीले झीने चीर मे जगमगाति मुप जोति ॥२६॥
जूथ जूथ आवत सबं बरमाने की गोप ।
जगाली पहरं चुरी अति छवि छाजत वोप ॥३०॥
मुकट जटत हाटक मनी दधि सुत गुर उरमाल ।
सजै जु मरन दी तन वसन आवत मोहन लाल ॥३१॥
ठारै सं संतोस का गढ कुम्हेर सुभ गाम ।
केसव सुत मोहन रची रग मजरी नाम ॥३२॥
इति मोहन लाल कृती रग मजरी सपूर्ण ॥ १ ॥ शुभ ॥

विपय—शृगार विपयक कविता कर उसमे रगों के नामो का उल्लेख किया गया है। रगों के नाम नीचे दिए जाते हैं —

वसती१	केसरिया२	कसूमल४	हवष्मी८	जामनी१६
सोसनी	सोसनी	सिपतालू	पचरग	वदामी
सिपतालू	नारगी	नारगी	लहरिया	पिस्ती
गुलाबी	गुलाबी	गुलाबी	ऊदी	किरमिची
पचरग	लहरिया	असमानी	असमानी	प्याजी
ऊदी	उदी	कोच	कोच	स्याम
कोच	सिंदूरी	सिंदूरी	सिंदूरी	सेत
कासनी	कासनी	कासनी	कासनी	तूसी
वदामी	पिस्ती	प्याजी	लापी	लापी
किरमिची	किरमिची	स्याम	हरयौ	हरयौ
स्याम	सेत	सेत	अमौवा	अमौवा
तूसी	तूसी	तूसी	मूंगिया	मूंगिया
हरयौ	अमौगा	मासी	मासी	मासी
मूंगिया	मूंगिया	लीलो	लीलो	लीलो
लीलो	जगाली	जगाली	जगाली	जगाली
जुमरी	जुमरदी	जुमदी	जुमदी	जुमदी

रचनाकाल

ठारै सं संतोस का गढ कुम्हेर सुभ गांम ।
केसव सुत मोहन रची रंग मंजरी नाम ॥३२॥

सख्या ३११. भास्वति भापा टीका (ज्योतिप), रचयिता—यशोधर (?). कागज—देशी, पत्र—७, आकार—१०¾ × ४¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४०, खडित, रूप—प्राचीन गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० महादेव मिश्र, ग्राम—वटसरा, पोस्ट—कसिया, जिला—गोरखपुर।

आदि—.... ... ...
जोख शे शात से ७ भागव जे शेप रहे से सूर्यादि नम्वतार पावर होइ ।
शेप जे अक रहे से आठ शय ८०० माह घटाई
देय तेकर नामा शुद्धि होइ शे शुद्धि अठोत्तर सये १०८ भागिए तौ एगा पाच सेप घव जे रहे से साटी ६० गुणव अठोत्तर १०८ सये से भागव से चाला होइ तेकर नाम रवि मुदा होइहि।

अव्द वृंद धरव सहस्र १००० गुणव तेहिमह दस घटाई देव पुनः जे अक रहे से दुइ ठहर धरव हेठ के अंक दुइ सय चारि २४० से भागव जे भाग पाइ से उपर के अंक पर घइले आइव त ओहि अक मे घटाइ देव फेरी हेठे के अंक के भाग से जे सेष र से से साठी ६० से गुणव दुइ सय चालीस से भागव जे भाग पाइसे चाला होइ ॥

:o: :o: :o:

अंत—चंद्र स्फुट मह सूर्य्या स्फुट घटाइव पुनि पयतालीस ४५ घटाइव घटाइ देइ जे सेष रहे से पयतालिस ४५ से भागव जे भाग पाइ से सात घटाइव............

—अपूर्ण

विषय—ज्योतिषशास्त्र विषय का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडितावस्था मे है। आदि, अत और बीच के पन्ने नष्ट हो गए हैं।

संख्या ३१२. द्रोपदी स्वयवर, रचयिता—रघुनदन, पृष्ठ—४२, आकार—८¾ × ६ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६८०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ५६, पु० सं० ५।

आदि—श्री द्रोपदी स्वयंवर लिख्यते। रागु धनाश्री ॥ टेक ॥

सतीवती नंदन चरण वंदन करि सुपपाई।
वहुरौं गणपति गवरि पति कर जोरी सिरु नाई॥
आदि पर्व भारथ कथा द्रुपद सुता को व्याह।
ताहि जथामति वचन रचि भाषा को नुवाहु॥

मध्य—पृ० २३ टीका। चोपाई।

नव अध्याइ कथा यह जानौं। द्रुपद सुता को व्याहु बखानौं।१।
करिहें जज्ञसैनि विनती अति। पानिग्रहन कीजै अर्जुन प्रति।
तव राजा कैहै तिहि काला। हम सव वीर वरे सो वाला।
सुनि नृप द्रुपद अरुचि अति ह्वैहै। तव मुनि व्यास आइ समुझैहै।

अंत—इति श्री भाषा मर्ये आदि पर्व रघुनंदन दास विरंचिते द्रोपदी स्वयंवरे इंद्रप्रस्थ आगमनो नाम एकादशो अध्याय ॥११॥ सोरठा ॥

करे चोपही छंद विविसत घटि पटु चारि पुनि।
पढत सुनत आनंद द्रुपदसुता मंगल महा॥

॥ सोरठ ॥

कथा जयामति सारु पूरण कै दसमी विजय।
शुकल पछि सुभ कुवार सोरह सै असी हुते॥ध्याइ प्रमानं

विषय—द्रौपदी के स्वयवर का वर्णन।

संख्या ३१३. रसिक मोहन, रचयिता—रघुनाथ वंदीजन (काशी), कागज—देशी, पत्र—५६, आकार—६¾ × ६½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० देवीदयाल पाडेय, ग्राम—सोहवल, पोस्ट—ताडीघाट, जिला—गाजीपुर।

आदि—.......................।

नव सकरता सरूपवान तेजवान ग्यानवान भाग्यवान गथ के॥
वेद विधि विहित सुकवि रघुनाथ कहै प्रतिपाल करता सकल पुन्य पथ के॥
सबसो अजीत आपु सबको जितैआ आपु आपु सरबग्य आपु जनैआ अकथ के॥
अैसे मसाराम के महीप वरिवंड जैसे काम पुरुषोत्तम के राम दसरथ के॥१॥

॥ दोहा ॥

उन मोपै करि कै क्रिया दीन्हे चौरा गाउँ।
जाको जंबू दीप मे जगमगात है नाउ॥८॥

:o: :o: :o:

कोऊ कथा सुनै कोऊ सुनावत भारथ आदि पुरान है जोऊ॥
वेद पढै कोऊ व्याकरनै कोऊ जोतिष वैदिक साहित कोऊ॥
पूजत हैं कोउ श्री रघुनाथहिं पूजत कोउ सिवा सिव दोऊ॥
मैं मन वीच विचारि लिष्यो है बनारस मे न विना रस कोऊ॥

:o: :o: :o:

सवत् सत्रह सै अधिक वरिस छानवे पाइ।
माघ सुकुल श्री पचमी प्रगट भयो सुखदाइ॥११॥
वरने उपमा आदि हे अलकार गहि रीति।
अहो रसिक लषि रीझियो करि पढवे सो प्रीति॥१२॥

अत—॥ ३२१ ॥ हेत अलकार लछन ॥
हेत सहित जह वरनिअै हेतवान गहि रीति।
हेत अलंकृत सुकवि सव तहा कहै गहि प्रीति॥

:o: :o· :o:

॥ ३२२ ॥ अपर ॥

परम असक लकपति मेरी विनै सुनौ पूर पारावार को पहारनि भरो भयो॥
आवत वसंत ज्यो ज्यों वन उपवन सव रघुनाथ हरो भयो फूलि कै फरो भयो॥
करिबे जो है सो अव कीजै मत्र मत्रिन सो नगर वसंयन के वास को टरो भयो॥
तीछन विपति के हरैया राम ताके आगे डवरायें ईछन भभीछन परो भयो॥३२२॥

इति श्री कवि रघुनाथ वदीजन कासीवासी विरचितं काव्य रसिकमोहने उपमादि अलंकार वर्ननं सपूरन सभ मसु.........॥ अपूर्ण ॥

:o: :o: :o:

विषय—अलकारो का वर्णन।

रचनाकाल

१७ ९६
संवत् सत्रह सै अधिक वरिस छानवे पाइ॥
माघु सुकुल श्री पंचमी प्रगट भयो सुखदाइ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है। समस्त छप्पन पत्र उपलब्ध है। देखने से प्रथ प्राचीन प्रतीत होता है।

रचनाकाल सवत् १७९६ वि० है। लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या ३१४. रसमजरी, रचयिता—रघुनाथ कवि, पृष्ठ—७४ (३५ से १०८ तक), आकार—१३ × ७१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३००, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६१, पु० स० ५।

आदि—पृ० ३५ अथ मध्याधीरा ॥ १२ ॥
कमनीय कपोलनि जोवन जेव अनूपम रूपकि रास खरे ॥
वहुनाइक नागरि नामहि सो सवसो सवही विधि हो सुधरे ॥
कहियो गहि दीरघ सास घरी कति या तन भेद कहै न परे।
निरखे हरजू नखतें सिखलो ढरके नयना नयनवु भरे ॥१३॥

मध्य—पृ० ४७ अन्य संभोग दु:खिता ॥
रमि रात रहै कितहु उमकै अरुणोदय आन अचानक ह्वै ॥
लखि जावक लीक ललाट लगी नख रेख कपोलनि रजित ह्वै ॥
तिय लोहित लोचन कोननि तें छलकी छवि यो युग श्रोननि ह्वै ॥
इम तीय तरोननि के मुकता रहै दारिमवीज दल द्युति ह्वै ॥३७॥

अंत—
अभिलापा प्रथम दुतीय चित चिंता करै तीसरी को सुमिरनु चौथे गुन गान है।
पंचमी को उदवेग छठी को प्रलापु करै सातई अकेले उनमाद की को ठाम है।
आठई को व्याधि अति नतुमि को है जडमति दसमि निधन तहां प्रान को पयान है।
दसो ए अवस्य रघुनाथ विप्रलभ ही की लछन उदाहरन बरनो विधान है ॥१२१॥

विषय—नायिका भेद और रसो का वर्णन। मूल ग्रथ सस्कृत श्लोको मे है।

संख्या ३१५. ज्ञान ककहरा, रचयिता—रघुनाथ दास, 'रामसनेही', कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—७ × ४१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० अमरनाथ मिश्र, ग्राम—असवरनपुर, पोस्ट—ओइना, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री रघुनाथदाश रामसनेही कृत ग्यान ककहरा लिख्यते ॥ कुण्डल्या ॥

श्री गुरु देवा दाश के चरण कमल धरि माथ ॥
ग्यान ककहरा ग्यानप्रद वरणत जन "रघुनाथ" ॥
वरणत जन रघुनाथ हाथ अपने नहि भाई ॥
राजनीति की रीति प्रीति प्रभु पद अधिकाई ॥
अधिकाई तव होइ न्द्रवै गव हरि ॥
गुरु संता वड़भागी नर सोई हो इंद्रपन्हु वुधिवता ॥
वुधिवंता विन वेद पढे नहि लहै भेद फुर ॥
मुकुरु करै का तासु जासु नाहि नयन सुश्रीगुर ॥ १ ॥
ॐ नामा सौंध गहै गावत वेद विसूरि ॥
नाम विना कोई कहै ताके मुख मे धूरि ॥
ताके मुख में धूरि भूरि भागी विन गूठा ॥
सियाराम पद प्रेम नेम कह पावै मूठा ॥
सियाराम पद प्रेम मूल परमारथ को है ॥
पग मृग व्याध निपाद त्वस्यो अव्यो पद जो है ॥

जो है जन रघुनाथ कहे पुर अवध के वासी ॥
कौन कुश्टल्या अधिक चरण विन ऊँ ना मामी ॥ २ ॥
क का कमल केर दितु सरिता पति गालं सुधा ममि भाई ॥
मित्र भानु ब्रह्मा तनै विश्व भरा जेहि माई ॥
:o :o: :o:
षषा खल के सग मे भला भी मारा जाय ॥
जीभ उश्च्चरं कटुक वचन सीस सो पनही पाय ॥
सीस सो पनही पाइ जाइ घुन जव के साथे ॥
जल धोरिया लेत देत धरि पाल के माथे ॥
माथे परी जो मदन के धृष्ट वुद्धि कृत पाप ॥
मरे असुर रघुनाथ सव रावन के परताप ॥
रावन के परताप सेत सागर मे रखा ॥ तजि कुसग भजु राम नही तो होइ दग्गा ॥
गगागर भन कीजिए. . . .. . . ।
अंत——निंदक निंदै साधु का साधू सुनि हरषाइ ॥
जिमि गारी ससुरारि की सवकी सवं सोहाइ ॥
सवकी सवं सोहाइ जेठर कुल सासुर शासू ॥
वालक सारी सार तरुण वड ठानत हासु ॥
दीन्हिनि सुव्रत सुता तीन तेहि हरि अघ विदक ॥
कहत सत रघुनाथ नाथ नीके है निदक ॥
इति श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत ज्ञान-ककहरा समाप्तम् सवत् १९२० वि० . . . ।
विषय——सतमतानुसार ज्ञानोपदेश और भक्ति वर्णन ।

सख्या ३१६क. ग्वाल पहेली, रचयिता——रघुवर, पत्र——११, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१८, पूर्ण, रूप——नया, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——स० १८९०, प्राप्तिस्थान——लाला जगन्नाथ प्रसाद खजानची, तहसील–राजनगर, राज्य–छतरपुर, जिला–झाँसी ।

आदि——॥ १ ॥
सिधि श्री महागनपत्येन्म श्री सरस्वतीन्म ॥
लिष्यते ग्वाल पहेली । चौपही ॥
जं जं जं श्री नर्क निवारन । जं जं जं दानव सघारन ॥
जं जं जं जं जं श्री अधम उधारन ॥ जं जं जं प्रहलाद उधारन ॥
मध्य——॥ ११ ॥
यौ ॥ अव हो सरन तिहारी आयो ॥
जैसे राषौ तैसे रैहो ॥ राम कृस्न की जूठन पैहो ॥
रजनी समै पायन पर रैहो ॥ गैया प्रात चरावन जैहो ।
अंत——॥ २१ ॥
मघेव है ॥ यह लीला मैं ऐसो वन है ॥
कलपद्रुम को कलपद्रुम है ॥ . . . .
. . . .
. . . .
. . . .
लीला गाइ इहै रस दीजै ॥ चरन को मधपुर कीजै ॥ इति श्री ग्वाल पहेली सपूर्ण समाप्त सुभं भवत् । माह सुदि अष्टमी ८ संवतु १८९० मुः ष्दोही श्री श्री श्री . . . . . . श्री श्री श्री

विषय—श्रीकृष्ण एक दिन ग्वाल बालों सहित वन में बलराम जी के साथ खेल रहे थे। उन्होंने एक पहेली बनाकर ग्वाल बालों से पूछी। एक ग्वाल ने पहेली का उत्तर कृष्ण जी से ही पूछा। कृष्ण ने इस शर्त पर उत्तर बताया कि वह किसी से न कहे। थोड़ी देर में श्रीकृष्ण गाय इकट्ठी करने के लिये चले गए। तब सब ग्वाल बालों ने उस ग्वाल से पहेली का उत्तर पूछ लिया। कृष्ण के आने पर उत्तर कह सुनाया। कृष्ण ने दो चपतें उस ग्वाल को लगा दी। वह अपने माता पिता के पास रोता हुआ गया और समस्त कहानी कह सुनाई। माता यह सुनक उसी पर क्रोधित हुई और मारने दौड़ी। वह ग्वाल यशोदा के पास गया। यशोदा ने उसक मनाया और भोजन, कपड़ा दिया। इसी बीच श्रीकृष्ण आ गए। माता क्रोधित हुई, पर कृष्ण ने उस बाल को समझा बुझाकर फिर अपना मित्र बना लिया।

संख्या ३१६ख. द्रोपदी की स्तुति, रचयिता—श्री रघुवीर, पृष्ठ—७, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपिकाल—सवत् १८९०, प्राप्तिस्थान—लाला जगन्नाथ प्रसाद, खजानची, तहसील—रामनगर, राज्य—छतरपुर।

आदि—श्री गनेसाय नमः श्री सरस्वती नमः लिष्यते अस्तुत श्री द्रोपदो जू की।

दत्त कतट नृपडार धर्मसुत सौ छल कीन्हौं॥
निस वादी गौ हार रा सर्वस हर लिन्हौं॥ प्रथमहि

मध्य—इिन भसमासुर मारौ॥ नहिं विलव नहि कीन हीन ध्रुय की यह भारौ॥ तहि विलंव नहि कीन हीन जदिन वृंदा व्रत टारौ॥

तहि विलंव नहि कीन तुम नरकासुर कुंडल दहन।
गहत चीर दुसासनासु अव विलंव कारन कवन॥ ५॥

अंत—तव कमला कौ संग वेग आये आरत हर। अमर लग अमारतह सकल सभा लज्जन वदन। जै जैत श्री रघुवर भनै सुर मत जैन वर्षह सुमन॥१८॥ सं० १८९० चैत्र वदि १४ कौलियी पोथी महाराज कोमार श्री लल्ला कंयोद सिंघ भू लिष्यते श्री दरजी टूड़े॥

विषय—चीरहरण के अवसर पर द्रोपदी द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करना।

संख्या ३१७. कवित्त, रचयिता—रज्जब जी, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—३½ × २¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४०, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—अथ रजवजी के किवत लिषंतं।

वैराग रमें विभौ अष्टं ऋलय रस धरियं॥ कलप वृक्ष वराइ॥ फूल फल अमर सुभर यहि॥ सपत समंदहु सुधा सो ईसलता सुतलावहु॥ पीवन कौं सु पीयूष कहीं मारग गुरु आवहु। नग्र पुरी वैकुंठ विधि चितामणि पर दर चिठो रजव गुरु पुजा सजीव। नांव सरभर नागिणो॥१॥ गुर कौं दीजै कहा परम निधि जिनतैं पाई॥ भाव भगति भल भीष गिरा गोरख जी गाई॥ सांऊंच सील संतोष दिष्टदत दीरघ दीनां। जीव जड़्या जग माहि काटिक्रम मुकंता कीना॥ सकल अंग सांईसह तकी न मौज असी करैं॥ दादू दीन दयाल विन॥ रजव रीता को मरैं॥२॥ गुरु हंस मधु रिप पुनह चंवक ज्यूं सारा। तन मन काटैं सोधि किं रंचकं ज्यूं पारा॥ करैं सुदाई क्रम नितह न्यारे जम धोवहि॥ रज लागी पट प्राण रजक जिम कुसमल पोवहि। गुरू वैद रोगह हीरें मरजीवें ल्यावें सुधन॥ जनरजव बल वंलि सदां भ्रिगी ज्यूं पलटैं सुतन॥३॥

मध्य—पारिषे को अंग॥ गहणत वेद वैदंग रोग॥ नीरत सिरहारे॥ सुधैं तध नध मगरधात॥ पर्वरि अह निस पनिवारं॥ स्वान वरत अज कूपं। पन्यंग परमल गति जानं॥

निस बाइस दिन स्याल ।। बोल सोई विघन वयान ।। सहदेवन मम कीग बाल गनि ।। मुन संकट माता थनहु । रजब सीऊन सौए लग । रोग्रागम जाएं घुएहु ।।१।। रंए दिवम नहि दुरहि । दुरनह चद प्रकाशा ।। दामनि दमकन दुरह गोपि नहि उर की ग्रामा ।। छिपं मुंह स्वं बोल । गहन गति सव कोई जाएं । इंद्र गाज बड़नालि । बोल छूट नहि छानं ।। जग जाएं जमए मरए उगं बीज जो बोई से । सूंरज वमन गाहिली । फहीं कौन विधि गोईये ।।२।।

अंत—ब्रह्मा वाहन हंस ।। बिसन के वाहन पगपति ।
संकर वाहन बैल । मूस पर चढ़ै सुं गएपति ।।
कलस्याम मोर सकति कै स्यघ विराजं ।।
है सूरज ठौ इद्र ।। मसि रथ सारंग छाजं ।।
सुरस बहन प्यारे पुहन ।। तिनके काज न बीगरं ।।
आप चढ़ि असवार जो ।। रजब ते डलैवं मुप पड़ं ।।२।।
इति श्री रजब जी के किवत सपूरए ।।६०।।
विषय—वैराग्य का उपदेश किया गया है ।

सख्या ३१८. पिंगलनामार्णव, रचयिता—राजा रएधीर सिंह, (नगरामऊ देशाधिपति), कागज—आधुनिक, पत्र —७०, आकार—९$\frac{1}{2}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाए (अनुष्टुप्)—६०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९४ वि०, मुद्रएकाल—सवत् १९२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री नृसिंह नारायए गुप्त, ग्राम—मीरजहांपुर, पोस्ट–मिडारा, जिला–इलाहाबाद ।

आदि—श्री गएेशाय नमः ।। अथ पिंगल नामार्णव ।।

।। छप्पं ।।

सुमुप एक रद कपिल चारु गज... प्रकासित ।
लम्बोदर अरु विकट विघ्ननासन सुविकासित ।
लसित विनायक धूम्रकेतु तिमि गएाध्यक्ष गनि ।
भालचंद्र गजवदन द्विदस इमि नाम सुनद मनि ।
कृत प्रथम अस्मरन स्रवन जो आरंभे विद्या रने ।
जु विवाद प्रवेशे निर्गमे संकट विघ्नघ्नक घने ।। १ ।।
:o: :o: :o:

४ ९ ८ १
शम्वत श्रुति निधि वसु शशि अक रीति सनिवार ।
मार्गशीर्ष मुनि तिथि असित भयो ग्रंथ अवतार ।। ४ ।।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

जाहि संस्कृत ज्ञान नहि बयो करि जानें नाम ।
ता हित भाषा मैं करी "जुद्धधीर" अभिराम ।।

अंत—।। माला नाम रूपमाला छंद ।।
राजितोत्पक गुनवती इमि कोस रीति प्रकास ।
दाम स्रज तिमि धीमतामपि पेपि करत प्रकास ।।
त्यागि जग आतार सार प्रकार आला त्याऊ ।
चितानन्द निरीह नित्यारुप माला ठाऊ ।।२१९।।

इति श्री श्री मन्महाराजा श्री शिरमौर वंसावतंस श्री मद्रएधीर सिंह विरचिते नामार्णव समाप्तम् ।

विषय—पिगल विषय का वर्णन । ग्रथ चार 'तरगों' में लिखा गया है ।

रचनाकाल

४ ६ ८ १
शम्वत श्रुति निधि वसु शशि अंक रीति सनिवार ।
मार्गशीर्ष मुनि तिथि असित भयो ग्रंथ अवतार ॥ ४ ॥

संख्या ३१६. नासकेतोपाख्यान, रचयिता—रनजीत, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—७ × ४$\frac{७}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० दौलतराम पाडेय, स्थान व पोस्ट—शहिजादपुर, जिला—इलाहावाद ।

आदि—.................लागा तप ध्यान ।
परम पुरुष का धावनां हिरदे माही थानं ॥
॥ चौपई ॥
नारी का मन आसा रहै । काहू सं मन की नहीं कहैं ॥
रात दिनां चिंता मन मांही । छिन इक तिरिया भूलत नाहीं ॥
सव तन काम जगा दुषदाई । जैसें सूता सिंघ जगाई ॥
उसा वासना वीज सि साहीं । हौनहार की यही दिसाही ॥
वही वीरज कर मांही लीन्हां । कवल फूल माही धर दीहा ॥

अंत—और रिषीस्वर वहु सतवादी ।
धर्मराय ढ़िग जिनकी गादी ॥
वारह सूरज की सम रूपा ।
वस्तर पहरं रतन अनूपा ॥
चतुर वेद के पढनें वारे ।
अरु मिहमां साव जानन हारे ॥
वहूत....................
—अपूर्ण

विषय—नासिकेत ऋषि का उपाख्यान वर्णन ।

संख्या ३२०. गगाष्टक (गगा जी का झूलना), रचयिता—रमताराम, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—३$\frac{३}{४}$ × ५$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री गंगा जी के झूलना ॥
जे गंगा जें सरस्वती जे से मंदाकिनि माहि ।
जे जें तूं अविनासिनी सुरनदी जे जे सुख दीप ॥ १ ॥
दर्शन करेते जना से वड़ो दुख गावत गुन गीत अधना रहगे ॥
न्हांतं सवल व्याध जातंछिनवो ज च कुष्टी कलंकी हो जात चगे ॥
तोररि खर्द मलभाति तारे कीने सव दुष्ट है मानभंगे ॥
यही वात लिख कर कहें दास रमताराम विज मात जे मात जें मात गगे ॥ २ ॥

मध्य—महाघोर सब्दं भृ...भीत भमर अथाहं न थाहं पारावार सगे ॥
अप आरं प्रवाहं जलं वेसुमारं तरं तार तारं करत पाप पंगे ॥

सकल कष्ट नापं विकट व्याधिकाट मह दुष्ट जन के हृद फाट जगे ॥
यही बात लि. ॥ ५ ॥

अत—गंगा जु अष्टक पदंतं सुनत कटत पतिक होत पावन सुअगे ॥
न्हातं प्रभातं जपतं जितेंद्र जिनदेत राज अटल हाक सगे ॥
घोरांधकार-नसतोम डाकं धजा धर्म की सुफहरा तिरगे ॥ ८ ॥
यही वात लिखकर कहें दास रमताराम जे मात जे मात मातगगे ॥

इति श्री गंगा अष्टक सम्पूरण सम्पात ॥

विपय—गगा जी की स्तुति की गई है।

संख्या ३२१. वाराखडी, रचयिता—रमयोज, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभापा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह) नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्रीरगनेसय नमः
क क किसन गुपल को सुमरनी करी दीन राना।
टेरी टेरी तो सो कह्यः पवंगो सुप चंन ॥ १ ॥
पषा पेलन छडिये सुरवीर को कम।
सायर सु सनमुष रहै पती रषं भगवान ॥
गगा गुर की सीष सुनो छंडि सकल जंजाल।
वहो सागर गुर के कहै उतरि जाहगे पार ॥
घघा घारिस भरियो सोर पं सघो मल।
जासी भाजी भगवंत को पानि पहुलो वधो पाली ॥

अत—पषा पेत न छडीय सुरवीर को काम।
सायर के सनमुष रहै पती रषंगे राम ॥
स सा सव में राम है जलथल जीय जोन।
राचन वर रची गय मेह न वरो कोन।
ह ह हरिके नम पं हाथ उठाय कछ देहु।
मये य संसार में जनम सुफल कर लेहु ॥

इति श्री रमयोज की वरपरी संपनु ॥

विषय—'क' से 'ह' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर ज्ञानोपदेश दिया गया है।

संख्या ३२२. बलदेवपट्क, रचयिता—रसनिधि, पत्र—१ (पृष्ठ १६ से २०), आकार—७। × ६॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० स० ६४, पु० स० ६।२।

आदि—श्री बलदेव जी को पटक् रसनिधि कृत
॥ दोहा ॥
श्री गणपति को धाय के करो पटक बलदेव।
रिद्धि सिद्धि दायक सकल विद्या उदर मरेव ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

काम क्रोध लोभ मद मछरता मोह हू सों जगत मे छाय रह्यो अधिक अंधेरो है ।
जप तप जज्ञ दान मंत्र जंत्र तंत्रन को कलिने मिटाइ दियो सरस वषेरो है ।
स्वारथ के साथी सुत सुजन सुवंधी रहे रसनिधि कोऊ काहू को न कहूं हेरो है ।
तासो 'वलदाऊ जी के चरन सरोरुह कों गहि रे भरोसो होत कारिज सवेरो है ॥११६॥

मध्य—
जेहरि जराऊ पग नेवर टराऊ नख भूषन धराउ चंद छटा छछराऊ कों ।
सूथन कुमाऊ अंग कंचुक घुमाऊ कटि पटु कालु माऊ जरी तोर सरसाऊ को ।
मोर के पखाऊ आछी कुलहे सजाऊ रसनिधि सुखदाऊ नखसिख लो सुहाऊ को ।
वारिज सराऊ भक्ति भाव के भराउ एसे भजि मन भाऊ धजवंध वलदाऊ को ॥११८॥

अंत—कंऊ कवि अष्टक करे कंऊ मतक अनेक ।
रसनिधि कीनो खटक यह अपनी वुद्धि विवेक ॥
छमा करो वलदेव प्रभु अव धारो सुषटक्क ।
भक्ति रावरे चरण की दीजे मोहि भजक्क ॥१२१॥

विषय—श्री वलदेव जी की महिमा वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक मे पृष्ठ १८ तक फुटकर कवित्त है । वाद मे 'वलदेव पट्क, और 'यमुना नवरत्न' लिखे हैं । कवित्त सं० ११६ से १२१ तक हैं ।

संख्या ३२३. रसिक पच्चीसी (रसरासि पच्चीसी), रचयिता—रसरासि, कागज—वाँसी, पत्र—६, आकार—८३/४ × ७३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

॥ कवित्त ॥

परम पवित्र तुम मित्र हो हमारे ऊधो
अंतर विथा की कथा मेरी सुन लीजिए ॥
वृज की वे वाला जपें मेरी जपमाला, वढ़ी
विरह की व्यथा तामें तन मन छीजियें ॥
मेरो विसवास मेरी आस रसरासि मेरे
मिलिवे की प्यास जानि समाधान कीजियें ॥
प्रीति सों प्रतीति सों लिखी है रसरीति सों
पत्रिका हमारी प्रान प्यारिन कों दीजियें ॥ १ ॥

मध्य—
उधो कहि को है जदुनाथ द्वारिका को नाथ
कौन वसुदेव कौन पूत सुखदाई है ।
कौन है निरजन अपिल अविनासी कौन
व्रह्म हू कहावे कौन जाकी जोति छाई है ॥
इनसों हमारी कहो कासों पहचानि जानि
याते रसरासि वातें मन में न भाई है ।
प्रीतम हमारो मोर मुकुट लकुट वारो
नंद को दुलारो स्याम सुंदर कन्हाई है ॥१४॥

अंत--

राधे जू रसिक महारसिक गुव्यद जू के,
रस के सदेसन मे भरी रसिकाई है।
रस ही के ऊतर रसीले व्रजवासीन के
सुनि सुनि ऊधो हू रसिकताई छाई है।
रसिक सुजान महाजान श्री प्रताप भूप
तिन की कृपा तें यह बात बनि आई है।
रसिक सभा मे रस रंग बरसायबे को
रसिक पचीसी रसरासिहू बनाई है॥२६॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज राज राजेंद्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देवासप्त रसरासि-विरचिताया रसिक पचीसी सपूर्ण ॥

विषय--उद्धव-गोपी-सवाद-वर्णन।

सख्या ३२४. तुलसी भूषण, रचयिता--रसरूप, कागज--देशी, पत्र--८९, आकार--७ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१९७५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८११ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि--श्री गणेशयानम्ह ॥ श्री रामाय नम ॥ अथ तुलसी भूषन लीष्यते।
॥ दोहरा ॥ छद ॥

गुर गणेश गिरिधर सुमिरि गिरा गौरि गौरीस।
मति मागत "रसरूप कवि' रापि चरन पर सीस॥१॥
श्री तुलसी निज भनित मे भूषन धरे दुराय।
ताहि प्रकासन को भई मेरे चित मे चाय॥२॥
सो कविता सब गुन सहित है जग विदित सुभाय।
दीपक लै रस रूप ज्यों दिनकर दियो देषाय॥३॥
रामायेन मे जो धरे अलकार के भेद।
ताहि जथामति बूझि कै रच्यो प्रबंध अषेद॥४॥
औरनि लक्षन के लिए रामायेन के लक्ष।
तुलसी भूषण ग्रथ को या विधि कियो प्रतक्ष॥५॥
अलकार द्वै भाति के सब्द अर्थ द्वै नाम।
तिनके लक्षन लक्ष जुत बरनत मति अभिराम॥६॥

मध्य--असभवालंकार लछन
॥ दोहा ॥

कहै असंभव होत जह विनु संभावन काजु।
गिरि कर धरिहै गोपसुत को जानत हो आजु॥९८॥

जथा--घोर निसाचर विकट भट समर गनहि नहि काहू।
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु॥९९॥
पुनः चौपाई

रावन नगर अल्प कपि दहई। सुनि यह वचन सत्य को कहई॥१००॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥

सम्मत काव्यप्रकास कौ और कुवलयानंद ।
चंद्रालोक लताकलप चद्रोदय सुख कंद ॥
एकादस अरु एक सत मुख्य अलंकृत रूप ।
विविध भेद इनके धरे तुलसीदास अनूप ॥
दस वसु सत सवत हुतो अधिक और दस एक ।
कियो सुकवि रस रूप एह पूरण सहित विवेक ॥

इति श्री तुलसी भूषन ग्रथे समस्ताभूषण भूषिते रसरूप कृतौ संपूर्ण समाप्तं सुभमस्तु श्रीरस्तु ॥

विषय—तुलसी कृत ग्रथो से उदाहरण देकर शब्दालकार, अर्थालकार और चित्रालकार का वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

दस वसु सत संवत हुतो अधिक और दस एक ।
कियो सुकवि रसरूप एह पूरण सहित विवक ॥

संख्या ३२५. षड्ऋतु मार्त्तण्ड, रचयिता—रससिधु (श्री कृष्ण लाल जी), स्थान—काशी, पत्र—४१, आकार—७¾ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२३०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३०, प्रा.प्ति-स्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ८८, पु० स० ४ ।

आदि—॥श्री द्वारिकेशो जयति ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ षट् ऋतु मार्त्तंडाख्य ग्रंथो विरच्यते ॥ अथ मंगलाचरण ॥ नम. ॥

श्री कृष्ण पादाजतल कुड कुमथड वायोः रुचये पदरुणं शश्वन्मामकं हृदयाबुजम् ॥१॥
यः स्वीयानुगात साधनान् निगणयन् नाना परालेधान्
परोन्यके नैव कृपा सुधा जलधरा सोरेण यत्सिचति ।
स्याम त्व निज सोभय पर वपुर्ध्या नेन यद्गौरतात रायोतर शब्द मुधृत निजं श्रीमन्मुकुंदं भजे ॥

मध्य—पृ० ३९ ॥ कवित्त ॥

साजे लाल मंदिर को चोक वो तिवारी सब लला बिछवाई जु मखमल सुरंग हे ।
कहे "रससिधु" लाल गादी यो तकीया यहे लाल हीं सीघासन सुखड बीसु रंग हे ।
पाट जाके आगे छोर छिछोटी चोकी लालहि हे वस्तु धरे पाग जो सुरंग हे ।
लाल हें सीगार भारी कीये जो गोपाल लाल लाल जीहि आरती को वारत सुरंग हे ॥ ४ ॥

ता समे यह कीरतन भयो । लाल ही वागो लाल ही सुथन लाल ही पाग बनी गिरधारी ॥ ता पीछे दोऊ जगे नित्य कीरति पोढे इति हेमन्त ऋतु ॥ वार्ता अष्टम ॥ ८ ॥ मिती चैत्र सुद १ नयो संवत् १९२९ के वा दिन लाल छाया के सिगासदा । जेसी पिछवाई लाल छापा की नई जाल वाडी । वा दीन सदा गुलाब की फूल मंडली होय हे सो दोनो ठिकाने भई ।

अंत— ॥ दोहा ॥

समे भई तव भोग की फिर मंदिर पधराय ।
पुन वारत हे आरती देखत मन न अघाय ॥१४९॥
येहे ग्रंथ॰ वाचे सुने बढे जो वाके भाग ।
श्री प्रभून के चरन मे रहे सदा अनुराग ॥१५०॥
संमत सुभ उन्नीस सय साल वीस मे कीन ।
मिती पूस वदि तीज को ग्रंथ जु यहे रच दीन ॥१५१॥

लिखत दास वृष्णन. भोजी सुत लो जान ।
मुथरा नाम कहे सबी गुरु चरण धर ध्यान ॥

मिती फागुन वुद १० लीख सुक्यो ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री देवदमन जी श्री द्वारावतीः नरेशः ॥ स्यामाप्यारी जी ॥ श्री प्यारी जी ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रथ मे काशीस्थ गोपाल मदिर के ठाकुर जी श्री गोपाल लाल जी तथा मुकुद राय जी के उत्सवो मे जो षट्ऋतु सबधी मनोरथ (उत्सव) हुए, उनका कवि ने वर्णन किया है।

सख्या ३२६क. रासपचाध्यायी, रचयिता—रसानद, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८० पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १८८६ वि० प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—श्री राधा रस मूर्त्यै नम ॥ अथ रास पचाध्यायी लिख्यते ॥

॥ छप्पै ॥

ललित मुकुट सिर ठलक अलक मुकलित लघुरासत ॥
वक भृकुटि दृग अरुण करण कुडल मकरासत ॥
मुष मृदु हास विकास विकास वेनुधुनि दल्यत सकोचन ॥
वृद्रारन्य विहार व्रज वधू विरह विमोचन ॥
लीला प्रवृत्त लालित्य तन र नीरद वदन ॥
वकट सहाइ सकट हरन नमो देव गिरिवरधरन ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

मत्र द्वादशाक्षिर सुरूप रस मोद के,
अनूप द्वादस अस्कध कीने छद तत्कृते ॥
नासक अवोध अग्यान अधकार,
वे प्रकाशक सुबोध ग्यान अमल अहरकृते ॥
कलिकाल तक्षिक विषै लगति भक्षिक ते,
रक्षिक सदैव वचनामृतमद्भुते शुकतत्कृते ॥
करी छिति पाराइनि परी छिति ताराइनि
नाराइन रूप बादराइनि नमस्कृते ॥ २ ॥

मध्य—

नासावदन शुक भाइ ॥ फल अधराई तल ललचाइ ॥
गुदना चिवुक छवि देत ॥ ससि मे सिगार निकेत ॥२७॥
छवि सीव ग्रीव सुढार ॥ तहाँ हार माल विहार ॥
भुज कर कंज की भुज नाल ॥ आगुरी नष ससि जाल ॥ २८ ॥
जुग उरज कि दुक रूप ॥ तहाँ रोम जमुन अनूप ॥
त्रवली तरंग सरूप ॥ उरधर उदार अनूप ॥२९॥
कटिन सो सुष देन ॥ मनो मग अनग दुदुभि नितब सुरुन ॥
जुग जंग उर धरंभ ॥ जनु यमल कंचन खंभ ॥३०॥

अंत—

॥ कवित्त ॥

गाई चतुरानन बताई रिषी नारद को,
नारद ते व्यास जू को जरनि सिराई है ॥

व्यास जू सो सो सुनी सुक मुनि,
शुकमनि जू ने रिसिक परी को ऋपा करि सुनाई है ॥
रसिक मुकुट मणि स्वामी श्री विठ्ठलेस,
तिनके चरन सेइ यहँ निधि पाई है ॥
पंच प्रान रूपी पच रशिकन के काजँ रस
आनंद वनाई यह पंच अध्याई है ॥५६॥

॥ दोहा ॥

श्री वल्लभ पद रज सुमिरि निज लघु मति अनुसार ।
पंच अध्याई कथा रचि कियौ प्रेम विस्तार ॥६०॥
संवत् अष्टादश शतक वहुरि नवासी आनि ।
दीप मालिका कातिकी पूरन कथा प्रमान ॥६१॥

इति पंच अध्याई वर्नन पंचमोध्याय. ॥१५॥ सपूर्ण ॥ मिती कातिक वदी १५ संवत् १८८६ ॥

विषय—इसमे गोपियो और कृष्ण की शृगारपूर्ण रासलीलाओ का वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ का अतिम सोलहवाँ पत्र अर्द्धखडित है। प्रस्तुत हस्तलेख रचयिता का ही लिखा हुआ विदित होता है, क्योकि इसमे लिपिकार के नाम का उल्लेख नही है।

संख्या ३२६ख. वारहमासी, रचयिता—रमानद, कागज—दशी, पत्र—३, आकार—१०¾ × ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ वारहमासी रस आँनद की ॥

॥ दोहा ॥

चतुर चौंप चित् चौगुनी चैत मास उपजत ।
रुति वसंत मधि एकली चले छाडि कँ कंत ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

चैत मैं चतुर चित चोट दै अकेली छोडी विथा के विछे हैं आंनि अगिनित जाल से ।
भोजन भुलांनी देह जाति पिघलांनी यादि आवै दिलजानी करै विरहा विहाल से ।
फूल लागै सूल से दूकूल हू दवागिनी से माल सो रसाल और भौंर लागै काल से ।
धीर को न अत वीर पीर मैंमत हाय ऐसे ए वसंत चले कंथ नंदलाल से ॥१॥

मध्य— ॥ कवित्त ॥

पेलन कौं होरी सजी सादी सहजादी राधा वेंनी गूँथि अंजन दै मंजन सुहायौ है ।
सारी स्वेत ऊपर किनारी छंद चद की सो चोली मैं चतुर चुनि अतर मलायौ है ।
अंकन भरत रीझै भीझै नवरंग लाल आनंद गुलाल रतिपाल घमड़ायौ है ।
फूली अनुरागनि सौं पाए पीव या गुन सौं फागुन सुहागिनिनि भागिनि सौं आयो है ॥१२॥

॥ दोहा ॥

मति अनुसार विचारि मित कियौ प्रेम विसतारु ।
चुभै चुटीले जननि कैं चित्त चौगुनी चारु ॥ १ ॥
सव सुघरन सौं वीनती जौपै चूक लपाइ ।
मो अधीन पर करि कृपा दीजौ तहां वनाइ ॥ २ ॥

इति श्री रस आनंद की वारहमासी संपूर्णम् ॥ १ ॥

विषय—श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियों का विरह-वर्णन।

संख्या ३२७. दानलीला, रचयिता—रसिक, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—५½ × ३¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—दान लीला लिखते ॥

॥ राग बिलावल ॥

तुम नंद महिर के लाल मोहन जान दे।
श्री गोवर्द्धन गिरि सिखरि तें हो मोहन दीनी टेर।
अंतरग सो कहेत हे सब ग्वालिन राखो घेरी।
मोहन जान दे॥
तुंम नंद महेरी के लाल रानी जसुमती प्राण आधार।
मोहन जान दे॥ १॥
ग्वालिनी रोकी ना रहे हो ग्वालन रह पची हारी।
अहो गिरिधारी दोरी यो यह कह्यो न मानें ग्वारि॥
नागर दान दे वृषभान नृपती की बाल॥ २॥

मध्य—ऐसे मे कोऊ आय हे देखें अद्भुत रीत।
आजु सबे नंदलाल जू प्रगट जनावति प्रीति॥
मोहन जान दे॥३३॥
ब्रज वृंदावन गिरि नदी पशु पंछि जे संग।
इनसो कहा दुराव हें श्रीराधा मेरो अंग॥
नागरि दान दे॥३४॥
अंस भुजा धरि ले चले प्यारी चरन नीहोरी।
निरखत लीला रसिक जू सो जहां दान की ठोर॥
मोहन जान दे॥३५॥

इति श्री दानलीला संपूर्ण ॥ समाप्त ॥ हरि ॥

विषय—दानलीला का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सं० १८८८ है जो गुटके में [illegible] 'मानमाधुरी' के आधार पर है। ये दोनो ग्रंथ एक ही गुटके में है। इसमें पांच ग्रंथ भी हैं जिनके लिए कृपया देखिये चतुतभुज दास कृत 'मृग कपोत की लीला' का विवरण पत्र।

रचयिता का नाम ग्रंथात मे 'रसिक' दिया है। 'रसिक' नाम के कई कवि पहले हो चुके हैं, पता नही प्रस्तुत 'रसिक' उनमे से कोई एक है या नही। मथुरा के प्रसिद्ध साहित्यिक श्रीजवाहरलाल जी चतुर्वेदी लिखते है कि ये प्रसिद्ध श्री हरिराय है जो अपनी छाप 'रसिक', 'रसिकराय' लिखा करते थे। उनकी ही यह दानलीला है।

संख्या ३२८क. कीर्त्तन सग्रह, रचयिता—भट्टू जी महाराज, उपनाम [illegible], 'रसिकदास जी', (स्थान—गिरिराज), पत्र—३१, आकार—[illegible] × ८।।। इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली [illegible]।

आदि—श्री कृष्णाय नमः। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः। अथ कीर्त्तन लिख्यते।

॥ राग भैरव ॥

धन्य धन्य सूर महा भक्तराई।
तिहारी महिमा अपार वरनो नही जाई॥ १॥
हौं तो अति बुद्धिहीन तुम हो सरसाई।
रसिक दास नमन करत सीस चरण नाई॥ २॥

मध्य—पृ० ३० ॥ सारंग ॥

जेमत हे वलि मोहन दोऊ सखन सहित नानाविधि छाक।
सखरी ओदनादि वहु विंजन अनसखडी कीनो घृतपाक॥ १॥
ओटचो दूध ओर छे मेवा खरबूजा को मीठो साक।
रसिकदास प्रभू कोर उछारत मारत हैं ग्वालन को ताक॥ २॥

अंत—(२३० कीर्तन लिखने के बाद)

॥ दोहा ॥

सूर सूर विन हीन गति होत दिवसचर जानि।
ताते तुव प्रकास विन क्यो उघरे गुण गान॥ १॥

इति श्री षष्टमान्हिकः॥ लिखितं गिरधर ब्राह्मणेन श्री गोकुल जी मध्ये श्री यमुना जी तटे लिखितं पुस्तकं॥

विषय—पुष्टिमार्गीय मंदिरो मे गाये जाने वाले कीर्त्तनो का सग्रह।

संख्या ३२८ख. कीर्तन समूह, रचयिता—रसिकदास (गोपिकालकार जी उपनाम मट्टू जी महाराज), स्थान—श्री गिरिराज, पत्र—४२, आकार—६ × ७।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१५, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० स० ३८, पु० स० ८।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः॥ श्री मद्गोपीजन वल्लभाय नमः॥ अथ श्री रसिक रायाणा कीर्त्तन समूह लिख्यते॥

॥ राग भैरव ॥

धन्य धन्य सूर महा भक्त राई।
तिहारी महिमा अपार वरनी नहि जाई॥ १॥
हौं तो अति वुधिहीन तुम हो रसराई।
रसिक दास नमन करत सीस चरन नाई॥ २॥ १॥

मध्य—पृ० ३८ ॥ राग सारंग ॥

सुदर छैया सघन नव वट की वेठे मंडल कर व्रजनाथ॥
मध्य विराजत हे वल मोहन ग्राम पास व्रज वालक साथ॥ १॥
केउक ग्वाल परोसन लागे अरु वाढत ले अपने हाथ॥
रसिकदास प्रभु की ले आज्ञा जेवन लागे नाथ साथ॥ २॥१२॥६३॥

अंत— ॥ दोहा ॥

सूर सूर विन हीन गति होत दिवसचर जान।
ताते तुव परकास विन क्यो उघरे गुणगान॥ १॥

इति श्रीमद् गोस्वामिवर्य श्री द्वारकेशात्मज श्री मद्गोपिकालङ्कारात्मां विरचित पाठ-माह्निक समाप्ति मगमत् लिखित मिद दधीच व्यास भागीरथात्मजेन रामकृष्णेन श्री निहालमध्ये मोदी की खिडक मे वाचे सीखे सुने सुनावे तिनकू ग्रसकृत दडवत् भगवत्स्मरणम् श्रीरस्तु कल्याण-मस्तु संवत् १६१५ के चैत्र शुक्ल १ शुभ वासरे ॥

विषय—समयानुसार कीर्त्तन योग्य पदो का सग्रह ।

संख्या ३२६. कलि चरित्र, रचयिता—रसिकराय जी, कागज—देशी, पृष्ठ—३ (२३ से २५), आकार—८ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग कांकरोली, हि० व० ६२, पु० स० ६।२ ।

आदि—॥श्री. ॥ ग्र. कलि चरित्र लिख्यते ॥

सेवत चरन कमल तेरे सब किंनर नर मुनि ज्ञानी ।
वेद पुरान मद्धि करुनानिधि तूही परम बखान ॥ १ ॥
तेरी कृपा सकल प्राणिनि कें कलमख कुर्लाह कृपानी ।
कलि चरित्र करिवें अब दीजे मोहि दया करि वानी ॥ १ ॥

मध्य—पृ० २४ अ-राज चरित्र ॥

पहिले नृपति मनोरथ करि करि दान विप्र कुल दीने ।
सेवन करि करि विप्र चरन को जनम सफल करि लीने ।
अबके नृप आगें ही अपने विप्रन गरे कटावें ।
रसिक राइ या कलि की महिमा मोपें कही न आवें ॥ १ ॥
जिही वस पहिलें नृप दुज जन दान अनेकन दीने ।
भूमिदान गज दान दान हय अन्नदान सुभ कीने ।
तिहीं वंस अब नृपति विप्र कुल मारि मारि बितलावें ।
रसिक राइ या कलि की महिमा मोपें कही न आवें ॥ १ ॥

अंत—करिये नाहि भरोसो छिन् भरि जे कदीम अपने हैं ।
दूरि राखिये तिनसो बातें नाहि होत सपने हैं ।
अनजाने अनपूछे निधरक नृपहि खवावें प्यावें ।
रसिक राइ या कलि की महिमा मोपें कही न आवें ॥२०॥

इति राज चरित्र ॥

विषय—ब्राह्मण क्षत्रिय पहले किस प्रकार रहते थे और अब कलियुग मे किस तरह रहते हैं, यह वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख मे पहले "कृष्ण वृत्त चन्द्रावली" ग्रथ लिखा और बाद मे यह ग्रथ ।

संख्या ३३०. भाषा करुणानद, रचयिता—रसिक लाल या रसिक सुजान (?), कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—६¾ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२८ लिपिकाल—स० १८१७, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह) ९।१।४ बस्ता, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—।॥ श्री हरि ॥ श्री राधावल्लभो जयति ॥

॥ दोहा ॥

श्रीकृष्ण चंद्र आनंद निधि पंडित जग सिरमोर ।
करुणानंद शुभ ग्रथ रचि विशद कियौ सब ठौर॥ १॥
ताकी भाषा करन कौं कीनौ हे मन मोद ।
मैं तो अपने सीस कौ रसिकनि की धरि गोद॥ २॥
यह प्रबंध अति गूढ है दुर्ल्लभ जाकौ भाव ।
हौं तो लघुमति सौं अहो कैसें वने बनाव॥ ३॥
श्री गुरु पद के ध्यान तें उपजी है चित चाह ।
तातें विनती करत हौं जो कछु होय निवाह॥ ४॥

॥ छप्पै ॥

दामोदर दर चरन हरन चित तिमर दया कर ।
दुर्घट भवनिधि तरन सरन जाचत सुरेस नर ।
विमल कमल कें वरन सकल सुष संपति दाइक ।
रसिक शीस आभरण धरन शुदर दुति लाइक ।
तिनकौ नित चित ध्यान धरि करणानद भाषा करन ।
जैसे वुधि उनमान मिति ताही विध्य कछु अनुसरत॥ १॥

अंत—अर्थ चंद्रिका नाम सरस टीका सौं सोभित ।
यह कर्णानंद ग्रंथ भयौ रसरासि सुषद नित ।
राधा वल्लभ चरन कमल तट वृंदावन जहँ ।
सदा स्याम रस त्रषित करयौ हित कृष्ण दास तहँ ।
व्योम जुगल इषु चंद १५२० जब संख्या गई वितीति ।
कृष्ण जन्म अष्टमी सुदिन भयौ ग्रंथ शुभ रीति॥

॥ दोहा ॥

करणानंद पूरण भयौ श्री कृष्ण दास कृत चारु ।
अद्‌भुत अमल प्रबंध मह रसिकनि कौ आधारु॥ १॥

॥ छप्पै ॥

कर्णानंद दुर्वोध मह अति कठिन संस्कृत ।
पंडित जग सिरमुकट प्रगट हित कृष्णचंद्र कृत ।
ताकी भाषा होइ कौन पै को ऐसो नर ।
विनु उनके अनुग्रहहि सकै नहि करि प्रथवी पर॥
जैसी मो मति हैं कछू ताही के उनमान ।
भाषा करणानंद की कीनी "रसिक" सुजान॥ १॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

भाषा कर्णानद की पूरन भई रसाल ।
हरिरस पुहुप सुगंध जुत रसिकन की उरमाल॥
४ २ ७ १
निगम नेत्र सागर ससी १७२४ वीते वर्ष संकेत ।
पूरन तिय गुरवार शुभ कातग पछ जु श्वेत॥ २॥

ता दिन भाषा भई यह वृंदावन के मांझ।
पढ़हु रसिकवर विमल मन नित्य प्रात अरु सांझ॥ ३॥
:०: :०. :०:
चंदु गंध भये सोरठा ८१ सर्व तत्त्व द्रिग वानि।
अंकनि उलटी रीति सों गनियौ रसिक सुजानि॥ ६॥

इति श्री रसिक लाल कृत भाषा करुणानद समाप्त॥ शुभमस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ श्रीरस्तु लिखत इद पुस्तकं सवत् १८१७ वर्षे पौष मासे कृष्ण पक्षे तिथ्यौ अष्टम्याया भृगुदिने श्री गुरु प्रसादात् डूंगरसिं.॥ १॥

विषय—श्रीकृष्ण भक्ति-वर्णन।

रचनाकाल

४ २ ७ १
निगम नेत्र सागर ससी १७२४ वीते वर्ष समेत।
पूरन तिथ गुरवार शुभ कातग पछ जु श्वेत॥ २॥

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख का मध्य अश खडित है। ३८ से लेकर ४२ सख्या तक के पत्रे नहीं है। रचनाकाल सवत् १७२४ है और लिपिकाल सवत् १८१७।

सख्या ३३१क. कार्तिक माहात्म्य, रचयिता—राघोदास या राघवदास, (नवाद गज, सोराव, इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—४२, आकार—१२१/४ × ४३/४ इच, पक्ति (प्रति-पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४८ वि०, प्राप्तिस्थान—प० महेशप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—नेवादाकला, पोस्ट—अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नम.॥
वदो अलप अनादि अज अविगत विगत विकार।
भक्त हेतु धरि विविध तन करितव चरित अपार॥
नारायण मम प्रणति प्रभु श्रीनर उत्तम नाम।
मम हिय कज भृंग इव वसहु सदा घनश्याम॥

॥ दोहा॥

१ ८ ४८
वर्ष हजार आठ सो अठतालिश परमान।
कीन्ह कथा आरंभ को "राघोदास" प्रमान॥
हिमरितु अगहन मास पुनीता। शुकुल पक्ष तिथि नउरि प्रभीता॥
सोमवारि शुभयुत अनुराधा। कथा अरंभन रचहु दिन साधा॥
निश्चित पद्मपुरान पुनीता। महिमा कातिक वेद विनीता॥

अंत— ॥ छद॥
समरथ भगवाना सब जग जाना अलप अगोचर स्वामी।
त्रैलोक्य सवारन विपति विदारन समरथ अंतरजामी।
अति भ्रम अंध्यारी एह ससारी प्रभु सुमिरन छबिमाली।
जेहि कृपा विराजी तेहि भ्रम भाजी एतहू न देखहि खाली॥
लीला तनु धारी जन हितकारी अंत न जाने कोई।
गुण अगम अपारा कृत विस्तारा सागर थाह न होई।

प्रभुगर्व प्रहारी भक्ति·· शेस सारदा गावै ।
नित निगम वषाने करि गुणगानै सो उपमा नहि पावै ॥
मम भगति उपाई सोहु सहाइ जौ मोहि प्रिय प्रभु मानी ।
कहि दीनदयाला अतिभल वाला "राघोदास" वषानी ॥

॥ सोरठा ॥

लछमी सग प्रभु जाय समाधान करि जलधिजा ।
वोले प्रभु मुसकाइ चर दल वसहु पयोधिजा ॥

इति श्री पद्मपुराणे राघोदास कृते भाषा प्रवंध कार्तिक माहात्म्य संपूर्ण ॥ वतिसमोऽध्याय ।

विषय—कार्तिक माहात्म्य वर्णन ।

रचनाकाल

वर्ष हजार आठ सो अठतालिश व्रतमान ।
कीन्ह कथा आरंभ को राघोदास प्रमान ॥

संख्या ३३१ख. नागलीला, रचयिता—राघवदास, स्थान—नवावगज (सोराव तहसील, इलाहावाद), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८$\frac{१}{१०}$ × ३$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपि-काल—स० १८५३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० महेशप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—लेदहवरा, पोस्ट-अटरामपुर, जिला—इलाहावाद ।

आदि—अथ नागलीला ॥ :०: ॥

कहि गयो नारद हमहि तव अव हिये मे सुधि आइगै ।
सुनुकश जो देवकी के नंदन हो तही समुझाइगै ॥ १ ॥
वसुदेव ताहि चोराइ राषा नन्द गोकुल गाँउ मे ।
मारेगे तोहि प्रचारि नरहरि करु को घर हरि धाउ मे ॥ २ ॥
ताते कहो परचारिको अव धाउ गोकुल मे सही ।
अव आनु नन्दहि वेगि मम यह सुनत भल सवही कही ॥ ३ ॥
सुनि नंद सुरभी छीर मषन लादि शकटनि भोग ए ।
लै छीर माषण कंश भाषण नंद सो वोलत भए ॥ ४ ॥
अव जाहु वेगि पताल नंदल फूल को देरी नही ।
नहि वाधि गोपकुमार गोकुल देउ वेरी मे सही ॥ ५ ॥
कहि भलो नाथ रजाइ शीश नवाइ गोकुल आइकै ।
सुनि कान कंश राजाइ कर मे चले गेदा लाइकै ॥ ६ ॥
अव सुनहु हेतु विचारि जव कान वनमाली भये ।
एहि भाति वाल विनोद सहित समाज यमुना तट गए ॥ ७ ॥
अव नाग लीला गाइहो हरि चरित सुनि सुख पाइहो ।
वहु व्रह्मवृंद गोपाल लीला करत इत उत धाइहो ॥ ८ ॥
एक वार नंदकुमार सहित विहार जमुना मे गए ।
सुनि चरित वाल गोपाल गोकुल विकल गृह गृह मे भए ॥ ९ ॥
जह नाग नागिनि करति सेवा कृष्ण तेहि अवसर गए ।
कह अरे वार कुमार काकर कहां ते आवत भए ॥१०॥

कहु कोन मथुरा कंश नागर जूत मोहागत भए ।
विन द्रव्य सर्व उपाइ नागिनि भाग जमुना मे गए ॥११॥
कहु भागु भागु कुमार हार हमार ले नागिनि मत्र ।
नत नाग जाग धाइ लागें फिरि तो भागें ना वनें ॥१२॥
वहु कान नागिनि सुनु सोहागिनि नाग तो नाथें यन ।
शिर हारि कंश जोहारि गोकुल अवतां भागें ना वन ॥१३॥
होनिहार जो करतार को रखवार जो रार्य नहीं ।
कहु जागु जागु कुमार भवु तुम्हार सोमानें नहीं ॥१४॥
नागिनि जगाए नागराज उदार सो जागत भए ।
फुफुकार छाडु गोपाल तेहि छन कृष्ण सांवर ह्वै गए ॥१५॥
विष चद्रिका ते कृष्ण छूटो गरुड को सुमिरत भये ।
सुनि गरड जहु यस्वदा के नदन सपदि तेहि अवसर गये ॥१६॥
विनतेय रोप कृशान गुण सम नाग तेहि अवसर भये ।
तव कूदि कै जस्वुदा के नदन नागफण ऊपर गये ॥१७॥
नृत्यें गो फणपर देषि नागिनि जोरि कर विनवें रही ।
विनती सुनो जस्वुदा के नदन विरद वदन हूं नहीं ॥१८॥
चीर पंचि उवारि ध्रुव प्रहलाद सभा मे पही ।
अश्रीप नृप प्रण रापि मम अहिवात अव राखो मही ॥१९॥
सुनि विनें नागिनि नाग वदी छोर गोकुल आवहीं ।
कहु "दास राघव" नागलीला गाइ हरिपद पावहीं ॥२०॥

इति श्री राघोदासोपाध्यायेन कृत नाग लीला समाप्त [illegible] ॥

—संपूर्ण प्रतिलिपि

विषय—कृष्ण की नागलीला का वर्णन ।

संख्या ३३१ग रुक्मिणी मगल, रचयिता—राघोदास, कागज—देशी, पत्र—[illegible], आकार—८३/१० × ३४/१० इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१, [illegible], रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४६ वि० प्राप्तिस्थान—पं० महेशप्रसाद मिश्र, ग्राम—लेदहावरा, पो०—अटगमपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री कृष्णाय नम. ॥

लक्ष्मीपति पद कमल हिये हठि ध्याइये । सीताराम उदार चरण मन लाइए ॥
प्रथमि लीजे नाम परम सुधि पाइये । गणपति चरण मनाइ सुमगल गाइये ॥
लै शारद कर नाम सो विधिहि मनाइये । सुर नर मुनि गण देव तो जस जग पाइये ॥
भूपति भीषमराज सो कुडिनपुर वसैं । तनया तासु कुमारि तो मोहनि [illegible] ॥
रुकुमिनि नाम उदार सुधा छवि सागरि । कीरति परम उदार महागुण आगरि ॥
राज सभा एक वासर सो चलि आइय । बैठे भीषम राय गोद बैठाइय ॥
ताहि समै एक विप्र तहा चलि आएउ । राजहि दीन असीस देषि नृप धाएउ ॥

॥ राजोवाच ॥

कुत ते आएहु विप्र कहहु कुत जावेहु । राजहि दीन असीस देषि नृप धाएउ ॥
भूप वचन सुनि विप्र वदन घर भावेहु । पुरी द्वारका नाम देह जग गाइये ॥
जा दरसन करि जीव मुक्ति नहि आइये ॥

:o: :o: :o:

अंत--तव हरि अरुन पराग मांग भरि दीन्हेऊ ।
सुरमुनि 'राघोदास" सुजै जै कीन्हेऊ ॥
नंद यशोमति दान पाइ द्विज हरखेऊ ।
मंगल मोद सराहि सुमन सुर वरखेऊ ॥
जो यह मगल गावै गाइ सुनावै ।
व्याह दान कल्यान परम फल पावै ॥
रुकुमिनि रतन सुनै सुनि अरथ विचारै ।
आपु तरै भवसागर कुल निस्तारै ॥

॥ छद ॥

तरै संतत निरखि राघोदास हिय धरि रूंझई ।
दुख रोग शोग अनेक सकट निमिषि मह सव रूंझई ॥
यह कथा परम अपार पुन्या सुनै जो मन लाइ कै ।
सो जायकै वैकुठ लीजै विविध सुख जग पाइ कै ।
संवत् गए दस अष्ट सद गुरवार सावन पचमी ।
कीन्ही कथा आरभ राघोदास हिय धरि लइ इमि ॥
ऊँचास सवत् मास पावन नास सुनि सव पाप को ।
वरना जो मंगलधाम पूरन काम रुकुमिनिनाह को ॥

इति श्री राघोदासोपाध्याय विरचिते रुकुमिनि मगल सपूर्णम् ॥

विषय--रुक्मिणी विवाह की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत् गए दस अष्ट सद गुरुवार सावन पंचमी ।
कीन्ही कथा आरंभ "राघोदास" हिय धरि लइ इमि ॥
ऊँचास सवत् मास पावन नास सुनि सव पाप को ।
वरना जो मंगल धाम पूरन काम रुकुमिनिनाह को ॥

संख्या ३३२. छप्पै रामायण, रचयिता--राजमती (?), कागज--आधुनिक नीला, पत्र--८, आकार--$6\frac{3}{4} \times 4\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप्)--१०४, अपूर्ण (केवल प्रथम पत्र नही है), रुप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सन् १२५९ साल (? फसली), प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रथदाता--१० स्वामीनाथ जी दुवे, ग्राम--दुवौली, पोस्ट--खुखुदू, जिला--देवरिया) ।

आदि--:o: :o: :o:

देषी लोचन जल मोचीत ।
पंछी सो मन मह शभी त देषती उर शोचीत ।
दुष्ट दमन करुनायेतन राषी लेहु सरनापना ।
क्रीपा करहु श्री रामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥ २ ॥
उठे ततछन मेघ व्रीश्टी जल अनल वतानो ।
नीकसे भुअंगम डशेउ शुधी व्याधा वीकलानो ।
नीकसेउ करते तीर जाये शचानही मारी ।
अस्तुती करत कपोत नाथ प्रनतारत हारी ।
शो प्रभु वेगी दआल होऐ जीमी कपोत रीपुदापना ।
क्रीपा करहु श्री रामचंद्र मम हरहु शोक शंतापना ॥ ३ ॥

जं जं मीन वराह कमठ नरहरि श्री बावन ।
प्रशराम श्रीराम क्रीस्न जनहीत पलवादन ।
जग्रनाथ कलकी नगामी दगवीध बहु धारग ।
श्रमीत रुप श्रगनीत चरीत्र क्रीत नाम उदारग ।
शुर रजन शजन शुपत शीयानाथ श्ररी चापना ।
क्रीपा करहु श्री रामचद्र मम हरहु शोक सतापना ॥ ४ ॥

श्रंत—छुटेव वदी शभ वीवुध फोटी तेतीग हरपीके ।
श्रस्तुति करत वनाए पुहुप जं माला द्रपीके ।
शंभु श्राए श्रीत वीवीधी भाती श्ररतुति श्री रामा ।
पाए रजाए शो चले देव शव नीज नीज धामा ।
वीदा कीए शवही प्रभु देव जती पर जादना ।
क्रीपा करहु श्री रामचद्र मम हरहु शोक सतापना ॥३०॥
रामचरीत्र श्रवगाह शेषु कोइ पार न पावै ।
शेष सारदा नीगम नेती कही नीज मुष गावै ।
शंभु उमा सन भारद्वाज शे जागवलीक मुनी ।
काक भशुडी शो गरुड मानसीक कही तुलसी गुनी ।
कहै शुनै रती राम पद ऐक "राजमती" श्रापना ।
क्रीपा करहु श्री रामचद्र मम हरहु शोक शंतापना ॥३१॥

इति श्री पोथी छपै रामयेन संपुरन शमापत जो प्रती देषा शो लीषा मम दोष न दीयते· मी० श्रगहन शुदी ११ रोज वहिफे शन १२५६ शाके ।

विषय—सक्षेप मे रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ में केवल प्रथम पत्र नही है । समस्त रचना मे ३१ छपै है ।

संख्या ३३३. बाहु विलास, रचयिता—महाराज राज सिंह, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१०¾ × ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, पूर्ण, रुप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७४० (के पूर्व अनुमान), लिपि-काल—स० १८२७, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, बि० व० स० ५१, पु० स० ५ ।

आदि—॥ श्री गणाधिपतये नम. ॥ अथ बाहु विलास लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गोपाल सहाय ह्वै राधावर रस पुंज ।
केलि कुतूहल रास रस कीनों कुज निकुंज ॥ १ ॥
ब्रह्मादिक सुरगन तिते तिहिं नहिं पावत पार ।
सो या इन गाइन सगं व्रज में करत विहार ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ११ ॥ दोहा ॥
मारि बांन मुरछित कियौ सं साज्यो रथ सूत ।
जरासंधि विह्वल भयो जदुकुल गरिज सपूत ॥१४६॥
तिहिं समये हरि तब तहां धरी सेन पर दृष्ट ।
कसि कसि बान कमान के चक्र गदा कर दृष्ट ॥१४७॥

अंत— ॥ दोहा ॥

रन विलास व्रजराज के को कहिवे सामथ ।
मति परमान चाहत कह्यौ छंद भाव रस ग्रथ ॥ १ ॥
पोथी वाहु विलास की संपूरन सुभ जानि ।
लैहो सुकवि सुधारि कं महाचित्त हित मांनि ॥ २ ॥

इति श्री वाहुविलास म्हाराजा धिराज श्री रार्जसिंघ जी कृत संपूर्ण । मिती मागशिर शुक्ल १४ सवत् १८२७ वाचै पढै गुनै ताही कौ परसराम को नमस्कार परसरामेण लिखित । श्रीकृष्ण गढ मध्ये । लिखायित मोदी जी श्री महाराम जी श्री गुसाई जी श्री निवेदनार्थं ॥
तैला द्रक्षे ज्जलाद्रक्षे द्रक्षे त्सिथिल वंधनात् । मूर्खहस्ते न दातव्यं एव वदति पुस्तकं ॥

विषय—यादवो मे साथ जरासध के युद्धं का वर्णन ।

सख्या ३३४. वल्लभकुल विस्तार कल्पवृक्ष (वल्लभीय वश वृक्ष), रचयिता—गगाराम सुत राजाराम, निवास स्थान—राजनगर (ग्रहमदावाद), कागज—देशी, पृष्ठ—१, ग्राकार—१८ × २० इच, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य—पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७९, लिपिकाल—स० १७७९, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ९०, पु० स० ७ ।

आदि—श्री हरिः ॥ भावै रकरितं मह मॅग दशा माकलि मासं चितं प्रेम्णा कंदलितं मनोरथमयं । शाखा शतै संभृता । लोल्यैः पल्लवितं मुदा कुसुमितं प्रत्या-या पुष्पितं लीलाभिः फलित भजे व्रजवनी शृंगार कल्पद्रुम ॥ १ ॥ श्री ॥ संवत् १७७९ कार्तिक शुदि १ तांई श्रीमद् वल्लभ कुल विस्तार कल्पवृक्ष लिख्यो है ।

मध्य—नोट :—पुस्तक के मध्य भाग मे वृक्ष की शाखा प्रशाखा वनाकर उनमे श्री वल्लभाचार्य जी के वशजो के नाम लिखे गये हैं ।

अंत—श्री हरिः ॥

श्री मद् वल्लभ बंस वर कल्पवृक्ष विस्तार ।
जे कुसुमित पुष्पित फलित पुरुषोत्तमहि विचार ॥ १ ॥
श्री वल्लभ प्रागट्य तें वल्लभ कुल अनुमान ।
दो सह सठ ताली वपु पुष्टि प्रकाश भान ॥ २ ॥
तामे ग्रव आरोग्य हें सुभग भीन वह रूप ।
जिनको जसु विख्यात जगं जिनके अत्य अनूप ॥ ३ ॥
श्री गिरिधर के वस मे वपृ तत्तर आरोग्य ।
गाल कृष्ण जी के कुलहि तो स्वरूप स्तुति योग्य ॥ ४ ॥
श्री रघुनाथ जी दोय वपु श्री यदुनाथ जी सात ।
श्री घनश्याम जी. . .यरा वल्लभ कुल विख्यात ॥ ५ ॥
संवत सत्रह सो वरष अठहतर लो लेख ।
अव दिन दिन दूनो वढ़ो वल्लभ वंस विशेष ॥ ६ ॥
रहो सदा प्रफुलित यहे कल्प वृक्ष जग मांहि ।
भगवदीयन सिर झुकि रहो यही वृक्ष की छाह ॥ ७ ॥
यह कुल को ओतार भूग्र जगत उधारन काज ।
जिनके सरनहि तें वढ़े व्रजपति भक्ति समाज ॥ ८ ॥
श्रीमद् वल्लभ कुल सदा पद पंकज विसराम ।
गुज्जर गंगादास सुत सेवक राजाराम ॥ ९ ॥

राजनगर शुभ देश मध्य मारंग पुर निज वास ।
प्रेम भक्ति सों खोजि करि कीनो बुद्धि विकास ॥१०॥
वल्लभ कुल परताप वल रहे सदा यह ग्रा... ।
...मन के चरन रति तिनसो द्रढ विश्वास ॥११॥
श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—प्रस्तुत वंश वृक्ष में श्री वल्लभाचार्य से लेकर सं० १७७६ तक की उनकी वंश-परंपरा का वर्णन किया गया है।

संख्या ३३५. राग रत्नाकर रचयिता—राधाकृष्ण या कृष्ण कवि, कागज—देसी, पत्र—१८, आकार—१० × ८½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी-प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राग रत्नाकर लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

करि प्रनाम शारद सुमिरि जाकी जोति अनूप ।
हंस चढी वना वर्ज सातौं स्वर शुद्ध रूप ॥ १ ॥
देस सुनागर चाल में गढ उनियारो नाम ॥
राजत राव नरेश जहिं भीमस्यंघ गुनधाम ॥ २ ॥

॥ छप्पय ॥

कूरम कुल अति प्रवल पहुमि कीरति विस्तारिय ॥
तरूवस अवतंस धर्म पालक जस धारिय ॥
दान मान सन्मान भानसुत जिमि जग रजन ॥
समर मगा कर खग्ग दुग्ग दुर्जन दल भजन ॥
दिन रैनि भक्ति व्रजराज की भीम स्यंघ मन मानियें ॥
इहि हेतु कह्यौ कवि कृष्न सौं रत्न संगीत बखानियें ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

श्री व्रजपति सुरराय के चरन कवल सिर नाय ॥
कहौं रीति संगीत तें राग रूप दरसाय ॥ ४ ॥
राग प्रेम की खानि हैं राग रंग को मूल ॥
राग रंग तें होत हैं सकल देव अनुकूल ॥ ५ ॥

मध्य—॥ अथ देसाष लछन ॥

॥ दोहा ॥

दिन वसंत पहले पहर संपूर्न देसाषि ॥
रिषभ हीन गंधार गृह षोड़ पर्यि यौं भाषि ॥७७॥

॥ सवईया ॥

कुंदन ते कमनीय कलेवर केसरि चंदन पंक सुहावें ॥
वादन तें मन जोर भरयौ कर नादन तें तन रोम उठावें ॥
धीर महा रस वीर छक्यौ भुजदंड प्रचंड प्रचंड बजावें ॥
राग देसाष स्वरूप रच्यौ यह मस्त सरूप सबै मन भावें ॥७८॥

अंत--॥ अथ तुरक टोडी लक्षन ॥

॥ दोहा ॥

मधि म ग्रह मपधनि सरिग संपूर्न सुरतांन ।
दिवस दूसरे पहर मै तुरक टोडिका गान ॥

॥ सवैया ॥

तन भूखन राजै जराय जरे मुख चंद की ज्योति अमंद वनी ॥
पट केसरियां पिस वाज हरी पग लाल इजार सुगंध सनी ॥
धन जोवन जोर मरोर छकी मदिरा रस पीवत मत्त घनी ॥
यह टोडी तुरक्कन की तिय कौं सव साजन सौं कविराज भनी ॥१३५॥

॥ अथ पंचम राग लक्षन ॥

॥ दोहा ॥

षट सुर पंच महीन हैं विजि ग्रह अभिराम ।
प्रात समय गावत शुनी पंचम याकौ नाम ॥१३६॥

॥ सवैया ॥

उमगैं तन जोवन जोति जगैं मुख चंदहु की दुति मंद करै ॥
अति सोहत वागौ गुलाल सु मोतिन माल विसाल गरे ॥
सव साज सिंगार विराज रह्यो ववि सौं कर कंज कौ फूल धरैं ॥
यह पंचम अंग अनंग वक्यौ लषि कै तरुनी मन मोद भरै ॥१३७॥

विषय--राग रागिनियो का वर्णन किया गया है ।

संख्या ३३६. औषधी सग्रह कल्पवल्ली, रचयिता--राधाकृष्ण द्विवेदी, कागज--देशी, पत्र--४०, आकार--१० x ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२३५, रूप--प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आशुतोष पुस्तकालय (सस्थापक, प० वृंदावन द्विवेदी), ग्राम--चाँदोपारा, पो०--जलालपुर, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नाड़ी परीक्षा ॥

॥ दोहा ॥

भूखै प्यासै सैनयुत तेल लगावै कोइ ।
जेवै न्हावै तुरत ही नाडी ज्ञान न होइ ॥
हाथ अगूठा निकटही नाडी जीवन मूल ।
तातै पंडित जीव को जानै सुष दुष सूल ॥
नर को कर पद दाहिनो तिय को कर पद वाम ।
तहां वैद जन निरषि कै नारी को परमान ॥
आदि अंत अरु मध्य ते वात पित्त कफ जान ।
क्रम ते नाडी तीनि विधि एह नाडी को ज्ञान ॥
सांप जोंक गति सम चलै नाडी वात्त वखान ।
चपल काग मेढुक लवा गत तव पित्त वषान ॥
मोर कवूतर पडुकुली राजहंस तमचूर ।
एन्ह की गति नाडी निरखि कफ जानी यह मूर ॥

अंत—अथ गोस्तव सीतला विधिः ॥

गौ के स्तन मे एक तरह का छाला होता है वांही छाले का पानी नम्नर के नोक पर ले के आदमी के वाह पर चमडे के भीतर पहुचावें तो एक फफेदरी मे पन्त है दिन तीनि के बाद शरानीक होत है फेरि वोही मनुष्य के कवहू सीतला नही निकरती है उमरि भरि निश्चय रहे ।

:o: :o: :o:

मुनीश्वरैश्चर्क पुरस्सरैः कृतादनेक नाम्वाह्हगुन सम्मतान् ।
महौषधी नाहि मया समुधृता विराजते सग्रह कल्पवल्लरी ॥ २ ॥

इति श्री मद्दि (? वे) द वशोद्भव राधेकृष्ण पडित विरचिता औषधि सग्रह कल्प वल्लरी समाप्तिय फाणीदियम् सवत् १८६० असाढ सुक्ल द्वितीया गुरुवासरे ॥

विषय—वैद्यक विषय का वर्णन ।

संख्या ३३७क. पिंगल, रचयिता—रामकवि, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८¾ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, अपूर्ण. रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—.......................... .... कीजें ॥
साज सबै भूषन सिख नख लौ सुंदर ओढि चलहु रस पीजें ॥
पीतम के लागहु उर हसि कै मानहि रानि सकल तज दीजें ॥
बीतत पौ जोवन छिन २ ही ह्यो ससि ज्योति प्रतिन पद छीजें ॥

॥ दमिला ॥

सगन रचि आठहि आठ कवीस फणीस कहे चहु पाद धरौ ॥
वरणा चतुविंस लहौ तुकरा कवि राम सु द्वादश तेर हरौ ॥
धन में अरु च्यार मिलावहु अक निसक सबै घृत माहि भरौ ॥
दुजराम भनै सुषधाम सदा अमला दुमला इम छद करौ ॥

यथा । करिकै अति क्रोध सुरेस जबै घन सौ बृज मडल छाय लयौ ॥
तडिता तड़िडात लयै उतपात चलै वहु वात सु सोर भयौ ॥
नर नार गऊ सब व्याकुल देखि तबै इक स्याम उपाय ठयौ ॥
चट सौ कसिकै कटि पै पट कौ पट दै गिरिराज उठाय लयौ ॥

मध्य—

मराल । मुदित अचभे मे भरे बृज के गोपी ग्वाल ।
चूर करचो पग सौ जबै सकटासुर नदलाल ॥ ६ ॥

मदकल । गुण सागर नागर सदा आगर गुण गभीर ।
वेद उजागर याहु बल राजे श्री रघुवीर ॥१०॥

पयोध । पोलत छवि बृज में फिरै डोलत बैन रसाल ।
लोलत सग सखान के डोलत मदन गुपाल ॥११॥

चल । बाल लाल तन लखि कह्यो टपकै श्रम की धार ।
नव सनेह के लेहु बिन मोती करत अपार ॥१२॥

अंत— ॥ टंटक छद ॥
षट अक्षर कलि मै रच्यो अत जगण गरा मान ॥
चतुर करचो मधुभार ए छद कवीश्वर जान ॥ ।5॥

पंख नगण रगणा ऋषी चउ वृष्टि यह छंद ॥
मत इकतालीसं वर्ण चतुर मनावत नंद ॥ ।।। ।।। ऽ।ऽ
ऽ। ऽऽ । ऽऽ । ऽऽ । ऽऽ । ऽऽ । ऽ ॥४१॥

२६ शातुर छंद

दो गुरू नगण अष्ट तं उगण एक सालूर ॥
गुण तीस अक इक अधिक मत चतुरा जपौ हजूर ॥
ऽऽ ।।। ।।। ।।। ।।। ।।। ।।। ।।। ।।। ।।ऽ

विषय—इस ग्रथ मे पिंगल विपय वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रथ के आदि और अत के पत्ने नप्ट हो गए है ।

संख्या ३३७ख. मगल शाखोच्चार, रचयिता—रामकवि (द्विजराम), कागज—देशी पत्न—४, आकार—८$\frac{3}{2}$ × ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी-प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—अथ साखाचार कथनं ॥

॥ दोहा ॥

एक रदन (सिंधुर) वदन गर गुलाव की माल ।
सो श्री गणपति वुद्धि दं मोको करौ निहाल ॥ १ ॥
श्री गुरु चरण प्रणाम करि सारद दुति उर धार ।
निज मति सम पुनराम कहि मगल साखोचार ॥ २ ॥
हर्ष हिमाचल सुदिन इक मुनवर लिए वुलाय ।
शिवा लगन लिखवाय कं शिव को दई पठाय ॥ ३ ॥
कमलासन कर कमल मैं सप्त ऋषिन दइ जाय ।
इद्रादिक सुर वृ द मे वाची सो हर्षाय ॥ ४ ॥
ताकौ सुन जोरन लगं प्रमुदित विवुध जनेत ।
कर शृंगार ता मधि वने दूल्है श्री व्रपकेत ॥ ५ ॥

मध्य—पुन गिरपति गृह जाय कं रोप्यो विमल वितान ।
ता तर मण्डफ की प्रभा को कवि करहि वखान ॥१३॥
कंचन के कलशान ते चौरी चारु वनाय ।
चहुं दिशि शालन ते रुचिर आछादन करवाय ॥१४॥
अरुण पीत सित हरित रंग वहु पुस्पन की माल ।
लटकाई चहुं दिश ललित गुच्छ स्वच्छ शुभ जाल ॥१५॥
गज मोतिन के चौक जहां रंभा तर दुति सार ।
मणि माणिक गुह तिन विपं वाधी वंदनवार ॥१६॥

अंत—यौं सुनकं श्री शंभु नं कियौ ससुर परतोप ।
तुम प्रतिपालक धर्म के रहित दोप गुण कोप ॥३४॥
फेर उमा तन पुलक कं भर लोचन वहु वारि ।
पिता मात परवार सो मिली धाय गहि वांह ॥३५॥
वहुर शंभु गिरिजा हरप मंगलनिधि-सुखरास ।
कंचन के रथ वंठ कं आये गिरि कंलास ॥३६॥

राम विप्र उरधाम बम तेई सभु भवानि ।
वर कन्या यजमान को सदा करो कल्यान ॥३७॥

इति श्री दुजराम कृत मगल माखोचार सपूर्णम् ॥

विषय—इसमे शिव पार्वती विवाह का दोहों मे वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाए सकलित है —

१ पार्तरि (रामचद्र जी के विवाह का)—राम कवि
२ मगल माखोच्चार ।
३ सस्कृतरचना ।

सख्या ३३८ ग्वारनी झगडा (दान लीला), रचयिता—राम [illegible], कागज—देशी पत्र—४, आकार—७½ × ५½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—७१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—६० श्री गणेशाय नम. ॥
अजव महवूव गोकल मे ॥ किया घर नद का रोशन ॥
धरे सिर मुकुट कचन का ॥ जडाऊ रतन मन कुदन ॥
रचा सुव केर परितवर ॥ सुमेदम सुद विद्रादन ॥
अजायव नोजवा सुदर ॥ विलायं जुल्फ यनि ग्रानन ॥
सकेरं गोप के लरका ॥ लई सव धेन आगे धर ॥
अनूपम वास की मुरली ॥ वजावत हो मधुर तानन ॥
फिरत हो कुज कुजन मं ॥ पहर गल माल फलन की ॥
धरं सिर मोर के पपवा ॥ चरावो वाछर गायंन ॥
गये जव साकरी घोरन ॥ करत गुल गरत ह्र घन की ॥
लपी जव ग्वारनी सगरी ॥ करत पग नेवर भनाभन ॥
सहेली सहस के झुंवर ॥ लपी जव राधका हरनं ॥
डगर को घेर हस वोले ॥ चुकावो दान दध भामिन ॥
गई हो वेच दध सव दीन ॥ दगा दे दे पीयारी तुम ॥
अगर तुम आज पाइ हो ॥ न जंहो पीदीयं दानन ॥
:o: :o: :o:

अत—सुनो री रूप गरवीली छवीली ग्वारनी सुंदर ॥
करत हो स्याम रग निदा सराहत रंग हो जरदन ॥
अगर जो केस तुम कारे न होवं वो युमं गुमान ॥
अग जो मोल कौड़ी तुम विन पुतलिया न तुम सोहन ॥
विना कारे तिल न लोइत तनक नंनन दियं कजरा ॥
रही हो मोही सव ज्वानंन न सोहं घोर केसर की विना दिये मुरख के वेंदा ॥
न पावं वीजली सोभा विना घन स्याम घन दामिन ॥
:o: :o: :o:
भरी जव नंन सं अंसी परा धकरी नगद दरसन की ।
करी जब ग्वारनी हगसद चले जब संग पूंचादन ॥

कहत जब दान दधिलीला मगन होय रामकृष्णाजी ॥
फरजा रोज का मतिलौ बसै वृज नद का मोहन ॥ १ ॥

इती ग्वारनी झगड़ा समाप्त शुभमस्तु ।

विषय—कृष्ण की दधि लीला का वर्णन ।

सख्या ३३९. विनै पच्चीसी, रचयिता—रामकृष्ण, कागज—आधुनिक, पत्र—९, आकार—९¾ × ६½ पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३४ वि०, प्राप्तिस्थान—प० जगदीश प्रसाद जी शर्मा राजगुरु, स्थान व पोस्ट–फूलपुर, जिला–इलाहाबाद ।

आदि—कवित्त वीनै पच्चीसी लिषते द्रोपती सुता को है ॥ श्री गणेसाएन्म्ह ॥ श्री सरस्वति जी सहाई श्री राम ॥
द्रोपती सुता को गहो ल्यावो सभके बीच नीच रंगी सुसासन कुमति मन मै भरी ।
भिवम करन द्रोन मोन गहि रहे देषत षैचत बसन लाज काहु न उर धरी ।
दीनन के नाथ व्रोजनाथ द्वारिका के नाथ अमर बढ़वो पुकारी जब हे हरी ।
नंद के दुलारे "रामक्रुस्न" दृग तारे सुनु पीत पटवारे देर मरी वेर क्यो करी ॥ १ ॥

अत—
रावी है प्रतिज्ञा रैदास कविरहु की नामदेव काज छान छाई दुध पिहरी ।
रूपसी सनातन रसीले काज हुडी पट सुरानद जीव जव देव बानी उच्चरी ।
रसिक मुरारी मस्त हाथी कौ कोयो है सिष्य क्रीस्न दास लीला टारी जोगी टारी न टरी ।
नंद के दुलारे "रामकोस्न" द्रीग तारे सुनु पीत पटवारे देर मेरी वेर क्यौं करी ॥२५॥

॥ दोहा ॥

वीनैये पचीसी प्रेम सो पढै सुनै नोसी भोर ।
राम क्रीस्न तिन्ह पर क्रपा करीह जुगल किसोर ॥२६॥

इती श्री राम क्रीस्न क्रीत वीनैये पचीसी समापत लीषते रमेस्वर सुनार...लाये अगराज सकी फुलवारी ।

विषय—द्रौपदी का चीरहरण वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । प्रस्तुत रचना गगादास के "शब्दो" के साथ एक हस्तलेख मे है । दोनो की नकल किसी रमेश्वर सुनार ने की है, अत शब्दो के लिपिकाल के आधार पर इसका भी लिपिकाल स० १९४३ माना जाना उचित है ।

संख्या ३४०. लक्ष्मी चरित्र, रचयिता—रामकृष्ण (सभवत), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—७ × ५¼ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य—लिपि नागरी—लिपिकाल—सन् १२६५ साल, प्राप्तिस्थान—प० वासुदेव तिवारी, ग्राम–मीरा, पो०–मुहम्मदाबाद गोहना, जिला–आजमगढ (ग्रथ का० ना० प्र० सभा के लिये प्राप्त हो गया है) ।

आदि—श्री गणेससाय नमः लीषते लछीमी चरीत्र ॥
कहै नराएन बाल कन्हाइ । सुंनु लछीमी मोही कहो बुझाई ॥
तुम्हं सो मै कछु पुछो बीधाना । आपन अंत कहो परमाना ॥
कहा रहेहु तुम्हं केही बीधी माहा । कैसे नीस्तार करो नर नाहा ॥

सत्य बात आपन तुम्हं कहहु । केहो के ग्रीह पेही वीधी तुम्हं रहहु ॥
सुनी कं लछिमी चीत वीहसानी । कहा बचन मृदु मानदपानी ॥
जुग जुग तुंग्र चरनन्ही की दासा । करहु दग्रा चीत पुन्हु प्रासा ॥
लछ करन मोही भाषेहु नाउ । सेवा कर उर हो तुम्र ठाउ ॥
मैं भीग्रा तुग्रा पती ही प्रभु मोरा । चरन कंवल सेवो कर जोरा ॥
सुंनु वीग्रा जो तुम्ह को भावें । तंह ग्रस गुंनवनी जो पावं ॥
मथेउ समुद्र रतन सब पानी । तां तु भी ग्रा मीलो मनमानी ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

सांमी अग्या न मानें बेठा आलस माही ।
सो नर सुनहु नराएन सदा नन्द मो जाही ॥

अब ते लप्पं श्री सुमीरें सीता । जा पर कीरीपा दर्टी मो मं.ता ॥
ता घर लपीए पुरुष मनीग्रारा । तासो हेतु मनु जगत पीग्रारा ॥
लपी श्रम पुरुष सदा मन लावे । देस देस पं नव पोउ पावें ॥
ता घर आनद जांहा लपी माता । होए नेक वुधी रूप वीधाता ॥
नीच अधर्म जाहा कोइ आवें । देपी देराए चीत नाही पावें ॥

॥ दोहा ॥

जानी वुझी संग्रह करें गुंन श्रौ दोष वीचारी ।
जो पाले एह बरत सुभ ता घर वास हमारी ॥

इति श्री लछीमी चरीत्र संपुरन ॥ मीः अगहन वदी अमावस्या १४ सन १२६५ साल ॥
॥ जै श्री लक्ष्मी जी की ॥

विषय—लक्ष्मीचरित्र वर्णन ।

संख्या ३४१. कवित्त, रचयिता—रामगरीब चौबे, कागज—बाधुनिक कागज, पत्र—२, आकार—८३/४ × ५१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२८, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० चन्द्रभाल ओझा, एम० ए०, एल० टी०, प्रधानाध्यापक, [illegible] हाई स्कूल, गोरखपुर ।

आदि—कवित्त कृत राम गरीब चौबे ॥
कारन कला के कामना के करुणा के धाम पूरण प्रभा के यो दया के यो क्षमा के हैं ।
हाके हरिनाके अवलाके मंन काके रूप भूप सुषमा के यो उमा के प्यारता के हैं ।
छाके सुरमा के भूमि झांके ते ममाके सोह जाके ओर ताके परे डाके मैन दाके हैं ।
छाके जसुदा के छोहरा के लालला के प्रेम कचन कलाके नैन ठाकें राधिका के हैं । १ ॥
कंजके कलाके हरिनाके हे हलाके दृग टेपत टोनाके छिपमावे गुन छाके हैं ।
सोधे है सुधा के ताके मोह मदिरा के छाके खजन ललाके उपमावे का डाकें हैं ।
गगा जनप्या के हे कृपाके ए दिमाके दोउ मानो मनसा के मीन वाके छिछिम के हैं ।
कामके कजाके छोरि लेत हैं हया के मेरे जान हैं ल्याये नैन वारे राधिका के हैं ॥ २ ॥

अंत—मसाला सर्व बहु भाति लगाय पो पव दराव सुधार बनावे ।
जेहि हेतु सो राजत साधुन मध्य तहांते उसार छोमि पठावे ।
जन्म वृथा जग बीतत हैं सब राम के नाम को छोड़ लगावे ।
सत संगति सो सुभ ग्यान भयो हम केशवदास हरि कहाव के पावे ॥ ४ ॥

निश्चै दररंध्र मो मिलायो ग्यान षंभ हूको भंड कर्म धारा पाछे परम अपारा है ।
कलिदारु फारा को पनारा को विचार भयो गहि गिरि सिंधु जुनि षीचत न हारा है ।
"गरीवजू" निहारा रेनु मुर को भूर निहारा सकर को दारा सोतो अधम उधारा है ।
लहरि निकारा दंत वाहू को किनारा करि गंगाजी को धारा पाप काटवे को आरा है ॥६॥
राम ॥। राम ॥ राम ॥

विषय—भक्ति, शृगार और सामाजिक विषयक कवित्तो का सग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल का कोई पता नही चलता । लिपिकाल स० १९१७ और स० १९१९ के बीच है। ग्रथ मे महाराज जसवत सिंह कृत भाषा भूषण और ईश्वर कवि कृत एक अलकार ग्रथ भी लिपिबद्ध हैं, जिनमे लिपिकाल क्रमश स०१९१७ और स० १९१९ दिए हैं। अत इन्ही के आधार पर प्रस्तुत ग्रथ के लिपिकाल का उपर्युक्त सवत् दिया है । रचयिता का नाम रामगरीब चौबे है। उपनाम "गरीबजू" है। अन्य विवरण नही मिलता । प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएँ और हैं—१ रसनिरूपण—अधूरा, रचयिता—अज्ञात । २. अनेकार्थ मजरी—नददास कृत, ३ भाषा भूषण—महाराज जसवत सिंह, ४ अलकार ग्रथ—ईश्वर कवि ।

संख्या ३४२. राम तैंतीसी, रचयिता—रामगुलाम, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—$6\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{1}\frac{4}{6}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८३, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—श्री गनेसाए नमः ॥

॥ दोहा ॥

ककका कमल जोनि विनती करी सुनि कमलापति कान ।
कोसलेस ग्रहि प्रगट भए कौसलेआ भगवान ॥ १ ॥
षषा षेद षीन गा पैं आ लषी षवरी षलन की षाइ ।
सानुज सेन सुवाहु वधी मष राषी रघुराइ ॥ २ ॥
ग गा गौतम घरनी ग्राव गती गुर रुष पाइ श्रीपाल ।
दई सुगती पद रज परसी प्रभु नतपाल दयाल ॥ ३ ॥
घ घा घर घर सोचत नारि नर जानी भीम धनु घोर ।
जनक नगर पहुचत भए दसरथ राज किसोर ॥ ४ ॥
न ना नरपति नाना नमीत मुष रंगभूमि गत धीर ।
दली पीनाक श्रीगुपती गरव व्याही सीय रघुवीर ॥ ५ ॥
च चा चरचा चहुदीसी चली रही अवधपुरी प्रतीधाम ।
करैं राम को तीलक न्रीप पुरही सव मन काम ॥ ६ ॥
छ छा छनो गयो न्रीप नारी मीस दैव रहीआ पछताात ।
भरत तलक प्रभु वन गवन पुरष भार सुनी वात ॥ ७ ॥
ज जा जनक सुता सौमीत्री चुत गे वन रथ चढी राम ।
वीनपत प्रीआ परीवार पुर जानी वीधाता वाम ॥ ८ ॥
झझा झरना झरत सुवारी वन श्रीग विहग सुष देत ।
मुनी आएसु प्रभु गीरी वसे सीता लषन समेत ॥ ९ ॥
टटा टटकोली लै तुलसी कासी आवन माल वनाइ ।
पहीरावती रघुतीलक कहू देषी आपु वलि जाइ ॥१०॥
ठ ठा ठगे वीहंग श्रीग राम छवी पलक न प्रेरत नैंन ।
वार वार हेरत प्रभुही मानत तनु धर मैंन ॥११॥

डडा डरत न लषी धनुवान कर जदपि धरे रघुनद ।
श्रीग श्रीग वधु वीलोकी गती पावत प्रभु ग्रानद ॥१२॥
ढ ढा ढोटा दसरथ भूप के जोटा जुगल विलोकि ।
तन धन मन कर वारने को न रहे पल रोकि ॥१३॥
तनक सोच नृप तन तज्यो ग्रकनि मातु कुम्तूति ।
पीतु क्रित करि सानुज भरत गे वन त्यागि विभूति ॥१४॥
यथा थिरता लहत न भरत मन फँसेहु लषि रघुनाथ ।
दई पावरी दग्रानीधी फिरे नाइ पद माथ ॥१५॥
ददा दीन प्रती पूजत पादुकनी भरत करत व्रतनेम ।
पालत पुर परिवार सव वढत राम पद प्रेम ॥१६॥
धधा धनुधर सर धरतुन धरवधी वीर धरनधीर ।
दडक वन ग्रघ हरी वगे पचवटी रघुवीर ॥१७॥
पपा पावन वन पावनी सरि पावन भूमी वीभाग ।
पावन दरसन राम के पावत मुनी वड़ भाग ॥१८॥
फफा फीरत वीपीन ग्रावत भइ सुपनषा नरि तीर ।
मोही जुगल कुमार लषी स्यामल गोर सरीर ॥१९॥
ववा वाम वाम मन जानि तेहि करी कुरुप भीपाल ।
वधे चतुरदस सहस पल वरषि समर सर जाल ॥२०॥
भभा भगीनी मुष सुनी राम गुन ग्रद षर दूषन घात ।
मारीचही मीली लकपती हरी सीग्रा पछीतात ॥२१॥
ममा माग्रा श्रीग हतो प्रभु फीरे थल न वीलोकी मीथ ।
सानुज सोचत सोचवस षहत कहा वीधी कीय ॥२२॥
यया यह मही यह गोरी यह सरीत यह कानन कमनीय ।
यह वसत यह मरुत मम सकल दुषद वीनु सीय ॥२३॥
ररा राघव विकल विहग लषी घाएल परेउ ग्रचेत ।
रावनकर सीय हरन कही गएउ धीर हरी केत ॥२४॥
लला लषन राम ढुढत सीयही वधी कवंध दोउ वीर ।
करी सवरी गती मारुतिहि मीले हरन भव भीर ॥२५॥
ववा वाही कौन चीतवं सरुप जेही गती सारँग पानी ।
दइ राज सुग्रीव कह वाली महाघन भानी ॥२६॥
ससा सापाग्रीग सीग्र सोध हीत दीढा कीए सुग्रीव ।
हरी- मुदरी हनुमंत लै तरेउ सिंधु वलसीव ॥२७॥
हहा हनी पवनसुत सीघिका करी सुरसा परीतोष ।
गली लंकीनी वीलोकी गढ सीग्रा मीले संतोष ॥२८॥
ग्रग्रा ग्राएउ रावन वाग कपी पाएउ फल भट मारि ।
लंक जारि वहरे वहरी मुदीत परागे नीहारि ॥२९॥
ईई इहा सींधु करी सेतु प्रभु उतरी घेरो गढलंक ।
ससुत सवंधु ससेन रीपु दलो सीग्र लाई संक ॥३०॥
ऊऊ उहां भरत जननी वीकल तपन राम वीरहागी ।
चढी वीमान प्रभ सपन जत पहुचे वार न लागी ॥३१॥
एए एई भरत सीर पर धरं मम पावरी मग्रीती ।
राम देषावत कपीन्ह कहें नीज मुष गावत रीती ॥३२॥

श्री श्री श्रीसमेत सींघासनासीन भए श्रीराम ।
मुदित देव नर नाग मुनी बरनत राम गुलाम ॥३३॥

इति श्री राम तंतीसी दोहा सपुरन ॥ सवत् १८८३ असाढ ददी ॥ ६ ॥ ब्रहस्पती के लीपा दसपत लछीमन दास का ।

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—"क" से लेकर "ह" तक एव "अ" से लेकर "ऐ" तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर सक्षेप मे रामचरित्र वर्णन किया गया है ।

संख्या ३४३. कवित्त, रचयिता—रामचद्र, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—$१०\frac{१३}{१६} \times ४\frac{१४}{१६}$, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, अपूर्ण (सभवत), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रथदाता—ढेरातर के महाराज, स्थान व पोस्ट—माडा, जि०—इलाहावाद ।

आदि—श्री रामाय नमः ॥
कवहू मनिमानिक कनिक दुकूल वर कवहू येकांत वास वसि घांम सहीये ।
कवहू तुरंगन चढि किंकरन सग लीयें कवहू पयादे पाय सीस वोझ वहीये ।
कवहू अनेक विधि भोजन स्वछंद कीजे कवहू विमन मुठी येक चने हू न लहीये ।
साहिवी सरस पार पायीये न "रामचद्र" जाही दिधि राषे राम ताही विधि रहीये ॥ १ ॥
देष निज नयन पांडुस्वता और अंधस्वता अध ज्यौ निसक और अंध कौंन कहीयें ।
देष दसकंध लघु वंधु मेल विभीषन जाको जस गांयें भव सिंधु पार लहीये ।
देष वली वालि एक वानही ते प्रान तजे देष भानुनंद स्वग्रीवहि धीर गहीयें ।
साहिवी सरस पार पायीये न रामचंद्र जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ॥ २ ॥
राति द्योवस विषय पतित अजादेल अंत जम किंकरन घेरि निज पद गहीये ।
ग्राह गहत गजराज लाज तजि टेरचो स्वनि पगपति त्यागि धायो चक्र गहीये ।
वीच प्रभु देय कें ठगन कूर कर्म कीनौं करुना स्वनत कान प्रान जाके दहीये ।
साहिवी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ॥ ३ ॥
देष मात ध्रुव की स्वनीति सतवंती रानी रानिन में मुषीय जाकौ जस कहा कहीये ।
देष सौति स्वरुचि अजस अधिकारनि कौ पुत्र के विछोहें वनत न दव महीये ।
देष प्रथु नृपति प्रकास जाकौ जगमांझ देष वेण चकवे ऋषिन श्राप सहीयें ।
साहिवी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाही विधि राषे राम ताही विधि रहिये ॥ ४ ॥
अंत—निवल को सवल सवल को निवल करें हरे रोग व्याधि जोपें नाम नेम गहिये ।
मेर कों उथप्प के करत राइ मेर सम सुरन को रापि असुरन प्रान दहिये ।
एक ही कटाक्ष मे उतपति क्षय चौदः लोक वोक काकी तकि सुप संपति को चहिये ।
साहिवी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ॥ १ ॥
द्रोण के तनय को विसाल वौ अति तेज गभ में न आंन हौनौं प्रीछत रषहीये ।
तात की तरास तें प्रगट प्रहलाद राष्यो होलिका जराय दें कें जगि जैं जैं कहियें ।
दूसासन चीर ऐंचि हारि परचो सभा माझ द्रोपता मुदित भई नाम टेर गहिये ।
साहिवी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाही विधि राषे राम ताहि विधि रहीये ॥ ६ ॥
कर्त्ता न कोऊ कर्त्ता हें एक जगदीस ईसन के ईस सीस रापि राह वहिये ।
तुछ आन देव जाकी करीये न आसा कोय कोय न सहाय जव जम कंठ गहिये ।
कोन केती आव छिन भंगर मरीर तामें कांम क्रोध धारि किम मूर्पता सहिये ।
साहिवी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाहि विधि रापें राम ताहि विधि रहिये ॥ ७ ॥

भारथ के मध्य वड पारथ से वलवान जू जुद्ध को करत जहाँ कुंजर मे चहिये ।
ओरैं भट अमित गरद होत पगन तें धाणि को सन्निा माना रन रानि चहिये ।
ऐसे घर धौंकल में रावे टोटही के अड ऐमो अरु धीन जाको मन्नाई गहिये ।
साहिबी सरस पार पाइये न "रामचद्र" जाही विधि रावे राम ताहि विधि रहिये ॥ ८ ॥

—पूरा प्रतिलिपि

विषय—राम का विरद वर्णन किया गया है ।

सख्या ३४४क. सभाजीत, रचयिता—रामदया (मनजन), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—९ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२, अपूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० शिवकुमार शर्मा, (मत्री धर्म सघ सभा प्रचारक), ग्राम-आभौली, पो०-[illegible] गज बाजार, जि०-[illegible] ।

॥ दोहा ॥

एकदत सुत फत हर हरा हरन दुख सोर(? ग) ।
मोरि बुद्धि अज्ञान सिसु वृद्ध करन तिहि योग ॥ १ ॥
"रामदया" जाचत तिन्ह चरन कमल धरि नेह ।
कोविद के मन सपन को वाक अर्थ पुष्प देह ॥ २ ॥
सकल ग्रथ को अर्थ लै मह बुद्धि को धाम ।
"रामदया" सग्रह कियो सभाजीत धरि नाम ॥ ३ ॥
सभाजीत जाते कियो "रामदया" चित लाई ।
मूरख पडित होइ जेहि कीन्हे कठ सुभाइ ॥ ४ ॥

अंत—छुधा सक्ति भोजन सर्म काम सक्ति सहि धाम ।
वडे पुन्य के जानि फल दानसक्ति जव दाम ॥ ६ ॥
श्रुति फल मख सम सस्व वल पुत्र समफल ललितधाम ।
मनसा वाचा कर्मना दान भोग. ....

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—ज्ञान, उपदेश, राजनीति, धर्म, दर्शन [illegible] आदि [illegible] का वर्णन कर मनुष्य को सभायोग्य वाक्पटु बनाने का प्रयत्न किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का क्रम पत्र सख्या ११ के पश्चात् टूट गया है ।

सख्या ३४४ख. सभाजीत, रचयिता—रामदया, कागज—देशी, पत्र—१[illegible], आकार—९ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible] पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कुंवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम-[illegible] ([illegible]) पो०-हडिया खास, जिला-इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥

यक दंत सुत फत हर विहरा हरन दुख सोग ।
मोरि बुधि अज्ञात सिसु वृद्ध करन तिहि योग ॥
"रामदया" जाचत तिन्हे चरन कमल धरि नेह ।
कोविद के मनसपन को वाक अर्थ प्रिय देह ॥ २ ॥
सकल ग्रथ को अर्थ लै महा बुद्धि को धाम ।
"रामदया" संग्रह कियो सभाजीत धरि नाम ॥

सभाजीत जाते कियो "रामदया" चित लाइ ।
मूरख पंडित होइ जे कीन्हे कंठ सुभाइ ॥
सभाजीत एहि ग्रंथ को नाम धरौ यहि रीति ।
समै समै के अर्थ कहि लेइ सभा सब्ब जीति ॥ ५ ॥
मथि कै नाना ग्रथ को लही जहा जो उक्ति ।
सो सभ भाषा मे धरी कही अनुक्ता जुक्ति ॥
वुद्धि ग्यान चेतावनी धीरज धर्म सुदेस ।
नेति अनेति सवै कही भूपनि को उपदेश ॥ ७ ॥

अंत—संत एक हरिचंद नृप राषौ श्रुतिपर सेत ।
सुरपुर गे नर नारिहि सुकर स्वान समेत ॥

इति श्री सभाजीत संपुरन सुभमस्तु मगलमस्तु समै नाम भादौ क्रुरन पछे अभवरय मंगल बासरे समत १८८५ पोथी लीष जगसीघ गहरवार जो प्रति देषा सी लीष मम दोष न दीअते ।

विषय—ज्ञानोपदेश, राजनीति, धर्म, दर्शन, काव्य आदि अनेक विपयो का वर्णन कर मनुष्य को वाक्पटु वनाने का प्रयत्न किया गया है ।

संख्या ३४४ग. वेदसामुद्रिक, रचयिता—रामदया, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—७$\frac{2}{10}$ × ४$\frac{3}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, खडित (केवल प्रथम पत्र खडित है), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० महावीर प्रशाद मिश्र, ग्राम व पोस्ट—इस्माइल गज, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—.............................करि नेह ॥ १ ॥
लक्षण जेते असुभ सुभ सामुद्रिक के गूढ ।
रामदया कीन्हे प्रगट पहीचाने सठ मूढ ॥ २ ॥
"रामदया" भाषा कीयो सामुद्रक ए जानि ।
वुरे भले नर नारि के लियो अंग पहिचानि ॥ ३ ॥

॥ अथ पूर्व लक्षण ॥

वावन अंगुल मनुज वपु नृपति पुत्र जो होइ ।
आदर जग दिन दिन वढै भिछुता जाइ न सोइ ॥ १ ॥
अष्ट दहाई अंगुल नापि लेहु नर देह ।
कूर कुटिल कपटी महा भूलि न कीजै नेह ॥ २ ॥
नवे अंगुला अधम नर मधिमा सो लगो लेषि ।
होइ एक सय आठ को उत्तम मनुज विसेषि ॥ ३ ॥

अंत—नैंन झपकी नीद की अलशाने सव अंग ।
रोम भरी तरुनी रहै सकल अलक्षण संग ॥ २ ॥

इति समजीता राम दया कृत वेद समुद्रीका समाप्त सुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥......

विषय—सामुद्रिक शास्त्र का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक का प्रथम पत्र लुप्त है ।

संख्या ३४५. रुक्मिणी व्याह, रचयिता—रामदास, कागज—देशी, पृष्ठ—१५, आकार—४$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० वं० ४२, पु० स० १५ ।

आदि—राग सामेरी ॥

श्री विठ्ठल पद कमल बल प्रबल सबन बल हीन ।
प्रबल तेल तामस हरन मरन सम्न उद्दोत ॥ १ ॥
दिशि दछन दछन सदा लछन सर्वे प्रमान ।
विदर्भ देस सुदेस रुचि सुचि रुचिर रचनविधि जान ॥ २ ॥

मध्य—सेंधवी रागे ॥

कृष्ण चले कचन पुरी प्रति प्रातुर ऐंठाई ।
मानहु किरी पर केशरी धर्यो धामते धाई ॥ ३ ॥
सेना सब प्राइ तहा जहा बलराम सधीन ।
हरि हरनाक्षिहि न गए मिलो नृपति बहुभीन ॥ ४ ॥

अंत—ध्यान धरे जो होई जो होई चतुर्भुज रूप ।
कलिमल प्रबल न परसिहे दरसिहैं जुगल स्वरूप ॥ ६ ॥
श्री गिरिधर लाल प्रताप तें मुक्त भए जु शिपाल :
राम मदमति सुमति भई गावत गीत रसाल ॥

गाउ श्री द्वारि ॥ इति रामदास कृत श्री रुक्मणी व्याह सपूर्ण ॥

विषय—रुक्मिणी जी के विवाह सबधी पद्य लिखे हैं ।

संख्या ३४६. गगा जी का व्यावला, रचयिता—रामदास, कागज—देशी, पृष्ठ—१६, आकार—५½ × ५¼ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२८ पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग कांकरोली, हि० ब० ४३ पु० स० ६ ।

आदि—श्री गगा जी को व्यावलो लिख्यते ॥

कठ सरस्वती सुमरि प्रेम ग्रानद मनाऊ ।
मात पिता दडोत सीस सीव धुधनाऊ ।
ग्यान बुधि परगट भई गुरु गनेस मनाय ।
गगा व्याह सुनो रे साधो सुनत पाप कटि जाय ॥ १ ॥
सुमरि भगीरथी, बनते जबु चल्यो निकट गगा के आयो ।

मध्य—इद्र करे छिरकाव पवन जहा देत बुहारी ।
सुर तेंतीसो कोटि आनि पगति बैठारी ।
छतीस भोजन बत्तीस व्यजन देवन पति ग्रानद ।
आप परोसे श्री रघुनदन ले ले स्वादत गग ॥ ३५ ॥
सुमरि भगीरथी० ।

अंत—सुमरि भागीरथी ॥
डोला ते ऊतरी पार जबे महलन मे आई,
श्री रामचंद्र जी के चरन कमल वे सबही तिरे बैकुठ ॥ ५६ ॥
सुमरि भागीरथी ॥
अथ श्री गंगा जी माहा पटरानी जी को व्याहलो सपूर्ण ॥
विषय—गगा जी की महिमा और व्याहला वर्णन ।

संख्या ३४७क. गोवर्धन लीला, रचयिता—रामदास वरसानिया, कागज—देशी, पत्र—७ (पृष्ठ ६० से ७४ तक), आकार—४॥। × ५॥। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १८२७, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० व० ३२, पु० सं० १७१३ ।

आदि—॥ श्री हरि. ॥ श्री गोवर्धन लीला लिख्यते ॥
वलि देते सुरराज को पूजा करते गोप ॥ सुत सुलखिनो नंद को तवतें घोषे ओप ॥ १ ॥
सात वरस को सावरो खेलत वावा नंन कोद ॥ मतो महोछे को करचोसो गोपन के मन मोद ॥२॥
हरि वोलें तुतराय कें वूझें वावा नंद ॥ घर घर गोरस मितियें कछू गोपन वहुत अनद ॥३

मध्य—पृ० ६८
कोउ सकूंचे कोउ हसें कोउ रहें मुख मोरि ।
नंद मनसुखा सो कह्यो सव ग्वालनि लावो घेरि ॥ ५ ॥
यहे मतो मैया सुन्यो मन मे रही सु सकाय ।
जाय कहूं व्रज राज सूं सव ग्वालन देहि मुकराइ ॥ ६ ॥
ग्वार दिए मुकराय कें कहा छोड कहा लेहि ।
तरहन कें उपर दिये उपर के तरहन देहि ॥ ७ ॥

अंत—दीन जानि दया करि हरि करसो ठोकि पीठि । राजु करो सुरलोक को व्रज पर अमृत दीठि ॥ इद्र चल्यो अमरावती अमृत को मुख छाडि । नद नंदिनी सुर कुं चलें इद्र करयो रथ जोरि ॥ नंदी सुर सुख होत हे वरसानो सुख रासि. रामदास वरसांनिया वसी राधा मोहन् कें पास ॥५३॥ इति श्री गोवर्द्धन लीला संपूरणम् सं० १८२७ आ० व० १० ।

विषय—श्री कृष्ण के गोवर्द्धन पर्वत धारण करने का वर्णन ।

संख्या ३४७ख. गोवर्द्धन लीला, रचयिता—रामदास वरसानिया (वरसाना, मथुरा), कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—६$\frac{1}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, अपूर्ण (दो पत्रे खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ गोरधन लीला लिष्यते ॥
वलि देते सुरराज कौ पूजा करते गोप ।
सुत सुलक्षनौ नद कौ तातैं गोपन ओप ॥ १ ॥
मतौ महोछे कौ कियौ सव गोपन कैं मनमोद ।
सात वरस कौ सांमरौ पेलत वावा नंद की गोद ॥ २ ॥
हरि वोले तुतलाइ कैं वूझैं वावा नंद ।
घर घर गोरस संचियैं ह्वो गोपन कैं आनंद ॥ ३ ॥
नंद कह्यौ पुचकारि कैं सुनि दामोदर सोइ ।
हम सुरपति की पूजा करैं ह्या महामहोछौ होइ ॥ ४ ॥
वावा जी गोपन की यह रीति है मेरैं है यह टेक ।
इंद्र न पूजा पूजियैं गो ग्रांह्मण गिरवर सेव ॥ ५ ॥

अंत—मनमुष सुरपति स्यांम कैं धाइ धरे हैं पाइ ।
कावरि वावा नंद की नित पानी ढोऊ आइ ॥६२॥
जान्यौ दीन दया करी कर सौ ठोकी पीठि ।
राज करौ सुरलोक कौ वृज पैं अंमृत डीठि ॥६३॥

इंद्र चले इंद्रावती गोपन की यह रीति ।
लोक लोक जनु गाइयें गोपाल्न की जीति ॥६४॥
अमर चले अमरावती अमृत की मद छोरि ।
नद नदीसुर की चले इद्र चल्यो रथ जोरि ॥६५॥
नदी सुर सुष पाइयें बरसानें सुषराग ।
रामदास बरसानिया बसि राधामोहन पास ॥६६॥

इति श्री सात भोग की गोरधन लीला सपूर्ण ॥ १ ॥

विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ में दो पत्रे, सख्या ९ और १० नहीं हैं । रचनाकाल और लिपि-काल भी अज्ञात हैं ।

सख्या ३४७ग. गोवर्द्धन लीला, रचयिता—रामदास बरसानिया निवासस्थान—बरसाना (जिला—मथुरा), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—४½ × ३६⁄₁₆, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि.................................

ज राज के जसुमति पहिरायो हार ॥ ४ ॥
कीरति के पालागि करि श्री वृषभान पे लागु पाय ।
श्री राधा के पालागि करि पायो भगति पदारथ दाय ॥१०४॥
काहू वागे भावते काहू दीजें वानि । रामदास कूं पामरी र हावागे दीनी वानी॥१०६॥
गाय पिलावें सावरो ले पीतावर हाथ ।
और ग्वोरी को जेंगरा श्री दामा के साथ ॥
गाय पिलावत सावरो पेलनी गगाऊ । गोधनु चढे चवगुनो दत नदो सुर गाऊ ॥१०८॥
खिरक खिरक गाय सिंगारिये नेवर बांधे जहि पाद ।
वालराम कह्यो गोपालसु वृषभान की गाय दिखाय ॥१०९॥
ढिग ठाढे वृषभान के धार धरे है पाउ ।
कीरति साज्यो श्ररितो गोपाल हमारे आई ॥११०॥

अत—सुरपति सन्मुष स्याम के धाई धरे है पाद ।
कावरि बाबा नद के नित पानी दो माद ॥१९१॥
दीन जानि दया करी कर मुं ठोवो पीठि ।
राज करो सुरलोक को या व्रज पर अमृत दीठि ॥१९२॥
इद्र चलो इद्रा वती गोपीन की यह रीति ।
लोक लोक जनु गावीये गोपाल की कीति ॥१९३॥
अमर चले अमरावती अमृत की सुष छोरि ।
त्यो नंद नदीसुर को चले ज्यो नद चले रथ जोरि ॥
नदी सर सुष पाइये बरसानें सुषरासि ।
रादमास बरसानियां बसि राधा मोहन पासि ॥१९५॥

॥ इति श्री गोवर्द्धन लीला सपूर्ण ॥

विषय—गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ में प्रथम पत्र नहीं है । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या ३४७घ. राधाविलास, रचयिता—रामदास बरसानिया, स्थान—बरसाना (जिला—मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८¾ × ४¾ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभापा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः श्री राधाविलास लिख्यते ॥

सोई राधे जिनि हरि आराधे सोई राधे वृंदावन साधे ॥ १ ॥
सोई राधा वेदन गाई सोई राधा वृषभान कैं आई ॥ २ ॥
सोई राधा हरि वसि कीयौ सोई राधा अधरामृत पीयो ॥ ३ ॥
सोई राधा जाहि नारद गावैं नित वृंदावन देखन आवैं ॥ ४ ॥
प्रथम समागम की कहू वतीयाँ ताहि सुनत सीतल होइं छतीयाँ ॥ ५ ॥
भक्ति अनन्य रसिक जो पाऊ तौ श्री कुंज विहारी कौ जस गाऊं ॥ ६ ॥
एक दिवस व्रखभान लाडिली वैठी नंद कुमार चाडिली ॥ ७ ॥
ठाढा ओर अटा कौं गाहै नित उठ नंद भवन तन चाहै ॥ ८ ॥
अति आतुर दरसन की ठानी मनमोहन तव हिय की जानी ॥ ९ ॥
वछरा वगदावन कौं धायौं पीतांवर फरत इत आयौ ॥१०॥
आनि ओर अटा तन चाहैं मानो मनमथ कोटिक गाहै ॥११॥

मध्य—कांटौ काठि चुकटीयाँ लीजै फोरैं पीसि औषधी दीजै ॥
मनही मन उसास लेइ अंतर नारी देखि कहा कहैं धनंतर ॥ २ ॥
रोग होइ तौ वैद वुलाऊं महगे मोल के मूलि मंगाऊं ॥ ३ ॥
प्रेम विरह विख घोरयो माई मैं घूंट चारि आंखि पी आई ॥ ४ ॥
खरकैं करक करेजे मांहि व्यावरि पीर कहा जानें वाहि ॥ ५ ॥
आदि अंत की सव कोऊ कहे प्रेम की वात हीये मैं रहै ॥ ६ ॥
हेत जानि मैं तोहि सुनाई वरसाने लीला यह गाई ॥ ७ ॥

अंत—कहत विरंचि सृष्टि हम कीनी वांटि वाटि गोपनि को दीनी ॥१९३॥
धृग जीवन धृग जन्म हमारौ हमनै एक काज राधिका को न सवारौ ॥१९४॥
सृष्टि माहि सनकादिक आये तिन अपने गोविंद गुन गाये ॥१९५॥
शंकर पार्वती सव आई व्रज गोपीन की लीला गाई ॥१९६॥
रामदास कौ हीयौ सुख पावै वसि वरसाने लीला गावैं ॥१९७॥

इति श्री राधा विलास सपूर्ण शुभम् श्री कृष्णाय नमः ॥ ६ ॥ ६ ॥

विषय—इसमे श्रीकृष्ण और राधा की लीलाएँ वर्णित हैं।

संख्या ३४८. रामहोरी रहस्य, रचयिता—रामनाथ 'प्रधान', निवासस्थान—प्रयाग, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—८, आकार—१०१⁄१० × ६६⁄१० इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १९१२, मुद्रणकाल—सवत् १९१६ वि०, प्राप्तिस्थान—पडित महावीरप्रसाद मिश्र, ग्राम व पोस्ट—इस्माइल गंज, जिला—इलाहावाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ राम होरी रहस्य ग्रंथ लिख्यते

॥ छंद चौपाया ॥

जय गणेश गिरजा महेश जय जय भारथी भवानी।
जय सियराम भरत रिपुसूदन लखन लाल सुखदानी ॥ १ ॥

श्री गुरदेव केसरी नंदन जग वंदन सब जानैं ।
मैं प्रनऊँ तिनके पद पंकज जे प्रधान के प्रानैं ॥ २ ॥
जेसर नाम महीप सुता सब परम सुंदरी बामा ।
सीय स्वयंवर मँह् सब आईं बसी जनक के धामा ॥ ३ ॥
अनुज सहित जब राजमहल को गमने अवधविहारी ।
चौथी चार करन हित सिगरी जुरि आईं सुकुमारी ॥ ४ ॥
देखि देखि दूलह् की सुखमा सुखमा अचल धारी ।
चकित छकित रहिँ गई रंगीली यक टक नैन निहारी ॥ ५ ॥

:o: :o: :o.

जस जिय जाकी मति मनसा की तस ताकी मति पाकी ।
नृपनि सुता की मोज मजाकी रही न अब कछु बाकी ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

लखन लाल सबको लखे अनुजन सजन समाज ।
रघुनंदन को नहि लखे जे रघुकुल सिरताज ॥ ४ ॥

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचितं राम होरी रहस्य ग्रंथ चतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥

कहत सुनत हरिजस जिनके द्रिग आंसुन की झर लागी ।
बीसबिसे तिनके तुम जानो येह राम अनुरागी ॥३६॥
वोनइस सै द्वादस संवत मे प्राग त्रिवेनी पाहीं ।
साधु रजायसु पाय नाय सिर रच्यो ग्रंथ मन माही ॥३७॥
माघ अमावस महँ अरंभ करि राम जनम तिथि बाँही ।
मिथिला होरी रहस राम को पूरन भो मुद माही ॥३८॥

॥ दोहा ॥

वय भै छपन वरस को भोगत विषय सिरान ।
वरन्यो होरी रहस यह रामनाथ परधान ॥ ६ ॥

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचिते रामहोरी रहस्य ग्रंथ षष्टमोऽध्याय ६ ॥ इति श्री रामहोरी रहस्य संपूरणम् य. पोथी सहर वनारस दिवाकर छापाखाना मे शिवचरन के इहाँ रामहोरी रहस्य ग्रंथ छपा साकीन मोहल्ले भदैनी कालीमहल के पास बकलम खगेशदास कृष्ण भक्त औ छापने वाले माता दयाल कारीगर य॰ पोथी जिसको लेना हो सो चांदनी चौक कुंज गली के पछिम फाटक के सामने रामचरन के दुकान पर मिलैगी सो जानब संमत १९१९ मिती फागुन वदी ४ वार सुक्रवार के समाप्तम् शुभम् ॥

विषय—मिथिला मे श्री रामचंद्र जी का होरी उत्सव मनाने का वर्णन ।

रचनाकाल

वोनइस सै द्वादस संवत् मे 'प्राग त्रिवेनी' मांही ।
साधु रजायसु पाय नाय सिर रच्यो ग्रंथ मनमाही ॥३७॥
माघ अमावस महँ अरंभ करि राम जनम तिथि बाँही ।
मिथिला होरी रहस राम को पूरन भो मुद माही ॥३८॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १९१२ और छपने का संवत् १९१९ है । यह शिवचरन के यहाँ भदैनी, काली महल, बनारस के पास दिवाकर छापाखाने में छपा । इसके मे लिखने वाले कृष्ण भक्त खगेश दास थे और छापने वाले थे माता दयाल कारीगर । इसके विक्रेता रामचरन थे जिनकी दुकान चांदनी चौक में कुंजगली के पश्चिम फाटक के पास थी ।

संख्या ३४६क. काशी वर्णन (?), रचयिता—राम प्रगास गिरि, निवासस्थान—हुरहुरी (जौनपुर), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ३$\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश गिरि, ग्राम—हुरहुरी, पो०—केराकत, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री कृष्णः
जै जै जय जयति शिंभु गौरि सुषदाइ री ।
असी वर्नयोर्मध्य पंचकोश वेद कहत ता मध्य विश्वनाथ सुंदरि मठ क्षाइरी
कंचन को मुम्य सोह निरषत शव देव मोह करत कल्लोल देव पुरिमध्य आइरी
राजत विराजित तह देव शकल शेव करत पूजत हरगौरि पद सुरसरि अन्हाइरी
पुरी मध्य दंडपाणि वास लीन्ह योग पानि करत है प्रकाश योग संतन्ह सुषदाइरी
ताहि प्राचि दिशा वाश भैरो अलवेला लियो करत न कोतवाली शिंभु आयसु वरपाइरी
जाको जस नित्य अनित्यता कह तस देत देउ करत है सुनेति निम मारग कलाइ री
पुरी मध्य वाश लीन्ह मातु अन्नपूर्णा जि पुरी पचकोश तहां रीद्धि शीधि क्षाइ री
"राम प्रगाश गीर" चरण कमल करत आश देहु कृष्ण भक्ती सत सतत सुषदाइरी ।८।

अंत—वेद शून्य करके अंतर शप्त लिंग अवर
आप वसे काशि मध्य येह वेद सत्य गायो है
पुनः रत्न रूप शिंभु कीन्ह विमल वेद भनत
वास काशी आप लीन्ह मनु जी कहायो है
ताके अनंत एकविस रूप लिंग लीयो
वसे है प्रतंत्त जुक्त पंचम को समझायो है
ताके अनंत सत सतगुनी सतगुन ताहि के
गुने दस सहस कहायो है
तेहिते सुवेद अधिके सहसदश गुनि पुनि
दस संख्या लिंग वेद वुध गायो है
ताहि गुनि गुन वहुरि दशगुन करी
लक्षिते करोरि सतलिंग कासी आयो है
पुनी ताहि राम गुनी गुन वस चेत होइ
ये नो उद्दृष्ट कोठी लिंग कासी छायो है
"रामहू प्रगाशगीर" आस हरि चरनन
अंजनी सुअन पद पंकज सो भायो है ॥ ८ ॥

विषय—काशी के वावा विश्वनाथ एवं शिव लिंग का माहात्म्य वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण तथा खंडित है। केवल दो ही पत्र उपलब्ध हैं। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं।

संख्या ३४६ख. नासकेत पुराण, रचयिता—रामप्रगाश गिरि, स्थान—हुरहुरी (केराकत, जौनपुर), कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—८$\frac{3}{10}$ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्—२७७८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८८३ वि०, लिपिकार—१८८३ वि० (?), प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश गोसाँई, हुरहुरी, केराकत, जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री हनुमताय नमः ॥ शोरठा ॥
मन्त गान पद कंज ॥ वंदो धरनी सीश धरि
करण शकल अघगंज ॥ वुध्य देन सुंदर विशदः ॥ शोरठा ॥

विघी पद शुभ जलजात ॥ वदौ हृदय प्रेम जुन ॥
मिटे भव उतपात ॥ अघ अघ गुन मव दूरी करि

:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

शत चरण वदी धरि शिशा ॥ जाके कृपा होहि अघ धीना ॥
सो प्रभु होहु सहाय दयाला ॥ जाने उर हरि भक्ति बिशाला ॥

:o: :o: :o.

अक्षर युक्त मत्र मोही देहू ॥ शव मिली नाथ विनय मुनि नेहू ॥
जेहिते नाथ कहो एह हेतु ॥ शुनत नशाहि महा अघ जेतु ॥
कहिहो शोइ इतिहाश बखाना ॥ जा सुत मानव सो मृदु बाना ॥
कहेउ सुनाय रिषिन्ह के पासा ॥ सोइ मत्र जीव विदुर प्रकाशा ॥
जो शुकदेव कृपा करि वरना ॥ राज परिक्षीत शा अघहरना ॥
सो इतिहाश कहव मैं भाइ ॥ जो तुम्ह कृपा करहु गुणगाइ ॥
भाषा कृत परवध वनावो ॥ जेहीं त सुमुभी जाये गुढ पावो ॥
एक इतिहाश सुनग अती पावन ॥ नाशकेतु कर चरित सोहावन ॥

॥ दोहा ॥

सो इतिहास कहो शुनग पावन परम पुनीत ।
"रामप्रगाशगीर" अशपद रामचरण नवनीद ॥

॥ चौपाई ॥

शवत् अठारह सय तीरासी ॥ भाद्रमास शुभ सुपद सुपासी ॥
शूक्ल तीज तिथ तेहि दीन भाई ॥ रिक्ष त्रयोदश ग्रीन जन गाई ॥
ता दीन चन्द्र सुभग शूबोवारा ॥ हरिहर जन तेही दीन अनुसारा ॥
द्वापर अत जनमेजय राजा ॥ गग नीकट गये सहित समाजा ॥

:o: :o: .o.

एक समय......नृपाला ॥ भय उदाल तपतेज बिशाला ॥
ब्रह्म सुवन उद्यालक नामा ॥ भयेउ महा तेज तप धामा ॥

अंत—

॥ सोरठा ॥

पथ कथा इतिहास सुनत न पथ दुख व्यापही ॥
हरिहर गुरुपद धाश रामप्रगाशगीर प्रेम जुन ॥

॥ चौपाई ॥

धर्म सुपथ पथ मारग पावा ॥ तत मुनि कही देषि जन धावा ॥
निरमलि कोमलि सो पथि भाइ ॥ अति रमनीय वेद जस गाई ॥
धर्म पथि तहवा चलि जाई ॥ मह वृक्षघन सेहि पथमाही ॥
पुष्प गंध वासित सुखकारी ॥ त्रिविध भाति तह बहत बयारी ॥
वापी कूप तडाग सोहावन ॥ तेहि मह शीतल वारि सुपावन ॥
दधि अरु क्षीर नहीं तह भाई ॥ भक्ष भोज्य फल सो मह पाई ॥
अति विशाल रथपावहि सोई ॥ चढि नर नारि बिमल पद होई ॥
धर्म मइ कह येहपथ ताता ॥ देषेउ दीपं सुदर तेहि जाता ॥

॥ दोहा ॥

वित्त अनुशार दान देहि हरष सहित देहि तोष ।
पावही स्वर्ग बीहार वर रहीत सबत समसोष ॥ चौ० ॥
.... अपूर्ण ।

विषय—नासिकेत पुराण की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है। अंत के कुछ पन्ने लुप्त हैं। समस्त बासठ पन्ने उपलब्ध हैं। रचनाकाल सं० १८८३ वि० है।

संख्या ३४६ग. पदावली, रचयिता—"राम प्रगाश गिरि", निवासस्थान—जौनपुर, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८½ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश गिरि, हुरहुरी, पो०—केराकत, जिला—जौनपुर।

आदि—कृष्ण ॥

सतगुर वारि विआहल अमर सेंदुर पावल हो
वरह वरिस सेवन कइली तव जोती लषावल हो
जोती लपत परकाश हीये भरि छावल हो
इगला पिंगला सोहागिनी डहर देषावल हो
सो शष ढोलना चढ़ाइ शषीन्ह वैठावल हो
तुरीआ तत्व विवेक कहार लगावल हो
सूरति पथपर चढत गगन सुद्धि पावल हो
सतगुरु कृपा विलोचन त्रिकुटी नहि पावल हो
तोह मह करीला नहान सकल अघ दावन हो
अघ जरि गयेउ समूह तन सकल पावन हो
नयन न्रिमल सुप पाइ निरपि पथ छावन हो
तेहि आगे महल सोहावन परम हस पावल हो
दरस करत अघतृन तुल सलभ जरावल हो
तेही आगे शब्द वीवेक उर्द्धगती पावल हो
तह मंदील परम सोभाय कोटि रवि क्षावल हो
तेहि आगे मयदान धेनु दरशावल हो
तेन्ह दीयो अमृत पान अमर पद पावल हो
तेहि आगे पथ रूप झलामति पावल हो
गोफा लहर अनुपन मन ठहराव हो
तव सतगुर की सूरति शब्द जोहरावल हो
तव निर्मल भौन एन द्वार क्षवि पावल हो
झुलमुल लहरत अनूप देषि क्षवि पावल हो
तह करी सूरति सोहाग भीतर दरशावलो हो
निरष मैं आपद सेज हरष उर छावल हो
येहि विधि अमर सोहाग पीया पद पावल हो
मिल लीउ पीया पद रूप नैहर विसरावल हो
क्षूटल नैहर नात वहुरि नहीं आवन हो
मोहि लगि शब्द सुहोश सैआ मनभावन हो
येह मंगल परम अनूप जव नर कोइ गावल हो
सोइ नर नारी सुधन्य ब्रह्म पद पावल हो
"रामप्रगाश" गिरास सतगुर पद भावल हो
अक्षय अव्यक्त अनूप ब्रह्म पद पावल हो
१६ श्री कृष्णाय।

समस्त उद्धृत :o: :o: :o: :o:

विषय—कृष्णार्जुन सवाद वर्णन ।

सख्या ३५१. तत्र सामुद्रिक, रचयिता—रामफल, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—४८, आकार—६$\frac{?}{?}$ × ६$\frac{?}{?}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—स० १६१७ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रघु उपाध्याय, ग्राम–विर्वया, पोस्ट–फूनपुर, जिला–इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नम. श्री शास्त्री यदुनाथे जयति ग्रथ सामुद्रिक ।।

इस ग्रथ को देखने सो सपूर्ण जन्म का हवाल मालूम होगा आयु ज्ञान होगा जितना वर्ष जीवन होगा सो ज्ञान होवेगा जीतना इसका पुत्र होगा किवा नपुसक होगा वध्या होगा सो सभ हाल लिखा ज्ञान होगा जीतने स्त्री सो भोग है सो हाल मालुम होगा राजा होने का चिह्न प्रजा होने का चिह्न धनी होने का चिह्न पडित होने का चिह्न मूर्ख होने का चिह्न साधु होने का चिह्न चोर होने का चिह्न लक्षण शुखी पापी पुन्य मन होने का सभ हाल मालूम होने के वास्ते नाना प्रकार के संपूर्ण चिह्न का हवाल लिखा जो है सो जानने के वास्ते वड़ा पारश्रम करके यह ग्रंथ संग्रह हो गयो है इह ग्रंथ वडा दुर्लभ है सो सपूर्ण प्राणियो के ज्ञान होने के वास्ते प्रगट हुआ है ।

अत—

।। श्लोक ।।

इदं सामुद्रिक शास्त्रं विष्णना परिभावितं ।
श्रुत्वा धृत्वा च शोकान् जहति पडिता ।।११३।।

अर्थ श्री महादेव जी श्री पार्वती जी सो कहे है कि गिरिजानंदिनी प्रिये यह सामुद्रिक शास्त्र तो श्री विष्णु भगवान जू श्री ब्रह्मा जी सो कहे हैं यह सामुद्रिक शास्त्र को यदि कोइ प्राणी श्रवण करे याके अर्थ को धारण करे याको पढे पढावे तो यह सामुद्रिक शास्त्र के जानने सो वा प्राणी वुद्धिमान पंडित हे कि सपूर्ण संसार के मध्ये नाना प्रकार का चिता को त्याग करके शुखी होगा सपूर्ण कामना को पावेगा ।

इति श्री तत्र सामुद्रे हरगौरी संवादे संपूर्ण स्त्री पुरुष लक्षण शुभाशुभ कथनम् ।

शहर वनारस केदार प्रभाकर तंत्र सामुद्रिक की पोथी छपी गोपाल चौवे के छापखाने मे छपी साकीन मोहले सोनारपुरा वाकलम हरनाम सिंह छापने वाले रामफल जिसको यह पोथी लेना होय सो चादनी चौक मे वीहारी चौवे के दुकान से मिलेगी सवत् १६१७ मोः वैशाख वदी ५ वार मंगर के समाप्तं ।।

विषय—सामुद्रिकशास्त्र का वर्णन ।

संख्या ३५२. पद्मपुराण (रामचद्र अश्वमेध), रचयिता, , रामवकस, कागज—देशी, पत्र—३२७, आकार—१०$\frac{?}{?}$ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—स० १६३२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामरुचि पाडेय, ग्राम–वोदरी, पो०—लेवरुआ, जिला–जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुर चरण कमलेभ्यो नमः

।। सोरठा ।।

वुध्य विहारी चारी भुज गननायक गजवर वदन ।।
सौम्य कारी भै हारी वंदौ सीव सुत विघ्नहर ।।
वंदौ साधु सुर मुनि सुजस वीग सीत कमल समान ।।
"अस्वमेघ" की सुभकथा सादर करौ वषान ।।
व्याम कहा मुनि राज सो सुनिए निर्मल वुधी ।।
वत्सायन अहिनाय को सुभ संवाद प्रवुधी ।।

आदि—....................

दुपहर कर वाल गोविंद नेवाज वुडहट गैलहि वढाव मीके दसषत सें पत्र होय गैलली अनूपादि जस पत्र कर रीति है ० हम सिहवली ग्राम पाछम तट अगोरत तवन पूर्व कथा मह राम-पेलावन कर नई वार्ता जे जयादत्त अकुलाय गैलहि मगत दिपवत दि १०० वा० २०० वा ३०० वा लाष अनेक जाल विस्राता पछि सवित रुक्का चमार फोरीन देनामीरअेऐंले वलिवत सुगंध मूद्रा वावू मगावल १०) भगवान भारती धर्मपुर मेजल शत्रु वर्ग करमना करै वालन्ह कर रास भैल मन आनंद मैल त्रिपाराम के जरिके सिद्ध अनुप राम कर लडिके नीक आगे गुप्त मे रामषेलावन तमसुक ८४ कर निकासि दिहल मुप्ता १४) मारफति भवनराम के तेसे भवनराम के परपरा वासी सुद्ध मन जानि मन मानल जे भवन उमराव कर सकोच छाडि पत्र लिपावल नीक नीक कहत करतमूल वात भारथ पाठ करना मी० जे० सु ३ करन एतना वृतांत राधारमण १८७० ॥

चरण धरहु सुनि श्रवण मुरारी । सत्य वचन सम जगत न भारी ॥ १ ॥
जे जय मोहि शरण जग आवा । भजौ ताहि तम विधिहि सुनावा ॥
धृष्ट वचन नेहि एह सति वानी । तजहु पितहि मातहि सुपदानी ॥
सरवस तजि हम सव पद सेवा । वचन सत्य हित आनद भेवा ॥

अंत—
लषि मुख विश्व कंपत न जानी । हरिनिज मायहि निज उर आनी ॥
पुनि जसुदा निज नैन निहारा । किलकत हसत गोद सुकुमारा ॥३७॥

॥ दोहा ॥

"रामवछ" हरि सिसु चरित जो जग नर तन पाय ।
सुनै गुनै मानै मनै तेहि पर स्याम सहाय ॥
सो नंद भवन नंद नंदन पर ब्रह्मा राजतु पृथुक ।
लीला आनंद कंद करत स्याम जीवन जनन्ह ॥

इति श्री भागवते महापुराणे दश स्कंधे भाषा रामवछ कृते अनभजन तृणावर्त वधे किंचिद्विश्व दर्शने परम कल्यान दायके सप्तमोध्याय: गोपीजन वलभाय कृष्णाय नमः १८६१ ॥

वसुमय उदक अवनि कर जोई । मृदुल तजत पटि गृह जनछिति कोई ॥

॥ दोहा ॥

वश्चिक धनु कप कुंभ भनु मीन सुअज वृषु जोरि ।
१ २ ३ ४ ५
कातिक गुण प्रथमहि लपो आठ मास श्रुति भोरि ॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—भागवत दशम स्कंध का अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित और जीर्ण अवस्था मे है। आदि अंत के पत्रों के अतिरिक्त मध्य से भी कितने ही पत्रे लुप्त हो गए है ।

संख्या ३५४क. हनूमान जयति, रचयिता—रामरतन लघुदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ४½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ हनूमान जयति लिष्यते ।

॥ दोहा ॥

जयति अमंगल नाशिनी मंगल दायक सोय ।
मज्जन करि याको पढ़ै कष्ट कदी ना होय ॥ १ ॥
सेवक रक्षा करन कं लिये गदा निज हाथ ।
संकट सोक निवारि कों देत अर्भ कपिनाथ ॥ २ ॥
मारुतनंदन वीर कों श्री रघुवीर उपास ।
या विचारि सरनं भयो "रामरतन लघुदास" ॥ ३ ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य वल धीर दयानिधि सोय ।
जासु कृपा तें जीव कों राम चरण रति होय ॥ ४ ॥

अंत—

पाप त्रय ताप ग्रह दूरि होय वृश्चिकी प्रेत पिसाच नहि निकट आवें ।
भूत हरि डंकिनी नाटकी चेटकी कष्टि अरु मुष्टि दिनमें नसावें ॥
करें अस्नान अरुनोदय प्रातही सीस दे तिलक या जयति ध्यावें ।
कष्ट संकट हरें सुष संपति करें सिध्द सकाज लघुदास गावें ॥२७॥

॥ दोहा ॥

मंगल हनुमत पूजियें नित उठि जयति पढाय ।
रामरतन लघुदाश कहि मन वांछित फल पाय ॥२८॥
सब देवन के मध्य में दीप्य पवनकिशोर ।
ताहि भजो चिंता तजो सदा सहायक तोर ॥२९॥
रहत सदां निज दास पर पवनपुत्र अनुकूल ।
प्रणतपाल षल दल दलन जं जं मंगल मूल ॥३०॥
हरियाणों एक देश है गाव चिंघाणों नाम ।
गौड विप्र राजत तहां अतिपावन सो ठांम ॥३१॥
भरद्वाज कुल गौड द्विज मनो राम बुध तात ।
श्रीध्यां नाथ गुरु मिलें मयाराम विख्यात ॥३२॥
मया राम महाराज को रामरतन लघुदास ।
जश गावत हनुमत को मंगल करन प्रकास ॥३३॥

इति श्री रामरतन लघुदाश कृत हनुमान जयति संपूर्णम् शुभमस्तु ।

विषय—हनूमान् जी की विरदावली का वर्णन ।

संख्या ३५४ख. कृष्णाष्टनामाष्टक, रचयिता—रामरतन लघुदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—७ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह) काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री राम जी ॥

श्री राधा श्री कृष्ण को श्री बिहार श्री नाम ।
श्री दायक श्री मालकर श्री समर श्री धाम ॥ १ ॥
श्री वनिता श्री लाल को श्री सुंदर वह भाव ।
श्री लदि श्री गावन लगो श्री मुख सुजन घाव ॥ २ ॥

॥ पद ॥

देषि सपी छवि नंद नंदन की ।
मृदुल मनोहर स्याम विलोकत मंद भई दुति चंद्र मदन की॥
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अलक विराजत पौरि वदन की॥
भृकुटी वक्र कुरंग विलोचन सुक नासा अंभोज वदन की॥
लटकन लटकी रह्यो अधरन पर भांति लसति है मुक्त रदन की॥
अमल कपोल चिवुक अति सुदर श्री वसंषवत रूप सदन की॥
विविधि माल श्रीवत्स भृगूपद भुज प्रलव त्रय ताप कदन की॥
वाजू कंकण वाक मुद्रिका कवल हस्त नष ज्योति हदन की॥
लकुटी लाल वासुरी भ्राजत त्रिवली रुचिर वनी सुपदन की॥
कटि किंकणी पीत पट छाजत चमकत तडित जथा जलदन की॥ जुगल जघ र०॥
रामरतन तजि लाज भटू मैं हौंन चहौं रज कंज पदन की॥ ३॥

मध्य— ॥ पद ॥

देषी री या कुँवर कन्हैया।
मनमथ कोटि मनोहर मूरति याहि न लोचति को जग मैया।
नील जलद सम स्याम सुभग तन द्रग मुष कर पद कज लजैया॥
दमकि रही नप पांति रमाघर मणि भूषण प्रति अंग सुहैया॥
केसरि तिलक मुकट अलकावलि झूमक नांक बुलाक हलैया॥
भृकुटी चाप कुरग विलोचन हसि हेरत मन मोल करैया॥
कंध दुसाल पीत पट काछै कर मुरली वर तान गवैया॥
रामरतन पग धरत धरणि पर ताल सहत संगति नचैया॥१०॥

॥ दोहा ॥

श्रीन सहित श्रीवन विषै गोपी गन माहि॥
श्री हरि की छवि श्री प्रिया श्री मुष गान कराहि॥११॥

अंत— ॥ दोहा ॥

श्री निवास अष्टक पढै श्री अनुराग समेत।
श्री वाणी कीरति लहै श्री घनस्याम समेत॥२१॥
जुगल उपासिक नारि नर जे न लहै रस आन॥
जिनकौ सरवस ध्यान यह विमुष सुनै नहि कान॥२२॥
श्री स्वामी सर्वज्ञ श्री मयाराम महाराज।
श्री गुर करण तै कह्यौ श्रीपति सभा समाज॥२३॥

इति श्रीकृष्ण ध्यानाष्टक संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—पद और दोहो मे राधाकृष्ण की युगल उपासना का वर्णन।

सख्या ३५५. भागवत (एकादश स्कध), रचयिता—रामरसिक, कागज—देशी, पत्र—८८; आकार—९$\frac{३}{१०}$ × ५$\frac{१}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२२८, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४० वि०, प्राप्ति-स्थान—प० रामरक्षा त्रिपाठी "निर्भीक", अध्यापक, फार्व्स हाईस्कूल, फैजावाद।

आदि—.........................तजानी॥
वल निधान यह निज उर आनी॥
यदु कुल दुमह भूमि वताई॥ गयो भारु नग यो तव ताई॥

॥ गुर अस्तुती मुपवंद प्रथम ॥

॥ सापी ॥

साहेव दीन दयाल गुर सो पर और न कोए ।
सरन आए जम सो वचैं आवागवन न होए ॥ १ ॥
दया करन ऐगुन हरन तारन तरन उदार ।
असरन सरन वंदौं चरन तुम विनु नहि निस्तार ॥ २ ॥
देपि अधमता आपनी परवस जम के हाथ ।
त्रसित कहेउ साहेव सरन भौ भए हारि सनाथ ॥ ३ ॥
प्रभु सव लाएक पारषी हौं भ्रमिक अज्ञान ।
लोहा कनक पारस करैं साहेव सरन समान ॥ ४ ॥
वंदौ चरन सव दुखहरन प्रभु प्रसाद सुष भूरि ।
दया करी दुप सम हरी सन्चित सुलझी दूरि ॥ ५ ॥
वहे वहाए जात थे भौसागर के मांह ।
दया करी परषाय सम सरनाए गहि वांह ॥ ६ ॥

अत—सत्त सब्द टकसार

॥ सापी ॥

मानुप जन्म नल (? नर) पायकें चुके अवकी घात ।
जाए परो तो चक्र मे सहे घनेरी लात ॥ १ ॥
जिन्ह चेता तिन्ह चेता मानुप केरी दांव ।
नहि तौ दुरमत फेर मे सहे घनेरी घाव ॥ २ ॥

॥ छद ॥

जेहि हेत सुर नर मुनि जना वहु जोय जप रट लावहीं ।
नहि वोर छोर वेकार पावहि अगम कहि कहि गावहीं ।
सो आद अंत जे सुजन जन पारप करहि परपावहीं ।
समगा फांस मिटाए अनय असक सोई पद पावहीं ॥ १ ॥

एती आद अंत परप विलास वरनन ग्रंथ राम रहस्य दास कृत संपुरन ॥ दमपत रांमदरस के प्रति देषा सो लिपा मम दोस न दिएते ॥ पढ़ै गुनै जो सुजन जन साहेव विनती मोरि ॥ अछर वेंदी कांम मांतरा ॥ लीजै वुध्यतें जोरि ॥ संमत १८७८ के साल ॥ सुभ अस्थान भाग नगर ॥ मींती सावन वदी ॥ ५ ॥ पंचमी ॥ वार मंगलवार ॥ संपुरन ॥ विवेकसार हौं ॥ परप विचार है ॥ मुक्ति का द्वार है ॥ चरन गुरदेव का ॥

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नही दिया है । लिपिकाल सवत् १८७८ है ।

प्रस्तुत रचना निम्नलिखित रचनाओ के साथ एक ही हस्तलेख मे है —

१. अव दाल मता साखी चौरासी अग की—पत्र खडित हो गए हैं ।
२. वचन वीजक—कवीर—पत्र खडित हो गए हैं ।
३. रेखता—कवीर
४. ज्ञान कहानी—कवीर
५. परख विलास—राम रहस्य दास
६. समस्त सार मानुप विचार—
७. पंचकोश—
८. फुटकर सवैया

संवत् अठारह सै वरस छतीस पुनि सुदि तिथी पाचें गुरुवार माघ मास है ।।
रसिक हुलास कर सुमति प्रकाश कर नवल प्रगट कियो जुगल विलास है ।।१०१।।

इति श्री मन्महाराजाधिराज महीपति जग इन्द्र वहादुर महाराजा रामसिंह जी कृत जुगल विलास संपूर्णम् ।। अथ रागन की गिनती के कवित्त ।।

गौरी माझ दोइ कन्हरो मे तीन ईमन मे सात हैं सरस कान्हरे मे दो लपाने हैं ।।
साहने मे एक प्यारी सोरठ मे तेरह भपाल माझ एक पूरवी मे पाँच जाने हैं ।।
वृ दावनी सारंग मे एक पुनि सारंग मे चौदह कहे हैं जगला मे तीनि आने हैं ।।
सोरठ मलार चारि सुद्धहि मलार एक असे ही मलार माझ तीनि दरसाने हैं ।। १ ।।
वागेसरी कान्हरे मे दोइ स्याम माझ दोइ टोडी हूँ में दोय भैरो मांझ दो सुहाने हैं ।।
वरवा केदारो जेंजैवंती जेते गूजरी विलावल धनासिरी मे एक एक ठाने हैं ।।
याही रीति हंस किंकिनी मे गौर सारग में ललित विभास हू मै एक एक ल्याने हैं ।।
परज मे तीनि और हमीरहू मे तीनि और अडाने माझ तीनि नीकी भांति पहिचाने हैं ।। २ ।।
रामकली मांझ चारि गाएँ हैं सुहाई भाति गौडहि मलार दोय सुप सरसाने हैं ।।
कहे हैं पमायच मे सात सो सुहानें हिए दियें रहे कान तें तरंग मे लुभाने हैं ।।
राधेकृष्ण नाम के उपासी सुपरासी सदा गावें औ गवावें सदा प्रेम रस माने हैं ।।
जुगल विलास मे कवित्त सत एक एक पाँच तीस राग मे वनाइ के वषाने हैं ।। ३ ।।

इति रागन की गिनती संपूर्णम् ।।

विषय—इसमे राधा कृष्ण की लीला विभिन्न रागो मे वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित ग्रथ सकलित हैं —

१ पद (नित्य पद), २ कृष्णाश्रय की भाषा टीका, ३ नवरत्न की भाषा टीका, ४ पद (होली तथा ख्याल), ५ जुगल विलास—राजाराम सिंह कृत ।

सख्या ३५८क. गनक आह्लादिका, रचयिता—रामहित "जन", कागज—देशी, पत्र—४, आकार—११¾ × ५¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रथदाता—प० शिवमोहन तिवारी, ग्रा व पोस्ट—वरहद, थाना—जिला—आजमगढ)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ पोथी ज्योतिष गनक ।। आह्लादिका जनरामहित कृतम् लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

ज्योतिष पति कुल कमल पद वदि सुमिरि द्विजराज ।
रचत गनक आह्लादिका वाल वुद्धि के काज ।। १ ।।

।। अथ प्रथम नक्षत्र नामानि ।।

अश्वनि ।। भरणी ।। कृतिका ।। रोहिणी ।। मृगीसीरा ।। आद्रा ।। पुनरवसु ।। पुष्य ।। श्लेषा ।। मघा ।। पूर्वा ।। उत्रा ।। हस्त ।। चित्रा ।। स्वाति ।। विशाखा ।। अनुराधा ।। ज्येष्ठा ।। मूल ।। पूर्वापाढ़ ।। उत्रापाढ़ ।। अभजित ।। श्रवण ।। धनिष्ठा ।। सतभिखा ।। पूर भाद्रपद ।। उत्रभाद्रपद ।। रेवती ।। इति ।।२८।।

:o: :o: :o:

अंत— ।। अथ नाडी फलम् ।।

चडी पहली मैं परं पुरुष न तजो आप ।
तौ पति के कहु श्रेष्ठ है दूजी लपहु सुभाय ।।३०।।

विषय—फलित ज्योतिष का वर्णन ।

ग्रथ नौ अध्यायो (विश्रामो) मे लिखा गया है ।

रचनाकाल

एक आठ पुनि आठ दे तापर चारि धरेहु ।
सवत् शुभ पहिचानिए ग्रथ पूर कृत येहु ॥१३६॥
मार्गशीर्ष शुक्ल ३ सुतिथि बुधवासर सुखरूप ।
ग्रंथ गणक अह्लादिका कीनो मति अनुरूप ॥१३७॥

संख्या ३५८ग. चानक, रचयिता—रामहित सिंह सिहेल, निवासस्थान—चितविसाँव (आजमगढ), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१३½ × ५½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—स० १९३६, प्राप्तिस्थान—प० रामनद जी द्विवेदी, ग्राम–पीडरी, पोस्ट–काभा, जिला–आजमगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पोथी चानक लिख्यते ॥

अथ लक्षण संत को छंद मत्तगयंद

चित उदार सदा नहि त्रास न आस जहा न महान सदाँ है ।
लोभ न छोभ न राग न द्रोह अजाच असग छमा सु गहा है ।
काठहु की परनारि छुवै नहि रामहितीस सनेह लहा है ।
भाव अभाव समान निरंतर कोमल चित्त न लाज वहा है ॥ १ ॥
गावत राम चरित्र सदा द्रिग नेह सुनीर विराजत जाके ।
कंठ सुमाल लसै तुलसी हरिवेष लिये श्रुति को मत ताके ।
भोजन शुद्ध विचार समेत समर्पण कै हरि के निति वाके ।
"रामहितीस" सु जूठन खात सुलक्षण संत कहैं गुण याके ॥ २ ॥

अंत— कादर लक्षण

वहु आयुध धरि चले विदित नट को सिगार करि ।
निरषि निरषि रिपुसेन हृदय हहरे विखाद भरि ॥
धकधकानि वदूक तीर जव सरसरान सुनि ।
चमचमानि करवाल निरषि तव घुसन लाग गुनि ॥
कहु आयुध छुइ गयो तन तुरित डारि हथियार सव ।
इति वदत रामहित पहुंचि घर निज सूरता वखान तव ॥३४॥

अवानक ग्रंथ लिखित्वा नंदन सिंह वसित्वा फतेपुर समत १९१६ मिति कातिक वदी ६ ॥

विषय—निम्नलिखित लोगो के लक्षण वर्णन किए गए हैं —

१ सत, २ पडित ३ जोगी, ४ मूर्ख, ५ पाखडी, ६ ज्ञानी, ७ रामदास, ८ उत्तम गृहस्थ, ९ नीच गृहस्थ, १० चतुर, ११ लोभी, १२ अधर्मी, १३ पचसद, १४. निर्न्चै त्याग, १५ उपदेश सत, १६ अधर्मी गृहस्थ, १७ शूर वीर, १८ कादर ।

संख्या ३५८घ. भागवत विलासिका, रचयिता—रामहित सिंह, स्थान—चित विसाँव, कागज—देशी, पत्र—६३, आकार—१२ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८१ वि०, लिपिकाल—स० १८८३ प्राप्तिस्थान—प० रामानद जी द्विवेदी, ग्राम–पीडरी, पोस्ट–काभा, जिला–आजमगढ़ ।

बरष जानि परमान ग्रंथ प्रारंभ कियो तब ।
सहस येक सत आठ एकासी संवत् रह जब ॥
निमिच नाम अस्थान शुभ देस सुमालव विदित वर ।
श्री भागवत विलासिका ग्रंथ सुभग प्रारंभ कर ॥११॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८८१ तथा लिपिकाल सवत् १८८३ है।

प्रस्तुत ग्रथ की रचना निमिच स्थान (मालवा ग्वालियर) मे हुई। रचयिता ने बहुत से ग्रथो की रचनाएँ की जिनमे से कुछ के नाम इस प्रकार है —

१ नासकेत
२ चानक
३ भक्तमाल
४ भक्त नदिका
५ रत्नद्योत
६ साठिका
७ सामुद्रिक

संख्या ३५६. भगवत गीता, रचयिता—रामानुजदास, कागज—देशी, पत्र—४५, आकार—१३ १०/१६ × ७ १/१३ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३४ वि० प्राप्तिस्थान—प० अबिका प्रसाद दुबे स्थान व पोस्ट—कडा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥
तत्पादांभोरुहं वंदे येन सर्वमिदं ततं ।
ब्रह्मादिस्तंभपर्यंतं यत्कृपा परिपालितं ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

गुण अनंत कल्यान कहाई । सब विभूति निरवधिक सदाई ॥
सब सुख पूर्ण निरंतर योई । दिव्य रूप नित यौवन सोई ॥

॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥

निज सुत सैन्य अपूर्ण विचारी । पाडु सैन्य पूर्ण मन धारी ॥
संजय मम सुत पाडव योई । धर्मभूमि कुरुक्षेत्र मे सोई ॥
मम सुत पांडव करत यो आही । मोसन कहो भेद सब ताही ॥

अत—योगेश्वर श्रीकृष्ण यह पार्थ धनुद्धर योइ ।
तहा विभूति विजै सदा निश्चै जानहु सोइ ॥७८॥

इति श्री रामानुज भाष्यानुसार जयराम ॥ रामानुजदास विरचित दोहा गीतार्थं अष्टादशोध्यायः ॥१८॥ इति श्री भगवद्गीता सपूर्ण ॥ सुभमस्तु ॥

विषय—भगवद् गीता का अनुवाद।

सख्या ३६०. सत विलास रचयिता—रामावतार दास निवासस्थान—दोस्तपुर (अयोध्या) पत्र—७०, आकार—१० ८/१० × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२५ वि०, लिपिकाल—स० १६२८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामचरण शुक्ल, गवर्नमेंट माडल नार्मल स्कूल, इलाहाबाद।

आदि—श्री परमेस्वराय नमः ॥ अथ सत विलास मंगल नमस्कारत्मक वर्नंनम् ॥

धनगन दंपति लोक भूरि संपति रस वागं ।
पुत्र प्रपौत्र प्रसूति भूति गज स्यंदन लागं ॥
दातारं अरथादिफल करतार गुन पुजवइ ।
हरतारं सरवापदं भरतारं हरिकुंजवइ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गननायक वारन॰ वदन कारन मुद ससार ।
प्रनमउं सकरनंदनहिं जड नर्दिन सुकुमार ॥ १ ॥

॥ चौपई ॥

रजे प्रजा रघुपति पति पाई । रमा बसी ग्रिह विनहि वोलाई ॥
बीज एक लव ता वहु वारा । कर खडांस तेगहु न भुआरा ॥
प्रजा प्रसन्न परम पति पाई । घन लखि जिमि वरहा समुदाई ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

कंपित जत फल भूरि द्रुम जनु प्रचड लहि वात ।
कोउ उत्पाटित निपति काउ तजत सिखरि को नात ॥२८८४॥

:o: :o. :o:

सुमिरि ह्रिदय रघुनाथ हनूमान अजनि तनय ।
जात भए मन साथ लका राच्छस धानि किल ॥३५१॥
राम सांद्र घनस्याम तनुसिय सउदामिनि जानि ।
चातक रुद्र प्रताप इव चाहत प्रेम सुपानि ॥२८८५॥

इति श्री सुसिद्धान्तोत्तमे राम खडे श्री महाराज रुद्रप्रताप सिंह विरचिते किष्किधा पथे मनसा हनूमल्लका गमनं नामाष्टादशाधिक शततमो विश्रामः समाप्तः ॥११८॥

॥ इति किष्किधा पथः समाप्तः ॥
॥ इति किष्किधा काडः ॥

विषय—श्री रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना विशाल है । इसकी प्रति खडित है । केवल किष्किधा काड और उत्तर काड के अश बचे हैं । विषय अनुक्रमणिका की सूची से पता चलता है कि वालकाड से उत्तर काड तक के सात काड समग्र थे । प्रत्येक काड मे निम्नलिखित प्रकार से पृष्ठ थे :—

१. वालकाड (मिथिलापथ)—४५६ पृष्ठ
२. अयोध्याकाड (कोशलपथ)—३६३ पृष्ठ
३. अरण्यकाड (अटवीपथ)—२३२ पृष्ठ
४. किष्किधाकाड (किष्किधापथ)—१३१६ पृष्ठ
५ सुदरकाड (दूतपथ)—३०८ पृष्ठ
६. लकाकाड (युद्ध पथ)—५३२ पृष्ठ
७ उत्तरकाड (राजपथ)—४६३ पृष्ठ

संख्या ३६२. ज्ञानोपदेश (?), रचयिता—रूप कागज—देशी, पत्र—६, आकार—$६\frac{1}{8} \times ४\frac{3}{8}$ इच पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—श्री महंत ईश्वरशरण भारती, ग्राम—बाँसी, पोस्ट—भाटपार, जिला—गोरखपुर) ।

संख्या २६३. रूपमजरी, रचयिता—रूप, कागज—देशी, पृष्ठ—१२३, आकार—६ × ८ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६१, पूर्ण, रूप—श्रेष्ठ, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९०८, लिपिकाल—सवत् १९२८, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभा, कॉंकरोली, हि० व० स० २६, पु० स० ३ ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रूपमजरी ग्रंथ लिख्यते "राग भैरू' 'गणपति मोपै कृपाकरी ॥ बुधिदाता लंबोदर ॥

कहिये सुरनर मुनिहिं ध्यान धरी ॥
गज आनन जनम मुददाता रिद्धि सिद्धि निधि द्वार खरी ।
रूप निरखि गौरी नंदन कौ होत सदा आनद घरी ॥ १ ॥

मध्य—मन हरि लीनौं नद किशोर ।

चितवन की नित चाह चखन कूं जैसें चंद चकोर ॥
नटवर वेप विशेप छवीलौ सीस मुकट वर जोर ।
रूप अनूप पियारे ऊपर वारौं काम किरोर ॥१६१॥

अंत— ॥ दोहा ॥

रूप मंजरी नाम यह रच्यौं ग्रंथ रस रीति ।
श्री राधा गोविंद पद दायक मजुल प्रीति ॥३२६॥
संवत विक्रम नृपति कौं वसु व्योमाकजु रूप ।
पौस मास सितपक्ष तिथि पटी सूर अनूप ॥३३०॥

इति श्री रूप मंजरी सपूर्णम् ।

विपय—भक्ति-विपयक पद-सग्रह ।

विशेप ज्ञातव्य—सुदर लिपि है। राग के नाम लाल स्याही से लिखे हैं तथा चारो तरफ हाशिया लाल है, पीली और काली स्याही से छोड़े हुए हैं।

सख्या २६४. गिरवरसमौ, रचयिता—रूपराम, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—७½ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण, रूप—सुदर, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । अथ गिरवर समौ लिख्यते ।

वरस सात कै स्याम सिरोमनि ॥ पेलत घर घर डोलें ॥
माथै मुकट पीत पट कटि मैं ॥ पाय पैंजनी वोलें ॥
लोचन नील कमल से सोहैं मोहैं अलि अवली सी ॥
जो वृज वधू निहारत विनकूं सो रहि जात छली सी ॥
कानन लसत झूमिका प्रभु कै नाक वुलाक सुमोती ॥
मनौ सुधानिधि वदन जात प्रभु राछीक राष्यौ गोती ॥
चारि कपोल गोल गुदकारे और सुंदर सी ठोडी ॥
परत धाय कै होड़ा होड़ी सवकी दिठि निगौढी ॥

मध्य—कृष्ण जाय वैठे गिरि ऊपर नंद संग वृजवासी ॥
पूजन लगे मेरु संग स्यामहें गंध फूल सुपरासी ॥
जव मौहन जू सगरे वृज कौ घृतपक भोग लगायौ ॥
आनि और ज्यौ वृजरानी कौ अपनौ वचन सुनाऔ ॥
सव वृजवासी रहे चकृत ह्वै वड़ौ अचंवो मान्यो ॥

रैंदास कहरे व्रह्मं व्रह्म कहत हो स्वामी दुजि प्रकृत कहाँ जाई ।
दुजि प्रकत्य के तिन गुनह साधन दियो बताई ।
कविर कहो जिनकुं साध कहत हो स्वामी सोई काल वस भूल्या ।
व्रह्म ज्ञान ध्यान विना त्रिगुण नदि मे वुडया ।
रैंदास कह त्रिगुण विना कछु भेद क्यु पायिये जो कोपी गुन कुधाव ।
सहज सुभाव वेंकुठ कितरनी भक्त वीज पद पाव ।

अंत—गुर भुल तो सिष समझान सिष भुल गुर तारें ।
कह रैंदास सुनो गुर भायी एक एक के सारे ।
व्रह्म छाड़ियो कर्म छाड़ियो छाडियो चतुरा वानी ।
आत्म राम करो पंचाना कहत कविर विचारी ।
निर्गुणह सो पिता हमारा सरगुण हम हितारी ।
काकूं नदुं वयकुं वदुं दोउ पला भारी ।
धन्य कविर धन्य रैंदासा गाव से सोयी ।
गरुड़ चढि गोपाल पधारे सुध भक्त मेरे दोऊ ।

॥ येता कविर रैंदास क संवादा संपुर्ण भेंमस्त ॥

विषय—कबीर रैंदास सवाद । निर्गुण और सगुण रूप पर वाद विवाद ।

संख्या ३६७. पद गुटका, सग्रहकर्ता—लक्ष्मीदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—५ × ३.१/१० इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०५ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—

पोथी तूं पोलि पांडे साजन हमारा कित है ॥ टे० ॥
कोई सही सदेशा ल्यावें मोहि मीठी वात सुनावें ।
मेरा साजन कव घरि उनही सो मेरा चित है ॥ १ ॥
सुनि सुनि सजन की वतियां मेरे परी कलेजे घतियां ।
मोहि नींद न आवें सारी रतिया मेरी यही निगोड़ी गति है ॥ २ ॥
दादर मोर कोकलें वोलें चपला चहुंदिशि डोलें ।
"वपना" कों दर्शन दीजें मेरा येहि संदेशा नित्य है ॥ ३ ॥ १ ॥

अंत—लक्ष्मीदास गुरुदेव सौं सुखी भये सव कोइ ।
वंध्या के वधन कटें मुक्ति सहज ही होइ ॥ १ ॥
गुटका पढ जो चित्त दे ताकें सव सुप होइ ।
लक्ष्मीदास हरिकों मिलें जामे मरे न कोइ ॥ २ ॥
जे आया जगत में करि अपना कल्यान ।
संत समागम कीजिए नित्य प्रति भजि भगवान ॥ ३ ॥
संतन की सेवा करें हरि सुमर चित लाइ ।
"लक्ष्मीनाथ" ताकों मिलें वेंकुठा को जाइ ॥ ४ ॥

॥ श्री रामचंद्राय नमः श्री ॥

विषय—भक्ति विषयक पदों का सग्रह । सग्रह में निम्नलिखित संतों के पद हैं :—
१. वखना जी, २. दादू जी, ३. सुंदरदास, ४. सूरदास और ५. लक्ष्मीदास ।
प्रस्तुत पद गुटका 'रामरक्षा कवच' के साथ एक हस्तलेख में है ।

॥ चौपाई ॥

चैंतिमाशा निकशे नी लाशा
पुहु वावले वहै वताशा...
:०: :०: :०:

विपय—वियोगिनी नायिका का वारहमासा वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है। केवल चार पत्ते उपलब्ध हैं। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सं० १८६५ वि० है।

संख्या ३६६क. लक्ष्मी चरित, रचयिता—लखनसेनि (?), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—७ × ६$_{1}^{6}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुप्टुप्)—१२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३४, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रथदाता—प० स्वामीनाथ दुवे, ग्राम–डुवौली, पोस्ट–खुखुद, जिला–गोरखपुर।)

आदि—श्री कृस्नाए नमः ॥ श्री गोपाल चरित्र ॥
ईस पुराण मे लछमी वीष्णु का सवाद नेती अनेती का प्रमाण वीचार लीखा है :
वंदौ आदी जोती मैं तोही। सुमीरत ग्यान वुद्धी दे मोही॥
व्यासदेव सुखदेव को वीने करो कर जोरी।
ग्यान देव प्रवीन हो तासे वीनती मोर॥
श्री गणेशाय नमः श्री पोथी लक्षीमी चरीत्र

॥ चौपाई ॥

कहै नारायण वाल कन्हाई। सुनु लक्षमी मैं कहो वुझाई॥
मैं तुमसो कछू पुछो आना। आपन अर्थ कहो परीमाना॥
काहा रहो तुम केहीन पाहां। कस वीस्तार करो जग माहा॥
सत्त वात आपन सभ कहहु। केही के गृह तुम अति सूख लहहु॥
सुनी लक्षीमी त्व मन वीहसानी। कहो वात तोही सार्गं पानी॥
जो मोही पूर्व तपेस्या साधी। ताके गृह मैं रहों अवाधी॥
जुग जुग मोही ध्यन त्व वासा। तुम दयाल चीत पुरवहू आसा॥
तुम नाराएन सामी गोसाई। सभे ततु जानो रघुराई॥
अंत—मुल मंत्र सभ जो वीधी हीना। सो उचारी नाम तुअ लीन्हा॥
रा कृस्न कह लक्षीमी वानी। सुमीरो दीन प्रीती सारंग पानी॥

॥ दोहा ॥

लक्षीमी चरीत्र नरायण जो सो को मेटेपार।
कवीता सभ जग कीन्हा लखन सेनी प्रीतीहार॥
लछीमी कह नेरायण सुनो जगत वेवहार।
तेही कारन नर दुप सुप भुंजत हे संसार॥
कर्म भोग के कारण होए दलीद्र रूप।
धरम कर्म से जो रहे सो धनवंत भुप॥

इति श्री लछीमी चरित्र कथा संपूर्ण सुभ सम्त १६३४ समे नाम कुआर मासे सुकल पक्षे सतमी ॥ ४ ॥ दः लाल जीव लाल, ग्राम राउतपार खास "पंडीत जनसो वीनती मोर टुटल अक्षर पढव जोरी ॥

॥ चौपाई ॥

बादसाहो जे "वीराहिमसाही" । राज करहि महिमडल माही ॥
आपुन महाबली पुहमी धावै । जउनपुर मह छत्र चलावै ॥
संवत चौदह सइ एकासी । लपनसेनी कवि कथा प्रगासी ॥
गुनी जन सब अपीर भैउ । बैंजलदास राइ पह गएउ ॥

॥ दोहा ॥

बैंजलदास मन हरषीत ताही मरावै जीव ।
लषनसेनी कवि भाषा कथा वैरठ जे कीव ॥ २ ॥
लषन सेनी कवि कथा प्रगासी । मग्रामोह त्रीभुवन वासी ॥
लषनसेनी कवि बिग्न औ राधा । मग्रा मोह त्रीभुग्रन बांधा ॥
सब जीवन्ह मह तोहार निवास । जैसे रहै फल मह वास ॥
उतपति प्रलै जाहि के हाथा । दुष सुष लीषा सबन के माथा ॥
एक तंतु होइ सवै सीधावै । षीरि ही रिव.नी दास सुष पावै ॥

॥ दोहा ॥

जो परमेसरहि धावै प्रम समती नर पाउ ।
वनोवास पडवन कर तुव प्रसाद गुन गाउ ॥ ३ ॥
कैसे मेरवउ अछर कै पाती । सरवार राजा कइ जाती ॥
हसन पति होइ छन छन वाका । मह वेलाभ भए नीह लंका ॥
अछर सुनत सुन्य सुधी काढा । अग्रीत वोल वचन सो वाढा ॥

॥ दोहा ॥

नर्गहि चहि नगसरी पडीत रहै सीरधुनी ।
छलै वैल सब होपै लपनसेनी कवि गुनी ॥ ४ ॥
डीलेस्वर अनुकाराम । तेजरासी कुल राजा धंम ॥
तासु तनै जे लषन कुमार । दुरजन द्रवन सींघ करीवार ॥

॥ दोहा ॥

कंठै बसै सुरसती हीरदै वसहि गनेस ।
लषन सेनी तहवे वसे धन्य धन्य सो देस ॥ ५ ॥
लषनसेनी कवि जनमे आइ । वड़ वड कविता गए लजाइ ॥
गए धर्म औ सतजुग राजा । देवीपुर गए वली के काजा ॥
गए कीती घनसेनी नरेसा । भोजपुर गए देव गनेसा ॥
जंदेव चल सर्ग की वाटा । औ गए घघ सुरपति भाटा ॥
नगर नरिंद्र जो ग/ए उनारी । वीद्यापति कइ गइ लचारी ॥
अंवित कुंड नग्र जे थहाइ । न्रीधिनी कुड नग्र अब गहइ ॥
तेन्ह पापीन्ह कह षोंज उठाऊ । जे नहि लीन जन्म भरि नाऊ ॥

॥ दोहा ॥

तेहि पापी तह रापीए जेइ हरिनाम न लीन ।
अछर तीनीसा जीव करि भ्रम होइ दीन दीन्ह ॥
जन परिजन छडि सो देसा । जहव उपमवन वसै नरेसा ॥
भोबु महंथ के लागे काना । काज छाडि जे अकाजै जाना ॥

विषय—महाभारत के विराट् पर्व की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत चौदह सइ एकासी । लषनसेनी कवि कथा प्रगसी ॥

संख्या ३७१. श्रीकृष्ण चरित्र, रचयिता—लछिमन दास, कागज—देशी, पत्र—१६८, आकार—६ २/१६ × ४ १/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६५ वि०, लिपिकाल—सं० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शरस्वती जू नमः ॥ श्री परम गुरभे नमः ॥ अथ श्री हीरा के जन लछिमन दास कृत श्री कृश्न चरित्र ॥ छंद ॥ १

वंदना कर जोर गनपति करत हों तुम्हरी सही ।
वुध्धि के अधिकार अति मरजादना वेदन कही ॥ १ ॥
सुरसुती को सुमिर कै फिरि मागवं जोई चहों ।
कंठ वैठी आनि कै कछू कृश्न गुण चांहत कहों ॥ २ ॥
पर्म पूरे भागतै गुर मिलै "हीरालाल" जू ।
"लछन" चहों परताप उनकै जनम लीला गाइ जू ॥ ३ ॥
नंद जू कै भयौ वालक जात अवगति ना लषी ।
जवहिंतें उर परम आनंद सुनौ सो तुम सव सषी ॥ ४ ॥
येक दिन ग्रह आपनै मैं सहजहो पलका परी ।
आनि कै जह जानि कोनें सावरी मूरति धरी ॥ ५ ॥
मुकट मोरन पंष की अति सीस पै सुकुमार री ।
तिलक केसर चार सोभा दियैं देषी भाल री ॥ ६ ॥
होति भृकुटी कुटिल जवहीं मुरकि कै हसि जात है ।
धरी अधरन मोहि दीसै वीन वैरिन वाजि हे ॥ ७ ॥
अंजो अंजन द्रगन मैं भरि सैन नैननि की चलै ।
कहौ कहां सो मन सषी सुन श्रवन मैं मुक्ती हलै ॥ ८ ॥

अंत—सुनै जो मनु लाइ चितु दै कथा कृश्न चरित्र की ।
पायहै पद अभय निर्मल हांनि है सर्व की ॥५२॥
हीरालाल प्रताप ही तैं जथामति लछमन कही ।
सोध सुर्जन लीजियौं तुम दोष ना दीजौ सही ॥
आठद समद (? संवत्) वीतै वरष पैसठ के विषै ।
मास सावनि सुदी चउदस वार तो सुक्रै लिषै ॥ ५३ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण चरित्र लीला कथा पांचर अध्याउ ।
"लछनदास" प्रगटी जगत तिनिके नाम वताउ ॥५४॥
जनम वाल वुध्धं कही लछन दास सवोध ।
पलमोचन भ्रमहरन पंडो मिलनी सोध ॥५५॥
कृश्न चरित्र की कथा यह समुझौ येक विचार ।
लछन पपीलका सिंध की किहि विधि पावै पार ॥५६॥

॥ भैरवी चढी ॥

प्रि० भयो न मेरो आज लौं सपनिहु कहू चबाय ।
व्रजनारी वुलियान अवकैसिक कहिहौं हाय ॥२६॥
जग जीवन को काम का खोय धोय कुल कान ।
धिक धिक ऐसे जन्म जो होय सभा अपिमान ॥२७॥

अंत—राग पट् "आरती"

समा० अद्‌भुत कौतुक आज भयो री ।
विलसत मेलि कपोल मुदित मन सेजसिंधु महं चंद चकोरी ।
मृदु मुसक्यान पान अधरामृत छलकत छबी सांवरी गोरी ।
ललित किशोरी उदै अनूपम कुंज गगन रवि शसि की जोरी ॥५३॥

विषय—कृष्ण की राजपौरिया लीला का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—इसमे अलग अलग कागज चिपका कर एक लंबा पत्र वना दिया है जिसके एक ही ओर लिखा गया है ।

संख्या ३७३क. अंगद पैंज, रचयिता—कवि लाल, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—९ × ४¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—पं० सिद्ध नारायण जी, ग्राम—डुहरी, पोस्ट—सिरसा, जिला—इलाहावाद) ।

आदि—.........................

...ऐसो वालि तौ न मारौ गाल काहे के लवार जती करत लवारी है ।
जतीन......सकल वोहौ मेरे ढिग आइकै करत विष्टारी है ।
जानि कै कुपथी इन्है पितै......उदाश संग वंधुवर नारी है ।
जातधान सारी सभा वाजत है तारी एकता रुक......वड़े धनुधारी है ।

:o: :o: :o:

॥ छंद ॥

वोले विहंसि जुवराजै । सुनु जातुधान समाजै ।
हम सभा मधि पन कोपै । प्रन करत निज पद रोपै ॥
मम चरन जौ सठ टारै । फिरै राम हम सिय हारै ॥
सुनि लंकईश उमंडै । फरके सकल भुजदंडै ॥

॥ दंडक ॥

सुमिरि अंगद रामचद पद वंदन करि वीर श्री उदंड शो सभा मे पद रोपे है ।
मंडि महि मंडल अष (?ड) ल अषंड सोर महावीर वड वीर धीर सब कोपे हैं ।
एहो कवि लाल वोले रावन वचै न वीर प्रवल प्रचड भुज दंड धीर धोपे हैं ।
काल ते करालै धाय सुभट विशालै धरै आयुध करालै तेहि कालै सब तोपे हैं ॥

अंत— ॥ सोरठा ॥

लाजवंत फिरा वीर सुनि कपि वचन ।
जिमि दिनकर रंकेस सौंधु सुता छवि देषि हत ।

॥ छपै ॥

चकृत चवढि चकपकेव जवकि जकजकेव वीर सब ।
भग्गि भीर तजि डगत लंक डगमगत नग्र सब ।

गगन सींधु सकुलित सब सुर दुंदुभी सब्द करि।
धरत धरनि धरि धीर कोल गुजरनि अरूड अरि ।
कवि लाल वीर वल वालिसुत समामध्य वल भाषि कै ।
मरदि मान लकेस को चल्यौ राम उर राषि कै ॥३२॥

॥ दोहा ॥

पवरि पवरि गढ लक की जहा जात जुवराज ।
तहाँ त्रास बसि देखि सब भभरि भागु तजि काजु ॥

॥ छंद ॥

कपि आइ उतरे द्वारे । जहाँ महाँ भट वल भारे ॥
सव जानि दुर घट बीरं । आयौ महा रन धीरं ॥
रघुवीर के पद वंदे । कपि भालु सकल अनंदे ॥
प्रभु कुशल वूझन लागे । कवि लाल पद अनुरागे ॥

॥ दोहा ॥

सकल कथा गढ लंक की अंगद दिहेव सुनाय ।
रामचंद सुनि हरषे धन्य धन्य तु भाय ॥

॥ इति श्री पोथी अंगद पैज स्मपुरणं ॥

विषय—लका मे जाकर अगद के दौत्य कार्यों का वर्णन । रचना वीर रस की है ।

संख्या ३७३ख. हनुमत् पज—रचयिता—कवि लाल, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—११, आकार—८$\frac{3}{16}$ × ६$\frac{11}{16}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८१, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—कुँवर व्रजराज सिंह जी, स्थान—साहीपुर, पोस्ट—हडिया, जिला—इलाहावाद ।

आदि— ॥ दोहा ॥

प्रथम भाल "कविलाल" धरि गुरु पद पकज पंक ।
वरणौं हनुमत पैज वर जात वीर गढ लंक ॥

॥ छप्पै ॥

चरण चंद उद्दित उदंड खल खड खंड करि ।
अति प्रचड भुज दंड चड आखड डंड धरि ॥
सुड मुड वंदन भुसुड छज्जै लम्वोदर ।
एकदत सुर संत. कत आनंद संत कर ॥
सेवत तोहि "कविलाल" भनि अष्टसिद्धि वरदायकं ।
हनुमत पंज वरना चहौं कि देहु बुद्धि गणनायक ॥

॥ दोहा ॥

फटिक शिला सुदर सुभग छाय रहे भगवान ।
सिया शोच मोचन चहौं बोले कृपा निधान ॥ २ ॥

॥ दडक ॥

बीते धन मासं जात निर्मल अकासं जातु धान कुल नाशं हेतु शरद सुहायो है ।
जानकी की सोचं विकल शोच मोचं एक पोचं मेरी शोचना भुलायो है ।

सारंग चढाइवे मारिवे को धायो जन जानि राख्यो भाप्यो "कविलाल" फणिपति को पठायो है ।
पाए परी राजें चूक परी महाराजें संग सहित समाजें रामचंद्र पँह आयो हैं ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

कठिन लंक गढ़ लकपति कठिन निशाचर बीर ।
केहि प्रकार जारेउ नगर कहहु तात रनधीर ॥७६॥

॥ दडक ॥

बोले कर जोरि परे पायन वहोरि नाथ लाघे हम लंक राम नाम की दपट सो ।
वागन उजारचो रक्षकन कंह मारचो अक्षकुमार को संहारचो मातु सीय की तण तेज सो ॥

विषय—हनुमान का लका जाना, लका दहन करना और सीता की सुधि लेकर वापस आना आदि वर्णन ।

संख्या ३७४. मानवत्तीसी, रचयिता—लाल कवि, पत्र—५, आकार—१० × ४॥। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व०७२, पु० स० १२ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ मानवत्तीसी ॥ दोहरा ॥

एक समे रति कुंज मे वेठे नंदकिसोर ।
प्यारी विरह विथा विकल कहत ओर की ओर ॥ १ ॥
तिंहि ओसर ललिता तवे पठइ सिय समुझाइ ।
प्यारी कों ले आउ अव वा विनु कछु न सुहाइ ॥ २ ॥

॥ कवित्त ॥

प्रिय के वचन ललिता जी सो ।
जाचे सुरराजंहि न जाचत अनंत जाइ यहे टक टेक पेंन छाडत तमोहरा ॥
राखे परवाहि एक नीरद के नीरही की स्वाति वूंद हे तत रसत ज्यों टटीहरा ॥
द्योस निसि सुरति सँभारें रहे कवि लाल गाजें जव मीत तवहीं पुकार ही हरा ॥
ओरो तो अनेकन विवेक मे प्रवींन लीन मेरे जांन रच्यो एक पछी मे पपीहरा ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ५–६

प्रीया जू के वचन प्रिय सों ।

तुम तो वनहीं वन डोलत हो मनु खोलत हो जित हीं तितहीं ।
हम तो यह भे उन आगें लख्यो करती नहिं प्रीति हित हीं ।
जिनके चित लोभ लगेई फिरें अधरासव हेत झखें नित हीं ।
तिनसों निज नेहु कहाँ निवहे सुकरोरि करोर सुहे मितहीं ॥१६॥

प्रिय के वचन प्रिया जी सों ।

हम तो तुम छाडिन जाँतन ओर कहूँ निरखे अपनें चख सों ।
विचकी सव ग्वारि गंवारिनि की सुनि कें चित नाँ धरिवो विख सों ।
जियें जाँनति एन वढे द्वहुँ नेह चढे रसु तो हमहीं रुख सों ।
परि प्रीति में प्यारी प्रतीति नहीं निज छाँह हूते उपजे दुख सों ॥१७॥

अंत—ललिता जू को विनय दंपति सों ।

आँखें सियसेनी सुख नेह सरसांनी मन मोज उलहांनी उर आए प्रान अवहीं ।

दंपति मिले जु ललचाइ कें वढाइ मनु एती चतुराई जिय जानी नहीं . . .हीं ॥
रावरे गुननि की न कांठि छूटे काहू पास द्योस निसि पाम हम रह्यो करें जबहीं ।
सीखे उपचार गति मति निके पाए पार प्यारे कें मनाएँ मनी भाई यहे सबहीं ॥३२॥

॥ दोहा ॥

इहिं विधि मानु मनाइ कें दपति रति रसलीन ।
करत केलि कुजनि ललित कलित कांम परवीन ॥ १ ॥

इति श्री कवि लाल कृता मानवत्तीसी समाप्ता ॥

विषय—राधा के मान का वर्णन है ।

संख्या ३७५ सौंदर्य लहरी (टीका), रचयिता—द्विज लाल (?), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—५३/४ × ३ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० अनिरुद्ध नारायण तिवारी, ग्राम—सकरापार, पोस्ट–रामपुर कारखाना, जिला–गोरखपुर ।

आदि—. . . . . .त. कतिचिदरुणामेव भवतीम् ।
विरचि प्रेयस्यास्तरल तर श्रृगार लहरी ।
गभीराभिर्वाग्भि विदधति सता रजनममी ॥१६॥

॥ दोहा ॥

अरुण रूप कविजन भजें वानी सरस सिंगार ।
कवि हृदि पद्म प्रकाश कौं तरुन सूर अवतार ॥१७॥

॥ सवैया ॥

कविता हृदि पद्म प्रकाशन कौं रविभोरन के सम रूप भये ।
जन वदन सो तुम ध्यान धरे प्रति द्योस अलौकिक रूप नये ।
जलजातन के सुत की तनया तनरंजन काज सिंगार दये ।
तिनसों युत भारती हे जिनके मुख साधुन के मन रज लये ॥

अत—

॥ दोहा ॥

महामाये परब्रह्म त्रिय पडित कम सोम ।
विधि घरुनी वानी येही तेहि कहत हें सोय ॥१००॥
पुन आगम विद कहत हरि घरुनी रमा वनाय ।
वहोर कहत हर कीनो त्रीया पारवती मन भाय ॥१००॥
श्रम सौं पाइए पार कूं महिमा पार न पाय ।
एसे तुम सर्वोपरि स्त्री वे विश्व भ्रमाय ॥१००॥

॥ कवित्त ॥

परब्रह्म की पटराणी पंडित कहत तुम विधि की घरुनी वानी एसो ही कहत हे ।
वहीरो वुध हरि की घरुनी येही रमारानी सोही तुमरे भी दिन के हेते ही रहत हें ।

विषय—भगवती की स्तुति की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के अव केवल ७ पत्रे ही रह गए हैं । जिनकी सख्या १७, २३, २७, ७६, ८४, १०२ और १०४ है ।

संख्या ३७६. पद्मिनी चरित्र (गोरा बादल रणजय), रचयिता—लालचद (लब्धोदय), स्थान—वर्धनपुर (? वर्द्धवान), कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—१३½ × ५ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, पारमाण (अनुष्टुप्)—१४८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०७ वि०, लिपिकाल—मवत् १७५७ वि० (सभवत), प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—श्री शांतिनाथ जी ॥ गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

॥ दुहा ॥

श्री आदीश्वर प्रथम जिन ॥ जगपति ज्योति स्वरूप ॥
निरभय पद वासी नमुं ॥ अकल अनत अनुप ॥ १ ॥
चरण कमल चितस्यु नमु ॥ चोवीसमे जिण चद ॥
सुखदाईक सेवक भणा ॥ साचो श्रुरतरु चद ॥ २ ॥
श्रु प्रसन सारद सामिणी ॥ होज्यो मात हजूरि ॥
वुध दीज्यो सुजन वहोत ॥ प्रगट वचन पंडूर ॥ ३ ॥
गोरा वादल अति गुंणी ॥ श्रुर सुभट सिरताज ॥
तास प्रसाद थकी कऊं ॥ सती चरित सिरताज ॥ ४ ॥
ज्ञाता दाता ज्ञानधन ॥ ज्ञानराज गुरराज ॥
गुर गुण गोतम सारिषौ ॥ चरित रचु सिरताज ॥ ५ ॥
गोरा वादल अतिगुंणी ॥ श्रूर सुभट सिरताज ॥
चित्रकूट कीधो चरित ॥ सामि धर्म साधार ॥ ६ ॥
सरस कथान वरस सहित ॥ वीर श्रृगार विसेषि ॥
कहिसिउं कवित कलोल सुं ॥ पूरव कथा संपेषि ॥ ७ ॥
पदमिणि पाल्यौ सीलव्रत ॥ वादल गोरा वीर ॥
सील वीर गावत सदा ॥ पाद मिले घृत षीर ॥ ८ ॥

मध्य— ॥ दूहा ॥

जिउं जिउं दासी नवनवी । सजि आई श्रृगार ॥
देषि देषि चित चमकीयो । आलम भोजन वार ॥२३॥
रूप अनोपम रभ सम । उवा पदमणि कैं माह ॥
वार वार विह्वल थकौ । इम जपै आलम सारु ॥२४॥
एक नहिं हम घरिइसि । कैसी हम पति साह ॥
याकै एती पदमनीं । सौ देषत उपजै दाह ॥२५॥
वार वार भवकौं किसुं । राघव वोलै एम ॥
ए दासी पदमणि तणी । आप पधारै केम ॥२६॥
चुप हुं के देषौ चरित । विचली मकरो वात ॥
सहिस दोई सहेलियाँ । रहै संगि दिनराति ॥२७॥

अत—तसु श्रुत आग्रह करि सवत सतरै सतोतरे चैत्री पूनिमशनि वारि ॥ नवरस सहित सरस सवध नवो रच्यो रे निज वुधि ने अनुसारि ॥१४॥ श्री जिनमाणि क्‍सूरि प्रगटा वाचक विनय समुद्र तासु सीस वर वष तीजगमै जाणीयरे श्री हर्ष सील उदुइ ॥१५॥

तासु विनय चवद विद्या सागसरे वानी

सरम विलास श्री जगनामी पाठक श्री ग्यान समुद्र जी रे प्ररगचतेग प्रकाश ॥१६॥ साधु सिरोमणि सकल विद्या गुण शोभतारे वाचक श्री ग्यानदास तास प्रसादें सील तणा गुण संथुव्यारे लब्धोदय हित काज ॥१७॥ सामि धरम ने सीलतणां मुए साभल्यारे पुगै मन की आस ॥ उछो अधिको कहिउ कवि चातुरी रे। मिछा दुकद तास ॥१८॥

इति श्री पद्मनि चरित्र ढालभाष कथे श्री गोरा वादल रिएं जय प्रावणो नाम तृतीय पड समाप्तौ समाप्तामिद ।। नवधिने वलि अष्ट महासिधि सप जैरे ।। दुरमिटं दुपदद ।। लवधि—उदं कहै पुत्र कलत्र सुष सपदारे ।। सील सफल शुपक्द ।।१६।। दुहा सोरठा—सोल अधिक सं आठ ।। कवित दुहा गाथा मिल्या । सुणो सगुर मुष पाठ । ढाल सरस गुणपाल ।।२०।।

सुणो सगुर मुष पाठ । ढाल सरस गुणपाल ।।२०।। सवत १७५७ । वरषे मीती ओसोज वदि ७ ।। सोमे लपीलत । वर्धन पुर नगरे । वरार गढे । मुछदसे ।। श्री पुज्य श्री कल्याण सागर सुरिजी तत् शिष्य श्री ऋषि श्री गिवचद जी तत् शिष्य ऋषि श्री छीतरजी तत् शिष्य ऋषि वडगा वाचनास्य ।। श्री पुज्य श्री भीमसागर सुरि राज्ये रचुदता ।। अग्नि पुष्टी कटि ग्रीवा । उर्धदिष्टिरधोमुष । कटि न लपते शास्त्र ।। जतनेन परि पालयती ।।१।। शुभ भूयात ।। कल्याणमस्तु ।। श्री रस्तु ।। ठावकुर जसंघ जी राजे ।।

विषय—इस ग्रथ मे पद्मिनी की कथा का वर्णन है । जायसी कृत 'पद्म.वत' तथा जटमल्ल कृत "गोरा वादल री वात" मे भी पद्मिनी की कथा वर्णित है ।

१ जायसी कृत पद्मावत मे रत्नसेन हीरामन द्वारा पद्मिनी का रूपलावण्य सुनकर मोहित होता है और जटमल भाटो द्वारा पद्मिनी का रूप लावण्य सुनाकर रत्नसेन को मोहित करता है । परतु प्रस्तुत ग्रथ मे इसका तीसरा ही कारण वतलाया गया है । रत्नसेन अपनी अनक रानियों मे से पटरानी परभावती पर विशेष प्रेम रखता था । एक दिन उस रानी ने भोजन वनाया जो राजा को अप्रिय लगा, इसी पर उसने ताना दिया कि यदि मेरा वनाया भोजन अस्वादु होता है तो आप नयी पद्मिनी क्यों नही लाते । इसी पर राजा क्रोधित होकर उठ गया और पद्मिनी की खोज मे समुद्र किनारे गया । वहाँ एक औघड मिला जिसने उसे सिंघल द्वीप पहुँचा दिया । जटमल ने यही कथा दूसरे प्रकार से कही है । उसमे योगी चित्तौर मे ही मिलता है जो अपने योग वल से राजा को सिंघल द्वीप पहुँचा देता है । इसी प्रकार अन्य घटनाओं मे भी अतर है ।

संख्या ३७७क. भागवत, रचयिता—जनलालच, कागज—देशी, पत्र—३५६, आकार—$८\frac{५}{१०} \times ५\frac{६}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५०१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री मुन्नी स्वर्णकार, ग्राम—पाली, पो०—वहादुर गज, जिला—गाजीपुर ।

आदि—................

भाजी पाय आथर हो जा ।।
राजा वैशे के दीन्हे खाश छोडी अभीमान ।। कही शुखदेव भावशे भागवत कथा पुरान ।।
पलटी राजा कीन्ह तव शेवा चरन गहै शामी सुखदेवा
वोलै रीखै भए सव काजा शमाधान भए वैशा राजा
मैं हरी कथा शुनावौ तोही जेही शुनत पाप खडन होही
जीन्ह हरी कवरो दल सघारा पडव दलकर भए कडहारा
जननी गर्भ हम होते जहीआ जीन्ह हरी जन्म उधारीन्ही तहीआ
तेही गोपाल के कथा शुनावो वदो चरन वार जनी लावो
आदी अंत तुह जानहु कीशनु चरन कर भेव
"जान लालच" न्रीपआ ..गावही रीखी शुखदेव

अंत—जो मैं कहेउ शो करहु उपाई वचन हमारी सुनहु मन लाई
...रूप अवतेजेउ गोपाला वोध रूप अव जन्म हमारा
...अपने जनी लावहु धोखा दउरा एक उठावहु चोखा
भीतर काठ लै धरहु भुआरा तहवा लावहु वर्ज केवारा

छव माश मती खोलें कोई वीश्नु चरीत देखहु कश होई
भगती भाव करहु मन लाई तुम कह परशन होव सब ठाई
अपने मन मह करहु हुलाशा हम नीज आही परशोतीम वाशा
कलजुग केर भइल पंशारा वौध रूप अब जन्म हमारा
—अपूर्ण

विषय—भागवत पुराण के दशम स्कंध का पद्यानुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है। प्रथम चार पत्रे लुप्त हैं। शेष तीन सौ उनसठ पत्रे उपलब्ध हैं। ग्रंथ के आदि और अंत के अंश नष्ट हो गए हैं।

संख्या ३७७ख. भागवत, रचयिता—जनलालच, कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—$९\frac{२}{१०} \times ६\frac{३}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९४, खंडित रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—संवत् १८८४ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—पं० शिवपूजन द्विवेदी, ग्राम—मवकापुर, पो०—मरहद, जिला—गागीपुर)।

आदि—श्री गनेश जी सहाइ श्री शिरोशती जी सहाइ श्री हनोमान जी सहाइ श्री सकल देवतासहाइ श्री पोथी भागवत।

॥ चौपाई ॥

प्रथम पीतामह स्रीस्टी उपजाई। तुह परसाद गननाथ गोसाइ।
शंकर सुमीरी दंडवत कीन्हा। भसम चढ़ाए चीतवनी कीन्हा।
जटा मकुट सीव सदा अवीनासी। तुम्ह परसाद पाएउ अवीनासी।
उतपती प्रलै तुम्हे ते होइ। गढे सवारे हरीहर सोइ।

॥ दोहा ॥

तीहु लोक कै ठाकुर जेही वीधी गोकुल आव।
चरन सरन जन लालच गुन गोवींद कै गाव।

॥ दोहा ॥

अंवीत कथा भागवत जीन्ह प्रगटी संसार।
चरन सरन जन लालच कइसै भौ वीसतार।

॥ चौपाइ ॥

सतजुग त्रोता दवापर गएऊ। कलीजुग कै प्रवेस कछु भएऊ।
तेही की आदी पराछीत राऊ। प्रीथीमी पावन देखी डेराऊ।
तीन्ह कली वहुत धरम उपराजा। कवही के गए अखेटक राजा।
त्रीखा लागु तह अंवु न पावा। रीखी अंगीरा के आसरम जावा।

अंत— ॥ दोहा ॥

इहै कथा जन लालच कहै रीखै समुझाए।
कोटी जनम कै हत्या कहत सुनत छै जाए।

इती श्री हरी चरीत्रे दशम कंधे श्री भागवते महा पुराने जमलए आरजुनु विमोछमो नाम दशमो अध्याय १० जो देखा सो लीखा मम दोस न दीयते संमत १८८४ मीती माघ सुदी १० रोज शनीचर...।

विषय—भागवत पुराण दशम स्कंध का पद्यानुवाद।

संख्या ३७८ देवकी चरित्र, रचयिता—बावा लालसा राम (सभवत), स्थान—डडैला (जिला—गोरखपुर), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१०१५/१६ × ४१५/१६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी' प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रथदाता—श्री पुजारी गोरख नाथ बाबा, दुगपुरा कुटी, जिला—गोरखपुर)।

आदि—श्री गणेशाय नम ।।। श्री देवकी चरित्र ।।

देवकी हुती देवक कै वारी । अति सुबुधि सुदरी कुमारी ।।
प्रभु कर गुन निसुवासर गावही । सति सुलछनी मातहि भावहि ।।
जब सो भई सो जोग सग्रानी । राजा पास गई चली रानी ।
करि विचार आपुस मह दोउ । बोली कै लोग कुटुव सभ कोउ ।।
वसुदेव से करि दीन बीआहा । भयो मंगलचार उछाहा ।।
कंस असुर देवकी कर भाई । जेई पीलही वेरी पहिराई ।।
तेई जव नभवानी सुनी पावा । तव देवकी कै मारै धावा ।।

।। दोहा ।।

भीआ जनि कै वसुदेव कहो ताहि समुझाइ ।
लघु भगीनी जो मारीऐ ताकर पाप न जाइ ।।१८१।।

:o: :o: :o:

अंत—लाए पुत्रीहि के दुत जाई । देषी कंस नृप रहो ठकाई ।।
होतेउ लीषा वार...रा । जो बालक होत शत्रु हमारा ।।
कह कारन यह जनमी वारी । सो मै पूछव. ....री ।।
अरती धोबी वेगि बोलाई । पाटा पर पटका वहु जाई ।।
पुनी पाछै मै करव वीचारा । जेहि विधि जाइहि वैरी मारा ।।
दुतन्ह धोबी वेगी बोलावा । पाटा पर पुत्रीहि पटकावा ।।
तसेही वीजुरी होइ सो बारी । चमकि धोबी कै वाह उपारी ।।

।। दोहा ।।

ठनकि कहेसी परचारी कै अरे मूढ ते कंस ।
अरि तो रहै गोकुल मह जे तोर करी वीधस ।।

एह कहिके पुनी सरग सीधारी । कंस के जीव उपजा दुख भारी ।।
जेहि कारन मै मैनेन्ह मारा । सो तौ वाचे दुस्ट हमारा ।।
नारद मुनि कंस वेगि बोलावा । ताकह सब बीतत सुनावा ।।
तीन्ह तब बात कही परचारी । केहि कारन तुम पुत्री मारी ।।
वैरी तोरे है गोकुल माही । जेही से तुम्ह वाचवहु नाही ।।
सुनी के कंस वहुत डर षाई । पहिले पूतना नारी पठाई ।।
तेइ पापीनी कुच मह/वीषि लायो । नंद भवन गइ हरिपि... ।।

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—भगवान् श्रीकृष्ण की माता देवकी के चरित्र का वर्णन किया गया है। इस चरित्र की एक विशेषता यह है कि जब श्रीकृष्ण (आठवाँ गर्भ) गर्भ मे थे तो एक दिन देवकी जमुना स्नान करने गईं। कस द्वारा सात पुत्रो के नष्ट हो जाने के कारण और आठवें गर्भ के भी नष्ट होने की आशका से वह रोने लगी। जमुना के उस पार यशोदा भी उसी समय स्नान कर रही थी। देवकी का विलाप सुनकर वह उसके पास चली आई और रोने का कारण पूछा। देवकी ने अपना सारा

वृत्तांत उनमे कह दिया। यशोदा के भी गर्भ था। दोनो ने यह अनुमान लगा लिया कि उनके प्रसव एक ही साथ होंगे। अत यशोदा ने अपने शिशु देवकी को देने और देवकी के शिशु को स्वय लेने का वचन दिया जिससे देवकी के शिशु की प्राण रक्षा हो जाय। यशोदा को इसमे जो वलिदान करना पडा उसका कोई उदाहरण नहीं।

अत मे यही तय हुआ। आगे की कथा भागवत के ही अनुसार है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है। अत के पन्ने नही है। केवल ४ पन्ने उपलब्ध हुए हैं। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है।

संख्या ३७९. कवित्त सवैया सग्रह, रचयिता—लालू भट्ट, उपनाम "प्रवीन", (स्थान—कांकरोली), पत्र—१४, आकार—९ × ५।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ७७, पृ० स० ४।

आदि– ।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।।

।। कवित्त ।।

चंद्रिका की लटक चटक लाल चीरा की सुछाजत छबीलो छोगा आछी छवि छाई हे।
नेंना की नचनि हाइ भाइ की रचनि तऊ मानतें वचनि एसी अति चतुराई हे।
हरें मन हरें वागें भूखन जराइन के लाल गिरिधारी जू की ललित लुनाई हे।
सरस सुहाई मन भाई हे 'प्रवीन' नोखी आजु की निकाई पें निकाईओ विकाई हे।। १।।

मध्य—पृ० १६

आयो घनघोर मोर सोर कुंज कुंजनि मे विलसें विविध पोंन गति तिहिं वार की।
ललित लतानि लपटांने हें प्रवीन अलि भूमि भई भोग जोग विपिन विहार की।।
रंगरस वाढ़े दोऊ कोतिग करत ठाढे गरें धरि बाँह छाँह कदंब के डार की।
मोहि रह्यो मेह नेह बूँदनि विराजे ज्यों ज्यो मुरली में वाजे धुनि मधुर मलार की।।५६।।

अंत— ।। चरन गुप्त बंध ।।

आजु वने सिरपर धरें सुभग सोसनी पाग।
वागो मनु नूतन सुघन भेंटत हृदय सराग।
कुमुद मुदित रिझवार दृग चित चकोर आनंद।
देखन चलि चंचल नयनि गिरिधर आनन चंद।।२५।।

विषय—श्रीकृष्ण भक्ति और वल्लभाचार्य तथा दैन्य विषयक कवित्त सवैयो का सग्रह।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक के मध्य के (पृ० स० ९–१०–११) तीन पन्ने खाली हैं। पृ० स० १२ नहीं है। सं० ३१ से ४० तक के कवित्त भी नही हैं। पृष्ठ २७ पर चरण गुप्त वध, कामधेनु सवैया और कमलवध आदि चित्रकाव्य भी दिया गया है।

सख्या ३८०. वहुला कथा, रचयिता—लोना (?), कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—$६\frac{३}{१०}$ × $३\frac{१}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १७०३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० वटेश्वर तिवारी, ग्राम–चमुका, पो०–नवली, जिला–गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशाय नम.

सरसे ज्यागते भिष्म वृद्ध कुरू पितामह भयज्ञा राज युधिष्ठिल पुछै
लजज्ञा कहुदेव वाहुला क समादः।।
जहि सुन ले सव हरइ विष्यादा।।

॥ भिषम उवाच ॥

एकवित्त जौ पुछेसि मोहि । धर्मवत कहौ मइ तोहि ।
जेकर परसे होइ के दारा । वहुरा सुनले सेइ भुअरा ।
जे फल गंगा कैले असनान । कपिला दिहे विप्र के दान ।
तवहुन वहुला होइ समना । सव वन इतिहास पुरान ।
मथुरा नगर सोहावन नदी जमुना के प्लरा ।
वर्न अठारह रहा वसा चद्रउ जवर वीए ।
कुरी छतीसउ करइ नेवासा । वासि वर्ण करइ सुख वासा ।
वनिअ लोग नग समाइ । चरि लाख एक वस्तु विकाइ ।

अंत—

॥ व्याघ्रउवाच ॥

धन माता धन पि(ता ?) तोहारा । धन सर्दवस जोहि लिहेहु अवतारा ।
धन से भुमि जाहि कर वासा । धन से राजा जहु करहु नेवासा ।
गइहु एक आइहु भैं दुना । गयउ पाप मोर तोहरे पुना ।
तवहि मुकत माघ देउ भएउ । चढिय वेवान सर्ग पुर गउ ।
वहुना पलटि वछरुआ संग आइ । सगरे नग्र जे करे वधाइ ।
वहुला सत्य सुनेइ जे ताकर पातष जाइ ।
नारी पीव अछ सदा होइ । जौ व्रत कर मन लोइ ।

इति श्री वहुला कथा समाप्त । सुभ मस्तु सवत् १७०३ ॥ समए भाद्र पदे दसम्यां तिथौ शनिवासरे ॥

विषय—व्याघ्र वहुला कथा का पद्यात्मक वर्णन ।

सख्या ३८१. अठारह नाते को चोढाल्यो रचयिता—लोहट (जैन), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—५३/४ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—९५, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय नागरीप्रचारिणी सभा, (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—ताकौ चोढाल्लौ लिख्यते ॥

॥ राग सोरठ ॥

मान वल वपाया जी ॥ ऊचै कुलि आया जी ॥
गुरु ग्यान लह्या विनु सजम को लहै जी ॥
ते नाता लागा जी अदूषण लागा जी ॥
सो नाता अवारा व्योरौ वरणऊ जी ॥ १ ॥
मुथरा पुर वासी जी वेस्या दुषरासी जी ॥
तिहि कै गर्ल वासी विलासी ह्वै लया जी ॥
जुग जोड़ै जाया जी ॥ जल माझ वहाया जी ॥
आया सूरीपुर पाया सेठ नै जी ॥ २ ॥

मध्य—

काम महा ॥ कामा करी षाडै परचौ जी ॥ रावण राज विणास ॥
हरिहर इद विटंबिया जी ॥ कीचक हूवौ वैनास ॥ २ ॥
कामण ॥ सेव सुदरण सिव गयो जी ॥ सील तणं परसादि ॥
षोड़श सुदरि उद्धरी जी ॥ नारद पाई छै वादि ॥ ३ ॥

कामण ॥ इणि विधि नरनारी घणां जी ॥ जिनकी अंत न पार ॥
सीलवंत जे उद्धरचा जी ॥ आन कल्या ससार ॥ ४ ॥

अंत—

रेशणी० ॥ घोर वीतप आधरचौ जी ॥ पट रितु वारामास ॥
सहै परीस्या वीस ह्वै जी ॥ परिगह रहत उदास ॥ ८ ॥
रेशणी० ॥ थूलतद्र कै सगतिस्वा जी ॥ लीयौ संजम लार ॥
तिम ए तीनौ उद्धरचा जी ॥ कीनौ पाप प्रहार ॥ ६ ॥
रेशणी० ॥ किमे कलव पूरण किया जी ॥ पायो मोक्ष सुथान ॥
चौढाल्यौ नात तणौ जी ॥ "लोहट" किथी वषान ॥१०॥

रेशणी ॥ १ ॥ इति श्री अठारानाता को चौढाल्यौ सपूर्ण ॥

विषय—जैन धर्म विपयक ग्रथ ।

सख्या ३८२. दानलीला, रचयिता—वशीधर, कागज—देशी, पत्न—७, आकार—७¾ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभापा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दान लीला लिप्यते ॥
द्वारकेसपद कपिल "वंशीधर" धरि ध्यान ॥
श्री वल्लभ जिह हेत तै करै भक्ति कौ दान ॥ १ ॥
श्री गोवर्द्धन सिषर पर श्री वृजराज कुमार ॥
वृज जन संग अनंद सौ लीला करत अपार ॥ २ ॥
तामै कीरति नंदिनी तासौ परम सनेह ॥
सदा वसत वृंदा विपिन एक प्राण द्वै देह ॥ ३ ॥
करी दान लीला विविध वृज भक्तन के हेत ॥
वंसी जन स गाइकै जन्म सुफल कर लेत ॥ ४ ॥

श्री ठाकुर जी के वचन सषा सौं ॥
अहो सुवल सीदाम सवै सषा सुनौ एक वात ॥
नित नित वृज की ग्वालिनी दान चुरायौ जात ॥ ५ ॥
सावधान रहियौ सवै रोकि वैठियौ गैल ॥
जवै कहा है जायगी ग्वाल छवीली छैल ॥ ६ ॥
॥ भक्त वावा भक्त सौ दोहा ॥
वरसाने ते ग्वालिनी चली सकल उहि गैल ॥
जहा साकरी पोरि मै वैठे गिरधर छैल ॥ ७ ॥

मध्य—श्री ठाकुर जी कौ वचन ग्वालिनी सौ

॥ दोहा ॥

घूघट मुष तै डारि कै हसि हसि वोलत वोल ॥
अधर सदर दरसाय कै मोकौ लीजै मोल ॥१५॥

॥ सवैया ॥

कंचन केसरि पौरि करी पर तो तन की समता नहि पावै ॥
तेरी य चाल समान है गजराज मराल तो हासी आवै ॥

तेरेई लोचन हैं दुष मोचन पजन कजन को चित लावै ।।
तो मुष चद निहारि कै प्यारी चद लजाय कै गात छिपावै ।।१६।।

अत—— ।। सवैया ।।

या गोरस कौ रस लीजै अबै गिरधारी जू छाड़िये दान की दायौ ।।
आगे निज कुज मैं धारियै जहाँ सव वातन को सुष पाओ ।।
लोक की रीति है और कछू तिनतैं यह प्रीति की रीति छिपाओ ।।
यौ मिस दान कै याही समै नित कुज मैं आय कै ताप मिटाओ ।।३२।।

।। दोहा ।।

प्यारी गोरस दान दै भेंटे गिरधर पीय ।।
यह लीला नित प्रीति सौं वशीधर को जीय ।।३३।।

इति श्री दान लीला संपूर्ण ।।

विषय——इसमे कृष्ण का गोपियो से गोरस दान माँगने का वर्णन है ।

सख्या ३८३ अशौच विचार भाषा तथा मुडन नखच्छेद निर्णय, रचयिता——वत्साभट, कागज——देशी, पृष्ठ——१५, आकार——८ × ४¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२०, परिमाण (अनुष्टुप्)——१८३, पूर्ण, रूप——साधारण, गद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——स० १८७०, प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ६६, पु० स० ६।१ ।

आदि——।।श्री कृष्णाय नम ।। अशौच विचार ताहा तीन महीना ताई गर्भ उदर मे ते निकसे जो गर्भपात कहावे । चोथे महीना ते छठे मास ताई ताप कहावे । सातवें मास ते प्रसव कहावे । पहेले तीन महीना पात भए सात पीढी भीतर गोत्रीन को स्नान ते शुद्धि ।। माता को तीन दिन सूतक ।।

मध्य——पृ० ८

नाल छेद पाछे जो मरे तो सपूर्ण वृद्ध सूतक होइ । दश दिन ते पाछें नामकरण ते पहले बालक मरे तो भूमि मध्ये खनि गाडे । अग्न न देई । ज्ञाति सब स्नान ते शुद्ध नामकरण ते पाछे दंत जन्म ते पहले बालक मरे तो दाह अथवा खनन करे । जो दाह करे तो ज्ञान को एक रात्रि सूतक जो खनन करे तो स्नान ते शुद्धि । सूतक नहीं । स्मशान गमन करे न करे इछा दंत जनन ते पाछें तीनि वर्ष पर्यंत जो मुडन कीयो होइ तो दाह करे वा खनन करे, खनन करे तो एक दिन दाह करे तो तीनि दिन सूतक होइ ।

अंत——आत्मनो मुडन चैव वर्षे वर्षार्धमेव चेति वचनात् । और व्यर्य केश छेदन न करे वृथा छिन्नतिय. केशान् तयाहु ब्रह्म घातिन मिति माहाभारते दान धर्मे वचनात् । काम्य विषय मिद मिति निर्णय सि० मुडनं पिंडदानच प्रेत कर्मच सर्वश. । न जीवत्पितृक. कुर्यात् गुर्विणी पति रेव च । यह दक्ष को वचन है । इति वयन निर्णय । इति (त्रिगृह) तिघरा गोवर्द्धन भट्टात्मज वत्साभट कृतो निर्णय । सूतक विद्रीय मुंडन वद्धिम ।। शुभ भवतु ।।

विषय——धर्मशास्त्रानुसार सूतक, पिंड, मुडन और नखच्छेद आदि का निर्णय । इस निर्णय का मूल आधार निर्भयराम भट्ट कृत 'अशौच निर्णय' ग्रथ है जो सस्कृत में है ।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रथ मे आगे व्रजराय जी और गगा वेटी जी के झगडे के घोल लिखे है ।

सख्या ३८४. विरह अग, रचयिता——वाजिद, कागज–देशी, पत्र–६, आकार——५¾ × ४ इच, परिमाण (अनुष्टुप्)——३७, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——स० १८५६ वि०, प्राप्तिस्थान——आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—अथ वाजीद कृत विरह अंग वर्णन ॥

॥ अरिल्ल ॥

सूर कमल वाजीदनु सुपनें में लहैं ।
जरें द्यौस अरु रैंनि कराही ते लहैं ।
अपनी ही सब पोट दोस कहा रामु हैं ।
हरिहो नीच उच सौं वध्यो कहीं किहि कामु है ॥ १ ॥
वाजीद विरह वेहद्द कहीं कहा तुझ सौं ।
सर कमांन की प्रीति करी पिय मुझसौं ॥
पहलें अपनी ओर तीर लौं तांनई ।
हरिहां पाछैं डारत दूरि दुनी सब जानई ॥ २ ॥

अंत—पथर पैं की रेप रैंनि दन धोवरे ।
तेरे हाथौं छाले परे कैं सीस गिहि रोवरे ।
जाकौं जोन सुभाव क जाईगा जीवसौं ।
हरिहां वाजीद नीम न मीठौं होइ क सोधि गुर घीव सौं॥१७॥
दो फल अजव अनूप क लाडू जहर के ।
ये ते नर वीधे स्वारथ कहि कहर के ।
अम्रत फल रढैगा वाजीद राढ कौं ॥
हरिहा कुत्ते का वही सुभाव गहैगा हाड कौं ॥१८॥

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ में समस्त १८ अरिल छंद हैं । समाप्ति की पुष्पिका नहीं दी गई है । रचनाकाल ज्ञात नहीं । लिपिकाल महाराज जसवंत सिंह के "भाषा भूषण" के आधार पर सं० १८५६ है । दोनों ग्रंथ एक ही हस्तलेख में है ।

संख्या ३८५. कवितावली भक्त विलास, रचयिता—वासदेव शुक्ल, स्थान—मिठनेपुर (सुलतानपुर, अवध), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५२ वि०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर दीपनारायण सिंह, ग्राम–महमूदपुर, पो०–सेमरी महमूदपुर, जिला–सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

अस्तुति गणेश जी की लिष्यते

वुद्धि के सदन गज वदन रदन एक भाल मे विभूति उर मोतिन की माल हैं ॥
जग को कृपाल वाल गौरी को गणेश सम जाहि जन जांचैं ताहि देत करि ख्याल हैं ॥
दीन पैं दयाल देव होत हैं तो वार वार कलि को कराल दुप काटिवे को काल हैं ॥
ऐसे जाल माल ताल तन को तयार राख्यो कहैं "वासदेव" मेरो याही तो सवाल है ॥ १ ॥

॥ अस्तुति शिवजी की ॥

मुंडन को माल चंद्रभाल वो कपाल कर पेन्हे गजखाल अरु व्याल लसैं अंग जू ॥
गरमे गरल तन शोभित विभूति भूरि करैं दुप दूरि जाहि जटा वसैं गंग जू ॥
भूतप्रेत जोगनी जमात मुख जोवैं जाको कहैं "वासुदेव" द्विज काली अरधङ्ग जू ॥
धाउर चबात दांत वेल के दवाये पात खात हैं धतूर घोंटि घोटि पियैं भङ्ग जू ॥ २ ॥

अंत—अथ पावस ऋतु वर्णन

॥ कवित्त ॥

....

धुरवान धारे घहरात घन घोरि आयो दामिनि दमकि नभ चटकि चटा रहे हैं ॥
तारे तर कारे कारे कैलकै उछाँह कीनो भारे भारे बुद लै कपोलन पै ढारे हैं ॥
छहर छहर छटकि वारि परत उरोजन पै "वासदेव" आये वैरी पावस हमारे हैं ॥
मोरन सम्हारे शोर अधिक उचारे चहु झिल्ली झनकारै निसि दादुर पुकारे हैं ॥७१॥
वीप है वलाती घरि पापी को फसाती कोऊ शोर को मचाती यह मोरी मोर घाती हैं ॥
सुनिकै सकाती सूनी सेज न सोहाती सखि भागि जाती आगन नभ दामिनि दमकाती हैं ॥
घमकाती घनपीरु चात्रिक वकाती चहुँ वासदेव कुहुकहर कोकिला सुनाती है ॥
गिरि जाती छाती वचि जाती यह पावस मे दावस दरेरे दोऊ मैन मदमाती हैं ॥७२॥

इति

अथ कवितावली भक्त विलास सम्पूर्णम शुभम्

हस्ताक्षर दाऊ रजवन वार ग्राम सरेया तारीख ३१ अक्टूबर स० १८९५

विषय——देवताओ की स्तुति की गई है ।

सख्या ३८६. युगल सुधा या कृष्ण सुधा, रचयिता——विद्यारण्य तीर्थ, "देव", निवास-स्थान——काशी (सभवत), कागज——आधुनिक सफेद, पत्र——१४५, आकार——८$\frac{3}{4}$ × १०$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——५, परिमाण (अनुष्टुप्)——१४०५, खडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——स० १८६८ वि०, लिपिकाल——स० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान——प० तामेश्वर प्रसाद मिश्र, ग्राम–डाँगीपार, पो०–भैंसा बाजार, जिला–गोरखपुर ।

आदि——.................... ....

....कहि गिरिहि पुजायो ॥ २ ॥
धूप दीप नैवेद्य विविध विधि मगल ध्वज फहरायो ।
गिरि सरूप आपुह बनि बैठो सघ मृदग वजायो ॥ ३ ॥
इद्र कोपि मेघन से बोले वोरहु वार ढिठायो ।
"देव" देवकी अग्याँ सुनि कै मेघन हू सिर नायो ॥४३१॥

घन गरजि गरजि बरसत हैं । मनहु व्रजहि गरसत हैं ॥
चहुँ दिसि चपला चम चम चमकहिं । मूसरधार परत महि धमकहि ॥
भइ अधियारी अपने हाथ पसारे नहि दरसत हैं ॥ १ ॥
वछरू माय गोप सब काँपहि । एक एक तन को ढापहिं ।
त्राहि त्राहि कहि हरिमुष देषहिं छाया को तरसत हैं ॥ २ ॥
प्रवल इद्र कोदड विसारा । तब प्रभु नष पर गिरिवर धारा ॥
छप्पन पहर वरिसी घन भागे इद्र नाक घरसत हैं ॥ ३ ॥
प्रभु त्रिभुवन पति मै हौं जडमति । सब अपराध छमहु मेरे अति ॥
"देव" देव हँसि सकट काटे इंद्रहु पद परसत ॥ ४ ॥ ३२ ॥

अत—— ॥ रेखता ॥

दिल सो गई न सेषी तौ मूँड क्या मुडाया ।
हैवानहीं वना है इनसाँन क्या कहाया ॥ १ ॥
कंठी गले मो बाँधी छापा तिलक लगाया ।
यह तौ सभी नकल है इनका असल न पाया ॥ २ ॥

सोहवत मिली न उसकी जिसने असल कमाया ।
सोहवत मिली चटोरी अथवा रतन गँवाया ॥ ३ ॥
तूं सोच वात ऐसी को तूं कहाँ सो आया ।
क्यों कर जहाँ अजूवा किम देव ने वनाया ॥३००॥

॥ वसंत ॥

मंगल नाम रूप जग मंगल गुनगान मंगल धाम ।
मगल चरित साधु जन मंगल जगहित कारक पूरन काम ॥
मगल श्री वसुदेव देवकी नद जसोदा गोकुल ग्राम ।
मंगल जमुना मगल हू के मंगल सुदर स्यामा स्याम ॥३०१॥

॥ होरी ॥

जा दिन वजत वधाई । (श्री राम जनम की ।)
ता दिन कृष्ण सुधा पूरन भइ संतन की प्रभुताई ॥ १ ॥
८ ६ ८१
संवत आठ अंक अष्टादश ॥१८६८॥ वार परो वुध आई ।
राम स्याम मे भेद नहीं कछु असमति गुरुन्ह सिपाई ॥ १ ॥
श्री मत् काशिराज के प्यारे मान वृद्धि अति पाई ।
वावू राम प्रसन्न सिह के यह रुचि हेतु वनाई ॥ ३ ॥
जो रस कहत शेष श्रुति सारद वडदे वहु सकुचाई ।
सो रस ढीठ होइ कै कहनो यह केवल वन राई ॥ ४ ॥ ३०२ ॥

इति विद्यारण्य तीर्थं कृता युगल सुध ॥ छ ॥ इद पुस्तक लिखित हनुमत्पुत्रेण वनवारि त्रिपाठिना रामनगरे सम्वत् ॥१८६८॥ माघ धवल पौर्णमास्याम् ॥

विषय—राधा कृष्ण की लीलाओं का वर्णन ।

रचनाकाल

जा दिन वजत वधाइ (श्री राम जनम की) ॥
ता दिन "कृष्ण सुधा" पूरन भइ संतन की प्रभुताई ॥ १ ॥
८ ६ ८१
संवत आठ अंक अष्टादश ॥१८६८॥ वार परो वुध आई ।
राम स्याम मे भेद नहीं कछु असमति गुरुन्ह सिपाई ॥ २ ॥

विशेष ज्ञातव्य—आरभ के २० पत्रे नष्ट हो गए हैं । रचनाकाल और लिपिकाल एक ही सवत् १८६८ है ।

सख्या ३८७. भापा भक्त चद्रिका, रचयिता—विश्वनाथ सिंह, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६$\frac{३}{१०}$ × ६$\frac{४}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६४ वि०, लिपिकाल—स० १६०५ वि०, प्राप्तिस्थान—ददन सदन, पोस्ट–अमेठी (ई० आई० आर), जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि;–..................अव जीरन है ।
नितमेदत अदर्पतरित है यक आस गहे तन प्रान रहे ।
झरनासम नैननि नीर बहे ॥६४॥

वहु सोच वढै तव जाँहि चली । वनमाझ विलोकहि कुंजगली ।
फिर हर्ष विषाद दोऊ उपजै । सव पीछिल ख्यालहि को जु भजै ।।६५।।

।। कुडलिया ।।

फागुन मास लगै जवै हरि विनु कछु न सुहाइ ।
काँम मनो धनुवाँन गहि वधत विरहिनी आइ ।
बधत विरहिनी आइ और जग सुष उपराजन ।
हँसि हँसि दै दै गारि नारि नर जोरि समाजन ।।
करत गाँन सविधाँन आँन वरनै वहु फागुन ।
हमहि छोडि सव लोग सुषी दरसै सुभ फाँगुन ।।६६।।

।। त्रिभंगी ।।

लागत मधुमासै काँम जु प्रासै रहत उदासै सव गोपी ।
तिय पतिहि निहारै करत सिगारै माग सवारै दुति वोपी ।
फूली वन वेली सुभग चमेली लपि अलबेली सुप सरसै ।
हरि हैं न सहायक इत रति नायक वहु दुषदायक सर वरसै ।।६७।।

अत—

।। सुवरन ।।

उन कीन्हो तपै वहु जन्मै वही । समता कौ लहै मुनि देवो नहीं ।
मन मेरे वसै नहि नेको जुदां । वृजवासी सवै प्रिय मोको सदां ।।२६।।

।। दोहा ।।

उद्धव सुनि प्रभु मुष वचन परे प्रेम के पंथ ।
कृष्ण कृपाते ह्वै गयो भक्त चद्रिका ग्रंथ ।।२७।।
वेद ४ अंक ६ वसु ८ इंदु १ के कीलक अब्द विचार ।
धन के रवि सित पक्ष मै काँम तिथी ससिवार ।।२८।।

।। रूपमाला ।।

यहि ग्रंथ को जग मै कोऊ जु पढै गुनै मन लाइ ।
प्रभु भक्ति प्रेम वढै नितै सुष देहिं श्री जदुराइ ।।
हरि चरित्र. . .१ नहिं सुनत, हैं नर मूढ जे मतिमंद ।
परिनाम मै पछितात है अरु परत है भव फंद ।।६२२।।

इति श्री विस्वनाथ सिघ कृत भाषा भक्त चंद्रिकाया ऊधो गोपी सवाद वर्ननो नाम चतुर्दसमोप्रकासः ।।१४।। संवत् १६०५ लिष्यितं मथुरा ।।

विषय—गोपी उद्धव सवाद वर्णन । रचना मे चौदह अध्याय (प्रकाश) हैं ।

रचनाकाल

वेद अंक वसु इंदु के कीलक अब्द विचार ।
धन के रबि सितपक्ष मै काम तिथी ससिवार ।।२८।।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है । सख्या १ से ६५ तक के पन्ने नही हैं । रचनाकाल सवत् १८६४ वि० है और लिपिकाल सवत् १६०५ वि० ।

संख्या ३८८. महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व), रचयिता—विष्णु कवि, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—५३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६३, खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—पं० राम शिरोमन उप० 'दादू'), ग्राम—बहादुरपुर, पो०—पच्छिम मरीरा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—.....................

सुनत बात रही यौ बिलवाइ। पचा भीटे कंठ लगाई॥
बिछुरत बहुतु मित तनु कीयो। दुष को पथु हिये गहवरयो॥७०॥
दुपु करिपथ हियौ भरि लीयो। राउ बिसूरि कारनु कीयो॥
कहै कन्हु सुनि पंथा (? पंडु) कुमूर (कुमारु)। और अपूर्व कलि व्योहर (? व्योहारू)॥७१॥
गगनी पुतछु जलु जाइ। माझ धार सो धूरि उडाइ॥
अतह प्रानी प्यास मराइ। चलत पंथु पंथी चली जाइ॥७२॥
कलि मह गंग छोडे धारा। गहिरें ठौर उठैगी छारा॥
ए पचे कहिये जगदीस। पहिले बंभनु देइ असीस॥७३॥

मध्य— ॥ अस्लोकु ॥

धानी जनम भूम स्याछ॥। जहानंवी जणार्दण (? जनार्दन)।
धन मधेसुं वास्तव्य जकारा पंच दुलभं॥
जननि माइ सो जु तिजि चलै। गंग अन्हाइ वस्तर लै चलै।
जौ धन परिधनु तिजी न जाइ। पडै चले तिनहि छुटकाइ॥१०२॥
मनधरि रुउ चले जगदीस। आगौ बभन दैहि असीस॥
कर जोरी विनवहि अरु सेवा। हम की पेटू भारहिगे देवा॥

॥ वस्तु बंधु॥

गौ रुदंती आरन्य त्रनु दंतन धराइ।
रुदती म्रिग जुथानं अहो राजा दघपालकः॥१०६॥
रोवहि गौवन पडहि घसू। रोवहि पषी म्रिग निरजासू॥
रोवहि रोझ यवाघ झपार। काहे छाडि चले भोवला॥१०७॥

अंत—

आनंदु जस्टल भयो। हरि हरि करत पापु सब गयो॥३०४॥
आए तहा जुधिस्टलु राइ। कंचनपुरी जु उत्तम ठाऊँ॥
सुर्गारोहिनि मनु दौ सुनौ। नासै पापु "विश्नु कवि" भनौ॥३०५॥
वरसु द्यौसु हरि वसु सुनाइ। दैहि कोरि विप्रन्ह कहु गाइ॥
सो फलु होइ "विश्न कवि" भनै। पडै चरितु मनु दै सुनै॥
जो फलु होइ गये हरिद्वार। जो फलु होइ परसै के तार॥
गया पेत जौ पिंड भराइ। सुर्ज पर्वु कुरषेतह जाइ॥३०६॥
सो फलु होइ "विश्न कवि" भनै। पडै चारितु मनु दै सुनै॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—महाभारत स्वर्गारोहण पर्व का हिंदी में पद्यबद्ध अनुवाद।

संख्या ३८६. भाषा महावाक्य विवरण, रचयिता—विष्णुदत्त, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—८$\frac{७}{१६}$ × ४$\frac{१}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कुँवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—साहीपुर (नौलखा), पो०—हड़िया खास, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

वंदो पुरुष पुरान अज अपंड अद्वैत जेहि।
गावत वेद पुरान परम धाम व्यापक अचल ॥ १ ॥
वंदो सतगुर पाइ आठो जाम प्रकाश मय।
जाको दरशन पाइ मिटत अविद्या वध सव ॥ २ ॥
वदो श्री शकर चरन जो शंकर अवतार।
प्रगट कियो वेदांत मत सकल वेद को सार ॥ ३ ॥
जाहिर तीन्यौ लोक मैं चित्रगुप्त को वंश।
ताहू मैं अंविष्ट को वुध जन करत प्रसंश ॥ ४ ॥
दाता सुमति सुशील तह प्रगट्यौ मोहन लाल।
धर्म पंथ मे प्री पद यह श्रुति को मतसार ॥
ताते द्वादश वाक्य को संतत करै विचार ॥

अंत—सवते पर परमातमा व्यापक व्रह्म अपार।
सोहं पद जाने विना भ्रमत फिरे संसार ॥

॥ चौपाई ॥

अगुन सगुन द्वै ब्रह्म वषाना। सोहं जोति रूप भगवाना...

:o: :oo: :o: —अपूर्ण

विषय—तत्वमसि आदि द्वादश महावाक्यो पर भाष्य।

संख्या ३९०. दुर्गाशतक, रचयिता—विष्णुदत्त महापात्र, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—७ × ४$\frac{३}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १९१७ वि० (संभवत), लिपिकाल—सं० १९१७ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० जयगोपाल सिंह ताल्लुकदार—रामपुर, तहसील—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दुर्गाशतक लिष्यते ॥

हीरन के वामा जगिमगि रहे मंदिर मैं धूप दीप वास आस पास वगरे रहैं।
मोतिन की झालरै जडाउ झपकि रही चहूँ वोर तासवादलन के वितान पसरे रहैं।
सेवैं देवमंडल मुनीस शीश पानि जोरे विद्रुम परजक से रतन जडे रहैं।
बैठी तहाँ देवी विन्ध्यवासिनी सरोज चरन आगे मुकुट दिगीसन के लटके परे रहैं ॥ १ ॥
कनकौ के मंदिर सिंहासन रुचिरता मैं बैठी जगदम्बा गान किन्नर करे रहैं।
नाचैं देवतानि की वधूटी भूरि भाव भरि बाजत मृदंग ताल नौवति झरैं रहैं।
शंकर रमेस वेस चवर डोलावैं दोऊ छत्र लींन्हे कर मैं निशाकर षडे रहैं।
सासन को जोवैं पाकसासन हमेसैं जासु आसन के नीचे पंकजासन परे रहैं ॥ २ ॥

॥ अथ ध्यान महाकाली को ॥

मुंड की माल वलाक लसे असि विज्जुछटा चमकै कर फेरी।
चाप मनो पुरहूत की चाँप सँताप हरै सिगरे जन केरी।

पूरी दया रस के वरषै हरषै सितिकंठ हिये बिच हेरी ।
गज्जि के वैरिन को तरजै वह काली घटा सुषदाइनि मेरी ॥ ३ ॥

॥ अथ महालक्ष्मी को ध्यान ॥

अम्वर अनूप अंग सोहै अंगरागन सो पंकज अभीति कर पकज धरे रहै ।
शीश मै किरीट भाल वेंदी लाल हीरा जडी माल मुकुतान के विराजत गरे रहै ।
नूपुर पगन जगमगित जवाहिर सौ नाना अभरन के प्रकास पसरै रहै ।
चारो फलदानी महारानी महालक्ष्मी जू आठौ जाम धार्मिनि के संपति भरे रहै ॥ ४ ॥

अंत—
सुरथ महीप को मनोरय सकल पूज्यौ आरत समाधि सो विमल ज्ञान पाई है ।
देवन के काज रक्तवीज को निपात कीन्हो दीन्हो सुरराज को अचल प्रभुताई है ।
जद्यपि चराचर को पालन करत तुंही जद्यपि सकल शिष्टि तेरोई वनाई है ।
मेरो दुष दारुण मिटायौ जगदम्व ताते रावरे प्रभाव की प्रतीत मोहि आई है ।

इति श्री मदुर्गा शतके पुन्य स्तोत्रे महापात्र विष्णदत्त कृतौ वागादि वर्नन नाम दशम दशकं ॥१०॥ सम्वत् १६१७ चैत्र शुक्ल पंचम्या भौम वासरान्वितायां शायंकाले समाप्तम् ॥

विषय—दुर्गा की स्तुति और माहात्म्य का वर्णन । ग्रथ दश अध्यायो मे है जिनको "दशक" कहा गया है । प्रत्येक 'दशक' मे दस कवित्त सवैये है ।

संख्या ३६१. नव नागरी के पद, रचयिता—विष्णुदास, कागज—माधोपुरी, पत्र—३, आकार—६ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—स० भ० विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० व० १२, पु० स० ५ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ राग विलावल ॥
श्री नव नागरी प्यारी तूं वृंदावन की रानी ॥
श्री राधा लाडिली प्यारी तेरी कीरति जति वखानी ॥ टेक ॥
जगत में जगमग रह्यो जसु त्रिनु कृपा क्यो बूझिये ॥
अभिमान अंधालोक कलमठ तिन तहां नही सूझिये ॥
करि कृपा परम उदार यह मोहि वारवार सुनाईये ॥
वलि जाऊं श्री व्रखभान नंदनी सुजसु तुम्हारो गाइये ॥ १ ॥
मध्य—श्री नव नागरी प्यारी तेरें पगु नूपुर जनकार ।
तेसीय माधुरी चरन विहार ॥ टेक ॥
माधुरी चरन विहार यह गति राजहसहिं अरपीये ॥
जघन सघन उरोज भारी देख कटि डरपीये ॥
प्रथमनि किंकिनी धुनि व्रतनि प्रतिनीमी वनी ॥
अंत—एहो मिलि करि विविधि विहार भामिनि एतो गहरु न कीजिये ॥
वलि विष्णदास विचित्र भाँमिनि लोचननि सुखु दीजिये ॥ ६ ॥
इति नव नागरी संपूर्ण ॥ शुभं ॥

विषय—इसमे राधा जी का वर्णन किया गया है । नवरात्र मे ये पद गाए जाते हैं ।

संख्या ३६२. भक्ति प्रकाशिका टीका, मू० रचयिता—विष्णु पुरी, कागज—देशी, पत्र—७७, आकार—११$\frac{३}{८}$ × ५$\frac{१}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३१०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री मते रमानुज़ो जयति ॥

॥ सोरठा ॥

बंदौं मन वच काय श्रीरघुवर पद कंजवर ।
संतत जन सुषदाय षल षडन मडन अवनि ॥ १ ॥
श्री रघुवंस कुमार तेहि सम को करुणायतन ।
जासु कृपा अनुसार भवविरचि पावहि सुमति ॥ २ ॥
वंदौ युगपद रेनु जनकसुता जगजननि के ।
जिमि सुषप्रद सुरधेनु तिमि संतन कंह देत सुष ।

॥ दोहा ॥

श्रीपति राज सुजान प्रभु करुणाकर गुण वृंद ।
वंदौ पद रज विसद तेहि मिटइ मोह भवफंद ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

प्रथमहु तो कपटी मतिमंदा । परसत पद मिटिगो दुष दंदा ॥
तासु अनुग्रह धरि निज सीसा । वुधि अनुमान मोहि जस दीसा ॥
भाषा रचऊ सुजन हित लागी । ज कोऊ हरिगुण रस अनुरागी ॥
विष्णुपुरी संग्रह भल कीन्हा । नाम भक्ति रत्नावली दीन्हा ॥
तासु अरथ कछु वुधि अनुसारा । रचउ सुभाषा करि विस्तारा ॥
समुझत सुनत सुलभ सब काहू । रुचि विनु श्रवण सुनै सुषलाहू ॥
भनित भदेस वस्तु भलि बरनी । कृष्ण भक्ति महिमा भवहरनी ॥
ताहि हेतु करि संत सुजाना । सुनिहै सतत करि सनमाना ॥

:o: :o: :o:

विष्णुपुरी के मित्र वर माधवदास प्रवीन ।
तिनभागी मनिमुक्ति की माला रतन नवीन ॥ ७ ॥
तब श्री भगवत भक्ति की रतनावली बनाइ ।
श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र महुँ उनको दई पठाइ ॥ ८ ॥

:o: :o: :o:

अति उत्तम मम लोक सो लहै सु विनहि प्रयास ।
परमषेम कल्यानमय सदा सुषद सुभवास ॥११६॥

इति श्री भक्ति रत्नावल्यां भाषानिवद्धे भक्ति प्रकासिका नाम टीका प्रथम विरचनं ॥१॥

अंत—......त , सेवा नहिकरहि सोइ अनरथ कर मूल ।
वरणत सो विधि वचन करि भगत मिटै सब सूल ॥

॥ चौपाई ॥

...तव पद पकज रूरा । अखिल लोक सुषप्रद गुण पूरा ॥
जौलौं तेहि आश्रित नहि होई । तौलौं...है भय सोई ॥

:o: :o: :o

...रति ज्ञान युत भक्ति अनूपा । योगीजन जेहिम......

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—सस्कृत ग्रथ भक्ति रत्नावली की टीका ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । अत मे सख्या ७७ के पश्चात् के पन्ने नही हैं । रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही ।

सख्या ३६३. वृज की वाल लीला, रचयिता—वीर भगत, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८¾ × ५¼ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुप्टुप्)—८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभापा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ वृज की वाललीला लिखते ॥

अति सुदर वृजराज कुवार । मात तात के प्रान आधार ।
आनद मगन सकल परवार । व्रज भक्तन की प्रीत अपार ॥
लीला ललित विनोद विशाल । गावें सुनें भाग तिहि भाल ॥
अद्भुत वालपेल नदलाल । नवल कीसोर जसें रीत रसाल ॥
जो जन या रस को अनुरागी । परम धन्य तेही वढभागी ॥
वृज हुलास कहिवे कै लागी । यह लीला अति मधुर सुभासी ॥
कहत सुनत उपजत सुखहासी । ....

अत—कीयो परस्पर रासविलास । पायो सुख मन भयो हुलास ॥
रसमे भीजें च्यारो जामै । भोर भए आये घनश्याम ॥
तो वुढिया सुनै पुत विललाइ । उठिकें आइ उघारें द्वार ॥
मात पुत मिलि करें लराइ । हरि की वात भलें वनि आइ ॥
यो हरि वृज मे घर घर पेलें । भूजा कठ गोपिन कें मेलें ॥
हरि की वात सवै उनि जानी । रहे मुड मारि वेही अभिमानी ॥
कहत सुनत सवै सुखदाइ । वीर भगति यह लीला गाइ ॥

इति श्री वाल लीला सपूर्ण लिखत गगा विप्णु भरतपुर मध्ये मीती कार्तिक वदि ११ रवि स० १८४८ ॥

विषय—श्री कृप्ण की वाललीला का वर्णन।

सख्या ३६४क. व्रजविलास, रचयिता—वीरभद्र, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—७½ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुप्टुप्)—१४४, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभापा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—अथ व्रज विलास लिप्यते।

अति सुदर व्रज राजकुमारा ॥ तात मात के प्रान अधारा ॥
आनंद मगन सकल परिवारा ॥ व्रज वासीन सु प्रीति अपारा ॥
लीला ललित विनोद विसाला ॥ गामै सुनै भागि जे नाला ॥
अद्भुति वाल करी नद लाला ॥ नव किसोर रस रीति रसाला ॥
जो जन या रस के अनुरागी ॥ पर्म धन्य तेई वड़ भागी ॥
मो मति महा मोह ते जागी ॥ व्रज विलास कैहैवे कु लागी ॥
यह लीला अति प्रेम विलासी ॥ कैहैत सुनत उपजति हासी ॥
लाड़ लड़ंतो कुमर कन्हैया ॥ पेलत आगन देपति मैया ॥
वदन चंद चंचल अति नैना ॥ अलप लडै मधुरे मे वैना ॥
नासा कै मोती अति सोहै ॥ कानन कुंडिल अति मन मोहै ॥
लटकि रही लट घूंघरिवारी ॥ चपल भौंह विच विंदुका न्यारी ॥
कर पौहोंची जगमग जड़ाऊ ॥ देपि सराहत हैं वलदाऊ ॥

मध्य—बौहोरि कही मा षोलि किवारी ॥ मैं तो भीजतु ठाडौ द्वारी ॥
विजि वोली घर जाउ नंद के ॥ जानतिहु गुन वद छद के ॥
याते सुन मैं तु कौन कहावें ॥ चल्यौ हमारे द्वारे आवें ॥
कहा भयौ री जननी तोकु ॥ क्यो पेंहेंचानति ना है मोकु ॥
वह मेरे घर काहे कु आवें ॥ मोते दुरयो दूरिही धावें ॥
ये रे लगर ढीट कन्हाही ॥ तैं सव व्रज की लाज गमाई ॥

अंत—जानो गोप स्या(म) अव आयौ ॥ अरवराय गहैवें कु धायौ ॥
कठिनी कपाट सु लोहु जडायौ ॥ पचि हारयौ परि नैंक न डिगायौ ॥
माय माय कहि पुत्र पुकारें ॥ कौन सुनें कोहि वार उघारें ॥
यह विधि वीते चारो याम ॥ भोर भयें घर आये स्याम ॥
बुढिया सुनें पुत्र विललाय ॥ उठि किवार उघारयौ जाय ॥
मारयौ मुंड मारि अभिमानी ॥ हरि की वात भली करि जानी ॥
रस मैं लीन कीये व्रजवासी ॥ यह लीला अति प्रेम विलासी ॥
वीरभद्र मनमोद प्रकासी ॥ गावें सुनें मुक्ति है जासी ॥

॥ दोहा ॥

व्रज विलास वलभद्र कृति ॥ सदां रहौ व्रजमाहि ॥
गामत सुनत सुष ऊपजें ॥ लाल हसें मनमाहि ॥

इति श्री व्रज विलास संपूरणं शुभम् ।

विषय—इसमे कृष्ण चद्र की लीलाओ का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएँ सगृहीत हैं —

१ जोग लीला—उदयकृत
२ व्रजविलास—वीरभद्रकृत
३ बासुरी—सूरदास जी कृत
४ व्रजलीला—हरिदास
५ सनेह लीला—रसिकराय
६ परतीत परीक्षा—बालकृष्ण

संख्या ३६४ख. व्रजविहार (व्रजविलास), रचयिता—वीरभद्र, कागज—देशी, पत्र—३ (पुस्तक के मध्य मे), आकार—४।×६।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)–४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, रूप—सधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान–श्री सरस्वती भडार श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ७, पु० स० ३ ।

आदि—

अति सुंदर व्रजराज कुमार, तात मात के प्रान आधार ॥ १ ॥
आनद मगन सकल परिवार, व्रज भगतनि कें प्रीति अपार ॥ २ ॥
लीला ललित बिनोद बिसाल, गावें सुनें भाग जिहि भाल ॥ ३ ॥

मध्य—

माइ कहे सुनि पूत प्यारे । तें तो सांचे बचन उचारे ॥८४॥
कीनो मेरो रूप कन्हाई । इहा जिनि आवन दीजो माई ॥८५॥
यों कहि सोयो जाय अटारी । मोको कान्ह दीयो दुख भारी ॥८६॥
घर मे आवन को अकुलायो । मे तो ईंटनि मारि भजायो ॥८७॥

अंत—

मात पूत मिलि करे लराई । हरि की वात भली बनाई ॥४३॥
यों हरि गोपिन के सुखदाई । व्रज मे करत विहार सदाई ॥४४॥
नव किसोर सुदर सुखरासी । रस मे लीन कीये व्रजबासी ॥४५॥
यह लीला अति प्रेम विलासी ॥ वीरभद्र मन मोद प्रकासी ॥४६॥

विषय—श्रीकृष्ण की वाललीला का वर्णन ।

सख्या ३६४ग चद्रावली लीला (व्रज विलास), रचयिता—वीरभद्र (श्री गोकुल नाथ जी के शिष्य), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—५। × ८॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३१, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० स० २६, पु० स० ५।३ ।

आदि—लीला चंद्रावली की लिखते ॥

अति सुदर व्रजराज कुंवार ॥ तात मात के प्रान अधार ॥ १ ॥
आनद मगन सकल परिवार ॥ व्रज लोगनि कै प्रीति अपार ॥ २ ॥
लीला ललित विनोद विसाल ॥ गावैं सुनैं भाग तिहि भाल ॥ ३ ॥
जो जन या रस के अनुरागी ॥ परमधनि तेइ बड भागी ॥ ४ ॥
मो मति महा मोहतें जागी ॥ वाल केलि कहिवें को लागी ॥ ५ ॥

मध्य—

वहुरि कह्यो मा खोलि किवार ॥ हुं भींजत हुं ठाढो द्वार ॥६१॥
वहुरि कहै घर जाहु नदके ॥ जाने तुव गुन छद वंद के ॥६२॥
कहा भयो री माता तोकु ॥ क्यो पहिचानति नाही मोकुं ॥६३॥
इहां नद सुत कवहु नावें ॥ मोतें डरपि दुरि ही धावें ॥६४॥
रे रे लंगर ढीठ कन्हाई ॥ तैं व्रज की सब लाज गमाई ॥ ६५॥

अंत—

नवलकिसोर सुंदर सुख रासी ॥ रस मे भीजि रहे व्रजवासी ॥१४४॥
यह लीला अति प्रेम प्रकासी ॥ वीरभद्र जन जानि प्रकासी ॥१४५॥
इति श्री चंद्रावती जु की लीला सपूरन समापता ।

विषय—श्रीकृष्ण की चद्रावली लीला का वर्णन ।

संख्या ३६६. अश्वमेध, रचयिता—वीरभान चौहान, कागज—देशी, पत्र—२३२, आकार—५ ९ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२२६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री लाल वहादुर सिंह, शिवपुर, पो०—जफराबाद (जौनपुर) ।

आदि—................ ।

एहि विधी दीज अधिकारी शोध न लिन्ह दीजन्ह कर नाही
जो कोई न्रोप न्रोप मद पावै तोहि न्रोप कि वशव वस्तु कहावै
न्रोपदि द्वदि रिठल लागे व्याश रिखै कहिए हम आगे
दिज को शंख्या कहो बुझाई केतिक दान बुझो रीपो राई
एहि विधी अस्व कहै रीपो ग्यानी शो हम सब तुम्हं कहहु वषानी

॥ दोहा ॥

पंडित और कुलिन तन रिषं कहे रीषी पाही
लख सहस्त्र दीज चाहीऐ जग्य अरमन माहीं

:o: :o: :o.

अस्व रतन न्रीप राखही वै न्रीप कीरनी शमान
सक्ती होई तौ आनिऐ कहु "वीरभान चौहान"

इती श्री हरी चरित्रे दशम शकंधे अस्वमेध कै जैमुनी भारथे भाषा क्रीत नाम प्रथमो अध्याऐ ॥

:o: :o: :o:

जैमुनी कथा चलाई आगे तब कछु भीम कहन कहें लागे
मै आनब बल जोरी तुरगा करीही जुध्ध ताही न्रीप संगा

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

वीरभान चौहान कही हम आवहि न्रीप काम
जौ तुम्हते रथ लिजिऐ तौ नाहि सग्राम

...भाषाक्रीत चतुर्थो अध्याऐ जैमुनी बीरचीते ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

वीरभान चौहान कही कीजं उठा पग्रान
भीम सवेग दुहु जना मुर्छीत जेहि मैदान

:o: :o: :o:

अंत—...................... ।

॥ दोहा ॥

अचल रूप ऐही भाती है चलत चिन्है जौ कोई
भौसागर उतरन चहै सीला पुजं जौ सोई

॥ चौपाइ ॥

शीला काध कै चलै जौ कोई
त्रीभुवन भार लीन्ह जनु सोई
शालिग्राम देहि दिज दाना
दीन्हो सात दीप परिवाना
पूजा ध्यान सिला जो करै
अरु जौ अस्तुति चितम्ह धरै
गंगा सागर ध्यावै सोई
तुरित उधार ताहिकर होई

:o: :o: :o:

नाराऐन सम बंधु नही क्रीस्न कथा सम आन
तुलसीसार समान नही कहि "विरमान चौहान"
तहा वसत है आप प्रभु तुलसि मंजुर माहि
है तीन्हको महीमा अधीक पत्रते सुजत ताही
नारद पारथ कह समुझावै हरिकि भगती केर गुन गावै
ध्रीस्टवुधी चंदनपुर माहा लव कुलिद कह वधं मनमाहा
प्रजा पौनी जेतने वादे सही शवकर डंड की वो पर वेसही ।

:o: :o: :o:

.... ।

विषय—श्री कृष्ण चरित्र और पाडवो के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन किया गया है।

चद्रहास राज मदन मत्री शालिग्राम माहात्म्य	(५८) अध्याय
वालक वधनो नाम	(५०) अध्याय
सीता वन गमन	(२७) अध्याय
रामचद्र का भ्रातृ मिलन	(२६) अध्याय
लौहरी राक्षस वधनो नाम	(३०) अध्याय
विपमाली वर्णन	(५२) अध्याय
अयोध्या वर्णन	(२५) अध्याय
प्रद्युम्न मनीपुर पति युद्धवर्णन	(२४) अध्याय
राक्षस स्त्री वर्णन	(२२) अध्याय
त्रिया राज्य अश्व गमन	(२१) अध्याय
अर्जुन ताम्रकेतु सग्राम	(४३) अध्याय
हरी चतुर्गुण युद्ध	(३०) अध्याय
लोकुश रामचद्र युद्ध	

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है। समस्त दो सौ वत्तीस पत्ने उपलब्ध हैं। रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या ३६६. यमकालकार सतसैया या वृद विनोद, रचयिता—वृदकवि, स्थान—मेडता (राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—६$\frac{१}{१०}$ × ५$\frac{२}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति-स्थान—श्रीयुत् गोपाल चद्र सिह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (स्थायी पता—मोहल्ला नजीरावाद, कोठी न० ११७, लखनऊ)।

आदि—श्री गणाधिपतये नमः॥ अथ यमकालंकार लिख्यते॥

॥ दोहा ॥

श्री सरस्वति कौं नमत नर सरस्वत कोमल कैन।
गनपति कृपा कटाक्षतै गनपति सुभफल दैन॥ १॥
केशव कवि वरने यमक अव्ययेत सव्ययेत।
सुपकर दुष्कर भेद सब वरने वृद सहेत॥ २॥
विन्न अंतर इकसे सवद अव्ययेत सो जानि।
अंतर यौं इकसे सवद सव्ययेत पहिचानि॥ ३॥

॥ अथ अव्ययेत यमक ॥

॥ अथ आदि यमक ॥

संकर संकर सत कौं मन वंछित कौं देत।
मन क्रम वच करि कीजियै ताही सौं हिय हेत॥ ४॥
नरहरि नरहरि और की करत आस वेकाज।
संत सुदामा रंक तै राव कियौ महाराज॥ ५॥

॥ अथ सव्ययेत यमक ॥

॥ प्रथमपदयः ॥

सुरभित वन कीनो सुरभि कोमल मलय समीर।
तहां सुरत सुप लेत हैं नित राधावलबीर॥२७॥

॥ अथ २ ॥ षः यः ॥

कुंजन कूजत कोकिला अलि गुंजत अलिमाल ।
चलि वलि हिलिमिलि लेहु सुष तहा रसिक नदलाल ॥२८॥

अंत—हरि चरित्र समझै भले पावै नाही पेद ।
सोई जमक दोहांन कौ नींकै जानै भेद ॥१३॥
गुंन रस सुष अमृत वरस वरससुकुल नभमास ।
दूज सुकवि कवि वृंद ए दोहा किए प्रकास ॥१४॥
आगरनगर नरन कौ नगर मेरते वास ।
० ० ० ०
जमक सतसयाकौ धरचौ नाम सुवृंद विनोद ॥१६॥

इति श्री षोडस ज्ञातीय पुष्करना कवि वृंदावन विरचितायां यमकालकार सतसया संपूर्ण ॥ लिखितं जोसी सूरतराम ऊदैरामेण वाचनार्थ राजे श्री अमृतराव० ॥

विषय—यमकालकार के अव्यपेत और व्यपेत नामक दो भेदो और उनके भिन्न भिन्न प्रयोगो का वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

गुन रस सुष अमृत वरस वरस सुकुल नभ मास ।
दूज सुकवि कवि वृंद ए दोहा किए प्रकास ॥१४॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल का उल्लेख है, पर ठीक ठीक समझ मे नही आता। लिपि-काल भी नही दिया है। जिस हस्तलेख मे प्रस्तुत रचना है उसमे अन्य दो रचनाएँ 'नखशिख' वलभद्रमिश्र कृत और 'मानमजरी' नददास कृत भी है। मानमजरी अपूर्ण है।

संख्या ३६७ सरसरस, रचयिता—वृजनाथ त्रिविक्रम सुत, स्थान—भरोच, पत्र—१२, आकार—९॥ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ६२, पु० स० ६।

आदि—॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ सरस रस लिख्यते ॥

गुर गनपति गोपाल के चरन कमल चितु लाइ ।
भाषत हो अव सरसरस रसिकन को सुखदाइ ॥ १ ॥
राजत है दिल्ली तखत नो रस साहि नरेस ।
लियो निराजी जोर तै राजी करि सब्र देस ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १२

मुग्धा ॥ चलन चलन सव कहत है लखत नऊढा वाम ॥
पूछति अपनी सखिनि सो कित जैहै घनस्याम ॥७६॥
मध्या ॥ भोर पयानो कीजियें वात क्हो पिय राति ॥
रैनि घटत तन घटत है प्रात होत पियराति ॥७७॥

अंत—मूर्छा ।

बिरह दहै अति दुखित है बोलति नाहिन वैन ।
देकै दरसु जिवाइ लै अधजल डारै नैन ॥५०॥
दसम भेद जो विरह को सो मति काहू होइ ।
नाइक के अरि को वहै तिय की सोतिन सोइ ॥३५१॥

विपय—नायिका भेद वर्णन।

सख्या ३९८ १ विचित्रालकार (द्वयर्थक कवित्त), २ चतुर्विध पत्री, रचयिता—वेणीमाधव भट्ट "प्रवीन" कवि, पत्र—१०, आकार—४$\frac{3}{8}$ × ४$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७५० (लगभग), लिपिकाल—स० १७९८, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० स० २३५, पु० स० ९।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ छर्पे ॥

सिद्धि वृद्धि जुग जुवति परम सुंदर अनूप अति॥
रिद्धि वृद्धि संग. लियें सुखद सहचरी सुगति मति॥
ल छ लाभ सुत प्रगट मिप्ट मोदक भर निसदिन।
सेवत सुर तेतीस रहत आनदित छिन छिन।
फल देत सकल मन कामना कल्प वृक्ष राजै सुघर।
सव सुख "प्रवीन" मंगल करन सुलवोदर उर ध्यान धर॥ १॥

मध्य—पृ० ९

घूंघट के कोट कोर राजत कगूरे तहां भोर पवरे तन की भीर अधिकारी हे।
अलकें निसान भोहें कररी कमान सांधें नेनन के वानन की अनी अनियारी हे।
नृपति मवासी रूप राजत प्रवीन तहां खोलत न क्यों हूं मुख मोन की क्रिवारी हे।
नेकु न लगाव अव कीजिये जतन कोंन प्यारी तेरे मान को ये विकट गढ भारी हे॥१३॥

अथ पत्री लिख्यते॥

वरनो प्रेम प्रवास को सुनि उपजे सुख अंग।
होत उछाह सनेह को मिलने की जु उमंग॥ १॥
पत्री चार प्रकार की रची सुघर के हेत॥
प्रीति रीति जांनी परे वाँचत ही सुख देत॥ २॥
पिता गुरू भ्राता नृपति श्रेप्ठ परम पहिचानि॥
लिखि पत्री इहि भाति सो प्रीति रीति उर आंनि॥ ३॥
सिद्धि श्री सर्वोपमा लाइक परम निधान॥
गुन गंभीर उदार मति तुमसे ओर न आन॥ ४॥
उपमा जेती जगत में लिखिये कहा वखान॥
कृपा द्रप्टि जेसी सदा करियो सेवक जान॥ ५॥
इहां कुशल हे रावरी सदां कुशल की चाह॥
समाचार के सुनत ही जिय मे होइ उछाह॥ ६॥

अंत—प्रीतम तुम जियकी सवे जानत हो निज रीति॥
पत्री मे लिखीये कहा सवे आपुकी प्रीति॥ ७॥
प्रीतम प्रान सुजान तुम विनु कछु न सुहात।
हे दीजे दरसन आनि लिखत न वनत न और कछू॥ ८॥

भट्टवेणीमाधव विरचितायां चतुर्विधि पत्रो चित्रालंकार द्विर्थ कवित्त संपूर्न शुभं भवतु सं० १७९८ पौष सुदि १५ शनौ लिखतं उदेपुर मध्ये भट्ट वृजभूषन जी पठनार्थं॥ श्रीरस्तु॥

विपय—प्रथम १३ कवित्त प्रीति विपयक हैं। वाद मे पत्र लेखन शैली चार प्रकार से वर्णन की गई है :—

१ गुरु पिता प्रभृतिन को—
२ मित्र को—
३ नायिका की नायिका के प्रति—
४ नायिका की पत्नी नायक के प्रति—

संख्या ३६६. पदावली (? रावण विषयक कथा), रचयिता—जन वैंकुठ, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८½ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—पं० वासुदेव तिवारी, ग्राम—भीरा, पोस्ट—मुहम्मदाबाद, जिला—आजमगढ) ।

आदि— :o: :o: :o: :o:

"जन वैंकुंठ उपेंद्र सामी सुनो कुंभकरन सो समतले ४१७

राग सारंग ताल ३

कुंभ करन न्रिप कह सिर नाइ ।
मम निद्रा बाधत है पुरजन निर्जन ठाम सदन द्यो वनाई ॥ ध्रु ॥
सुनि दसकंधर विसकर्मा ते कह आलय वहु भांति वनाइ ।
कैलास अकार उतंग व्याम वीस्तिर्न कीन्ह जोजन समताइ ॥ १ ॥
फटिक षंभ कंचन वैदुर्ज रतन मनि पचित गेह ललिताई ।
मेरु गुहा सम कुंभकरन तह निद्रा वसि सतत सुषसाई (? सुषदाई) ॥ २ ॥
रिषि मुनि देव दइत अहिगन गंधर्व जक्ष दसमौलि सताइ ।
"जन वैंकुठ उपेंद्र सामि" सुनो गुनि तव दूत कुवेरु पठाई ॥ ३ ॥१८॥

अंत— ॥ राग विलावल ताल ३ ॥

हिमवत विपिन दसानन जाई ।
परम सरूप सकल विधि कन्या करत महातप ध्यान लगाई ॥ ध्रु० ॥
रावन विहसि कही केहि कारन तप करौ नाम कहा केहि जाइ ।
विहस्पति तनय कुसध्वज कन्या वेदवती मम नाम सुनाइ ॥ १ ॥
मम कारन पितु ढिग आलय सुर असुर जछ वर भट समुदाइ ।
विस्नु हेतु दुहिता सुनि निसि सवेस तात कह सुभ रिसाई ॥ २ ॥
तात मनोरथ विस्नु जानि तप करति सुने रावन विहसाइ ।
विमान ते उतरि जाइ ढिग ह्वै कह प्रोग्र होहि मम वहु सुषदाइ ॥ ३ ॥
काम वान पीडित रावन परसत कर त्रीग्र नहि दीन्ह छुग्राइ ।
कुपित तापसी तुग्र घर्षन कर फल पैहो जो पाप चित आई ॥ ४ ॥
गहत सरूप वलात निरषि कह मम सक नहिन हतो दनुराइ ।
तुग्र वध निविति अवनि अवतरिहो कहि वेदवती अनल समाई ॥ ५ ॥
कृत जुग वेदवती तप वरते महि उत्पती............

:o: :o: :o:

.... ललसाई ॥ ६ ॥ २६ ॥

॥ राग सारंग ताल १ ॥

रावन दल सोर घोर पवन प्रलय ताइ ।
सुनि धुनि अर्जुन अमात्य हय गरथ वहु पयदाति समर विधि सनधभये विहसत दनुराइ ॥ ध्रु ॥
आर्जुन सनु जुधि हमारि कहु सुधि नृप धनुकधारी लरत उभय कटक तहा सुनि सोनि परिसाइ ।
क्रीडा तजि गदागहे दानव सठग्रौतु लहे हनत धाइ हाक त्रास दनुज वहु पराइ ॥ १ ॥

—अपूर्ण

विषय—रावण संबंधी कथाओं का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। आरंभ के १६ पत्रे नहीं हैं। १७वें पत्रे के पश्चात् के दो पत्रे और २१वें पत्रे के आगे के ३ पत्रे भी लुप्त हो गए हैं।

रचना साहित्यिक है। परंतु खंडित होने के कारण विषय ठीक ठीक ज्ञात नहीं होता। जितने पद वर्तमान हैं उनमें रावण की तपस्या का वर्णन, उसके द्वारा कुबेर का पराभव, पुष्पक यान का छीना जाना, कुंभकरण के सोने के लिये विशाल भवन का निर्माण कराया जाना, कुसध्वज राजा की पुत्री वेदवती के साथ उसके तपस्या करते रावण का बलात्कार करना और वेदवती का रावण को शाप देकर अग्नि में प्रविष्ट होना आदि कथाओं का वर्णन है।

संख्या ४००. वृंदावन वर्णन, रचयिता—व्यास जी, पत्र—४, (पृ० ८६ से ९३ तक), आकार—७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८१, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ८३, पु० सं० ९।२५।

आदि—श्री राधा वल्लभो जयति ॥ अथ व्यास जू के पद लिख्यते ॥ वृंदावन वर्नन ॥

॥ राग सारंग ॥

होहि मन वृंदावन की स्वान।
जो गीत तोको देहँ ऐसो सो गति लहै न आन।
वेगि विसरि है कामिनि कूकरि सुनत स्याम गुनगान।
व्रजवासिनि को जूठनि जेंवत वेगि मिले भगवान।
जहाँ कलपतरु कामधेनु को वृंद विराजत जान।
वाजत जहाँ स्याम स्यामा को सुरत समर निसान।
सदा सनातन राधा॰ वन कों प्रलै पसत नहि पान।
तीरथ और सकल तबही लगि जौं ससि अरु भान।

मध्य—मोहि वृंदावन राजा सों काजु।
माला मुद्रा स्याम वंदनी तिलक हमारें साजु।
जमुना जल पावन सु हमारे भोजन व्रज को नाजु।
कुंज केलि कौतिक नैननि सुख राधाधव को राजु।
निसि दिनु दहदिसि सेवा मेवा ताल पखावज वाजु।
नृत्तत नट नागर भावत अति व्यासहि साधु समाजु॥३१॥

अंत—धनि कलपतरु वंसीवट धनि वर विहारु रह्यौ छाई।
धनि जमुना जाको जल अचवत होति सदा अघवाई।
धनि रास की धरनि जिहि तूं रुचि कें सदा नचाई।
धनि सखी ललितादिक निसिदिनु निरखत केलि सुहाई।
धनि अननि व्यास की रसना जिहि रस कीच मचाई॥३९॥

विषय—भगवद्भक्ति की महिमा का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—पृष्ठ ८६ से १५१ तक प्रस्तुत ग्रंथ लिखा है। इसके साथ निम्नलिखित ग्रंथ भी हैं :—

१ वधाई जन्म समय की
२ साधुनि के स्तुति के पद
३. असाधुनिकौ सरुप वर्नन

४. साधारन पद
५ किशोर जू सिंगार पद
६ रास पचाध्यायी
७ साखी
अंत मे "मिती स० १७८१ पोस वदि ८ वृंदावन" लिखा है।

संख्या ४०१क विनय (करुणा) के पद, रचयिता—व्रजदूलह, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—१२ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, खंडित रूप—पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ करुना के पद लिख्यते ॥
अधम अगाधि अधिक अपराधी अघजनर्माधि विकराल ॥
क्रियाहीन गुणहीन दीन जन करत सकल प्रतिपाल ॥
जप तप ध्यान ज्ञान व्रत संजम जानत नहि निकाल ॥
व्रज दूल्हे करुणाकरि केशव भेदत भव भ्रम जाल ॥ १ ॥
पद ईमन ॥ मैं तुम्हरो दृढ़ भक्त कहाऊं ॥
फलदाता इष्टदेव असवित तुम सम मन मै येक न लाऊ ॥
दृढ़ विश्वास आस एक तुम्हरी राति दिवस तुम्हरे गुन गाऊ ॥
तुम्हरे द्वार परयो श्री माधव द्वार द्वार क्यो लोग हसाऊ ॥
तुमसे स्वामी पाय कृपानिधि कोन देव की नाम की नाम धराऊ ॥
मेरे एक टेक करुणानिधि तुम तजि और देव नहि ध्याऊ ॥
जो कछु देहु लेहु मन राजी नाहि देहु तोहू सुख पाऊ ॥
तुम्हरो होय सुनौ व्रज दूल्है जग पतितन क्यौ सीस नवाऊ ॥ २ ॥

मध्य—॥ (राग) सोरठ ॥
कृष्ण भक्ति भव सिंधु तिरावें ॥
भक्ति प्रवल अघ ताप मिटावै विना कष्ट वैकुंठ पठावै ॥
शम दम जप तप सकल तिरावें ज्यो ज्यो तिरे महा दुख पावें ॥
श्रम विन हरि पद भक्ति मिलावें शिव विरंच जो पद नित धावें ॥
पूजो क्यों न देव जो भावें कृष्ण भक्ति विन पुनि भव आवें ॥
जो नर उर हरि भक्ति वसावें ताकूं तजि हरि अंत न जावें ॥
भक्ति विराग ज्ञान उपजावें वेद पुरान शास्त्र सब गावें ॥
व्रज दूल्हे प्रभु भक्ति सुहावें भक्ति हाथ हरि आप विकावें ॥३१॥

अंत—रुण झुण डोलत तुतले बोलत मृदु मुसकनि मैं रोना ॥
देषि देषि सुर नर मुनि जन सव तन मन सुरति भुलौना ॥
जो निरषें हित चित करि नित नित फिर फिर जनम न होंना ॥
कृपा करौ व्रज दूल्हे ऊपर श्री जसुमति के (छौना) ॥ ३ ॥
पद .... (आगे पत्र खंडित है)

विषय—कृष्ण भक्ति विषयक पद रचना।

संख्या ४०१ख. वारहखडी (भक्तपत्रिका), रचयिता—व्रजदूलह, कागज—देशी, पत्र—७; आकार—६¾ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८ खंडित (केवल पत्र संख्या २ नहीं है), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री भक्तपत्रिका लिप्यते ॥

॥ दोहा ॥

मे वरनत वारापरी कृष्ण कृपा के हेत ।
"व्रजदूल्है" कीजे कृपा प्रभुपद भक्ति समंत ॥ १ ॥
कका कमलापति करुणानिधे केशव कृष्ण कृपाल ।
करो कृपा मो कुटिल पैं जानि कठिन कलिकाल ॥ २ ॥
पपा पवर लेहु अब दास को परचो प्रवल भववीच ।
काम क्रोध ग्राम कुमति मैं परचौ कर्म कृत कीच ॥ ३ ॥
गगा गर्व हरचो गिरवर धरचौ गज की सुनी पुकार ।
अहो नाथ अति दुपित मैं करो प्रवल भवपार ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

अंत—ञञा ज्ञानदहु निज चरन को शरन परे की लाज ।
त्यारी मुहि भवसिंधु ते व्रजदूल्है महाराज ॥३७॥
यह वरना वारापरी प्रेम भक्ति की पानि ।
जो गावै सीपै सुनें मिलें कृष्ण पद ज्ञान ॥३८॥

इति श्री भक्त पत्रिकाया व्रजदूल्ह कृत संपूर्णम् ॥

विषय—'क' से लेकर 'ञ' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर कृष्ण भक्ति वर्णन की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ मे केवल पत्र सख्या २ नहीं है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल दूसरे ग्रथ, 'सुदामा की वाराखडी' के आधार पर सवत् १९२६ है । दोनों ग्रथ एक ही हस्तलेख में है ।

संख्या ४०२क. दानलीला, रचयिता—गो० श्री व्रजभूषण जी "दास", स्थान—कांकरोली, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—४ × ३॥। इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६५ से १८३३ के बीच, लिपिकाल—स० १८४८, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ३१, पु० स० ६ ।

आदि—॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ राग गौरी अथवा बिलावल ॥ दान ।
अहो प्यारी मनिन जटित की एंडुरी ओर रतन जटित को माट ॥
दधि ले चली चंद्रावली अहो मोहन रोक्यो घाट हो ॥ १ ॥
व्रखभान लडेती दान दे ॥ १ ॥
अहो प्यारे सर्वे सयाने साथ के ओर तुमही सयाने कान्ह ॥
लिख्यो दिखाओ रावरो तुम किहि पुर लीनो दान हो ॥नंदराय लला घर जान दे ॥२॥
मध्य—अहो प्यारे गुजराती डाकोतीया लेत गहन मे दान हो ।
जो उनमे हो लाडिले व्रखभान ववा राखे मान हो । नंदराय० ॥ १२ ॥
अहो प्यारी जनम जनम की हो कहो तुम सुनहु सभग सब साथ ।
असुभ लगन ते सुभ करो जोपें नेकु दिखावहु हाथ हो ॥१३॥ व्रख भान ॥१३॥
अंत—अहो प्यारी को लकुटी आडी करे ओर कोन सके कहि बात ।
रस हो रस वस ह्वै गए मेरे सुफल भए सव गात हो ॥२३॥ व्रखभान ॥
अहो प्यारे जुगत अनेक सुहावनी ओर वतरस वढयो व्योहार ॥
चतुरन मन दोऊ वने 'दास' वलि वलि जाय हो ॥२४॥
नंदराय लला घर जान दे ॥२४॥

दान लीला संपूर्ण ॥ सं० १८४८ मि० आश्विन कृष्ण १४ लि० जीवन भट्ट स्पहाड मधे ॥

विषय—दधि वेचने जाती हुई गोपियो को रास्ते मे रोककर श्रीकृष्ण द्वारा उनसे दधि दान माँगने का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ मे पहले 'साभी के पद' और वाद मे यह 'दान लीला' लिखी हुई है ।

संख्या ४०२ख. साभी कीर्त्तन, रचयिता—गो० श्री व्रजभूपण जी, स्थान—काँकरोली, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१०। × ५।। इच, पक्ति (प्रतिपृ़ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६५ से १८३३ के वीच, लिपिकाल—स० १९६०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० २५, पु० स० १ ।

आदि—॥ श्री गोपीजन बल्लभाय नम॰ ॥ अथ साझी लिखियतु हैं ॥
सुनहु कुंवर व्रखभान की हम सब आई व्रज नारि हो ॥
तुम नित जात फूल वीनन को पूजन सामी हेत ॥
आज सबै व्रज बनिता तुम संग चलिहैं कहो सकेत हो ॥ १ ॥
सुनत विहसि उठी कुवरि राधिका गई कीरति के पास ॥
आज सवे व्रज नारि हमारें संग चलत इहि आस हो ॥ २ ॥

मध्य—पाई सुधि नंदनंदन गईं ब्रज बनिता वीनन फूल ॥
आतुर ह्वे अकुलाय चले हरि कालिंदी के कूल हो ॥३०॥
दुरि देखत लतान की रंध्रन अपनो वदन दुराय ॥
निरखि रूप व्रषभान कुवरि को मन मे अति सुख पाय हो ॥३१॥
पूरन हिमकर सम मुख प्यारी को देखत मन गयो भूलि ॥
त्रिया रूप धरि कर डलिया ले आपुंन वीनत फूल हो ॥३२॥

अंत—ललिता निरखि परम सुख पायो उर आनंद न समाई ॥
देत असीस सदा यह जोरी सुख विलसो मन भाई हो ॥५३॥
लीला ललित स्याम स्यामा की वरनत बरनी न जाई ॥
श्री बल्लभ पद रज प्रताप तें व्रजभूषन वछु गाई हो ॥५४॥
इति सांझी संपूर्ण ॥

विषय—राधाकृष्ण की साभी लीला का वर्णन ।

नीति विनोद भाषा, रचयिता—गो० श्री व्रजभूपण जी महाराज, निवास स्थान—काँकरोली, कागज—देशी, पृष्ठ—३, आकार—१०½ × ६½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६५ से १८३३ के वीच, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या-विभाग, काँकरोली, हि० व० स०—३६, पु० स० १४।१० ।

आदि—॥ श्री द्वारकेशो जयति ॥ अथ श्री व्रजभूषण जी महाराज बडे तातजी कृत नीति विनोद भाषा में लिख्यते ॥

प्रथम तो वैष्णव होय सो अन्याश्रय न करें ।
धर्म करनो सो मन प्रसन्न सो करनो ॥ २ ॥ खविंद को प्रसन्न राखे सो चाकर ॥ ३ ॥

समय पें वुरि चले तो दुख लगाय कें कहे सों सावधर्मों ॥ ४ ॥ खाविंद प्रसन्न होय तब अरज करे तो लगे ॥ ५ ॥ सारा उठे पीछे तुरत अरज न करे ॥ ६ ॥ स्वाधिन खाविंद सबको भलो चाहे ॥ ७ ॥

मध्य—सांचु कुं आंच नहीं ॥८०॥ स्त्री स्नेह तो और भयते वस रहे ॥८१॥ यश प्रिय नहीं सो काहु काम को नही ॥८२॥ अपने नाम तें प्रसिद्ध सो उत्तमोत्तम ॥८३॥ पिता के नाम सुं प्रसिद्ध सोहु उत्तम ॥८४॥ माता के नाम सुं प्रसिद्ध सो मध्यम ॥८५॥ स्त्रि सुसर के नाम सें निकष्ट ॥८६॥ वडी मजलस को वेठन वारो दगा न खाय ॥८७॥ पतीव्रता सो अभागे पती को वेठें ॥८८॥

अंत—दुर्जन सनेह फुटे पीछे संधे नहीं ॥१४५॥ लोभ हे वहां और औगुन को काहा काम है ॥१४६॥ सत्य हे तो तपस्या को काहा काम हे ॥१४७॥ मन पवित्र न होय तो सर्व धर्म वृथा ॥१४८॥ सौजन्य सो अपनो होय ॥१४६॥ महिमा हे तो गेंना को काहा काम हे ॥१५०॥ उत्तम विद्या हे तो धन को काहा काम हे ॥१०१॥ अपजस हे सोई मृत्यु हे ॥१५२॥

विपय—नीति के १५२ वाक्य लिखे हैं।

विशेप ज्ञातव्य—यह "धौल" की पुस्तक है। इसमें करीव ११-१२ पुस्तकें लिखी हुई हैं। १ से ३१ तक पृष्ठ सख्याएँ लगी है। बाद मे पृष्ठ सख्या नही लगी है। पुस्तक जीर्ण और सिली हुई है।

सख्या ४०३क. प्रभुपूर्ण पुरुपोत्तम को रूप तथा गुण नाम वर्णन, रचयिता—गो० श्री व्रजभूपण जी दीक्षित, पत्र—२७, आकार—३।×५।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२. परिमाण (अनुष्टुप्)—२१८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ४२, पु० स० ७।

आदि—श्री वल्लभाधीश चरण कमलेभ्यो नमः ॥ अथ पुष्टि मार्ग स्थित प्रभु पूर्ण पुरुपोत्तम कोरूप तथा गुण तथा नाव वर्णन करत हे गोस्वामि श्री व्रजा भर्ण दीक्षिते ख्या ख्यान ॥ रागुसारंग जे वसुदेव कीए पूरण तप वि तेईफल फलित श्री वल्लभ देव ॥१॥ पुष्टिमार्गीय भक्तन को प्रगट कीए भूमि विपे। फल मुख्य प्राप्त के निमित्त जे कृष्ण भगवान् पूर्ण पर ब्रह्म श्री वसुदेव जी को तपपूर्ण कीए ॥

मध्य—पृ० २७ राग हमीर।

प्रगटित सकल सृष्टि आधार।
श्रीमद वल्लभ राजकुमार ॥ १ ॥
ध्येयं सदा पद अंबुज सार ॥
अगनित गुन मह माजु अपार ॥ २ ॥
श्रीकृष्ण प्रथम श्री वसुदेव जू को वरदानार्थ प्रगट भए।
तेई संपूर्ण सृष्टि के आधार।

उत्पत्ति स्थिति प्रलय के कर्त्ता कृष्ण सदानंद फलरूप तेई अब प्रगट भए सो कहत हैं।

अंत—प्यारी जू को वदनु पान पन्यों जों अद्भुत नेंन को इह आहार ॥
मकल पाक पीय प्यारी सिखए अमगन की परसार ॥ २ ॥ ३३ ॥
श्री ॥

इति कीर्तन ग्रंथ तथा पद संपूर्ण संवत् १८३० के पौस वदि २ वुधे प्रातः लिखितं विट्ठल नाथजी श्रीरस्तु ॥

विषय—श्रीकृष्ण के चरित्र और गुण वर्णित हैं।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक में प्रथम 'नवरात्र के कीर्त्तन' और बाद मे ये कीर्त्तन लिखे गए हैं।

संख्या ४०३ख. वल्लभाख्यान सटीक, टीकाकार—व्रजाभरण जी दीक्षित, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—७ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६२, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ४५६, पु० स० ११।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री वल्लभाचार्य चरण कमलेभ्यो नमः ॥ श्री गोविंद देव कृपया श्री विट्ठल नाथ जी चरण कमलेभ्यो नमः। श्री गोविंद देव कृपया श्री व्रजाभरण दीक्षितेन व्याख्या क्रियते ॥ तत्र एक समे श्री गुसाईं जी श्री गोकुलतें राजनगर पधारें। तासमे असारुआमे भाइला कोठारी कें घर पधारे। तहा भाइला कोठारी ने अपने जवांई गोपालदास रूप पुराके वासिको प्रसाद लेवेको बुलाये। तहा श्री गुसाईं जी के दर्शन कीये। तब श्री गुसांई जी पूछे। यह कोन हे। तब भाईला कोठारी ने कह्यो जो गोमती को वर हे।

मध्य—पृ० ४६ राग सामोरी। श्री विट्ठल सुख कारि नामे निःपाप थाय नर नारि। दुर्गति सकल निवारी प्रगट्या व्रजपतिराज विहारी ॥१॥ मायिक मत जेणे खंड्यो, भक्तिमारग बहुपेरे मंड्यो। उत्पथ जन सर्व दंड्यो, मुरख हेतु कुशब्द वितड्यो ॥२॥

टीका—श्री हरिः ॥ श्री लक्ष्मी सहित विट्ठल नाथ जी सुख कर्ता भक्तन को निज के नामोच्चारण तें नि.पाप नर नारि होत हे। दुर्गति सकल निवारण करे। व्रजपति रास विहार कर्त्ता प्रगट भये सो कोन तहां कहत हें ॥१॥ मायिकमत जिन खंड कीयो। भक्ति मार्ग जिन बहुत प्रकार सो मंडन भूषन रूप स्थापित कीयो। उत्पथ कहतें पाखंडी जनको दंड दीये। मूर्खन के हेतु कहे निमित्त कुशब्दनको वितंडा कहे। व्यवस्था रहित न्हे ॥२॥

अंत—पुत्र पौत्र सुख केम कहू जो तू मुख माए करे। श्री विट्ठल कल्पद्रुम फल्यो शाखा प्रसरी अनेक रे रसना ॥१४॥ इति श्री गोपालदास कृते वल्लभाख्याने कडुवा नवः समाप्ताः।

टीका—पुत्र पौत्रादि सुख मे कहा कहू मुख मे एक ओर श्री विठलनाथ कल्पद्रुम फल्यो ताकीं शाखा अनेक बहुत प्रसरी, फेली यातें आगें वाणीहू को गम्य नही कृपा करे तो भक्त होई ॥१४॥ इति श्री व्रजाभरण दीक्षित कृते वल्लभाख्याने वल्लभायां कडुवा नवमः ॥

विषय—श्री आचार्य जी महाप्रभू जी और श्री गुसाईं जी के चरित्र का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—मूल ग्रथ गुजराती भापा का है जिसकी प्रस्तुत टीका व्रज भापा में है।

संख्या ४०४. नित्य सेवा विधि (आह्निक), रचयिता—गो० श्री व्रजराय जी, निवासस्थान—अहमदावाद, कागज—देशी, पृष्ठ—३७, आकार—५¾ × ७¾ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६६६, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६१, पु० स० ५।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नम ॥ अथ नित्य सेवा विधि लिख्यते ॥ नत्वा श्री वल्लभाचार्यान् पुष्टिमार्ग प्रवर्त्तकान्। तदंगीकृत भक्ताना माह्निक सु विचार्यंते ॥१॥ श्री विट्ठलेश पादाब्ज परागान् भावयाम्यहम्। पुष्टिमार्ग प्रवृत्तानां भक्तानां बोध सिद्धये ॥२॥ अथ सूर्योदय तें पहिलें रात्रि घडी ६ अथवा ४ रहे तासमे सोवत तें उठि भगवन्नाम शरण मत्रादि लेत रात्रि

को वस्त्र वदलि हाथ पाउ धोय कुल्ली ३ करि उत्तर मुख वेठि । नाम श्री आचार्य जी महाप्रभु को ले विज्ञप्ति सो दंडवत करिये ।

मध्य—पृ० १८

गुंजा माला हार के नीचे धराये । ततश्चन्द्रिकार्पणम् ।। मिलितान्यो न्यांग कांति चारु चित्रय समं विभो । अंगी कुरुष्वोत्तमांगे केकि पिच्छमति प्रियं ।।१।। चंद्रिका दाहिनी दिसि धरिये । ततो अंजन कुर्यात् । गोपरवी दृक्‌स्मितं श्रीमत् श्रृंगारात्ममंजनं । शोभार्थ मात्म वदन मंगी कुरु व्रजाधिपः ।।६३।। श्याम स्वरूप होय तो मीना के अलङ्कार धरिये । गौर स्वरूप होय तो काजर को अंजन करि भ्रुव पर बिंदुका करिये । ततः वेणु धारण ।

अंत—अरु एतन्मार्गीय के मुख सो श्रीमद्भागवत कथा ग्रंथादि श्रवण करिये । उपरांत अलौकिक तथा लौकिक कार्य होय तो करिये । पाछे इछा होय तो स्वस्त्री समाधान करिये । परतु विषयासक्ति विशेष न राखिये । उक्तं सन्यास निर्णये । विषयाक्रांत देहानां नावेशः सर्वदा हरेः । किंच । पाछें स्वच्छ होय चरणामृत ले निरोध लक्षण को पाठ करि सोइये । श्री मदाचार्य जी को श्री गुसाई जी को स्मरण करि अंतःकरण भगवद् लीला विखें राखिये । निद्रा भावार्थं तनु सुखार्थ करिये । अरु चतु षष्टि अपराध तें सावधान रहिये । या भांति सर्वदा रहे । कृतार्थ होइ । किमधिकम् । श्री वल्लभाचार्य मते फलं तत् प्राकट्य मंत्रा व्यभिचार हेतुः । यमेव तस्मिन्नवधोक्त भक्ति स्तत्रोपयोगो खिल साधनानां ।।२०४।। इति पुष्टिमार्गीयाह्निकम् । गोस्वामि श्री व्रजराज जी कृत संपूर्णम् ।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।

विषय—पुष्टिमार्गीय वैष्णवो को प्रात काल से लेकर शयन पर्यंत किस प्रकार आह्निक कर्म और भगवत् सेवा करनी चाहिए प्रस्तुत पुस्तक मे इन सब वातो का वर्णन है ।

संख्या ४०५. भाषा ज्योतिष, रचयिता—"राव शकर दास, कागज—देशी, पत्र—३३, आकार—$8\frac{2}{10} \times 5\frac{2}{10}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८६० वि०, प्राप्तिस्थान—प० शिवकुमार पाडेय, ग्राम—धाता, पो०—धाता, जिला फतेहपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्री रामानुजाय नमः ।। अथ भाषा जोतसलिख्यते ।।

।। दोहा ।।

समुझ परत नहिं सं सकृत जाकी जग मै साष ।
ताते जोतिक भेदु कछु वरनत भाषा भाष ।

।। अथ दशकर्म निरूपते ।।

।। कवित्त ।।

रेवती औौर उतरा रोहिनी म्रगासे सिर मूल अनुराधा हस्त सुभ स्वाती उर आनिये ।
तुला वृष कन्या मिथुन गुन लग्न चारु सोमे वुध सुक्र गुरुवार सदा जानियें ।
मार्ग आषाढ़ माह फालगुन वैसाष जेठ परमाश्री द्वुतीया तीज पांचे ठीक ठानियें ।
छठ औ सातें आठें ग्यारा औ त्रोदस जान परम समेत विधि व्याहु की वषानियें ।

अंत— ।। वय भाव ।।

नैन वहन वहु पीर होइ । राज समीपी तुल्य होइ ।
रिपु नाम सुचित्त मन तें न होइ । गुदा अंग अति पीड होइ ।
पचुवंत वहु विघ वषान । वय भाव के तव हपर लिए जान ।।

इति श्री भाषा जोतिक । श्री रावसंकर दास कृतौ लग्न प्रकास द्वादस भाव । संपूर्ण । संवत् । १८६० पोष वदी १२ शुक्रे सपूर्ण समाप्त लिख्यते । लाला दलगंजन । मुमांग । मन मौज की गढ घुरिया गंज । श्री ।।

विषय—फलित ज्योतिष विषय वर्णित ।

सख्या ४०६. जोगरतन, रचयिता—शकरद्विज, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—११$\frac{3}{4}$ × ८$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०१ वि०, प्राप्तिस्थान—प० सीताराम जी मिश्र, ग्राम—अहरौली, पोस्ट—सलेमपुर, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम. श्री शिद्धेश्वरर्य्यै नम. ॥

गौरिगणेश सारदा शंभु श्वरोश्वति ।
सा ब्रह्मा कमलापति सहित वन्दो गुरु पद कज ॥
करहु कृपा मम उर वसि वुद्धि करहु प्रगास ।
"शकर द्विज" निज जानिके हृदय करहु नेवास ॥
वार वार शुमिरन करो कर जोरि करो प्रनाम ।
करहु कृपा मम नाथ तुम दुष्ट वुद्धि पुनि जाए ॥
वैठे रहो निजु भवनते चिहुकि उठे जीव माह ।
अस मन मैं पुनि मन मे किछु भैषज करो उचार ॥
औषधि इ सम लिषौ-विचारी..... ..... .
वत्सर इदु शून नद महि कन्या कृष्ण दि(व)स निज जान ।
अर्कवार वि उदयेते घटी नेत्र सुभ जान ॥
अस दिन शुभ शुदीन जानि के किन्हो ग्रथ प्रगास ।
"शकर" अस पुनि क(ह)तु है "गोगरतन" है नाम ।
तुह प्रताप गुण गाइहो वेद ग्रथ गुन पाइ ।
ओषधनाथ विचारिहौ सरस पुट पुनि हिम
कलक फाट अवलेह पुनि क्वाथ चूर्ण वटि....

:o: :o: :o:

अंत— ॥ अथ नाडी लछन ॥

स्त्रि वाम पुरुष कर दक्षिण अगुठा मुल नाडि कर जान ।
अति चंच नाडि पुनि चले । ताके पित वहुत वल करे ॥

:o: :o: :o

अथवा

लवातिति अवर वटेर । धमनि चलै पित्त कर फेर ॥
गवरा मेढुक अवरी कुलेर । इन्हु कहव वाए कर फेर ॥
हंस कपोत चले पुनि जैसे । ताके कफ कहव पुनि तैसे ॥
सर्पाकार गमन करेव धमनि वाय पित्त कहत पुनि तैसे ॥
नाडि हंस पित्त चले पवना ददुल चाल वाए करे गमना ॥
तिनि अ...............................

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—आयुर्वेद विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आरभ के केवल दो पन्ने मिले हैं । रचनाकाल सवत् १६०१ वि० है । लिपिकाल का पता नही ।

संख्या ४०७क. तत्वविवेक, रचयिता—शंकराचार्य, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ तत्व विवेक लिख्यते संकराचार्य कृति श्री परमात्मने नम. ॥

ओ ब्रह्म एक शुध चैतन्य दुसरि माया, ब्रह्म माया को जोगः ॥
जैसे व्रछ को छाया व्रछ छायालित नहीं ॥
ब्रह्म वीन छाया नही ब्रह्म माया असो जोगः ॥

माया जड़ ब्रह्म चैतन्य ॥ माया उपर ब्रह्म ॥ ब्रह्म उपर कोइ नाही ॥ एकारो करियते ब्रह्म ॥ तब माया इच्छाधरी ब्रह्म की सक्ति तीन ॥ इछ्या क्रिया ज्ञान ॥ माया की सक्ति तीन ॥

संसय ॥ मिथा ॥ विप्रीय ॥ माया का नाम पंच ॥ माया कहीये ॥ आकास कहिये ॥ सुनि कहिये ॥ प्रकृति कहिए ॥ सक्ति कहिए ॥

मध्य—

मन वुधि चित्त अहकार ॥ चित्त अग्नि को सरूप ॥
अहंकार वाय को सरूप ॥ मन तोय को सरूप ॥
वुधि पृथी को सरूप ॥ इति चतुष्ट अंतक्रन ॥
सवद आकास को सरूप ॥ सपरस वायु को सरूप ॥
रूप अग्नि को सरूप रस पानी को सरूप ॥ गध प्रथी को सरूप ॥

इति पच तनमात्रा कहिए ॥

अंत—पंच तत्व को विनसै ॥ नव तत्व को अवतरै ॥ दोइ सरीर को विध्वंस कीजै ॥ तव पद पाप्ति होय ॥ उर मिपहु सीत उस्न ॥ सुप दुप ॥ मान ॥ अपमान ॥ ऐछहु गयै स्वछंद मुकभा ॥ वाचा च्यारि ॥ परा ॥ पसांती ॥ मधिमा ॥ वंपरी ॥ गंगाघोष ॥ प्रति वसते ॥ कहन हारा झूटा ॥ गंगा तीरे घोष ॥ प्रतिवसते ॥ कहन हारा साचा ॥ लोह चुंवक न्याय ॥ अरहट ॥ घटक न्याय ॥ असो ब्रह्म जज्ञास कथै ॥ सन्यास च्यारि ॥ बोध ॥ कुटीचर ॥ हस परमहस ॥ परमहंस सन्यासी ॥

इति श्री संकराचार्य विरंचिते ब्रह्म जज्ञास उपनिषद् वेदात संपूर्ण ॥ तत्व विवेक ग्रंथ ॥

विषय—ब्रह्मज्ञान का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएँ सकलित हैं :—

१. तत्त्व विवेक—शकराचाय	पत्र सख्या ६–१० तक।
२. गोरख गणेश सवाद	पत्र सख्या १०–१३ तक।
३ पच सस्कार	पत्र सख्या १३–१४ तक।
४. प्रश्नोत्तरी	पत्र सख्या १४–२१ तक।

संख्या ४०७ख. गजा पुष्पाजलि, रचयिता—"शकराचार्य" (?), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—१०३/४ × ४३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० अमरनाथ मिश्र, असवरनपुर, पो०—ओडना, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

सगरज तारिणि विश्व विलासिनि भाविनि देव सुरेंद्रनते।
जल भवजन्म मुरारि हरा चितपाद सरोरुह हंसगते ॥

कलि कृत कल्मप नाशिनि तारिणि भक्त जनेप्टद भावरते ।
जय जय हे हर मौलि विलासिनि पाहि सुधामयि हसगते ॥ १ ॥
हिम गिरि नदिनि नेत्र कटाक्ष दभंग सुलक्षित रोच परे ।
जलमद रूप विलासिनि नीरज वीचि कराकर वल उपरे ॥
क्षिति तल भूपणि सागर चारणि कारिणि वारि सुधामधुरे ॥
जय जय हे हरमौलि विलासिनि पाहि सुधामयि हसगते ॥ २ ॥

अंत—तव तट वासि विलासित वामन योगि जनार्पित तीर वरे ।
सुरवर कामिनि कुकुम चदन पुष्प फलाचित नीर धरे ॥
कलि भवनाशिनि सवक पोदरिण दुष्ट जनेपि च मुक्त करे ॥
जय जय हे हरमौलि विलासिनि पाहि सुधामयि हसगते ॥ ६ ॥

:o: :o :o.

भवे मोहावर्त्ते विषम विषयैः पन्नग गणैः प्रकीर्णे तापाना तृतीय जल धामानि पतित ॥ महामोहाधाक्षं विगत गमने पाप जटित महामाये गगे चरण कमल देहि शरणम् ॥१०॥ श्रुतौ श्रध्या वद्धा गुरु वचन वाचामृत रस मुहुः पीत्वा गगे परमपदया नाभिलषित ॥ शुचि. प्रात साय यदि पठति नित्य तव तटे सपुष्पैरकाय्यैः स्तवन विधि यर्जाति निलयम् ॥११॥

इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं गगापुष्पाञ्जलि स्तोत्र समाप्तम् ॥

विषय—गगा माहात्म्य वर्णन ।

सख्या ४०८. वैताल पच्चीसी, रचयिता—शभु, कागज—देशी, पत्र—१०४, आकार—६.२/१० × ६.५/१० इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८५२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १८०६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत गोपालचद्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (स्थायी पता—मोहल्ला—नजीराबाद, कोठी न० ११७, लखनऊ) ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥

॥ दोहा ॥

छवि कदंब लषि अंब के उमडतु मोद अषड ।
कलरव करि करिवर वदन फेरत सुडादड ॥

॥ कवित्त ॥

एक समै गिरिराज की नदिनी आई अन्हांन कहूँ सरसी तें ।
भासुर भाल दियें दल कौंल को आनन सों छवि की छवि जीतें ।
सो हठि लीवे कों सुडि पसारी तहाँ गननाक आइ अभीतें ।
चीन्हि कै चोप सों दौरि मनौ हरि लेत सुधा अहिराज ससी तें ॥ २ ॥

॥ छंद हरिगीतिका ॥

ध्रुव धरन पलदल मलन जिन आचरन कृत जुग के किए ।
सनमान दान विधान जज्ञ विधांन कै जग जस लिये ॥
सुरराज कुल वल कुमुद को मुद दांनि पूरन इंदु भो ।
निज बस वारिज को दिनेस तिलोक चद नरिंद भो ॥
पुनि भयो आनद कंद पृथ्वीचंद नृप ताको तनै ।
भुज जोर सों जुरि जंग मे जमराज हू नहि जो गनै ॥
पुनि भयो ताको अजयचंद अरिंद कुल दल जिन हने ।

जगमगत जाको जस अजौं सुर मुनि असुर जन गन भनै ॥ ४ ॥
तिनके भयो पुनि देवराउ प्रचंड रैया राउ है ।
रनरंग निरपत चट्त जाकै चौगुनो चित चाउ है ॥
पुनि भयो भैरव से उदंड-प्रचंड भैरव दासु है ।
हरि साहिवी अरिवरन को गिदरीन दीनो वासु है ॥ ५ ॥
तिनके धराध्रुव धरन कों नृप भयो ताराचंदु है ।
जिन करि अकंटक भुव हरयो सव प्रजनि को दुप दंदु है ॥
सग्राम राउ भयो वली सग्राम दूलहु ताहि के ।
अति धवल कवल समान जगजगि मगि रह्यो जसु जाहिके ॥ ६ ॥
पुनि कनर्कसिह नरिंद ग्रीपम भानु सो जिनके भयो ।
जिनको समर भट भीर सो छन भरि न तन अगयो गयो ॥
पुनि भयो पृथ्वीराज पृथ्वीराज पृथु कैसो कियो ।
जम जूह जिन जग में लियो वनवास वैरिन कों दियो ॥ ७ ॥
तिनके पुरंदर सो प्रवल प्रगटयो पुरदरराउ है ।
जिनकी महाभय मानि कै नृप किहि न परस्यो पाउ है ॥
करवाल जव कर लेहि तव रिपु काल कहि कहि कवि भनै ।
रन होइ सन्मुप सुभट को जमराजहू नहिं जो गनै ॥ ८ ॥
पुनि भयो अरि मदकदन मरदन सिह रैया राउ है ।
जिन पाइ पति वसुमति हिंएँ दिन दिन वढ्यो चित चाउ है ॥
कलिजुगन को पितु ह्वै रह्यो तिहि द्योस तें डरि डरन सों ।
तजि त्रासु वृप मन मुदित ह्वै फूल्यो फिरै चहुं चरन सों ॥ ९ ॥
जगवद आंन(?द) 'कद चद्र कुटुव को कैरव भयो ।
रणधीर वीर गभीर निरमल सुजस जिन जग में लयो ॥
जरिजात तासु प्रताप पावक तें घनी अरिवर अनी ।
तिनके भयो सुरनाथ सो रघुनाथ नृप वगिसर धनी ॥

॥ दोहा ॥

सभा मध्य वैठे हुते एक समै रघुनाथ ।
वीर धीर उदभट सुभट सुजन वधु लियें साथ ॥११॥
कह्यो कृपा करि "संभु" सों जिय मे मानि सनेहु ।
यह वेताल कथा हमै भाषा मे करि देहु ॥१२॥
नंद व्योम धृतिजांनि कै संवतसर "कविसंभु" ।
माघ अंध्यारी द्वैज कों कीन्हो तव आरंभु ॥१३॥
प्रथम वंस वर वस के वरनि कहे सव भूप ।
वोज पुंज गुनगननि सो सहास सील अनूप ॥१४॥
पचविस वेताल में कहत कथन को सारु ।
जाहि सुने तें चित्त मे होति चतुरता चारु ॥१५॥

अंत—सुन्यो नियाउ भूप सों जवै । सरक्यो मृतकु कांप ते तवै ॥
चलत पंथ मे लगी न वार । लग्यो दौरि कै वाहीं डार ॥

:o: :o: :o:

असन वसन दै रुचिर करि दैडारत कै पीस ।
पूजत औरहि छोंडि मनु देह गेह को ईस ॥
थिर संपति नहिं गेह की गृसे रहत तन मीत ।
जो न अवै सूप कीजिए मुएँ कौन को होत ॥

पूजत लोग प्रेम सों गाई । वाके पूतहि देत बराई ॥
हरगाडी कों अंचत जौन । जग मे पौरुष करत न कौन ॥
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—संस्कृत ग्रथ वैताल पच्चीसी का हिंदी पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

नंद व्योम धृति जांनिकै सवत्सर कवि सभु ।
माघ अंध्यारी द्वंज कों कीन्हो तव आरभु ॥१३॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अत से खडित है । कुल १०४ पत्ने उपलब्ध हैं जो आरभ से क्रम-पूर्वक हैं ।

सख्या ४०६. शिवस्तोत्र, रचयिता—शभूनाथ कागज—आधुनिक, पत्र—४३, आकार—७$\frac{7}{11}$ × ६$\frac{2}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२६ वि०, शकाब्द १७९१, प्राप्ति-स्थान—ददन सदन, पो०—अमेठी (इ० आइ० आर०), जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—शिवः श्री गणेशायनमः ॥

शिव केहि शरण गए नहि पाला ।
गने न शरणागत कर ऐंगुन सङ्कर दीनदयाला ।
परपुरुष सग रमित रैन दिन विन्दुग द्विज की वाला ॥
ताकँह सिव निज गनमह गनिकै सुनते राग रसाला ।
छिव छिव कहि प्रदोष व्रत धोखेहु रहि श्रीधर गोपाला ॥
गोपराज सिव कौन ताहि के पौत्र भए नंदलाला ।
जल विलपत्र रिसाइ वहाईं सोमनितिय सिव माला ॥
देवी रूप वनाइ सभु तेहि दै निज पद अहिमाला ।
"महारानी किसुनाथ" कुअरिको सुत दै करहु निहाला ॥
सरणागति जानि "सभुनाथ" को दीजै सुर रूप विसाला ॥ १ ॥

अत—प्रत्यगिरे ममगिर परिपालयै नोमनासि नाशय विभाशवचाशुकीर्तिम् ।
शीघ्रविधेहि किशुनाथ कुअर्य्यभोष्ट देहि स्वमाधव प्रतापनृपाय पुत्रम् ॥ ५ ॥

श्री सवत् १९२६ शाके १७९१ सन् १२७७ श्री रामः ।

विषय—शिव स्तुति की गई है ।

सख्या ४१०. सगीत दीपिका, रचयिता—शाशगधर (? शार्ङ्गधर), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—९ × ४$\frac{3}{16}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कुँवर लक्ष्मण प्रताप सिंह जी, ग्राम—साहीपुर नौलखा, पो०—हडिया, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—.........................

॥ कवित्त ॥

जटाधर गगाधर सीस शशिकला सोहै नीलकंठ त्रिणयन कीन्हे वर वेश को ।
कर्पूर गौर तन सेवै नंदी आदिगण मुंडमालाधरे अरु हार धरे शेश को ।

डमरु त्रिशूल कर शारग को देत वर ओढे जग त्वचा ताकी कैसे अस्तुति के सको ।
भशम लगाये हरि ध्यान धरो सुम्र करो "भैरव" सुरागी सुप देत देश देश को ॥ ५ ॥

॥ इति भैरव स्वरूपम् ॥

सुवरणगौरि सुंभ कुकुम लगाये अगप सग परिरम सोभा अधिकानी है ।
कमल लुभाय जाके कमल से हाथ पाय चद्रमुखी कमल नैनी जो मनोजराणी है ।
चिवुक उठाय पिय चुंवत है वार वार नारो नील शारी वोढि पहिचानि है ।
"भैरवी" प्रथम तिय पोडश शीगार किये पंसी मध्यमादि "द्विज सारग" वपानि है ॥ ६ ॥

॥ इति मध्यमादिस्वरूपम् ॥

:o: :o: :o:

अत— ॥ अथ चतुर्विधी ग्राहः ॥

ताल धरनु कहु ग्रह कही चारि भाति अहि जानु ।
सम अतीत सु अनागतौ विषम वउन्थोमानु ॥
ताल वरन एक सग जह कही समग्रहि सोइ ।
प्रथम ताल पुनि वरण सह सो अतीत ग्रह सोइ ॥
प्रथम वरन पुनि ताल जह गो अनगत ग्रह जानि ।
विषमग्रह कह ताल कछु वरणो "शारगपानि" ॥२०॥

॥ अथ शिनुपोत्पन्नास्ताला ॥

द्वै गुरु लघु प्लुत को मिले चचलपुट को ताल ।

इति पच पुटोष्टमा ।SS।

त्रिक भगन जुअ्य मिलि वाच पुट शुने प्रवीन भुआला ।।S।।S

॥ इति परामात्रिक स्त्राचपुटः ॥

प्लत लघु द्वै गुरु लघु जहा पुनि पुजित अत जो होइ ।
नाम ....

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

विधि हरि हर सर्स्वती भरतादिक रिषि मानि ।
गीत दीपिका ग्रथ एह कीन्हो "सारँग पाणि" ॥५१॥

विषय—राग रागिनी स्वरूप, मगीत के पाँच लक्षण और पचीस दोप तथा ताल आदि का वर्णन ।

ग्रथ प्रकाशो (अध्यायो) मे लिखा गया है । खडित होने के कारण प्राप्ताश मे दो ही अध्यायो की पुष्पिकाएँ रह गई हैं । पहले मे राग रागिनियो का स्वरूप और दूसरे मे सगीत के पाँच लक्षणो और पचीम दोपो का वर्णन है । तीमरा अध्याय सभवत ताल विपय पर था जो अपूर्ण रह गया है । इम रचना मे विधि, हर, हरि, मरस्वती और भरत ऋपि के मतो को आधार माना है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है । मख्या ४, ५, ७, ८, ९, १० और ११ के पन्ने उपलब्ध हैं ।

रचयिता का नाम अध्यायो की पुप्पिका के अनुमार सारगधर विदित हुआ है । भैरवी के स्वरूप वाले कवित्त मे नाम के माथ "द्विज" भी प्रयुक्त हुआ है, अत ये ब्राह्मण थे । पुष्पिका अश इम प्रकार है —

"इति श्री सारगधर विरचिताया मगीत दीपिकाया रागाध्याय शारोद्धारे राग रागरागिनी स्वरूप वर्णन द्वितीय प्रकाश ॥"

एक स्थान पर 'मारगपानि' नाम भी मिलता है —

दोहा

विधि हरि हर सरस्वती भरतादिक रिषि मानि।
गीत दीपिका ग्रथ एह कीन्हो 'सारग पाणि' ॥५१॥

सख्या ४११ भावशतक, रचयिता—शारगधर, कागज—कालपी का हाथ का ब
पत्र—८, आकार—१२¾ × ८½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२
पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—म० १९९९ वि० (न० १६७२ की लि
प्रति की नकल), प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेमलन, प्रयाग।

आदि—सारगधर रचित भाव शतक
॥६०॥ श्री गणपतये नम. ॥ भावशतक दूहा लिख्यते ॥

प्रश्न :—नायक आतुर कामवस वसन उघारत वाम।
मुग्धा मुख नत्रित कियो कहि सुजाण किहि काम ॥ १ ॥

अर्थ :—सुरत समर कारण इहा आयो आतुर कंत।
मनु मुग्धा बूझत कुचनि जद्धह काज वलवंत ॥ २ ॥

प्रश्न :—विरह निसाम उसास अति विमुख चइन नहिं धाम।
चातक मनि आनंद तव कहि सुजाण किहि काम ॥ ३ ॥

अर्थ :—उरध अधिक उसास चढि भई धूम आकार।
चातक जिय जान्यो सजल आए जलद अपार ॥ ४ ॥

प्रश्न :—शिशि किसोर समरहि कहा कहा तरुण तन ऐंन।
यह बूझौं सोचहु कहा वेगि कहउ किनि वेंन ॥ ५ ॥

अर्थ :—शिशि किसोर पायन समर तरुण भये तन ऐन।
यहे परख्या जानिये तहाँ तहाँ चल ऐंन ॥ ६ ॥

मध्य—

प्रश्न :—जुग उरोज उन्नत भए मदनराई के राज।
नेणनि लोनी वक्रता कहि सुजान किहि काज ॥६६॥

अर्थ :—उच्च भए कुच जुग जवे भए वक्र स्यो नेंन।
मन मेले काजर भरे तेन सहे पर वेन ॥६७॥

प्रश्न :—वामे कर कोवण गहि दछिन सर संधान।
वाण श्रवण रेकत भए कारण कौन सुजान ॥६८॥

अर्थ :—कानहि छूडत वाण रावण के दस सौंह सहे।
दीजइ सीख सुजान एकहि हनो कि दस हनो ॥६९॥

:o: :o: :o:

अंत—

प्रश्न :—तव समीपि रसनायकर नित प्रति पिय सुख पाइ।
पुलकति वढत उरोज अति कहि सुजान किहि भाइ ॥२२॥

अर्थ :—पिय तियके हियरे विषै ज्यो ज्यो कीयो प्रवेश।
आसन तजि वाहिरि भए निरखि नैन वरवेस ॥२३॥

प्रश्न :—होइ अजान सुजान सुनि रीझै राज समाज।
सारंगधर सुनिभावशत भनहि खिलावत काज ॥२४॥

अर्थ :—जाकउ मनरथ तें विरस सरस करण की आस।
सारगधर ता तोष कौ विरचित विविध विलास ॥२५॥
दुख गंजन रंजन हृदय भंजन नित चित ताप।
सारंगधर सुनि भावशत विधि विचारनु आप ॥२६॥

इति भाव सतक दूहा समाप्त। सवत् १६७२ श्रावण वदि १ पं० मोहनेनले

विषय—प्रश्नोत्तर के रूप में शृंगार भावात्मक दोहों का संग्रह।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नहीं है। प्रस्तुत प्रति संवत् १९७२ में लिखी प्रति से श्री अगरचंद नाहटा द्वारा की गई नकल है। इसलिये इसका लिपिकाल वर्तमान काल ही समझना चाहिए। प्रेमविलास—प्रेमलता कथा के आधार पर यह संवत् १९९९ के इधर उधर नकल हुई है।

संख्या ४१२ उरवसी नाममाला या उर्वशी माला, रचयिता—शिरोमणि, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—७$\frac{9}{10}$ × ४$\frac{6}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४९, प्राप्तिस्थान—रामनिधि शुक्ल, ग्राम—लोहरपछिम, पोस्ट—बघुवा कलाँ, जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि—........................

॥ कवित्त ॥

नैननि मे खंजन की देषियैं चपलता सी भोहनि मे धनुष डिढाई सी वसति है।
दंतनि मे हीरनि की सेतता सी सेतता है अधरनि विद्रुम ललाई सी लसति है।
कंचन सो सोहनो सरीर वलवीर वाको वेंनी वाकी नागिनी सी लोगनि डसति है।
सूरत निहारि चलि देषियैं मुरारि जाके देषे और देषन की भावना नसति है॥ ७॥

॥ अथ लुप्तोपमा ॥

उपमेय उपमाधरम वाचक है जहाँ पाठ।
इक विन द्वै विनु त्रिविनु सौ लुप्तोपम विधि आठ॥ ८॥

॥ अथ लुप्तोपमा उदाहरण ॥

चप झप रमि विधि रूप वदन धुनि सिततीर दृग कीरु।
अरुन विंव सित कुंद से डसत सि जुत लषि भीरु॥ ९॥

:o: :o: :o:

॥ अन्योक्ति ॥

अन्योकति अरु काक है अरु प्रति जु है सजाति।
अवतें तुहि नहि लाइयैं मुहि सषि कहि मुसिकाति॥ ३॥

॥ वार्ता ॥

अप्रस्तुत प्रसंसा अर अन्योक्ति ग्रंथनि के मत एक ही है तहां इतनौं भेद विजातीय प्रति बहैं तहां अप्रस्तुत प्रसंसा को जानियैं जैसे धन्य विहंगनिमें सतमि इंद्र न जाचत अन्य और जैसें कवि प्रसंसा मे रहि कीर करोर कहाक॥

:o: :o: :o:

॥ वीतरीतालंकार ॥

साधन वाधक सिध कौति विवरीत सरसाँहि।
पठई मे पर दूतियह चूक सु वारीमाँही॥२०९॥

॥ सुसिद्धांत लंकार ॥

सुमिधसाध....................................

अंत— ॥ नाममाला ॥

......दीश॥ विधु 'उपेंद्र' पुरुषोत्तम' सु "हृषिकेश" अरु शीश॥१०२॥
नारायण केशव पदमनाभ शौरि गोविंद।
स्वभू - अधोक्षज चतुर्भुज असुरशत्रु व्रजचंद॥१०३॥

सासुदेव अरु देवकी नंदन माधव नाम ।
कंस निपूदन गरुणध्वज पीतावर जगधाम ॥१४॥

:o: :o: :o:

॥ कल्याण नाम ॥

मंगल कुशल कल्याण शुभ भद्र श्रेय शिव छेम ।
श्वस्तेयस भावुक भविक भव्य जहाँ जगपेम ॥२५०॥
वक्ता सुरगुरु सौ हुतौ श्रोता हो सुरराज ।
तऊ शब्द पार न लह्यौ कहा और को काज ॥२५१॥

इति श्री शिरोमणि विरचिता उरवसी नाममाला संपूर्ण शुभ ॥ लिपिकृत ग्रासानद कान्यकुब्जेन अर्गलपुरे जजनीस्थाने स० १८४६ माघ शुदि १ ।

विषय—अलकार और कोश विषयो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खडित है । केवल १५ पत्रे उपलब्ध है । इसमे दो रचनाएँ, है 'अलकार' और 'कोश' । कोश के अत मे रचयिता का नाम शिरोमणि दिया है और कोश का नाम 'उरवसी नाममाला' । जिन पत्रो मे अलकारो का वर्णन है उनके कोनो मे "उ० ना०" लिखा है और जिनमे कोश का विषय है उनमे "ना० मा०" लिखा है । अत पता चलता है कि दोनो रचनाएँ एक ही रचयिता की है ।

सख्या ४१३. राधाकृष्ण, रचयिता—ठाकुर शिवटहल सिह, कागज—देशी, पत्र—७७, आकार—७ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२१, अपूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर देवी चरन सिह, ग्राम–बहरीपुर, पो० जफराबाद (जौनपुर) ।

आदि—.......................... ।

मन मन भयो हर्ष अति भारी तोहि मुक्ता बहु देहि मुरारि ॥
निजकर त्वहि भूषण सजवइहैं हम सब दर्शन करि सुख पइहैं ।
किंतु सखी यक अचरज भारी मोहि लखि दृग फेरे वनवारी ॥
हरि को नहि देख्यो सोभावा मोतन लखि पुनि नयन फिरावा ॥
पीछे समाचार सब पायो सुबलहि हरि तव निकट पठायो ॥
मोती एक चरचौ तव ठाईं तुम नहीन मोती तेहि राई ॥
अरु तेहि को उपहाँस कराई करि निराश तेहि होन फिराई ॥
तेहि अभिमान श्याम मन कीन्हा जशुमति पह मोती यक लीन्हा ॥
जमुना तीर किये तेहि रोपण तुरत भयो तेहि मुक्त लतावन ॥
जमुना तीर किये तेहि रोपण तुरत भयो तेहि मुक्त लतावन ॥
द्रुतहि फूल फल लाग्यो ताही कोटिन झरत परत महि माहीं ।
तेहि लै गौवन साज करायो सुनि प्यारी मन विस्मय पायो ॥

॥ दोहा ॥

ह्वै अवाक मुख वचन नहि मनही मन पछिताय ॥
कहत सखी अब मोहि पर निष्ठुर भयो कन्हाय ॥

॥ सोरठा ॥

हाय बुद्धि भ्रम मोर सुबलहि मै वैमुख कियो ॥
प्रीति दियो हरि तोरि ताते नहि कछु त्वहि कह्यो ॥

अंत—— ॥ चौपाई ॥

गर्ग वंश विख्यात जहाना जेहि जन्म्यो सुमत मतिमाना ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

राज सिंहासन पर जबहिं बैठेव श्रीरघुनाथ ।
तासु तनय मन्त्री कियो धरि सुमन्त को हाथ ॥

॥ सोरठा ॥

तेहि वंशज म्वहि जानि नाम शिवटहल सिंह मम ।
हरि यश कह्यो बखानि बुधजन के आनंद हित ॥
आजु कालि सब लोग साधू सिंह कहैं मोहिं ।
विष्णु प्रसाद सिंह शुचि साधू भागीरथ सिंह बुद्धि अगाधू ॥
हरि के परम भक्त दोऊ जन ।
ब्रह्मचर्य व्रत रत अति सज्जन ॥
हमरे परम सखा हितकारी । हरिगाथा दुहुँ अधिक पियारी ॥
मुक्तलता बलिवंग भाष्यमहँ देखि उभय दिखरायो हम यहँ ॥

:o: :o: :o:

यहि विधि सब देवन शिरनाई बग भाष्य निज भाष्य बनाई

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

अब यह पूर्ण कथा भई यथा बुद्धि अनुसार ॥
पंडित जन बुध जनन सो करत यही मनुहार ॥ १ ॥

विषय——राधाकृष्ण चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ अपूर्ण है । केवल मनहत्तर पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं ।

संख्या ४१४. दशकुमार चरित, रचयिता——शिवदत्त त्रिपाठी, कागज——देशी, पत्र——१७, आकार——११$\frac{1}{1}\frac{5}{6}$ × ५$\frac{6}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१०, परिमाण (अनुष्टुप्)——४२, अपूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——कुँवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम-साहिपुर (नौलखा), पो० हडिया खास, जिला–इलाहाबाद ।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥

॥ सवैया ॥

सुद्ध दयाकर के छवि देह सुपुस्तक कौन विराजत पानी ।
वाहन हंस लसे अवतंस सुपावन कीरति वेद बखानी ।
सेत सरोज के आसन पै बसि लोक के सोक सरोज हिमानी ।
सानि सनेह हिये "सिवदत्त" के बानी जु आइ बसै द्रिढ बानी ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

धरनी चक्र समस्त मे वनवधदेस अनूप ।
नीति रीति जुत भीतिविनु विविध वसै तह भूप ॥
वनवधहू मैं अति सुभग सोभित वेलपर देस ।
बसत लोक विनुसोक तंह धनते तुलित धनेस ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

तापति सुरपति के सरिस अद्भुत वीर चरित्र ।
मित्रजीत भूपति भये निजकुल सरसिज मित्र ॥
जगत प्रससा होत जेहि वंस विदित चौहान ।
वछ गोतो विख्यात महि उद्भट उदित कृपान ॥
धीर सिंह ताके तनै भये प्रवल रणधीर ।
को नर सकै सराहि तेहि जैसी मति गभीर ॥

:o: .o: :o:

नीतिरीति वस करि सवै उद्यत धीर नरेस ।
पटीपुर नृपपुर कियो मध्य सवल निजदेस ॥१०॥

:o: :o: :o.

धीरसिंह के सुत भये समरसिंह छितिपाल ।
नृपगुण रचि विरचि वहु लिपे भाग्य जेहि भाल ॥

:o: .o: :o.

श्री समरेस नरेस के दो सुत भे अभिराम ।
अमरसिंह जवरेस यों धरे जथारथनाम ॥१७॥
सो "जवरेस" महीपमनि मगलमय सवकाल ।
राजत राजसमाज मैं भूरिभाग्य भरिभाल ॥

:o: :o: .o:

वार वार "सिवदत्त द्विज" इमि करि वुद्धि विचार ।
तेहि विनोद कारन रच्यौ भाषा दसो कुमार ॥ ३ ॥

अंत—— ॥ दोहा ॥

सोमदत्त प्रिय दास लहि परिहरि चितातःप ।
करमुकलित करि कहत निज सविनय चित कलाप ।

इति सिवदत्त त्रिपाठी कृते दसकुमार चरिते द्विजोपकारको नाम द्वितीय उछ्वास. ॥

:o. :o: ·o:

रच्छत इन्हे अनेक उपाई । अटत भूमि देसहि यह आई ॥
इन्है भीष भोजननि......... ....

:o: :o: :o·

——अपूर्ण

विषय——सस्कृत ग्रथ दशकुमार चरित का हिंदी अनुवाद ।

संख्या ४१५. देवी चरित्र (अनुमानत), रचयिता——शिवदास, (स्थान—राजपूताना), कागज——देशी, पत्र——१६, आकार——६$\frac{1}{4}$ × ५$\frac{1}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१२, परिमाण (अनुष्टुप्)——१५४, खडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्ति स्थान——नागरी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रथ दाता——कृष्णसेवक मिश्र, ग्राम—सहनूटोह, पो०—वरदह, जिला—आजमगढ) ।

आदि——.... ....

वली दैत्य वहू धर्ण्यः अवतार धरता ॥३६॥
तेवसर्व कहूं कथा मांडी वात । "शिवदास" ने सदा. सुप आयो मात ॥३७॥
॥ कडवां ॥ ७ ॥ पद ॥ १६४ ॥
॥ राग पूर्व छाह्या ॥
कश्यप कुलावली ऊपना. दैत्य अदीतीने पेद्य ॥
शुभ निशंभ ब्येहू अवतरघा प्राक्रमे पूरानेत्य ॥ १ ॥

तेणें तपकरी ब्रह्मा वश्य करचा विषम ग्रह्यूं वरदानं ।
सुर नर कोथी नव्य मरूं निरभें हूं राजान ।। २ ।।
एह धो वर आयो ब्रह्मा गया. पाया बल वाध्यूं घंणुं ।
श्री रांम जन शिवदास कहें कहूं प्राक्रम येते हतणूं ।। ३ ।।

अत— ।। राग धवल धन्याशी ।।
मारकंडे रुष्य वांणी ऐम वोल्याः । शाभल्य जंमुन्य वात जी ।
शुभराय एह वूं शाभलता क्रोध्यें चढचो उतपात जी ।। १ ।।
न्यारे रक्तवीज नें आयी आज्ञाः सैन्य चढो अब आज जी ।
कोण शक्ति रडाए आवाः । युध करवानि काज जी ।। २ ।।
पछें छासटच कोटि राक्षस मोटा येतणो नहीं पार जी ।
गज रथ अश्व सकल साथ्यें राय चढचो तेणी वार जी ।। ३ ।।
:o: :o: :o:
फोकट प्राण तजो का पापीः कें हें ज्यो आणी गर्व जी ।
वचन न मानें जो प्रभुता हारु तो पछें मारु सर्व जी ।।१०।।
एह वूं शाभली रुद्र जी गयारेः

विषय—देवी चरित्र वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख अपूर्ण है । आरभ मे पत्र सख्या ३० और अत मे पत्र सख्या ५२ है । इनके नीचे के सख्या ३७।३८।४८।४५ के पत्रे नहीं है । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या ४१६. दिग्विजै चपू, रचयिता—शिवदास गदाधर, स्थान—ग्राम–समोगरा, वलरामपुर रियासत, अवध, कागज—देशी, पत्र—८२, आकार—६$\frac{1}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६१० वि०, सन् १२६१ फसली, लिपिकाल—सन् १२६३ फसली, प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीदेव जी द्विवेदी, मोहल्ला–अलीनगर, गोरखपुर, जिला–गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाये नमः ।। अथ सूची पत्र दिगविजै चपू शिवदास गदाधर कृत लिप्यते ।।
।। दोहा ।।
वक्र तुंड गणनाथ के मंगल चरन वषानि ।
कारन ग्रथारभ को तव वरने सुष पानि ।। १ ।।
वुल वुलिने जो वचन कहि तासु वेवरा वात ।
उत्तर ताको तासु सो पुनि उत्तर सुषदात ।। २ ।।
करता ग्रंथ को आगमन भूप दिगविजै पास ।
विजलेस्वरि रोगावती वरने तेज प्रकास ।। ३ ।।
:o: :o: :o:

श्री गणेशाये नमः ।। श्री गुर चरन कमल्येभ्यो नमः ।। श्री सरस्वत्ये नमः ।। अथ द्विगविजै चम्पू लिप्यते ।।
गजमुष मुष तें कहत ही दुष रिपु मुष मुरि जात ।
सकल सुष्य मंगल महा देत गौरिसुत तात ।।१४१।।
भक्ति भाव चित सुध्य तें निस दिन रटें गनेस ।
वाक्य वादनो ताही को छण मंह करत सुरेस ।।१४२।।

उमा उमापति हुं सदा रह तापें अनुकूल ।
विद्याधन निरमल सुजस देत नित्य सुषमूल ॥१४३॥
:o: :o: :o.

निरषि वाटिका अजर सुभ चावुक सब्द चकोर ।
लग्यो तरारे फिरि भरन अस्व लेषनी मोर ॥१४६॥
कली तुल्य मुष वंद है सिसिरक देषो तात ।
यह वसत सुभ समै लषि विगसत कली प्रभात ॥
मंद गंध मकरंद जुत चलत पौन सुभ भोर ।
चहचहात चात्रिक विपुल हरषित रहत चकोर ॥१४८॥
गुंजत मधुकर मद भरे गान करत सारंग ।
महकत लहकत द्रुमलता विगसित सुमन सुरग ॥१४६॥
हरित वसंती वसन को पहिरो विछनि अग ।
पुष्प हसत लषि डार छवि मुरछित होत अनंग ॥१५०॥

॥ दोहा ॥

चल्यो वाटिका त्यागि कै भूपनगर विलगान ।
विमल देस रचना विविधि कहु लौ कहैं वषान ॥१७१॥
नग्र निकट पूरव दिसा येक कोस प्रधान ।
परम स्वातिको अम्यका राजत अति अभिराम ॥१७२॥

॥ छंद ॥

सुभ ज्वलित ललित ललाम । विजलेस्वरी जां नाम ।
त्रिकोंड मैं है कुंड । पूजत असुर सुर झुंड ॥
नित देत है वरदान । वरदेव वाको वान ॥
अति सुंदरी मुसकात । है स्वछ निरमल गात ॥
तन वसन सत सोहाय । गलमाल मणि छवि छाय ॥
:o: :o: :o:

भूपप्रश्ण

॥ दोहा ॥

कोहै तू केहि देस को का जांचत का काम ।
मागि लेहु जोहोय रुचि अरु कहु अपनो नाम ॥२४६॥
:o: :o: :o:

॥ अथ ग्रंथ करता को उत्तर ॥

॥ सोरठा ॥

सुधामई सुनि वैन भरि आये जल नैन सें ।
कहें विना नहिं चैन दोहुं दिस को विरतांत सव ॥२४८॥

॥ दोहा ॥

पावागढ़ गुजरात सें आयो नृप जनवार ।
सुभट वीर वरिबंड वहु संघ मे सैन अपार ॥
सूबा अवध को जेर करि छीनि मुल्क सब लीन ।
तामह यह बलिरामपुर सुभग थलो निजु कीन ॥
:o: :o: :o:

तातें अब संछेप करि कहत हों सुनिये राज ।
नौ पीढी के वादि भे नेवलसिंह महराज ।।
:o: :o: :o
ता नृप के जुग तनै भै सिंह बहादुर वीर ।
अर्जुन सिंघ भे सिंह सम धीर वीर गम्भीर ।।२५७।।
ता अर्जुन भूपाल के भये उग्र द्वै वंस ।
जै नारायन प्रथम भे हस वस अवतंस ।।२५८।।
दूजो सुत है आप प्रभु विदित तेज गुणधाम ।
पसु पछी सुर असुर नर गावत जाको नाम ।।

।। चौपाई ।।

नेवलसिंह परमपिता तुम्हारे । ता समीप पितु आय हमारे ।।
दीन कुलीन जानि विद्वाना । रामदीन अस नाम बषाना ।।
:o: :o: :o:
रामदीन को निज जन जानी । सौंपे पुनह सकल रजधानी ।।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

धर्मपुत्र महाराज को ताको सुत मै तात ।
नाम गदाधर दास शिव प्रगट जगत विख्यात ।।२७६।।
:o: :o: :o:

अंत—ग्रंथ के पूर्णता की तिथि

० १ ९ १
नभ इंदु ग्रह चंद है सम्वत सुभ व्रतमान ।
५ ७ ७ १
वान दीप रिषि व्रह्म मो साका सुभग सुजान ।।१६६६।।
कार्तिक सुदि दसमी तिथी पूर्व भाद्र गुरवार ।
१ ६ २ १
इंदु रस पछ चद सन जोग है हरषण सार ।।१६६७।।
महा जोति शिवलिग जहं नाम समग्र नाथ ।
गाम समोगरा मे भयो पूर्ण ग्रथ सुभगाथ ।।

।। छंद ।।

नाम है यहि ग्रथ को दिगविजै चपू सुध्ध ।
भोग जोग समाधि को है पानि उत्तम वुध्ध ।।
जो वाचि कै अभ्याम विध सो करैगो नर कोय ।
सो मनुस तन मा भोग वहु करि अत मे सुर होय ।।

।। दोहा ।।

गणपति कृपा तें ग्रथ यह भन्यो गदाधर दास ।
चपू नृप दिगविजै को पूरन भो सुपरास ।।

इतिश्री मन्ममहाराजाधिराज दिगविजै सिंह सरवार पति विरचितायां पूर्णाभिसेसी गदाधर शिवदास कृते कलि समर्ग दोपादि प्राश्चित मामान्य नित पूजा महिषमर्दनी तंत्रे अष्टमोषड समाप्तोयंग्रंथः ।। मंगलंददातु ।। सम्वत् १९१० साके १७७५ ।। कार्तिक सुक्ल पक्ष दसम्या

तिथी ॥१०॥ गुरु वासर पूर्व भाद्र नछत्रे हुरखण जोगे ॥ सन १२६१ ॥ साल फसली सुभ प्रस्थान मुकाम समोगरा ॥ दसपत वंजनाथ कायस्थ के वसिंदे प्रगने ॥

॥ दोहा ॥

रामपुरा बलिरामपुर तालुक वधिनी धाम ।
ठौर समोगरा मे लिख्यौ वैजनाथ जा नाम ॥ १ ॥

मिति माघ वदि ६ सन १२६३ सार फ० ॥

१. प्रथम खड—राजकाज, माया, जग, प्रपचादिक भेद वर्णन पत्र १–२६ तक
२ द्वितीय खड—उपदेश, दीक्षा निर्णय आदि वर्णन पत्र २६–३३ तक
३ तृतीय खड—गधर्वतत्रे जोग ध्यान वर्णन पत्र ३३–३७ तक
४. चतुर्थ खड—प्रात कीर्तन तथा आसन भेद पत्र ३७–४४ तक
५ पचम खड—माला विधान पत्र ४४–४६ तक
६ षष्ठ खड—जप विधान वर्णन पत्र ४६–५७ तक
७ सप्तम खड—नाम स्मरण पूजादि फल पत्र ५७–७० तक
८ अष्टम खड—कलि ससर्ग दोषादि फल वर्णन पत्र ७०–८२ तक

कथा का साराश इसप्रकार है —

पावागढ, गुजरात से नृप जनवार ने अवध प्रात मे आकर बलरामपुर रियासत पर अधिकार किया। उनके नौ पीढी पश्चात् नवल सिह राजा हुए जिनके बहादुर सिह और अर्जुन सिह दो पुत्र थे। अर्जुन सिंह के भी दो सताने थी जिनके नाम क्रमश जै नारायन और दिग्विजय सिह थे। बहादुर सिंह के पश्चात् अर्जुन सिह राजा हुआ और उनके परलोकगत होने पर जै नारायन गद्दी पर बैठे। ये राजा राजनीति पटु न थे, अत थोडे ही दिनो मे राज्य पर शत्रुओ का अधिकार हो गया। जै नारायन की मृत्यु हो गई और दिग्विजय सिह जो बहुत ही छोटा था उत्तराधिकारी के रूप मे रह गया। रामदीन नाम के एक विद्वान् नवल सिह महाराज के मत्री थे। जैनारायन के राज्यकाल मे वे भिनगा नरेश (विसेन वशी) के यहाँ चले गए। उनके पुत्र गदाधर शिवदास थे जो उन्ही के सदृश बडे विद्वान् और सहृदय राजनीतिज्ञ थे। अबोध बालक राजकुमार दिग्विजय सिह ने इन्ही से सहायता माँगी। इन्होंने अपनी राजनीति प्रतिभा का ऐसा चमत्कार दिखाया कि थोडे ही समय मे शत्रुओ को परास्त कर राजकुमार को राजसिहासनारूढ कर दिया। यद्यपि दिग्विजय सिह निष्कटक राज्य करने लगे, पर कुचक्रियो ने गदाधर शिवदास का पिंड नही छोडा। अवध के नवाब का प्रभुत्व था, अत वहाँ उनके विरुद्ध षड्यत्र रचे गए। नैपाल की ओर भी सीमा पर इन्हें लोहा लेना पडा। इन सबका फल यह हुआ कि दो वर्ष तो इन्हें बधन मे रहना पडा और उसके बाद बहुत वर्षो तक बलरामपुर से बाहर ही बिताना पडा। इस बीच इनकी बुद्धिमत्ता का सर्वोत्तम परिचय इस प्रकार मिलता है कि इन्होंने गोंडा के राजा और वही के रामदत्त नामक ब्राह्मण विद्वान् के बीच की शत्रुता मिटाकर उनमे मैत्री करा दी। राजा उक्त ब्राह्मण के रक्त का प्यासा हो गया था। यह घटना अत्यत करुणोत्पादक है। अत मे इनकी प्रेरणा से ब्राह्मण को स्वतत्र राज्य मिला जो अभी तक चल रहा है। पश्चात् बलरामपुर वापस जाने की घटना काव्योपयुक्त ढग से वर्णन की गई है। वह अत्यत सरस, रोचक और मनोरजक है।

एक दिन वाटिका मे बैठे बैठे वसत निरीक्षण करते हुए एक बुलबुल (पक्षी) द्वारा उन्हें कल्पित प्रेरणा मिली कि वे बलरामपुर के महाराज दिग्विजय सिह के पास जायें। फिर क्या था, वे बलरामपुर की ओर चल पडे। बिना पूछे ही दरबार मे जा पहुँचे। दुर्भाग्यवश राजा इन्हें भूल चुके थे, अत इन्हें अपना फिर से परिचय देना पडा। परतु राजा को पूर्ण सतोष नही हुआ। इस पर इन्हें बडा खेद हुआ और राजा की ओर से विरक्ति उत्पन्न हुई। इनके मुँह से कुछ मार्मिक

शव्द निकल पड़े और हताश होकर घर जाने के लिये राजा से विदा माँगने लगे । यह देखकर राजा से न रहा गया और उन्होंने क्षमा माँगकर अपने पुराने मित्र का समाधान किया । इसी सुअवसर पर राजा ने इनसे ऐसा ग्रथ रचने को कहा जो उनके यश को ससार मे युग युग तक स्थिर रख सके । अत इसी अभिप्राय से प्रस्तुत ग्रथ की रचना हुई । उपर्युक्त वर्णन के पश्चात् ग्रथ मे देव्यागमो के आधार पर उपदेश, दीक्षा, निर्णय, योग, ध्यान, आसन, जप-तप नियम, उपनियम, माला, नाम-स्मरण, पूजादि फल और कलि ससर्ग दोपो का वर्णन किया गया है। पुष्टि और प्रमाणो के लिये शैवागमो तथा वैदिक ग्रथो से उद्धरण भी दिए गए हैं ।

रचनाकाल

० १ ६ १
नभ इंदु ग्रह चंदु है संम्वत सुभ ग्रतमान ।
५ ७ ७ १
बान दीप रिषि ब्रह्म भो साका सुभग सुजान ।।
कार्तिक सुदि दसमी तिथी पूर्वभाद गुरवार ।
१ ६ २ १
इंदु रस पछ चंद सन जोग है हरषरा सार ।।१६७६।।

संख्या ४१७क. कुडलिया, रचयिता—शिववक्स सिंह (स्थान—समोगरा, पो०—नैनी, जिला—इलाहावाद), कागज—देशी, पत्र—७०, आकार—१० × ६¾ इच, पक्ति (प्रति-पृष्ठ)—१४, परिमारण (अनुष्टुप्)—७३५, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०३, प्राप्ति स्थान—ठा० रघुनाथ सिंह अतुर ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, डाकघर—नैनी, जिला—इलाहावाद ।

आदि—।। कुंडलिया ।।

राधा राधारमन के सुषदायक संवाद ।
वीच जानि अनुराग के ऊधो हरत विषाद ।
ऊधो हरत विषाद जाइ इत उत समुझावत ।
तजि अनभाव की रीति विनै करि प्रीति वढावत ।
विछुरत दुष सुष मिलत सुनत छूटत भव वाधा ।
नरपर भ्रमते जाँनु जाहि पिअ हरि राधा ।। १ ।।

आवत कुंजन ते चले हरि राधा एक साथ ।
घन दामिनि जनु तन परे गहैं हाथ ते हाथ ।
गहैं हाथ तें हाथ चलत ठमकत हरषाहि ।
को उपमा कहि सकै सेस सारद सकुचाईं ।
कर मुरली उर माल मुकुट कुंडल छवि छावत ।
ते समान को आन ध्यान जेहि के उर आवत ।। २ ।।

जाके नाम अधार विधि प्रगट कीन संसार ।
जासु नाम वर नाव चढि नर पावहि भवपार ।।
नर पावहि भवपार जाहि बल महि सहसानन ।
धरे सीस पर भार सहित गिरि सागर कानन ।।
सो गोकुल अवतरे भेद को जानत ताके ।
नमो नमो ते देव चरित गावत श्रुति जाके ।। ३ ।।

अंत—

छूटत दारुन मूढता उर आनत हरि ध्यान।
कुमति मिटै जागै सुमति प्रगट होत परग्यान॥
प्रगट होत परग्यान नेति रसमारग सूझै।
पर......पदेस लइ आलोगति बूझै।
......नर कहत सुनत किलविष.....
मन अस्थिर होइ जाइ प्रवल...धन छूटत॥२५२॥

इति कुंडलिया छद सिवबकस सिंघ सोम वसी विरचिते सर्वसुष मगल उपदेसदायेक॥...

:o: :o: :o:

पडित जन सो विनती मोरि टूट अछर लेव सव जोरि।

सवत १९०३ के साल मीती माघ सुदि ७ रोज सनीचर लीषा जुड़ावन काएस्थ।

विषय—शृगार, उपदेश, भक्ति, नीति आदि विषयो पर कुडलियाँ रची गई हैं।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आदि, मध्य और अत के कितने ही पन्ने नष्ट हो गए हैं। रचनाकाल का पता नही, लिपिकाल सवत् १९०३ है।

रचयिता का नाम शिववक्स सिंह है। ये ग्रथस्वामियो के पुरखे थे, देखिए "राधे हरी मिलन सतसई" का विवरण पत्र।

सख्या ४१७ख. राधे हरिमिलन सतसई, रचयिता—शिववक्स सिंह सोमवसी, (स्थान—समोगरा, डाकघर—नैनी, जिला—इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—$8\frac{1}{2}\frac{3}{6}$ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १८८०, लिपिकाल—सवत् १८८०, प्राप्ति-स्थान—ठा० रघुनाथ सिंह और ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, डाकघर—नैनी, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेसयानम्हः॥

॥ दोहा॥

एक रदन कुजर वदन जेंहि सुमिरे सोधि होइ।
वूधि जलाधिप सुभ मदन करहु अनुग्रह सोइ॥१॥
वदौं गुरपद कमल रज धरि सीर वारहि वार।
जेंहि सुमिरत भय सींधु ते वीनु स्रम होइ उबार॥२॥
सो रज द्रीग अंजन कीए सूझि परै सव कोइ।
कीए तीलक सी रेनुका गुन समूह वसि होइ॥३॥
मोह तमा कँह अछै रवि भवसागर जलजान।
हरन मदादि वेकार सव दाएक पद नीर्वान॥४॥
वीमल वीलोचन हिंदै कै उघरत जागै ग्यान।
वडी भाग ते उर बसहि सो रज अमी समान॥५॥

अत— राधेवाचाः

नेति धार्म गुनग्यान गत छुए न लाज सकोच।
लंपट करतब देषी कै सषि मेरे मन सोच॥६३॥

॥ अथ वेसा वाचाः॥

सोचन जोग न क्रीस्न जी सुनु राधे गुन धाम।
सोचीव जेते नरन को ताको सुनु अब नाम॥६४॥

सोची भूसुर ग्यान गत नीगम कार्य ते हीन ।
जो नीज धार्म ही छाडि कै होत वीषै तव लीन ॥६५॥
नेति हीन नर ईसहु प्रजा प्रन सम नाहि ।
पति वंचक आंगना तेहि सोची मन माहि ॥६६॥
:o: :o: :o:
हरि राधिका प्रसाद जुत ग्रंथन के मत आंनि ।
फल के दायक सतसइ कहु "सिववकस" वषानि ॥१८२॥
चारिहुँ दिसि फल चारि है सबको प्रगट देषात ।
विनु प्रयास नर पाँइँही जो कहि सुनि हरषात ॥१८३॥
कँहैं सुनै सादर सदाँ ते न परैं भवजाल ।
रहैं ताहि पर दंहिनो राधे सहित गोपाल ॥१८४॥
सन अठारह सै असी भादौं सुक्ल वषानि ।
नंदा तिथि भ्रिगु नंदने भे पोस्तक सुषषानि ॥१८५॥

इति श्री राधे हरि मिलन वार्नंनो सतसइ उत्तर प्राकार्न संपूरनं सीउवकस सोमवंसी विरंचितयं सुभ मस्तु सिधि रस्तु संवत् १७८८० भादौ सुदि १ सुक्रवार ।

विषय—श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने और फिर वापस न आने पर राधा को वडा दुख होता है । वह श्रीकृष्ण को धूर्त, लपट और पाखडी समझती है । सखियाँ राधा को सान्त्वना देती है और श्रीकृष्ण को निर्दोष वतलाती है । अत मे राधा कृष्ण का मिलन होता है ।

रचनाकाल

सन अठारह सै असी भादौ सुक्ल वषानि ।
नंदा तिथि भ्रिगु नंदने भें पोस्तक सुषषानि ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है । सख्या ५, ७, १८, २२ और २३ के पत्ते नहीं हैं । रचनाकाल सवत् १८८० है । दोहे मे सन् है, पर पुष्पिका मे सवत् लिखा है ।

सख्या ४१८. भक्ति जयमाल, रचयिता—शिवराम कायस्थ, निवासस्थान—कारो (वलिया), कागज—देशी, पत्र—२४३, आकार—१२½ × ८½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०३३, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८७, मुशी हरप्रसाद लाल, ग्राम व पोस्ट–कारो, जिला–वलिया ।

आदि—पोथी भक्ति जैमाल गोसाइँ सीवाराम कृत लीखते ।

श्री गणेशाय नमः ॥ श्लोक—पाथोज नील छवि शुभ्र प्रभा सरीरं वक्रेंदुपूर्ण भ्रोकुटी धनुकाम भाँती ॥

अयौखीहनी गयानी सरासनाए तूनीरललित इछ करणे राम ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गनपति गौरी शारदा राधा रमा समेत ।
शीव विधि हरि रवि नाम जुत शीवा चरन रज लेत ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

शीवदआल दाआ करचौ भएउ वुधि परगाश ।
तिनि वरन प्र जन्म भौ हरिजन शीवादास ॥
गुरु उत्तम दीज साधु शुचि लीन्ह हरिनाम सुनाउ ॥
शाधु शंग परताप ते राम प्रेम उर छाउ ॥

॥ चौपाई ॥

शारद कीन्ह क्रीपा जव जेही ॥ तव हरी जन भाखा जन तेहीं ॥
सम्वत सत्रह सै सत्तासी ॥ माघ मासि तेरमि शुभ राशी ॥
क्रीशन पच्छ शुभ वासर चदा ॥ सीधि जोग वृप लग्न ग्रनदा ॥
तेही दिन कथा जन्म कवि कीन्हा ॥ माश पच्छ तिथि दिन कही दीन्हा ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

हरि चरित्र जस भाखा कलिमह सुक्रित नाव ।
विनु प्रयास भव निधि तरं सुजन जन पाव ॥

ग्रंत— ॥ दोहा ॥

पांच कोटी दानव वली परम भुम्रावन भेख ।
कलकी ठाकुर करीहे ताही मारी ग्रवशेप ॥

॥ चौपाई ॥

एही वीधी हरी चरीत्र ग्रवगाहा ॥ श्रुती सारद नहीं पावहीं थाहा ॥
शवतक परम भक्ति तव देखी ॥ कहेउ कथा उपदेश विशेखी ॥

॥ दोहा ॥

एह प्रभु चरित सप्रेम कही हैं सुनि हैं सत जन ।
मुक्ती संप्रदा छेम पैहै शीवा सज्जन सहित ॥
:o: :o: :o:
हरद्रिग व्योम ग्रस्ट शशि सम्वत संख्या कीन्ह ॥
ग्राशिन शुक्ला सप्तमी कथा समाप्त कीन्ह ॥

विषय—श्री रामचद्र जी ग्रौर ग्रन्य ग्रवतारो (२४ ग्रवतारो) तथा भक्तो का वर्णन । विशेपतया राम-कृष्ण चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

१७ ८७
सम्वत सत्रह सै सत्तासी माघ मासि तेरसि शुभरासी ॥
क्रीशन पच्छ शुभवासर चंदा सीधि जोग वृप लग्न ग्रनंदा ॥
३ ० ८ १
हरदृग व्योम ग्रष्ट शशि सवत संख्या कीन्ह ॥
ग्राशिन शुक्ला सप्तमी कथा समाप्त कीन्ह ॥

सख्या ४१६. रामायण माहात्म्य, रचयिता—शीतलदास, कागज—ग्राधुनिक पीला, पत्र—१८, ग्राकार—८ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—३०६ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२६ वि०, लिपिकाल—स० १६३६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः ॥ ग्रथ रामायण माहात्म्य लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

ॐ वंदे रामायण श्रीमत्तुलसी कृत मानस ।
राम रूप प्रदातारं धर्म कामार्थ सिद्धिदम् ॥ १ ॥
:o: :o: :o:

॥ सोरठ ॥

जै जै श्री गणनाथ विघ्न हरण गजवदन प्रभु ।
तव पद नावउं माथउ सुफल मनोरथ होहि मम ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

मम अभिलाष भयो जिय जानी । बरनौ कछु हरिजस सुभपानी ॥
ताही समै चित चढ़ि आई । तुलसी कृत को महातम गाई ॥
कौन अरम्भ सुमिरि भगवाना । जस कछु सुनेंउ सो करहु वषाना ॥
सम्वत वनइस सै वनतीसा । मार्गशीर्ष एकादशि दीसा ॥
शुक्ल पक्ष मंगल सुभ वारा । रचौं महातम पर्म वदारा ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

सब विचारि मन ठीक कै देषि सकल परकास ।
संतन मुख माहात्म सुनि वरनत "सीतल दास" ॥

मध्य—— ॥ चौपाई ॥

यह अरंभ महात्म कर लीन्हा । रामायण अरंभ जो कीन्हां ॥
प्रथम श्लोक पचीस वनावा । सातहु काडन मां बरतावा ॥
ताको भाव संस्कृत वानी । ग्रंथ आदि दिए मंगल जानी ॥
पुनि सत्तासी सोरठ भाषा । सातहु कांडन मह धरि राषा ॥
छंद एक सौ और अठारह । सात काड विच है सव सारह ॥
ग्यारह सै पचहत्तरि दोहा । सप्त काड विच ते सब सोहा ॥
नौ हजार यक सै चौपाई । अठसठि अधिक सो सकल वनाई ॥
ताकर फोर जानि अव लेहू । सात कांड मा हय जित एहू ॥
सप्त श्लोक वाल मह आदी । पैंतिस सोरठ हय अति गादी ॥
यकसठि अधिक तीन सै दोहा । वंतालिस छंदहु सुठि सोहा ॥
दुइ श्लोक औ यकतिस दोहा । सोरठ तीनि छद दुइ सोहा ॥
तीनि सै दुइ चौपाई राषा । किसकिंधा विवेक मैं भाषा ॥
तीनि श्लोक औ वासठि दोहा । तीनि छद दुइ सोरठ सोहा ॥
चौपाई सै पांच वनाई । यक्यासी पुनि और मिलाई ॥
संदर कांड मांहि यह सामा । सरनागत जानव अभिरामा ॥
तीनि श्लोक छद संतीसा । दोहा डेढसइक तह दीसा ॥
ग्यारह सय अरु वीस चौपाई । नौ सोरठ लंका मह गाई ॥
उत्तरमह श्लोक है पाचा । सोरठ सत्रह जान्येहु साचा ॥
छाहै अधिक औ दुइ सै दोहा । चौदह छंद काम जिमि सोहा ॥
हैं पचाशदश सै चौपाई । रामायण ऐंती सब गाई ॥
ऐ सब रामरूप करि गावा । पढै सुनै सो हरि पुर पावा ॥

॥ दोहा ॥

यह सव विरचि सुधारि कै काशिहि दियो पठाइ ।
जासै प्रगटै जक्त में पढै सुनै मन लाइ ॥

:o: :o: :o:

यह वरन्यो मै यथामति सुन्यहु ज्यु सतन पास ।
पढै सुनै जन प्रीति करि सेवक "सीतलदास" ॥ १ ॥

अवध पुरी की नैरतिपट जोजन परमान।
"जन सीतल" द्विज वसत तहँ प्रमुदाया अस्थान॥
:o: :o: :o:
रामायण माहात्म्य रचि जग में कीन प्रकाश।
जगन्नाथ जे नर पढ़ैं श्रीपति पुरवें आम॥
श्री वर सीतलदास कृत वनो महातम ज्ञान।
जगन्नाथ रघुनाथ यश परमतत्व करि जान।
फाल्गुन कृष्णा पंचिमी चद्रवार करि गान।
६ ३ ९ १
रसरु राम नव शशि निरषि सम्वत् करो प्रमान॥
ममस्थान मसौली साधु द्विजन घर दास।
नित प्रति गावत रामयश कुम्हरावां मे वास॥
नहि कविता नहि साधुता लाम नाम जपि जोग।
घाटि वाढि अक्षर परैं क्षमा करो सब लोग॥

इति श्री मंगलदायने सकल कलि कलुष विध्वंसिने श्री तुलसी कृत मानस माहात्म शीतलदास कृत सम्पूर्णं शुभमस्तु श्री सवत् १९३६ शाके १८०१ फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ पचम्यां चंद्रवासरे॥ राम राम राम

विषय—तुलसी कृत रामायण का माहात्म्य वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

१९ २९
सम्वत वनइस सै वनतीसा। मार्गशीर्ष एकादशि दीसा॥
शुक्ल पक्ष मंगल सुभवारा। रचौं महातम पर्म उदारा॥

॥ दोहा ॥

फाल्गुन कृष्णा पंचिमी चंद्रवार करि गान।
६ ३ ९ १
रसरु राम नव शशि निरषि सम्वत करो प्रमान॥

संख्या ४२०. पद, रचयिता—शीतलदीन, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—$८\frac{७}{१०} \times ५\frac{६}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत हरिनारायण जी मिश्र, ग्राम व डाकघर—[illegible], जिला—इलाहाबाद।

आदि—

हमारे घर मे कालि नागिनि वशी।
...तू मेरी गोतिन कवन सगुन करि हसि॥१॥
आइ परो एह अन्ध भवन मे दीपक विनु अमिनसी॥२॥
दीपक लैकर ढूढन निकरी कालिनि को वरवसी॥३॥
"शीतल दीन" मलीन विना प्रभु फर मीजत घरवसी॥४॥
मेरे मनमोहन से केहु कोल डोरी।
सुभग सुहृद सुन्दर सुरतिवर कौन कि हो रगरी॥१॥
काल कराल तुमै नियरानो आयो विपति घरी॥२॥

नगर निकारि करी क्षण भीतर त्वरित...वखरी ॥ ३ ॥
"शीतल दीन" देखि गोपिन की नन्द ने को पकरी ॥ ४ ॥

राजित राधा सहित प्रभु व्रज मे रास रचाई ।
धाकिट धाकिट धाकिट धाकिट घुधुकिट द्वौ ताल वजाई ॥
मुख मुरली मन मोहन केरी सखि मन लेत चोराई ॥ १ ॥
पग घूघँरु की छनाछन सोभित मोहित सकल सुष पाई ।
मुकुट धरे सिरहु पर...हसन नाचत प्रेम चितलाइ ॥ २ ॥
सखिक...मोहन व्यति भावँ हृदय हृदय लगाई ।
लाडिली वृषभान की मनमान छोडाई ॥ ३ ॥
"शीतलदीन"......सुन्दर देखि लाल सखि चपलाई ।
इत गोपाल की शोभा देखि अमरगण आई ॥ ४ ॥

विषय—श्रीकृष्ण की लीलाओ का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पदो का केवल एक पत्र मिला है जिसके एक ही ओर तीन पद लिखे है। ये तीनो पद विवरण पत्र मे उद्धृत कर दिए गए है ।

सख्या ४२१. १ वियोग सागर, २ मोहनी, रचयिता—शेख अहमद, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८¾ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहावाद ।

आदि—ग्रंथ वियोगसागर सँप अहमद का कीया ॥

॥ दोहा ॥

विधना गति विधहीं लही और न विधि को जान ।
जो विधि विधिना तुम सिरी ते विधि त्रिविधि समान ॥ १ ॥
नवी नवी अहमद कहै जे जग विय विय होय ।
गगन उदधि धरनी सकल औ रसु विय नहीं कोइ ॥ २ ॥
साहि मुहदी औलिया सब कुतबनि सुलितान ।
तिन सुत पीर जलाल मुहिदी विद्या गुन ग्यान ॥ ३ ॥
भोर वयार सुसरम हितु सीतल वही सुवास ।
लालन विनु लजि मंजरी होत उआस ॥ ४ ॥
अमी किरन निसचद की विय ससि विनु मुप पीय ।
फूलत वोल कमोदनी केक कुहक दुप दीय ॥ ५ ॥
सदन परिमल सीर ससि तन लाये विनु लाल ।
विरहु अगिन उर मैं जरी वील परी कंठमाल ॥ ६ ॥
तन तरफनि मीनहिं लई मन फुनिगा गति लीय ।
मेघ मद्या नैननि हरी जिय चातिग पीय पीय ॥

मध्य—

दुप विरहा दह दिस भयो कनहु दिसा न आहि ।
प्रान दुरावन लाल विनु "अहमद" जिहि दिस हांहि ॥

:o: :o: :o:

मधुर वंन छवि नैन भय मधुर जु सवै सरीर ।
अरु लालन के गुन मधुर गरई विरह न पीर ॥५८॥

नैन नैन ते वैन कहि रसना म्है न जाहि ।
दुरि मुसकानि हुलास छवि पल पल पेम लहाहि ॥५६॥
रोम रोम जिय जिय मिले लह्यो जु पेम पियार ।
कहै सु विछुरन की विथा करहि वियोग पुकारि पुकारि ॥६०॥

इति वियोग सागर अहमद का संपूरन ॥

मोहनी सैंप अहमद की करी ॥

॥ दोहा ॥

मंग गंग जल मोहनी हनत जु काम तरंग ।
रीझि रह्यो मन मीन ज्यों देषत पानिप अग ॥ १ ॥
दिया जोति निस स्याम की चोप पटी मिलि सोहि ।
चिहुर लाल नगस्याम भय देषि रहे चपि मोहि ॥ २ ॥
सार किनारी सीस पर मनहु धनुष घनश्याम ।
कै किरनामल सूर की मग रग विनराम ॥ ३ ॥
भौरन ते अति स्याम अलि विसहर तें विष केस ।
उसहिन मंत्र मानहीं गाररी होहु किस सेस ॥ ४ ॥
इ लावे अरु घूंघरे नय सिप लौं लहराहि ।
मनहु उड़निया नाग ज्यों देषत ही डंस जाहि ॥ ५ ॥

:o: :o: :o:

अंत—नैन भौंह नही चंद के अरु लवे मिरि वार ।
"कहि अहमद" रे गुनि मनहु वदन जोति समि हार ॥३८॥
कुंभ तार कचन कुलस स्रीफल वेल कहत ।
उठत पियोहर नारगी सो सोभा न लहत ॥७१॥
लाली सेंदुर रत्त दे कुंदन कुंद भाइ ।
काम जरची हूं मोहनी सो कज्जल सिर पाइ ॥७२॥
तिहु तिलोक सजि मोहनी रचि कच कांम सुजान ।
सुर नर मुनिवर तपनि पी देषत रहे सयान ॥

इति मोहनी सैष अहमद की बांधी सपूरन भई १७७८ आसाढ सुदी ३ सुकरवार ॥

विषय—वियोग सागर मे वियोग शृगार का वर्णन किया गया है और मोहनी मे मोहनी के सिखनख का वर्णन है ।

सख्या ४२२. यूसुफ जुलेखा, रचयिता—शेख निसार, कागज—देशी, पत्र—१२५, आकार—९$\frac{३}{४}$ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—फारसी, रचनाकाल—स० १८४७ वि०, लिपिकाल—स० १९५९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत गोपालचद्र सिंह एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—विसमिल्ला अल रहमान अलरहीम

सुमिरों प्रथम सरूप सुहावा वो पेम वनिज तिन उपजावा
प्रेम अगिनि उतपत उपजावा वहुरि पवन जल उपवन छारा
अगिनि तें पवन पवन तें पानी पुनि पानी तें किय अवढानी
इन चारो तें सभ विस्तारा धरती सरग सूर ससि तारा

चारि तत्त तें सभ कुछ साजा पचवां सुन्न अकास विराजा
पुनि रिखि गन्धर्व इत वनाई जगम अस्थावर उपजाई
मम (प्रेम) अगिन तह काहु न सम्हारा रचान कह बहुविध विस्तारा
तह सुन पावह पेम का थातो दीपक माह धरा जस वाती
यह वातीमंह आप समाये हुये परछन्न पुनि देह जराये
प्रभुताई की तीजर्त कौतक कीन्ह निसार
कहा सो उत्तम आस वह कीन्ह मुक्ति यह चार

:o: :o: :o:

आद जोत जाके रची तहं हैं सभ कुछ कीन्ह
मोकह मुक्त कत पावई जो नाम "मुहम्मद" लीन्ह

:o: :o: :o:

आलम शाह हिन्द सुलताना तहं के राज यह कथा वखाना
देहली राज करी अव नीता अपर वहीं तेह कीन्ह अनीता
नादिर खां सो अधम रुहेला सदापराध कीन्ह वड़ पेला
पातसाह कह अंध जो कीन्हा सुत और नार सभे दुख दीन्हा
कीन्ह अपत तंमूर घराना राजप्रताप अधम तह माना

:o: :o: :o:

शेख हवीवुल्ला सोहाये शेखपुर जिन्ह आन वसाए
पातसाह अकवर सुलताना तंह के राज कर जगत वखाना
औ वह देस सूवा होई आई तीस वरस की रही सोहाई
तंह के शेख मुहम्मद वारा रूपवन्त भू के अवतारा
शेख गुलाम मुहम्मद नाऊं सो मम पिता औ ताकर गाऊं

:o: :o: :o:

वंस मोलवी रोम की जह कर प्रेम गरन्थ हुई
सिद्ध पढ़ मसनवी पावे पेम की पन्थ
सात गरन्थ अनूप वनाई हिन्दी और पारसी सोहाई
संसकिरत तुरकी मनभाई सभे प्रेम रस भरी सोहाई
म्हरनकार के कह्यो कहानी रस मनोज रस कवित वखानी
बार बीस मंह कथा वनाई म्हरनकार अनूप सोहाई
रस मनोज रस कवित सोहावा सभे नायिका भेद वतावा
यह सन जोहर पेम कहानी कहा मसनवी अनरत सानी
झूठ जान सभते मन भागा अव यह साच कथा चित लागा
हिजरी सन वारह से पांचा वरन्यो पेम कथा यह सांचा
अठारह से संयतालीमा संवत विक्रम सेन नरेसा
सतरह सै वारह जुत साका पौष मास पून्यों वस राका
सतावन वरख वीते आव तव उपज्यो यह कथा के चाव
सात दिवसमंह समापत दुरमत नाम लह्यो यह संवत

अंत—देख जगत कर कोक तख्वाला हुई सदामन दुखित वेहाला
जान न परी वहुरि वह काहा जग मानिक उपज्यो तेह काहा
देहु दयाल मुक्त कत मोकह हरहु मोर सव पातक दोखहु
पढे प्रेम के अछर कोई दई असीस मुक्ति जिन होई
हम न रहव अछर रह जायह जो कोउ पढ भेद नर पायह
अवगुन हो इतो लेहु छिपाई हम न रहव जो देव वताई

रहें वो भगत पेम अवज्ञाना धरम नीत सुभ कथा बखाना
सात दिवस मह कथा सुहाई करि के दया समायत पाई
धर्म कर्म एको नहीं अधरम भरा जहाज
जनम दई के लाजकर राख दवो जगलाज
.........कि किहाव यूसुफ जुलेखा
वजवान भाषा.........सन् १३१६ हिजरी

विषय—यूसुफ और जुलेखा की प्रेमकथा का वर्णन ।

रचनाकाल

अठारह से सयतालीसा ।
संवत विक्रम सेन नरेसा ।

संख्या ४२३. भक्ति विधान, रचयिता—शोभाचद (जयसिंह का सेवक ब्रह्म भाट राय ताराचद सुत शोभा चद हैं), कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—८॥ × ४॥ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४३, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३३, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८१ आषाढ सु० ५ गुरौ (ग्रथ के आधार पर), लिपिकाल—स० १७४८ भाद्र कृ० ३ शुक्र (ग्रथ के आधार पर), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हिं० व० स० ७१ ,पु० म० ४ ।

आदि—अथ श्री भक्तिविधान ग्रन्थ लिख्यते ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
वंदू श्री वल्लभ चरन श्री विट्ठलेस रघुनाथ ।
अरु श्री देवकी नद जी सीसु पकति साथ ॥ १ ॥
अरु वंदू श्री वल्लभ कुल चरन अरु वल्लभ कुल दास ।
अरु वदू तिही भोमि कूं जहा वल्लभ कुलवास ॥ २ ॥
वंदू श्री शुक परीक्षित ब्रह्मा नारद व्यास ।
दुष्ट काल कलियुग विषे कीयो भागवत प्रकास ॥

मध्य—पृ० ३२
लछमी नरसिंह को जनम चौदस कृष्ण कुंआर ।
श्री बालकृष्ण के बालकनि को कहु जन्म प्रकार ॥४७६॥
द्वारकेस व्रजनाथ जू व्रजभूषन को जन्म ।
माधव कातिक चेत सुदि पाचे नवमी नवम ॥४८०॥
पीताबर जी चेत वदि परिवा प्रगटे आय ।
पुरुषोत्तम आसूज सुदि चोथि भए सुखदाय ॥४८१॥

अंत—अरु जो वे यह ग्रंथ को सदा पढे चित लाय ।
ताहू को दीजे भगति भक्त बछलता पाय ॥६२६॥
मन वच क्रम तातें सदा पढीयो भक्ति विधान ।
बिना भजन गोपाल सो सो उपजें प्रेम प्रमान ॥६३०॥
१ ८ ६ १
संवतु शशि वसु रितु अलख सुकल पछ सुचिमास ॥.
गुरु पाचे यह ग्रंथ हुअ भक्तहेत परकास ॥६३१॥

इति श्री देवकी कुमार चरणं शरण सोभा चदकृत भक्ति विधान संपूर्ण ॥ संवत् १६८१ आषाढ सुदि ५ गुरौ ग्रंथोत्पत्ति । स० १७४८ वर्षे भाद्रपद मास वदि ३ शुक्र वारे लिखित बलभराम सुत ।

विषय—प्रश्नोत्तर रूप में पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय के मंदिरों में सिद्धांत और सेवा सामग्री उत्सव प्रकार का वर्णन किया गया है। ग्रंथ में पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के अर्थ नित्य नियम (आह्निक) भगवत्सेवा की आवश्यकता एवं उसकी विधि, उत्सवों का वर्णन, गोस्वामी बालकों का संक्षिप्त परिचय, भक्ति, सत्संग, अनन्याश्रय, भाव भावना आदि सिद्धांतों का विशद विवेचन किया गया है। यह ग्रंथ श्री आचार्य वल्लभाचार्य के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथ जी रचित 'साधन दीपिका' के आधार पर तैयार किया गया है।

संख्या ४२४. गणित बोधनी (प्रथम भाग), रचयिता—शोभाराम (महाराज), कागज—देशी, पत्र—१३, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५, पूर्ण, प्राचीन, गद्य तथा पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥ अथ गणित बोधनी प्रथम भाग महाराज शोभाराम कृत लिख्यते ॥ प्रथम गणेश जी की वंदना ॥

॥ दोहा ॥

गिरिपति तनयापति तनय सिद्ध करौ शुभ काम।
गणित बोधनी रचत हौं सोभाराम मम नाम ॥ १ ॥
श्री ब्रजेंद्र जसवंत को राज भरतपुर जान।
तासु परगनो कामवन सकल गुणन खान ॥ २ ॥
तहाँ जुरे हेड़ा वसत हैं अति सुधर्मा को धाम।
पुस्तक आनंद लाल हित रचहू शोभाराम ॥ ३ ॥ श्री श्री ॥

॥ सवैया ॥

साथी तीन व्योपार कियो मिल रुपिया सातसै बीस लगाये ॥
पृथम से दोयम भागत्रितिय गुण या प्रकार हुमको समझाये ॥
साथी दोनो को युक्ति कियो धन तासु समान त्रितिय रो आये ॥
सोभा कहत आनंद सुनो कह पृथक पृथक हमको जतलाये ॥ ४ ॥
उत्तर पहले का ९०) दूसरे का २७०। तीसरे का ३६०) ॥

मध्य—

येक प्रश्न सभा मे कहू सुनो दिलदारे। इस सवाल का तू दे जवाब घर जा रे ॥ टेक ॥
येक मछली का जिकर करूँ सुन प्यारे। उसके धड़ से सर उसका दूना था रे ॥
उसके धड से थी आधी पूंछ जतला रे। कितने मन की वह भी न सही जतला रे ॥
न्यारे २ कह देना वैया वारे ॥ १ ॥

दरया मे किस्ती चार वही जाती थी।
था साहूकार का माल भरे लाती थी ॥
थी बोझल किस्ती येक वह दहराती थी।
मल्हाने किस्ती को देखा डिगमिगाती थी।
मल्हा किस्ती को थाम जवी ललकारे ॥ २ ॥
मल्हा मल्हो से कहे सुनो मेरी अरजी।
मेरी डूबी जाय जहाज कहौ कहा करजी।
लेऔ माल जितना किस्तियाँ तुम्हारी मरजी।
बच जायगा मेरा जहाज यही है मरजी।
टोंगा उसका बच गया माल दे डारे ॥ ३ ॥

अंत—— ॥ दोहा ॥

येक मक्रा के घेर का कर्ता है वयांन ।
लड़के तीन पेलन लगे सोच कर दीने ग्रान ॥

॥ भूलना ॥

चकर दीने ग्रान तीन का करता हु वंईयान ॥
तुम तो सची करं के जान येक तो ग्राथ चक्र फीर ग्राया है ।
दुजा लडका प्यारा जान दग चक्र पग धारा है
उतो करं के सहुँजई सारा उनने सहुज मे सुप पाया है ।
तीजा उठार्रा सार्के. जाली वार है दीने ग्राके नेते कहु तुर्ण जतलाके ।
ईसका फेरना वनलाया है । येक मुकामे वताना ।
केते मे हो गये सुजाना ईहां तो उत्तर को हो सफाना
लाला क्या दील मे घवडाया है ॥ १ ॥ उत्तर :
ईसका लघुतम समग्रवर्त्त : ३५।१२।१० ।
विपय——इसमें गणित पर खूब प्रकाश डाला है ।

संख्या ४२५. द्वादसराशि-विचार, रचयिता——"श्यामराम" कागज——देशी, पत्र——३, आकार——६½ x ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——८, परिमाण (अनुष्टुप्)——४८, खंडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——सं० १८६३ वि०, प्राप्तिस्थान——श्री रामनरेश गिरि, ग्राम——हुरहुरी, पो०——केराकत, जिला——जौनपुर ।

आदि——

जो दन कष्टन तें जीवै लोइ विप्रण कृपा ते जीवै सोइ
सो १०० वर्ष आयुर्बल ताको होइ ।
सावन मास शुक्ल पक्ष मो मरै भरनी एकादसि ना टरै
रवि दिन दुपर मरै नर सोइ ।
इति सिंघ रासि फले ॥

॥ अथ कन्या रासि ॥

कन्या रासि जा बालक होइ । उत्तमा नछत्र का जन्म जो होइ ॥
सो नर निश्चय धनवंता होइ । सौभाग्यवंत जानों पुनि सोई ॥
मिष्टान्न भोग्य को भोग्या होई । चतुर विवेकी कहै सब कोई ॥
कष्ट दुष वर्ष पाच ५ मे होई ।

:o: :o: :o:

अंत—— ॥ अथ मीन रासि फलम् ॥

मीन रासि जो बालक होई पूर्व भाद्र पद का जन्म जो होइ ॥
देव गुरु पूजि सभागा होइ जन्न मन्न कछु जानै सोइ ॥

:o: :o: :o:

माघ मास सुक्ल पछ मे मरै रोहिन नछत्र आठमी न टरै ॥
गुरुवासर संध्या काल में तजै सो प्रानी प्रान ॥
जगत काल के बसि सबै सुनियो चतुर सुजान ॥
जातक को मत जानिकै "स्याम राम" घरु ध्यान ॥
सोभा पावै सभा मैं पढ़ै चतुर प्रवीन ॥

इति श्री द्वादम रासि विचार जन्म पत्रि कपावली समाप्त ।। शंवत् १८६३ समै कुआ वदी सतमी ७ सनीचर ।

विषय—द्वादस राशि विचार एव फल वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है। आरभ के दो पत्रे लुप्त है, केवल तीन पत्रे रह गए हैं।

सख्या ४२६. कुड निर्माण वार्तिक, रचयिता—श्री कृष्ण गगाधर, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८$\frac{1}{6}$ × ४$\frac{1}{6}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७१६ वि०, लिपिकाल—स० १७१६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० छोटे लाल जी मिश्र, ग्राम—हनराजपुर, पो०—होलागढ, जिला—इलाहाबाद।

आदि—.........................

चतुरस्त्र जे मध्य सूत्र तेहनो चोवीसमो भा........

:o: :o: :o:

पूर्व आद्यने कुड त्ररारे उतराग्र योनि चोजे। योनि दक्षिराया साहेये रहे ।।

वाको कुंड पांच ते पूर्वाग्र योनि कोजे ।। पश्चिमे योनि रहे ।। नवमु कुंड ईशान पूर्व ववे तेहने योनि दक्षिणे रहे। उतराग्र कीजे ।।४७।।

क्षेत्रनो जे व्यास तेने जे अर्द्धतेनो जे वार सो अंश भाग १ अंगुल एक १ ए वा ६ नव भाग तेनो विसमो अंश व वत्र राय ३ यु का ४ चार छाया लाग्र ६ त्रराय ३ एणे युक्त एवा अगुल त्रराय ३।४।६।३ पूर्वनो पामा वधारीये येणे व्यासार्द्धे वृत्त कीजे तिव्यास संपूर्ण अंगुल त्रीश ३० सात एक न चार ए व्याम ना भाग ५ पाच अंगुल ६ यव १ युका ३ लिक्षा ४ वालाग्र १ ए वा वीमणे भागे अंगुल १२।२।७।०।२ ए व्यास ३०७ माघ तावी यं मेप अंगुल १८।४।२।४।४ ये प्रमाणे मंडल नै सूत्र पाच दीजे त्य वारे पचासी थाये। इनै भाग छठे शर अंगुष्ट ३०।०।५।६।० पोइय त्यवारे पचास्नी थाये ।।५८।। भूतनाशन कामनाये पचास्त्रि कंट कयुछे ।।

अत—

रत्नपुरनाराज्य अध्य रामचद्र नामे ।। भरद्वाज मुनि कुल आसमुद्र चंमा ऋग्वेद पाठी मालवी ब्राह्मण चतुर्वेदी नौदिकरो श्रीम ज्यराम दास चतुर्वेदी रत्नपुर थी आव्यो नैमिषारण्य ने वीपमालये ।। भाइ नें परणावाणे ।। आव्यो ते प्रेरो रामचद्र नैमिष कुडनु निर्माण जाणवाने अर्थे ।।७२।।

ग्रथ कीधानो प्रसग:

विक्रमादित्य ने वर्ष रस ६ गगन शून्य ० तिथि १५ पंदरा ए वर्षे ग्रथ थ्योछे। इश्वर न सर्मापित कीधो छे। यज्ञ की धानु जे फल ते पाम वाने ।। षोडषे महादान वापी कूप तडाग यज्ञ एहनु अंग छे ।। संवत् १७१६ कार्त्तिक वदि ७ मप्त गुरु वासरे पुष्यर्क्ष मुक्तयोगे च वकरणे अस्मिन दिने श्री मद्नपुर दीक्षितुत्तरा वॉ को रणेद पुस्तक लिखितं त्रीपाठी श्रीकृष्ण गंगाधर कृतायां वार्तिक पद्धति संपूर्ण मस्तू रामराजवेय वार्तिक पद्धतिः ।। श्री रस्तू ।। श्री कृष्णार्पणमस्तु ।।

विषय—यज्ञ कुंड विधान वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है। आरभ के १५ पत्रे नहीं हैं।

संख्या ४२७. दुर्गा भक्ति तरंगिणी, रचयिता—श्री कृष्ण भट्ट, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—८३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री महागणपतए नमः ॥ ॐ नमश्चंडिकायै ॥

॥ छंद चौपई ॥

सप्तसती पाठहिं पहिचांनों । रिषि सु मारकंडेय वर्षांनों ॥
गायत्रीउ दिन कह अनुष्टुप । दद प्रचार करी चुपहो चुप ॥ १ ॥
महा कालि महलछिय आनों । महामरसुतो दैवत मांनों ॥
चामुंडा सक्ति सुतिहि जोग । भुक्तिमुक्ति सिधि जप विनियोग ॥ २ ॥
प्रथम चरित्रहि वृह्मा है रिषि । गयत्री छंद सुहिय लै लिषि ॥
माहाकासि तिहिं दैवत जांनी । और नद जा सक्ति वर्षांनी ॥ ३ ॥
रक्तदंत का वीज वतायौ । अग्रत्वे ताकौ मन भायौ ॥

:o: :o: :o:

अंत—उपसर्ग समित सुठि होइ जात । ग्रह पीडा दारुन पुनि मिटात ॥
दुस्वप्नन न रनि देष्यो जु होइ । सुस्वप्न होत ततकाल सोइ ॥१६॥
जे बाल वाल ग्रह परामूत । तिन यहै साति कारन प्रभूत ॥
संघात भेद पुनि नरनि सोइ । अति उत्तम सो........

:o: :o: :o:

विषय—देवी माहात्म्य का भाषानुवाद । ग्रंथ तरंगों में है । प्राप्त ग्रंश में ग्यारह तरंगे हैं ।

संख्या ४२८. सद्‌गुरु महिमा, रचयिता—श्री निवास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—९१/६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० विश्वनाथ त्रिपाठी, ग्राम–नंदना, पोस्ट–बरहज बाजार, जिला–गोरखपुर।

आदि—श्री जानकी वल्लभाय नमः ॥ श्री प्रशादाय नम. ॥ अथ श्रीसद्‌गुरु महिमा लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरन प्रनाम करि धरौ ध्यान उर माहि ।
मति मलीन निरमल करौ उदै भानु तम जाहि ॥ १ ॥
गुरु अंध्री गुन आयतन प्रनमो मन तजि मान ।
श्री निवास सिकता सुमति क्रिपया मेरु समान ॥ २ ॥
गुरु सम दानी कौन जग दीन्हो अवचल दान ।
घटै लुटै छीजै नही दिन दिन दूनो जानि ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु मुष गुरु को शब्द विचारै । त्यागि असार सार को धारै ॥
सतगुरु चरन मनावो भाई । जासों दुवध्या दुरमति जाई ॥ ४ ॥
दुरमति को मैं करूं विचारा । दुरमति कहिये कौन प्रकारा ॥
दुरमति कहिये तीन प्रकारा । इक झूठो द्वै साचो मारा ॥ ५ ॥
झूठो दुर्मति या सों कहिये । माया मेरो प्रण लै गहिये ॥
या दुरमति सो हरि न मिलाई । सो गुरु चरन परस सों जाई ॥ ६ ॥

साची दुग्गति गुरु समुझावै । जन निवास गुरु कृपा सु पावै ॥

अत—या मारग को करै विचारा । ते प्रानी पावै रस सारा ॥
ग्यानी ध्यानी चतुर कहावै । या महिमा बिन रस नहि पावै ॥१६०॥
सदगुर महिमा कहि न सुनही । मूरष नर कहै गुरु मुष हमही ॥
सकल कविन को वदनि करिहौं । छिमा चूक मै पायन परिहौं ॥१६१॥
मै सठ कवि रस गम मो नाई । गुरु मुष सुनि कै लेहि बनाई ॥
श्रीनिवास गुरु महिमा सो भनी । वरनि मिल्यो सिय वर सो धनी ॥१६२॥

॥ दोहा ॥

या महिमा समझै सुनै गावै प्रीत लगाय ।
श्री निवास हरि रस मिलै भर्म कर्म दुप जाय ॥१६३॥
मै अभिमानी नीच मति कछू न जानों भेव ।
श्रीनिवास सदगुर दया हरिगुर ये कहि सेव ॥१६४॥
भौसागर मैं वूडतैं सदगुरु पकरी वाहि ।
श्रीनिवास विश्राम लै सदगुरु चरनतु माहि ॥१६५॥
ना सुष सुरपति नगर मै ना सुष सुष धन धाम ।
श्री निवास सुष पाइयो सदगुर सरनि सुनाम ॥१६६॥

इति श्री सदगुरु महिमा श्री श्री निवास जी कृत प्रथमो रहस्य संपूर्ण ॥ श्री मद अवंतिका पूरी मधे लिपि कृत वैष्णव षेमदास ॥ श्री ॥ रस्तु ॥

विषय—गुरु के माहात्म्य का वर्णन किया गया है ।

सख्या ४२६. हनूमान पच्चीसी, रचयिता—श्री निवास, कागज—देशी, पत्र—२ (खर्रा‌कार), आकार—२ फी० ३¾ × ५¾ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ हनूमान पचीसी के कवित्त लिष्यते ॥
काहू कै तात अरु मात सुत भ्रात जात पाति काहू क पाती परी गोरव सरीर की ।
काहू कै सपति सुष सज्जन सनेही जा काहू कै कनिक कोस भरचौ मनिहीर की ।
काहू कै धरनीधर धर्मध्वुजा दसी दिसा काहू कै नृपति नर नारिन के सीर की ।
कृपा "श्री निवास" कहै आस करी जो करी सुमिरै तै भरोसो जांनि हनूमान वीर की ॥ १ ॥

अंत—
अतुलत वलधाम काम करी श्री राम को साहस सरूप काल छाप चरधारा की ।
मंगल सुप वारिध विसारद सारद सी भजन जो दारिद यो सज्जन सभार की ।
भारी दै निवास भक्त भीर परै आरापाम सीतापति दास पास गुप्त सो विहार की ।
गावै श्रुति वार वार पावै नही पार तऊ उज्वल अपार जस पवनकुमार की ॥ ८ ॥

इती श्री हनूमान पचीसी के कवित्त समाप्तं २५ ॥

विषय—हनुमान् जी का यश वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खर्रा‌कार रूप में है । रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त हैं ।

संख्या ४३०क. महाभारत (कर्ण पर्व), रचयिता—श्रीपति, निवासस्थान—मऊ, डहार देश (रीवा, बघेलखड), कागज—देशी, पत्र—११३, आकार—६¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत्—१७१६ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० रघुनाथ सिंह, ठा० शिवबरन सिंह, ठा० जगबहादुर सिंह, ग्राम—ममोगग, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाये नम्ह पोथी लीप महाभारथ कार्न पार्वक्वी श्रीपती ॥

कवि कह प्रथमहि ताही मनावी । जाहि जपे नीर्मलि गति पावी ॥
जगत वद जो कर्मक सीज्या । वारिज वधु दीन कर रज्या ॥
राती देवस जुग जेहि ते होई । जेकरे तेजहि त्यान कोई ॥
जेकरे उदए आस्त के जामा । सीस नाइके कीन्ह प्रनामा ॥
:o: :o: :o:
कवि कर पिता धार्म कर धामा । धार्मदास अस ताकर नामा ॥
चारि पुत्र तेन्ह के भए तैसे । नाम त्रिमेप बहुत हो जैसे ॥
भे कवि गग प्रथम गुन आगर । पर्ग सेनि पुनि सुमति के सागर ॥
तासु अनुज दलपति अभिरामा । चौथे स्त्रीपति मोरइ नामा ॥
पंच अनुज अवहीतें भापो नाम अनंत ।
पाचवान सम सुदर जेन्ह के गुन क न अंत ॥
सभा पर्व उतजोग सोहाई । भीष्म द्रोन भरि पिते वनाई ॥
विधि वस आगे वरनि कै रापा । सो सुनवे के मन अभिलापा ॥
तेन्ह कर तंत्य जानि मनमाही । कार्न पार्व मैं रचेउ नीवाही ॥
व्यास महामुनि वरनि जो रापा । तेहिते मैं वोन्ह याढी न भापा ॥
कवि जन मानेहु मोर निहोरा । मंन करी कवि आउक तोरा ॥
अंछर उपमा हीन जो होई । अर्थ विहीन तुक बाढक सोइ ॥
करि आदर एह लीन्हेहु कैसे । अमर अनो उपरागक जैसे ॥
वास वंस औ वृत जो आही । ताते प्रथमहि कहेउ निवाही ॥
तेहिते वहुरी इहा नहि भाषा । छछेर्पाहि वीस्तर वदि रापा ॥
सवत सत्रह सै वोनईसा । माघ मास दिन गयउ पचीसा ॥
कथा प्रकास कीन्ह तव सिष्य जोग अनुमानी ।
पढि को कविआ करन कवि सास्नहि मति जानी ॥

अंत—

एहि भातीन्ह न्रीप आस्तुती कीन्हा । रथ चढि चलेउ रनाजित लीन्हा ॥
वात चीत चालत गए ताहा । जूझे कार्न षेत मह जाहा ॥
देषी सराचीत सकल सरीरा । सहित पुत्र रविनदन वीरा ॥
परी रना नीर देह सोहाइ । पुष्पसींघ रनसींघ की नाइ ॥
त्रास छूट हीअ हर्ष जनावा । अव मै औरन राज पद पावा ॥
सवीता अथए नीसि नीअरानी । चलो सीवर म्रप नारग पानी ॥
वहुरे देषी दुदीस्तील कार्नही छाडी मसान ।
नीज नेवास मह वैसे गार्जत हनत नीसान ॥
ऐसन कार्न केर संग्रामा । जे जन सुनिन्हहो थरि मन कामा ॥
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—महाभारत कर्ण पर्व का भाषानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १७१९ है । लिपिकाल ग्रंथ के अंत का पत्र लुप्त हो जाने के कारण अज्ञात है, पर ग्रंथ धर्मदास कृत महाभारत के साथ एक जिल्द मे है और उसका लिपिकाल स० १८८४-८८ है । अत इसका भी इसी के लगभग माना जाना उचित है ।

संख्या ४३०ख. कर्णपर्व, रचयिता—श्रीपति, रचनाकाल—स० १७१९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत जनार्दन प्रसाद जी एम० ए०, एल० टी०, ग्राम—कठौली, पो०—मेजारोड, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—

कविवर पिता धर्म करनामा धर्मदास अस ताकर नामा ।
चारि पुत्र तेनके भै तैसे नाम विसेप कहत हौ जैसे ।
मै कवि गंग प्रथम गुन आगर पर्ग सेनि पुनि सुमति के सागर ।
तासु अनुज दलपति अभिरामा चौथे श्रीपति मोरै नामा ।

॥ दोहा ॥

पांच अनुज अवहो ते भायी नाम अनंत
पांचवान सम सुन्दर जेन्ह के गुन कर अंत
सभा पर्व उतजोग सुहाई भीषम द्रोण भरि पितै बनाई
विधि वस आगे वनिक राषा सो सुनवे को मन अभिलाषा
तेन्हकर अंत जानि मन मांही कर्ण पर्व मैं रचो निवाही
व्यास महामुनि वरनि जे राषा तेहि ते मै वोन्ह वाढि न भाषा
कवि जन मानेहु मोर निहोरा मै न करौ कवि आउक तोरा
अछर उपमा हीन जे होई श्री विहीन तुवक सव सोई
कै आदर एह लीन्हे कैसे अमर अमीउ पराग क जैसे
वास वंस श्री वृत जो आही ताते प्रथमहि कहा निवाही
तेहिते वहुरि इहा नहि भाषा छंदेंपहि विस्तार वदि राषा
संवत् सत्रह सौ वोनईसा माघ मास दिन गये पचीसा ॥

॥ दोहा ॥

कथा प्रकास कीन्ह तव सिध्य जोग अनुमानि
पढ़ि कै को कवि व्याकरण कवि सास्त्रहि मति जानि

अंत—अैसन कर्ण केर संग्रामा जे जन सुनिहै फै मन कामा
जेन्ह पुनि गया पिड जनु दीन्हे तेन्ह भगवत भजन जनु कीन्हें
जग्य दान तप जप सव जेते ते जनु जन कै वैठे तेते
तेन्ह तीरथ जनु नवै नहाये भारथ कथा वीत जेन्ह लाए
जीवनि मुक्ति रहे होइ असे ते निर्वान पाइ पद वैसे
आन के कानै वाचै जोई दसौ अंस फल पावै सोई
अपने हेतु जेहि अधीर भाउ वाचै सो समग्र फल पाऊ

॥ दोहा ॥

जो अनिलाप जानि जिय सुनै सो पूजै आस
कर्ण पर्व एहि भांतिन वरनी श्रीपति दास

इति श्री महाभारथे कर्ण पर्व कर्ण वधनोनाम अट्ठाइमो अध्याय ॥

संवत १६५० मिती फागुन वदी ६ वार अंतवार सन १३०१ फसली वो सन १८६४ ईसवी हस्ताक्षर बृजमंगल सिंह ॥

विषय—महाभारत कर्णपर्व का भाषानुवाद ।

रचनाकाल

संवत सत्रह सौ वोनईसा । माघ मास दिन गये पचीसा ॥

विशेष ज्ञातव्य—आरंभ के दो पृष्ठ फट गए हैं ।

संख्या ४३१. श्रीपति के कवित्त, रचयिता—श्रीपति, निवासस्थान—काशी, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—१०$\frac{3}{4}$ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

गग के कूल की गैल गहो जिनि आगे वि(रच) की गैल कढ़ैगी ॥
नीर समीर लगैगो कहू तन आनन एक ते चच गढ़ैगी ॥
श्रीपति पाठ पढै विधि सू जहू दूसरो और न पाठ पढ़ैगी ॥
भाल में वाल तमीस लगाइ कै ईस बनाय कै सीस चढ़ैगी ॥ १ ॥
जा जमुना में अन्हात जो प्रात ही विप्र बनाय बनी बिगरैगी ॥
श्रीपति......मरि दै है उड़कै पामरी चारु हिये की हरैगी ॥
माखन चोरि कै......र कौं चोरि कै गोपी किशोर पुकार परैगी ॥
काछनी लाल (के) गुज की माल दै हाल दै तोहि गुपाल करैगी ॥ २ ॥

॥ कवित्त ॥

...न सी दीपक सी खासी चपला सी चारु चपकलता सी व्रखभान की बिभासी है ।
...नैननि चकोरनि को सीचत सुधासी कलाधार की कला सी मुख सुखमा प्रकासी है ।
...लखि ललचानो रूप करत का वखान जन्यो श्रीपति सुजान कासी नगर निवासी है ॥
...कुम कज नलिका सी जोति ज्वालिका सो वाल लाल मालिका सी हरतालिका की उपासी है ॥ ३ ॥

मध्य—

फूले आस पास कास अमल प्रकास भयो,
रही न निसानी कहूँ महि में गरद की ॥
राजत कमल दल ऊपर मधुप नैन,
छाप सी दिखाई व्रज विरह फरद की ॥
श्रीपति सुजान कहै आली वनमाली विना,
कछु न सुहाय मेरे मन के दरद की ॥
हरद समान तन भयो है जरद अब,
करद सी लागै यह चादनी सरद की ॥२२॥
खंजन खरे खिजात मीन मन मुरझात,
लखि कै लजात लोने लाज भरे मोर के ॥
कारे कारे वारे अनियारे उजियारे रूप,
कारे हैं छुवन वारे कानन के छोर के ॥
पानिय पखारे सखि लोचन तिहारे बहै,
श्रीपति पुकारे प्यारे जसुबा किशोर के ॥

रति के सहायक हें महा सुखदायक है,
मेन के मुसाव हें साहब हें चकोर को ॥२३॥

ग्रत—कीरति तिहारी बरनत रघुवीर धीर,
श्रीपति फाणद की सुमति हहरति है॥
छित पर हिमगिरि हिम हिरि (गिरि) पर गंगा
गगा पर सरद घटा सी ठहरति है॥
सरद घटा पें सुरपति के ग्रटा सी,
सुरपति के ग्रटा पें चद निजु छटा छहरति है॥
चंद की छटा पें ध्रुव धाम सी धवल वल
धुव धाम पर धरग धुजा सी फहरति है॥५६॥
विना कारे काजर सींगार तिय को फीका लागे
विना कारे केश देश लागत न प्यारे है॥
कारे रग ग्रेनम वद सुरभि सरस तामे
ग्रगर के कारे धूप देवता सुखारे हैं॥
कारे रंग सुरमाते ग्रांखिनु की जोति जागे
श्रीपति बखानें नेनन में रंग कारे हैं॥
कोरे रंग माहतार कारे के निहायत कारे
रग वारे देव साहिब हमारे हैं॥६०॥

कवित्त कान्ह के लिखे श्रीपति जी के साठि।

विषय—विभिन्न विषयों के साठ कवित्त सवैयों का संग्रह।

संख्या ४३२फ भाषा चंद्रोदय (व्याकरण), रचयिता—पं० श्रीलाल, कागज—ग्राधुनिक, पत्र—१००, ग्राकार—६$\frac{5}{13}$ × ५$\frac{7}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—१५००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १८६५ के लगभग, मुद्रण काल—सन् १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम—मीरजहांपुर, पो०—मिटारा, जिला—इलाहाबाद।

ग्रादि—भाषा चंद्रोदय ग्रर्थात हिन्दी भाषा का व्याकरण॥

१ पाठ

व्याकरण विद्या से लोगो को शुद्ध ग्रौर ग्रशुद्ध शब्दो की विवेचना ग्रौर उनकी योजना का ज्ञान होता है।

शब्द मात्र वर्णों से बनते हैं इसलिये पहिले शब्दो के मूल वर्णों का लिखना उचित है वर्ण ग्रर्थात् ग्रक्षर बुद्धिमानो के बनाये हुए संकेत हैं। वे देश भेद से नाना प्रकार के हैं उनमे से देवनागरी की वर्णमाला लिखते हैं।

ग्रंत—भाषा चंद्रोदय भयो जग के बीच ग्रनूप।
ता प्रकाश सूझें परे छोटे मोटे रूप॥
:o: :o: :o:
तनके सबहीं काम को धरु विद्या में ध्यान।
विद्या तें नर जग लहें विशद कीर्ति धन धाम॥

इति भाषा चंद्रोदय।

विषय—व्याकरण विषय का वर्णन।

संख्या ४३२ख. विद्याङ्कुर, रचयिता—पं० श्रीलाल, कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—$८\frac{3}{16} \times ५\frac{3}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १८६० ई० के लगभग, मुद्रण-काल—सन् १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम—मीरजहाँपुर, पोस्ट—मिंडारा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—विद्याङ्कुर पहिला भाग

१ पाठ

सृष्टि के विषय मे

किसी समय एक पंडित अपनी शाला मे बैठा हुआ विद्यार्थियो को पढा रहा था उसी समय कोई मनुष्य एक जगली गैंडा लिये उसी शाला के पास होकर निकला तो उस गैंडे को देखकर लडको ने अपने मन मे बडा आश्चर्य करके गुरु से पूछा कि महाराज यह क्या है हमने ऐसा जन्तु कभी पहिले कोई नहीं देखा ॥

॥ गुरु ॥

यह ईश्वर की अनंत सृष्टि है इसमे अनेक आश्चर्य के पदार्थ हैं उनका जानना विद्या के बल और खोजने से होता है। तुम भी श्रम कर विद्या सीखोगे तो ईश्वर की रचना का भेद जानोगे ॥

अंत—

९ पाठ

प्रकाश के विषय मे

शिष्य

आपने प्रकाश की शीघ्रगति के कारण गर्जना सुनने के पहिले बिजली का देखना वर्णन किया परंतु अब मैं यह जानना चाहता हूँ कि प्रकाश की कितने काल मे कितनी गति है ॥

विषय—सृष्टि और पशु, पक्षी, मनुष्य, कीट, पतंग, पेड, पौधे आदि विषयों का वर्णन।

संख्या ४३३. अवधूत गीता भाषा टीका, रचयिता—मज्ञानाथ (? मज्ञानाथ), कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—$६\frac{3}{4} \times ४\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८५६ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह) १०।५३ बस्ता), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नम ॥ प्रथम अवधूत गीता लिषते ॥

कृपा करैं ईस्वर सदा देवपुरिष सो जानि।
मोमैं जाकी वासना ईछ्या करैं होत मानि ॥ १ ॥
आत्मा मैं परमात्मा सबमैं पूरन सोइ।
निराकार सो देषियै सबते न्यारो जोइ ॥ २ ॥
पंचभूत या देह मैं जगत आत्मा जानि।
अंतर है परमात्मा कमलपत्र जल मानि ॥ ३ ॥
नवत कहोहो कोन कु सबमैं वृह्महि जोहि।
पूरन जो परमात्मा मेरैं अंतर सोइ ॥ ३ ॥
आत्मा केवल सर्व है भेद कछू नहि मानि।
आस निरासी बात है बिसमय कछु न जानि ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

अंत—अष्ट प्रकरणं गीता जुही दत्त गुरु की भास ।
सो "श्री सज्यानाथ" नें भाषा करी प्रकास ॥
संहैम न्रत्य वर्त्त पठं तिनकों हरि नु नेत ।
जातें यह भाषा करी कलिके जीवन हेत ॥२८॥
:o: :o: :o:
जग की चिता छाडिदें अपनी चिता देषि ।
जो तेरी रछ्या करें ताही नित्त पेषि ॥२७॥

इति श्री दत्तात्रेय विरचित अवधूत गीता स्वात्मार्डपदेस अष्टम पूर्णं ॥ ८ ॥ मंदारमाला कुलिताल कायक्पाल माला कितमेसराय ।

दिव्य अंबनर्वचदिग वरायन्न निवायचन्मसिवाय ॥ १ ॥ एव सुध असुधं वा मम दोषो न दियते ॥ इति श्री मवत् १८५६ का साषे १७२० मासाना मासोतममासे पौषमासे सुभेकृष्ण पक्षे तिथौ सप्तमी ७ गुर वासरे घटि १५ पुरितग लिष्यत सुरोठ मध्ये मिसुर नथोलालिषायतं वैष्णव पुस्यालदान सुभ मस्तु कल्यानमस्तु ॥ १ ॥

दत्तात्रेय की रची 'अवधूत गीता' की भाषा टीका ।

संख्या ४३४. साखी, रचयिता—संतदास, कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—$3\frac{3}{4} \times 5\frac{?}{?}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—अथ स्वामी जी संतदास जी की साष गुरदेव की अंग की ॥
सतगुर वर परमारथी असी देइ वरगाइ ॥
धरी पात्रलक छू दाइ करी ॥ अधर मुलक ले जाइ ॥१॥
चौगम धरोया मुलक ॥ तामें सुरनर रहे समाइ ॥
अधर मुलक है रामनाम ॥ गाँहा जन पछ्या जाइ ॥ २ ॥
सतगुर मिलीया संतदास ॥ कटी भरम की पासि ॥
जमकर भागा जीव का ॥ वसा राम कै वासि ॥ ३ ॥
भौ भागा जमत्रास का ॥ लागा सतगुर वांण ॥
चौरासी का संतदास ॥ मिटि गया आवण जांण ॥ ४ ॥
गोला चलाया सवद का ॥ सतगुर ने जरचा जोहि ॥
.... ॥

मध्य—रामगरीव नवाज कूं कोई रटै गरीबी माहि ॥ तो काम हटै कुलपन मिटै ॥ वाद विषमता जाइ ॥ वाद विषमता जाइ ॥ सुरति समता सुष पावै ॥ तिसरा ताप सिराइ ॥ पाप फल निकटि न आवै ॥ तातें मजीए भावसूं ॥ दिढि प्रतीति स सोवारं पगट दरसि हैं ॥ जे रता सुमरण माहि ॥ जे रता सुमिरण माहि और आरंभ छ......... ॥

अंत—राजतेजधन जोवना मति वदी सम्हावो कोइ ॥ रावण वदी सम्हाइ करि ॥ जो गयो गमलो सोइ ॥ जो गयो गमुलो सोइ ॥ वदी को गुन्हो न छूटै ॥ अजहू न कल वणाइ-ताहि वरस्यो घा मूंट ॥ लंक भभीषण कूं मिली ॥ रोने की फल होइ ॥ राज तेज धन जोबना मति वदी सम्हावो कोइ ॥२५॥

॥ साषी ॥

प्रहलाद प्रति लउमा कह्यो ॥ जाकी साषि भागवत मांहि ॥
मित्र कपट अतिसें बुरो ॥ कबहूं कीजें नांहि ॥२६॥

विषय—साखियों और कुंडलियों में रचनाकर धार्मिक उपदेश किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ जीर्णावस्था में है। आदि का एक पत्र है और बीच के ८ पत्रे लुप्त है। दसवें पत्र से ३१ पत्रों तक संख्याएँ पड़ी हुई हैं। बाद के २२ पत्रे बिना संख्या के हैं।

संख्या ४३५. भवरगीत, रचयिता—संतदास या संतरसिक, कागज—देसी, पत्र—५७, आकार—६¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम—मीरजहाँपुर, पो०—सिटारा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥

॥ रागजयत श्री ॥

गनपति गजसुष सुषसार ॥ १ ॥
आनंद कारन जग विघन हरन प्रन रिधि सिधि बुध दातार ॥ २ ॥
अहिपुर नरपुर सुरपुर अजहरि हरपुर सुभ करतार ॥ ३ ॥
कलि जुग कवि जन कलपलता "कविसंत" विनायक चार ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

॥ राग श्री ॥

इत हरि उत व्रषभानजा जुगपद सिर नाइ ॥
ध्यान आन मन भावते जुग आयसु पाई ॥ ३ ॥
भवरगीत जुग प्रीत हित रचि गीत वनाई।
"संत रसिक" वरनै विमल संतन समुझाई ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ राग विलावल ॥

येक दिना प्रभु बैठि सुपासन गोपिन की सुधि आंन कही है।
है अग कथा प्रभुता सिगरी जौलौ व्रज की सुधि नाहि लही है ॥ १ ॥
ऊधौ वेगि हकार कही व्रजराव सषा मम काज सही नहे।
गोपिन गोपन के धन जीवन प्रान अधार रहे हमही है ॥ २ ॥
जा दिन हौं व्रज त्यागि कियौ उन घेर लियो मग रोकि रही है।
ता दिन ते सुधि लीनी न हौं उनके अब प्रेम बढ़ो अत ही है ॥ ३ ॥
नंद समेत सर्व व्रज लोग त्रिया विरहानल ताप दही है।
ज्ञान विहीन दुषी "कवि संत" स्व ईस्वर मं पहिचान नही है ॥ ४ ॥

अंत— ॥ राग पूलू ॥

मित्र वचन सुनि हरषे कृपा निधान।
मम प्रसंन्न ह्वै दीन्ही सो वरदान ॥ १ ॥
मागो विदा चरन गहि हिय हरषान।
भवन गये हलधर के उद्धव सुजान ॥ २ ॥
चरन परत जन देष्यौ भेट्यौ राम।
पूछी कुसल कही सब गवने धाम ॥ ३ ॥
भ्रमरगीत इति गायो "संत"।
अनिन जुगल चरन रति चाहहि सदा अछिन्न ॥ ४ ॥
नाथ कृपा कर दीजै लीजै जस भरि।
"संत" समीपी कीजै नित रहहि हजूर ॥ ५ ॥ १५६ ॥

इति श्री भ्रमरगीत गत रसिक विरचितायां उद्ध (व) गृह प्रवेसो माग समस्त ॥ संपूरनं ॥ मार्ग कृष्ण ॥ १०॥ रवौ ॥ संवत ॥ १६२३ ॥

विषय—उद्धव का गोपियों को ज्ञानोपदेश करना।

संख्या ४३६. विचारमाला की टीका, रचयिता—सदानंद, कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—$3\frac{1}{10} \times 4\frac{9}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् गोपालचंद्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुल्तानपुर (अवध)।

आदि—ओं श्री गणेशाय नम. ॥

॥ दोहरा ॥

नमो तग्य सरवातमा टीका माल वीचार।
आटारारथ पूरण करो विघन दूर करमार ॥ १ ॥
अथ विचार माला की टीका आप्यरारथ लिप्यते ॥ दो ॥
नमो नमो श्रीराम जू सत चित आनद रूप।
जिह जाने जग सुपनवत नासे भ्रम तम कूप ॥ १ ॥ टीका ॥

नमसकार है नमसकार है श्री राम जी कौं ॥ श्री जु है लप्यमी ज्ञान अर सकल रूप सो तिसकर कै संजुगत जो है राम कही रो रम्या हू वास रव विषै जीव रूप करकै ॥ सो सत चैतन अनंद है ॥ जिसके जाने ते जगत जोहै सुपने की वतकही रो न्याई सो नास हो जाता है तम कहीरो अंधेरा कूप ॥ १ ॥ मूल ॥

राम मया सत गुर दया साध संग जब होइ।
तब प्राणी जाणै कछू रह्यो विषै रस भोइ ॥ २ ॥ टीका ॥

सो अैसे श्रीराम की मया कही रो दयातै अर सतगुरो की दया तै संतो का संग जब होता है ॥ तब प्राणी जानता है कछू इक जो रह्या हौं मै विषै रसो के भोगणे विषै ॥

अंत—

॥ मूल ॥ सोरठा ॥

सत्रह सै छवीस संमत माधव मास सुभ।
मो मति जित कहूँ तीस तेतक वरन प्रगट करी ॥४२॥

॥ टीका ॥

सतारह सै छवीस संमत अर माघ के महीने सुभ
विषै मेरी मति जेती कछ थी सो तेही इक वरनी है प्रगटि करिकै ॥४२॥ मूल ॥

गीता भारथ को मतो ऐकादस की गत ॥ अष्टावकर वसिष्ट पुनि कछक आपनी उकति ॥४३॥ टीका ॥ भगवत गीता अर महा भारथ का ऐकादस सिकंद की जुगति ॥ तैसेही अष्टवक्र अर वसिष्ट जी के मत को ले करिकै फेरि कछक आपणी उक्त भी कही है ॥४३॥
इति श्री विचार माला सटीक आतमज्ञान की स्थित व अष्टमो विश्राम ॥ ८ ॥

॥ दोहरा ॥

टीका माल विचार की अरथ रच्यो सुपदानि।
सदानंद गुर किपा तें हेत सुहाग्यो ज्ञान ॥ १ ॥

इति टीका समाप्तं ॥

विषय—अनाथ दास कृत विचारमाला की टीका।

संख्या ४३७. अखड प्रकाश, रचयिता—सदाराम, कागज—देशी, पत्र—११७, आकार—६¾ × ४ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९३०, प्राप्तिस्थान—प० रघुराज वैद्य त्रिपाठी, स्थान व पोस्ट–सुहौली, जिला–आजमगढ़।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नम. ॥

॥ दोहा ॥

एक रदन करि वदन जन विघ्नहरण गणराय।
शिवा सून सदगुण सदन वंदौ पद सिर नाय ॥ १ ॥
हरिगुर गणपति सारदा वंदौ पद सब केर।
करुणा करि उरय हरौ हरहु विघन घनेर ॥ २ ॥
मगल कीरति राम की मूरति मंगल धाम।
सर्व क्रिया मगल मयी मगल राम सुनाम ॥ ३ ॥
चित्रकूट चित मह बसौ लक्षिमन दिढ निर्वेद।
आत्म विद्या जानकी रामातम विन . ... .द ॥ ४ ॥
सर्व शक्ति सर्वातमा सर्वेश्वर सुखधाम।
सदा राम हृदि वास करु रामचद्र अभिराम ॥ ५ ॥

अंत—द्वैत हरै दोहरा सोई राखै अद्वैत अनंत।
ता अद्वैत अनत मैं सदाराम विहरत ॥२८॥
द्वैत हरै सो दोहरा राखै एक प्रकाश।
सदा राम ता एक मैं विद्वत जन कर वास ॥२९॥
अष्टोत्तर दोहा अष्टशत करि कियो अखंड प्रकाश।
ता अखड प्रकाश मैं सदा राम राम को वास ॥३०॥

॥ छंद ॥

सवैया सोरठा दोहा सहितहि जानि।
सह असंख्या सकल मिलि भए लेहु पहिचानि ॥३१॥

इति श्री सदा रामेण विरचित अखंड शिष्य वर्णन नाम सप्तम खंड संपुर्णम् श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः। श्री सं० १९३० भाद्र शु० ॥ ५ ॥ दस्तषत ॥ सिवदास पांडे ॥ शुभ स्थाने ग्राम वास हरदीपुर ॥ जादसी पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशी लिखित मया पुस्तक बाबा मंत्रादान महंथ का स्थान सहीपुर ॥

विषय—आत्म ज्ञान विषय वर्णन।

संख्या ४३८. बरवै षट्ऋतु, रचयिता—नवलस्याम, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६¼ × ३¾ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

तपन तपै रितु ग्रीषम तीपन घाम।
ताकि तरुनि तन सीतल सोवै वाम ॥ १ ॥
छाह सघन तरु भावै वालम साथ।
की प्रिय परम सरोवर सीतल पाथ ॥ २ ॥

वहै प्रबल अति दारुन असहन वात ।
मांझ नर्म मन भावै सर जलजात ॥ ३ ॥
पिय संग सेज सोहावनि भवन उसीर ।
भावै अंग विलेपन सुरभि समीर ॥ ४ ॥
जेठ मास नपि सीतल वर कै छाह ।
फरई नींद सिन्हनवां पियकै बांह ॥ ५ ॥
पिय कर परस सरस अति. चंदन पंक ।
भावनि रजनि सुहावनि दरस मयंक ॥ ६ ॥
पिय संग सीतल होतल जो विधि देइ ।
वउरिन क......छोह पान वहु लेइ ॥ ७ ॥
पुनि मोर सुपं जोवै पून तर भेक ।
सिह सटा......सोवै मृग दस एक ॥ ८ ॥
पाटल याम पटल वन भावै ताहि ।
भूलेउ नाह......र घर आवै ताहि ॥ ६ ॥
"सवलस्याम" विनु ग्रीषम उपवन वाग ।
तव सीतल अव होतल जनु दव लाग ॥१०॥
:o: :o: :o:

अंत—कुंज कुंज वन उपवन सरित समाज ।
तनु मनु देपि दहतहै विनु व्रजराज ॥४७॥
भूलेउ भवर न एहि वन आवन कीन्ह ।
कुसुमित वेलि कवनि सपि मन हरि लीन्ह ॥४८॥
"सवलस्याम" संग एहि व्रज सव सुप रास ।
क्वार कुअर विनु नहि सुप कातिक मास ॥४६॥
मधुकर तुमहि दोप नहि स्यामहि लाग ।
एहि व्रज विरह विया कर समय विभाग ॥५०॥
पहिरायउ मन मोहन नंद कुमार ।
अव सपि हरत हेरि हिय मालति माल ॥५१॥
हरत हेरि मन मधुकर सरद निहारि ।
पेलेउ स्याम सपा संग एहि रितु सारि ॥५२॥
वैरिनि सवति कवनि असि जेहि पिय लीन्ह ।
मनमोहन मनु मोहेउ का पढि दीन्ह ॥५३॥
गरिन जाउ सपि उपवन सवति अंकूर ।
जो विधि करै न भावै वालम पूर ॥५४॥

इति सरद

—अपूर्ण

विषय—गोपियों का विरह वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना अपूर्ण है। ग्रीष्म, वर्षा और शरद का ही वर्णन है, अन्य ऋतुओं का वर्णन नहीं मिलता। हस्तलेख में प्रत्येक पत्र में एक ही ओर लिखा गया है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नहीं।

संख्या ४३६. महिम्न स्तोत्र भाषा, रचयिता—महाराज समरसिंह, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—११$\frac{1}{7}$ × ८$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि, , नागरी, लिपिकाल—सं० १८८० वि०, प्राप्ति स्थान—कुँवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—माहीपुर (नौलखा), पो०—हंडिया खास, जिला—इलाहाबाद।

आदि—........................ हाय जगत ॥ ५ ॥

इहा धौं को है कायधौ कैसो उपाय कहा कैसो वंटकु पावै ।
कौन धौं सामा है जाहि लवै विधि कौनइ धौं विधि विश्व बनावै ।
यो विधि को जो अनेक विवेक विहीननि को वरजोर बकावै ।
तेरी अतर्क्य है सो प्रभुता मे कुतर्क्य कहा थिति पावै ॥ ५ ॥ ० ॥

अंत—

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्र मेतत्पठति परम भक्त्या शुद्ध चित्तः पुमान्य. ।
स भवति मति पूर्णो रुद्र तुल्यः परात्मा प्रचुरतर धनायुः धनवान् पुत्रवाश्च ॥३७॥

जे दिन ही दिन "श्री समरेस" के कौन कवित्त निचित्त धरैं जू ।
आनंद संज्जत ते शिवलोक मे ह्वै शिवरूप सदा विहरैं जू ।
या जग मे धन पुत्रनि मंडित ह्वै चिरजीवित कीर्त्ती भरैं जू ।
सुद्ध हिये दृढ भाव लिये पुनि जे जग मे जन पाठ करैं जू ॥३७॥

:o: :o: :o:

जप तीरथ व्रतदान जो जाग जोग जग माह ।
तेसन यानुति की गने एक कला सम नाहि ॥४०॥

इति श्री मन्महाराज समरसिंह विरचित महिम्न सस्कृत व भाषा संपूर्ण शुभमस्तु ॥ कल्याणं करोतु मंगलं ददातु सवत् १८४० ॥ पौष शुक्लः १ ।

विषय—शिव स्तुति की गई है ।

संख्या ४४०क. ल० (लक्ष्मण शतक), रचयिता—समाधान, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी (दाता—श्रीयुत कन्हैयालाल केशरवानी, स्थान व पोस्ट—भारतगंज, जिला—इलाहाबाद) ।

आदि— :o: :o: :o:

वीर विधिनिको ग्यात अनरू को जत त्राता राम भ्राता महारन मैं ॥ ५ ॥
ठाढो युद्ध भूमि मैं विसुद्ध राम बंधु विजय हौलै कीर्ति लेत कोटि रुद्र के अतक को ।
क्रुद्ध दृग दाहक दुअन दल दाहैं लेत ढाहैं लेत मानो त्रिकूट गिरि वक को ।
भनै "समाधान" दसउ भुवन मरोरैं लेत ढोरैं लेत वंदी सुर सिद्ध मुनि रक को ।
रन को झकोरैं लेत सुभट लटोरैं लेत सुजस बटोरे लेत टोरे लेत लंक को ॥ ६ ॥
आयो इंद्रजीत दसकंध को निवध वध बोल्यों राम दधु सों प्रवंध किरयान को ।
कोहै असुमालि कोहै काल विकराल मेरे समुहैं भये न रहै सान महेसान को ।
तूं तो सुकुमार यार लछन कुमार मेरी माखे सम्हार को सहैया घमसान को ।
वीरन चितैया रन मंडल रितैया काल कहर पितैया हौं जितैया मघवान को ॥ ७ ॥
इतै रमानंद उतै रावन को नंद बड़ी मार यौं जिलंद ज्यौं धनंजय निषाद को ।
दोहूँ रनधीर दोहूँ धनुष धुरीन कान कुंडल कोदंड चंड मंडली विषाद को ।
भूप रन भूपर दिसान विदिसान पर छाये सुरपंउ घोर मंडित निनाद को ।
जाना बलि व्योम गिर वाना बलों थकों देवि बानावलो लछन कुमार मेघनाद को ॥ ८ ॥

:o: :o: :o:

मध्य—

कहूँ हथ्यिन पं हथ्यि कहूँ रथ्यिन पं रथ्यि कहूँ वथ्यिन पं वथ्यि कपि कौनप मिलान ।
कहूँ मुंडन पं मुंड कहूँ रुंडन पं रुंड कहूँ तुंडन पं तुंड परे लोटत धरान ।
मच्यो जोर गफार जंग टुट्ट फुट्ट तन भंग छिन्न भिन्न अंग अग भगे राछस जमान ।
तहाँ तेज के निधान करि कोप "समाधान" वीर राछन सुजान झुक झारें किरवान ॥
रनजीत करें वृह रिछ मायागुन जूह भगवद्दर मगूह लखि वीर विसियान ।
महाबली मेघनाद गल गज्ज सिंघनाद देदि जुझे मनुजाद कियो माया को विधान ।
बन्यो गात को प्रसार दसों दिसा अंधकार नहीं सूझे निजकार कपि लागे अकुलान ।
तहाँ तेज के निधान करि कोप "समाधान" ॥ ० ॥
उठे वारिद उमड घोर घटन घमड झंझा सूरन सुमड धूर धुधर उडान ।
भई बद कपि दृष्ट लागी होन ओन वृष्ट मन मूल सर्व सृष्ट हाड दत केस कान ।
उठीं डाकिनि अपार सिर छूरिन उदार भरें लोहू सो कपार करें काट कतलान ।
तँहा तेज के निधान ॥१३॥
बढ्यो जोर पारावार चहूँ ओर धारापार नहिं जासु वारपार ग्रह ग्रह उछलान ।
करें असुर अतंक मिलें नभ में निसंक अनदेखे हूक हूक अस्त्र घालत अमान ।
फिरें भूत प्रेत धार मुख बोलें मार मार कपि तीस असरार सार झार झहरान ।
तँहा तेज के निधान ॥२४॥

अंत—इत वीर लछ्छन पिक्यो तछ्छन की सलछ्छन गज्जियं ।
रनसील अंगद नील नल केसरी तज्जन तज्जियं ।
बढे जामवंत दुरन दल हनुमत आदिक हुंकरे ।
गिरि विटप ले भट प्रलय लखि जनु फनी फनधर फुंकरे ॥६६॥

॥ छद दोहा ॥

सगर दछ्छ लछ्छन पिक्यो उत रछ्छस बलवान ।
उद्भट कौनप कपिन को मच्यो घोर घमसान ॥ ७ ॥

॥ छद त्रि ॥

इत लछमन वीरं विति रनधीरं कुप्प गहीरं जुद्ध रच्यो ।
उत दसमुख नंदन सुभट निकंदन उग्र अनंदन समर मच्यो ।
दोहू दल भट कोपें रन रस रोपें चित चट चोपे उमग जगे ।
जनु प्रलय अलोपे जम जग लोपे चढ रन गोपे राउन लगे ॥६७॥
भट मर्कट धावें गिरिन चलावें अरिन..... ......
:० :०: :०:

—अपूर्ण

विषय—लक्ष्मण और मेघनाद की लड़ाई का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं । संख्या १।२।१४।१५।१६।१७।१६।२० के पत्रे नहीं हैं और नं० २३ के पश्चात् के पत्रे भी लुप्त हो गए । यह कितना बड़ा था कुछ पता नहीं ।

संख्या ४४०ज. लक्ष्मण जंग, रचयिता—समाधान ।

आदि—लक्ष्मणजंग—समाधान कृत

राम रमा रामानुजहि प्रनवौं पवनकुमार ।
श्रीगुरु गणपति चरण भजि श्रीमत शंभु उदार ॥ १ ॥

श्री वागेस्वर पद पद्म प्रणवो परम पवित्र ।
मेघनाद के जुद्ध मे वरणो लषन चरित्र ॥ २ ॥
श्री रामानुज मनुज नही धरणी धारण धीर ।
वर्दो जन मन अछमन लक्ष लक्ष्मण वीर ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

प्यारो सीताराम को उजारो रघुवस को अन्यारो जन पंज धारी न्यारो करो रन को ।
रवि कुल मडन प्रचड वरिवड भुज दडन उदंडन सो पडन पलन को ।
समाधान रक्षक अपक्ष पक्ष लक्ष्मन अक्षमन लक्षमन रक्ष दीन जन को ।
सींघनं को सर्व गर्भवतन को गर्भगज अर्भ अवधेश को मगर्भ स्वहन को ॥ १ ॥
भूप दसरथ को नवेलो अलवेलो रगरेलो रोप भेलो दल निच्चर निकर को ।
समाधान कीरति उमडो वलवडो चडीपति सो घमडो कुलमडो दिनकर को ।
इद्रमद गंजन को भंजन प्रभजन तनय को मनरंजन निरजन उभर को ।
राम गुन ज्ञाता मन वाछित को दाता हरि भक्तन को त्राता धन्य भ्राता रघुवर को ॥ २ ॥

मध्य—

महावाहु भूप दसरथ के कुमार मारहु ते सुकुमार जंतवार समरन को ।
असरन सरन अमगल हरन भार धरनी धरन मजबूत महामन को ।
नंदन सुमित्रा को निकदन अमित्रन को ध्यान जग वद दहो वधु मनहुन को ।
कंता उर्मिला को श्री निहता दुष्ट जीवन को हता इद्रजीत को निहता पन्नगन को ॥
ठाढो जुद्ध भूमि मे विसुद्ध राम वधु विजय हीले कीर्ले लेत कोटि रद्रके दटपादो ।
क्रुद्ध दलदाहक द्रुवलदल ढाहे लेत ढार्ये लेत मनहु त्रिकूट गिरि दवा को ।
रन को झकोरे लेत सुभद्र लटोरे लेत सुजस वटोरे लेत टोरे लेत लका को ।
इतहू प्रचड छोर दडन कठोर घोर धनुष टकोर छोर छोनि नुगगन मे ।
भनै समाधान अगदादिक समेत ओज उमग भपत को सवाधे छनपन मे ।
काल ज्यो कराल कोप जलं ज्वाल माल मानो होत है अकाल प्रलय काल त्रिभुवन मे ।
समर सघाता वीर विजित दिखाता अनर को जन्दाता रामभ्राता महान मे ।
उडाय मेघमाल को उताल रच्छपाल वाल पाग वान गक घाल पान जाल दाम ।
यो न होत होयगो न ज्यो अमान इद्रजीत रामचंद्र वधु सो कराल जुद्ध मचिय ॥११८॥
दडत मर्कटावली विचाल मरुतावली सरावली चलाय रच्छतावली सदाग्यि ।
निशक लंकनाथ नद इद्रवान पूरि भूरि अद्रि पूरि चूरि कै गरर गाज डारिय ॥
परत वज्र देखि राम वंधु व्रह्म अस्त्र माप रच्छ ओप ग्रहवोध चउ टोप धारिय ।
जरंत जातुधान जान राघवाधिपत्ति अत्ति पार पत्ति हित पासु पत्ति अस्त्र धारिय ॥११९॥
घलंत रुद्र वान कोटि रुद्र कुप्य मानवे दिसान मैं दिसान मै कृपानुधार सज्जिय ।
रमेश वधु क्रुद्ध ह्वै रमेसवान चोट घल्ला कोटि फारा रुद्र मग लीन कै उर्माग्यं ॥
महा प्रलै कराल काल ज्वाल जाल लोक कै विलोकि वोध वोध मैं त्रिलोक लोक उग्गियं ।
विपच्छ पच्छ भच्छ भच्छ रच्छ कच्छ धरच्छ ररछ ररछनंद को सो वच्छ फोर २ जग्गियं ॥१२०॥
करोर रच्छ रोर वच्छ वच्छ फोर वाहु तोर घोर घोर कै मरोर भूपताल धाममान भो ।
जहान मे अकंपमान कपमान कंपमान कै दिसान वे दिसान नुभ्रवानमार भो ॥
अखड चंड मारतंड मंडलै उमडि कै उदड ज्वालमाल मड जात यो प्रमान भो ।
अमान रामवान कोटि भानु को प्रमान कोटि वल्पक कृसानु ता समान भासमान भो ॥१२१॥
मची सुलंक हाय हाय जोर ज्वाल छाय छाय राम वान धाय धाय रच्छ वर्ज मज्जियो ।
उड़ाय कुभ मस्त को प्रहस्त को निरस्त कैं समस्त जोर जस्त जेर जस्त कं विसज्जियो ।

अरंगनादि वृंद सीस बीसबाहु गर्भ सीस कहि मेघनाद सीस पास आई अज्जियो ।
अजीत बंधु नाम को सुजीत इंद्रजीत को अजीत इंद्रजीत जीत नाम पाय गज्जियो ॥१२२॥
इंद्रजीत मुंड काटि रच्छ मारि मुंड पाटि लंक के कपाट फाटि डाटि जुत्थपावली ।
सुगनरं पछारि कै नरानकं सघारि कै निकुंभ कुंभ मारिकं बिडारि रच्छसा वली ॥
यंत मान जुद्ध जीति लच्छन लसंत गर्भ गर्भ वंत गजि कै गजंत मर्कटावली ।
बजंत व्योम दुंदुभी जजंत पुष्प वृष्टि सो जभूत दिव्य अस्तुती समस्त देवतावली ॥१२३॥

॥ छंद कमला ॥

गत्थन अरत्थ समरत्थ सुत हत्थन समत्थ दसमत्थ सुत मत्थ रन ।
गद्द घननद्द हन नद्द अनद्द बल सद्दरा बिरद्द अनवद्द जस गद्द गन ॥
मद्द लन नद्द नम नन नग ग्द्द कर रद्द दर हद्द दल वद्दल मरद्दलन ।
धान समरच्छ तन अच्छ जन अच्छ मन दच्छ जय लच्छमन लच्छ जय लच्छमन ॥१२४॥

॥ छंद अमृत ध्वनि ॥

जय जय लक्षित लच्छमन लच्छन रच्छ सुखंड ।
जीत्यो सुरपतिजीत कहँ मंडित प्रधन प्रचंड ॥
मंडित प्रधनु प्रचंडित प्रति भट दंडित दुवन उदंडित प्रति भय ।
दंडद्दुन भुज दंड द्वय बल डंडक्कर बल बंडक्कर छय ॥
दंडत गर लखि गंडगजि गिरि चंडनकुनप विहंडग्गा तड्रय ।
दंडित त्रिदस उदंडित प्रगट अखंड ध्वनि अहमंड ज्जय जय ॥१२५॥

॥ दोहा ॥

जै जै धुनि छावहि गगन गावहिं मंगल गान ।
बरसावहि सुर मुनि सुमन वर पावहिं सामधान ॥१२६॥

॥ छप्पय ॥

जै जै सुर उच्चरहि वृष्टि कुसुमावलि सज्जहि ।
जामवंत हनुमंत अंगदादिक भट गज्जहि ।
इंद्रजीत कहँ जीत चल्यो सौमित्री हितकरि ।
पहि सीस दससीस नंद को ईस अग्र धरि ॥
जुग जोरि पानि समधान कह सीस आनि पद पंक अहँ ।
करि जस गहीर रनधीर वर गिरयो आनि रनधीर कहँ ॥१२७॥

जय लछिमन रनधीर बीर बीराधि बीर वर ।
जय उदंड भुज दंड चंड कोदंड दंडधर ॥

विषय—लक्ष्मण और मेघनाद के युद्ध का वर्णन ।

संख्या ४४१र. नर्मप्रकाश भाषा, रचयिता—सरदार कवि, कागज—आधुनिक नीला, पत्र—१३३, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२३१, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०६, वि०, प्राप्तिस्थान—मदन गढ़न, पोस्ट—अमेठी (ई० आई० आर०), जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—.................................

.... हृदमपा भाव ॥

॥ सोरठा ॥

औ जह सिद्धी नाहि है सिपाई धिपानही ।
तहा विशेप्यन छाह गयो विसेपन याही ते ॥ ७ ॥

॥ वार्ता ॥

औ जहा सिद्धि नही है औसिपाधि ईषा को भी अभाव है तहा विसेप्य विशिष्ट अभाव के अभावते विशेषरण को भी अभाव जानिये ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

जह सिपाधि इषा रहै तहां सिद्धि श्रीराम ।
रहै कि अथवा ना रहै होत पक्षता श्याम ॥ ९ ॥

जहा सिसाध ईषा रहै तहा सिद्धी रहै । एथि वो नारहे पक्षितामो होय है ॥ सिद्धी रहे तो विशेषन निष्ट विशेप्याभाव औ न रहे । तो विशेपन विसेप्याभाव औ जहा सिद्धि रहै सिसाध-ईषा मरहै तहा पक्षता नाही ॥ काहे की सिसाधईषा विरह विशिष्ट सिद्धि रहै ।

अंत—

सगुन निधान हनुमान ऐसो नाम वृद्धि वुद्धि सुद्धि धाम कामतरु सो जुदानसूत ।
तेज मार्तंण्ड ते अखड दोइ दड भुज रजतमहारी भारी दल वल वाद वूत ।
कवि सरदार ते अनाथन को नाथ गाथ श्रुति सुद्धिधारी करी करमफलाअमूत ।
पंजन सो गंजन गनीमन के गंजहू जो राममनरंजन प्रभंजन तिहारो पूत ।

॥ दोहा ॥

ग्रह रचि गगन वहोर ग्रह गनपतिदसन सुपास ।
कृष्ण जन्म तिथि को भयो पूरन तर्क प्रकास ॥१२॥
ईश्वर भूपति की भली कृपा कीर सुचि पाय ।
भाषा किय सरदार कवि तर्क प्रकास उपाय ॥१३॥

इति श्री सरदास कवि विरचिताया तर्कप्रकाश भाषा संपूर्णमस्तु ॥

विषय—न्यायशास्त्र का वर्णन । ग्रंथ मे सात अध्याय हैं ।

रचना काल

९ ० ९ १
ग्रह रचि गगन वहोर ग्रह गनपति दसन सुपास ।
कृष्ण जन्म तिथि को भयो पूरन तर्क प्रकास ॥१२॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आरंभ के १६१ पन्ने लुप्त हो गए हैं । रचनाकाल संवत् १९०९ वि० है । लिपिकाल का उल्लेख नही है ।

संख्या ४४१ख. राम कथा कल्पद्रुम, रचयिता—सरदार कवि, निवासस्थान—ललित-पुर (झासी), कागज—आधुनिक, पत्र—५७, आकार—८½ × ५ इन, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सन् १८६२ ई०, प्राप्ति स्थान—ददन सदन, पो०—अमेठी, (इ० आई० आर०), जिला—सुल्-तानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कवि निबद्ध रामकथा कल्पद्रुम लिख्यते ॥

॥ सोरठा ॥

कासी कासीनाथ कासीवासी जन विमल ।
वृत्ति अकासी साथ जे कासी कासी जपत ॥ १ ॥

निपद पावन नाय माय हाय "सरदार" करि ।
कहत नाम गुन गाय कवि निरुद्ध कलि कलुष हरि ॥ २ ॥
बंदौं कासीराज श्री ईस्वरी प्रसाद वर ।
गौतम कुल सिरताज उद्दितेस गुन कलि करन ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

प्राग परमहित पर उपकारी । परम पुरान प्रगट गुन भारी ॥
गाम सदृश रावन जन जानें । विवरन नाम मनोहर ठानें ॥
सुमन सुमन दै भरतन कीनें । करत असोक चतुरमुष चीनें ॥
तोग्य इंद्रजीत वस कारी । मंजु घोष रुचि सरस सिहारी ॥
निन हित चित्त न वृत्त पसारी । मकरपाय अति कुमति पियारी ॥

अंत—

राम रस रसिक रसीले राघो दास नंद भाव सिंह जग भूप अति चित चाई के ।
ताग पुत्र प्रगट भवानी भूर भाव जानी ताके जयसिंह अग अमल उपाई के ।
तासु सुत गाजे हरिजन हरीजन भये ताके सरदार भूर भाजन भलाई के ।
काशी के विलासी भये अब सुख राशी पाछे वासी ललितापुर प्रकाशी कविताई के ॥

इति श्री महाराजाधिराज काशीराज श्रीमद् ईश्वरी प्रसाद नारायणस्याज्ञाभिगामी ललितपुर निवासी हरिजन कवीश्वरात्मजेन सरदाराख्य कवीश्वरेण विरचिते श्री रामकथा-कल्पद्रुमे प्रथम अस्कंद समाप्तम् ॥ १ ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—रामकथा का वर्णन ।

संख्या ४४७. सुर तरंग (संगीत), रचयिता—राजा सरदार सिंह (सुलतान सिंह सुत), कागज—देशी, पृष्ठ—३६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५०, अपूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ८, पु० स० ४ ।

आदि—पृ० १६ ॥ ताल चौताली

मंजन सुगंध करि उजल बनायो वेष उजल सुमन माल पहरी अनदिनी ॥
घसि घनसार रस चंदन लगायो गात मुदित प्रभातहीं ते आजु जग वदनी ॥
कहे सिरदार हार मणिन के आभूषन भूषे ब्रजभूषन की विरह निकंदनी ॥
उजल पहरि चिर हसन रमावत सी सारदास रूप बनी वृषभान नंदनी ॥६१॥

मध्य—पृ० २८ ॥ अथ रागिनी ललित सरूप कथनं

॥ कवित्त ॥

चंपक वरन गोरे तन गरे फूलमाल भूषन विसाल तन द्वादश अमोल की ॥
सोहनी सुधारें जागी वारें मुख दंती तैसी कंठ में दिपत लीक लोलत तमोल की ॥
कहे सिरदार घनी सरिगम सुतान वाल ओडो जान धैवत मदन मुनि चोल की ॥
गावत वसंत प्रात गुनी अरदास है रागिनी ललित प्यारी ललित हिंडोल की ॥

अंत—प्राप्त नहीं है ।

विषय—राग रागिनियों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—यह पुस्तक अपूर्ण है । आदि के पृष्ठ संख्या २ से ५ तक चूहे के कतरे हुए हैं । बाद में पृ० १३ से ५० तक ठीक हैं ।

संख्या ४४३. वैत सरमद, रचयिता—सरमद, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—पं० हनुमानप्रसाद मिश्र, ग्राम–सोनई वडी, पो०–करछना, जिला–इलाहाबाद)।

आदि—दया गुरू की ॥ लिख्यते ॥ वैंत सरमद की ॥ दया गुरु ॥

नागाह मखफी गंज से इरफान का सोहरा हुआ।
याने जिमी पैदा हुई और आसमा वरपा हुआ।
हम भी अदम से चौंक उठे हसती का जव गौगा हुआ।
किसमत का दफतर वा हुआ कोई गदा कोई साह हुआ॥
गर वो हुआ तौ क्या हुआ गर वो हुआ तौ क्या हुआ॥ १॥
कोई ईसवी कोई मुसवी कोई चिस्ती के है दीन मे।
कोई राफजी कोई पार जी कोई कुफ्र के आईन मे।
हादी ने हमसे कहि दिआ पहिले यह सव तलकीन मे।
नौरग का जलवा है सव इस आलमे रगीन मे।
गर यो हुआ तौ क्या हुआ गर वो हुआ तो क्या हुआ॥

अंत—इस आलमे रगीं सेती आजादगी उमेद कर।
मुलहद मवाग्रज हो अगर उसको तू मत तकलीद कर।
तू इस फलक की सैर मे फिर पाक की उम्मेद कर।
आजादगी मजर है काम कर तमासा दीद कर।
गर यो हुआ॥ ७॥

अव झाड दामन चल निकल उलझावैं से फिर काम क्या।
फिराऊँन औ रहामं हुआ इस काम मे आराम क्या।
मन से दुई जव दूर की फिर कुफ्र और इसलाम क्या।
जव हक उजागर हो गया अल्लाह और फिर राम क्या॥
गर यो हुआ तौ क्या हुआ गर वो हुआ तौ क्या हुआ॥ ६॥

॥ समपूरन ॥

दया गुरु की

विषय—ससार के सव धर्मों की एकता का वर्णन।

संख्या ४४४क. नई काव्य कथा (नैकाव्य कथा), रचयिता—सर्वेस्वर दास (कुरथा), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—८ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—संवत् १८८७ वि०, लिपिकाल—सं० १६०७ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० भागवत तिवारी, ग्राम–कुरथा, पो०–पीरनगर (गोरावाजार), जिला–गाजीपुर।

आदि—राम श्री गनेस आए नम्ह श्री स्तोरते नम्ह श्री सुभ देवता नम्ह हनम्तह

॥ दोहा ॥

करता राम करै सो होइ॥ जुग जुग दुजा अवरन कोइ॥
घर एक जो औजनीहारा॥ पतरे हरी जनी सो वनीजारा॥

:o: :o: :o:

तब उंकार सब्द धुनी बाजै ॥ नादं बींद दुइ भाती बीराजै ॥
नाद घट जीमी बेनु मुरचगा ॥ भृकुटी पर होइ तान तरगा ॥
गग जमुन दोउ गीरा समाइ ॥ चद सुजं दोउ मेरी जाइ ॥
श्रापुहि श्रापु परम परकासा ॥ रुप न रेप जीमी सुन्य श्रकासा ॥
चेतन्य श्रानद होइ तन बोइ ॥ सोहं सोहं सोर ताहां होइ ॥
एही विधी जोग करं जन जबही ॥ माम्रा फद छुटं जग तबही ॥
श्रंत—सपत बीचार पढं जन जोइ ॥ सर्व कामना पावं सोइ ॥
साल श्रठारह सं सतासी ॥ चइत मास ऐ ग्रंथ परगासी ॥
जन सरबेस्वर कहे बखानी ॥ जन मन को सुप्रेम पहिचानी ॥

॥ दोहा ॥

राम नाम सत सार हे झूठो सभ बेवहार ।
जन "सरब्रेस्वर" मुक्ति कं उतरी गए भव पार ॥ चौपाई ॥

इती श्री सम्वत १९०७ समनाम नितो चइत सुदी पुरन वासी कं नंकाव्य कथा संपुरन सुभ मस्तु श्रागे जो प्रती देखा सो लीखा मम दोस न दीश्रते श्राग कीत सरवस्वरदास गोसाइ कं सतनाथ दसपत चेत मनी भगत भावीन गर दड पुरति काम हे।

विषय—निर्गुण मतानुसार भक्ति श्रौर ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

साल श्रठारह सं सतासी ॥ चइत मास ऐ ग्रंथ परगासी ॥

संख्या ४४४ख. नैंकाव्य कथा, रचयिता—सरबेस्वर दास, स्थान—कुरथा, (गाजीपुर), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—९.७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण, रुप—प्राचीन, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९१० वि०, प्राप्ति-स्थान—पं० भागवत तिवारी, ग्राम—कुरथा, पो०—गौरनगर (गोरा बाजार), जिला—गाजीपुर।

श्रादि— ॥ दोहा ॥

विघन हरन गनपती चरन कारन सुमंगल मुल ।
बरनो बार बार प्रभु मोपर होहु श्रनकुल ॥
गुर पद पदम पराग सिर सखीन्हो दें धरि ध्यान ।
कहो सपत दीन की जथा ग्यान बीचार बखान ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु बार के कीन्ह बीचारा ॥ गुर के सरन होहु भव पारा ॥
पहिले रहे एक करतारा ॥ रुप न रेख नहीं श्रकारा ॥
इच्छा रुपी प्रगटी नारी ॥ श्रस्ट भुजा श्राउध कर धारी ॥
प्रणव सबद जब बोलत भएउ ॥ तीनउ गुन कर तब उतपति लएउ ॥
रज श्रज सत हरी तमो महेसा ॥ तीनो गुन धारेव त्रैभेसा ॥
नीरंकार तब श्रंग्या दीन्हा ॥ तीनो देव श्रीस्टी तब कीन्हा ॥
पाच तत्व करि सम सैंवसारा ॥ जीव चराचर बीबीधी परकारा ॥
पाचव मेटं मैठं गुन तीनी ॥ इच्छा नारी ब्रह्म होई लीनी ॥
तब रहे केवल श्रापुहि श्रापा ॥ जाहि भजत मेटत संतापा ॥
"सरबेस्वरदास" कहे समुझाई ॥ राम भजन बीनु जरनी न जाइ ॥

श्रंत—कहे सरवेस्वरदास श्राम नन्नी जगन की गंगा तट कोतवाम गाजीपुर कुरथा निकट ॥

॥ दोहा ॥

राम नाम सभ सार है झूठो सभ बेवहार ।
जन "सरबेस्वर" समुझो कं उतरी गए भव पार ॥

इति श्री संवत् १९० वि० दम मंना मनी पुस सुदी ११ के नद्व काव्य कथा संपूरन शुभ मस्तु कंल्यान मस्तु आगे जो प्रति देखा सो लाखा मम दोस न दीयते आगे पुस्तक ने मालीक ग बावा ब्रह्मचारी गोसाई साकिन कुरथा परगने हंडिया इलाके गाजीपुर आगे दसखत चेतमनी भगत सकीन कुरन पर के पुरा पर मोकाम राम राम ॥

विषय—निर्गुण मतानुसार ज्ञानोपदेश और भक्ति वर्णन।

संख्या ४४५. ज्योतिष, रचयिता—सहदेव, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६१/१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९५, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भोलानाथ (नंदलाल) ज्योतिषी, ग्राम-धाता, पो०-धाता, जिला-फतेहपुर।

आदि—अथ विवाह गणिता

॥ दोहा ॥

मांश तीनि वैसाषते आगहन फागुण मांह।
शौर मास मे जानिऐ इनमे उचित है व्याह॥
दुहु ज्येष्ठ अरु ज्येष्ठ मे शुभ दाएक नहि व्याह।
ज्येष्ठ मगल ज्येष्ठ मे होत न सुख निरवाह॥

॥ चौपाई ॥

पहिले वार चार करावै फिर पंडित से भेद गनावै।
वरग वरन औ नाड़ी जोन राशि मिलाइ पृत सो लीन।

॥ अथ वरग जानव ॥

आ इ उ ए गरुड़ विचार का खा ग घा है मंजार।
चा छा जा झा जाने सिंह टा ठा डा ढा कूकूर चीन्ह।
ता था दा धा सर्फ विचार पा फा वा भा मूख सयार।
या रा ला वा मृग है सही सा षा स हा मे टा का ही।
:o: .o: :o:

॥ अथ गन जानव ॥

अस्वनि पुष्य पुनर्वस रेवा मृग अनुराधा स्वाती भाव।
श्रवन हस्त जो जन्मे कोई देवता गन ताकर जो होई।
तीनि उत्तरा पूर्वा तीनो भरनी रोहनि आद्रा चीनी।
ऐ नक्षत्र मानुष गन जानै "सहदेव पुर्श नारद भानै"।
मघा क्तिका चीत्र मूल अस्लेषा सतभीखो...... ।
सक्र धनिष्ट विसाष जान एते राक्षस गन पहिचान।
:o: :o: :o:

अंत— ॥ अथ पाट चक्र ॥

पंद्रह कार कोटा नव होई। रवि नक्षत ते धरिए सोई।
गिन तीन मार्भ ते गुनै। राजा पूछे सहदेव भानै।
लग्न नषत जो मार्भ परै। वेगि नास दुनो कुल करै।
पुरुब जानेउ सुख के थान। धन धान्या होइ कल्यान।
अग्नि कोन मे होत अभाग। दक्षिन परै तो थोरा भाग।
ति पुत्र सुख सौभाग॥ पश्चिम बिधवा होइ अभाग।

विषय—लग्न, मुहूर्त, शुभाशुभ विचार, वर्ग वर्ण, गण, नाडी और दोषादि ज्योतिष-विषयक विचारों का वर्णन ।

संख्या ४४६. शालहोत्री (घोरान की वैदगई), रचयिता—सादिक, कागज—देशी, पत्र—१५ आकार—८¼ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७५, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९९ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह) काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ घोरान की वैदगई सालोत्तरी लिष्यते ॥ बीनती करिकै बौहोत तमाम करि कै एह पोथी बनाएऊ ॥ साहिब की किरपा ते ॥ सावक सौदागर नै घोरन के श्रेत सबाब की ॥ सुभलछन की दलछन की ॥ चावक असावार की सबही भांति की पोथी कराय दीनी सो यही है ॥ बडे बडे सालोतरी से सही कराय लीनी है या पोथी सुघोरान के लछन मालूम पडै ॥ अथ घोरान की रंग पहिचानबो ॥ एक लाल रंग को घोरा ॥ च्यारो पाव सुपेद ॥ माथी टीका होय ॥ वाहि पचकल्यान कहियै ॥ हाथ पाव कारी होय तौ वहोत कलेस करै ॥ नाम घोरा के ॥ जम धाक कहियै ॥ गधा का रंग घोरा होय तौ ॥ पीरो छोटा होय तौ असुभ है ॥ घोर सुपेद रंग को होय तौ ॥ दाग नहीं होय तौ सुभ है ॥ नाम जाको नुकरा ॥

मध्य—॥ अथ चन्न की दवा ॥

मरमी की दरीया छह सेर ॥ पवर सेर गोन्दा ले ॥ धरती मै दोनो कूं गाडि दै ॥ तीन रोज पाछै निकासै ॥ पुन्य को मूत्र पांच सेर ॥ मूंत्र कूं मिलाय कै तीन रोज फेरि गाडै ॥ ता पाछै निकासि कै सीधा नोन दोय पैसे भरि मिलावै पहल कै रोज सेर भरि प्यावै ॥ जा उपरंत पाव सेर रोज बटावै ॥ परन जाय ॥ घोरा मोटो होय ॥

अंत—॥ अथ बंध होय तौ पुति जाय ॥

इसगंध नागोरी सोवा के बीज ॥ माजी हरदी आध पा आध पाले गूगर पईसा चारि भरयो ॥ माल कागनी ॥ वायविरंग अजमायन आध पा ले चूरन करिकै सांभि सकारै चारि चारि पईसा भरि दे ॥ इति श्री घोरान की अवस्था सुभ असुभ जानिबे की ताकी पोथी सालोत्री औषधी की चिकित्सा सपूर्णम् ॥ सवत १८९९ श्रावण कृष्ण तिथौ ६ बुधवासरे सपूरणम् ॥ शुभम् ॥ श्री रस्तु ॥ शुभम् भवतु ॥

विषय—इसमें घोडों के लक्षणों, नामों और उनकी चिकित्सा के संबंध में लिखा है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के ३ और १३ संख्या के पत्रे लुप्त हैं । ग्रंथ के रचयिता घोडों के व्यापारी थे । इनका अन्य वृत्त अज्ञात है ।

संख्या ४४७. ध्रुवचरित्र, रचयिता—सालजन, पत्र—१ (अंतिम पत्र है), आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ८२, पु० सं० १० ।

आदि—तप जब करो तब ही राजा पै आयो । अब हम कहूं न जाहिंगे करो जतन जब कोट । आसा करो न और की तजो न प्रभु की ओट । श्री० ॥ तब मंत्री उठि आये ध्रुव कछु बात न मानी । महा कठिन तप करो कहत राजा सुत बानी । राज काज माने नही कीयो जगति का त्याग । अति उदास बन मे बनाट उपज्या मन वैराग ॥ श्री० ॥ कीनो राज विवेक रची इह यान विधाना ॥ मेडन को रोऊ नाह कहा वपडे पिन माना । जो कछु करे सो हरि करे हमरे कछू न हाय । अंन मोर्द कछु होइगा जो भावी व्रजनाथ । श्री० । कंद मूल आहार प्रथमे ध्रुव यह व्रत कीनो । छट्टो पवन आहार भक्त व्रत ऐसो लीनो । पांच वर्ष को बालका गृह तज भयो

उदास करि पछम पवन रोकियो तीन भवन को त्याग । श्री० । तबही त्रिभुवनराय आय ठाढे तिह आगे । तउ भी अतर ध्यान भक्त तप को नहीं त्यागे । ध्यान छाड दर्शन करो आज्ञा दई दियाल । जो मागो सो देत हो टुक नैन उघारि निहाल ॥ श्री० ॥ तब ध्रुव छाड्यो ध्यान स्याम के दरसन लागे । पायो परम अनद भरम के बंधन भागे । बार बार विनती करे प्रगट मिले गोपाल । जो मागो सो देत हो, वर दीजे गोविंद जो दीनदयाल कृपाल ॥ श्री० ॥ गमगरीव निवाज सुनो इक विनती मेरी राखु विदर की लाज सरन आयो जन तेरी । नाथ की शरन वसो पांवो पद परवान । पार ब्रह्म पूरन पुरष तुम देहु दया कर दान । श्री० । इति श्री माधजन विरचितं ध्रुव चरित्र संपूर्ण ॥

विषय—ध्रुव चरित्र का वर्णन ।

संख्या ४४८. दिन मनि वंशावली गुण कथन, रचयिता—सिंधु कवि "उदयपुर", कागज—देशी, आकार—६॥। × ४। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० व० ८२, पु० स० २ ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नम. ॥ श्री एकलिंगाय नम' ॥ प्रथम सुमिरि गिरधरन प्रबल भव भार दु ख हर। फेरि ध्याइ जगमगाह पाइ गुन गाइ सुखकर । गननायक मन आन जानि रिद्धि सिद्धि निहर। डोर देव ब्रजदेवि सेवि करि मांग बुद्धि वर ॥ दिनमनि वंसहि व[illegible] आनद भाषा सिंधु कवि । बाढति सुमति नासति कुभाव ज्यों तम नासत देखि रवि ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ६–७

जस गावत जित तित सदा बसो देस के ईस ।
अमर सिंह मम अमर के कहे आपु जगदीश ॥२७॥

जग में अमर सिंह अमर समान हे ।
नित प्रति दरस को सरस जु होत मन आनद सो जहांगीर चाहे सनमान हे ।
करत अराधना को क्यो हू नाहि देखे फल कियो हे विरोध समुझाइ हू न मान हे ।
केऊ लाख फौज जोरि जाइके पकरि आनो मेरो कहो मानो यह बात परमान हे ।
प्रताप सिंह तने तो नर के न बस होइ ॥२५॥

हरपति नरपति भूपतिन साहि समान जु कीन्ह ।
राना करन खुमान जु सभे अभे पद दीन्ह ॥३८॥

अंत—गज वर्णन ॥

राजत हें हार राजसमान लसें गजराज पहार पे धाई ।
राखत हे सुरराज छिपाइ के दे जिनि डारे यहे जिय ठाई ।
कर्ण खुमान को श्री जगतसजिवो प्रभु आनद मे महिताई ।
ले ले गुनी घर जाहि दुनीनि के देत करी ववरीहि के नाई ॥५२॥

इति दिनमनि वंशावली गुन कथनम् ॥ श्री रस्तु ॥

विषय—उदयपुर के सूर्य वंशज महाराणाओं की वंशावली, दारा शाह से जगत सिंह जी तक की वर्णित है । उनके गुण भी वर्णित हैं । इतिहास और वंश चरित्र की दृष्टि से यह उपादेय हैं ।

संख्या ४४९. बाज नामा, रचयिता—निवदर फिरंगी कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—६¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप)—६३३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८० वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

॥ चौपाई ॥

संत चरित रघुपति जस एका । कहत वेद बधि सहित विवेका ॥
मिश्रित कहहु यथामति मोरि । जासु चरित तेहि करउ निहोरी ॥
:o: :o: :o.

अंत— ॥ दोहा ॥

धन्य धन्य माता पिता धन्य पुत्र वर सोय ।
तुलसी जो रामहि भजै जैसहु कैसेहु होय ॥ ३ ॥

श्री गोसांई जू कहत हैं कि जो रामहि भजै तेकर माता धन्य है और पीता धन्य है औ माता पीता के पुत्र धन्य हैं वर नाम श्रेष्ट है जैसहु कैसहु होय दुष सुष कैसहु रहै राम को भजन करै वोही श्रेष्ट है प्र० कुलंपवीत्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा भाग्यवती च धन्या । स्वर्गे स्थिता ये पितरश्च धन्या यस्मिन कुले वैष्णव नामधेयम् ॥

अवतो धन्य धन्य माता पीता माता तो प्रह्लाद की धन्य है जो कलेसहु मे नारद जू को उपदेश धारण कीयो है मानो प्रह्लाद जू सुख को स्थान ही मे प्रगट भए हैं धन्य धन्य पीता दशरथ जो है मरण अवस्था के विषै राम जू को सौंपि दिये धन्य पुत्र दशरथ जू को है वर श्रेष्ट भक्त जू भए जिन्हके भक्तन के वीषे निज मुख ते श्रीराम जू सराहना कीये है जैसे वोह योग्य राम विषै लीन भये कैसहु होए नरक स्वर्ग सुख दुख इन्ह मो कैसहु नाम कोइ प्रकार ते राम को भजै सो धन्य है वर श्रेष्ट है जाति विजाति कैसहु होए जो रामहि भजे तो जैसो राम है तैसोई होइ जाय राम वो साधु ते भेद नही है ऐसो जानि राम को भजै ॥ ३ सीताराम

विषय—वैराग्य सदीपनी पर गद्य टीका ।

संख्या ४५१क. सुंदर प्रबोध, रचयिता—सुंदर, कागज—देशी, आकार—८॥। × ५। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८३, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ७८, पु० स० २१२ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गणेशाय नम. ॥ अथ सवैया लिख्यते ॥ प्रथम गुरुदेव को अग इदव छंद ॥

मौज करी गुरुदेव मयाकरि सब्द सुनाय कह्यो हरि नेरो ।
ज्यौं रवि कै प्रगटयो निशि जाति सुदूरि कीयो भ्रम भाति अधेरो ।
काइक वाइक मानसहू करि है गुरदेव ही वदन मेरो ।
सुदरदास कहे कर जोरि जु दादू दयाल को हूं नित चेरो ॥ १ ॥
पूरन ब्रह्म विचार निरतर काम न क्रोध न लोभ न मोहै ।
श्रोत्र त्वचा रसना अर घ्राण सु देखि कहू कहू नैनन सोहै ।
ज्ञान सरूप अनूप निरूपम जासु गिरा सुनि मोहन मोहै ।
सुंदरदास कहे कर जोरि जु दादू दयालहि मोहन मोहै ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ४८

आठो जाम जम नेम आठो जाम रहे पेम आठो जाम जोग जग्य कीयो बहु दान जू ।
आठो जाम जप तप आठों जाम लीयें व्रत आठो जाम तीरथ मे करत सनान जू ।
आठो जाम पूजा विधि आठो जाम आरतिहू आठो जाम दंडवत समरन ध्यान जू ।
सुंदर कहत तिन कीयो सब आठो जाम सोई साधु जाके उर एक भगवान जू ॥१७॥

साधु ही के संग तें सम्प ग्यान होत है ।
जैसे आरसीको मैल काढ पुन सिकलीघर मुख मे न फेर कोऊ कहै वाको पोत है ।
जैसे नैन नैन में सलाका मेलि सुद करे पलट गये तें जहा त्यो की त्यो ही जोत है ।
जैसे बाय बादर बिखेरत उडाय देत रवि तो अकास माहि सदा ही उदोत है ।
सुंदर कहत भ्रम छिन मे बिलाइ जाइ साधु ही के संग तें सम्प ग्यान होत है ॥१८॥

अंत—

जोगी थके यहि जैन थके वहि तापस थाकि रहे फल खातें ।
न्यासी थके बनवासी थके जु उदासी थके बहु फेर फिरातें ।
शेख मुलायक और ऊ लायक थाकि रहे मन मे मुसक्यातें ।
सुंदर मौन गही सिध साधक कौन कहे उनकी मुख वातें ॥१५॥३४॥५६०॥

इति श्री सुंदरदास रचित सुंदर प्रबोध नाम संपूर्णम् । संवत् १८८३ वर्षे मिति आसोज सुदि १२ भृगुवासरे लिखतं गुरुजी राजसंघ । महीदोज हरजी जी तत् पुत्र कुंवर किशन दास वचनार्थं श्री द्वारिका पुरी कांकरोली मध्ये । लेखक पाठक चिरजीव शुभ भूयात् ॥

विषय—ज्ञान वैराग्य विषय वर्णन है ।

संख्या ४५१ ख. अद्भुत ग्रंथ, रचयिता—सुंदर दास, स्थान—द्यौसा (जयपुर राज्य), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—$7\frac{1}{10} \times 5\frac{4}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत गोपालचन्द्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाइ नमः ॥ अथ अद्भुत ग्रंथ सुंदर दास कृत लिख्यते

॥ दोहरा ॥

सतिगुर पाइन परत हों ॥ मोहि दिषायो पंथ ॥
तातें सुंदर कहित हों ॥ रचकर अदिभुत ग्रंथ ॥ १ ॥
परमातम सुत आतमा ॥ ताको सुत मन पूत ॥
मन को सुतरो पाचहूँ ॥ पाचो भए कपूत ॥ २ ॥
रूप मान परमात्मां ॥ दरपन बुधि जानं ॥
तामें प्रतिबिंबत भयो ॥ जीवात्म पहिचान ॥ ३ ॥
दरपन को अभास जो ॥ कंस पात्र में होइ ॥
त्यं आत्म प्रकास मन ॥ देह मध है सोइ ॥ ४ ॥
कंस पात्र को होइ पुन ॥ सदन मधि अभास ॥
त्यूं मन तें इंद्री सकल ॥ बहु विध करहु परकास ॥ ५ ॥
परमातम साषी रहे ॥ व्यापक सब घट माहि ॥
सदा अंपमित एकरस ॥ लिपे छिपे कछु नाहि ॥ ६ ॥
तास्यों भूले आतमा ॥ मनसुत स्यूं हित दीन ॥
तारे सुष सुष पावहीं ॥ ताके दुष दुष कीन ॥ ७ ॥

अंत—तब पाचों मनस्यूं मिले ॥ मन आतमस्यूं जाइ ॥
आतम परिमाता मिले ॥ ज्यूं जल जले समाइ ॥५२॥
अपने अपने तानस्यूं बिछरत होइ गये और ॥
सतगुर आप दया करी ले पहुंचाये ठौर ॥५३॥

पसरेहू ऐसेंकत्त मे ॥ सकोचें गिव होइ ॥
सतगुर यहि उपदेसकार ॥ कीऐ बम तमें सोइ ॥५४॥
जैसे ही उपजत भएं ॥ तैसे ही लैनीन ॥
सुदर जव सतगुर मिले ॥ जो होते सो कोन ॥५५॥
वाके सुनते परम सुप ॥ दुप न रहे लवलेम ॥
सुदर कह्यो विचार चर ॥ अदभुत ग्रंथ उपदेस ॥५६॥

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश ।

संख्या ४५२. वारहमासी, रचयिता—सुदर कवि, पत्र—३ (१५ से १८ तक), आकार—८।×६॥ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ५२, पु० स० ११३ ।

आदि—वारहमासी ॥ गजल की चाल ॥ राग सोरठ ॥
पीया वीन जाता हे जोवना, सखि अव किस तरे रहना ॥
चहुंदिस से घटा घनघोर, दादर सव मोर कर रहे मोर ॥
आगम आषाढ का आया, विरह तन मे जु गरमाया ॥ १ ॥
सखी सावन मे आवन का, इरादा था जो साजन का ॥
भला फिर क्यो नही आए, किसी के साथ दिलमाए ॥ २ ॥

मध्य—आहवो कार्तिक लगा यार जान जाती हे मेरी ।
आसना मे आसना जावे वफा देखा तुमे हम ॥
जानी तेरी तसवीर मेरे चस्मो मे फीरती रही यार ।
इश्क का ले तीर मारा आहें भरते हे खडे हम ॥ ५ ॥

अंत—देख तपता जेठ आसीक को छोरका गुगाव ।
मासुक को गले लगा कहने लगा सदके तेरे हम ।
मुख पर दीये रुमाल तीरछी नीगा से करती राज नाज ।
सुंदर कहे सुन ऐ परीवे अव दाहा छोडे तुजे हम ॥१२॥

विषय—शृंगार रस पूर्ण वारह मासा का वर्णन ।

संख्या ४५३. रामरहस्य, रचयिता—सुदर कुंअरि, कागज—वांसी, पत्र—६६, आकार—५¾×१ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५३, अपूर्ण, रूप—भव्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ राम रहसि ग्रंथ लिष्यते ॥
प्रथम कवि उक्त प्रस्तुत दोहा ॥
श्री रघपति सिय चरन कौं कवि निज मन मैं धारि ॥
मति सॅम जस वरनन करत जो दायक फल चार ॥ १ ॥

॥ सवैया ॥

स्यांम स्वरूप अनूंपम अंग अनंगहू तौ सम नाहि लषायो ॥
सोहत हैं कच कुंचित औ द्रग पकज से घनुं मोर्हं सजायो ॥

जा गुंन गांन श्री ध्यांन करै नर सोई धरा महि धन्य कहायौ ॥
जीवन ताको वृथा जग में जा हिया महि नाहि सियावर आयौ ॥ २ ॥
सो दशरथ्थ नरेस के धाम प्रभू प्रगटे निज चार धरैं तन ॥
कौसिक सैं मप रछिक ह्वै मिथुला घर सीता रच्यौ जनकै पन ॥
तान के सामन तैं सिया माय लैं लछमन श्री पुन रांम वसे वन ॥
वाधिकैं सिंधु हत्यो दशकंध को आए घरैं संग रीछ कपीगन ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पाय राम के दरस कौं वाढ़यो सवहि उछाह ।
करी तयारी तिलक की नीते सह नरनाह ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

देस देस के भूपति आये ॥ राम प्रेम गुंन रूप लुभाये ॥
स्याम सरूप विसाल विलोचन ॥ देपैं छवि सु काम मद मोचन ॥ ५ ॥

मध्य— ॥ दोहा ॥

वधुन वैन सुनि मात जू सुता लई उर लाय ।
लपि कैं टाटन गन तहां लाउ कुंवर कौं गाय ॥६८॥

कवित्त—गावैं लाउ ढाढनिलटांवनि लडैती तहां
मजलिस छावैं रंग प्रेम को उमंग सौं ॥
रीझ रीझ वारी परवारिनि प्रवीनी सवै
कुवरि निहारि वारि भूपन दै अग सौं ॥
भावज सिहावै श्री गनावै फुरमाय पुनि
मरम सुहाग इन नामैं पिय सग सौं ॥
गुरजन माहि दृग मोजें सकुचाहीं सिप
झुकि मुप मोरै चित चोरै मुंह भंग सौं ॥६६॥

॥ दोहा ॥

चित चुरान सिय पै भई सवै दृगन की भीर ।
दिष्ट लगन भय मांन तव वोली मात अधीर ॥३००॥

अंत—वहुरि वुलावन वेग कहि वहुरे अति हित लीन ।
आप जुहारे नृपत सौं समाचार सव दीन ॥६२॥
इत रघुवर स्वारो सवै डेरन उतरे आंन ।
सामग्री सव भोग की लहि विलसे सुप सान ॥६३॥
कृतिय दिवस ते पुनि चले मजल सुहावन चाल ॥
विच विच वाग तडाग जिन सोभा लपन स्माल ॥६४॥
स्वारो तहां उतारिकैं सिय रघुवर विलसंत ॥
तानैं मजल सुरूमा को पेद न लहत अनंत ॥६५॥
कैसे सुप वि......................

विषय—श्री रामचंद्र जी के जनकपुर विहार का वर्णन है।

संख्या ४५४. गुरु महिमा, रचयिता—गुरुदेव (?), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—५३/४ × ४१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—अथ श्री गुरु म्हैमा लीषते ॥

अलष नीरजन नीराकार जिन ष्याल वनाया ।
अगम पथ का राह वताया ॥
गुर समान दाता नही कोई । राम नाव जीन दीये सुनाई ॥
आवकारा सब सनकादिक कीया वीचारा । गुर की म्हैमा अपरमपारा ॥
गुर वीसंभर गुर परम नीधान । गुर वीनी कदे न होय कल्यान ॥
गुर म्हाराजा गुर देवन के देवा । गुर कामधेन गुर कलप ब्रछी गुरवो ॥

:०: :०: :०:

गुर सेव हरी आपही कीनी । यही सीष सुषदेव कु दीनी ॥
रीषी नारद मुन ऐसी कीनी । जाइ दीछा धामर सूं लीनी ॥

अंत—

गुर की म्हैमा पठै अर गावा । जीनी संकट पदे न आवा ॥
गुर की म्हैमा वरनी न जाइ । श्रीरी सुषदेव अपन मुष गाई ॥
इती गुर म्हैमा सपूरन समापीता ॥ श्रीराम............

विषय—गुरु महिमा का वर्णन ।

संख्या ४५५. पशुमर्दन भाषा, रचयिता—गुणानद नाथ, पत्र—२३, आकार—८¾ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५६, पूर्ण. रूप—प्राचीन (जी.ग्ग), गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८६७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नम· ॥ तत् सत् ॥ परमदेवतायं ॥

हे कुल साधक सब लोगो तुमको परम कारुणिक सदाशिव ने प्रत्यक्ष अपना स्वरुप करके कहा है तुम सभो के माहात्म्य को पृथिवी मे कोई जानने को सामर्थ नही है और तुम्हारे कर्नें से पशु पाशवद्ध जो सब जीव वे मुक्त होते हैं कुलार्णवे-कुलाचार प्रमत्ताना साधूना सुकृतात्मनाम् साक्षात् शिव स्वरूपपाणाम् प्रभावो वेत्ति को भुवि ॥ दृष्ट्वातु भैरवी चक्र मम रूपांश्चगाधकान् मुच्यन्ते पशु पाशेभ्य कलि कल्मष दूषिता ॥ कुलावतो तन्त्रे कौलिकोहि गुर साक्षात् कौलिक. शिव एव स. इत्यादि ॥

और जीवो के निस्तार कर्नें के कारण तथा उन्होंकी कर्त्तव्याकर्त्तव्य रूप उपदेश देने के अर्थ कौलिको का पृथिवी मण्डल मे विहार है ।

मध्य—और इच्छापूर्वक पशु के देखने से और उसके साथ वार्तालाप या उसकी स्पर्श करने से तुमको प्रायश्चित कर्नें पड़ता है और पशु का संसर्ग कर्नें से धोर भी पशु होता है ।

पशोर्दर्शन मात्रेण कर्त्तव्यं सूर्यदर्शनम् आलापात्तस्य संसर्गात् लक्षं श्री पादुकांजपेत् ॥ कुब्जिका तन्त्रे पशुनासह संसर्गात् पशुरेव न सशय· २३ ज्ञान पूर्वक जो साधक एक बार भी पशु का अन्न भोजन करे सो नराधम है सहस्र मन्वन्तर व्यतीत होने से भी उसको निष्कृति अर्थात् उसका उद्धार नहि होता और लोभ वस से या मोह से वा भय से कदाचित् पशु का अन्न भोजन कर्नें मे आवें तब लक्ष श्री पादुकामन्त्र का जप और पुनर्वार अभिषेक और श्री चक्र पूजन कर्नें से पाप से मुक्त होय नही तो निस्तार होता नहि ।

अंत—शैव धर्माश्रिताः कौलास्तीर्थं रूपाः शिवात्मका. ।
स्नेहेन श्रद्धया प्रेम्णा पूज्या मान्या परस्परम् ॥
यथा सम्प्यातुर्यत्किंचित् यो दद्यात् कुल योगिने ।
विशेष तिथिषु प्रीत्या तस्य पुण्यं न वर्णने ॥

कुल निष्ठान् परित्यज्य पश्चान्यस्मै प्रदीयते ।
निष्फलं तत् भवेद्देवि दाता च नरकं व्रजेत् ॥
यथा ब्रह्मोपदेशेन विमुक्तः सर्वपातकः ।
गच्छन्ति ब्रह्म सायुज्य तथैव तव साधनात् ॥
सोऽहमेहंस. शुचि पदित्यादि एकमेवापर ब्रह्मेत्यादि सर्व ब्रह्ममय भावयेत् ॥४२॥

इति श्री कुलावधूत श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री हरिहरानंदनाथ भारती कृत.पशु-मर्दनाख्य संग्रहः समाप्त. ॥ ॐ ॥ संवत् १८६७ पौष शु-द तृतीयायां लेखः ॥ तत् सत् ॥

विषय—यह ग्रंथ हरिहरानंद भारती कृत पशुमर्दनाख्य का भाषानुवाद है । इसमें पशुओं के साथ किए गए व्यवहार का फलाफल और उनके स्वभाव आदि का वर्णन है ।

संख्या ४५६. पचासिका, रचयिता—कुशल कवि, पत्र—२५, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, अपूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१०, प्राप्तिस्थान—पं० हरिवल्लभ राजनगर तहसील, गल्ल-छतरपुर ।

आदि—श्री गनेसजु श्री सरस्वती जु ॥
अथा नरसिंह पचासया लिषते ॥

श्री रामदास गुर चरन को ध्यान धरी उर आन ॥
पुनि नरसिंघ पचासका...कहौं बषान ॥ १ ॥
संवत सत्रासे दस भादों बिदि गुरवार ।
तातें कौ पूरन कियो पचास का अवतार ॥ २ ॥

मध्य—पृ० सं० २५

......पलपल लोचन लगत परजा गहू ॥
ध्यावें नर सुर पुन श्रवन सुन गुन भगत वछल भगतन प्रतपालहू ॥
पतिति पावन तरे पतित अजामेर से गनका को सुष दैके अनुरागहू ॥
भयो है अनाथ कुल काहिथ गुवंगराय वेग नरसिंघ जू पुकार श्री न लागहू ॥३६॥

अंत—पृ० सं० ४६

..... पठत होय दुष दूर महाही ॥
यह नरसिंघ जस पठत ग्याना उपजे मन माहि ॥
यह नरसिंघ जस पढत सुष उपजै मन माही ॥
यह नरसिंघ पचासका पढै कटै संकट सकरा ॥
करिये नरसिंघ भजा न कछु कहु सुवस नरसिंघ बल ॥

विषय—नरसिंह भगवान् का गुणगान विविध छंदों में किया गया है ।

संख्या ४५७. कवित्त, रचयिता—सुकरण (सुवर्ण), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८३/४ × ३३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जगेसर दुबे, ग्रा.पो.-मझौलिया, पोस्ट-तरकुलवा, जिला-गोरखपुर ।

आदि—

कबै पादचारी गज पालकी सवारी कबै कबै पाद पंकज महीप परसत हैं ।
कबै लायन को षोज कबै षोजि पान रोज कबै तंदू सम्पोत कबै नग्रहि फिरत हैं ।
कबै लायकू को मान कबै आयुहि वेमान कबै ज्ञानी विद्वान कबै दोष करसत हैं ।
जब को बनाय जस तब को तरह तस "सुकरण" न कम विधि ईश्वर करत हैं । १ ।

तारो गज ग्राह गीध गणिका अजामिल को विपति विदारो जिन्ह ब्राह्मण सुदामा को ।
द्रौपदी को लाज काज राखो जिन्ह सभा माझ राखो जिन्ह टेक बलि हरिचंद भामा को ।
गौतम की नारि पद रेनु तें विमान दीन्हो पायो जिन्ह छूटो पन भितानो भीषामा को ।
अतनी सिपाई एह करो कवि "सुवरण" की दान है न्हा तुम न राधेपति स्यामा को ॥ २ ॥
बोलति झिझकि झारि झीना नील अंबर मुख मानो नीलघटा मध्य तड़पि जाति दामिनी ।
थाकी बहु जतन सिखाये बहु भांतिन्ह से मानति न नेको छिपि पौनि गई जामिनी ।
आली को न दोन सिमिरोस मरपोस गाये पाव के परे हू बिन होवेगी न कामिनी ।
"सूवरण" सनेसो आगी कहिए नद नद यू (जू) ते मान के महल चढ़ि बैठी आज दामिनी ॥ ३ ॥
लहाछेह चातुरी विलाश रास वृंदावन दुहूंदिशि स्यामता व अतरात कामिनी ।
मकराकृति कुण्डल गर माल बैजयंती ओढे पीत अंबर दमन दुति दामिनी ।
छूटेव लाज काज गृह गुरजन की डरताई मोहनहि ताई दिन दिनो जान जामिनी ।
करैं रिति प्रीति विपरिति रति "सुवरण जू" वलिहारी बलिहारी मोहन नचाविनी ॥ ४ ॥

अंत—
जयतिपरासर सूनुः सत्यवती हृदय नन्दनो व्यास ।
यस्यास्य कमल गलित वाङमयममृत जगन्पिबति ।
द्वैपायनौष्ठपुटनि.सृतमप्रमेय पुण्यं पवित्रमथ पापहर शिवंच ।
यो भारत समधिगच्छति वाच्यमानं किं तस्य पुष्कर जलैरभिषेचनेन ॥ ८ ॥

चंद्र के चाव चकोर मरैं निसु दीपकि ज्योति जरवो पतगो ।
घन घोर के सोर के मोर मरैं अरु मीन मरैं बिछुरैं जल सगो ।
स्वाति के बुंद के चातक चाहत केतकि फूल के भौं भुअगो ।
ए सभ चाहत औ नही चाहत जारो मै प्रीति कि रीति एकगो ॥ १ ॥

तव तो हमारो चित हित दे चोराइ लीन्हो अब क्यों न प्यारे दीठ उलटा न लाइए ।
मिनती हमारिए विसारिए न प्यारे हमैं सालति विसारो तलै हारि चार हारिए ।
यौ वनि आवै तो लगाय लिजै अंक अंक नातो नातो नैनन्ह मिन्हे तो निहारिए ।
गाढी है गरज अरज अरज अलि मोहन पियो रस पियो न दरस दिये डारिए ॥

विषय—वियोग शृंगार वर्णन ।

संख्या ४५८. रामरहारी (लवकुश कांड), रचयिता—सूरज दास, पत्र—३६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६०, खंडित (पृष्ठ संख्या ७ नहीं), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८१६ प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—पं० श्यामसुंदर दुबे ग्राम—दुबौली, पोस्ट—खुखुंदू, जिला—गोरखपुर) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री पोथी रामरहारी कृत सुरजदास ॥
॥ स्लोक ॥

जत्रैव गंगा जमुना त्रीवेनी गोदावरी सिंधु सरस्वती च ।
सर्वानि तीर्थानि वसति तत्र जत्रो च तोहार कथा प्रसग. ॥ १ ॥

प्रनवो गनपति मन चित लाई । जेहि सुमिरे मैं गति मति पाई ॥
प्रनवो मातु पिता गुर पाऊ । जेन्हि मोहि निर्मल ग्यान सिखाऊ ॥
सारद को मैं चरन मनावो । जेहि प्रसाद अछर सुधि पावो ॥
:o: :o: :o:

राम नाम मन करहि पुकारा । मानहु कुजोक चाद नीहारा ।।
राम विमान गगन लहि धावा । जनु तारागन सर्ग सोहावा ।।
राम विमान उतरि पुनि तहा । सभ कुटुव मीतो आए जहाँ ।।
उतरे राम सीआ औ लछुमन । उतरे वानर भालु सब सगन ।।
हनीवंत वीर आगंद कुमारा । दइत विभीषन लक भुआरा ।।
उतरे जान सकल बलवीरा । जामवंत उतरे रनधीरा ।।
उतरे सेना सभ समुदाई । तीन्ह को नाम कहै को गाई ।।
देषि कुटुंबन्ह गहवर रामहि रहा न जाइ ।
गुर बसीष्ठ....नन्ह पहले लागवे धाइ ।।

अंत— ।। दोहा ।।

सगरो कटक जीआए सभ कोउ भा हरषंत ।
सीता लेन पठाए लछुमन औ हनिवंत ।।

।। चौपाई ।।

लछुमन कहा चढहु रथ आइ । रामचद्र तोहि बोलि पठाइ ।।
सीअ कहा सुनु लछुमन राई । दीन्ह बहुत दुष तोहरे भाई ।।
धरती मंह जो बेवर होई । जाउ रसातल लषै न कोई ।।
लषन कहा तब राम गोसाइ । अब वोइ से दुइ बालक आई ।।
बाहु पकरि तब रथहि चढावा । हाकि रथहि लै अवधहि आवा ।।
पाछे पलटि जग्य पुनि कीन्हा । कोटि गाय बिप्रन्ह कँ दीन्हा ।।
हेम रतन औ सहन भंडारा । सो सभ दीन्हा लागु न बारा ।।
लव कुस चरित सुनै मन लाई । ताकर पाप तुरित छै जाई ।।
जाके सुनत पाप सब नासा । होए मोछ वैकुंठ नेवासा ।।
जाहि सुने सुप पावै रीधी । जंत मन्त्र फल पावै सीधी ।।

।। दो० ।।

सीता सती सुतन्ह सग भुजन लागी राज ।
कहत सुनत जे प्रानी होई महासीध काज ।।

इति श्री रामरहारी संपूरन सुभ संवत १८१६ फागुन सुक्ल दसम्या सोमार गीरधारीदास भइल ।।

विषय—सीता का वनवास और रामाश्वमेध का वर्णन ।

संख्या ४५६. नखशिख, रचयिता—सूरत मिश्र (स्थान—आगरा), कागज—देशी बासपी रा, पत्र—८, आकार—११$\frac{6}{8}$ × ८$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग ।

आदि—सूरत मिश्र रचित नखशिख ।।
ॐ ।। श्री गणेशाय नम ।। अथ नखशिख वर्णनम् ।।
चरन चतुर्भुज के चिह्न है करत सेवा रमाके । मुकद ग्रह रूप गात हैं ।
आनन द्वै विधिह रिझायो पै न बनी विधि "सूरत" सुकवि बानें जग मैं विख्यात हैं ।
सुनिये हो लाल उहि बाल पग सम ताकें पोनो बहतेरी पैन भए वारिजात हैं ।
ऐसो कौन जाने हिय धीरज धीराइ यारे पाइ देखे याह के न पाइ ठहरात हैं ।। १ ।।
पद नख चंद अनुहारि छीनो रवि की अरुनताई जीनें जोतिवंत स्वच्छ रूप बिलसत है ।
ऐसी जगनारि तें निहारि नारि नीची करैं सबहो के प्रतिबिंब तिन में लसत हैं ।

"सूरत" श्री वृंदावन पनी कौं चरन संग पाइवे को चित ग्रामाध्यंत दरमत है ।
साची कहनावति इहा ई देखी लाल सर्व जगत के रूप जाके नख मे वमत है ॥ ३ ॥

॥ एडी वर्णनं ॥

कोमल ग्रमल रुचि राजति रजति रूप ग्रति ही ग्ररन होति भूमि के परम तें ।
मानो वरसत गति गजराज कुंज ते कुसंम जल मेतिभरं वदन सरातें (?मरमतें) ।
जिनकी उपमा को सूरति वखानी जाति कहा कहो ग्राली वहि ग्रावतु तरमतें ।
ऐसो कोन चलि सके डग भरि मग पग वेडी सी परति तेरी एड़ी के दरमतें ॥ ४ ॥

मध्य— ॥ वरुनी ॥

किधो दृग सरोवर ग्रास पास स्यामताई ताही के ग्रंकुर उलहि दुति वाढे परै (? वाढे है) ।
किधो प्रेम प्रेम वयारी जुग ताके चहुधा रची है नील मनि रूरनि दि दाज दुरन टाढे है ।
सूरत सुकवि तरुनी की वरुनी न होहि मेरे मन ग्राए यो विचार चित गाढे है ।
जेइ जे निहारे मन तिनके पकरिवे को देखो इन नैननि हजार हाथ पाढे है ॥ ३४॥

॥ वेनीवर्णनम् ॥

त्रिभुवन पति के हरति दुख दूखतहि सहज सुवास सोमरस है ।
नैंस सं जुत्त पर समहाई सुख सरसं ये तीनहू वरन को प्रयट सुदरस है ।
सब दिन एक सो महातम है सूरत यों नागर सकल सुख सागर परम है ।
ऐरी मृग नैनी पिक वेनी सुख देनी ग्रति तेरी यह वेनी तिरवेनी तें सरस है ॥

॥ इति सूरत कृत नख शिख वर्णनम् ॥

विषय—नायिका का नखशिख वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—१. प्रति परिचय—हमारे ग्रभय जैन ग्रंथागार मे इस ग्रंथ की ५ पत्र की प्रति है जिसके प्रत्येक पृष्ठ मे १३ से १७ पंक्तियां एवं प्रत्येक पंक्ति मे ३५ से ४० ग्रक्षर हैं । प्रति ग्रठारहवी शताब्दी की लिखित प्रतीत होती है ।

२. कवि परिचय—कवि सूरत मिश्र कनौजिये ब्राह्मण थे ग्रौर ग्रागरे मे निवास करते थे । इन्होंने हिंदी भाषा की बडी भारी सेवा की है । ये रसज्ञ कवि एवं सफल टीकाकार थे । इनके रचित ग्रन्य ग्रंथ ये हैं —

१ ग्रलकार माला स० १७६६ श्रावण शुक्ल ११ गु०
२ रसरत्न स० १७६८ माघव २ (१७५२ नायिका भेद)
३ भक्ति विनोद
४ काव्य सिद्धात स० १७७८ का० सु० ३ गा १५०
५ छदसार स० १७६८ से पूर्व रचित
६ शृगार सार स० १७८५ ग्रापाढ शुक्ला १५ गु०
७ सरस रस स० १७९१ (१७९४ ?)
८ विहारी सतसई टीका स० १७९४ (ग्रमर चंद्रिका)
९. रसिक प्रिया स० १८०० फा० सु० ७ गु० बीकानेर (जोरावर प्रकाश)
१०. कविप्रिया टीका
११ वैताल पच्चीसी वार्ता
१२ प्रवोध चन्द्रोदय
१३ राम चरित्र
१४. कृष्ण चरित्र
१५. भक्तमाल

१६ रागधेनु
१७ रवि सिद्धान्त
१८ ... हीरा नं० १८०० श्रावण
१९ श्री ... (अप्राप्त)
२० नखशिख

विषय—नायिका का नखशिख वर्णन।

संख्या ४६०. कवित्त, रचयिता—सूरदया, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—५¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—............................ विलासी ॥३१॥
टालन हैं न्र लेपटत्त नहि यान कि नाथ वियोग दयो है।
विपत्र दागन मान मर्यो पुनि हीनगती हरचद भयो है।
लोचन की घन कंद माहा दल संपति रिद्धि छाडि गयो है।
"सूरदया" नन नारि तजि हनुमान पमाव बल गोटलयो है॥ ३॥

ठोर उठोर लिपन सदाशिव गावत है शिर उपरि गंगा। गौर सूक्षुभिकरै। लघु सो कहि मोच पर्यो गनि राशि भुयंगा। नंद अलुक रहिउ चिहूरा विचि चूसि चूसि हरगाडि फरै अति जंगा॥ "सूरिदया" कहै रद्र मुचित सम्मानि यहोय न चित चितन अंगा॥३३॥

अंत—राजत कवित्त है गीत कलावर वंयक योतिप चित्र करेहैं।
मंत्रक मंत्रक रतंगन मोहन नाटिक नृत्त अभ्यास करेहैं।
गावत गीत पठंत दिव्य धून और अनेक कला जु वरे हैं।
अन्य कला गवतें "दयासूरि" कहै धनवंत शिरे है॥
कमलनाल आइयो सजन प्रीत रहु निपटाय षंड षंड करि डारियो॥

विषय—शिव, धर्म आदि विषयों पर कवित्त रचे गए हैं।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि और मध्य के कई पत्रे नहीं हैं। रचनाकाल और लिपिकार भी अज्ञात हैं।

संख्या ४६१क सूरसाठि, रचयिता—सूरदास जी, स्थान—गिरिराज (मथुरा), पृष्ठ—५ (३१ से ३५), आकार—५॥ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५, पूर्ण, रूप—श्रेष्ठ, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ८२, पु० सं० १८।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ सूर साठि लिख्यते ॥ श्री ॥ राग वेलावल॥
हरिण सुमरन तन पावन किजे।
जब लग जग सुपनो सो जिजे॥ १॥
आध उसास गनत सब तेरे।
सो गिनिन भये आवत नेरे॥ २॥

मध्य—मनुष देह धरि अधम कमायो।
ते तरुछे दुग दारुन आयो॥५८॥
जेतन काज जिय वध किने।
रसना रस अमिरस रस पीने॥२६॥

सोतन छुटत प्रेम करि डारयो ।
प्रेत प्रेत कर नगर निकारयो ॥३०॥

अंत—श्री भगवान परम हेत कारी ॥
द्वारे रटत हरिके सुर भिखारी ॥५९॥
परम पतित शरण येह निजे ।
दि रज दान अमेता दिजे ॥६०॥

ईति श्री सुर साठि सुरदास कृत संपुर्न ॥

विषय—भक्ति और ज्ञान विषयक ६० पद्य हैं ।

संख्या ४६१ख. सूर रामायण, रचयिता—सूरदास, कागज—आधुनिक देशी, पत्र—३९, आकार—१० × ७$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८७, खंडित रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—.......................... ....

...पूत बल वंड वज्र वपु काके हिये समाइ ॥ ५ ॥
लयो बोलाइ मुदित चित ह्वै करि चहत मोर जो लेहु ।
ल्यावहु जाइ जनक तनया सुधि रघुपति कहँ सुख देहु ॥ ६ ॥
पौरि पौरि प्रति फिरेहु बिलोकत गिरिकंदर गिरिगेहु ।
समय बिचारि मुंद्रिका दीजे सुनहु गवन सुत एह ॥ ७ ॥
लै तमोर माथे धरयो हनुमंत कियो चतुर्गुन गात ।
चढ़ि नग सिखर शब्द एक उचरेव गगन उठयो आघात ॥ ८ ॥
कंपित कमठ शेष बसुधानम रवि रथगी उनपात ।
मानहु मेरु पाँख ह्वै लागे उड़ेउ अकाशहि जात ॥ ९ ॥
घहरत सकल अचल सरिता बन जल कीन्हो किलकार ।
तहाँ एक अद्‌भुत जो निसिचरि अति मुख गाउ विस्तार ॥१०॥
पवनपूत उर पैठि पधारे तहँ न लगी छिन बार ।
सूरदास स्वामी प्रताप बल उतरे जलनिधि पार ॥११॥

अंत— ॥ राग मारू ॥

कहत हनुमान सो रघुराइ ।
द्रोन गिरि पर जरी सजीवनी साधामृग तू ल्याइ ॥ १ ॥
वेगि जाउ लै आउ उहाँते बिलम न करु अब भाय ।
जब लगि भानु उदै नहि होवै तब लगि लो फिरि आय ॥ २ ॥
लछिमन बिथा जानि उर ताते कहत अकुलाइ ।
सूरदास प्रभु वचन सुनत ही हनू चल्यो उतलाइ ॥ ३ ॥९५॥
दौन गिरि हनुमान सिधायो ।
सजिवन को कछु भेद न पायो तब सब सैल उठायो ॥ १ ॥
चितं रहे तेहि भरत देखिकै अवध निकट जब आयो ।
मन मे जानि उपद्रव भारी बान प्रवाम चलायो ॥ २ ॥
राम राम यह कहत पवनसुत भरत निकट जब आयो ।
पूछेव सूर कवन है कहि तू हनुमंत नाम सुनायो ॥ ३ ॥९६॥

विषय—हनुमान् द्वारा लंका जलाने से लेकर लक्ष्मण को जीवित करने के लिये संजीवनी औषधि लाने तक की रामकथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि और अंत के अंश खंडित है। रचनाकाल और लिपिकाल दोनों अज्ञात हैं।

संख्या ४६१ग. सूरसारावली, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१३२, आकार—१०¾ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०८, खंडित, रूप—पुराना (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—पं० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट—बरहद, जिला—आजमगढ़)।

आदि—

जा दिन कौसल्या अपने गृह वधू वधू करि मोहि बोलैहै।
जा दिन राम रावनहि मारिहै कोप सहित दससीस नसैहै।
तबही मोक्ष होत सूरज प्रभु मो दासी की विपति छुडैहै ॥६०॥
:o: :o: :o:

इति श्री सूरदास महाकवि विरचिताया सूरसारावल्या श्री राम चरित वर्णनं नाम प्रथम पदसर्ग ॥ १ ॥

अहो पति सो उपाव कछु कीजै।
जेहि उपाव अपनोइ यह बालक राषि कंस ते लीजै॥
मनसा वाचा कहत कर्मना नृपति हियै न पतिजै।
वुधि वल छल करि जतन युगुति वरु काढि अनतहि दीजै॥
नाहिन हतोमाग जीहि इहु सुष नीत्ति लोचन पुट पीजै।
सूरदास ऐसे सुत के गुन सुमीर सुमीर सुष जीजै॥ १ ॥
:o: :o: :o:

अंत— ॥ राग गौरी ॥

येहि अंतर हरि आय गये।
मोर मुकुट पीतावर काछे अतिकोमल छवि अंग भए।
जननि वोलाय वाहरहि लीन्ही देषहु री मदमाती।
इनहि को अपराध लगावति कहा फिरति इतराति।
सुनिहै लोग मस्ट अवहू करौ तुमहि कहा की लाज।
सूर स्याम मेरो मापन भोगी तुम आवति वेकाज ॥१५४॥

॥ राग गंगाधर ॥

अवही देषो नंद केसोर।
घर आवत ही तनक भये है............

—अपूर्ण

विषय—श्रीकृष्ण की ब्रजलीलाओं का वर्णन।

संख्या ४६१घ. सूर कूटार्थ पद संग्रह और अर्थ, रचयिता—सूरदास जी, टीकाकार—बालकृष्ण (भावनगर), कागज—मार्वाकुरी, पत्र—५३, आकार—६। × ७॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८६, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ५, पु० सं० २।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नम. ॥ श्री गोपी जन वल्लभाय नम· ॥ अथ सूरदास कों कीर्तन को सग्रह करिवें कों प्रथम मगलाचरण कहेत हों ॥

॥ दोहा ॥

श्री गोवर्द्धन धरन जय करत मरन जन मोद ।
ग्रंदारक वदित सकल व्रदा विपुन विनोद ॥ १ ॥
श्री वल्लभ विट्ठल पदलवदि विमद विचार ॥
वहत सुविद्या बुद्धि वल विनसत विकट विकार ॥ २ ॥

मध्य—पृष्ठ ५२

याको अर्थ—श्री कृष्णचद्र नंदराय जी के ग्रह प्रगट होय के गवन को आनद को अनुभव करायें ॥ ताको वरनन वृक्षरूप करिके नदराय जी गान करत हैं ॥ दधिसुत जो समुद्र ताको सुत जहां सो उत्पन्न भयो ॥ सो मुक्ताफल सो जम्यो ॥ जेसी बीज मेते वृक्ष होय के फल ताई को अनुभव होत हैं । तेसे जम्यो इहा एसो प्रश्न आयो । जो वृक्षरूप करिकें वरनन कन्नो हतो । सो तो साक्षात् दधिसुत जो कल्प वृक्ष उचित समान धर्म ताको छोडिके मुक्ताफल जो वृक्ष सम मता को कीयों ॥

अत—पष्ठ १०६

पीन सानु जो ऊचो परत तद्वत् हे कुच जिनके तापर अहरीजो फा चली ॥ सो कंचुकी राजत हे ॥ विहार करत ताकी तनी टूट रही हे ऐसे सूरदास प्रभु निरखि हरखि आनद भयो अत्यत प्रीति वढी ॥ ४ ॥

इति श्री सूरदास जी के गूढार्थपद सपूर्णम् ॥ ० ॥

विषय—सूरदास के भक्ति विषयक गूटपद अर्थ सहित लिखे गए हैं ।

संख्या ४६१ड सेवाफल, रचयिता—सूरदास जी, स्थान—गिरिराज (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—२ (१० से १२ पृष्ठ तक), आकार—५१ x ४॥। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१५५५ से १६४० के बीच, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग कांकरौली, हि० व० स० २३, पु० स० ७ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नम. ॥ श्री ॥ अथ सेवा फल लिख्यते ॥

भजो गोपाल भुलि जन जाय ॥ मनुषा जन्म को येहि हेलाहो ॥
कृपा भई जव मन मे आई ॥ याहि देह सो समरो देवा ॥ २ ॥
सुनो सत सेवा की रीत ॥ करो कृपा राखो मन प्रीत ॥ ३ ॥
प्रात उठि श्री कृष्ण को धावे ॥ जो फल मागे सो फल पावे ॥ ४ ॥
हरि मदिर मे करे वुहारि ॥ कवहू न लाखे जम की द्वारी ॥ ५ ॥

मध्य—जो ठाकुर को भोग धरावें ॥ ताको फल तुरतहि पावे ॥२२॥
जेसी पदवी जसोदा मात ॥ ता सुख की कछु कहिय न जात ॥२३॥
ग्वाल मंडली सो गोपाल जिमावें ॥ सो ठाकुर को सखा कहावे ॥२४॥
जहा वैष्णव की मडली होवे ॥ ताकी सगति नित्य प्रति जोवे ॥२५॥
सेवा मे जो आलश करे ॥ कुकुर होए के फिरि फिरि मरे ॥२६॥
मनसा सूं जो सेवा आचरे ॥ तवहि सेवा पुरी परे ॥२७॥

अंत—सेवा को फल कह्यो न जाय ॥
सुखे समरो श्री वल्लभराय ॥४२॥

सेवा को फल सेवा पावे ॥
सूरदास के हृद समाये ॥४३॥

इति श्री सेवाफल सपूर्ण ॥

विषय—भगवत् सेवा का फल वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना चरण चिह्न के साथ एक हस्तलेख में है।

संख्या ४६१च. सेवाफल, रचयिता—सूरदास जी, स्थान—गिरराज (मथुरा), पत्र—१, आकार—१०॥। × १०। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १५९६ से १६४० के बीच में, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० १८, पु० सं० १।

आदि—सेवानो वंछ्यो फल ॥ राग भैरव ॥
भजो गोपाल भूल मति जाऊ ॥ मनुशा जन्म को एही लाऊ ॥
गुरु सेवा करि भक्ति कमाई ॥ कृपा भई तब मन मे आई ॥

मध्य—
जो ठाकुर को लगावे भोग ॥ ताको परमानंद निजोग ॥
पावे पदवी जसोदामात ॥ ते सुख की कछु कही न जात ॥१२॥
ग्वाल मंडली गोपाल जिमावे ॥ सो ठकुर को सखाज् कहावे ॥
जो ठाकुर को स्वाद करावे ॥ सो ताको फल तबही पावे ॥१३॥

अंत—
सेवा कीहे अद्भुत रीती ॥ श्री विट्ठलनाथ सो राखे प्रीती ॥
श्री आचार जी ने प्रगट बताई ॥ कृपा भई तीनके मन भाई ॥२३॥
सेवा को फल कह्यो न जाई ॥ सुख सुमरो श्री वलभराई ॥
सेवा को फल सेवा पावे ॥ सूरदास प्रभु हृदे समावे ॥२४॥
॥ इति सेवा फल. ॥

विषय—श्री ठाकुर जी की सेवा किस तरह करनी चाहिए और उसका क्या फल होता है, यह वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—दोनों तरफ लाल स्याही से हाशिया छोड़ कर काली स्याही से पद लिखे गए हैं।

ग्रंथ के साथ निम्नलिखित रचनाएँ भी हैं :—

१ श्री गुसाईं जी के सात पुत्र के प्रागट्य को विचार लिख्यो है—यह भावना का ग्रंथ गद्य में है। कर्ता का नाम नहीं है।

२. "द्विदशात्मक स्वरूप को विचार"—अपूर्ण गद्य में है।

३. "हरिराय जी कृत शिक्षा" अपूर्ण।

४ बाद में—"निज वार्ता" के कुछ पत्र तथा फुटकर कीर्तन के पत्र हैं जिनपर पृष्ठ संख्याएँ नहीं लगी हैं।

संख्या ४६१छ. दानलीला, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—९ ३/४ × ६ १/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४० वि० (?) प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर फतेह बहादुर सिंह, क्षत्रिय पुर, पो०—मछगवां (जौनपुर)।

आदि—श्री कृष्णाय नम अथ दान लीलामिमय वर्नन ॥

॥ राग बिलावल ॥

भक्तन के सुषदायक स्याम ॥ जुवती पुरुष नांहि कछु नाम ॥
संकट में जन जहा पुकारै ॥ तहा प्रगटि तिनका उधारै ॥
जिय भीतर जिन सुमिरन कीनो ॥ तिनका दरस तहा हरि दीनो ॥
दुष सुष में जे हरि को ध्यावै ॥ तिनि को नैर न हरि बिसरावै ॥
चित दै भजै कोनहूँ भाइ ॥ तारो तिन्है त्रिभुवनराइ ॥
कामातुर गोपी हरि ध्यावी ॥ मनवच क्रम हरि ता चित लावी ॥
:o. o o.

चंद्रवदन तन अति सुकुमारी ॥
अपने मन सब कृष्णहि ध्यारी ॥
देषि सबनि रीझे बनवारी ॥
तब मन में इक बुधि बिचारी ॥
अब दधिदान रचो इक लीला ॥
जुवतिनि संग करो रंग क्रीला ॥
"सूरस्याम" मन सषा बुलाए ॥
यह लीला कहि सुष उपजाए ॥

अंत—. . . . .

यह सुनि नंद कुमार सषा दै सैन बुलाए ॥
मना मनसुषा सबल सैन महराज जगाए ॥
नैन सेन दै सांवरे राषे [illegible] [illegible] ॥
और गोप सब संग लै रोकि रहे मग जाइ ॥

॥ कहत नंद लाडलो ॥

एक सयानी सषी घेरि सब सषी बुलाई ॥
या बन मैं इक बार लूटि हम [illegible] [illegible] ॥
तनक केरि फिरि जाइये [illegible] [illegible] [illegible] ॥
यह झगरो सुनि होयगो गोकुल मैं उपहास ॥

॥ कहति ब्रज नागरी ॥ ३ ॥

लटि चलों सब ग्वारि कहौ कोउ जान न पावै ॥
रोकि रहे मग ग्वाल आप बातनि बिरमावै ॥
सषा सुबल दो बोल यो तं नागरि हरि जोग ॥
काहे बात बढावई जाहि हँसै ब्रज लोग ॥

विषय—श्रीकृष्ण का गोपियों से दान लेने का [illegible] । [illegible]

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । [illegible]
है ।

संख्या ४६१ज दानलीला, रचयिता—सूरदास जी [illegible]
कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८॥ × ५॥ [illegible]
(अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य [illegible]
से १६४० के बीच, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible]
३३, पु० स० ४ ।

आदि—श्री कृष्णाय नम ॥ दान लीला लिखते ॥
सुन तमचुर को सोर घोउ की वाग री ॥
नवसत साज सिगार चली नव नागरी ॥
नवसत साज सिगार हार पाटंबर सोहे ।
एक ते एक विचत्र देखि त्रिभूवन मन मोहे ॥
ईदा व्रिदा राधिका स्यामा कामा नारि ॥

मध्य—अनो वानें कान्ह कहत हमसो काहेतें ।
चोरी खाते छाछि नेन भरि लेत गहेतें ।
देत उराहनो रावरे वछ दावरी जोरि ॥
जब जसुधा ऊखल सो वाधे तव मे दीने छोरि ॥२०॥

अंत—अभरन दऐ मगाय कीयो गोपिन मन भायो ॥
हिल मिल बढरो आनंदु माट हसि आप उठायो ॥
जुगल किसोर के वारने गई सकल वृजबाल ॥
वृज केल मन मे वसी गाई सूर विसाल ॥४५॥

विषय—दान लीला ।

संख्या ४६१क पचाध्यायी रास लीला, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—६$\frac{1}{२}$ × ६$\frac{3}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर फतेह सिंहबहादुर सिंह, क्षत्रियपुर, पो०—मछलीगाँव, जिला—जौनपुर ।

आदि—................... ।
नि कुंडल धनि मृगमद चदन ॥
धनि राधिका धनि सुदरता धनि मोहन की जोरी ॥
ज्यो घन मध्य दामिनी की दुति यह उपमा कछु थोरी ॥
धनि मंडली जुरी गोपिनि की ता विच नंदकुमार ॥
राधा सग सब गोप कुमारी क्रीडत रास विहार ॥
षट दस सहस घोष सुकुमारी षट दस सहस गुपाल ॥
काहू सो कहूं अतर नाही करत परस्पर ख्याल ॥
धनि ब्रजवास ग्राम सव पूर्न कसैं होत हमारी ॥
सूर अमर ललना गुन गावत थकित रही निज लोक बिसारी ॥५३॥

॥ धनाश्री ॥ रास मंडल स्याम राधा ॥

अंत—सर्व शास्त्र को सार सार इतहास सर्व जो ॥
सव पुरान को सार सार जो सर्व श्रुतिनु को ॥
वेदनि विधि सो यो कह्यो दियो विधि रिषिनि बनाइ ॥
व्यास कह्यो वामन पुरान में सोई सूर कह्यो गाइ ॥१४८॥

इति श्री दशस्कधे त्रय त्रिंशत्तमोध्याय. ॥३३॥ इति पंचाध्यायी रास लीला सूरदास कृत संपूर्ण ॥ सम्वत् १८४० मिती कुआर वदि त्रियोदशी ॥१३॥ समाप्त ॥

:o: :o: :o:

अथ विद्याधर श्राप मोचन ॥

नद नद गोपीग्वाल समेत ॥ गयो सरसुती के तट इक दिन सिवा अंबका पूजा हेत ॥

विषय—श्री कृष्ण की रासलीला का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। समस्त पन्द्रह पत्रे उपलब्ध हैं। [illegible]। लिपिकाल सं० १८४० वि० है।

संख्या ४६१ञ. वंसी लीला, रचयिता—सूरदास (गिरिराज, मथुरा) [illegible]—देशी, पत्र—१, आकार—१० × ५॥। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८०, परिमाण (अनुष्टुप्)-२५, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ३६ पु० सं० ८।

आदि—अथ वंसी लीखी हैं।

राधे जू वंसी दीजिये व्रज नारि॥

काल्हि कुंज मे ठोर बांसुरी भूलि बिसारी ले जु गई व्रज नारि सुनी हम बात तिहारी॥ तिहारे काज न आवहीं वंसी हमारी देहु। हम आतुरह्वे मागहीं तुम नाहि न नाहि कहो॥ १॥

बंसी दीजिये हो॥

मध्य—वारी लाला हम सो कहत गवारि आपुनी करत बड़ाई मानो गुलचा गारतो बाबा की जाई॥ वे दिन क्यो तुम भूलि गए घर घर मांगत छाछि। फाटी कमरिया कांधे पर अब कहा कहत हो साछि॥ ४॥ वंसी केसी हो व्रजनाथ॥

राधे जू या वंसी को मरम कहा तुम ग्वानिन जानो।
हे त्रिभुवन प्रतिपाल ताहि मेरो मन मान्यो॥
यह वंसी खोजत फिरे शिव विरंची मुनी सात।
से दधि मटुकी सीस पें अब कहा नचावत हाथ॥ ५॥

अंत—प्राप्त नहीं।

विषय—राधा ने श्रीकृष्ण की वंशी छिपा दी और श्रीकृष्ण का राधा से वंशी वापस करने के लिये अनुनय विनय करना।

संख्या ४६१ट. गोवर्धन लीला, रचयिता—सूरदास (गिरिराज, मथुरा) कागज—माधोपुरी, पत्र—१६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १५६६ से १६४० के बीच, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ६ पु० सं० १।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः॥ राज बीलावल॥

नंद हो कहत जसोधारानी॥ सुरपती पुजा तुमे भुलानी
अह नही भली तुमारी बांनी॥ लोभ हो लोभ रहे हो मानी॥
देव कारज की सुध बीसरानी॥ महर कहत पुनी पुनी यह बानी॥
पूजा को दिन पहुचो आनी॥ सुरदास जसुमती की बानी॥
नदही खोज खोज पछतांनी॥ १

मध्य—पृष्ठ १७

मोको नंदी परवत हो वंदत॥ चारा कपट छंदी ज्यो फंदत॥
मरन काल एसी बुध होई॥ कछु कछु कहत कहु कह कोई॥
खेलत खात रहे ब्रीज भीतर॥ नाहाने लोग तनक तन ईतर॥
समे समे बरषो प्रतोपालो॥ ईनकी बुध ईनको सब पालो॥

मेरे मारन कौन रागे है ॥ अहीरन के मन अहकाय है ॥
जो मन जाकु ताई पानने ॥ दानी बल गाश्रे श्राव कोउ पावे ॥

विषय—श्रीकृष्ण भगवान् के गोवर्द्धन पर्वत धारण करने की लीला का वर्णन ।

संख्या ४६२. बारहखड़ी, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—७३ × ५३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥

लीषते पहलाद की बारापरी ॥
क के दहु पहलाद किन्ही बहकाये ॥
हमरे वैरी कंठ लगाये ।
छाड़ो हर गुरु भजो ना रामा ॥
इतनी कही हमारी माना ॥
पये पलक उपाड़ किसकी ॥
हिरदै भगत वहै मै उसकी ॥
रा ग गंगा पढ़ विचारा ॥
हर विन कौन उतारै पारा ॥
गगे गुरु हम कुं बहकावै ॥
हीरनाकुस का नाम लीवावै ॥
हीरनाकुस का नाम न प्यारा ॥
मारो संठी घोह पिटारा ॥

:o: :o: :o:

अंत—पहलाद उतर गये पारा ॥
वहोर न आवै यह संसारा ॥
राउे गह मोरी वहुतै सुष पावा ॥
द्विज सुदामा हर गुन गावा ॥
बारह परी पढ़ै चित लाई ॥
वहै सूर वैकुंठ जाई ॥ श्री शुभमस्तु ॥

इती बारापरी पहलाद की संपूरणं ॥ श्री राम जी सहाय ॥ लीषतं पुरतगः सरब सुष गुरुन की : सदत १८३६ ॥ श्री साके १७०१ सहस कासीपुर सुथान ॥ श्री ॥ भवानी ज सहाय ॥

विषय—प्रह्लाद की भक्ति का वर्णन ।

संख्या ४६३ गोपाल गारी, रचयिता—सूरदास, कागज—आधुनिक, पत्र—४, आकार—७ × ५३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री सीताराम जी सहाय । श्री हनुमान जी सहाए । श्री दुरगा जी सहाए । श्री महादेव जी सहाए । श्री गोपाल गारी लीष्यते ॥

:o: :o: :o:

सोने का परीक्षा लगाइ जी॥
सोने की गडवा गंगाजल पानी ।
व्रषभानही चरन पपारी जी॥
चरन पपारी चरनोदक लीन्हा ।
एती बडी भागी हमारी जी॥
सभ सपीग्रन मीली देपन ग्राए ।
कइसे लालन बनी ग्राए जी॥
सावर रुप कोमल दल लोचन ।
ग्रांपी बनी रतनारी जी॥
ग्रस सुंकुग्रार देवकी के नंदन ।
रुकुमनी चवर डुलावे जी॥
जेवन बइसे श्रीजुन कधैया ।
देही सपी सभ गारी जी॥

ग्रंत—एक राती पुत्ता गइल ससुरारी ।
सासुक कइल बडाइ जी ।
तुमरी दोहाइ माता नंदबवा की ।
ग्रब न जाइबो ससुरारी जी॥
हमके तोहके नदबवा जी के ।
देही सपी सभ गारी जी॥
गारी के ग्रनमप जनी करी पुत्ता ।
गारी प्रेम पीग्रारी जी॥
जुगु जुगु जीग्र पुत्ता ग्रमर होइके ।
नीती उठी जा ससुरारी जी॥
नेगचार सभ ग्रापन करही ।
स्रीएन के होए चौठारी जी॥
कगन छोडी के मंगल करही ।
दीन दीन करही ग्रनदा जी॥
सुरदास प्रभु तुमरे दरस के ।
जीन्ह एह गारी गाए जी॥

इती श्री पोथी गोपाल गारी कथा समापत सपुरन भइल जो देपा सो लीपा हमके दोप मती दीजिएगा सो जानोगे ॥

विषय—श्रीकृष्ण के ससुराल जाने पर स्त्रियों का गाली देना ।

संख्या ४६४क. बारहमासी, रचयिता—सूरदास (सूरदास) [illegible]—[illegible] पत्र—३ (२२ से २४ तक), आकार—६।×४। इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible] कांकरोली, हि० ब० ७०, पृ० स० २१६ ।

ग्रादि—बारेमासी ।
कातिक कोलीत करे सब सखियां राधा विचार करे मन मे रे ।
माधो प्रिया को ध्यान मीलाओ नही तन पान तरुनी [illegible] मे रे ।
हमको छाड चले रे देनीमाधो राधा विचार करे मन मे रे ॥१॥

मध्य—
लाग्यो अगाड घुमट आये बदरा बीजली चमुके कारे बादर मे रे।
चमक चमक चहूं ओर निहारी जेसें सोप रहे जल मे रे।
हमको छांड चले रे बेनी माधो राधा विचार करे मन मे रे।
अंत—
क्वार माम निरमल भये चंदा गोरी सोवे अपने आगन मे रे।
सूर स्याम प्रभु आन मीलाये राधा खुसीय भई मन मे रे।
हमको छाड चले बेनीमाधो० ॥

विषय—श्रीकृष्ण के वियोग मे राधा के बारह मास के विरह का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रंथ कत्थे की स्याही से लिखा है। इसमें कुल १३ ग्रंथ लिखे हैं :—

१ बारहमासा कृष्ण का—ब्रजजीवन कृत, २ बारहमासा कृष्ण का—अज्ञात, ३. बारहमासा राम का—तुलसीदास जी कृत, ४ बारहमासा मारवाडी—तुलसीदास जी कृत, ५. बारहमासा—बनारसी कृत, ६ चौमासे के चार महिना—सुरतगिरि कृत, ७. बारहमासा गजल, ८. बारहमासी—सूरश्याम कृत, ९ बारहमासी—सूरश्याम कृत (दोनों पृथक् पृथक् हैं), १०. गजल फुटकर—, ११ बारहमासा—, १२ पहेलियाँ—, १३. चित्रबंध काव्य भाषा।

संख्या ४६४ख. बेनी माधो जी के बारहमासा, रचयिता—सूरदास, कागज—आधुनिक पत्र—६, आकार—७.१° × ६.२° इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९४१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीमती चौगना देवी, धर्मपत्नी—स्व० रामशंकर पांडे, ग्राम—गौंडीहार (सुरसुतीपुर), पो०—अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गनेस जी सहाए॥ श्री सीताराम जी सहाए॥ श्री काली जी सहाए॥ श्री दुरगा जी सहाए॥ श्री पोथी बेनो माधव जी के बारहमासा॥

॥ कातीक ॥

कातीक कौल करे सब गपीआ राधा वीचार करे मन मे रे॥
माधो पीया को आनी मीलावो नाहीत प्रान तजो छन मे रे॥
हमको छाडो चले बेनीमाधो राधा सोच करे मन मे रे॥

॥ अगहन ॥

अगहन गेंद बनाए सामरे जाए पेले टट जमुन कीनारे।
पेंगत गेंद गीरे जमुना मे कालीनाग नथे छन मे रे॥
हमको छोडी चले बेनी माधो राधा सोच करे मन मे रे॥

॥ पुस ॥

पुसमास हमसो छल कीनों आपु चले मद्दया मधुबन फेरे।
तुम नंदलाल जनम के कपटी हम से कपट करे मन मेरे॥

॥ माघ ॥

माघ मास मइया जाडा परतु है नीद न आवे मेरे नैनन मे रे।
हमको बैरागीनी करी बेनी माधो घर घर अलख जगावन फेरे॥
हमको छाडी चले बेनीमाधो राधा सोच करे मन मे रे॥

अंत— ॥ कुआर ॥

वारहमास नीरमल मैं चंदा गोरी तो गोयं अपनो आगन मे रे ।
"सुरदास सामी" आनी मीलावो राधा सुघी होए मन मे रे ॥
हमको छाडी चले वेनीमाधो राधा सोच करे मन मे रे ॥

॥ दोहा ॥

लीपा काएथ को मेटी सके वीघना लीपा न जाए ।
जैसे कोहार के आया करीआ लाल वनी जाए ॥

॥ सपुरन ॥

श्री सीताराम जी के पत्र जो देपा सो लीपा ॥

विषय—श्रीकृष्ण के वियोग मे राधा और गोपियों का विरह वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १६८१ वि० दिया है। विशेष के लिये देखिए, 'भरथरी की कथा' का विवरण पत्र ।

संख्या ४६५. कुवर सदैवच्छ सावलिग्यारी की वार्त्ता, रचयिता—मूरमेन, कागज—देशी, पत्र—५३, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरी-*प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), वाराणसी* ।

आदि—श्री रामाय नम. ॥ अथ कवर सदै विछ सवलिग्यारी वारता लिषिते ॥ राजा साल वाहण अटक सैहेर को राजा हुओ ॥ नीलापुर नदी जी ठै राजा राज करै ॥ जो राजा कै कुवर सात हुआ ॥ ज्यामैं कुवर सदै विछ दोय सु छोटो ॥ चपारि सु वडो ॥ कुवर जी की उमरि वरस ॥२१॥ की छै ॥ कुवर जी की सुरति सुरज की सी झिरति दिपै छै ॥ कुवर जी सुरवीर छै ॥ जीकनै सात अरवीस ऊमरावा का वेटा चौकी रहै ॥ आपरा मयारै की चौकी चौकी करै छै ॥ ज्याकी ऊमरि वरस ॥२५॥ के तलै अर पीन के ऊपर ॥ और सावत सुरवीर छत्री कनै रहै छै ॥ ऐक दिन भादवा को मनो छो ॥ दिन को अगेनी कवर जी गोषै विराज्या छा ॥ अर मेह की वुंद पडै छी ॥ अर कवर जी दोहो कह्यो ॥ दोहा—

भादवा मास सुहावणो ॥ वरषत मधुरी वुंद ॥
पेलण दिन सिकार रो ॥ देषण वाग सुगंध ॥ १ ॥

मध्य— ॥ दोहा ॥

फासा तोय मनायस्या म्हारो चाह्यो आऊ ॥
जो जीतुहु पीवतु तो परिज्यो पंद्रापाव ॥ ४ ॥
जदि पद्राहो पडयो जदि सावलिग्या मन मैं राजी हुई
जदि भुपाल दोहो कह्यो ॥

॥ दोहा ॥

फासा हाथी दात का ॥ पडिज्यो पुरादन ॥
वाजी साह कवार की ॥ मुनं आवं ज्ञग ॥ ५ ॥

जदि दसकोई पडयो नही ॥ छं तीन पानो पडया ॥ जदि भुपाल कही दाजी तो ऊपरै कोई आवै नहीं ॥ जदिसुजाणी फासो हाथ मैं फेर दोहो कह्यो ॥

॥ दोहा ॥

नारि जगोल्हावाक हाय छी चतुर सुजाण ॥
जो जोनै सा इक वारिया तो पढिज्यो सवादाय ॥ ६ ॥

अंत—

राजा सांहि सव वैठिकर ॥ जुग मैं करी जगोस ॥
म्हाको थाको वस नही ॥ लिपी दीनो जगदीस ॥७६॥
परसपरा कवि सो कही ॥ कविन विचारि विचारि ॥
घाटि वाढि समझु नही ॥ लीजो सुधारि सुधारि ॥७७॥
रस की वात सुप्यारक ॥ रीझै चतुरही ॥
सजन पावं सुपक ॥ कपं सवुही ॥ सुरा हथीवात क सुघड़ जोय भावही ॥
परिहासिमि वंठे सव पासक ॥ रग ऊपजावही ॥७८॥

॥ चद्रायण ॥

पैहेला गुण सीखं सुणं ॥ साई नर चतुर सुजाण ॥
सुरसैण गुण परघट कीयो ॥ पायो दान सनमान ॥७९॥

॥ दोहा ॥

वालिक अजाण ॥ क्षुद्र मुप कं न दीजं हाय ॥ चेत के रापो वीर ॥ कागद को काम है ॥ जल तेल दीपक तं ॥ कसारी को रापो उर ॥ रंनि द्योसि हियं माहि ॥ अंकुस आठो जाम है ममझि सापि पटिवे को ॥ रच्यो है सिगाररस ॥ हासी कौन काम ॥ ईह लागं ग्रथ दाम है ॥ वाचिवे उतारिवे को ॥ कीजियं न नाही ॥ आट मन भारी पं विचारि लेहु ॥ जानं सीताराम है ॥

ईनी श्री नर्दवछि सावलिग्या की वर्त्ता संपुरण शुभमस्तु समत १८२६ मिती श्रावण वदी ११ मनिवासरे लिखित लाला सिरदार सिंघ पठनार्थं शुभसमस ॥

विषय—इसमें कुंवर सदैवच्छ और सावलिंग्यारी की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता का नाम सूरसेन है, पर उन्होंने अपना कोई परिचय नहीं दिया है।

ग्रंथ वृहद् हस्तलेख में है जिसमें निम्नलिखित ग्रंथ संकलित हैं —

१. रमणशाह शाहजादा व छबीली भठियारी और विचित्र कुंवर का किस्सा।
२. कुंवर सदैवच्छ सावलिंग्यारी वार्त्ता—सूरसेन कृत।
३ छत्र मुकुट तथा रानी चंद्र किरन की कथा।
४ चोर चिंतामणि—उदयकृत।
५ नवीन परीक्षा—रामकृष्ण कृत।
६ विरह मंजरी—नंददास जी कृत।
७ सनेह लीला—रसिकराय कृत।
८ दान लीला—रामकृष्ण कृत।
९. भ्रमरगीत—नंददास जी कृत।

प्रस्तुत ग्रंथ में लिपिकाल सं० १८२६ दिया है, पर अन्य ग्रंथ १९०५–१९०८ तक के लिखे हुए हैं। इस कारण सं० १८२६ संभवतः उस मूल प्रति का समय है, जिसकी यह स्वयं प्रतिलिपि है।

संख्या ४६६. रामायण, रचयिता—सेवक सुकवि, कागज—देशी, पत्र—२१, आकार—९ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९३ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह ११९।५५ बस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रामचद्र जन्म लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

एक समै दसरथन गुर पुछै ग्रह घाई।
कहि वात गुर सो यहै वीन सचतीन गुराई॥
गुर सनकादिक सो कह्यो राज अपुत्रक जाई।
सनकादिक नै या कही सींगी रीष ग्रह जाई॥
गुर राजा को लै चले कोसल्या लै साथ।
सींगी रीषकै ग्रह गये रीष आदर करो तब॥ ३॥

मध्य—यही कथा श्रीकृष्ण सो कहै नाग करि जोरी।
यही कथा कहीवो करै सुर तेतीस करोरी॥१२०॥
यही कथा जसवत सो "सेवक सुकवि" बषानी।
यह संप्रत श्री भागवत यही वेद मै ग्रानी॥१२१॥

अंत—इहि वीधी आप पधारए दुदुभी देव बजाई।
भई लोक उछहै कीयो सेवक सुजस पढाई॥
रामकथा वाचै सुनै हीरदै ध्यान जिय रादि।
ताको मै ऐसै करो जाका ध्रुवसे साषी॥१८॥
यह रामाईनी के सुनै होत सुषी परकाम।
पल पल मै सेवक सुकवी दुष दालीद्र को नास॥१९॥
च्यारी वेद व्याकरन नव अमर भारत प्ररमान।
सचती है हींगे धनी धनी षषानीधान॥२१॥

इति श्री रामायण सपूर्ण ॥ श्री सवत १८९३ मीती आषाढ वदी ३० बुधवासरे लीषत गोवींदराम आप हेतु शुभमस्तु कल्यानमस्तु।

विषय—रामायण की कथा सक्षेप मे वर्णन की गई है।

संख्या ४६७. वानी, रचयिता—सेवा (सेवादास नभरल), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७¼ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—.......................... ......

जब जानेउ सदगुर की वानी। तब सब मिथुहि गोपद जानी॥
सबतें परे भरे सब माही। जिमि देषिय रवि की परछाही॥
इछ्छा जीव अंस है भाई। [illegible] आइ सो [illegible]॥
सब तन धारि मिलेउ मानुष तन। नारि बिसारि सुधारि धाम धन॥

॥ छद ॥

धन धाम काम सुधारि करते दिवस निसि [illegible]।
भव भ्रम विमोह पचड व्यापत तासु तापत [illegible]।
कहुं देव पितर पषाढसो दत धर्म तीरथ सो [illegible]।
"सेवा" भइ प्रति हाल जिव [illegible] कारन निसि [illegible]॥

:o: :o: :o:

अंत—मैं निज भाव पुकारे कहऊ । जेहि प्रकार तें डोलत रहऊँ ।
जैसे नीर सहज स्वर धारा । नीर उलटि तहं दीपक वारा ॥
तसैं दीप सर्व सब सोई । जन सेवा दूजो नहि कोई ॥
जिमि कंचन तन बहु बहु नामा । "जन सेवा', प्रभु पूरणरामा ॥

॥ दोहा ॥

यह श्रव चरित्तहि सुजन जन सुनहु सहित अनुराग ।
जेहि विधि जनमेउ जीव जंह तह तस कहुउ सोभाग ॥
जबतें जनमेउ आइकैं तबतें सब गुन सीप ।
सेवा अमित भाति जड़ समुझेउ गुनेउ न दीप ॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—निरगुन सिद्धातानुसार ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । केवल तीन पत्ते उपलब्ध हैं । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

संख्या ४६८क. रघुनाथ अलंकार, रचयिता—सेवादास, कागज—देशी, पत्र—५३, आकार—$3\frac{3}{8}$ × $5\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४० वि०, लिपिकाल—सं० १८४५ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह, ६११५५ बस्ता), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—

श्री अलबेले लाल जुगल चरननि चितु धरिये ।
होतु बुधी प्रकाम चरित रघुवर को करिये ॥
मनुवंछीन फल देत सकल सतप—
नमवे ॥ केवल प्रभु को सुगानु किमदरि हेरत ।
रछ्या करत सेवदास छवि मधुरि नैननि सों नाई ने हेरत ॥

॥ दोहा ॥

श्री अलबेले लाल के जुगल चरन करि पीत ।
"सेवदास (? सेवादास)" बरननु करी अलंकार की रिति ॥ २ ॥
श्री रघुवर को नमयह जनक्सुता धरि ध्यान ।
अलंकार जानिय मरम होइ हृदे में आन ॥ ३ ॥
अठारह सै चलिस सो सवन मरम बखान ।
पोषानाम बदि सप्तमैं वार भौम सुभ जान ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

कटि निषंग सुंदर धनष करन मनोहर तिर ।
मो मन यों पुरन करो रामचंद रघुविर ॥

अंत— ॥ सोरठा ॥

बाय ननर थनिरान मंनन की रछ्या करन ।
करम निरंतर ध्यान सीतापति श्रीराम को ॥२००॥

॥ कवित्त ॥

कंचन सो गात मानो उदित प्रभात भान अतिही चपल चारु बुद्धि के सुधीर हैं ।
पिंगारुन नैन और लालही मुखारविंद झलकै लागुट वर उज्जल सो हीर हैं ।
अतिही प्रचंड वेग मनहू सो कोटि गुन अजनी सुमातु सुचि पीनानो गम्भीर हैं ।
"सेवादास" राम को चरित जहा राजत है रछा ही करत हनुमन्त ऐसो वीर हैं ॥
इति श्री रघुनाथ अलंकार सपुरन सुभं ॥

॥ छपय ॥

धनपवान असि चर्म कमल अगूरीन अगूठी ।
सारग सुधी कठिन कमठ सरद वर ललित अनूठी ।
हरित चक्र अति तेज कुलग असुनहि कचन रति ।
नवयुग चुच कपोत धार स्याम ही सुभ सो सुचि ।
पुगगसग सीपरज हय वामे छेमग्नगन ।
रहत सदा रघुवीर कर सेवादास ताथ के मगन ॥
रामदास पोथी लीपि मन में अति सुखपाय ॥

विषय--अलकारो का वर्णन ।

रचनाकाल

१८ ४०
अठारहसै चालीस सो संवत सरस पवान ।
पौषामास वदि सप्तमै वार भौम सुभ जान ॥

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल स० १८४० है । लिपिकाल अन्य ग्रथ 'रस दर्पण' के आधार पर, जो इस ग्रथ के साथ एक ही हस्तलेख में है, स० १८४५ है ।

प्रस्तुत ग्रथ रचयिता के निम्नलिखित अन्य ग्रथो के साथ एक ही हस्तलेख में है --
१ गीता माहात्म्य--सेवादास
२ रघुनाथ अलकार--सेवादास
३. अलवेले लाल जू को नखसिख--सेवादास
४ अलवेले लाल जू की छप्पय--सेवादास
५ विना नाम का एक ग्रथ--सेवादास
६. रसदर्पण--सेवादास
हस्तलेख अत्यत अशुद्ध लिखा है ।

सख्या ४६८ख. अलबेलेलाल जी को नखसिख, रचयिता--सेवादास, कागज--देशी, पत्र--२१, आकार--$7\frac{3}{4} \times 5\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप्)--२२२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १८४५ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह, ६१।५५ वस्ता), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि--श्री रामाय नमः ॥ अथ अलवेले लाल जू को नखसिख वर्ननं ॥
॥ अथ तरवा वरनन ॥
॥ कवित्त ॥
सोनो सो प्रकास कैधो उदित दिवाकर की किरनै उजास तास लालिमा ने ले के ।
मानिक मयूख कैधो मंगल सरूप रूप छाजत अनूप के पलास कुसुम सेत के ।
तामरस रूप इद्रवधू के वरन देखो सेवादास ध्यान धरि सुदर सुचैन के ।
कोमल अमल लाल पल्लव रसाल जाल छविनि के ताल लाल चरन वसदे(मे) के ॥ १ ॥

अंत— ॥ कवित्त और ॥

धरिये गुन सुंदर रूप महा लपियें छवि नैननि की भरियें ।
भरिये प्रभनाम सदा मन मैं छिन मैं भवसागर को तरियें ।
तरियें वर पावन प्रेम हिये निसिवासर नेम मुदा करिये ।
करिये सेवादास निरंतर सो अलवेले (को) ध्यान सदा धरिये ॥५२॥

इति श्री अलवेले लाल जू को नष रूप वर्ननं संपुरनं सुभम् ॥३४॥

विषय—अलवेले लाल जू के नखशिख का वर्णन ।

संख्या ४६६. नलपुराण या नल दमयती चरित, रचयिता—सेवाराम, स्थान—वेरी नगर, कागज—देशी, पत्र—५७, आकार—७३/४ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२१२, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५३ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नल पुराण लिष्यते ॥ श्री कृष्ण उवाच—

॥ चौपाई ॥

हो नृप गणपति पूजन कीजे अरिको जीति परम सुष लीजे ।
सुनौ एक अतिहास भुवपाला है वन मैं तुमको सुष शाला ॥ १ ॥
सतयुग आदि नृपति नल भयो जानें पौहुमी को सुष दयो ।
सुत समान छिति पालन कीनों मन वांछित दीनन को दीनों ॥ २ ॥
हंस एक अति चतुर सयांनों मान सरोवर ते जु उडानों ।
पीत वरन कंचन सौं लसें श्रुति सुम्रति वांनी उर वसें ॥ ३ ॥
छिति धारीनि के दरसन करें निजु आनंद हिये मैं भरें ।
दछिन देस विचित्रपुर ग्राम सिध घोष नृप नाम सुनांम ॥ ४ ॥
ता तनया दमयती जानों सकल रूप की रास वषानो ।
दस सहस्र जुवती संग रहैं मधुरे वचन मनोहर कहैं ॥ ५ ॥
एक जुतिया को कनि जु पटी दिन प्रति सुधि वुद्धि अटि घटी ।
चित्र स्वरूपा नाम है जाको रहै ध्यान पढिवें में ताको ॥ ६ ॥
राजसुता की प्रान पियारी छिनक एक निजु करें न न्यारी ।
एक समें दमयंती वाला चढी चित्रसारी सुभ काला ॥ ७ ॥

मध्य—

संध्या करि पिय आवत देषे पूरण सिंध सोक मैं पेषे ।
निपट आइ रानी सौ कही क्यों सुंदरि व्याकुल ह्वै गई ॥८०॥
कहि कहि कहा गयौ निजु तेरो लपियें व्याकुल ताको फेरो ।
अगुरो नष सो मही विदारयो काको ध्यान हिये मे धारयो ॥८१॥
सब सरीर की सुधि विसराई रुंधित कंठ कह्यो जाई ।
छूटे केस अलक मुष रूमैं नागिनि सी आनन पै घूमैं ॥८२॥
सो हम सो निज कह समझाओ क्यों वन मांझ महा दुष पाओ ।
तुमतो हो तिय चतुर सयांनी नल से राजा की निजु रानी ॥८३॥

॥ दमयंती वा० ॥

सुनो कथ अब कह्या न जाई क्षुधा लगी तासों न वगाई ।
दोनों भाग उदर धरि लीनें पोटे कर्म जानि मे कीनें ॥८४॥

॥ दोहा ॥

तासों लज्जित हों भई नरवनीस मुनि नेहु ।
हमकों हिये विचारि कै धाम जानि कै देहु ॥८५॥

अंत—

ताको ध्यान धरो तुम राई अंसे महा परम सुखदाई ।
माघ चतुर्थी संकट हरनी जानि महीपति वेदनि बरनी ॥४१॥
वृन की तेज होइगो तन मैं अर्जुन मिलै आइकै बन मैं ।
राज हस्तनापुर को जितनों अंत परताप पाइहो तितनों ॥४२॥
गणपति कथा सुनै सत सोई ताको मन वांछित फल होई ।
वृत के दिन मन साधन करै क्रिया सहित निश्चै उर धरै ॥४३॥
ते जन सदा सदा सुष पावै निज गणपति के दास कहावै ।
हंसदूत की काव्य लषि भाई सेवाराम कहै समझाई ॥४४॥
जो जन गुण गणेस कै गावै भवसागर के दुःख नसावै ।
तिनिकों उत्तिम जानों अग जो गणपति के सुने प्रसन ॥४५॥

॥ दोहा ॥

वेरी नगर सुहावनी श्रीपति को विश्राम ।
सेवाराम रहै जहां जपै गजानन नाम ॥ ४६ ॥

इति श्री गणेशखंडे श्री कृष्ण युधिष्ठिर संवादे कवि सेवाराम कृते नल दमयंती चरित्रे नाम पंचमोध्यायः ५ श्रीरस्तु कल्यानमस्तु ॥

विषय—इस ग्रंथ में पांच अध्याय हैं जिनमें नल दमयंती चरित्र वर्णित है। अध्याय इस प्रकार हैं —

प्रथम अध्याय	पत्र १–१०	छंद १२५
द्वितीय अध्याय	,, ११–२०	,, १३३
तृतीय अध्याय	,, २०–४४	,, २४६
चतुर्थ अध्याय	,, ४४–५३	,, १३८
पचम अध्याय	,, ५३–५७	,, ३६

संख्या ४७०. रससागर, रचयिता—मैंदपहार, कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—१०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible] दुबे, ग्राम–वीरपुर, पोस्ट–हंडिया, जिला–इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मैंदपहार जैसी प्रति देषी तैसी लिषितं मैंद [illegible] सुत विरचिते ॥

अथ जसद रागु सोधन विधि

॥ चौपाई ॥

पाषर धातु कही सुधनी । जैसे कहिगे पहिले मुनी ।
हीरा को मथि काटे माह । फिरि औरे सात दिन माह ॥
बालक पूतनाह औटावे । सात दिवसलों अग्नि लगावै ॥
सोनो रुपो तामो लोहा । सोधेन मारो एह विधि होहा ॥

अंत—

अब सुनु देव दोष की बाता । कबहू सुष नही पावै गाता ॥

इति श्री सैदपहार सैद अहमद जा सुत विरचिते समाप्त. जैसी प्रति देषा तैसी लिषा भूल बहुत है ग्रंथ मे जिला फ़तेहपूर प्रगना हस्त ग्राम मौजे कासिमपूर अस्थान कटरा पुस्तक लिखि बचुलाल बनिया जियालाल पी वेटा कटरा के इति श्री माघ मासे सुक्ल पक्षे तिथि द्वितिया वार शनिश्चर संवत् १६१२ ॥

विषय—धातु मारने की विधियों का वर्णन ।

संख्या ४७१क शृंगार विलास, रचयिता—सोमनाथ (शशिनाथ), कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—८¾ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६५ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्य भ.पा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह) काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥

उदय दिवाकर रंग अंग आभा वर धारिनि ।
त्रिनयनि चंद लिलार ईश अरधंग विहारिनि ।
सिंघ वाहनी सिद्धि चारि भुज आयुध मंडिनि ।
जुगिनि मंडल संग चंड दानवदल दंडिनि ।
वह बुद्धि वृद्धि वरदाइनी मोहनि सुरनर मुनि मननि ।
हूजे सहाइ "सशिनाथ" चों जय जय सिंधुरमुष जननि ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सुमुष सिद्धिधर बुद्धिवर गुनमंदिर सुभदाइ ।
सोमनाथ कों होउ अब सिंधुरवदन सहाइ ॥
कविनि बनाए ग्रंथ बहु रस के सहित हुलास ।
छाया बधि सु हो रचतु यह सिंगार विलास ॥ ३ ॥
रस को मूल भाव पहिचानो । ताको लछन यह उर आनो ॥
चित्त वृत्ति ही लों ठहराई । भाव वासना रूप बताई ॥ ४ ॥

अंत—अथ मध्यमालछनं

हित अनहित जोकरै तिय पति की रीति समान ।
ताहि मध्यमा नारि कहि बरनत सकल सुजान ॥१८॥

॥ यथा ॥

अरमाने गात अंगरात उठि आए प्रात जोति मुष चंद की प्रगट पतरानी री ।
बरि...

॥ अन्यच्च ॥

मान करिबे की तुम सीष सिषवति आनि कासों कहूँ मान कहि मौंन हूँरी काको छौंन ।
हों तो ए चयाउ कछू जानति न एको तुम अपनी ढिठाई धरि गायो अपनेई भौंन ।
सोमनाथ प्यारे सों वियोग ही की बात कही दीमति सयानी यों अयानी होति सही मौंन ।
छिन बिना देषे हरि हूरे मो गहन प्रान मोहनि मरोरिकै घरी लों एठि बैठे कोन ॥१६॥

इति श्री कवि सोमनाथ विरचिते सिंगार विलासे ॥ संजोग सिगारे मुग्धादि स्वाधीन-पतिकादि नाइका वर्ननं नाम षष्टमोल्लास. ॥ ६ ॥ ६ त्रुटि

विषय—नायिका भेद वर्णन।

ग्रथ मे 'उल्लास' नाम से छह अध्याय है —

१ प्रथमोल्लास—मगलाचरण, ग्रथ रचना का कारण, रस, भाव, अनुभाव आदि वर्णन—पत्र १ से ३ तक।

२ द्वितीयोल्लास—रस लक्षण, उनके रग तथा स्वामी आदि का वर्णन—पत्र ३ से ३ तक।

३. तृतीयोल्लास—शृगाररस वर्णन, उसके अनगत नायिका तथा स्वकीया, परकीया और सामान्या आदि उसके भेदो का वर्णन। स्वकीया के भेदोपभेदो के लक्षण और उदाहरण—पत्र ३ से ६ तक।

४ चतुर्थोल्लास—परकीया तथा सामान्या के भेदोपभेद, लक्षण और उदाहरण—पत्र ६ से ११ तक।

५ पचमोल्लास—अन्य सभोग दुखिता, गर्विता और मानवती वर्णन—पत्र ११ से १२ तक।

६ षष्ठोल्लास—स्वाधीन पतिकादि दश नायिका (स्वाधीन पतिका, खण्डिता, कलहतरिता, विप्रलब्धा, उत्कठिता, वासकसज्जा, अभिसारिका, प्रोषित पतिका, प्रवत्स्यत्पतिका और आगमिष्यत्पतिका)—वर्णन—१२ से २२ तक।

संख्या ४७१ख. प्रेम पच्चीसी, रचयिता—सोमनाथ "ससिनाथ", कागज—देशी, पत्र—२, आकार—७३/४ × १०३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आयभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—॥ श्री राम जी ॥

॥ दोहा ॥

मंगलमूरती बीघन हर सुंदर त्रिभूवन पाल।
येवट प्रेम समुद के जय जय श्री नंदलाल॥ १॥
क्या किति तकसीर तुसाडी नही मुखउ दिखलावें है।
राति दिहा विनु तडी चरचा मुझनु और न भावें है॥
वेदरदी महवुव गीर दे क्यों जरदगी करदा है।
"सोमनाथ" नेही सें कैसा दील अदरदा परदा है॥ २॥
वे तुझ सें महवूव गोवोदे नैनो साडे उरझे है।
कोन सकें सुरझाय इन्होनु ओर सें नही मुरने है॥
वेदरदी पें है चाव दरदनु भला दीया तें अरदा है।
"सोमनाथ" नेही सें कैसा दील अदरदा परदा है॥ ३॥

अंत—तोरीं से तिखी नैनोनु क्या यह ख्याल सीखाया है।
नही मान दे आन हठीले मेडा चीत चुराया है॥
तुसी दरस के फदा मैनु नाही अमल उतरदा है।
"सोमनाथ" नेही सें कैसा दील अंदरदा परदा है॥
काम नही यह सवदा फोइ लि निरखाहै टाटा है।
साहिव दे दरसन दा दरसन नही टो दा घाटा है॥
कहि "ससिनाथ" सुनो येदाए नहचें दिलदा साटा है।
नही किसीदा आठा तोभी इसक सेहदा घाटा है॥२८॥
जे वासे महवुब तीन्होदी गतीयो क्यों न सगाद है।
कहें "ससनाथ" अनोखी आपें देयें सहित उछाह है।

करदै अदा सदा ही अपना दरद प्रकास नाही है ।
बाहर बे परवाही दील मे दीलवर स गलवाही है ॥२७॥

॥ दोहा ॥

पच्चीसा यह प्रेम को सुन सुष पावै मीत ।
"सोमनाथ" वर्रन रचो नंद कसोर नीमत्त ॥२८॥

इति श्री प्रेम पचीसा संपूर्ण ॥ लीषतं लाला सीरदार सी लीषत बीनाया घोस नै अपंड पं..............

विषय—श्रीकृष्ण-भक्ति वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल, कृत ग्रन्थ सह कुलपति मिश्र कृत 'दुर्गा भक्ति चंद्रिका' के आधार पर संवत् १८८० है । प्रस्तुत ग्रंथ एक बड़े आकार के हस्तलेख में है, जिसमें रामचंद्रिका—केशव कृत, विनय पिताम—गणेश मिश्र कृत, दुर्गाभक्ति चंद्रिका—कुलपति मिश्र कृत है ।

संख्या ४७२. रामअक्षरी, रचयिता—स्वामीदास, पत्र—३, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कु० हाकिम सिंह, ग्राम—खजुराहा, तहसील—राजनगर, राज्य—छतरपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ लिष्यते राम अक्षरी ।

॥ दोहा ॥

चरन गहौ गननाथ के विनय करौ कर जोर ।
मोसे ते अनाथ कौ तुक अछिर देव जोर ॥
श्री श्रीपत सुमरो तुम्हे सुमरो गुरु गनेस ।
राम अछरी उच्चरौ पूजो देव महेस ॥

मध्य—काम परे बीते तबै तब मन मे पछताइ ॥
येवे येक और सुनियत सवेरे रघुपति चरत अपार ।
कलप कलप को है कथा राम नाम निजसार ॥

अंत—...............को सेना पत रघुवीर ।
हनुमत गये पताल को वे ल्याये दोई वीर ॥
....
....
राम अक्षरी ब्रज कही हर भगता स्यामीदास ।
चित्र सुनै इक मुष्य को कष्ट न व्यापत तास ॥

इति श्री राम अक्षरी समाप्त शुभमस्तु मंगल ददात ३५ ॥

विषय—स्वर व्यंजन के क्रमशः प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर रामचरितमानस की संक्षिप्त कथा का वर्णन किया गया है ।

संख्या ४७३. राग सर्वांगं रागमाला, रचयिता—स्वामी कार्तिक, कागज—देशी, पत्र—५३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी, मैनेजर, अमेठी राज, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

धुनि विसेष सुर वरण सो होइ विभूषित देह ।
जनमन को मोहित करै वहै राग रस गेह ॥ १ ॥

॥ कुलपपा छद ॥

रागांग भाख्यं गती जे कृपाग इनको कहो रूप चौथो उपाग ॥ २ ॥

॥ तस्य लक्षण दोहा ॥

रागछाह को अनुसरै सो कहियत रागाग ।
चित को चोरै सुनत ही है अनग को अाग ॥ ३ ॥
करुणा औ अत्साह पुनि तातें उपजत आय ।
तासो कहत कृपाग पुनि सब कवि कोविद गाय ॥ ४ ॥
कछुवो छाया अनुसरै ताहि उपाग विचारि ।
कहत सर्व काडारणा सो जिय मे अवधारि ॥ ५ ॥

:o: :o: :o:

॥ राग सख्या दोहा ॥

बीस राग जे मुख्य है तिन गनि ताहु आनि ॥
पहिले श्री रागहि कहू दूजे नए को मानि ॥१२॥

अत— ॥ राग सावत दोहा ॥

नट केदारो कान्हरो कामोदिनि सुरश्याम ॥
अंस न्यास ग्रह ये सर्व उपजै सावत नाम ॥८१॥

॥ अथ ॥ सोमेस्वर हनुमत भरत इति त्रिविग्त सावंत नाम इति श्री स्यामी कानिव विरचितायां राग सकीर्णरागमाला सपूर्णम् शुभ सवत् १९२० राम राम राम ॥

विषय—रागरागिनियो के भेद और उनके उदाहरणो का वर्णन । बगाली, [illegible] आदि प्रात विशेष की रागिनियो का भी वर्णन किया गया है ।

संख्या ४७४. पारासरी भाषा (उडदायप्रदीप), रचयिता—हनुमत [illegible]—देशी, पत्र—७, आकार—$4\frac{1}{4} \times 8\frac{1}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण [illegible]—९८, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९३५ वि०, लिपिकाल—स० १९३५ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा ([illegible]) काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ पारासरी भाषा लीख्यते दोहा बध ॥

॥ दोहा ॥

गुरु गणेश गौरी गिरा गोवर्द्धन गोपाल ॥
सुमर सुकवि हनुमत पद संकर दीनदयाल ॥ १ ॥
उपनीसद सिद्धात मे प्रतिपालक हृद बुद्धि ॥
अधर अरुण वीणा धरै सुमिरै दायनि वृद्धि ॥ २ ॥
प्रथम ग्रहन को कीजियै कारक मारक ज्ञान ॥
कहत सुकवि हनुमंत है पारासरी प्रमाण ॥ ३ ॥
ताको आश्रय लेय के रच्यो ग्रथ उडदाय ॥
ताकू भाषा में कहै कवि हनुमंत बनाय ॥ ४ ॥

तासु जीतनी कारन कूं हर्ष होय मन मांय ॥
कहत सुकवि हनुमत हय मोन परिश्रम नाय ॥ ५ ॥
दसा जन्म नक्षत्र तें फल कहबे की रीत ॥
यासु ग्रंथ में कहत हे जान लेह करि प्रीत ॥ ६ ॥
भावन की जु विचार फल अपर सास्त्र तें जान ॥
कहि विसेस संजा सुनो याके मत परवान ॥ ७ ॥

मध्य—जो त्रकोण के नाथ ते दसम भवन को ईस ॥
करकही संबंध तो जान जोग अवनीस ॥३८॥
दसम नवम के नाथ में असबध शुभ जेऊ ॥
तिनके अंतर में करें राज योग कछु तेऊ ॥३९॥
कारक तें संबंध युत पापी ग्रह हू कोय ॥
तामें कारक की दशा सोहू कारक होय ॥४०॥

अंत—ग्रंथ कठन अक्षर अरथ कठन अनेक प्रकार ॥
कहत सुकवि हनुमत सो लहत कवन विधि पार ॥८२॥
यह विचार कविराज मो क्षमा करो अपराध ॥
परमारथ पथ जानकें करहि प्रससा साध ॥८३॥
इती श्री पारासरी मत उड़दाय समग्र ॥
वरना कवि हनुमत नें विप्र निवासी नग्र ॥८५॥
संवत सतछर नाम है गुन्नीसें पेंतीस ॥
फागुण सुक्ला तीज रवि वासर कवि को ईस ॥८६॥

इति श्री पारासरी ग्रंथ सपूर्ण ॥

विषय—यह संस्कृत के पारासरी (फलित ज्योतिष) का भाषानुवाद है। इसमें ग्रहदशा आदि का विचार किया गया है।

संख्या ४७५. सनेह लीलामृत पच्चीसी (लावनी) रचयिता—हनुमंत कवि और रामनारायण (रामगुसाईं, गुसाईं राम और द्विज राम गुसाईं), निवासस्थान—रामनारायण का राजापुर (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१० × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—अथ सनेह लीलामृत प्रेम पच्चीसी लिख्यते ॥ श्री राम जी ॥

॥ लावनी चाल सूधी ठेठी रंगत ॥

पद सुमर सारदा सेष महेस मनाऊँ। गणनायक भव भय हरण सरण चित लाऊँ ॥
श्री गुरु चरण कमल मकरंद सकल अघहारी। है मंजुल मंगल मूल पाप गण तारी ॥
नव मन गण जोनि विचित्र विविध हितकारी। उर धरत ध्यान हुय ज्ञान कामना सारी ॥
ताई रज की विसवास धारना ध्याऊँ। गण नायक ॥
रिषि नारदादि सुकदेव व्यास सनकादी। कस्यप दुर्वासा गर्ग मरीच अनादी ॥
कवि वाल्मीक जे अपर ब्रह्म सतवादी। है वर्तमान हो गये होय जे जादी ॥

मध्य—

भनत सुकवि "हनुमंत" ससामद भे प्रसन्न पूरण सुप तें।
राम गुसाईं कहै यह कथा सुनत छूटें दुष तें ॥
भव समुद्र हुय पार बिना श्रम यह चरित्र जिनने राखो।
ब्रज वनतन को प्रेम वर जान ज्ञान पीको लाखो ॥३१॥

हनूमान गुर गुरपति श्रुनि गायो यश धिक छायो अंधसुत मतिहारी को ।
तारो जो लगैया त्रिपुरारी तारो तारो तव तारी को दिवैया कौन पच भरतारी को ॥२॥

मध्य—

द्रव द्रोन त्यागी तौ रा कृपा कृष्ण हनूमान वधिरइ करन रनधीर भो ।
मन भग्ना भो तन दीठि भग्ता को तन् बोलत न जाको तीछे उत समीर भो ।
अवला हो जानि खेंचि वस्त्र त्यायो सभा मान दुसासन चाहे कहा नगन सरीर भो ।
चीर को हरन हार बलबीर राषिहै तौ चीर को हरनहार कौन बलबीर को ॥८॥

द्रौपदी अष्टक संपूर्ण ॥

विषय—द्रौपदी चीरहरण का वर्णन ।

संख्या ४७७. बिहारी सतसई (टीका), रचयिता—हरजू (जौनपुर), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१० × ८ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—८३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९०३ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—सिगार ॥ अपने कर मोतिन गुह्यो भयो हरा हर हार ॥२२॥
सुरग महावर सौति पग निरषि रही अनषाइ ।
पिय अंगुरिन लाली लखे परी उठी लगि लाइ ॥२३॥

॥ स्वकीया स्वाधीन पतिका ॥

रही गुही बेनी लखे गुहिबे को त्यौनार ।
लागे नीर चुचान जे नीधि सुखाए बार ॥२४॥

॥ स्वकीया प्रोषित पतिका ॥

रह्यो ऐंचि अंत न लह्यो अवधि दुसासन बीर ।
आली बाढ़त विरह ज्यों पंचाली को चीर ॥२७॥
हिय औरै सी ह्वै गई सुनत अवधि को नाम ।
दूजे कै डारी परी बौरी बौरे आम ॥२८॥

॥ परकीया प्रोषित पतिका ॥

छतो नेह कागर हिये भई लषाइ न टांक ।
विरह तचे उघर्यो सु अब सेहुँड़ कैसो आंक ॥२९॥

अंत—अतिनिर्मल जैंसाहि इति दीपति दर्पन धाम ।
सब जग जीतन को कियो काय व्यूह मनो काम ॥७१२॥
घर घर तुरकुनि हिंदुनी देत असीस सराहि ।
पतिनु राषि चादरि चुरी तैं राषी जैंसाहि ॥७१३॥
सामा सैन समाज की सबै साहि के साथ ।
बाहु बली जैंसाहि जू फते तिहारे हाथ ॥७१३॥
हुकुम पाइ जैंसाहि को हरि राधिका प्रसाद ।
करी बिहारी सतसया भरी अनेक सवाद ॥७१५॥
जद्यपि है सोभा घनी मुकुताहल मैं देषि ।
गहे ठौर की ठौर नैं लरि मैं होत विसेषि ॥७१६॥
धरो अनूपम ग्रंथ जो नायकादि अनुसार ।
सहर जौनपुर मैं बसत "हरजू सुकवि" विचार ॥७१७॥

तरजन दूपन टटि हैं लजि फल फूल गुलाल ।
ज्यों सूकर रमनीय घन चहत मसान कुराग ॥७१८॥

॥ दोहा ॥

सकल चितित्रमं होइ अर्थ धर्म गौर ।
राम दत्त के हुकुम सों करो मंगल सब ठौर ॥७१९॥

संवत् १९४३........................ ।

:o: :o: :o:

विषय—विहारी सतसई की टीका ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण और खंडित है । समस्त चार पत्र उपलब्ध है । रचनाकार अज्ञात है । लिपिकाल सं० १९४३ वि० है ।

संख्या ४७८. भगवत गीता (अनुवाद). रचयिता—हरदेव गिरि, निवासस्थान—दलीपपुर, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१२ ५/१० × ६ ५/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०१ वि०, लिपिकाल—सं० १९०१ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

॥ सोरठा ॥

पांडु पुत्र की सयन देष आचारज भीर अति ।
रची चमू जजयन द्रुपद पुत्र तव सिष्य अति ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

पांडव सयन वीर अति भारी । बड़े धनुर्धर बान में भारी ॥
अरजुन भीम तुल्य बलवाना । समर भयंकर काल समाना ॥
सब कर नाम सुनो रिषिराई । दूनों दल की अति रचिराई ॥
युयुधानादिक जेते वीरा । द्रुपद विराट महारथि धीरा ॥
धृष्टकेतु चेकितानिक वीरा । काशीराज परम बर वीरा ॥
पुरुजित कुंत भोज सुनु भाई । सैब्य राज नरपुंग बनाई ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

युधामन्यु विख्यात सो उत्तमोज बलवीर ।
द्रुपदि सुभद्रा तनय जे महारथी बलवीर ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

मम सयना के वीर ताहि जान द्विजवर प्रथम ।
मम सयनापति धीर आन सर्व ताको प्रथम ।

अंत—

॥ दोहा ॥

मम सयनापति धीर आन सर्व ताको प्रथम ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

हरि हर गुरु चर अचर जे बदि चरन सिर नाइ ।
भव दुस्तर हरदेव गिरि हेर कृपा मन माइ ॥

राधाकृष्ण सरोज रज मन मल धोइ बहोरि ।
शास्त्र रचन का बुद्धि मोहि नाथ देह चित चोरि ॥
पुरटनीप मह धाम धरि पत्ति विश्वेश्वर गेह ।
कृष्ण गीत भाषा रच्यौ 'गिरि हरदेव" करि नेह ॥

इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग सास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे हरदेव गिरि परम हंस कृत गीतार्थ भाषा मोक्ष सन्यास योगो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

॥ दोहा ॥

चंद्र नभ नव ब्रह्म मिलि वर्ष मास वैशाष ।
कृष्ण पक्ष एकादशी कृष्ण गीत रचि शाष ॥

॥ दोहा ॥

श्री हनुमंत नृपति रच्यौ सुरसरि तट पर ग्राम ।
टीका दियो हरदेव गिरि लिषा दास विश्राम ॥

सीताराम सीताराम....... ....

विषय—गीता का हिंदी में पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

१ ० ९ १
चंद्र नभ नव ब्रह्म मिलि वर्ष मास वैशाष ।
कृष्ण पक्ष एकादशी कृष्ण गीत रचि शाष ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । दो से लेकर सात संख्या तक के और पैंसठ एवं सरसठ संख्या के कुल आठ पत्रे उपलब्ध हैं । प्रस्तुत प्रति मूल प्रति जान पड़ती है । रचनाकाल और लिपिकाल दोनों संवत् १९०१ वि० है ।

संख्या ४७९. देवी विलास (दुर्गा-संवाद), रचयिता—हरि आनंद, निवासस्थान—दिवाई, कागज—देशी, पत्र—४९, आकार—$7\frac{3}{4}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४९ वि०, लिपिकाल—सं० १८६२ तथा १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

गनपति गवरिपुत्र दुष मोचन ॥
एक रदन गजबदन सुलोचन ॥
विघन विनासन मंगल दाइक ॥
लंबोदर विघनेस विनाइक ॥
असरन सरन हरन दुष दारिद ॥
ग्यान वृष्टि कारन जिमि वारिद ॥
हरि आनद की देषि दीनता ॥
गिरिजा सुत करि गिरा पीनता ॥

॥ सवैया ॥

तू तिनुका ते बनावत वज्र सो वज्र लै फेरि करै तृन छोटो ॥
लोह को पारस सो करि देत तू पारस लोह हू तो अति षोटो ॥

श्री विट्ठल भुज कटि धरे श्री गोविंद अगार।
द्वारकेश भुज चार पुन यान कृष्ण अवतार॥
गोकुलपति गज्यों गिरिधर नग पर धार।
वल्लभ गोकुल नाथ जू सेवक जन सुखसार॥

:o: :o: :o:

मोहि मनन मह भ्रम भयो श्री गिरिधर लाल।
मम चरित्र तू लिखि सबै रचि इक ग्रंथ विसाल॥११॥
विनती करिके कहेउं मन में या जानों नाथ।
मुख उगार मम मुख दियो मो कहें कियो सनाथ॥१२॥

मध्य—श्रीमत गिरिधर लाल जन इहि विधि पूरन हेत।
जिमि पिपीलका सिंधु के पार भई बिन सेत॥
माला मनि कालीतथा पाछलि भनित सुमेर।
मत्र श्री गिरिधर नाम कहि कलिदुख सकल निवेर॥
जुगल जुगल अरु वेद गुण सद मिति ग्रंथ प्रमान।
कहू हमार कहूं लिपिक की चूक न गनहि सुजान॥

:o: :o: :o:

अंत—मम ऐगुना चित धरत श्री गुर कान विचार।
पटय गुनव चित लायके पावन जग विस्तार॥२१७॥

इति श्रीमद् गिरिधर लालस्य लीला रस महोदधे हरिकृष्ण दास विरचिते सप्तम तरंग समाप्त॥ शुभमस्तु॥ सिद्धरस्तु॥

॥ दोहा॥

७ ० ६ १
सिंधु व्योम ग्रह इंदु कहि संवत यह निरधार।
मास असाढ सु जानिये ग्रीषम रितु रविवार॥

॥ सोरठा॥

अति नवीन यह ग्रंथ पढ़त सुगम समुझत कठिन।
श्री वल्लभ कुल पथ देखरायो इहि महें प्रगट॥२॥
श्री मद् गिरिधर जू चरित बरन्यो कवि कृष्ण दास।
लिख्यो गोविंद प्रसाद करि गुर पद पद्म की आस॥

:o: :o: :o:

ते मर्म वाला जी नाम समाइ रथ पायो बीन पार।
हरी कृष्ण कौन कहि सके जे ब्रह्मानंद अपार॥७॥

इति श्रीमत् गोरधराख्यान संपूर्ण॥ शुभम्। शुभमस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ हस्ताक्षर नारायण बल्लान वैद्य लेखक बिजे दुर्ग का॥ मिति कातिक शुद्ध १ रवीवार शके १८०६ तार नाम संवत्सरे संवत् १९४१॥

विषय—वल्लभ कुल के गुसाईं श्री गिरिधर लाल जी का चरित्र वर्णन।

रचनाकाल

७ ० ६ १
सिंधु व्योम ग्रह इंदु कहि संवत यह निरधार।
मास असाढ सु जानिये ग्रीषम रितु रविवार॥

ता आगें अंदर मान की हो टला पांनी छवी देन ॥
ता ढीग पपची पाती की हो कांनी हरें मन लेन ॥६८॥

अंत—

तव प्रसन्न हरी हाइकें इद्र पठायो देह ॥
जसुमति धाय उछंग लीयें भुज चांपनी भरी नेह ॥१३३॥
गोपी यह छवी देखी कें हो प्रेम जु उमग्यो अग ॥
पुलकीत गदगद होइ कें आलींगन सब अग ॥१३४॥
गोवरधन लीला मरम हो पहा लगी यहूं बनाई ॥
श्री वल्लभ चरन प्रताप तें मति अनुसार ही गाई ॥१३५॥
श्री वल्लभ कृपा करी हो श्री विट्ठल नीज नाथ ॥
हरी दास कृपाकरी कें राखे चरनन नाथ हो ॥१३६॥ पूर्ण ॥

विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन।

संख्या ४८३ख. श्री गुसाई जी विट्ठल नाथ जी की वनयात्रा (नं० १६३८ ना), रच-यिता—हरिदास (हरिराय), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—५ × ८¼ इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, डि० बं० ३२, पु० सं० १८।

आदि—॥ श्री मथुरेशो जयति ॥

॥ दोहा ॥

श्रीमद् वल्लभ राय के विट्ठल नाथ सुनंद ॥
वन यात्रा कीनी सु इन सुनत मिटे दुख द्वंद ॥ १ ॥
श्री वल्लभ स प्रताप तें होय संपूरन एह ॥
वन यात्रा विट्ठलेश की गाऊ हिये धरि नेह ॥ २ ॥

॥ राग सोरठि ॥

सोरहसें चोतीसें संवत जब ॥ भादो वदि द्वादसि दिन सोमव ॥
शयनार्त्तो श्री गोकुल तें कीनी ॥ विजय कीयो मथुरा सुधि लीनी ॥

॥ ढाल ॥

मध्य—राग रायसो ॥

भादो सुदि त्रितीया दिना सुन्हेंग देखे आय ॥
टेर दीए हे श्री जो जहां तहां ते अटोर सुहाय ॥ १ ॥
स्नान किये देह कुंड मे निरखे श्री बलदेव ॥
राजत हें जहां रेवती सुरनर करें जाकी सेव ॥ २ ॥

अंत—

भादो सुदि अष्टमी बधाए। प्रात श्री गोकुल प्रभु आए ॥ ८ ॥
बन उपवन भए चोवीस। ईहि विधि कीने दर्शन ॥ ६ ॥
हरीदास सोभा जब देखे। तब जन्म सुफल करि लेखे ॥१०॥

ईति श्री विट्ठल नाथ जी श्री गुसाई जी या रीति सुं वन यात्रा कीनि सो संपूर्ण ॥ सुदामा-पुर मध्ये काहान्ह कुब्ज प्रातीय विप्र भट काला सुत प्रेम जीवन सोरठमें लीख्यु ॥ कल्याणमस्तु शुभं भवतु ॥ जे कोय वांचे तेने हमारो दंडवत वे ॥

मनुज देह नौका सरिस पाइ भवोदधि पार ॥
जाहु क्यों न रे मन अधम जहँ गुरु केवट सार ॥ ४ ॥
जिमि अनेक साधनहु ते विन पावक नहिं पाक ॥
त्यों गुरु पदरज ध्यान बिन सुचि न होहि मन काक ॥ ५ ॥

मध्य—
ऐसे नित प्रति ही करै गुरु गुरुजन की सेव ॥
शिष्य धर्म साधै अनिस सो जानै गुरु भेव ॥९६॥
उत्तम मध्यम और लघु अधम शिष्य ये च्यारि ॥
यथा नाम लक्षरण कहे श्रुति सिद्धांत विचारि ॥४७॥
उक्त चिह्न जामैं मिलै सो उत्तम शिष्य जान ॥
भाव भक्ति आगे करै गुरु की राखै मान ॥४८॥
गुरु जन विन गुरुदेव की अग्या पालै जोइ ॥
मध्य शिष्य तासों कहैं पुण्य पुरातन सोइ ॥४९॥
जौलौं स्वारथ की लुनै तौ लगि राखै प्रीति ॥
आग्या हू पालत रहै लघु शिष्यन की रीति ॥५०॥

अंत—ताही को अवलंब लै कियो सतक "हरिदेव" ॥
तजि छल छोह दया करो हृद प्रगट्ट हरिदेव ॥९७॥
गुरु पद पकज की कृपा अचल रहो यह ग्रंथ ॥
पढि सुनि हरि चरणनि रमो तजो कुमति को पंथ ॥९८॥
अंक नाग वसु चंद्र युत संवत लियो प्रमान ॥
सुदि षष्टी आसाढ़ की रच्यो ग्रंथ शुभ थान ॥९९॥
राम लछन सीता सहित भरत सत्रुहन भाइ ॥
हनू विभीषण आदि दै कृपा करो गुरु पाइ ॥१००॥

इति हरिदेव मिश्र कृत गुरुशतक संपूर्णम् ॥ मिति जेठ वदि ४ संवत् १८९० ॥

विषय—गुरु के माहात्म्य तथा प्रशंसा में १०० दोहे कहे गये हैं।

संख्या ४८५ख. रामायण (राम वैभव), रचयिता—हरिदेव, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६¾ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९४ वि०, लिपिकाल—सं० १८९४, वि० (दो दिन बाद), प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नम॰ ॥

॥ कवित्त ॥

वे ही ये चरन सीया उर मैं विराजि रहे वे ही है निदान सुरसरि मकरंद के ॥
वे ही ये चरन तारी नारी रिषिराय जू की वे ही ये चरन हैं हरन सकंद के ॥
वे ही ये चरन धोइ केवट मुकति लीनी सरजू विहारी तापहारी मुनि वृंद के ॥
चाउ सौं विराजो हरिदेव जू के चित्त माहि वेई चरन महाराज रामचंद के ॥ १ ॥
गाई चतुरानन सुनाई रिषि नारद को नारद तें नीकें बालमीकि जी विचारी है ॥
वालमीकि हू तें संत सुनि कै प्रमोद भरे सत्या सत कोटि जाको बेद निरधारी है ॥
ऐसें कथा एती सियाराम की को पावै पार ताते हरिदेव कछुक उर धारी है ॥
मंगल की मूल जमदूतनि को सूल नीकी सुगति की करनि कलुस को कारी है ॥ २ ॥

॥ छप्पै ॥

दबी दनुज के भार भूमि भजि गई ब्रह्मपुर॥
ब्रह्मा त्रिनयनि निज विपति धारि मन लई जु सुरगुर॥
छीर सिंधु के तीर जाय विनती तिहि ठानी॥
भये काम गये धाम सुनी तहि अंबर बानी॥
रविवंस माहि अवतार धारि हूं नृप लीला अनुसरौं॥
हरिदेव विप्र के प्रेम तें सरत काम पूरन करौं॥

मध्य—

मारि खरदूषन उधारि बालि बानर को आपही पधारि फल भीलनी के पाये हैं॥
सीया की सिरह पाइ जिन्हों लौं पवन हाथ वायसुत धाम पाय चूडामनि लाये हैं॥
नं कं रघुराय गुन मान्यो है गिलाप को ही सागर के तीर सापामृग लै सिधाये हैं॥
देखि कं अपार सोन सोयो मन माहि घनो कंसं कै उपाय पार दूजे तीर आये हैं॥२२॥
महामदमत्त उनमत्त बलवंत वीर लंक को करत राज साधत अनीति हैं॥
छांडि कं विभीषन विभीषन है भीषन को आयो रघुवीर जू के पास अति प्रीतितें॥
आवत ही दिये अभै दान एक दान ही में देखी है उदारता उदारन की रीति तें॥
संग्रह विभीषन को दीनी दसकंधर की लंका दसरथ की विभीषन की नीति तें॥२३॥

अंत—तातें भव की हृदय धरि कछुक कह्यौ हरिदेव॥
निज बानी के सोध को हरिजन बुध करि सेव॥३७॥
राम चरित अतिही अगम सो कहीर कहि जाय॥
बालमीक सनकादि सिव अंत न पावैं आय॥३८॥
पाप पुंज में रमि रहे कलि के जीव मलीन॥
तिनको अवलंबन नहीं रामचरित बिन छीन॥३९॥
वेद अंक वसु चन्द्रमा सम्वत मिती पुनीत॥
आश्विन शुक्ला सप्तमी वार बरनि बुध मीत॥४०॥

इति हरिदेव कृत रामायण संपूर्णम् संवत् १८९४ मिति आश्विन शुक्ला १० भृगुतया॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ में रामचरित्र वर्णित है।

संख्या ४८६क. मधुराष्टक की टीका, रचयिता—गो० श्री हरिराय जी (गोकुल), कागज—देशी, पृष्ठ—६, आकार—१०×५३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, अपूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१०, के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ८५, पु० सं० ११६।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ श्री मधुराष्टक की टीका लिख्यते है। तहाँ प्रथम श्री आचार्य जी सों प्रार्थना करत हैं। सो श्लोक ॥ नमामि पित्र पदांभोज रेणुन्यो यं निवेदनात्। अस्मात् कुर्वं नित्य रंके श्री कृष्णेनात्मसात्कृतम्॥ १॥ याको अर्थ। अब या ग्रंथ में श्री ठाकुर जी के सर्व अंग रसात्मक हैं। तातें भाव हरि वर्णन करत हैं। तहां प्रथम श्री आचार्य जी को नमस्कार करत हैं तातें तात्पर्य कहा सो कहत हैं, जो या ग्रंथ में रसात्मक भाव को वर्णन करनो है जाते पर्यंत अगाध रस है सो श्री नाथ जी को स्वरूप श्रुति सो अगम्य है।

मध्य—पृ० २६ अब मधुराष्टक के प्रथम श्लोक ॥ अधरं मधुरं नयनं मधुरं हसितं

मधुरं हृदयं मधुरं गमनं मधुर मधुराधिपतेरखिलं मधुरं ॥ १ ॥ अब याको अर्थ ॥ [illegible] श्री गोकुल नाथ जी प्रथम अधर को वर्णन करत हैं सो अधर कैसे अरुण हैं सो कहत हैं [illegible] को पुष्टि अति आरक्ति होई तथा प्रात काल के सूर्य मे अरुणमा होत है [illegible] हैं। सो व्रज भक्तन के मन को हरत हैं। और जब श्री नाथ जी [illegible] ता समे अधर अत्यत आरक्त होत हैं सो छबि तो देखेही बने कहे मे नाही आवे। [illegible] मुसकाई के व्रज जूवतन की ओर देखत हैं तब सबको मन हरि लेत हैं अब नैन की माधुर्यता कहत हैं।

अंत—श्लोक—वचन मधुरं चरित मधुर वसनं मधुर वलित मधुर चलितं मधुर भ्रमितं मधुरं। मधुराधिपते रखिलमधुर ॥ याको अर्थ—अब कहे हैं वचन मधुर श्री ठाकुर जी के वचन कैसे हैं अति ही मधुर हैं अति मीठी बतिया हैं जो सुने ताको मन मोहि है ऐसे श्री ठाकुर जी के वचन हैं, और बचन मे बोहोत ही भेद हैं। काहे ते श्री जसोदा जी नद जी के आगे तुतरात बोलत हैं सो जसोदा जी को नद जो को अत्यत हृदय कमल प्यारो लागत हैं और [illegible] वचन रसीलो बानी बोल.........

विषय—श्री ठाकुर जी का माधुर्य रस वर्णित है। पुष्टिमार्गीय सिद्धान्तानुसार भगवान श्रीकृष्ण रस स्वरूप हैं। अत उनकी लीला और स्थान, स्वरूप, वस्तु एव परिकरादि सभी मधुर हैं।

संख्या ४८६ख. चितन, रचयिता—गो० श्री हरिराय जी (नाथद्वारा), कागज—देशी, पृष्ठ—७, आकार—८। × ६॥ इन, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११८, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली. हि० व० स० ५०, पु० स० ५।

आदि—अथ चितन लिखते।

नदनद सखि सुदर वालो चितना करिये जी।
त्रिविध ताप यामे सनारिलोक लाजनवधरिये ॥ १ ॥
श्री वर्द्धन वृ दावन यमुना पुलिन कुसुम वन फूला जी।
सुंदर कुंज वहे घन वेली फूल भारे भऊ मना ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ३२

नैन कमल तें अतिरस भीना दीर्घ कमल समाने जी।
अति घुरणित अति लोहित वरणो कि कि करे मनमान ॥४१॥
प्रेम समुद्र कृपा रस भीना सदेत वचधाय जी।
सुदर मोरलि सुधारस पुरे मधुरे मधुरे बजाई ॥४२॥
अग ओरभता तुलसी नी माला लीला कमल फिरावे जी।
सौरभ रसना मोह्या अलिगन अति गुजीत लपटावे ॥४३॥

अंत—अष्टोत्तर सत नाम भणिले अनुदिन मुख ते केरो जी।
श्री राधामोहन गोपि सग लीला अनुदिन हेरो ॥१०७॥
श्री बल्लभ पद कमल कृपाथी आनंद पुलकित थाय जी।
दास रसिक जाय बल हारि प्रेम हरख सो गाय ॥१०८॥

इति श्री हरिराय जी कृत चितन संपूर्ण ॥

विषय—भगवद् भजन सबधी उपदेश वर्णन। पुष्टिमार्गीय पद्धति के [illegible] भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का प्रात काल से लेकर शयन पर्यंत की मानसिक [illegible] और स्वरूप वर्णन किया गया है।

संख्या ४८६ग. अष्टाक्षर मंत्र की टीका, रचयिता—गो० श्री हरिराय जी (गोकुल), कागज—देशी, पृष्ठ—१५, आकार—१०, × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ८५, पु० सं० ११८।

आदि—श्री कृष्णाय नम ॥ अथ अष्टाक्षर मंत्र की टीका लिख्यते ॥

अब श्री गुसाईं जी कहत हैं। श्री आचार्य जी महाप्रभु आप भूमि के विषै दैवी जीवन के उद्धारार्थ प्रगट भए हैं। सो श्री आचार्य जी महाप्रभु जी प्रगट होइ के विचारे। जो दैवी जीव तो श्री भगवान सों बिछुरि के भूतल मे प्रगट भए हैं। सो अपने जन्म तें या संसार में भटकत फिरत हैं परंतु काहू स्वास्थ्य होत नाहीं हैं। और मायावादी आसुरी जीव को संग करिकें दैवी जीव अपने स्वरूप भूल गए हैं। ता करिकें श्री भगवान तें विमुख होइ रहे हैं। तातें श्रीकृष्ण की प्राप्ति होत नाहीं हैं।

मध्य—पृ० ८६

याही मंत्र को आश्रय छोडनो नहीं, याही ते श्री गुसाईं जी कहत हैं, अष्टाक्षर मंत्र को आश्रय छोडनो नहीं। ताको भाव यह है, सदा सर्वदा काल के विषैं दुख मे सुख मे बात कहत मे बैठत मे उठत मे घर कार्य मे उत्तम व्यौहार मे और अनेक कार्य करत मे मारग चलत मे भय स्थान मे यह सदा मुख ते कहत रहनो "श्री कृष्ण शरणं मम"। याही मंत्र को आश्रय छोडनो नहीं। सो कहिये। सो यह अष्टाक्षर मंत्र कैसो है। सो सर्व भय छुडावन वारो है, और सब प्रतिबंध दूरि करन वारो है।

अंत—या मंत्र को भाव प्रगट कीयो है। और कदाचित कोई कहे जो श्री कृष्ण नाम को महात्म्य तुमही कहत हो के कोउ और हूं ठिकाने कह्यो हैं। तहां कहत हैं। वेद हू में कह्यो हैं, और शास्त्र मे कह्यो है, और पुराण मे हू कह्यो हैं, और श्री भगवान आपहू श्री मुखतें कहे हैं, और श्री आचार्य जी महाप्रभु कहे हैं, और हमहू कहत हैं, श्रीकृष्ण शरणं मम। यह अष्टाक्षर मंत्र अति श्रद्धापूर्वक अहर्निस जप करो। या मंत्र ते सकल मनोरथ पूरण करेंगे, यामे संदेह मति राखो, यह हम निश्चय सिद्धांत प्रगट करत हैं।

इति श्री विट्ठलेश्वर विरचितं अष्टाक्षर निरूपन ताकी टीका भाषा मे संपूर्णम् ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय अष्टाक्षर मंत्र की महिमा वर्णित है।

संख्या ४८६घ. अष्टाक्षर मंत्र भाषा टीका, मूलकर्ता—श्री गुसाईं जी, अनुवादक—श्री हरिराय जी, (गोकुल–खमनोर), कागज—देशी, पृष्ठ—१० (१४३ से १५२ तक), आकार—१२॥। × ७। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० से १७४० के भीतर, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली हि० बं० १००, पु० सं० ३।१०।

आदि—अथ अष्टाक्षर की टीका भाषा मे श्री गुसाईं जी कृत ॥ श्री गुसाईं जी कहत हैं। जो श्री आचार्य जी महाप्रभु आपु भूतल के विषे दैवी जीवन के उद्धारार्थ प्रगट भए हैं। सो श्री आचार्य जी महाप्रभु आपु प्रगट होय के विचारे। जो दैवी जीव तो श्री भगवान् सों बिछुरिकें भूतल मे प्रगट भए हैं। सो अनेक जन्मते या संसार विषे भटकत फिरत हैं। परंतु कहीं स्वास्थ्य होत नाही है।

मध्य—पृ० १४८

सो सर्वदा नित जप करनो। अब श्री गुसांई जी आपु कहे। जो श्री मुखेन कथ्यते सर्वदा श्री अष्टाक्षर मंत्र याको भाव यह है। जो श्री गोवर्द्धन धरन धारन कर्ता आपु कृपा करिकें

अष्टाक्षर मंत्र अपुने श्री मुख तें कहवते नाम कहे । श्री स्वामिनी जी प्रति । [illegible]
के मनोरथ पूर्ण कब होय । जो श्री स्वामिनी जी द्वारा अनेक भक्तन के मनोरथ पूर्ण करत हैं ।

अंत—और कदाचित् कोई कहे जो श्री कृष्णनाम की महात्म्य तुम्हीं [illegible]
और हू ठिकाने कह्यो है तहा कहत हैं । जो वेद मे हू कह्यो है और शास्त्र मे हू [illegible]
भगवान आपुहू श्री मुखते कहे हैं और श्री आचार्य जी महाप्रभू हू आप श्री मुखते कहे हैं । और
हमहू कहत है । जो श्रीकृष्णः शरण मम । यह अष्टाक्षर मंत्र अति [illegible]
या मंत्र के जपने सकल मनोर्थ पूरण होयगे । यामे सदेह मति करो । [illegible]
प्रगट कियो है । सो जानोगे ।

इति श्री विट्ठलेश्वर विरचित श्री अष्टाक्षर मंत्र नामो टीका संपूर्ण ।

विषय—पुष्टिमार्गीय वैष्णव दीक्षा मंत्र "मंत्र अष्टाक्षर" का [illegible]
और जप प्रकार का वर्णन किया गया है । मूल ग्रंथ संस्कृत में, और उसकी [illegible] ।

संख्या ४८६इ. गोकुलाष्टक की टीका, रचयिता—गो० श्री [illegible] (गोकुल)
कागज—देशी, पृष्ठ—१७ (१० से २७), आकार—१० × ५॥ [illegible] (प्रतिपृष्ठ)—
४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—[illegible]—
स० १८७१० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible], श्री [illegible],
हि० व० ८५, पु० स० ११५ ।

आदि—॥श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नम. ॥ अथ श्री गोकुलाष्टक
की टीका लिखियत हैं । तहा प्रथम मगलाचरन मे श्री आचार्य जी की बीनती करत हैं । याको
अर्थ यह हैं । जो श्री गोकुल को माहात्म्य श्री आचार्य जी नें वरनन कीयो । और कोई सो वर्नन
नाहि कीयो जोई काहे तें जो श्री गोकुल श्री ठाकुर जी कों अत्यत प्रिय हैं । ताते श्री आचार्य जी
कृपा करें तो श्री गोकुल को माहात्म्य हृदय में आवे ॥

॥ श्लोक ॥

श्री मद्वल्लभो रस भरां श्रीपा सागर दीन हितू ॥
अह वंदे चरण रेणू मस्तके मम सर्वदा ॥

अर्थः ॥ याको अर्थ ॥ अब श्री गोकुल नाद जी श्री आचार्य जी की बीनती करत हैं ।
जो श्री वल्लभाचार्य जी के से हैं जो अनेक भांति के रस जिनके हृदय मे भर्यो हैं सो [illegible] हृदय
मे ते उमडे है तब रस रूपी ग्रंथ श्री आचार्य जी ने प्रगट कीयो है ।

मध्य—पृ० २१ अब चोथो श्लोक को अर्थः ॥

॥ श्लोक. ॥

श्रीमद् गोकूल सौन्दर्यः श्री मद्गोकुल [illegible] ॥
श्रीमद् गोकुलगो प्राण. श्रीमद्गोकुल [illegible] ॥ ४ ॥

अब याको अर्थ :—श्री गोकुल कैसो सकल सौंदर्य की सीमा हैं [illegible] और
सुंदरता नांही काहे ते सकल सौंदर्यता की निधि श्री ठाकुर जी हैं । सो श्री गोकुल मे [illegible] हैं ।
तातें जितने देवतान के लोक हैं । अथवा वैकुंठ लोक पर्यंत सो सब श्री गोकुल की सौंदर्यता देखि
मोहित होत हैं । ताते श्री गोकुल सौंदर्यता की सीरोमनि हैं ।

अंत—एहि भाव श्री गोकुल को मेरे हृदय मे आवे जब तुम कृपा करो [illegible]
वारवार याते बीनती करत हो जो श्री गोकुलाष्टक ते तो महा गंभीर समुद्र मे [illegible]
प्रकार रस पांउ, ताते तुमही अनुग्रह करो सो मेरे हृदय मे एहि लीला [illegible] श्री गोकुल की [illegible]
आवे । अब एही सिद्धात सपूर्ण भए ॥

इति श्री वल्लभाचार्य जी विरचितं श्री गोकुलाष्टक संपूर्णम् ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—गोकुल का माहात्म्य और उसके स्मरण का वर्णन ।

संख्या ४८६८ षट्षष्टि अपराध, रचयिता—श्री हरिराय जी (गोकुल), कागज—देशी, पृष्ठ—४ (२४ से २८ तक), आकार—६॥। × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ६१, पु० सं० ११८ ।

आदि—अथ श्री हरिराय जी कृत षट्षष्टि अपराध लिख्यते ॥ जो श्री ठाकुर जी समीप क्रोध करे तो तीन जन्म ताईं मलेछ जोनी पावें । नष्टे यह जो । अस्नान करि श्री थाकुर जी आगें दो घो दीर्घा करे तो ताको दोस नष्ट होय ॥ १ ॥ अनमारगो साथे बोले तो सत्रु पीडा उपजे । जैसो तारी नष्ट येहे जो श्री ठाकुर जी आगे अस्त्रीजन सो काम दृष्टि देखे तो नीच जोनी पावे । और दलीद्र होय । और अस्त्री जन होवे निर्गुमक होय तीन जन्मताईं । सो ताको निष्ठ येहे जो एक मास ताईं स्त्री को त्याग करे सग तब ताको दोस निव्रत होए ॥ ३ ॥

मध्य—पृ० ३६

अवैष्णव के मुख तें वैष्णव भागवत सुने तो काठ को धुन वे जीव सात जन्म ताईं होईं । सो श्री भागवत को दान करे तो दोस निव्रत होईं ॥१२॥ अवैष्णव को छुओ जल आदि देके कछु वस्तु मन्त्र अपनी सोना भये ता पाछें श्री ठाकुर जी की सेवा मे तया आपु ले ते जलजंतु के जन्म पावें सो उपवास करे अथवा भागवत श्रवण करे तब दोस निवरत होईं ॥१३॥

अंत—श्री ठाकुर जी की सेवा के समे चुके तो तीन जन्म घधा होय । सो श्री ठाकुर जी को दोये मे पैसा भार दूध सो अभिषेक करावनो ॥४१॥ वैतरणी नदी मे सो वरस ताईं तीन उपवास करे श्री ठाकुर जी को नयो मंदिर करवावे ॥४२॥

विषय—पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के अपराध और उनके निवृत्त होने के उपाय लिखे हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के कर्त्ता गो० श्री हरिराय जी है, ऐसा बंध संख्या ६७ में पुस्तक सं० ११८, 'कीर्तन संग्रह' के पत्र संख्या १०८ में लिखा है ।

संख्या ४८६९ नवरात्रि के कीर्तन, रचयिता—श्री हरिराय जी, (खमनोर, मेवाड़), कागज—देशी, पृष्ठ—१८, आकार—३।×५॥। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७४७ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० सं० ८२, पु० सं० १० ।

आदि—अथ कीर्तन नवरात्रि के लिखत हैं ।

॥ राग विलावल ॥

आज अधिक आनंद व्रज जनमन पूरन काम भयो सब आजु ।
नवनिधि वसुदेव घर चरिन के नवविधि भक्त सृजत सब साजु ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ११

चली चनरान देख सुंदर हार कंचन झगमगे ।
आइ मंदिर पूजे देवी भोग सिघरनि मृग मृगे ॥
ता समें प्रभु जू पधारे कोटिक मनमथ मोहही ।
निरखि सखी जन कमल मुख मानों निरधन पाई गही ॥

जो रस रास बिलास हुलास ब्रज जुवतिन मिलि कीनों जू ॥
-श्री बल्लभ चरन कृपाल कृपानिधि नाम [illegible] दीनों जू ॥[illegible]॥
पद नवरात्रि के संपूर्ण जेसें देख्यो तेसें लिख्यो है प्रति [illegible] ।
०रि० श्री० ह०

विषय—नवरात्र मे गाए जाने वाले कीर्तनों का संग्रह ।

संख्या ४८६ज. नवग्रह प्रकार (नवग्रह पूजन प्रकार), रचयिता—गो० श्री हरिराय जी (गोकुल), कागज—देशी, पृष्ठ—५ (१७ से २१), आकार—[illegible] × [illegible], पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२, पूर्ण, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, रचना-काल—सं० १७८० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग कांकरौली ।
हि० वं० ६१, पु० सं० २१४ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ नवग्रहे लखीते । अथ पुष्टीमार्गी वैष्णव की नवग्रह पूजन करवे को प्रकार । भगवदीय को लौकिक नवग्रह कहा करि सके भगवदीय सो ठाकुर जी [illegible] ही । श्री महाप्रभू जी जाके हरदय मे बीराजत होय तिनको ग्रह [illegible] ना होय । सो [illegible] काहु वस्तु की न राखे । सरव श्री महाप्रभुजी देखत हैं । ताको नवग्रह कहा करि सके ।
मध्य—पृ० १६

अब मंगल को जप को परकार जब भक्तन को मंगल [illegible] आवे तब तब [illegible] श्री गोकुल नाथ जी जेनको बल्लभ के हेत हे तिनको जप करे ध्यान करे पुरवक तब मंगल बाध न करे । और बुध को जप करनो होय तो तब अलौकिक बुध को रूप श्री गोविंद राय जी हैं तिनको ध्यानपूर्वक जप करे तो बुध बाधक नां करी सके ।

अंत—अब केतु को जप करनो होय तो श्री रघुनाथ जी को जप करे जेसे अयोध्या मे [illegible] अठ काल परो तब अपुने जनक हेत श्री रामचंद्र जी श्री [illegible] सगाद के [illegible] प्रकार श्री रघुनाथ जी की कृपा ते जगत हरो भयो एसे ही वैष्णव को केतु [illegible] तब श्री रघुनाथ जी को ध्यानपूर्वक जप करे तो ताको केतु बाधक न करी सके । यह जो नवग्रह के जो श्री गोकुल नाथ जी को श्री बल्लभ श्री गुसाई जी सात बालक या बीनती को दान जो वैष्णव [illegible] कष्ट ये निवारे तो ऐ नव मुसादा ग्रहे दोक के मंगल बलातीन को जप [illegible] प्रभु हरदयमें बिराजे ॥ श्री

इति श्री हरिराय जी कृत नवग्रह को प्रकार संपूर्णम् ॥ [illegible] ॥ श्री ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति मे नवग्रहों की शांति का [illegible] ।

संख्या ४८६झ. नामरत्न स्तोत्र विवरण भाषा, रचयिता—गो० श्री [illegible], अनुवादक—हरिराय जी (गोकुल), कागज—देशी, पृष्ठ—[illegible], आकार—८॥ × [illegible], पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४८ पूर्ण, रूप—[illegible], लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० से १७४० के भीतर, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० वं० १०३, पु० सं० ३ ।

आदि—॥ श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥ अथ नाम रत्न टीका लिख्यते ॥
यशामार्को अर्थ श्री रघुनाथ जी श्री गुसाई जी के अष्टोत्तर सत नाम कहत है । [illegible] पूर्व पीठिका जिनके नाम रूपी सूर्य ताके उदय ते पाप रूपी जो [illegible] । और भक्त के हृदय रूपी जो कमल के समूह फूले ।
मध्य—पृ० १४

महेन्द्र जो इंद ताके मद को भेदे ऐसो जो गोविंद सो है प्रिय जाको राजश में श्रीकृष्ण आप सेवा रूप होय के यज्ञ पूजा ग्रहण कीने याही ते ये यज्ञ पुरुष हैं । ताते ये यज्ञ भोक्ता प्रिय है । कोई कहेगो जो योग पुरुषानुभव को देखत हैं । तो ये भगवद्-इति को अनुकरन यज्ञादिक क्यों करत हैं तहां कहत हैं पुरुष लीलया मनुष्य ॥४३॥

अंत—श्री विट्ठल के पदांभोज को जो मकरंद को सेवन करता जो श्री रघुनाथ जो तिनको जो यह कृति सो विशेष करके जयको करत है निरंतर मनुष्य ने भेद कृपामा विट्ठल प्रभोतत्तया तस्य सर्व वेदनं रूपं मनिर्वति ॥१॥ इति श्री रघुनाथो कृत राम नाम रत्न विवरण सपूर्णम् ॥

विषय—गो० श्री रघुनाथ जी (श्री गुसाईं जी के पंचम पुत्र) ने अपने पितृचरण, सम्प्रदाय के प्रवर्तक, गो० श्री विट्ठल नाथ जी की गुण नामावली वर्णित की है । जो संस्कृत में नामरत्न स्तोत्र नाम से प्रसिद्ध है । प्रस्तुत ग्रंथ उसी की टीका है ।

संख्या ४८६ज. नित्य भावना (सेवा तथा स्वरूप की), रचयिता—हरिराय जी (?), (स्वतंत्र सेवक), कागज—देशी, पत्र—२३३, आकार—५।।। × ८।।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१००, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० से १७४३, लिपिकाल—सं० १८५५ वि० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार श्री विद्या विभाग, कांकरौली, हि० बं० ६३, पु० सं० ५ ।

आदि—॥श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नम. ॥ अथ नित्य की भावना लिख्यते ॥ तब श्री जी कहीं जो मोसे रसलीला मनमथ की हो सो सब एकत्र करिकें तुमसे राखी तब के पद यह हैं । जो अमृत निचोई कीयो एक ठोर तिहारे वदन सभारि मुठो करत वतें बीधना रखी न ओर ।१। सुन राधे उपमा कहा दीजे स्याम मनोहर भए चकोर ।

मध्य—पृ० ४६

पीतांबर को अर्थ कहा जो पीति ही को वह भानु वसन है पीत पाव है सो श्री जी की प्रीति पात्र श्री स्वामिनी जी हैं । और कोऊ नाहीं और पीतांबर तीन भाति को होत है पीलो रग हरी कछु नामे लाई लाल सो मुख न को श्री अंग तं० नारंगी रंग की दरियाई सो श्री चन्द्रावली जी को स्वरूप है तं० लाल सो श्रुति रूपा देव स्वरूप को भाव ए तीन भांति को पीतांबर है ताके आधार सो श्री जी रहत हैं । हरयो धरत हैं सो श्री यमुना जी को भाव हैं ।

अंत—सोई श्री चन्द्रावली जी श्री जी को कहत हैं जो हम तीन जरणी एक ही कलशी जाग के रहुंगी तुम पधारियो सो वसन मे पुरुष को बनावत हैं । पाँचों पुरुषन के भाव सेन है सो श्री चन्द्रावली जी है सो सब ताको अंगीकार करवावत हैं सो शुद्ध हृदे कृपायुक्त स्याम कंचुक पहिरे हैं सो श्री यमुना जी हैं । श्री जी को भाव स्फुरन्त भयो हैं सगी सो भाव प्रगाद है सो स्याम दीसे सोइ जमनाष्टक मे लिखे हैं जो सुरासुर सुपूजित स्मर पितु श्रियं बिभ्रतीं । एसो श्री जी के भाव सो श्री यमुना जी भरित हैं ताही के लीये स्याम हैं । द्विविध भाव रहे ताई श्री कृष्ण......

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा विधि में भगवत्स्वरूप और उनकी नित्य सेवा का क्रम निर्गी विशेष विस्तार पर आधारित है । उसका स्वरूप इस ग्रंथ में बतलाया गया है । जिससे वैष्णव सेवा को केवल क्रिया मात्र न समझ कर उसे मानसिक भावना रूप से करें और केवल भगवान् में मन लगें ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक के आरंभिक पत्र में "गो० श्री व्रजाधीश गोकुल नाथस्येद पुस्तकं' लिखा हुआ है । पुस्तक के पृष्ठ संख्या १ से ७८ और १ से ७३ तक तथा १ से ८२ तक क्रम बराबर नहीं है ।

संख्या ४८६६ह. पुष्टि दृढाव, रचयिता—हरिराय जी (गोस्वामी, नाथद्वारा) कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—१०। x ५।।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—३२२, पूर्ण, रूप—नया, गद्य, लिपि—नागरी. प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, [illegible] विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० स० ६२, पु० स० ११३ ।

आदि—॥श्री कृष्णाय नम. ॥ अथ पुष्टि दृढाव की वात लिख्यते है । जाको पुष्टि अंगीकार होइगो सो जानेगो जीव को उद्यम करनो । उत्तम भगवदीय को सत्संग मिलनो । अरु वाके करे को विश्वास राखनो जब विश्वास उपजे । तब जानिये श्री जीने कृपा करी ।

मध्य—पृ० ६

मन थिर राखे तो श्री जी मनोरथ पूरे । मन तो थिर रहे जो तादृश वैष्णव को संग करे । जो वह अपने उपर रीझ करे तो शिक्षा करी मानें । जो मेरे मन को [illegible] है । ताको वैष्णवपन दृढ होय ताको दृष्टांत जानीये । जेसे दूध है सो वैष्णव है अरु जो जामन है सो तादृश वैष्णव है । सो दोउ एक ठोरे होय तो भीतर ते नवनीत उपजे । नहीं तो दूध बिगरे ।

अंत—अब फेरी पात्र को गुण लेनो तहा दृष्टांत जेसे सोने को पात्र है तिन मध्यो है सो उत्तम पात्र जानि के लोजीये तो विनाश होवे । अरु माटी १ होइ सो उत्तम [illegible] भरी होय सो लीजीये तो परम सुख होइ । ताते भीतर को गुण देखिके मन करनो ॥ इति पुष्टि दृढाव संपूर्णं ॥ श्रीः ॥

विषय—पुष्टि सम्प्रदाय के वैष्णवों के लिये उपदेश पूर्ण बातें लिखी हैं ।

संख्या ४८६६ठ. पुष्टिदृढाव की वार्ता, रचयिता—गो० हरिराय जी, (गोस्वामी), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६।।। x ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७, पूर्णं, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६१ पु० स० [illegible] ।

आदि—॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नम. ॥ अथ पुष्टि दृढाव की वार्ता लिख्यते जाको पुष्टि अंगीकार होईगो सोई जानेगो । जीव को उद्यम करनो । उत्तम भगवदीय को संग मिलनो । अरु वाके कहे को विस्वास राखनो विस्वास उपजे तब जानिये । जो श्री जी ने कृपा करी सबको कीयो । उत्तम भगवदीय की संगतितें श्री ठाकुर जी प्रगट होइ । तब अपनो आनंद देहि । तब स्वरूप निष्ठा उपजे । तब जानिये जो श्री जी ने अपनो आनंद दीयो । वैराग्य सो [illegible] । जीव को विवेक विचार मिलनो । जीव चोरासी लक्ष जोनि प्रगटे । [illegible] ।

मध्य—पृ० ६०

श्री कृष्ण जी सो पुष्टि नाम है जो श्री कृष्ण [illegible] है । सो [illegible] है । ताही तें श्री कहावत हैं । श्रोर कृष्ण तो दोय अक्षर को नाम है । श्री [illegible] है । इतने ही वैष्णव भये । पाछे श्री वल्लभाचार्य जी ने सब अक्षर [illegible] । [illegible] । तातें वैष्णव एसो नाम हैं । सो भगवद नाम हैं । [illegible] सो देखोगे सो समुझोगे । वैष्णव को वैष्णव परद्रोह न करनो । वैष्णव है सो तो भगवद स्वरूप हैं । जो श्री ठाकुर जी को अपराध कीयो होइ तो कदाचित् छूटिये । परि वैष्णव के अपराध ते नाही छूटिये ।

अंत—भगवदीय तो श्रीनाथ जी को मन पात्र हैं तब [illegible] को गुण लेनो । तहां दृष्टांत कहत हैं । जेसें सोने को पात्र है श्रोर तामें विष भर्यो है । सो उत्तम पात्र जानिके लीजिये तो विनाश होइ । श्रोर जो माटी ही को पात्र होइ । श्रोर जो उत्तम [illegible] भर्यो होई सो लीजिये । तो परम सुख होइ । तातें भीतर को गुण देखिके संगति करनो । यह सिद्धान्त संपूर्ण भयो ।

इति श्री पुष्टि दृढाव की वार्ता संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री रामचंद्रावतार ॥

॥ दोहा ॥

"हरि विलास" अघ नृपन लखि धरा धेनु वपु धारि ।
विधि शिवादि सुर संग लै हरि ते करी पुकार ॥

॥ छंद सुंदर ॥

करुणाकर देव "विलास हरि" तव कीरति वेद पुरान बखानी ॥
अघमी क्षितिपाल भये सिगरे पर निंदक लंपट औ अभिमानी ॥
कमलेश जगेश कलेश हरो तिहि श्रीमत मोद भर्‌यो नभ बानी ॥
अवधेश निकेत स्वरूप धरौं अघगारि निहार करौं निज पानी ॥१॥

॥ दोहा ॥

हरि 'विलास' सुर हेत हरि तजि निज धाम विहार ।
कौशलेश के सदन भे लीन्ह चार अवतार ॥

:o: :o: :o

॥ छप्पै ॥

केवट हिंसक जीव ताहि प्रभु कंठ लगायो । अव पलभोगी गृद्ध गीध वैकुंठ पठायो ॥
शवरी महा अपुत्र तासु फल हरषित पायो । कामी क्रोधी चपल पटक मर्कट अपनायो ॥
तिहुं लोक दुखद निश्चर अमित रण निपाति पुनि गति दई ।
भजु "हरिविलास" रघुनाथ पद जो कृपाल करुणामई ॥१४॥
इति श्री हरिविलास विरचिते हरि विलासाख्ये ग्रंथे श्री राम चरित्र संपूर्ण ॥

अंत—॥ अथ श्री कृष्ण चरित्र लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

मंगल मूरति गणपती प्रथमहि ताहि मनाय ।
"हरिविलास" श्रीकृष्ण जस कहत जथामति गाय ॥

:o: :o: :o:

मणि कंचन धाम विचित्र बने रथ नाग तुरग फिरे समुदाई ।
चहुं ओर फुटी द्विज हेरि चक्यो मन जानि परी कुछ भूप दगाई ।
सब भांति गिरापति बाम भयो इन धाम गई इत छप्पर न पाई ।
गृह जाल द्विजागम नारि लख्यो सविलास परी निज दोलि पठाई ॥१४॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—राम और कृष्ण चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि के ४ पत्रे और अ[illegible] [illegible] नहीं है । ग्रंथ का नाम भी ठीक ठीक ज्ञात नहीं हुआ । [illegible] "हरि विलासाख्य" लिख दिया है ।

संख्य ४८६. दस्तूर गिवार [illegible], [illegible] ४५ आकार—६३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—[illegible] अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—[illegible] आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

एक अंट जो होइ के पुनि तीनिउ देखिए।
ठो रागं इक होइ तीन घोर नहि लीजिए॥
घोरे की ग्रीवा तरे की गरदन पर देखु।
मस्तक सिर पर हाउ लो लावो दोष विशेषु॥
इति श्री सालिहोत्र हुलास पाठक विरचिते अमरी रंग रूप प्रकाश समाप्तः।

:o: :o: :o:

अंत—तिरहे पाप चौदहे ग्रीव। पन्द्रह रान गाठि की सीव॥
सनहे जीन अठरहे पूरे। हलक दोउ बीसौ ए चूरे॥
सेर पान चहे रानिमो तेई। तेहीमान वाहनि मो देई॥
सेर अढाई कटि सो लीजें। सेर एक तालू मो छाजें॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—अश्व के भेद और दोष गुण वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ में केवल ७ पत्रे, संख्या १० से लेकर १६ तक क्रम से है। अतः खंडित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या ४६३. गणेश कथा, रचयिता—हुलास दास, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६ × ६३/८ × ४६/८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, संवत् १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० देवनाथ उपाध्याय, स्थान–खेतकुरी, पोस्ट–अमेठी, जिला–सुलतानपुर (अवध)।

आदि—॥ ६० ॥ श्री गणेशाय नमः॥ अथ गणेश जी की कथा लिष्यते॥
संकट मरदन करो गौरी सुत गणेश।
विघ्नहरन अरु सुखकरन काटन सकल कलेश॥
सुमति देहु दुर्मतिहरन काटन कठिन कलेश।
सुर नर मुनि सुमिरत रहै प्रथम नाम गणेश॥१॥
सुमिरन करौ गणेश को हरि चरनन चित लाई।
संकट चौथि महिमा सुनौ कथा कहौं समुझाई॥

:o: :o: :o:

अंत—
सुप सुराज महीपति कीन्हा। मन वाछित फल गणेशहि दीन्हा॥
रिद्धि सिद्धि धन धेनु अपारा। धरमी धाम सुत संपतिदारा॥

॥ दोहा ॥

गणनायक कथा यह संकट चौथी भद्र विलास।
जथा बुद्धि भाषा रची जड़ मति "दास हुलास"॥४२॥

इति श्री गणेश जी की कथा संकट चौथि व्रत संपूर्णः॥ श्री॥ श्रीरस्तु॥ शुभं भवतु॥ संवत् १८८७ का फागुन सुदी ११ सोमे श्रीयुत नगर मध्ये लिखा तंवबाड़ी पामजी॥

विषय—गणेश कथा का वर्णन।

संख्या ४९४. गोरा बादल पद्मिनी चौपाई, रचयिता—हेमरतन, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—१२½ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४५ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ दूहा—

सुष सपति दायक सदा। सुधि बुधि सहित गणेश ॥
विघ्न विदारण सुष करण। पहिलो वुन प्रणमेस ॥ १ ॥
ब्रह्मा विस्न सिव समुषे। नित समरे जस नाम ॥
ते देवी सरसति तणे। पद युग करू प्रणाम ॥ २ ॥
पदम राज वाचक प्रभृति ॥ प्रणमो निज गुरु पाय ॥
केल विसूं साची कथा कानन आव दाव ॥ ३ ॥

नवरस दाषेन वानवी सयण सभा सिणगार ॥
कवियण सुषि करज्यो कृपा ददता वचन विचार ॥ ४ ॥
वीरा रस सिंगार रस हासा रस हित हेज ॥
साम धरम ते सांभलो जिम होवे तन तेज ॥ ५ ॥
साच शील इहां भाषीइ जसु प्रसाद सुष होइ ॥
पदमणि नारि पालीयो सर्भाल ज्यो सहु कोइ ॥ ६ ॥
साम धरम जिम साचव्यो वीरारस सुष विशेष ॥
सुभटां मां सोभा लही राषि पवरषटि रेष ॥ ७ ॥

मध्य—

सूर सरणाइ सिधु साद परघत माहि पडे घमसाद ॥
हठीयो आलम शाह अभग दृढ जुरघा नरि जाले जग ॥३०१॥
रतन सेन पिण रोसे चढयो ढाठो आलम आवी पडयो ॥
शुभट सेन सज कीधा सज्ज सबल दल दोले दिपतव वज्ज ॥३०२॥
राणे जी पातिसाह ने दूत साधे कहायो साह भले वधुं आवे सही ॥
नासिम जायो पिस जो रही नास तावे नरने पोद मूंछा वोढु रही स्टोट ॥३०३॥

अंत—

पद सरोज वाचक परधान............... ॥
..........इमि भणइ हेम रतन मनि हर्ष धरी ॥६००॥
संवत् सोले सोले मे पहता................... ॥
पुहवी पीठे घण् परग की सबल पुरी सोहि सादनी ॥६०१॥
..........क प्रताप तस मही सन्दुदि दिपार ॥
कावेड्या कुल तिलक.................... ॥
...शविद्ध सणराह तस भाइ ताराचंद सतनो नामि ॥
......व सज्ज कीधा पाधरा तस आदेस लही सुभ ।
साम धरम अति सोहामणो वीरारस सिण (गार) ॥
शेष र............... .... ॥
सुष संपद मिलें भणता भावठ दूरे टले.......... ॥
.... ॥
षटसत षोडस गाथा वंध सुण्यो तिसो भाख्यो..... ॥
.... धरो ॥ ७ ॥

बंसी निगोडी तू होड कै बाजत बाजत बावरी लाज न आवै ।
तोहि सुहागिनि स्याम करी तो इते पर चाम कै दाम चलाव ॥२०॥
औचक आनि परै धुंनि कानरी सग सबै पति की तजि भाज ।
लाड भरी पिय पाय सुहाग पियी अधरा मयनं........॥
:o: .o: o.
.... .री भजी ।
इतनैं मधि पूरन प्रेम मे मोति अचानक वेन दगी बजी ॥२४॥
कानि परी धुनि आनि जबै घर के अगना न हावत है ।
अकुलाय हिये मधि हूक उठै सुरतानि मैं नित जावत है ।
घर काजहि भूलि औ फूलि मनौं रस मूलनि ऊपर भावत है ।
अगुरी दियै की लगि कान रहै वजि बासुरी लाज गमावत है ॥२५॥
गारी दै हारी सबै इन दीति की बंस की गोत नजावत है ।
कोउ कोरि कहो किन लाय कहो इनकै जिय एव न.. ॥
:o: :o: o
.... चोर वी ॥३०॥

॥ दोहा ॥

बैंन वतीसी प्रेम सो सुनें चतुर चित आहि ।
ताके पद अरविंद पर भवर "हेम" वलि जाहि ॥३५॥
अठारा सै उगणीस का सवत जेठ सुमान ।
शुकल पक्ष गुर द्वादसी बैंन वतीस प्रवान ॥३६॥

इति श्री मथेन हेमराज कृत बैंन वतीसी सपूर्णं ॥ लिषत मथेन हरिचंद ...... ।
—पूर्णं ......

विषय—शृंगार विषय की रचना है जिसमे वशी के प्रति ..... का ..... किया गया है ।

रचनाकाल

१८ १९
अठारा सै उगणीस का सवत जेठ सुमास ।
शुकल पक्ष गुर द्वादशी बैंन वतीस प्रकास ॥३६॥

सख्या ४९६. अजामिल कथा कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—..... × ..... इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६१, ...—....., लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० छोटकधर द्विवेदी ग्राम—..... पो० .....—....., जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥

निगमागम्य रूपं यत् गोकुले वल्लवी सुत ॥ प्रेमगयं परब्रह्म वदे गोपालं ..... ॥१॥ पुराय रूप वन दिषे नरहरि नाम रूप एक सिंह विराजत है ॥ ..... भजत हे ॥ विशेष ते उत्पन्न भये अरु अपनी मर्यादा दिषे ..... है ॥ जिन मर्यादा को उल्लघन कियो एसे भक्त को रक्षण सो ..... ॥ ..... अजामिल की रक्षा करी ॥ अरु देवतन विषे ..... करी ॥ अजामिल को भक्त ता बिष्णु दूता कही ॥ जिम दुष्ट .....

विषय—ज्ञान और भक्ति वर्णन।

संख्या ५०० उत्सव मालिका श्री विट्ठलेश्वर राय जी के घर की, पत्र—६, आकार—६ × १०½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६३, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ८६, पु० सं० ७।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ उत्सव मालिका श्री विट्ठलेश्वरराय जी के घर की० ॥ भाद्रपद कृष्ण पक्षे अष्टमी श्री जन्माष्टमी। प्रात काल सप्तमी को वेध पल मात्र होय तो उत्सव नौमी के दिन करनो। प्रहर एक रात्रि पाछिली रहे तब उठनो। प्रभु को जगाय के मंगल भोग धरनो। मंगला आर्त्तो करी रात्रि को सिंगार होय सो बडो करनो पीरे पाट के धोती उपरना ओढाय कुंकुम को तिलक करि। पाछें पंचामृत स्नान करावनो। श्री स्वामिनी जी को पंचामृत स्नान नांही करावने।

मध्य—प्रबोधिनी के दिन रात्रि को भद्रा होइ तो, दिन मे उत्सव करनो नाही। रात्रि को उत्सव करनो। ताको विधि। पहिले मंदिर मे सर्वत्र तिवारी, अंगण में चोक कोठा मे नही। पाछें सोरह गंडेरी को मंडप बनाइ बीच सांगा माची धरि आस पास दीवा आठो दिसि धरि दीप प्रगट करि प्रभु को उहां पधराइ नमस्कार करिये पाछें यह मंत्र पढि तीनि वेर प्रभु को सांगा माची उठाइये मंत्र—उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद त्यज निद्रा जगत्पते ॥ त्वया चोत्थायमानेन उत्थितं भुवनत्रय।

अंत—श्रावणी पूर्णमासी के दिना अभ्यंग पर्व की सामग्री गोपी वल्लभ मे सीखोरी इह सामग्री अरोगे। पाछें पिछोडा नए। कसुमल पाग कुलह पहिरावने, भद्रा न होइ तो समय निरंतर करि अक्षत लगाइ राखी बाधी, गुल पापडी सधानां भोग समर्पिये ॥ आर्त्तो नही।

इति श्री उत्सवमालिका श्री विट्ठलेश्वर राय जी के घर की संपूर्ण ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय पद्धति के अनुसार वर्ष भर के उत्सवों के निर्णय करने का वर्णन। सम्प्रदाय में सातों घरों की सेवा भावना के अनुसार अलग अलग सेवा उत्सव का प्रकार प्रचलित है।

संख्या ५०१. ओधवनी अरज, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२० परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ओधवनी अरज लषी छे।

ओधव अरज अमारी मामलोरे।
के जोहरीने जई मोहन मुकीमन नो आमलोरे ॥ १ ॥
आयो ने अंजय होय अमतमगा मुरई नीहा लोएरे ॥ २ ॥
गरे गायो री मवलना वोज उपर मन वालीए रे ॥ ३ ॥
पाये नमाय शीस दीचन घणानी छे ए वातडी रे ॥ ४ ॥
आवी न्ही छे होट हई डेग घण जाए धन रातडीरे ॥ ५ ॥
पघा जई कीजे गोठ मनमान्या बीलानी माथ बीरे ॥ ६ ॥
वालजीन दे याएं पीउन जांयो कोठ तंननीरे ॥ ७ ॥
जोत घणी अरताए अवगुण अवलाना मावर वाणीयेरे ॥ ८ ॥
जाणिरे पोतानी दास दीए सुख ते मय शुं वखाणीजे रे ॥ ६ ॥
जेजो पुरी आस जाजां रमता अमे मुरंगमारे ॥१०॥

[illegible] वाले पत्रों में पुष्पिका का लेख दिया है। उसमें सं० १७४१ लिखा है जो लिपि-काल है। [illegible] लिखा है जो [illegible] को देखते हुए बहुत प्राचीन है। इसमें दो स्वरूप पाये जाते हैं। [illegible] वर्णन में और [illegible] पुष्पिका के लेख में। प्रथम गद्य वह भाषा है जो [illegible] के पूर्वी भाग में [illegible] बोली जाती है।

जिस भाग को [illegible] कहते हैं। इस भाषा में लिखे गये औषधि एवं शकुन पर कितने ही हस्तलिखित रचनाएँ मिली हैं पर [illegible] तिथिरहित। जिन पर तिथियां हैं भी तो बहुत आधुनिक। प्रस्तुत रचना में तिथि बहुत प्राचीन पड़ी है। अतः इसका गद्य भाषा विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। पुष्पिका के लेख में प्राचीन खड़ी बोली का पुट है जो महत्वपूर्ण है।

संख्या ५०३. कथा चित्रगुप्त की, कागज—देशी, पत्र—४३, आकार—६¾ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९३, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० महाराज दीन जी, ग्राम-जगदीपुर, पो०—हनुमानगंज, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाये नमः ॥ पोथी कथा चित्रगुप्त कै ॥

पदुम पुराण कहत है काएथ की उतपत्य।
चतुरानन चींता भए उपजे चीत्रगुप्त ॥
चीत्रगुप्त कै कथा पुनीता। जो नर शुनहि सो परम अजीता ॥
धन्य जनम तेहि नर कै अहई। पुजहि भाव भक्ति सुष लहही ॥
पदुम पुरान अगम बीस्तारा। को पोजंइ को देषं पारा ॥
ताते कथा गुप्त यह रहई। प्रगट न जानं को अस कहई ॥
तव भाषा मह कीन्ह उचारु। गनं सभं सकल संसारु ॥
मो पर श्रीपा नाथ जव कीन्हा। जगदवा इछित फल दीन्हा ॥

॥ दोहा ॥

गुगौरी देवी दुर्गा जं कल्यानी मातु।
लछीमी आदी निरंजनी जं जं बोली आपु ॥
कथा चीत्रगुप्त कं कहत सुनत सुष देन।
ग्यानी पुरुष बीचारीहे जेहि सु सुष सर्वंत्र लेन ॥ २ ॥
चित्रगुप्त कं कथा प्रगासा। मन वच ग्रम मंमु कं आसा ॥
दाना भेहे चोविस माहीं। आदी निरंजन आपु कहाही ॥

अंत—

धर्म राज मुनी मन के वचना। चीत्रगुप्त सन वोलं वैना ॥
गय रहा सौवदास जो नाउ। तासर करम सुना कीछु भाउ ॥
सुनो नाथ मं गम परभाउ। पुजा मोर कीन्ह उन्ह राउ ॥
तुम ....

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—चित्रगुप्त की कथा का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के बीच और अंत के पत्रे खंडित हैं। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

विषय—जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत अज्ञानी मनुष्यों की दशा का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—रचना के केवल आरंभ के तीन पृष्ठ प्राप्त हैं। रचनाकाल तथा लिपिकाल अप्राप्त है। रचना का नाम [illegible]।

संख्या ५०८. गीता भाषा, कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—[illegible], पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible], बदलापुर, जिला—जौनपुर।

आदि—............................ ।

श्री कृष्ण भगवान जी अर्र्जन का रथ दोनो सेना के बीच ले ठाढा कीया ॥ भीषम अरु दोनचार्ज के सनमुष अरु उनके दाहिने ॥ दाहिने ओर [illegible] जोधा थे ॥ तब श्री कृष्ण भगवान जी ॥ अरर्जन कों बोलत भया ॥ हे अर्र्जन तेरा रथ मुष दोनों सेना के [illegible] जोधा हैं सो तूं इनको देषं ॥ तब अरर्जन कौरो की सेना मे जो जोधा देषे ॥ [illegible] देषे ॥ पिता देषे अरु दादा देषे ॥ अरु आचार्ज देषे ॥

:o: :o: :o

संजेय उवाच ॥ संजेय धृत राष्टर को कहो हैं ॥ कि हे राजा जी अरर्जन [illegible] कहकर धनष अरु बान हत तें डार दीया ॥ साग के समुद्र विषे मगन मुर्छा को [illegible] ॥

इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगसास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अर्जुन विषादो नाम प्रथमोध्याय ॥

अंत—............................ ।

अब हे राजा जी मेरी वात निश्चै करे सुन जिस ओर जोगीश्वरो के ईश्वर जो हैं श्री कृष्ण भगवान सच्चिदानद पुरुष श्री बाजमान हैं अरु जिस ओर गांडीव धनष का धारनहारा जो हैं अरजुन भक्त तिसी ओर लछिमी हो अरु तिसी ओर जै [illegible] अपने मन विषे य. वात जान डोडबयायात जिनके माथे पर श्री कृष्ण भगवान जी [illegible] बाजमान हैं एसे जो हैं वड़भागी पांडव तिनकी जै होवैगी अरु तेरे पुत्र [illegible] कुछ सदेह नाहीं ? इति श्री भगवद्गीता.......... [illegible] सर्व जगत। सवत् १८४४ आषाढ़ सुक्ल १५ [illegible]..........

विषय—गीता का भाषानुवाद।

संख्या ५०९. गीतासार, कागज—देशी, पत्र—[illegible], आकार—[illegible], पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४६ वि०, प्राप्तिस्थान—[illegible] पुरा, पोस्ट—जफई, जिला—जौनपुर।

आदि—.................... [illegible] ॥ [illegible].......

तिसको गुरु की कृपा दृष्टि भई ॥ [illegible] ॥ [illegible] के उपकार वास्ते गुरु दुर्लभ है ॥ त्रिलोकी विषे [illegible] गुरु ॥ गुरु [illegible] ॥ [illegible] विना विष्णु शिव भी नाहीं ॥१६॥ [illegible] करके जिनोने गुरु का सरनागत कीता ते [illegible] ॥ [illegible] ॥ मुक्त गुरु करते हैं ॥ त्रिलोकी विषे गुरु [illegible] है। [illegible]

चिह्न चित्त ए जिन धरे भक्त अंग सम भाव ।
तासों कृपा ही करो हरि पद सदा सहाय ॥५६॥
हरि उज्जल गात अंग दी दुर्ग मिलि रहत ध्यान ॥
चंदन गोपिन को करयों मुद्री भई सुजान ॥६०॥
मनोहर हरि के चरन मे गोरथ चहुं समान ।
भक्तहिन कम भग मे गयो जुडर अग्यान ॥६१॥
मग्न चिह्न चिन्तन करे भक्त अंग के भाव ।
दुख दरिद्र विपरीत तें तरयो प्रेम की नाव ॥६२॥

इति श्री महाप्रभु चरणारविंद चरण चिह्न भक्त जन अनुराग उदित संपूर्णः ॥
संवत् १८४१ कार्तिक कृष्ण ७ भृगौ लिखितं मोहन दासेन ॥ तापी पुरे ॥

विषय—ग्रंथ में श्री भगवान के चरण चिह्नों का वर्णन किया है और किस-किस चिह्न के ध्यान करने से भक्तों के क्या मनोरथ सिद्ध होते हैं उनका भी वर्णन है ।

संख्या ५१२. चार दरवेशों की वार्ता, कागज—देशी , पृष्ठ—२०, आकार—१० × ८॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८ परिमाण (अनुष्टुप्)—२८०, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, बं० नं० ५८ पु० नं० ७ ।

आदि—अथ चार दरवेशन की वात लिख्यते ॥ चार दर्वेश्वर कमाय के घर खेम कुशल सों आए तब अपनी अपनी स्त्री उन की क्या (री) लेके घर के चोक मे चोकी बिछाय के आपने पति के पाव धोय के घर मे ले गए तब राय का घर में गयो तब वाकी स्त्री चोकी बिछाय आपने पति को पाय दूध सो धो यो फेर राय की स्त्री बोली जो दूसरो पाय नीचो धरो तो धोऊं तब राय बोल्यो जो तुम भी इतकु आय के पाव धोय जाओ, तब राय की स्त्री ने बोल मारयो सो एसो तुमने दीन दिल्ली के पातस्याह सो काहा वस्त्रो मन काहा करवाय के लाए हो । सो पीछाडि पुत्र पुत्रादिक कहा खायगे, केसें निर्वाह करेंगे सोसे दूसरो पाय धोउं ।

मध्य—पृ० ६

तब पातसाह ने फेर हुकम कियो जो इनकु मराए चहिये मुकर चोर हे ये वडे वडे भले आसामी की इजत लेते हैं । अदर की वात ज्यो की त्यो कहते हैं मुकर मारे हि चाहिये, ये जने जने का पर्दा उघाडत हैं इनकु मकर मारोहि चहिये, जब फेर बीरवल बोल्यो जाहापना मुकर चोहे चार दिन ताई आपके पास रहे । अब दो दिन मोकु हजूर बकसिये ।

अंत—फेर चारो जन कमाय के घरकुं आए तब राय की बहु ने दूसरो पांय दूध सो धोय के आपने पति के ऊपर नोछावरि रुपैया ५००) लेराव करके आपने घर मे ले जाय आछी भांत भामन भोजन करवाए, फेर रात कुं सुख केलि करके चोपड खेलन लए । पाछे वार्ता संपूर्ण भई ॥ लीखतं श्री गोस्वामि श्री गोकुल नाथात्मज पुरुषोत्तम जी जो वाचे ताकु जै श्री कृष्ण । संवत्-१९०१ ज्येष्ठ शु० ११ शनौ संपूर्ण ।

विषय—चार दरवेशन कमाने के लिये गए तो बीरबल के द्वारा बादशाह के पास पहुँचे । वे सरदारों के घर मे प्रवेश कर उनके चरित्रों से वाकिफ़ होते थे । बाद में बादशाह ने चारों को चार पात्र रुपया और चारों, चारों प्रभृति पारितोषिक देकर विदा किया ।

संख्या ५१३. छदमाल कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६½ × ३⁵⁄₁₆ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८ परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबू नागेन्द्रनाथसिंह जी सरा, बाराबंकी ।

वंश जिनों भीम पौरिवेज कहावै ।
देह धारि कलि धर्म ज्ञान करि सर्व हरावै ॥
महिमा जिनके दरस ते होत है जै जै कार ।
ते इच्छा बस आवहीं जे इच्छा करि देह ॥

मध्य—

देह पलट कर मिले धन्य तु पुत्र हमारा ।
धन तेरी कीतामाय देह जग करी उधारा ॥
रिषी तपसी बोले सब शंख बाज धुनि होय ।
भोजन पाये कृपा करि जग सुफल फल होय ॥
सुनो गुनधर्म जो ॥४२॥

धर्म चरित्र पढ़ै सुनै जम निकट न आवै ।
जमको मिटै कलेस बास बैकुंठ न (?) पावै ॥
धर्म समाधि कहै सुनो मोर मन को काज ।
जग में जाहर होत है जो गावत है दास ॥४३॥

इति श्री धर्म सवाद सपूर्ण ॥

विषय—धर्म और युधिष्ठिर सवाद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना एक गुटका मे है जिसमे निम्नलिखित ग्रंथ और है —

१ वीरस्मरण—उदय कृत, २ बारह खड़ी—दत्तलाल, ३ हरिनाम माला—(संस्कृत), ४ उषा चरित्र—कुंज, ५ एकादशी रामायण और भागवत (संस्कृत), ६. चौबीस अवतारों को रस—गोपाल कृत, ७ हरिगुन नाम चिंतामणि—गोपाल कृत, ८ बारह खड़ी (सुदामा)—गोपाल कृत ९ श्याम सगाई—नंददास, १०. ग्वालिनी झगरो—माधोदास, ११ दानलीला (रेखता भाषा)—रामकृष्ण, १२ भ्रमर गीत—नंददास, १३ शनिश्चर कथा—प्रयागराम (सिंहासन बत्तीसी), १४ बारहखड़ी—विष्णुदास ।

संख्या ५२३. नामदेव चरित्र, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८८, खंडित, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० राम अवध जी त्रिपाठी, ग्राम—दरवेशपुर, पो०—भरवारी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—नामदेव श्री रामहि जाना । ....

....
पिता सु प्रतिदिन पूजा करई । तेहि का नेम कबहुं ना टरई ।
करि अस्नान जैसे वह आवै । बाल भोग नित दूध चढ़ावै ।
ऐसे करत बहुत दिन बीते । दिन दिन अधिक प्रीति सो जीते ।
एक दिवस कहुं गये नगरु । पुत्र बोलाई कहत अस भयऊ ।
पुत्र एक प्रभु है नित मोरे । गायं चरायो सबेरे तोरे ॥
भजो मैं कहे करउ तुम सोई । एहि सो आन बात ना होई ।
गऊ का दूध औटि जब जाई । एक कटोरा भरेउ सुहाई ।
करि अस्नान करो हरि पावो । बैठि एकंत राम को ध्यावो ।
तेहि पीछे तुम भोजन पावो । अस कहि पिता गाउ को चलेउ ।
....

अंत—

प्रथमही मैं हरिजन गुण गाये । मति अनरूप अनूप सोसाए ॥
कनककस्यप अरु हाटक दोऊ । रावण कुभकरण भैं सोऊ ॥
दंतवक्र औरौ सिसपाला । दीये परम गति सोउ हत्यौ गोपाला ॥

॥ दोहा ॥

नारायण के पारषद जय अरु विजैंये सुजान ।
भए महामुनि श्राप ते तेहिते कियो बषान ॥४६॥

इति श्री प्रहलाद चत्रं (? चरित्र) नरसिघ पुराने सपुरने समाप्त ॥ समत १६४२ आसूज्य सूक्लपक्षे षष्ठ्म्यं बुध वासरे कुबेर दुवे लीप्यते आत्मार्थं ॥

विषय—नृसिंह पुराण के आधार पर प्रह्लाद चरित्र वर्णन किया गया है ।

संख्या ५३८. प्रेमापरा भक्ति, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ × ४,³, इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०६, खडित, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा (दाता—लल्लू पडित, ग्राम—शमसावाद, पो०—सुजातपुर, जिला—इलाहावाद), वाराणसी ।

आदि—.........*सना काड अथवा ब्रह्म निरूपन धर्म विधि* । ब्रह्म निरूपन करते हैं धर्म विधि से, एक अधर्म विधि से ब्रह्म निरूपन है अरु येक धर्म विधि ब्रह्म निरूपन है एक कहते हैं कि अपर ब्रह्म कहा है यह ससारै ब्रह्म है यह जगत को करता कोई नही है आपुही ते जगत उतपति होत है मनुष्य ते मनुष्य पसु ते पसु पक्षी ते पक्षी तरु ते तरु अन्न ते अन्न इत्यादिक चराचर काल काल मे उपजत है पालते हैं मारते हैं यह परपरा अनादि काल ते चली आवत है जैसे जल मे लहरि स्वाभाविक उठती है पुनी वनी रहती है परि आदि अत मधि एक जल ही है ।

अंत—अरु श्री रामचद्र के स्वरूप को विरह प्रेमा पराभक्ति मे आरुढ है एक रस जिनकी दशा अलक्षित है ताको तीव्रतम वैराग्य कही एह दोहा सातहु काड के अर्थ को सूचित करतु है ताते अमित अर्थ है मैं अपना मति अनुसारे कहेउ है मकर के समंमे सव मुनि प्रयागहि जाहि समाज होइ ॥ सपूर्न सुभमस्तु सुभम् भूयात् जे देषा सो लिषा मम दोष नाहि स० १८७६ फाल्गुन सुदी पुनवासी वृहस्पति ॥

विषय—रामायण के एक दोहे के आधार पर प्रेमापराभक्ति का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक पत्राकार रूप में है । इसका प्रथम पत्र नष्ट हो गया है । रचनाकाल दिया नहीं । लिपिकाल सवत् १८७६ वि० है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है । पुस्तक गद्य मे है ॥ अत महत्वपूर्ण हे । इसकी रचना रामचरितमानस के एक दोहे के आधार पर हुई जान पडती है । सभवत वह आरभ के पत्र मे दिया रहा होगा । जो नष्ट हो गया है ।

सख्या ५३९ प्राकृत पचाख्यान (भाषा पचतत्र), कागज—देशी, पत्र—१४२, आकार—१० × ६। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१७७, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८२५, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, पह० व० ८६, पु० स० २ ।

आदि—॥ श्री द्वारिकेशो जयति ॥ अथप्राकृत पचाख्यान लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

वदे सरस्वतीं नित्य वाङ्मनः काय कर्मभिः ॥
वाक् समुद्रो मया नद्धो दुस्तरस्त्विदर्शरपि ॥ १ ॥

सरस्वती को नमस्कार करिके यह नीति शास्त्र कौं करत हूँ कैसें जो वाचा मनसा और शरीरनें करिकें उह सरस्वती कैसी है।

॥ श्लोक ॥

मनवे वाचस्पतये शुक्राय पराशराय ससुताय चाणक्याय च विदुषे नमोस्तु सर्वशास्त्र कर्तृभ्यः ॥ २ ॥

मनु, बृहस्पति, शुक्राचार्य, पराशर, वेदव्यास, चाणक्य, इतने जे नीतिशास्त्र के कर्त्ता तिनकूँ हूँ नमस्कार करि नीतिशास्त्र कहत हूँ ॥

मध्य—पृ० १२३ ॥ श्लोक ॥

अहो उद्यमे पुनामन्य जन्म कृतं फलं ॥
शुभाशुभ समस्येति विधिना सनियोजितं ॥

उद्यम किये बिना जो वस्तु प्राप्ति होय वाको ऐसो जानिये जो गत जन्म को करयो पुन्य। शुभ अथवा अशुभ जो जो पूर्व करयो होय सोई फल पाईये।

॥ श्लोक ॥

यस्मिन् देशे च काले च वयसा यादृशेन च।
कृत शुभाशुभ कार्य तत्तथैवोपभुज्यते ॥

जा दिवस के विषें जा काल के विषें जा वय के विषें। जो कर्म करयो होय, सोई भोग भोगिये। जो अत्यंत धन शुभ करिके प्राप्त मिल्यो होय वह धन अन्यत्र खरच न करनो। तातें या मास कौं मैं युक्त करिकें गाऊं। जो मोकों बोहोत दिनन लों पोहचे। तातें प्रथम तो धनुष्य की प्रत्यंचा चढ़ाइ गाऊं ॥

अंत—राजा नें पुत्रन कौ देखिकें परम संतोष पावत भयो। विष्णु शर्मा कौ बोहत कछु देय सतोष कीनो। तातें यह पचोपाख्यान नामे ग्रंथ जो कोई मनुष्य पढे सो परम चतुर विचित्तण होय। यामें संपूर्ण चातुर्य और नीति और लौकिक व्यवहार वर्णन कीनो है।

इति श्री पंचाख्याने पंडित विष्णु शर्मा विरचिते अपरीक्षित करनीय नाम पंचतंत्र संपूर्णम् ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया। यदि शुद्धं अशुद्धं वा मम दोषो न विद्यते ॥१॥ संवत् १८२५ मिती मार्गशीर्ष शुक्ल १० चंद्रवासरे। ग्रंथ संपूर्ण भयो ॥

विषय—विष्णु शर्मा ने राजा के पुत्रों को नीतिशास्त्र का उपदेश दिया वह नीतिशास्त्र पंचाख्यान रूप में लिखा है।

संख्या ५४०क. [illegible], कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६¾ × ३¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय ([illegible]), नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्रीकृष्णाय नम ॥ दोहा ॥

पंचबाण पिय लाडयो पूछन मोद जुवाव ॥
मैं हँसि कै ऐसें कह्यो नीको फूल गुलाब ॥ १ ॥
प्रीतम ऐसी प्रीति में भयो जु मद प्रकास ॥
चपा की बैठी दई जहाँ कमल को वास ॥ २ ॥
बाग दिखावन पिय गये जहाँ गुजे को फूल ॥
फूलन पे फूल्यो मनो गुण है तेरो मूल ॥ ३ ॥
सखी सकारें साथ हैं थान कहैं समझाय ॥
दूत केवडो आनि दे चित मे रह्यो न जाइ ॥ ४ ॥
सावन के बदरा उठे माथे लियो फुलेल ॥
चोसर डोल्यो मे पीरो बाग करैं अनिवेल ॥ ५ ॥

मध्य—

वाग दिखावन पिय गये साथ चली वह वाल॥
वुही नही हमको दई सिंगार हार की माल॥१४॥
जाकी सोभा हें भली देषत होय आनद॥
फूल एक मे 'मागियो जाको नाम मचकुद॥१५॥
चेत मास चित चोरि कें प्रीतम लाये वाम॥
फूलन वाली को सखी देखे उपजे काम॥१६॥

अत—

प्रीतम अैसे हेत करि रोम रोम आनद॥।
पियरेखें यो फूलियो कमोदिनी चद॥२६॥
वालम सों मे यह कहो वन फूल मगाय॥
सूरज मुख तन रहत हें सूरजमुखी वुलाइ॥३०॥
आजु गई में वाग मे अपने सहज सुभाइ॥
फूल केतकी देखिकें वास रही महकाय॥३१॥
वारी हो रे वालमा वडी होन दे मोइ॥
ज्यों वगुला निगले माछरी ज्यो निमलोगी तोइ॥३२॥

विषय—इसमें फूलो पर ३२ दोहे हैं।

संख्या ५४०ख फूल चेतावनी, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—५३/४ × ४१/२ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८६२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० देवनाथ चौवे, ग्राम-पॉडर अलवारा पो०-पछिम सरीरा, जिला-इलाहावाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ फूल चेतावनी॥

आजु कला कछु मागिहों मन मोहन प्रतिपाल।
हरषत आये हेतु कैं पहिरे माल गुलाव॥ १॥
कुदन फूल सुहावनों सोभा वरनि न जाइ।
वार वार बिनती करौ प्रीतम देहु मगाइ॥ २॥
घर आये का पहरिहो प्रीत अग सुभाल।
चरन विराजैं हे सषी ज्यौ पूफौ की लाल॥ ३॥
करवत भयो सु केवरो विषि सी लागैं वास।
सेज लगै पावै नही प्यारे पियके पास॥ ४॥
का आवैं प्रीतम मोह कैं का पडित पूछैं वात।
फूलन भावैं वेल का पिय विलसत मो पास॥ ५॥
रोम रोम मेरे लगी निसरि गये दुपसूल।
आये अचानक वे सषी घर साहेव चमेली को फूल॥ ६॥
कला चतुर इनकी वनी फूलि महासुप चैन।
जूही फूल मंगाइये मौ हित प्रगटत मैन॥ ७॥
अरी सषी यह वात की सदा रहैं जिय आस।
रतन मंजरि गूंथि कैं पिय ल्याये मो पास॥ ८॥
रितु औरे आई सषी हन्यो मोहि सोहाइ।
टेसू केरे फूल मो लाली मा चितु जाइ॥ ६॥
प्रीतम आये धाम मो सषी सयानी साथ।
वातैं पूछैं प्रेम सो सो फूल सुदरसन हाथ॥१०॥

इति फूल चेतावनी संपूर्ण ॥ अस्वनि वदि ४ गुरौ संवत् १८६२ श्री गोविंदाय नमो नमः श्री काशी विश्वनाथ जी मे ॥

पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—प्रत्येक दोहे मे एक फूल का उल्लेख कर शृगार विषय का वर्णन किया गया है।

संख्या ५४१. वडे छप्पन भोग को क्रम कागज—देशी, पृष्ठ—५, आकार—१०। × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० १०७, पु० स० २१।

आदि—॥ श्रीकृष्णाय नम ॥ वडो उत्सव छप्पन भोग ताको तात्पर्य श्री स्वामिनी जू सबके प्रत्येक आपने घर पधाराइवे को आर्त्त होइ प्रिय सवध विनु रह्यो न जाइ। तातें यह मनोरथ करि श्री व्रजराज जी को सव कुटव भोजनार्थ शयन भोग पर्यंत दिवा सुखानुभव करि गुप्त तासो सव समक्ष करिवे को निमत्रन करत हैं।

मध्य—पृ० ३

सव पाछें नमस्कार करिये। चोकी तीसरी पर श्री रोहिणी जू तिनकी गोद मे श्री बलदेव जू एसी भावना करि पधराइ पहले चोली समर्पिये। पाछ सार्डी समर्पिये। गोद मे श्री बलदेव जी को ओढनी उढाइ पाछे माला पहराइ चोवा चंदन लगाइ अवीर छिरकि पाछें नमस्कार करियें। पाछें चोथी चोकी मुख्य स्वामिनी जू की भावना करि पधराइयें।

अत—पाछें ठाकुर की शय्या पास वीडा गडुवा सव ठिकानें धरि ठाकुर को पोढाइयें। सर्व ताले मंगल करि प्रसाद सव लेइ वाहिर आइयें। पाछे वह प्रसाद योग्य देखि वीडा माला वस्त्र वाटि दीजिये। आपु राखियें प्रसाद लीजिये। अय मनोरय· पूर्णो भाग्यभाजा नृणा भवेत्। करिष्यति प्रसपूर्ण निजाचार्यान्वियेश्वर·। श्रीरस्तु॥ शुभभवतु॥ कल्याण-मस्तु॥

विषय—पुष्टिमार्गीय सप्रदाय मे अन्नकूट के समान विशेष आयोजन पर भगवान् के लिये छप्पन भोग तैयार किये जाते हैं उसका प्रस्तुत पुस्तक मे वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खुले पत्तो की है। ऊपर "गोस्वामी श्री व्रजनाथात्मज श्री विट्ठल-नाथस्येद" लिखा है। इनका समय सवत् १८११ से १८५० तक है।

संख्या ५४२. वादशाही राज्यकाल का परगना आदि विवरण (वर्ष, मास, दिन, घडी सहित), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७॥ × ६॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८, अपूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० १०३, पु० स० १।

आदि—पातसाही कारखाने ३६ छत्तीस के नाम।

सुमदल खाना, पालकी खाना, सले खाने, तोप खाना, फरास खाना, नौवत खाना, तालीम खाना, खसवाइ खाना, वाईद खाना, हुर्म खाना, दिवान खाना, अदालत न्याय खाना।

मध्य—पृ० ३—खेत पडचा मुगल जीत्या, पातसाही मुगलानी हुई, संवत् १७५२ वेसाख सुद ५ तीर्यंकुर तखत बेग:

पातसाह तीमर लिंग मुगल	वर्ष	मास	दिन	घ०
१. पातसाह तिमर लिंग	०	०	१	०

ररै दुवरी टेक बोहुनी । थामा वाज वीन थकं न थुनी ॥
कोरी कह ठाटनी साजा । तुम बीनु कत न साजन साजा ॥

॥ दोहा ॥

परबत समुद मेघ ससी दीनी अर...... ।
सही न सकै...................... ॥

०:: :०: :०:

—अपूर्ण

विषय—विरह शृगार का वर्णन । यह जायसी कृत 'पद्मावत' का अश (नागमती विरह विषयक वारहमासा) है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ मे प्रथम और अत के पत्ते अप्राप्त है । उपलब्ध अश मे स० २ से लेकर ११ तक के पत्ते हैं । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

सख्या ५४४. वालवोधनी, कागज—देशी, पत्र—४३, आकार—४$\frac{2}{16}$ × ११$\frac{2}{16}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४१६, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—वलभद्र मिश्र, ग्राम–सिरजम, पो०–गौरी वाजार, जि०–गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री दुर्गायै नमः ॥

॥ दोहा ॥

शिवसुत मैं प्रनवौ सदा रिद्धि शिद्धि निद्धि देहि ।
कुमति विनाशन शुमतिकर मंगल मुदित कर गेह ॥
श्रीगुर चरन मनाये काली तुम परशाद ।
भाषा लिषो चिकित्सा शारद होहु शहाय ॥
काल गननाथ कह मन वच क्रम शीर नाय ।
शभु उमा उर आस धरि शभ विधि होहि शहाय ॥
गुरु पद पंकज शीश धरि शुफल होत शभ काम ।
सूक्ष्म चिकित्सा शर्वमत बाल बोधनी नाम ॥
भाषा कहो बनाय के देषि ग्रथ मत शोध ।
नाशा लक्षन व्याध के जेहि जानत शुद्धि होइ ॥
अर्थ कहो शभ व्याधि के पठत शुगम सभ ठाम ।
आवहोत गद होतहहि पीत्त क्फ बात नाम ॥

:०: :०: :०·

अंत—॥ परवटि वायुगोला को ॥

ताड के सिरिका पका वालु षाय...तव विपिक्षे शिरिका पिये वाइ वावगोला जाइ ॥ है जामे उवांत तम्भे के ॥ नरिअर के जटा जारि लेव टांक २ चिन्नि पुरानटा २ ए...चव देव पानिवर...उवात थंमे ॥

इति वैद्यशास्त्रे बालबोधनि नाम्ने सर्वौषधाध्यायः ॥ मकरस्थ शितितरे पक्षे त्रियोदस्यां दवि वाशरे हि नागाष्टइन्दुश्च गते पिमंचविद्यते विलिख्य काशीरामेन पुर...... ॥

विषय—रोगपरीक्षा, रोगनाम और औषधो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के वीच के कई पत्ते लुप्त हो गए हैं । लिपिकाल और रचनाकाल अज्ञात हैं । ग्रथ अत्यत जीर्णावस्था मे है ।

ब्राह्मन वाचते पोथीग्रा मोलना वाचे कीताव ।
नाम तो नीकला राजा भ्रथरी क्रम तो निकला जोग ।।
जन्मे रानी के कोप म पुत्रही दोप लगाए ।।
बोले माता रानी रूपदेइ सुन पडीत मोरी वात ।
हाथी देंऊगी ग्रौ पालकी घोडा देऊगी पचास ।।
लरीका के नाम पंडीत फेरी देहु जीनमे जोगी न होए ।
वोले पंडीत कासी का सुन रानी मेरी वात ।।
नाम फेरे से ना जोग घटेगा जो कुछ लीषा लीलार ।
लीषनहारा तो लीप गम्रा मेटन हारा जो कोउ न ।।

अ्रत—एतना वचन रानी सुनती है तन से उठत ग्राग ।
राजा नीकले जोगी वनके छुट गम्रा संग साथ ।।

।। दोहा ।।

तुलसी एही जग ग्राइके सबसे मीलीए धाए ।
ना जानी कौने रूप से नाराएन मीली जाइ ।।
तुलसी परघर जाइके नींदा कहीए रोए ।
ग्रापन भ्रम गवाइके बाँटी ना लेइहै कोइ ।।

।। सपुरन ।।

इति श्री पोथी भ्रथरी कथा जो देषा सो लीषा मम दोष न दीअते संमत १६४१ मीती कातीक सुदी १ को लीषा है दसषत हनुमान पाडे साकीन कलकता नीमतला घाट चुना पंटी वाबु वुलाकी सींघ के मकान मे पाटकल के पीछे लीषते है से जानव ।।

विषय—भरथरी की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १६४१ है ।

प्रस्तुत ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे निम्नलिखित ग्रथ भी हैं —

रामजन्म—सूरदास कृत, रामजी का बारहमासा—भवानी कृत, बारहमास बेनी माधो जी का—सूरदास, काली जी की अस्तुति—मलूकदास ।

संख्या ५४७. भूगोल कथा, कागज—देशी, पत्र—५, ग्राकार—६३/४ × ४१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४८ वि०, प्राप्ति स्थान—धर्मशास्त्री प० राजाराम जी मिश्र, ग्राम—रामसाला, पो०—सगडी, जिला—ग्राजमगढ ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः ।। ग्रथ भूगोल कथा लिष्यते ।।

पचाश कोटि जोजन प्रिथ्वी है पृथ्वी के मध्य सुमेर है सोरह सहस्र जोजन भूमि मध्ये गडित है चौराशी लछ जोजन पृथ्वी ते ऊच है वीस सहस्र जोजन चकराइ है सूर्य के लंकार सुमेर है : अ्रष्ट शृग है हेम १ लिस २ श्वेत ३ ऊंच शृग ४ मालियंत ५ गए मर्दन ६ महाश्रृंग ७ सो एक एक शृग लक्ष जोजन के ग्रतर है सुमेर सुवर्नमय है कैलास है वैडूर्यादि मणि वोधित है गन गंधर्व मुनि पारिजात कं है मौलि विनु राजा विराजत है वैकुठ महो पुन्य प्रदाइक है तेहि सुमेर के दक्षिण जमुनी तथा ग्राम्व को वृक्ष है ।

ग्रंत—

एक लक्ष जोजन ध्रुव लोक व्यापक वीस्तार विष्णु लोक है । देवतन्ह कह दुर्लभ है धर्म वोलियत है पाप मारि काटियत है तिस ऊपर सून्याकार है तिस ऊपर पुन्याकार है तेज पुंज परम

पुण्य नाराएन तहा बैठे है सोवर्ण के पलंग पर सोग्रत है अपनो चरनांगुष्ट चूहत है पवन स्वरूप चोप्ए है ही इति नूगोल पुराणे जो प्रथम सपूर्ण सुभ मस्तु सुभमवेत् ॥ सवत् १८४१ ॥ साके १७०६ मम्ये चंत्रे माने सुक्ते पछे पचम्य मृगुवागरे पुरनकी लीप्यते दग्रा तीवारी जो देवा सो लीपा मम दोपो न दीयते ॥

विषय—नृगोल और खगोल का वर्णन ।

संख्या ५४८. भूगोल प्रमाण गद्य, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७ × ३३ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६६१, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ११८, पु० स० ११ ।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ पृथिव्या भोगरा गव्यक्ता गव्यक्तस्य थि ब्रह्मांडा लिलायां सा ब्रह्मा आदि विष्णु ने ॐ पातयो रहा । अदाग्ते वायु उत्पन वायु ते तेज उत्पन्ना तेज ते उत्पन्नो पानि । पानि ते दंभ उत्पन्यो । पानि मध्ये ब्रह्माड उत्पनो वायु ते ब्रह्माड फुटि टुक टुक भयो । तहि जलमाई विष्णु रहे । परमेश्वर की नाभि कमल ब्रह्मा रहे ।

मध्य—पृ० ४–५

सेस नाग के फन एक महन है, दुइ सहस्र नेत्र है, पन्द्रह कोटि जोजन एक एक फन विस्तार है । महासेम नाग के मस्तक ऊपर महा वाराह की दाढ ऊपर पृथि है । पृथ्वी ऊपर परवत है । अष्ट पर्वत है । कौन कौन पर्वत है । हेमाल्य ।१। रत्नाचल ।२। विध्याचल ।३। उदयाचल ।४। अस्ताचल ।५। मलयागिरि ।६। द्रोण गिरि ।७। पद्दैक पर्वत ॥८॥ एवं विधि पर्वत पृथ्वी ऊपर है ।

अंत—तस्मात् उपरि सुन्याकार है । तेघकलातः श्रिनारायन पौढे है । सोने कपाल कि ऊपर अपने पाउके अगुठा आपे चसत है । सो वह सो वहु बालगोविंद सरुपि है विस्नु । देवताते अपर्क्षन है । मर्व कला संपूर्न है । गंगा जल सुक्ष्यत है । कलि मध्ये प्रभु आदित ॥

इति भोगल प्रमान गस्य प्रकरण समाप्तः ॥ यथा प्रति जथा लिखि तं ॥ संवत् १६६१ वर्षे पोष सुद १ दीने लखतं भटनंद जी सुभ भवतु श्री नारायणमस्तु ॥

विषय—पौराणिक ढग पर भौगोलिक वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ऊपर "गिरधरनाग्णा" लिखा है ।

संख्या ५४९. महादेव सरोदय, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६३ × ४७० इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, अपूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० मुन्नी चौबे, ग्राम—हुस्मुजपुर, पो०—सादात, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशायन्म ॥ श्री महादेव सरोदय लिपते ॥

कैलाम सिपर पर बैठे जाय महादेव वचन सुनो सपी पारवती या अन्याय है । सो तुम सो कहत हो सुनें पाछे त्रैकाल रुप होइए हैं हे पारवती गुपत वात की तत्व सार है सपदे की वानी है सप्तदेव को पिता ततसार है सो तुम्सों कहतु हैं । हे पारवती आ अस्थूल कहता घनो है अरु सुछम कहता मारन कीनो है गुन को यधु है पढित जिनको गावं है और लोक संसार में अचरज है अनेक सास्त्र मं तत्व सार है जो जानेगा सो सरोदय सौ बना रहेगा हे पारवती सरव सास्त्र को अभ्यास करें है सो देवता की संख्या में प्रापति होइहै ॥

अंत—अहनपति वाये तत्व चलें सुन अग्नि तत्व चलें आदित प्रथी तत्व चलें सनीचर जल तत्व चलें है पारवती समए गुरजन कहत हैं मेप सक्रान्त पत प्रथी तत्व चलै तो समयो आछो होय

आनंद होए अति बल कारी होए राजा प्रजा सुपी होए मेष सन्कान्त वाये तत्व में पैठे तो आछौ समयौ होए पवन धरती वाजे मेष सक्रान्त तेज तत्व में जैठे तो काल परे राजा विध्यसन होए मेष संक्रात वाये तत्व मै वैठे तो दुर्भछ परे. ....अपूर्ण।

विषय--तत्व स्वरोदय एव ग्रहो के फल का वर्णन।

संख्या ५५०. महाभारत (विराट पर्व), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—$6\frac{1}{4}\frac{3}{4}$ × $4\frac{3}{16}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, खडित, रूप—पुराना, (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—.....................

रूपा न होइ तिमीर कर फुटी।
चंद सुरुज कै कीनीन फुटी॥
इहही अन्न सभ रषी तव वैठे राज दुआर।
तवही अन्न सभ लेवै जीव होइही नीस्तार॥
राए दुदुस्टील राषा कवल।
कोटी षरग धारू जन्न काज वल॥
भीमा गदा लेइ श्रोछी चाढावा।
षन षन गदा उतारी होअ लावा॥
जेही कर गहो सहे को करान।
इहइ गद जीरजोधन हरन॥
भीमा परीहरेइ नाही तामा।
जैसे कीरीपीनो न छाडे दामा।
भीमी सेनी वोल अनरागी।
इहइ गदा जीरजोधन लागी॥
अरजुन धनक वान होअ लावा।
गुना कवराव श्रौ सीस डोलावा॥

अंत—रथ सें उतरु भेअ भीम सहोदर भाइ।
जाइ वैराट वहोरहु कोउ जीअत न जाइ॥
रथ ते उतरी लीन्ह तर तोरी।
पैठे हाक देइ जघउ अरोरी॥
वाए हाथ अव नेवारा।
दहीने हर......हषो रथ मारा॥
गदा सवारी मन भए वीराउ।
नही गदा एही अव ठाऊ॥
हथीही हथीही अमेर देइ।
कवनउ हथी कध फे लेइ॥

—अपूर्ण

विषय—महाभारत विराटपर्व की कथा का वर्णन। ग्रथ की भाषा प्राचीन है।

सख्या ५५१ युगल विहार, कागज—आधुनिक, पत्र—७, आकार—१० × ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

आदि—श्री मनगुरु चरणेभ्यो नम ॥ अथ ॥ जीव पीव युगल विहार वहार अप्टेत्त-रीय दोहावली ॥

॥ प्रारभ ॥

श्री गुरु पद कज रज रजहरन धिय ध्याय ।
श्री साता वर प्राप्ति कर रहस अलौकिक पाय ॥ १ ॥
श्री हनुमत सुसत पद वदि अनेकन वार ।
जेहि करुना आनद पर मिलत सुनित्य विहार ॥ २ ॥
श्री साकेताधीश प्रभु श्री सहृत्त पद पद्म ।
वदौ वार अनेकहा शिर मन-अलि-रस सद्म ॥ ३ ॥
नमन नलिन पद श्री भरत भरत प्रेम हिय रीति ।
नीति निरत प्रभु प्रीति प्रद हरन महा भय भीति ॥ ४ ॥
श्री लछिमन पद कमल नम सभ लच्छन दातार ।
रहै हमेशे लच्छमन धरै नाम प्रभ प्यार ॥ ५ ॥

:o. :o :o:

एक समय परधाम मधि श्री श्री सीताराम ।
दुहुँ दिसि परिकर सेवहीं सेवा लहि अभिराम ॥ १ ॥

:o: ·o: :o:

बोले मृदु मसुकाय कै सुनहु सखा मम जीव ।
माया मम अति बलवती रचना कीय कमनीय ॥१४॥

मध्य—

श्रोक श्रोक अवलोकि कै बिसरी सुधि परलोक ।
यह निज जिय निश्चै करी हम रहिहैं यह लोक ॥
घूमि घूमि देख्यो सबरा अकल गई बौराय ।
असल नकल लखि नकल मे असल बद्धि ठहराय ॥ २ ॥
संग सिपाहिन से कहत यह यह हम लेव ।
यह यह तुम लइहौ जहां उत्तर का देव ॥

:o: :o: :o:

प्रीतम खेद विलोकि प्रिय अधिक कही अकुलाय ।
कृपावती तब आइकै बहु विधि कह समुझाय ॥४४॥
धन्य धन्य प्रीतम पिया धन्य दीन अनुबंध ।
जीव पीव प्रभु मिलन को कहौं सुनो सुप्रबंध ॥४५॥
चलो परात्पर धाम ते श्री सतगरु वपु धारि ।
भव अगाधि निधि बाचते कर गहि लेहु निकारि ॥४६॥

:o: ·o: :o:

वन कदंब दम्पति रमत सम्पति रूम कदम्ब ।
श्री मानमिनंदिनि मुकुट गनिक स्वेन प्रवलब ॥
वन अनंग सु विदेहजा अलि रघुनंदन सग ।
विलसत विहँसत अंग अँग वारिय अमित अनंग ॥
विपिन नागकेसरि न गरि युगल विलास प्रकास ।
द्वादस वन मन रमन कर लहु मद द्वादस मास ॥

विषय—गुरु द्वारा जीव और ईश्वर का मिलन वर्णन किया गया है।

एक समय ईश्वर ने अपने परिकरों से कहा, "मेरी अनेक कृतियों में से पृथ्वी अत्यत रम-

णीक है। तुम लोग जाकर देख लो। परंतु वहाँ की किसी वस्तु को न तो छूना और न लाना ही, केवल देख भर लेना।"

जीव अगुआ था और उसके साथ जप, तप, संयम, नियम, व्रत, शम, दम, ज्ञान, विज्ञान, विरति, सुरति आदि अनुचरों की सेना थी। जब वह पृथ्वी पर आया और उसकी शोभा तथा मन को लुभाने वाले उसके भाँति भाँति के पदार्थों को देखा तब उसे वापस जाने की इच्छा नहीं हुई।

साथियों ने बहुत समझाया, पर सब व्यर्थ। अंत में सब जीव को छोड़कर लौट गए और परमात्मा से उसकी सब बातें कहीं। परमात्मा को इस से बड़ा दुःख हुआ। अंत में कृपावती की सहायता से परात्पर धाम से श्री गुरु का अवतार हुआ जिसने अपने सदुपदेश द्वारा पृथ्वी से जीव का उद्धार कर परमात्मा से उसका मिलन कराया।

रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम भी अज्ञात है। एक स्थान पर एक दोहा इस प्रकार है —

'राम वल्लभा शरन गए' किये सुगुरु प्रभु 'सीतेश'।
सन्मुख ही निस दिन रहें श्री सतगुरु करुनेश॥

हो सकता है, उपर्युक्त वाक्यों में रचयिता एवं गुरु के नाम हों, पर स्पष्टतया कुछ विदित नहीं होता।

रचना भक्ति विषय की दृष्टि से सुंदर है। राम और सीता के विहार में अयोध्या के रामानुयायी वैष्णवों ने कृष्ण के शृंगारानुयायी वैष्णवों से पीछे नहीं रखा।

संख्या ५५२ योग रत्नमाला, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—११६ $\frac{3}{4}$ × ३ $\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—निरंजनी अखाड़ा, स्थान—आदराटह, पोस्ट—माटा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नम.॥ श्री मन्नारायणाय नम.॥ अथ योरत्न मला लिख्येते॥
॥ श्री गोरषो वाच॥

अथ गरू सिख्य को जप मंत्र होय सो गरू सेवीये जाकि बुधि निमल होय जाकि बुधि सूर्य कि बराबरी होय सूर्य के उदय करि बहु कला विकास होये तैसे गुरू सेविये बिनो तो येहि सास्त्र की वधि प्राप्ति होय गुरू के मते ६ सर्वशास्त्र का सार समुद्र मथि काढा है॥ तोइ सास्त्र का नाव योग रत्नमाला राखा है॥ पातसाह को तमासे दिखाये हय॥ यह सास्त्र सूर्य की योति समान है। नागार्जुन आपने गुर से देखि के अजमाये है॥

इति गुरु प्रसाद.॥

अंत—तिल का तेल धमारो टकन पार॥ जाय के पातरस॥ सब दार तेल सोधि जे पाछे लिंग लेप कीजे ता स्थूल होय॥ आसग का मूल॥ जेहो मध सम भाग लीजै॥ अमली के रस मे षल कीजे पाछे सो सो चर नोन सहत सो पाय॥ दिन २१ वीर्य होय चलो न सर्व सै जोजन जाय व पुष्ट होय केस सपेद न होय हारे नाहीं॥ अथ॥ अपामार्ग का बीज सेर पचीस ॥२५॥ निर्गुंडी का जड सेर॥ ५॥ एही दोनुहु का तेल पालयत्र से काढिये सो तेल अंग मर्दन करे तो इद्री वस्य होय॥

इति योग रत्नमाला संपूर्ण शुभ भवतु श्री॥

विषय—ओषधि निर्माण करने, धातु आदि मारने और सोना बनाने की विधि का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का नाम भी अज्ञात है। ग्रंथ 'श्री गोरषोवाच' से आरंभ होता है। नागार्जुन का भी नाम आता है। ग्रंथ में वर्णित

विषयों के संबंध में कहा गया है कि ये मंत्र नागार्जुन ने गुरु को देख के याजनाए हैं। संपूर्ण रचना गद्य में है।

संख्या ५५३. राग रागिनियों का वर्णन, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१२,१/० × ६,६/० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत हरिनारायण मिश्र, स्थान व पोस्ट–सिकंदरा, जिला–इलाहाबाद।

आदि... .....नमः॥

सुख को दाता राग है, राग रूप को भोग।
याही ते सब कहत हैं राग रोग संयोग॥ ६॥
राग.. ... .. . राग चहै रस भोग।
विरहिनी भरै वयराग को उपजै महा वियोग॥१०॥

॥ अथ राग नाम॥

भैरव की धन भैरवी बंगाली बैरारि।
मध माधो अरु सिन्धवी पाचो विरही नार।११॥
गनकली खंभावती मन(?) कर्थ।
मालकोश की रागिनी भावती अति दुर्ल्लंघ॥१२॥
रामकली पटमजरी और कहो देशाख।
ये नारी हिण्डोल की ललित बिलावर राख॥१३॥
देखो नट अरु कानरा केदारा कोमोद।
दीपक की प्यारी सबै महाप्रेम परमोद॥१४॥

अंत— ॥ अथ रागिनी रूप॥

शिवपूजत कैलास पर दोऊ कर मे ताल।
सेत चीर अगिया अरुण............॥
भस्म पेटाली कर गहे हाथ लिए तिरसूल।
बगाली आकुल भई गई सबै सुधि भूलि॥३२॥
... ... या कर कंकन शृंगार।
शीस देरा सोहत छुटे सेत वसन बैरार॥३३॥
कंचन तन लोचन.....................

विषय—राग-रागिनियों का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का केवल प्रथम पत्र उपलब्ध है। रचनाकाल और लिपिकाल ज्ञात नहीं।

संख्या ५५४. राजा विक्रम की वार्ता, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य,-पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०७ प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—॥ बात राजा विक्रम की॥ पाडलीते॥ किसना राना पें ते लिखि के लाये सो वार्ता॥

गजमुख सुखदाता जगन दुख दाहक गणईस।
पूरण अभिलाषा करो शंभूसुत जगदीश॥

राजा वीर विक्रमाजीत अर्जेन नगरी का था ।।
श्रोर ऊसके राज मे कोई दूषी न था ।।

क्यो जो राजा पर दुष भंजन हार है ।। सो अपने सहर में नित गस्त दीयो करतो सो ।। ऐक दिन राति मेगस्त देते मे राजा ने ऐक मकान मे विश्राम कियो सो ।। वहां कहा सुनी जो कोई वातें करें हें जो इकलो कहीं न जानो ।। श्रोर कहीं जानो तो दो जने जानो ।। तव राजा ने वाइस में ये विचारी जो श्राज ते इकले कवी न निकसेंगे ।। श्रोर कल ही ऐक यार करनो चहीयें जो अपनी सी सूरत मूरत को भाग्यशील होय सो करनो चहीयें ।।

मध्य—सोइ इनने घोडा मारे सो जाय के देखें तो ऐक वड की पेड हें वहां कूश्रा वावड़ी तो कोइ हें नहीं तव कही जो पानी नाहें तो छाया मे एक घडी विश्राम तो करि लेऊं ।। सो घोडा सूं उतरि घासीया विछाय २ दोनो सोएं ।। सो राजा ने देख्यो जो वर पें ते वूंद पानी की टपकें हें सोई राजा ने कही भाई कटोरा धरो सो भर जाई तव पीनें ये वर सरजीवन है । सो कटोरा धरि दीनो ।। सो टपक २ भर गयो सो वा पेंड पें १ मेना १ तोता रहें सो कहने लगे श्रापस मे सो मेना वोली जो ।।

।। दोहा ।।

सुन सुश्रा मेंना कहें मेरो कहा चारो ।
मरते २ सरफ ने काहू भले कुवर को मारो ।।३७।।

अंत—
रात की वात परभात पछी सषीयो ने कही कहो केसें रेन गुजारी ।।
पड़ी थी अवरवस परी थी जवरवस पकरि के डंड दे पछारी ।।
फक फक हीरा गिरा गिरें फक फक लोही गिरे मरी रे मरी रे मे पुकारी ।
जेसे राम की धमक से लंक टूटी तेसे पीऊ की धमक मेंने समारी ।। १ ।।

कार कू देऊ सो वाने कवूल कीनी सो वो रानी जो साहूकार लायो वाकी श्रोर कमलता की भामर तो राजा कू परी श्रोर मोती की वेंटी की भामर ईकदार सू परी फेर वहां कुछ दिन रहे फेर विदा भये सो कोई दिन में नगर ऊर्जेन मे पोहोचे ।। नगर हु मे श्रानद कुमार वरती मे श्राये ।। जिन देखे भरि नेंन चेन काया सुषपाँन ।।८१।। श्रोर गाजा वाजा सूं दोनो कुमर वहु ले ले के घर में लीयें नोछावर होने लगी वधाई वजने लगी नोवत वजने लगी श्रेसी सवकी फिरें ।।

विषय—इसमे राजा विक्रमादित्य श्रौर उसके मित्र की कथा का वर्णन है । कथा सक्षेप मे निम्नलिखित प्रकार से है —

राजा विक्रमादित्य अपने नगर का समाचार जानने के हेतु रात के समय वरावर नगर मे घूमा करते थे । एक रात को वे किसी घर मे ठहर गए । वहां दो श्रादमियो को वातें करते सुना । वे कह रहे थे कि अकेला कही नही जाना चाहिए । दूसरे आदमी को साथ लेकर जाना चाहिए । इसी पर राजा ने निश्चय किया कि अव वे भी रात्रि के समय अपने साथ एक श्रौर आदमी रक्खा करेंगे । दूसरे दिन से उन्होंने वैसा ही किया । कई घटनाश्रो के अत मे दोनो की एक जगह शादी हो जाती है श्रौर दोनो अपने घर चले श्राते हैं ।

संख्या ५५५. राम जी का नहछू, कागज—देशी, पत्र—५, श्राकार—७ × ५½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

श्रादि—श्री सीताराम जी सहाए ।। श्री गंगा जी सहाए ।। श्री महादेव जी सहाए ।। श्री पोथी राम जी का नह छुश्रा लीख्यते ।।

राम नाम रघुनंदन भरथ भुवाल हे।
दसरथ के कुलनंदन सरन तोहार हे।
धेनुहा पन्हो जनकपुर कोइ न तोरनीहार हे।
देश देश के भूप राम ठाड सुप जोहहीं।
दो चौत्त भइलें राजा जनक जी परन नाही छुटही।
अब सीआ भइली कुंआरी जनक बीधी पोहही।
जो मए (? मैं) जनीतो धेनुष नाही टुटीहे परन नाही ठानीतो।
जनक उठे अकुलाइ परग बीधी खोहही।
बोली उठे बाबु लछमन सुनो भाइ राम हे।
आग्या देहु मोंही के धेनुष हम तोरहे।
बोली उठे श्रीराम जी सुनो भाइ लछमन हे।
गुर आग्या जब होइहे धेनुष हम तोरबे॥

अंत—केकर पोपरा पनावर घाट बनावही।
केकर मरेला कंहार।
तोकेइ नहवावही॥
राजा दसरथ पोपरा पनावल घाट बनावही।
कोसीला के मरेला कहांर तो राम नहवावही॥
के देला पिउरी चुनरीआ त के देला रूप हे।
केकइ देती पीउरी चुनरीआ सुमीत्रा देली रूप हे।
कोसील्या देली रतन पदारथ भरी भरी सूप हे।
:o: :o: :o:
होने लागी नहछावरी गोतीनी अती हरषही।
छन सावन के बुंद सांमघट अपही।
राम बीआही घरे अइहे तो लेबो मे घोट हे॥

इति श्री पोथी समापत संपुरन सहत॥

विषय—राम और सीता के विवाह के समय के नहछू कृत्य का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नहीं। रचना का साहित्यिक दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं। परन्तु ग्राम गीतों की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। इसकी प्राचीनता सौ-डेढ़ सौ वर्ष से अधिक की नहीं। इसमें लक्ष्मण के लिये "बाबू लछमन" कहा गया है। "बाबू" शब्द अंग्रेजों के समय का है। प्रस्तुत रचना निम्नलिखित अन्य रचनाओं के साथ एक हस्तलेख में है :—

१ दानलीला—श्रीकृष्ण दास कृत
२ रामरक्षा—श्री[illegible]दास कृत
३ सोहर गारी—रचनाकार (?)
४ नागलीला—रचनाकार (?)

प्रस्तुत रचना की भाषा पूर्वी अवधी है। संभवतः उसी आसपास उपप्रान्त के किसी ग्रामीण कवि की रचना है।

संख्या ४५६. नारायण शिक्षा पाठ, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्ण, खंडित, रूप—प्राचीन, (गद्य-पद्य), लि. लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामदास दुबे, ग्राम—रगड़िया, पो०—[illegible], जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि--

वीर सधीर तीर कपीश तरणिहि तारह
(१५६) नत शोक शागर अगम डूवत जगम तुम्हइ निहारह

॥ सोरठा ॥

जांववत एह भापि कह्यो न कछु पवमान सुत ।
अंगद प्रति अभिलापि विकल सकल मरकट कटक ॥

इ श्री प्राचत्रे मावेस क पा प्रम विल ज्ञान भ प्र य उः म श्च स दे तुर्ण सद्र त एो चि नो म शमरं सोः १ दोः १३ चौः १०४ छः १ दोहा

एकादशे तरगमह कहो कथा अव सोई ।
जामवत हनमत वर जन्म कर्म कह जोई ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

कपि सव हनूमान कइ वोर्रहि । विकल विलोकहि विधिहि निहोर्रहि ॥
जौं एह सिंधु पार नहि जाही । तौ निज मरण अन्यथा नाहीं ॥
वहु भातिन्ह कपि कटक दुपारी । करत अनेक तर्क भय भारी ॥
(१५७) जांववत जानेउ सव काहू । दहत दीप शोकानल दाहू ॥
तव वहोरि हनमतहि निहारी । तात रिछ कपि कष्ट विचारी ॥
मख दुति रहित विकल कपि वीरा । वोलहु किमि न धरावहु धीरा ॥
वद्धिवत विक्रम जशवंता । करणी सकल श्रेष्ठ अति संता ॥
वायु पुत्र वल वायु समाना । गुनसागर अरु तेजनिधाना ॥

॥ दोहा ॥

राम सुकंठहि परम प्रिय जेहि जानत ससार ।
जेइ मिलाइ मित्रत्व करि कोश ईश अधिकार ॥

॥ चौपाई ॥

तुम्ह इहवां सुग्रीव समाना । को करु तुम्ह विन कारज आना ॥
तुम्हहि न कछु एह शागर दूरी । तव भुज वल जानत हउं भूरी ॥
खगपति अहि अवलोकि अहारू । जात दीप पारहि वहु वारू ॥
तेहि पर भुज अपार वल तोही । काह विचारि रहेहु जिय जोही ॥
करि व्यवसाय सु कपिन्ह वंचावहु । निज वल वर तिहुं पुर दरशावहु ॥
राम काम लगि जनम तुम्हारा । सो न ह्रिदय किमि करहु विचारा ॥
निज वल तुम्ह कह अहइ भुलाना । कहिहो हो प्रसंग सव जाना ॥
अगद सुनहु कथा मन लाई । अति पावन प्रथमहि मुनि गाई ॥

॥ दोहा ॥ (१५८)

भक्ति मानसर मो मगन जिय न जान कछु आन ।
तातें पुनि कारण अपर निज वल विपुल भुलान ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि पुनि हनुमानहि देषा । सुनहु तात निज जन्म विसेषा ॥
पूर्वहि अपसरशा छवि धामा । पुंजिकस्थला तावर नामा ॥

शाप विवस कपि कुंजर केरी । भइ भामिनि भावी वश हेरी ॥
नाम अंजनी तासु कुमारी । जात भई वानरि तनु धारी ॥
सुता दीख जब भइउ सयानी । तब कपि कुंजर मन अनुमानी ॥
ब्याह् विहित जन दिधि जह चाही । तस करि दीन्ह केशरिहि ब्याही ॥
सो प्रसिद्ध सब लोकहु माहीं । पटतर कहुँ दुतीय त्रिय नाहीं ॥
शाप भोग जब गयउ विहाई । तब सोइ शुभ दिवि ला..... ॥

अंत—(पत्र १६१)

तब तुम्ह एक गिरि शृंग उपारी । गज समेत सुरनाथहि मारी ॥
परा विकल करि मर्हित सुरेशा । बहुत बेर बहु सहेसि कलेशा ॥
पुनि मुरछा जागे सुरराई । तुम्हहि वज्र सें हतेसि रिसाई ॥
सो सरशत जोजन रहिहचा । गिरिपर परेहु कुलिश कर कचा ॥

॥ दोहा ॥

दूरि पतन तर धराधर, तुम्हहि न कछुक विपाद ।
वाम भाग हनु गिरर वर तब वरा वहु मरजाद ॥ ७ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि ब्रह्मादि शिवादिक आए । करि विनती बहु रविहि छुडाए ॥
दीन्ह सुरन्ह बहु विधि बरदाना । सो सब को करि सकै बखाना ॥
वाम भाग हनु शैल विशाला । तातें विधि विचारि शरमाला ॥
हनूमान तब रापेउ नामा । सकल तेज बल वुद्धि सुधामा ॥
इहिते तव बल अति अधिकारा । बाल पराक्रम करत विचारा ॥
अब अति जुवा समय सुभ आई । तव वल महिमा को सकु गाई ॥
उठहु...................................... ।

(१६३)

......जानी राज काज तबहुं भांति दोहा...सोइन करी कि....
(खंडित)..................

॥ चौपाई ॥

सब कपि विनय करहि... । किमपि न काल जाल तें छोरी ॥
अलवट विक्रम दारुन्ह पाई । कि मि न लेहु जस जगहि देखाई ॥
सिय सुधि बिन बीते बहु काला । त्याइ लहहु तुम्ह सुयश विशाला ॥
जह गति पवनहुं केरि न होई । तह तुम्हारि जानत सब कोई ॥
लवनोदधि एहु सर्वहि अपारा । तुम्हहि न दुर्गम हृदय विचारा ॥
कीसन्ह केर कष्ट अवलोकी । किमि नहि देखहि करहु विशोकी ॥
समरथ त्रयविक्रम समतूला । लंघहु सिंधु बिनासहु शूला ॥
रिछराज यूथप कपि जूहा । करत भये सब विनय समूहा ॥

॥ छंद ॥

सबहीं रमोजहु विनय पुनि सुनि पवन...... ।
....   अपूर्ण ॥

विषय—रामायण किष्किधा काड के अतर्गत हनुमत् उत्पत्ति और उनके वन विनम का वर्णन तथा सीता की खोज करना।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है। समस्त पाच पत्रे (एक सौ छप्पन, सत्तावन, अट्ठावन, एक सौ तिरसठ और इकसठ) उपलब्ध हैं।

सख्या ५५७. रामायण नाटक, कागज—देशी, पत्र—८५, आकार—९ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०८०, खडित, रूप—पुराना (जीर्ण शीर्ण) पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८५ वि०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रघुनाथ सिंह, ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहावाद।

आदि—. . . . .

. . .न के साव्द वाली अकुलाना। सका मैं आचाय कर जाना॥
मत्रीन सो अस कहे वाचारी। साव्द अघात भएउ का भारी॥
हाथ जोरि मत्री अस कहई। वड़ि वीपरीत वात एह अहई॥
लछिमन राम जे दुनो भाइ। वोन्ह कीन्हे सुग्रीव सहाई॥
लेइ सुग्रीव देषाएउ तारा। मारउ राम वान भए पारा॥
एह सुना वाली क्रोध चीत धरा। वरत हुतासन जन प्रात पारा॥
नीसरेउ वाली क्रोध कैं रन कहु कीन्ह पयान।
एक चीत भैं हीदें मह कीन्हेउ हरी कर ध्यान॥
हीदें मे कहेउ सात्या जो रामा। तौ होइ हमन पुरन कामा॥
जौ सीअ सती अहहु नम कन्य। वाली मारि प्रभ जीतइ रएना॥
तौ विधि कर इकत सउ भेटा। परवस दुष जाइ सव मेटा॥
आएउ वाली महावल भारी। रामचद सो कहेसी पुकारी॥
सुनहु राम छात्री रनधीरा। हम हही वारी इद्रसुत वीरा॥
वल हमार तुम सुना न काना। सनमुष आइ कीहेहु आध्याना॥

मध्य—

जब रघुनाथ देष हनुमाना। आइ रीतु वसत जनु जाना॥
प्रफुलित भए सव वानर रएन। तव रघनाथ वोल कछ वएना॥
अहइ जीअत मम प्रेम पीआरी। देषेउ आपिन्ह जनकदुलारी॥
सीता जीअत अहइ रघुनाथा। मैं परसेउ चरनन पर माथा॥
कहही राम तन देषेउ षीना। आनद रूप की चींत मलीना॥
कहही पवनसुत अति दुति षीना। जोति हीन औ वसन मलीना॥
राम कहही से प्रान पिआरी। करत अहहीं कौछ सुधि हमारी॥
तव कपि कहे षीन तन वामा। वल सभारि दइ वोलही रामा॥
सुनतैं वचन राम मन माना। तव कपि काढि दीन्ह सहिदाना॥
भए सहिदानी राघव पाए। उपजे प्रेम नएन जल छाए।
सीता वीरह हीदय मह मानी दीन्ह यपी हाथ।
करनी वूझि पवनसुत मीलन कहे रघनाथ॥

:o: :o: :o:

अंत—

भाषत अहउ वचन परवाना। हे कपी तोही दीन्हे जोउ दाना॥

एह कही दइत नीकट चली आउ । कीहेसी आइ जे कपी उर घाउ ॥
दानव करइ घाउ जब भारी । तब तेही का कपी धरे गभारी ॥
ह्रीदए लाइकै भुजबल चापा । आठौ अग दइत कर कांपा ॥
पाजर टूटि सीम बीगराना । तेही षन दानव तजा पराना ॥

:o: :o: .o:

कीचकींदा हइ देस हमारा । तहा के राजा सुग्रीव भुआरा ॥
लछन राम दोउ जे भाइ... । ... . ॥

आगे कथा नही अहै जो देषा सो लीषा दोस न दीजैत प्रती नाटक रमाएन लीषा सीउबकस सोमवंसी संवत १८८५ के साल मीती पुस सुदी ७ वार मगल ॥

विषय—रामायण की कथा का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—आरभ के ४२ पत्रे और पत्र संख्या ६५ नष्ट हो गए हैं ।

लिपिकाल संवत् १८८५ है । लिपिकर्ता ने अत मे "आगे कथा नही है" लिखा है । इससे स्पष्ट है कि जिस प्रति से प्रस्तुत प्रति लिखी गई है उसमे भी आगे की कथा नही रही ।

संख्या ५५८. राव हमीर सां गढ, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—६½ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—तीस. अमो गजराज अमाने. सुग्रीस अरपस सहेस तेगसाहु मीन मानं ईती हसम रण थंभ गढः ईती रावणधीरमग हुत वचनई मं उचरं. हजरत हटमतमुरो हमीरसु. फेरपातंस्याह हुत सुवचन मे है ताहै राव हमीर प्रीनोत सावत मे समचार मे हो राज मैसं नीत सुमरता है : ये समचार हमीर मेमेहो: मद्यमास जाहा . . दर्जः हरंप हरष मदर मीजें वागनी वाजन्ही होय मथाहर मीजाहा सुनज्यं रोजा वगनी वाजे. मृराण मुलमाम्हां. मुसुलमान मानाव. स्याहाये मऊ नही सुनीजं:

मध्य—यह ओलीषा मोई आयो. अचरज हुवो हमारे तीरजगट पं आयो : रावचाहुही सचाहो : सोच मुरी सेप बुलायो : मुग्ज पोलीया घरपट : भयो राव चींत भग : मुहे मीर : असे ओलीया : मीते स्याहा मेसगः मैहै माम्पारावहमीर मुर्ग होता है :

अंत—पोहोचे राव हमीरः स्याहा सुग्ज सवही आसादेवल ओरमव. प्रहै मास्या. हरमीरः मीले सबै सुर लोम मै हजरती हुरम हमीर. मीलं रावपतीस्याह. पीरग्यो न रस मायेः ज्यो पारस मृपर सैः ओर वजरे मच न होय जाय अलादीन पतास्याहा सो हुयो गह। अब होय मुवो मेहे माम यही मऊचरंः वास मी सत मुरपुर वस्योः ईती श्री राव हम्मीर सां गढ ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रथ डिंगल भाषा मे रचा गया है । इसमे अलाउद्दीन और हमीर की लड़ाई का वर्णन है ।

संख्या ५५९. बानारसी विलास, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६॥ × ५॥ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६९८, लिपिकाल—स० १८११, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ७३, पु० स० ३४ ।

आदि--सिधि श्री गणेन जी प्रसादात् ॥ श्री काशी विश्वनाथ जी प्रसादात् । श्री वाणारसीविलास लीख्यते ॥ दुहा ॥

वीन्याएक वरदेत है गवरीनंद सिरचंद । दुंदालो दुख भजणो सुंडालो सुखचंद ॥ १ ॥
समरु माता सारदा भूषण चोर अनूप । हंस चढी हाजर सदा वरदाता अतिरुप ॥ २ ॥
ढुंढराजराजे रिध पुरे अनपूरणा आस । कोटवाल भेरु ईहां कासी विने कइलास ॥ ३ ॥

मध्य--पृ० ७-८

सदा वरत देहे सदा ऊजलरीत अनुप । दंडीविप्र पोष्यके पावे सकल सदुप ॥३६॥
कासीजी मे पुन्य है कीरत देस विदेस । महाराणा कायम रहो घणा वरस जगतेस ॥३७॥
फिर आंगे पांडे घाट हे केदारेसुर गोरी कुंड । राम लछमन जानकी हनुमान लीये गुंड ॥३८॥
असी संगम आयके सगमेंसुर सिर नाय । अकरुर घाट देख के लोलारक पे आय ॥३९॥
फिर आए मणिकर्णिका व्रण दीसी चलेह । वीरेसर जु घाट हे खभहरचंद हे अेह ॥४०॥

अंत--बानारस महिमा अधिक काहु पे कही न जाय ।
चत्राई चालो कीया ध्यान रहे मन माय ॥१०७॥

संमत सतरे अठाणवे दिन कवदे तिहुमास ॥ नरदेही सुफल भई वसे वाणारसवास ॥१०८॥

इति श्री वाणारसी विलास सपुर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥ माघ कृष्ण दशम्या सपूर्ण सवत् १८११ लेखक पाठकयोः शभमस्तु ॥ ॥

विषय--"काशी खंड" मे वर्णित काशी के तीर्थों का पौराणिक वर्णन ।

संख्या ५६०क. वास्तु प्रदीप, कागज--देशी, पत्र--२१, आकार--११ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--६३०, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, लीपिकाल--सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० रामस्वरूप उपाध्याय, ग्राम--गुदिरपुरा (नारडीह), पोस्ट--फूलपुर, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥

॥ भाषा ॥

अपनी जन्म की राशि तें जेहि गाँउ की राशि दुसरे २ नवमे ९ पंचयें ५ एग्यारहे ११ दशमे १० होइ तव गाँउ शुभ जानव और अपनी जन्म की राशि तें जेहि गाँउ की राशि एक १ तीसरे ३ सतए ७ चौथे ४ होइ तब गाँउ मध्यम जानव औ अपनी जन्म की राशि तें जेहि गाँउ की राशि छटयें अठ्ये ८ बारहे १२ होई तवन गाँउ निषिद्ध जानव ओहि गाँउ न वस ब ।

अंत--जौ एको बाकी रहे तौ प्राण कर नाश कहव औ अग्नि कर बास स्वर्ग विषे कहव औ दुइ बाकी रहै तौ अर्थ कर नाश कहव औ अग्नि कर वास पाताल विषे जानव, औ जे केउ कृष्ण पक्ष विषे कृष्ण पक्ष की परिवाते गिनत है सो युक्ति अग्नि के वास कै नाही लोक है एवं गुलग्ने सगहं प्रविश्य वितान पुष्प श्रुति घोष यत्नम् शिल्पज्ञ दैवज्ञ पौरा नाजर्च्चये भूमि हिरण्य वस्त्रं. १ ॥

इति श्री वास्तु प्रदीपे गृह प्रवेश विधानं समाप्तम् शभमस्तु । सम्वत १९२२ ॥

विषय--वास्तुशास्त्र का वर्णन । यह मूल सन्कृत ग्रंथ का अनुवाद है ।

संख्या ५६०ख. वास्तु प्रदीप, कागज--देशी, पत्र--२१, आकार--१०¾ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--४४८, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९३५ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी नागरी-

पञ्चांगणी नमा, वाराणसी (दाता—श्रीधर पाडे, ग्राम–पाडेपुरा, पोस्ट व तहसील–फूलपुर, जिला–आजमगढ) ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ गृह प्रकरणम् ॥

अपनी जन्मराशि ते जेहि गाँऊ के राशि दूसरे २ नवये ६, पचमे ५ इगरहे ११ दश १० होइ तवन गाँऊ शुभ जानी । औ अपनी जन्म की राशि ते जेहि गाँऊ कै राशि जन्मे १ तिसरे ३ सतये ७ चौथे ४ होइ तवन गाँउ मध्यम जानव ॥ औ छठये ६ अठये ८ वरहे १२ होइ तवन गाँउ निषिद्ध जानव ॥

अंत—विशापा विषै प्रवेश करै तौ स्त्री कै नाश होइ ॥ कृतिका विषै करै तौ गृह कै नाश होइ ॥ भरणी तीनों उत्रा पूर्वा ३ मघा विर्षं गृह प्रवेश करै तो गृहेश कर नास होइ ॥ और मेष' कर्क. तुला: मकरे लग्न: और चंद्र माम. ऋक्त तिथि औ मंगलवार. औ रात्रि कं: औ अधिमास: विषे गृह प्रवेश न करद ॥

प्रवेश लग्न को अठये पचये दुसरे इगरहे के उपर पांच लग्न लेहि सूर्य्य होही तौ गृह प्रवेश शुभ जानव ॥

इति श्री वास्तु प्रदीप समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ सम्वत् १६३५ मास पौष पक्ष शुक्ल तिथि चौथि वा शुक्र दि समाप्त ॥ राम राम राम.........

विषय—ग्राम और गृह निर्माण के विषय मे शुभाशुभ फल वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सवत् १६३५ है । मूल रचना संस्कृत मे है जिसका प्रस्तुत गद्य अनुवाद है ।

सख्या ५६०ग वास्तु प्रदीप, कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—६$\frac{1}{10}$ × ४$\frac{5}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३२, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—१० रामनिधि शुक्ल, ग्राम–गोहर पश्चिम, पोस्ट–अधुवा, जिला–सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गृह प्रकरणम् ॥ वास्तु प्रदीप लिख्यते ॥
॥ तत्रादौ ग्राम मंत्र विचार ॥

अपनी जन्म की रासि ते जहि गाव कै रासि दूसरी ॥२॥ नवए ॥६॥ पचए ॥५॥ ऐगरहे ॥११॥ दसए ॥१०॥ होई तवन गाऊ सुभ जानव ॥ औ अपनी जन्म की रासि ते जेहि गाऊ कै रासि एक तिसरे ॥३॥ सतए ॥७॥ चौथे ॥४॥ तवन गाऊ मध्यम जानव ॥ अपनी जन्म की रासि ते ॥ जेहि गाऊ कै रासि छठए ॥६॥ अठए ॥८॥ वारहे ॥१२॥ होई तवन निषिद जानव ॥

अंत—जो एक वाणी तौ अर्थ कर नाम कहव ॥ औ अग्न कर वान पाताल विषे जानब ॥ औ जे केउ केऊ कृष्ण पछ को परिवा आदि दै कै जगेन ना करत है ते युक्ति नहीं नीक है ॥

:o: :o: :o:

तज्जातक संहिता गणित कृत मन्यो यह नू भु जातकी लंकृति वेद वाच्य विलस छुद्धि गंगिता मणि ॥

इति श्री मदं कल्यान्त सुत दैव्य राम मद विरचिते महूर्त चिंता मणौ ग्रह प्रवेस प्रकर्णम् तत. श्री वास्तु प्रदोप ग्रह प्रवेस विधानी भाषा धरयम राम पंडित कृत्र समाप्त शुभ मस्तु संवतु...

विषय—वास्तुविद्या का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण तो है पर रचनाकाल, लिपिकाल और अनुवादकर्ता आदि का पता नही। पुष्पिका मे "भाषा धस्यम राम पडित् क्रम" से पता चलता है कि कोई राम पडित अनुवादकर्ता हैं।

ग्रथ अवधी गद्य मे लिखा गया है।

सख्या ५६१ विक्रम बत्तीसी, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७३/१६ × ५३/१६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (ग्रथदाता—प० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट—बरदह, जिला—आजमगढ)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ विक्रम बतीसी पोथी ॥

॥ दोहा ॥

गुर गनपति सिव सारदा मागत हो कर जोरि।
मन क्रम वचन रामपद सदा सुमति मति मोरि॥
का जानी केहि मह भइ आई। एकहि आपु अनेक कहाई॥
जिनहि होइ परिचै की बानी। तेहि परगट तू सारगपानी॥
मुनि बैराग जोग ज(प) तप साधा। अपने पंथ काम हुप दाधा॥
जो षोजै तौ काहि न पावै। मन सुमिरत तेहि सहज देषावै॥
सहज कहै ग्यान की बाता। बिरस न रसै मन राता॥
जो मन अपने मो कल लाइव। माया मोह भ्रम ते नि छुटाइव॥

॥ दोहा ॥

पाव नै सबै भलपना कोटि माह जन कोइ।
का जानी सो कह बसै केहि सिर टीका होइ॥

मध्य—

उठि बनिआ हिय हर्ष करिः गौ राजा के पास।
माथ नयके विनयसिः गौ चरेगो प्रतिहास॥

स्वामी दरस राय सो पावो। चरन चूमि कर जोरि मनावो।
तब अस बचन कहै प्रतिहारा। अंतहपुर गे अहै भुआरा॥
तब बनिआ रोदन कै कहई। अति बड़ काम देव मो अहई॥
बरहै चौक उपर बैसारा। जाना सात समुद्र के पारा॥
काल्हि प्रात ब्याह की घरी। बड असक यह मो पह परी॥
गय प्रतिहार राय सो कहा। वाकी वात धर्म की आहा॥
—अपूर्ण

विषय—सस्कृत ग्रथ "विक्रम द्वात्रिंशति" का अनुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडितावस्था मे है। केवल ३ पत्रे सख्या ९, १० और ६१ के प्राप्त हैं। अतिम पत्रसख्या से पता चलता है कि ग्रथ काफी बड़ा था। रचनाकाल और लिपि-काल अज्ञात है। रचयिता का नाम भी विदित नही।

संख्या ५६२, विष्णु पुराण, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—८.६ × ५.६ इच,

पत्रि (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गनेसाए नमह श्री कावा बीश्न पुरान लीखते ॥ राम

बन्नो गनपति श्री गनेसा। जीन्ह मोहि बीद्या दीन्ह उपदेसा॥
जग्न पुरारी नोक तीन्हं दै श्रा। पुनी वदो देवी कर पंश्रा॥
सुखदा ऐक तुह असुर सवारी। सींघ वाहनी आदी कुमारी॥
तुश्र सुमीरन सुधी बुधी होती। अछर सप्त रहे तव मोही॥
वाक वादनी जालपा माइ। त्रीपुरारी सीध होहु सहाइ॥
ग्यान गर्व नीती जपी तोही। तुश्र चरन कहो होछा मोही॥

॥ दोहा ॥

ऐही नीसी चान मनावो देवी होहु सहाऐ।
जग्त जननी जग्त धारनी अछर आनी मेराऐ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

(पत्र ३)

गन गधर्व नहीं एको सुरनर मुनी नहीं देव।
प्रम जोती प्रमेस्वर जीन्ह खीजा सभकोए॥

:o: :o: :o:

(पत्र ६)

जनमेंजाए के व्यासदेव कहो सो सव समझाए।
वीग्रहप चौ जुग अवरो कहों समुझाइ॥
श्री वासुदेव वाचा॥

अंत—श्री वासुदेव वाचा

जव गेही कीन्ह कहहीं प्रवाना। तव उघो नीस्चे कै जाना॥
तुहइ श्रीजहु तुहइ मेटावहु। तुही जारहु तुहीं पलटावहु॥
तुही करना तुहीं धरना गोसाइ। अेसे चरीत्र तुह चलाइ॥
तुह अन मानो को अस कहइ। व्याधा होए वंकुंठ ही तरइ॥
मीठ सुकृती तुह मीर होइ। तुह अस चरीत्र करे नहीं पारा॥
तुही मारहु तुही तारनी हारा। तुम्ह वीन जग्त करे को पारा॥

॥ दोहा ॥

तुही तारहु तुही वोरहु तुही देहु कल्याम।
तुही पुनी नरक भुंगावहु तुही देहु कवीलास॥

इति श्री हरी चरीत्रे दसम सरंघे श्री भागवते वीश्नपुरान व्याधा वंकुंठनो नाम उघो संवाद नोमे नाम अध्याय ६॥ ६॥ इती श्री वीश्न पुरान सपुरन समापत।

विषय—दशावतार और भक्ति का वर्णन।
प्रथम अध्याय—दस अवतार वर्णन।
द्वितीय ,, —हरिश्चन्द्र-सत्य वर्णन।
तृतीय ,, —राम दुख-सुख वर्णन।
चतुर्थ ,, —पाडव वर्णन।
पचम ,, —चारो युगो का महत्व
षष्टम ,, —यदुवशी श्राप।
सप्तम ,, —यदुवशी श्राप।
अष्टम ,, —वसुदेव-देवकी वर्णन।
नवम ,, —व्याधा वैकुठ वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है। समस्त तैतीस पत्ने हैं। बीच का चौथा पत्रा लुप्त है। इस प्रकार समस्त बत्तीस पत्ने उपलब्ध हैं। ग्रथ पूर्ण होते हुए भी, रचयिता, रचनाकाल और लिपि-काल के विषय मे कोई पता नही चलता। ग्रथ प्राचीन प्रतीत होता है।

समस्त ग्रथ दोहे चौपाइयो मे लिखा गया है और नौ अध्यायो मे समाप्त है। प्रत्येक अध्याय का विषय पृथक् पृथक् है। भाषा अवधी है।

सख्या ५६३. विष्णु पुराण, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—७ ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८४, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, और कैथी मिश्रित, प्राप्तिस्थान, —काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—....................

उतरे शवं जो बांदर बीरा। रथ अनेग उतरे शव धीरा॥
जामवंत सुग्रीव भुआरा। राइ भभीछन दएन अपारा॥
हनोमान ओ अंगद कुमारा। अनंत जोधा गनं को पारा॥
नग्र नग्र कें महाबली बीरा। उतरं बीरा जो रन के धीरा॥
देषी कुटम तब राम हुलाशा। जानो इद्रपुरी देषा कवीलाशा॥

देषी कुटम हरषीत भं राम रहा नहीं जाइ।
गुरु वशीस्ट के चरनन्ह राम धरे लपटाइ॥

गुरु वशीस्ट शो आशीष पाइ। पाछे कं शाम दही शव भाइ॥
अथ चत्रगन पाव तर परई। राम उठाइ गहो अंग मो धरई॥
अथ चत्रगन शमदे श्रीराम। जानहु कोपीनी पाए नीज दाम॥
पीता की अग्या राम वन लीन्हा। इन्ह तजो राजा धरहो बन कीन्हा॥

हीदं हर्ष भं मीले तब नंन बंन बीलपाइ।
भाइ अथ मोरे है ओर न दुशर भाइ॥

भाइ शमदी पं तब कीन्हा। तौ पुपन्हे काह अशीष दीन्ह॥
जाहु स्वग देवन्ह के राजा। पुहमी नाहीन तुम्हरो काजा॥
तुम्ह प्रताप जो सुष भो मोहीं। अब मं आग्या देत हीं तोहीं॥
चले पुहुप जब आग्या पाई। पाव लागी कं चरन मानाई॥
पुहुपा चले देव अस्थान। पाछे कं शमदही पारधान॥

चले देव हर्षित भे गए शरग अस्थान ।
पाछे कं तव शमेदे वीरधीर प्रधान ॥

:o: :o: :o:

अंत—

कहै राजा शनहु रे भाइ । एकमाश रहु अव आइ ॥
एक माश तुम्ह चलो फीरी आवहु । तव पोलहु जो दरशन पावहु ॥
नोहचै पोलहु द्रशन होइ । हमरे कहा फरहु रे भाई ॥
इन्द्र द्रोन तवही कहु ग्याना । इन्ह पापीन्ह अव घालेउ प्राना ॥
मोरे ऐता न क्रम न होइ । अपनी पशी जो पोले कोइ ॥
तवहीन जोगीन्ह पोले केवारा । शवै देहु जग्रनाथ संवारा ॥
पाहुच नाही वीधाना मवारा । दोप परे जो जोगीन्ह केरा ॥

दोप भए जोगीन्ह काहा पाप पशीर अपार ।
देहु अर्पवर भगतन्ह वहा कीती चलै शंशार ॥

इति श्री वीश्न पुरान की काथा । आगे जै जै जादोश नाथा ॥
वीश्नपुरान शनै मनलाइ । वाढै ध्रम पाप छै जाइ ॥
जो फल गंगा अस्नान के कीन्हा । शो फल सुपेही भोजन दीन्हा ॥

आगे वीश्न पुरान की काथा शपुरन आगे जो देपा शो लीपा लीपनेहार का दोश न देना घटा वढा अक्षर जोरी के लेना हमके दोश न देना आगे जो देपा शो लीपा लीपारहा जग जगमेटी शकै न कोइ अगे जो पंडीत जाने पढे श्रो गने तेही पंडीत के प्रनाम कर जोरी आगे शंमत अठारह शंइ १८३८ शमै तम शमतसरे मीती कातीक वदो दुइजी के पोयी शंपूरन वार वीहफे के रोज पोयी संपूरन आगे शभ ॥

विषय—विष्णु पुराण के आधार पर रामचद्र के अयोध्या मे प्रत्यागमन से लेकर अश्वमेध यज्ञ तक एव यदुवंशियों के नष्ट होने तक की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नहीं । ग्रथ आदि, अत और बीच मे जहाँ तहाँ खंडित है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है । ग्रथ की भाषा प्राचीन जान पडती है । प्रति कैथी लिपि मे लिखी होने के कारण शुद्धाशुद्ध का कोई ध्यान नही रखा गया है । विवरणपत्र मे जहाँ तक हो सका शुद्ध करके लिखा गया है । यदि मूल के अनुसार ही लिखा जाता तो उसका आशय समझना ही कठिन हो जाता ।

संख्या ५६४ विष्णु पुरान (गोपाल चरित्र), कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—७ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३४ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणीसभा, वाराणसी । (ग्रथदाता—प० स्वामीनाथ दुबे ग्राम—दुबौली, पोस्ट—गुखुदू, जिला—गोरखपुर) ।

आदि—श्री गनेशायनमः ॥ श्री पोयी बिस्नपुरान ॥

॥ चौपाई ॥

बरनो गुरगोविंद गनेसा । बरनो ब्रह्मा वीस्न महेसा ॥
बरनो देव नैसीमो कोरी । साधु संत सो वीनती मोरी ॥
बरनो बाल्मीक श्रो व्यासा । जाको कीरती जग प्रगासा ॥
संसदिन जीन्ह कीन्ह प्रगासा । ताको छाया जीन्ह मन आसा ॥

॥ दोहा ॥

चारो जग की महीमा श्रो पुनो दस श्रवतार ।
जेही जूगमे जस वीता सो सभ सुनो मुश्रार ॥

॥ चौपाई ॥

कथा एक रीषी कहा वुझाई । सुनत ही सकल पाप छं जाइ ॥
कैसे सतजुग त्रेता भैउ । कैसे कलजुग द्वापर भैउ ॥
कैसे दसो जन्म श्रवतारा । कैसे महि कर भार उतारा ॥
कैसे सीरीजा सकल ससारा । कैसे पवन पानी श्रनुसारा ॥
कैसे कलीजुग की पैसारी । काहा गए दहू देव मुरारी ॥
सो मोही रीषे कहो समुझाई । काहा गए कवरो स्वभाई ॥

:o: :o: :o;

श्रंत—

इंद्रदवन श्रसतुती श्रनुसारी । जै जै जग्रनाथ जगतारा ॥
नवतन श्रंग चढे प्रभु भोगा । लेही प्रसाद देव मुनी लोगा ॥
भात कै भर्म करै जो कोइ । भर्म करै कुष्टी सो होई ॥
ब्राह्मन सुद्र खाही एक साथा । एकाकार कीन्ह जग्रनाथा ॥

॥ दोहा ॥

श्रलख नीरंजन करता सोइ वउध श्रवतार ।
जीन्ह जीन्ह द्रसन पावल से से उतरल पार ॥

इति श्री हरि चरित्रं दसम स्कधे विसनपुर्न (? विष्ण पुराण) जगनाथ श्रोतार वरननो नाम षष्टमो श्रध्या दसम सकंधमे ॥ सपुरन समत १६३४ समे नाम कार्ति मासे सूक्ल पक्षे ॥८॥ लीखा लाल जीवलाल ग्राम नाम राउतपार श्रमेठी श्रातये डोड प्रगने सलेमपुर मझवली जीले गोरखपुर ॥ पंडीत जन सो मीनती मोर टटल श्रक्षर वाचव जोरी जो देखा सो लीखा मम दोष न दीजीयो राधाकृष्ण गोपाल श्रीधारी बनवारी ॥

विषय—भगवान् के दशावतारो की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ रामकृष्ण कृत 'लक्ष्मीचरित्र' के साथ एक हस्तलेख मे है । रचनाकाल नही दिया है । लिपिकाल सवत् १६३४ है ।

रचयिता का नाम श्रज्ञात है । रचना पौराणिक है श्रौर कथा वार्ता की दृष्टि से लिखी जान पडती है ।

संख्या ५६५. वासन सहार (? वेसन सिघार), कागज—देशी, पत्र—१३, श्राकार—५¾ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (श्रनुष्टुप्)—९३, श्रपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५६, प्राप्तिस्थान—श्रार्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा ।

श्रादि—...गणेशाय नम ॥ श्र...वेसन सिघार लिष्य......

॥ दोहा ॥

ॐ उनमुन नेजा फरहरै श्रनहद घुरै निसाण ।
सही भोमीयां ऊपरै चढ़ीया सबद दिवाण ॥ १ ॥

नाव नृपति की फौज का कोटा करं वपाण ।
एक एक सू आगला जी... .....वाण॥२॥

:o: :o: :o:

नाची कला ज ग्यान की जग जुथीयां जस लाभ ।
नाव नृपति परताप में परतां भेरयो आप॥६॥

मध्य—

जाइ सतोष झपटीयां क्रोध ऊपरै पग्ग ।
क्म......कंध तजि दृष्टि गयो पग्ग॥४६॥
मैं वाल्यां की फौज कौं भला दिपाया हथ्थ ।
सबहीनि हांला ऊनरचा नाव. . . . ॥

विषय—लोभ और मोह के साथ शांति, संतोष, ज्ञान और विवेक की लड़ाई का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । रचनाकाल अप्राप्त है । लिपिकाल भाषाभूषणके आधार पर सं० १८५६ है । दोनों ग्रंथ एक हस्तलेख में है । रचयिता का नाम अज्ञात है ।

रचना आध्यात्मिक ढंग की है । ग्रंथ के अक्षरों की स्याही उखड़ गई है जिनसे वे पढ़ने में नहीं आते ।

ग्रंथ कुछ अन्य ग्रंथों के साथ एक ही हस्तलेख में है । अन्य ग्रंथ ये हैं —

१ भाषाभूषण—जसवंत सिंह कृत
२ विरह अंग—वाजिद कृत
३. प्रेम पच्चीसी—सोमनाथ कृत

संख्या ५६६. शृंगार तिलक, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२४, पूर्ण, रूप—पुराना; पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णदेव पांडेय, ग्राम-गूजरपार, पोस्ट-मुबारकपुर, जिला-आजमगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

वाहू द्वौ च मृणालमस्य कमलं लावण्य लीला जलं,
श्रोणी तीर्थ शिला च नेत्र शफर धम्मिल्ल शैवालकम् ॥
कान्ताया स्तन चक्रवाक युगल कंदर्प बाणानलै-
र्दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्य सरो निर्म्मितम् ॥ १ ॥
वाहुमृणाल सरोज सो आनन वारि बनो तन सुंदरताई ।
श्रोणी शिला तट घाट रची सफरी दृग शैवल केश सोहाई ।
कामिनि को कुच कोक दोऊ विधि ने रचि रम्य तड़ाग बनाई ।
काम शरानल दाह हरे अवगाहत कै जन को सुखदाई ॥ १ ॥

अंत—

एतत्पयोधरयुगं पतितं निरीक्ष्य खेदं वृथा वहसि किं हरिणायताक्षि ।
स्तब्धो विवेकरहितो जनतापकारी यस्योन्नत. प्रपततीति किमत्र चित्रम् ॥२४॥
देषि उरोज नतानन मानिनि दोउ वृथा जिय होहु दुपारी ।
तू चतुरा गुण रूप उजागरि नागरि शील सुभाग ते भारी ।
ताघ उतुङ्ग विवेक विवर्जित जो जन है पर को अपकारी ।
सोप्रय को पतवेइ करें यह चित्र कहा हिय देषु विचारी ॥२४॥

कस्तूरी को तिलक सखि ना कुरु कवहीं भाल ।
समुझि साङ्ग हरिणाङ्क हिय ग्रसिहै राहु कराल ॥२५॥
इति श्री कालिदास कृत शृङ्गार तिलक समाप्तम् ॥ सम्वत् ॥ १८६० ॥

विषय—कालिदास कृत शृंगार विषयक पच्चीस श्लोकों का हिंदी पद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल संवत् १८६० है ।

मूल रचना संस्कृत मे है और महाकवि कालिदास कृत है । हिंदी पद्यानुवादकर्ता का पता नही चलता । अनुवाद सरस हुआ है जिससे अनुवादकर्ता प्रौढ कवि जान पड़ता है ।

संख्या ५६७ श्री गोवर्धनधर को वर्ष भर को शृंगार (स० १८५७ वैशाख मे प्रारम्भ), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६।×५।।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१६, अपूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५७, लिपिकाल—स० १८५८, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६१, पु० स० ३ ।

आदि—॥श्री कृष्णाय नमः॥ श्री गोवर्द्धन धर को शृंगार । वैशाख वदि ११ गुरुवार संवत् १८५७ श्री आचार्य जी महाप्रभु जी को उत्सव सिंगारी श्री गिरिधारी जी म..... । कुल्हे-वागा सूथन पिछवाई केसरी । वागा चाकदार । ठाढे वस्त्र सुपेद बूटेदार । चौखटा मोती को आभूषण हीरा पना मानिक मोती को भारी सिंगार जोड ते हरी ।

मध्य—पृ० १५

१ मंगल अन्नकूट । काल्ह के शृगार तें गोकर्ण पीतावर अधिक धरे । २ बुधवार भाई दौज श्रीगिरिधारी जी अभ्यग । चीरा सुनहरी, वागा सूथन लाल कीमखाप को वागा घेरदार ठाढे वस्त्र सुपेद । पिछवाई गोवर्द्धन उपर वरखा नीचे नंद जसोदा व्रज भक्त गायगोप आभूषण हीरा पना मानिक मोती ।

अंत—५ गुरु श्री वल्लभ जी पाग पिछोडा पिछवाई लाखी रग लाल ठाढे वस्त्र सुपेद आभूषन हीरा पना मानिक मोती के । ६ शुक्र श्री विट्ठलराय जी श्री गोविंदराय जी के लाल मोती के सेहरा पिछोडा उपरना नींबुवा ठाढे वस्त्र सुपेद पिछवाई गाय ग्वाल की । आभूषण हीरा पना मानिक मोती ।

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा मे श्री गोवर्द्धनधर, श्रीनाथ जी के वर्ष भर के उत्सवों और साधारण दिनो मे होने वाले शृंगारो का नित्य क्रम वर्णित है ।

संख्या ५६८, सगीत ग्रथ, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—७×४३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५२, अपूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६४ वि०, लिपिकाल—स० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रंथदाता—प० कृष्णसेवक मिश्र, ग्राम—महनूदीह पो०—[illegible], जिला—आजमगढ) ।

आदि—. . . . . .से मिला है शकराभरण केदार विलावल से मिला है मलार सिंधुला असावरी गौरी देवगौरी भैरो से मिला है पहरीदरत दूर्वा श्री श्याम गौरी से मिला है पटमंजरी मारू धवला धनाश्री खंभारी से मिला है देव साख्य संकराभरण श्री शुद्ध मल्लार [illegible] से मिला है विलावली विलावल गौर सारंग से मिला है कामोदी सौराष्ट्र गौरी से मिला है मान-दहन मलार केदारा सुहो से मिला है अभीरी कल्याण दीसकार गूजरी श्याम से मिला है देशी पट

राग से मिला है देवगिरी पूर्वी सारंग शुद्ध से मिला है कोलाहल विहाग राग कल्याण कांधरा से मिला है कुकवी विलावल पूर्वी केदारा देवगिरि माधो से मिला है देवाली पंभारी मालश्री सरस्वती से मिलता है गूजरी ललिता रामकली से मिला है मगल गूजरी रामकली श्यामगंधार मंगलाष्टक से मिला है तरुण दीसकार गौरी पूर्व्वी से मिला है वाजे पूर्वा के जगह ललित कहत है बाजे विभास कहत हैं श्रीराग विधमदक गौरी से मिला है केदारा कुकर्वी पूर्वा विलावल से मिला है ।

अंत—बाबा रामदास वैरागी मीरजा जलालुदी अकवर पातसाह के वपत मे थे मुसकी के विद्या मे बडा दक्ष थे गो सूरदास बाबा रामदास के वेटवा ध्रुवपद पिश्रावल विष्णु पद बहुत वनाया है बाज वहादुर मालवा का गावने मे बडा दक्ष था सूरज पा चाँद पा दुई भाई मुसकी के विद्या में बडा दक्ष थे । अकवर साहु की संहति मे रहते थे श्रोह की अवलादि नवहार की जाति है नववात पाँव वीन वजावने मे दक्ष था अकवर पादसाह के वपत मे उसके वरावर कोई न था उसकी अवलाद पटारे की जाति है तानसेन कलावंत राजाराम वघेले का दोस्त था ध्रुवपद गावने मो मुसकी के विद्या मे वडे दक्ष थे कहु रागिनों वनाइके अकवर पादसाह किहा आए अकवर पादसाह वड़ा मनमान करिके रापा ।

:o: :o: :o:

पलाम पा तानसेनि के वेटे है तिसके दमाद लाला पां गावने मे वडे दक्ष थे श्रौन्हु का जाति डाकुअर है अवके श्रोमतादो के कम लिपा यद्यपि ससार श्रोसताद से खाली न है पै हम अपने बुद्धि माफीक इस जमाने श्रोमतादो का नाम जानते थे सो लिखा ।। सपूर्णम् सं० १८९४ कातिक सुदी २ मंगलवार ।।

विषय—संगीत विद्या और संगीताचार्यों का वर्णन । विषय इस प्रकार है —

१ रागों का वर्णन ।
२ वाद्य यंत्रों का वर्णन ।
३ ताल का वर्णन ।
४ छंद प्रबंधों का वर्णन ।
५ प्राचीन और नवीन संगीत आचार्यों (संगीताचार्यों) के नाम ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख अपूर्ण है । आरंभ के ६ पन्ने लुप्त है । रचनाकाल और लिपिकाल एक ही संवत् १८९४ जान पड़ता है ।

रचयिता का नाम अज्ञात है । ग्रंथ खड़ी बोली गद्य मे है जिसमे फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है । पर विषय और भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है । इसमे सबसे महत्वपूर्ण अंश संगीताचार्यों के नामों का वर्णन है । उनसे उस्तादों के नाम और आश्रयदाता, महाराजाओं एवं बादशाहो के संबंध मे बहुत कुछ ज्ञात होता है । जिन आचार्यों के नाम दिए है, वे इस प्रकार है :—

प्राचीन आचार्य

गंभीर, भरथ, हनुमान, नारद, कल्लनाथ, रावण, अर्जुन, पार्वती, सरस्वती, दुर्गा ।

मध्यकाल

१ अमीर खुसरो (दिल्ली) ।
२. नायक गोपाल (खुसरो के समय में) ।
३ नहस्र नानियन ।
४ सुलतान हुसैन सरकी (पातशाह जवनपुर) ।
५ नायक बैजू (सुलतान बहादुर गुजरात के आश्रित) ।

६. राजा मान (ग्वालियर)।
७. नायक वकसु (राजा मान के आश्रित)।
८ वावा रामदास वैरागी (अकवर के समय मे)।
९ सूरदास (रामदास वैरागी के पुत्र)।
१० वाज वहादुर (मालवा)।
११ सूरज खाँ (अकवर के यहाँ रहते थे)।
१२ चाँद खाँ
१३ नववात खाँ (अकवर के यहाँ रहते थे)।
१४ तानसेन (अकवर के आश्रित। राजाराम वघेले का दोस्त)।
१५ पलास खा (तानसेन के पुत्र)
१६ सुरत सेनि
१७ तानतरग खाँ
१८ चोर सेनि
१९ सुजान खाँ (तानसेन के सगी)।
२० नायक हरजू (ग्वालियर)
२१ सरकी आन खाँ ,,
२२ मदन राय ,,
२३. मया चद ,,
२४ नायक घुघु (,, तथा तानसेन के समय के थे)।
२५ लवल प्रकास
२६ लाल खाँ (पलास खाँ के दामाद)।

इनके विषय मे केवल इतना ही दिया है कि ये कहाँ के रहनेवाले थे। और किन किन के आश्रित थे।

ग्रथ सभा के लिये प्राप्त हो गया है।

संख्या ५६६. सप्त वध्या लक्षण, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६७/८ × ४२/८ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१६, प्राप्तिस्थान—प० भोलानाथ (भोरेलाल) ज्योतिषी, ग्राम व डाकघर—धाता, जिला—फतेहपुर।

आदि—श्री गणेशाये नमः ॥ अथ सप्त वध्या लक्षण प्रयोजन ॥ युवती को सप्त दोषो भवतिः इन्ह दोष सो पुत्र नहि होई। अथ प्रथम श्वेत वंध्या। इस्त्रि को ऋतु देत। इस्त्रि को माथा दुखै तब जानीये कमल फीरा है। ताते बीर्ज नहि राहे। तव औषध वनौदा कास्टदा मुरगी का पित्ता मिलाइ तैलुगे होइः तव योनि भीतर औषधि लगावै। जे दिन तव ऋतु देइ पुत्र होइ।

मध्य—

इदं पोस्तकं लिषितं गोरीधरी परसद जोतकी। सप्त वंध्या लक्षान समपत। जेट मने कृष्न पक्षे तिथौ नउम्यं वृहसपत वसरे संवत् १९१६। सके १७८१।

जंत्र ज्ञान

४	८	२	८	४	८	०
९	५	२	४	११	२	०
४	४	५	३	९	२	०

अंत--श्री गणेशाय नम. श्री गुरुवे नम.

गहरत्र मत्र उत्कीलान. मंत्र जमे रोज उतर मुष करिके पुजा करके घिउ गुर सेहोम करिये गोजा निम्गल जयिता पचास अशरफी देइ मवेन करत विस्न रामा देइ ॥ मंत्र हीर ति प्रियो स्वाहा हजार मा जुन रोज क जाप संख्या ॥ ३०००

विषय--गुप्त वध्या लक्षण और औषधी तथा यत्रो का वर्णन।

संख्या ५७०. साठा, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, खंडित, रूप--पुराना, गद्य ,लिपि---नागरी, लिपिकाल—स० १८८६, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (ग्रथदाता—प० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्त–बरदह, जिला–आजमगढ)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ साठा लिष्यते ॥

॥ स्तरंगनाम संवत्सरे फलं ॥

ननो दुर्भिक्ष होइ। चैत्र वैशाष मध्यम होय। ज्येष्ठ आषाढ महर्घो। श्रावन मेघ अल्प। भादो मधिम। आश्विन अमावस्या की वर्षा। कार्तिक मे उत्तरषड टीडी आवै हाट पटन उदास होइ। अति वाउ वाजे। उत्तर षंड मध्ये पठान उपद्रो होइ। गुजरात मध्ये राज उत्पात होइ। अन्न फर्क मास ३ माघ फाल्गुण कष्ट ॥

अंत—॥ इति प्रभव नाम संमतफलं ॥ ५६ ॥

समो गजल निपजै रोगपीडा घनो रुउ मुंड होइ चैत्र मरी वैसाष वाउ वाजै आषाढ वर्षा श्राव फर्क अन्न महर्गो गर्व दीर्प होइ मार्गशीर्ष पौष कष्ट चंवल देस होइ सुपार्थो सवे नृपा मलेक्ष पुरीउ दंगल होइ माघ फालगन वर्षा याडी वाजै ॥ इति वो प्रभव नाम संवत्फलं ॥ ६० ॥

इति विरुण् वीमी इति साठा संपूर्णम् संवत १८८६ चैत्र मासे १३।

विषय—साठ सवत्सरों का फल वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ गद्य मे है जिसकी भाषा पश्चिमी हिंदी (खडी बोली) है।

संख्या ५७१ नाति पनली, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—६६, आकार—७$\frac{3}{10}$ × ५$\frac{3}{5}$ इच पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सवत् १९३८, सन् १८८१, प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश जी दुबे, ग्राम–गजहा, पोस्ट–मुबारकपुर, जिला–आजमगढ।

आदि—श्री गनेस जी सहाए नम। श्री सरसती जी सहाए नम। श्री हनोमान जी सहाए नम। श्री पोथी नीतपतल लीषते ॥

॥ चौउपइ ॥

प्रथमे सुमीरी श्री गोपाल। जन्ह हमार कीन्ह प्रतीपाल॥
सुमीरे केसरा आदि अनंत तोही। तीसरे दूसरे अवर नही सोही॥
सुमीरे सुरसती सत्रीत दानी। जीन्ह एह काञ्या ही नही मन जानी॥
सुमीरे गौडरी अवरो महेस। जेही सुमीरे ग्यान होए प्रगस॥
सुमीरे ब्रह्मा दुइ कर जोरी। जेही सुमीरे पाप होए दूरी॥
सुमीरे नंदरवेब त्रीपुरारी। जेही सुमीरत गती होए हमारी॥

:o: :o: :o:

तव पुनी सुमीरो सीता माई । छाडे अवध पाताल ही जाई ॥
बन से राम सीता लेइ आये । अवध नगर मे आनी पहुचाये ॥

अंत—

छाआनगर जोर तरुआरा । रहे संतोष मोर पीआरा ॥
तर गएउ एही कर नाउ । परउ आइ मात के पाउ ॥
सीत के वात सुने मन लाइ । सो प्रानी वैकुंठही जाइ ॥
लछमन राम सीत एक ठाइ । सभ लोगन्ह के पातप जाइ ॥
जो नर सुने मन लाई । वढ़े धरम पाप छंए जाइ ॥

इति श्री पोथी संपुरन भएल जो पतर देषा सो लीषा मम दोस न दीजे पडीत जन ते मीनती टुट अंछों लेव सभ जोरी ॥ सन् १८८१ महीन कुआर वदी चउदस वार वीफे मोकाम समल के वहर ॥

विषय—सीता के कलक की कथा का वर्णन ।

कथा मे विशेप वात यह है कि केकई द्वारा सीता पर कलक लगाया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नही दिया है । लिपिकाल सवत् १६३८ है । रचना साधारण कोटि की है । यह रचना तुलसीदास कृत 'राम जन्म' के साथ एक हस्तलेख मे है । ग्रथ के नाम मे अशुद्धि जान पडती है ।

संख्या ५७२. सीता चरित्र, कागज—देशी, पत्र—५३, आकार—८ × ६½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८३, खडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—................ ॥

केकई के मन कोछुवो न भावा ॥
दछीना दान सव कहुं लै दीन्हा ।
बहुती भाति कर आदर कीन्हा ॥
भगत जन कै दालीदार तोरा ।
आपन कुल परिवार वटोरा ॥
॥ दोहा ॥
साथ विप्र औ मंत्री पाएक औ परधान ।
केकइ के चरन वंदी के पार वइठी देहु दान ॥

अंत—

जोरी पानी तव कहे हनुमाना ।
एक वचन पायों भगवाना ॥
कहो तो काल ही सायर वोरो ।
हार पाजर जंम्हकातर तोरो ॥
सीता कहा फहु इइ फारा ।
करी दरवाजा रंच संचारा ॥
॥ दोहा ॥
जैसा श्रीपति भाषहु तैसा करों मैं काम ।
कोटीन्ह काल बोधंसव करों राम के कांम ॥

॥ चौपाई ॥

पवनसुत सुनहु हनुमंता ।
मूल उपारि के फेकु तुरता ॥
हनुमत सुनत काम कस कीन्हा ।
वजर के काग्रा सीर प्र दीन्हा ॥
चहु दीस फुटीगै अरगाइ ।
मही मीलीगै पाताल चली जाइ ॥
—अपूर्ण

विषय—आध्यात्मिक रूपक बाँधकर सीता की कथा का वर्णन किया गया है । रचना सत मत की दृष्टि से लिखी गई जान पड़ती है । कथा का सार इस प्रकार है :—

दूसरे वनवास से सीता के वापस आ जाने पर अयोध्या में बड़ा उत्सव मनाया गया । कैकई को यह अच्छा न लगा । उसने राम से कहा कि सीता से पूछा जाय कि कुश किसका पुत्र है । राम ने इस विषय में कैकई को ऋषियों से पूछने के लिये कहा । पर बात सीता तक जा पहुँची । उन्हें इस कलंक से अत्यंत ग्लानि हुई और पृथ्वी से फट जाने के लिये प्रार्थना की जिससे वह उसमें समा जाय । पृथ्वी फटी और सीता उसमें समा गई । अयोध्या में फिर हाहाकार मच गया । सारा रनिवास रो उठा । राम सीता की वियोगाग्नि में फिर तड़पने लगे । एक दिन उन्होंने स्वप्न देखा कि सीता समुद्र की लहरों में बही जा रही है । बड़े-बड़े जलजंतु चारों ओर से उसकी रक्षा कर रहे हैं । कुछ दिन पश्चात् वह किनारे लगी और आश्रय पाने की इच्छा से इधर उधर घूमती हुई एक फुलवारी में जा पहुँची जहाँ उसकी भेंट मालिन से हुई । सीता का नाम सुनकर मालिन को ज्ञान प्राप्त हुआ और उसने अत्यंत भक्तिभाव से उसका सत्कार किया । पूछने पर सीता को ज्ञात हुआ कि वहाँ के राजा का नाम हंस और रानी का नाम हंसिनी है । उसने मालिन से कहा कि वह राजा के पास जाकर उसके लिये थोड़ी सी भूमि माँगे जिससे वह अपना निवास-स्थान बना सके । मालिन राजा के पास गई और उनसे सीता का संदेशा कहा । सीता का नाम सुनकर राजा को पूर्व जन्म का ज्ञान प्राप्त हुआ । उसने अपनी रानी से भी वृत्तांत कहा जिसको सुनकर उसे भी ज्ञान प्राप्त हुआ । राजारानी, दोनों कुटुंब परिवार तथा मंत्रियों सहित सीता से मिले और भक्तिपूर्वक आतिथ्य सत्कार कर उसे अपनी पुत्री के यहाँ टिकाया । सीता ने हंसिनी से अपना जन्म वृत्तांत इस प्रकार कहा :—

एक पर्वत के ऊपर मेरा स्थान है । वहाँ एक ऋषिराज तपस्या करते हैं । दूध और फल के अतिरिक्त उनका कोई भोजन नहीं । एक दिन उनके दूध में एक सर्प जा घुसा । यह देखकर एक सेवनी उसके ऊपर तैरने लगी । थोड़ी देर पश्चात् वह मर गई । जब ऋषि तपस्या से उठे और उन्होंने दूध पीने को सोचा तो देखने पर दूध पीने योग्य न निकला । ऋषि ने दूध को दूब से ऊपर छिड़कवाया जिससे दूब जल गई और एक भुजंग दूध में से निकला । ऋषि ने सेवनी को जीवन दान दिया जिससे वह एक रूपवान कन्या हो गई । उसका नाम मंदोदरी पड़ा । कन्या ऋषि के यहाँ रहने लगी । एक दिन ऋषि को कुछ विकार उत्पन्न हुआ जिससे उनका वीर्य स्खलित हुआ । उन्होंने धोती मंदोदरी को धोने के लिये दे दी । वीर्य के दाग निकलते न देख मंदोदरी ने उसे दाँतों से छुड़ाया । परन्तु यह कार्य करने से कुछ वीर्य उसके पेट में चला गया जिससे उसको गर्भ रह गया । ऋषि को जब यह ज्ञान हुआ तो उन्होंने रावण से उसका विवाह कर दिया । मंदोदरी को ऋषि ने एक मंत्र भी बतलाया जिससे रावण की गर्जना करने पर जब उसका गर्भपात हो तो वह भूमि में समा जाय और कोई उसका पता न पा सके । पश्चात् ऐसा ही हुआ । वह गर्भ भूमि में अंदर समा गया और उससे मेरा जन्म हुआ । कुछ समयोपरान्त राजा जनक के हाथ लगी ।

और सीता नाम से विख्यात हुई। आगे की कथा प्रसिद्ध ही है। मैं जन्म दुखिनी हूँ। मुझे कभी भी सुख से बैठने को नही मिला।

यह स्वप्न देखकर राम रोने लगे। उन्हे इसका निश्चय हुआ कि सीता जनकपुर मे है। वे तपस्वियो का रूप धारण कर लक्ष्मण के साथ जनकपुर गए। जनकपुर मे लक्ष्मण की स्त्री ने लक्ष्मण को क्रोध के कारण मरवा दिया और राम को उनके हत्यारे के रूप मे वन मे ले जाकर मरवाने का आदेश दिया। परन्तु राम किसी प्रकार बच गए। लक्ष्मण का वियोग उन्हे सीता से भी अधिक असह्य हुआ। स्मरण करने पर हनुमान उनके पास गए, जिससे उनके चित्त को कुछ शांति मिली। गोदावरी तट पर लक्ष्मण का दाह संस्कार किया गया। जो हड्डिया बची उनकी माला बनाकर राम ने गले मे धारण कर ली। हनुमान ने पाताल मे जाकर सीता की खोज की और राम को उसे मिलाया। सीता ने अपने सतीत्व के बल पर लक्ष्मण को जीवित किया। जिससे सब आनंदित हुए। राजा हंस और रानी हंसिनी राम से मिले जिससे उनको मनोवाछित अलौकिक शांति प्राप्त हुई। सारा राज्य राम का भक्त हो गया। हंस ने अपनी कन्या चंद्रज्योति का विवाह लक्ष्मण से कर दिया। राम कुछ दिन हंस के राज्य मे रहकर पश्चात् सीता, हनुमान, लक्ष्मण, चंद्रज्योति के साथ अयोध्या को चल गए। मार्ग मे महाकाल से भेंट हुई। उनके पश्चात् ग्रंथ खंडित है, परन्तु अनुमान से जान पडता है कि महाकाल को भी हनुमान के सामने हार माननी पडी होगी और राम सकुशल अयोध्या लौटे होंगे।

कथा को पढने से पता चलता है कि हंस जीवात्मा है, सीता ब्रह्म विद्या और हनुमान शक्ति तथा राम साक्षात् ईश्वर। लक्ष्मण ईश्वर का पुत्र विरक्त जीव है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आदि और अंत मे खंडित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के नाम का भी कोई पता नही मिलता। रचना सत मत से संबंध रखती है। इसकी भाषा पूर्वी अवधी है, जिसमे भोजपुरी के शब्द भी मिश्रित हैं —

'दुखल भयल तोहरो पया।"
"तब सीता अस ठानल ग्याना।"

ग्रंथ के आदि मे ५ और अंत मे ५६ के पश्चात् के पत्रे नही है।

संख्या ५७३. सुदामा चरित्र, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१५.७ × ६.२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री गणेशधर दुबे, ग्राम–बोरपुर, पोस्ट–हडिया, जिला–शाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नम.॥ अथ सुदामा की भजन लिखता॥
अस कहत सुदामा की नारि दीन के बधु हरे॥टेक॥
हे स्वामी निसी वासर गये बीति कहा देवस गवाये।
मन मलीन तन छीन सदा दालिद्र छावै॥
दुख की राज भुजते बीति गये पन चारि सुख कबहु न पाया॥ १॥
त्रीया दुचारी नारि स्वारथ आपन पै जानी।
जो पतिब्रता होहु सोच जिय काहे आनी॥
दान पुन्य कीन्हों नही आपन दोहा पै होये।
सुख परारा देखि कै त्रीया काहे मरो तुम रोये॥ २॥
हे स्वामी बीनु धन धर्म न होइ बेद बीनु जग ब्यचारा।
सजन कुटुंम परिवार बीना धन कस बेवहारा॥

वीनु धन धीरज न रहे वीनु धीरज सत जाये ।
काहे न कत पग धारो हरि से कहाँ बनाये ॥ ३ ॥

अंत—

जबै त्रीया हसी कही ठगौरी तुम्ह कछु पाये ।
भुले भवना सोच फिरी फा बदन छपाये ॥
अपने भवन पग डारहु भुजहु अचल सुयराजि ।
उठि कै देषी भवन आपना कृपा कीन जदुनाथ ॥२४॥

इति पूर्ण ॥

विषय—सुदामा की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नहीं है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है । रचना साहित्यिक है ।

संख्या ५७४. सुलोचना सत, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, खंडित, रूप—पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—पं० राम अनंद जी तिवारी, ग्राम—दरवेशपुर, डाकघर—भरवारी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गनेसए नमः ....॥

मेघनाद लछमन वड जोध । भीरे प्रसपर करी अती क्रोध ॥
मेघनाद अगन भुज परेउ । वन वेधी सोनीत सो भरेउ ॥
महीपती भुज परे तेही भती । मनहु सकल सुर तरु करती ॥
हेम सोहामन सोभीत वल । सेवही अती वीध्येगमल ॥
प्रेम सुमउ धुकधुकी धकी । सुभग अलुभ दहीने भुज फरकी ॥
सुनत सषीन के मुष के वंन । तजीं सींघासन उठी सोतेन ॥
महो मन कंकन भुषन सोइ । मह वीटक समनन होइ ॥
होन महनी खन हीरा महीं । वीरी धुरी मोर पीउ तमही ॥

अंत—

सुत वधु जरी सनही जवही । मुरछति नरीप धनी पर तवहीं ॥
हसत सवती अ।ये करी । कै वील पद सकच पुचरी ॥
मुनी पुलस्तीक भ कुल नम । रवी ससी अइ कहु प्रगसा ॥
छुटी हैइ वंदी सुन गन केरी । नीजु नीजु पुरन दोहइ फेरी ॥
गगन सलील नीरमल जल आजु । मुवम वसी ही.......
सती सुलोचन जरी कय के साय । जुकी प्रगम कीन्ही दममाय ॥

एती सोलोचन मत समपती सुभमस्तु ॥

विषय—मेघनाद वध तथा सुलोचना का सती होना ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । केवल तीन पत्रे उपलब्ध हैं । रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नहीं ।

रचयिता का नाम भी अज्ञात है । लिपि कैथी है जो अत्यंत भ्रष्ट है । रचना प्राचीन ज्ञात होती है ।

संख्या ५७५. गर्भोपदेश, निवेदन विचार, कागज—मावीपुरी, पत्र—४, आकार—५ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५, पूर्ण, रूप—पुराना,

गर्थ; पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४४, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हिं० व० २०, पु० सं० ५।

आदि—गोकुलेश भजनाधिकार रूपत्वात् ॥ यथा द्विजस्य वैदिक कर्मणि गायत्र्युपदेशज संस्कारवत् ॥ यातें निवेदन आवश्यक हे। यातें जो अंशावतार के भजन में तो सबको अधिकार हे। तहा वचन। सर्वेधिकारिणो ह्यत्र विष्णु भक्तौ नराधिप। तहा श्री भागवत मे कहे हे जो। देवोसुरो मनुष्यो वा यक्षो गंधर्व एव च। अभजन्मुकुंदचरणं स्वस्तिमान् स्याद्यथा वयं ॥१॥ इत्यादि वाक्यतं ॥ परंतु पूर्ण पुरुषोत्तम के भजन मे तो निवेदन मंत्र पाछें ही सेवा को अधिकार हे।

मध्य—एसे ही नवधा मे जानिये। चेतन्मत्प्रवणं सेवा यह आत्म निवेदनं ॥ स्वस्मिन् ज्ञानी प्रपश्यती ॥ यह आत्मनिवेदन संबंधी दर्शन। कृष्णमेव विचिंतयेत् ॥ यह विचिंतन रूप आत्म निवेदनांग प्रेम ॥ यातें पहिले दोय मंत्र अवश्य अपेक्षित हे। शरण मंत्र तें हूं हृदय शुद्ध भयो। तथा श्रवण तें प्रारंभ दास्य पर्यंत ॥७॥ भक्ति भई ॥

अंत—तहा सेवा दोय प्रकार की। नित्यकृत्। तथा उत्सव कृत्य। ये दोऊ लिखे हें ता प्रकार सेवा करनो। न करिये तो भक्तिमार्गीय प्रत्यवाय होय। और लीला रस की प्राप्ति न होय। यह दुर्लभ पदार्थ अवश्य करनो। और अंगीकार भगवान किये जब जानिये जो अन्याश्रय तथा असमर्पित छूटि जाय। मार्ग मे रुचि होय। कलिकाल हे बहकावन हार बोहत हें। तातें काहू के कहें बहकिये नहीं। या प्रकार तें दृढता राखिये सदा सर्वदा या प्रकार की श्री मदाचार्य जी त० श्री गुसांई जो की आग्या हें ॥ इती ग्रंथ संपूर्ण संवत १८४४ श्रावण वदी ५ तापीपुर में लिख्यो हे।

विषय—श्री शुद्धाद्वैत पुष्टि सम्प्रदाय के सेवा विषय, भक्ति विषय, निवेदन मंत्र विचार आदि सप्रमाण लिखे गए है।

संख्या ५७६. सनेह सागर चतुर्थ तरंग, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—११$\frac{६}{६}$ × ४$\frac{३}{६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १६३५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत गणेशधर दुबे, ग्राम—बीरपुर, डाकघर—हंडिया, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सनेह सागर चतुर्थ तरंग राधा जी को बियाह ॥

जिहि दिन ते देखे भरि अंखियन्ह राधा कुवर कन्हाई।
तिहि दिन ते घरहि अरु बाहिर छिनु भरि कछु न सोहाई ॥
आवत जात पलक नहि ठहरं इतं उतं चकरी सी।
टोलन टोलन भुलाइ गइ हम गइ लाज जकरी सी ॥
गोरस के मिसि नंदगांव मे आवत संग सहेली।
कबहुंक पांच सात जुरी चलती कबहुंक आप अकेली ॥
धरे शशि गोरस की मटुकी घर घर डोलन्ह डोलं।
झूठेही इत उत फिरि आवइ नंद बरोठं बोलं ॥ २ ॥
है कोऊ गाहक गोरस को या बठारी के माही।
होत अबेर लेउ जो लेने की घर को फिरि जाई ॥ ३ ॥

अंत—

जाति पाति कुल ऊंच नीच सब लोक बेद बंवहारा।
पानि ग्रहन प्रेम को एहि बिधि समुझत समुझनहारा ॥
श्री बृषभान कुमारि स्याम सों व्याह भयो एहि भांति।
लागी लगन दुहूं दिशि गाढी बाढ़ी दिन दिन प्रीती ॥

इति सनेह सागर चतुर्थ तरग समाप्तम् संम्वत् १६३५ ॥ शाके १८०० माघ माशे शुक्ल पक्षे त्रितियाया ३ भौम वाशरे लीपा प्रागदत्त दुबे पण्डित लक्ष्मिय पुत्र पाठार्थम् ॥ इति श्री राधा कृष्ण जी का विवाह समाप्तम् शुभम् ॥

विषय—राधाकृष्ण का स्नेह एव विवाह वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६३५ वि० दिया है।

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

परि० १, २, ३

सन् १९४४ (सवत् २००१)

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

ग्रथो के आगे दिए हुए अक परिशिष्ट १, २ और ३ मे आई क्रम सख्याएँ है।

ग्रंथकारों के नामों की अनुक्रमणिका

परि० १,२

सन् १९४४-४६ (सं० २००१-२००३)

ग्रंथकारों के नामों की अनुक्रमणिका

ग्रथकारो के आगे लिखे हुए अक रिपोर्ट के परिशिष्ट १ और २ मे दी हुई क्रम सख्याएँ हैं।

परिशिष्ट४(क)

प्रस्तुत खोज में मिले नवीन रचयिताओ की सूची

(स० २००१—२००३ वि० तक)

क्र स.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका सख्या	शताब्दी	ग्रथों की सख्या	विशेष
१.	अखैराम	१	१९वी	१	
२.	अचल कीति	४	.	१	
३	अजगर नाथ	५	२०वी	१	
४.	अमरदास	७	१९वी	१	
५	अमरेश कुमार	८	२०वी	१	
६.	अयोध्या गिरि	९	.	१	
७	अली रगीली	११		१	
८.	आत्माराम	१३	. .	१	
९.	आनद कवि	१५	. .	२	
१०.	आनददास	१७	. .	१	
११.	ईश	२०	. .	१	
१२	ईश्वरदास	२२		१	
१३.	उदय	२६		१	
१४.	उमादास	२७	१९वी	१	
१५	ऋषिकेश	२९		१	
१६	कन्हैया लाल भट्ट "कान्ह"	३१		१	
१७	कल्यानदास	३६	. .	१	
१८	काकराम	३७	. .	१	
१९.	कान्ह या लघुकान्ह	३९	२०वी	१	
२०	कान्ह और व्यास	३९	. . .	१	
२१.	कालिदास	४०	. . .	१	
२२.	किसनलाल	४२	. .	१	
२३.	किसोरदास	४३	. . .	१	
२४.	कुभनदास	४४	. . .	१	
२५,	कुदरतीदास या कुदरती साहब	४५	. .	२	
२६.	कृष्णचद्र अग्रवाल	४७	१८वी	१	
२७	कृष्णदास	४८	१८वी	१	
२८.	कृष्णदास	४९	. . .	१	
२९.	कृष्णदास जाडा	५१	. . .	१	
३०.	कृष्णदास रावन्य	५२	. . .	३	
३१.	कृष्णदेव	५३	. . .	१	
३२.	कृष्णराम सतोपिदा चक्रवर्ती	५४	. . .	१	

क्र.स	रचयिताओ के नाम	विवरणिका	शताब्दी	ग्रंथ सख्या	विशेष
३३	कृष्णाबाई	५५	...	१	
३४	केवललीन द्विज	५६	. .	१	
३५	केशव किशोर	५७	.	१	
३६	केशवदास नारायण	५९	.	१	
३७	केशोराम	६१	. .	१	
३८	क्षेमकरण	६२	...	१	
३९	केसोराम	६३	...	१	
४०	खेमकवि	६४	...	१	
४१	ग ग कवि	६६	..	१	
४२.	गगसरन	६७	.	१	
४३	ग गादास	६९	. .	१	
४४	ग गादास (जन)	७०	. .	२	
४५	ग गाराम	७१	.	१	
४६	गजेंद्र	७४	. .	१	
४७	ग गाराम ऋषि	७५	...	१	
४८	गिरिधर	७६	...	१	
४९	गिरिधर जी	७८	..	१	
५०	गिरिधर लाल जी	७९	२०वी	२	
५१	गो० श्री गिरिधारी लाल	८०	...	१	
५२.	गुमान कवि	८२	...	१	
५३	गुरु गोविंद	८३	...	१	
५४	गुरुदीन कवि पाडे	८४	...	१	
५५	गुलाम मुहमद	८५	...	१	
५६.	गोकुल कवि	८६	...	१	
५७	गोपालजन	९०	. .	२	
५८	गोपालदास	९१	...	१	
५९	गोपालदास	९२	...	२	
६०.	गोपिकालकार जी गो०	९३	...	१	
६१	गोविंद या गोविंददास	९४	...	१	
६३	गोविंद	९५	. .	२	
६३.	गोविंददास	९६	...	१	
६४	गोविंद पडित काश्मीरी	९७	..	१	
६५	घनदेव कान्यकुब्ज (वैष्णव)	१०१	१९वी	१	
६६	घनश्याम (चतुर्भुजमिश्रात्मज)	१०२	१७वी	१	
६७	घनश्याम द्विज	१०३	२०वी	१	
६८	घनश्याम या स्यामदास	१०४	...	१	
६९.	घनश्याम दास	१०५	...	१	
७०	चदपरतिप	१०७	१९वी	१	
७१	चक्रपाणि	१०८	...	१	
७२.	चतुरराय	१०९	...	१	
७३.	चतुर्भुज मिश्र	१११	...	१	
७४.	चूडामणि	११४	...	१	

क्र सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका संख्या	शताब्दी	ग्रंथ संख्या	विशेष
७५	छविनाथ	११५	१६वी	१	
८६.	छितिपाल	११६	...	१	
७७	छैल	११७	...	१	
७८	जगदीशजन	१२०	...	१	
७६.	जगत कवि	१२२	...	१	
८०.	जगन्नाथ	१२३	. .	१	
८१	जयशकर गहूल अवदीच	१२५	..	१	
८२	जान कवि	१२६	१७वी	६६	
८३.	जान (मिरजा मुहमद)	१२७	..	१	
८४.	जानकीदाम	१२८	.	१	
८५	जीराम	१२६	.	१	
८६	जीवनदास	१३०	. .	१	
८७	जीवनराम	१३१	..	१	
८८.	जैकृष्ण	१३३	. .	१	
८६	टोडरमल कायस्थ	१३५	१६वी	१	
६०	डूंगरसी साधु	१३६	...	१	
६१	तामसन साहब	१३७	.	१	
६२	ताराचद	१३८	...	१	
६३.	तुलसीदास	१४३	...	३	
६४	थेघनाथ या थेघू	१४६	१६वी	१	
६५	दक्षगग्री	१४७	१८वीं	१	
६६	दत्त कवि	१४८		१	
६७	दयाराम भाई	१४६	१६वी	५	
६८.	दयालदास	१५०	..	१	
६६	दलजीत	१५२	.	१	
१००	दादू	१५३	.	१	
१०१.	दास	१५४	.	१	
१०२	दास	१५५	.	१	
१०३	दास	१५६	..	१	
१०४	दासराम	१५७	..	१	
१०५	दुर्गाराम वरनवाल	१६०	१६वी	१	
१०६	देवकृष्ण	१६२	१६वी	१	
१०७	देवीदत्त शुक्ल "पंडित" और "धीर"	१६३	२०वीं	२	
१०८	देवीदास	१६४	.	१	
१०६.	देवेश्वर माथुर	१६६	१६वीं	१	
११०.	द्वारिकादास	१६७	..	१	
१११.	धनपाल	१६६	१०वीं	१	
११२	धन्नादास	१७१	...	१	
११३	नयमल	१७३	...	१	
११४	नरसी मेहता	१७६	...	१	

क्र स	रचयिताओ के नाम	विवरणिका स०	शताब्दी	ग्रंथ सख्या	विशेष
११५	नवनीत कवि	१८१	. .	१	
११६	मुशी नवनीतराय	१८२	१६वी	१	
११७	नवरगदास स्वामी	१८३		१	
११८	नागरीदास	१८५		१	
११६	कविनाथ	१८८	..	१	
१२०.	नारायण दास	१६१	१८वी	१	
१२१.	नारायणदास व्रजवासिया	१६२	.	२	
१२२	नारायण सिह नृप	१६३	१८वी	१	
१२३	नित्यानद	१६४		१	
१२४	निर्मल कवि	१६५	१८वी	१	
१२५	निर्मलदास	१६६	१६वी	१	
१२६	निश्चयदास	१६७	.	१	
१२७	पचौली देवकर्ण	१६६	१६वी	१	
१२८	परमसुख दैवज्ञ	२००	१६वी	१	
१२६	परमानद	२०१		२	
१३०.	परसन विप्र	२०३	१६वी	१	
१३१	पर्वल	२०४	.	१	
१३२.	पुरुषोत्तम	२०६	. .	१	
१३३	पुरुषोत्तम	२०७	. . .	०	
१३४	पुरुषोत्तम दास	२०८	. .	१	
१३५	पुरुषोत्तम	२०६	. .	१	
१३६	पूरन कवि	२१०	. .	१	
१३७	प्रधान	२१४		१	
१३८.	प्रभुलाल	२१५		१	
१३६	प्रमादास	२१६	.	१	
१४०	प्रवीन कवि	२१७	.	२	
१४१	प्राणनाथ सोती	२२०	. .	१	
१४२	फणि नृपति	२२४		१	
१४३.	फणीद्र मिश्र	२२५	१८वी	१	
१४४.	फोंक द्विज	२२६	.	१	
१४५	वशीधर पडित	२२७		१	
१४६.	बखत सिह राजा	२२८		१	
१४७	वदलीदास	२२६	. .	१	
१४८	वलदेव कवि	२३१	. .	१	
१४६.	वलराम दास	२३२	.	१	
१५०.	वलराम	२३३	. . .	१	
१५१	गो० श्री वल्लभजी	२३४	. . .	१	
१५२	वहोरन द्विज	२३६	. .	१	
१५३.	विट्ठल दास	२३८		१	
१५४	विहारी रमणेश	२४०	.	१	
१५५	वैजनाथ	२४१	. . .	१	
१५६.	वोधलाल	२४३	. .	१	

क्र स.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका स०	शताब्दी	ग्रंथ स०	विशेष
१५७	भगवानदास	२४५	१८वीं	१	
१५८	भगवतदान	२४७	.	१	
१५९	भगवतदान	२४८	..	१	
१६०	भरमी मिश्र रामनाथ पडित	२५५	. .	१	
१६१	भारथ सिंह या भारथ साहि	२५६	..	१	
१६२	भीम	२५९	१६वीं	१	
१६३	भीमसेन	२६०	.	१	
१६४	भीष्म	२५१	१८वीं	१	
१६५	मगनजी	२६६	...	१	
१६६	मटुकमनि	२५७	...	१	
१६७	मथुरादास कवि	२७०	.	१	
१६८	मथुरानाथ भारद्वाज	२७१	.	१	
१६९	मनसाराम	२७२	.	२	
१७०.	महम्मद औलिया	२७६		१	
१७१	महचद द्विज	२७७	१८वीं	१	
१७२.	महादास	२७८	...	१	
१७३.	महाराज कवि	२७९	...	१	
१७४.	महावदास	२८०	...	१	
१७५.	महावदास वैष्णव	२८१	. .	१	
१७६.	महीपति या महीप	२८२	१८वीं	१	
१७७	माधवदास	२८५	...	१	
१७८.	माधवदास दानलीला	२८७	...	१	
१७९	माधवदास भट्ट	२८९	...	१	
१८०.	मानिक	२९३	...	१	
१८१.	मिहिर या छत्रपति चौहान	२९४	...	१	
१८२	मुकुद	२९५	...	१	
१८३	मुकुद या रूपदेव्या	२९६	२०वीं	१	
१८४	मुकुदलाल	२९८	...	१	
१८५	मुरलीदास	३०२	...	१	
१८६	मुरलीधर कविराई	३०३	...	१	
१८७	मोकमदास	३०५	१६वीं	१	
१८८.	मोहनदास	३०८	. .	१	
१८९	रघुवर	३१६	...	२	
१९०.	रतजीत	३१९	...	१	
१९१.	रमताराम	३२०	...	१	
१९२	रसनिधि (श्रीकृष्ण लालाजी)	३२५	२०वीं	१	
१९३.	रसिक	३२७	. .	१	
१९४.	रसिकदास (गोपिनालकार)	३२८	...	१	
१९५.	रसिकराय जी	३२७	...	१	
१९६	राजमनी	३३२	...	१	
१९७.	राजाराम	३३४	१८वीं	१	
१९८	राधाकृष्ण द्विवेदी	३३६	...	१	

क्र सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिकाच स०	शताब्दी	ग्रंथ स०	विशेष
१९९	रामकवि या द्विजराम	३३७	...	२	
२००	रामकृष्ण	३३९	..	१	
२०१	रामगरीव चौवे (गरीव जू)	३४१	...	१	
२०२	रामचद्र	३४३	...	१	
२०३	रामदास वरसानिया	३४७	.	२	
२०४	रामप्रगाश गिरि	३४८	१९वी	३	
२०५	रामप्रसाद	३५०	२०वी	१	
२०६.	रामपुल	३५१		१	
२०७	रामवछ या कवि वछ	३५३	१९वी	१	
२०८	राम रतन लघुदास	३५४	..	२	
२०९	राम रहस्य दास	३५६	...	१	
२१०	रामानुजदास	३५९	. .	१	
२११	रामावतारदमस	३६०	२०वी	१	
२१२.	रूप	३६२	..	१	
२१३.	रूप	३६३	२०वी	१	
२१४.	रूपराम	३६४	...	१	
२१५.	लक्ष्मीदास	३६७	२०वी	१	
२१६	लखनसेनि	३६९	.	१	
२१७	लछिमनदास	३७१	१९वी	१	
२१८	ललित किशोरी	३७२	..	१	
२१९	लाल कवि	३७४	.	१	
२२०	(द्विज) लाल	३७५	. .	१	
२२१	लालसाराम वावा	३७८	..	१	
२२२	लालू भट्ट (प्रवीन)	३७९	...	१	
२२३	लोना	३८०	...	१	
२२४.	लोहट	३८१	...	१	
२२५	वशीधर	३८२	..	१	
२२६.	वत्साभट्ट	३८३	...	१	
२२७	वासदेव शुक्ल	३८५	...	१	
२२८	विष्णुदत्त	३८९	...	१	
२२९	विष्णुदास	३९१	...	१	
२३०	विष्णुपुरी	३९२	..	१	
२३१	वीरभगत	३९३	...	१	
२३२	वीरभान चौहान	३९४	..	१	
२३३	वृजनाथ त्रिविक्रमसुत	३९६	.	१	
२३४	वेणीमाधव भट्ट 'प्रवीन कवि'	३९७	१८वी	१	
२३५	वैकुठजन	३९९	...	३	
२३६.	व्रजभूपण जी गो०	४०२	...	२	
२३७	व्रजाभरण जी दीक्षित	४०३	...	१	
२३८.	श्री व्रजराय जी गो०	४०४	...	१	
२३९.	शंकरद्विज	४०६	२०वी	२	
२४०.	शक्राचार्य	४०७	...		

क्र स.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका सं०	शताब्दी	ग्रथ सं०	विशेष
२४१	शभूनाथ	४०६	...	१	
२४२.	शारगधर	४१०	. .	१	
२४३.	शारगधर	४११	. .	१	
२४४	शिवदृत्त सिंह	४१२	..	१	
२४५	शिवदत्त त्रिपाठी	४१३	...	१	
२४६	शिवदत्त त्रिपाठी	४१४	.	१	
२४७	शिवदास	४१५	.	१	
२४८	शिवदास गदाधर	४१६	२०वी	१	
२४९	शिवबक्स सिंह सोमवसी	४१७		२	
२५०	शीतलदास	४१९	२०वी	१	
२५१	शीतलदीन	४२०	.	१	
२५२	शेख अहमद	४२१	...	२	
२५३	शेख निसार	४२२	१९वी	१	
२५४	शोभाचद	४२३	१७वी	१	
२५५	शोभाराम (महाराज)	४२४	.	१	
२५६	श्यामराम	४२५	.	१	
२५७	श्रीकृष्ण गगाधर	४२६	१८वी	१	
२५८	श्रीकृष्ण भट्ट	४२७	.	१	
२५९	श्रीनिवास	४२८	.	१	
२६०	हनुमान पच्चीसी	४२९	.	१	
२६१	श्रीपति	४३१	.	१	
२६२	श्रीलाल पडित	४३२	२०वी	२	
२६३	सज्यानाथ	४३३	...	१	
२६४	सतदास या सत रसिक	४३५	.	१	
२६५	सदानद	४३६	. .	१	
२६६	समरसिंह महाराज	४३९	३२	१	
२६७	समाधान	४४०	...	१	
२६८	सरदार सिंह (सुलतान सिंह सुत)	४४२	. .	१	
२६९	सरमद	४४३	. .	१	
२७०	सर्वेश्वर दास	४४४	२०वी	१	
२७१	सहदेव	४४५	...	१	
२७२.	सादिय	४४६	...	१	
२७३	साधुजन	४४७	...	१	
२७४	सिंधुकवि (आनद)	४४८	...	१	
२७५.	सिनदर फिरगी	४४९	.	१	
२७६	सुंदर कवि	४५२	...	से	
२७७	सुखदेव	४५४	...	१	
२७८	सुखानद	४५५	...	१	
२७९	सुवरगा	४५७	...	१	
२८०	सूरजदास	४५८	...	१	
२८१.	सूरदस	४६०	...	१	
२८२.	सूरदास	४६२	...	१	

क्र स	रचयिताओं के नाम	विवरणिका	शताब्दी	ग्रंथ नं०	विशेष
२८३	सूरदास	४६३		१	
२८४	सूरदास	४६४	. .	१	
२८५	सूरसैन	४६५	. .	१	
२८६	सेवक सुकवि	४६६	.	१	
२८७	सेवादास (स्वामी)	४६७		१	
२८८	स्वामीदास	४७२	.	१	
२८९	स्वामी कार्तिक	४७३		१	
२९०	हनुमत कवि	४७३	२०वीं	१	
२९१	हनुमत कवि और राम नारायण	४७५		१	
२९२	हरि आनद	४७९	१९वीं	१	
२९३	हरिकृष्णदास या कृष्णदास	४८०	२०वीं	१	
२९४	हरिचरण द्विज	४८१	.	१	
२९५	हरिदास	४८२	.	१	
२९६	हरिदास जन	४८४		१	
२९७	हसन अली खाँ	४८९	.	१	
२९८	हिम्मति सिंह	४९०	१९वीं	१	
२९९	हीरालाल (लाला)	४९१	.	१	
३००	हुलास दास	४९३		१	
३०१	हेमरतन	४९४	१८वीं	१	
३०२	हेमराज मथेन	४९५	१९वीं	१	

— ०० —

परिशिष्ट (४) ख

खोज में मिली नवीन रचनाओ की सूची

क्रम सख्याएँ	ग्रथो का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका सख्या	विशेष
१	अगद पैंज	.	१८०६ वि०	२३	
२	अगद पैंज	..	..	३७३	
३	अगद रावण सवाद	.	.	२१३	
४	अकार के कवित्त	..	..	१८ ग	
५	अठारह नाते	..	..	४	
६.	अठारह नाते को चोढाल्यो	..	..	३८१	
७.	अद्भुत ग्रथ	..	..	४५१ ख	
८.	अद्भुत रामायण	..	..	२३६	
९.	अद्भुत विलास	१६५५ वि०	..	१४० क	
१०.	अध्यात्म रामायण	..	.	२८४	
११	अनभी प्रकास	..	१९५० वि०	२२९	
१२.	अनुराग विवर्द्धक रामायण	.		२३० क	
१३.	अरदसेर पादसाह की कथा	१६९० वि०	१७८४ वि०	१२६ ग	
१४	अर्जुन गीता	.	१८३५ वि०	१४	
१५	अर्जुन गीता	१९१२ वि०	१९१३ वि०	३५०	
१६.	अलकार दर्पण	१९१० वि०	१०१९ वि०	१६३ ख	
१७	अलकनावा	..	१७७७ वि०	१२६ ह	
१८.	अवधूत गीता भाषा टीका	..	१८५६ वि०	४३३	
१९	अशौच विचार भाषा तथा मुडन नखच्छेद निर्णय	..	..	३८३	
२०.	अश्वमेध (भारत)	..	..	३६५	
२१	अष्टकाल की लीला	१८३८ वि०	..	१८७	
२२.	अष्टाक्षर मत्र की टीका	..		४८६ ग, घ	
२३	आठ प्रहर मूलचेत प्रसग भाग एक, दो	..	..	१३२	
२४	आत्मप्रकाश	..	१६३५ वि०	१३	
२५	आत्मबोध टीका	..	..	२०१ ग	
२६	आनद लहरी	..	१७८६ वि	३०३ ग	
२७	आनदविलास	..	..	१५	
२८	इश्क शतक	..	..	२२७	
२९	उत्तम सबदा ग्रथ	..	..	१८६ ग	
३०	उत्सव के प्रकार	..	..	६३	
३१.	उत्सव निर्णय भाषा	..	..	२०३ च	
३२	उत्सव मालिका भाषा	..	..	२०३ ख	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३३	उत्सव सेवा प्रणाली उत्सव निर्णय सहित	..	..	२०७ च	
३४	ऊषाचरित्र	..	१८८८ वि०	३०१ क	
३५	ऋतुराज मजरी	..	..	२६	
३६	एकादशी माहात्म्य	१८१५ वि०	१८६६ वि०	७	
३७	एकादशी कथा	..	१८४६ वि०	१२०	
३८	औषधी सग्रह कल्पवल्ली	..	१८६० वि०	३३६	
३९	कठाभरन टीका	..	..	२६८	
४०.	कद्रप कल्लोल		.	१२६ वरण	
४१	कंवलावती की कथा	१६७० वि०	१७७८ वि०	१२६ च	
४२	कनहरा	..	..	१६०	
४३	कनावली	.	.	१५ ख	
४४	कजानामा	..	१८२३ वि०	१६४	
४५	कनकावली की कथा	१६७५ वि०	१७७८ वि०	१२६ र	
४६	कबीर और निरजन ज्ञान गुष्टि	..	१७३३ वि०	३२ ख	
४७	कबीर रैदास सवाद	..	..	३६६	
४८.	कबीर सागर	..	१७२३ वि०	३२ क	
४९	कबूतरनावा	.	१७७७ वि०	१२६ घ	
५०.	कलदर की कथा	१७०२ वि०	..	१२६ प	
५१.	कलावती की कथा	१६७० वि०	१७७८ वि०	१२६ ट	
५२	कवि चरित्र		..	३२६	
५३	कविकुल तिलक प्रकाश	१७६६ वि०		२८२	
५४	कवितावली भक्त विलास	..	१६५२ वि०	३८५	
५५	कविता सग्रह	..	..	१८ ख	
५६	कवित्त	...	..	५६	
५७	कवित्त	..	..	६१	
५८	कवित्त	..	..	६४	
५९	कवित्त	..	..	११७	
६०.	कवित्त	..	..	१८८	
६१	कवित्त	.	..	२१४	
६२	कवित्त	.		३१७	
६३.	कवित्त	..	१६१७ वि०	३४१	
६४.	कवित्त	..	..	३४३	
६५.	कवित्त	..	.	४५७	
६६	कवित्त	..	..	४६०	
६७	कवित्त चतुश्शती	..	..	१८ क	
६८.	कवित्त सवैया संग्रह	..	..	३७६	
६९.	कवि विनोद	१७४५ वि०	.	२६२ ख	
७०	कहरनामा (कहरानामा)	..	१६२३ वि०	१८४	
७१	कामरानी व पीनमदान की कथा	१६६१ वि०	१७८३ वि०	१२६ त	
७२.	कामलता की कथा	१६७८ वि०	१७७८ वि०	१२५ झ	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
७३	कार्तिक माहात्म्य	१८४८ वि०		३३१ क	
७४	काशी वर्णन	.		३४६ क	
७५	कीर्तन संग्रह	..	१८६३ वि०	६८ ग	
७६.	कीर्तन संग्रह	..	१९१५ वि०	३२८ क	
७७	कीर्तन संग्रह	.		४८६ द	
७८	कुंड निर्माण वार्तिक	१७१६ वि०	.	४२६	
७९	कुंडलिया		१९०३ वि०	४१९ क	
८०	कुंभन दास की वार्ता (चौरासी अपराध वर्णन)			४८६ ध	
८१	कुनवती की कथा	१६६३ वि०	१७७७ वि०	१२६ म	
८२	कुंअर मर्दवन्छ मवनीगधारी वार्ता	.	.	४६५	
८३.	कृष्ण ध्यानाष्टक	.	.	३५४ ग	
८४.	कृष्णनाम चंद्रिका	१८७० वि०		१४६ क	
८५.	कृष्ण विलास	१७९४ वि	१८०४ वि०	४७	
८६	कृष्ण वृत्त चंद्रावली		.	२१७	
८७	कृष्ण सागर	.		५०	
८८	केशव विनोद भाषा निघंटु	१८६७ वि०	१९०३ वि०	मुद्रग ६०	
८९	कोकशास्त्र	.	.	७४	
९०	कोकशास्त्र	.		८०४	
९१	कौतूहल की कथा	१६७५ वि०	१७७८ वि०	१२६ ग	
९२	खिजर खां शाहजादे व देवलदे की कथा	१६६४ वि०	१८७८ वि०	१२६ य	
९३	खेम पच्चीसी (हनुमान चरित्र)			६४	
९४	गंगा पुरान	.		८६५	
९५	गंगा पुष्पांजलि		.	४०७ ग	
९६.	गंगा प्रबोध गीता	१८२५ वि०	१८५८ वि०	४६०	
९७	गंगा माहात्म्य	१८३२ वि०	१८४० वि०	१	
९८	गंगाष्टक (गंगाजी को झूलना)	.		३८०	
९९.	गढपर्थना रासो (पर्थना रासो)	.	.	१०६	
१००	गणित बोधनी			४२४	
१०१.	गणेश कथा	. .	१८८७ वि०	३६४	
१०२.	गनगौर के ख्याल (गीत)		१९८३ वि०	८७८	
१०३	गिरवर समो	.		३६४	
१०४	गीतगोविंद भाषा (पद्यानुवाद)	.	१८८५ वि	८७१	
१०५.	गीता ग्रंथसार	.		८३८	
१०६.	गीता भाषा	१५५७ वि०	१७८७ वि०	१२६	
१०७	गीता भाषा टीका		१९८८ वि०	३४	
१०८	गीता भाषा टीका	.		४३	
१०९	गुरु अष्टक	..	.	३	
११०	गुरु भक्ति चंद्रिका	..	.	६८ ख	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१११	गुरु महिमा	..	१८५७ वि०	४५४	
११२	गुरु हरि भक्ति प्रकाश	.	.	९२ क	
११३.	गूढ ग्रंथ	..	१७७७ वि०	१२६ ड[1]	
११४.	गोकुलाष्टक की टीका	..	..	४८६ ड	
११५	गोदोहन लीला	..	..	६६	
११६	गोपाल गारी	.	.	४६३	
११७	गोरख कुंडली		१८५५ वि०	१०० घ	
११८	गोरख ग्रंथ (१)	१४१३ वि०		१०० ख	
११९	गोरख बोध	.	१८५६ वि०	१०० ग	
१२०.	गोरा बादल पद्मिनी चौपाई	१७६० वि०		४६४	
१२१	गोवर्द्धन चरित्र	.		६१	
१२२	गोवर्द्धन नाथ जी की वार्ता (प्रागटय मे)	..	.	८८ छ	
१२३	गोवर्द्धन लीला		.	६५	
१२४	,, ,,	..	१८२८ वि०	१९२ क	
१२५	,, ,,	..	१८२८ वि०	१९२ क	
१२५	,, ,,	.	१८२७ वि०	३४७ क	
१२६	,, ,,	.	..	४८३ क	
१२७	गोविंद स्तुति	..		२६७	
१२८	ग्रंथ देमावली	..	१७७७ वि०	१२६ च[1]	
१२९	ग्रंथ पवगम	..	१७७८ वि०	१२६ छ	
१३०	ग्रंथसुधानिप	..		१२६ प	
१३१	ग्वाल पहेली	..	१८६० वि०	३१६ क	
१३२	घूंघट नावाँ	..	१७७७ वि०	१२६ ह	
१३३	चंद्रसेन राजा सीलनिधान की कथा	१६६१ वि०	१७८४ वि०	१२६ ट	
१३४.	चक्रव्यूह	..	१९०७ वि०	२६०	
१३५	चतुर्विध पर्वी	१७५० वि०	१७६८ वि.	३६८	
१३६	चतु श्लोकी टीका	.	..	२३६ ग	
१३७.	,, ,,	..	..	४८६ त	
१३८	चरण चिह्न की भावना	..	१९६४ वि०	८८ च	
१३९.	चरपटिना पत्रिका	.	१९३० वि०	११३ क	
१४०	चानक	..	१९१६ वि०	३५८ ग	
१४१	चिंतन	..	.	४८६ ख	
१४२.	चिंतामणि या हरिनाम गुन-नाम चिंतामणि	..	..	२७२ क	
१४३.	चिंतामनि	.	१८८४ वि०	३२ घ	
१४४.	चित्रबंध काव्य	..	..	१५४	
१४५.	चिरई चैननी	..	..	२२६	
१४६	चैननामा	..	..	१२६ प	
१४७.	चैनारनी	..	१८४१ वि०	१७० क	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१४८	चौबीस अवतार को जस	.	.	२७२ ग	
१४९	चौबीस तीर्थंकर की विनती	..		१७८	
१५०	चौरासी वैष्णव की वार्ता	.	..	८८ ज	
१५१.	चौय लीला	.		६७	
१५२	छप्पै रामायण		.	३३२	
१५३	छवि सागर की कथा	१७०६ वि०	१७७८ वि०	१२६ ज	
१५४.	छीता की कथा	१६६३ वि०	१७८८ वि०	१२६ झ	
१५५	जगत बत्तीसी	.		१२२	
१५६	जपको प्रकार		१६६४ वि०	८८ घ	
१५७	जफरनामा नासिरखांका	१७२१ वि०	१७७७ वि०	१२६ ट	
१५८	जेहलीजवाहिर		१७६० वि०	२२०	
१५९	जैमुनि कथा	१६२८ वि०	१८६७ वि०	४८	
१६०	जोगरतन	१६०१ वि०	.	४०६	
१६१	ज्ञान ककहरा	.	१६२० वि०	३१५	
१६२	ज्ञान कथा कर्म निर्णय	..	१६३४ वि०	६८ ग	
१६३	ज्ञानकथा रहस्य	..	१६३८ वि०	६८ ग	
१६४	ज्ञान चंद्रिका (नासकेत पुराण)	.	.	१३१	
१६५	ज्ञानचेटक	१७२८ वि०	१६१६ वि०	१२	
१६६	ज्ञान प्रकाश	.	१६२३ वि०	११८ ग	
१६७.	ज्ञान बारामासा	.	.	१४३ ग	
१६८	ज्ञान सागर	.		३२ ग	
१६९	ज्ञानोपदेश			३६८	
१७०	ज्योतिप			४४५	
१७१.	ज्योतिप और गोलाध्याय (टीका)	.	मुद्रणकाल १८७६ वि०	१३८	
१७२	डगवे पुरान	१५५० वि०	१७७७ वि०	२५८	
१७३	ढाढियादान	..		१३३	
१७४	तत्र सामुद्रिक	.	१६१७ वि०	३४१	
१७५	तत्व उपदेश या पोथी ज्ञानगोष्ठी		१८१२ वि०	१३८	
१७६	तत्वचिंतामणि	..	..	३८५	
१७७	तत्वबोध टीका		..	३०१ ग	
१७८	तत्व विवेक	..	.	४०३ ग	
१७९	तमीम अंसारी की कथा	१७०२ वि०	१७७७ वि०	१२६ न	
१८०	तर्क प्रकाश भाषा	१६०८ वि०	.	४४१ ग	
१८१	तिथि प्रबंध	..	..	७० ग	
१८२	त्रिविध भावनाभाषा	..	.	८८ ज	
१८३	दंपति प्रत्युत्तर	१८६७ वि०	.	९२५	
१८४	दत्तात्रेय लीला	..	१८५३ वि०	३०८	
१८५	दधि लीला	..	..	३३	
१८६	दधि लीला	..	.	२९६	
१८७.	दयाराम सतसई (टीकासहित)	१७८२ वि०	१८६५ वि०	९१६ ग	

क्रम संख्या	ग्रंथो का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१८८	दरसनावा		१७७७ वि०	१२६ ह	
१८९	दरसनावा	.		१२६ क¹	
१९०.	दशकुमार चरित			२३१	
१९१	दशकुमार चरित		.	४१४	
१९२	दशम स्कंध संक्षेप लीला			२८६ ख	
१९३	दस्तूर शिकार का		१८१९ वि०	४८६	
१९४	दानलीला		१९१८ वि०	४४ क	
१९५	दानलीला			२८७	
१९६	दानलीला		१८८८ वि	३२७	
१९७	दानलीला			३८२	
१९८	दानलीला		१८४८ वि०	४०२ क	
१९९	दामोदर लीला	१८५२ वि०		२५	
२००	दिग्विजय चंपू	१९१० वि०		४१६	
२०१	दिनमणि वंशावली (गुण कथन)	..		४४८	
२०२	दीपरामायण	..	१८९९ वि०	२४७	
२०३	दुर्गाभक्ति तरंगिणी	.	.	४२७	
२०४	दृष्टिकूट के पद (भाषा टीका)		.	२३७	
२०५	देवकी चरित्र			३७८	
२०६	देवी चरित्र			४१५	
२०७	देवी विलास (दुर्गा संवाद)	१८४९ वि०	१८७७ वि०	४७९	
२०८	दोहावली	.		७० ग	
२०९	दोहा साखी	.	१९१४ वि०	११६ ग	
२१०	द्रव्यशुद्धि भाषा	.	१८४१ वि०	२०७ ग	
२११	द्रोपदी अष्टक			४७६ ख	
२१२	द्रोपदी की स्तुति	.	१८९० वि०	३१६ ख	
२१३	द्रोपदी स्वयंवर	१९८० वि०	१९८० वि०	३१२	
२१४.	द्वादश राशि विचार	.	१८९३ वि०	४२५	
२१५	द्वारिकादास की बानी			१६७	
२१६	धरमीनामा	.	..	१७१	
२१७	ध्रुवचरित्र		..	४४७	
२१८	नखशिख	..	.	८६	
२१९	नखशिख			११६	
२२०	नजीर की रचनाएँ फुटकर		.	१७६	
२२१	नरसिंह पचासा	१७१० वि०	.	४५६	
२२२	नरसी मेहताजीमाला	.	१८९३ वि०	१७९	
२२३	नलदमयंती की कथा	१०७२ वि०	१७७८ वि०	१२६ घ	
२२४	नल पुराण या नलदमयंती चरित	..	१८५३ वि०	४९९	
२२५.	नलोपाख्यान	..	.	२५५	
२२६.	नवग्रह आचार	..	..	४८६ ज	!
२२७	नवनागरी के पद	..	..	३९१	

क्रम संख्या	ग्रंथो के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
२२८	नवनीत नवसई	१८७७ वि०		१८२	
२२९	नवरत्न कवित्त		१८८८ वि०	[illegible]	
२३०	नवरात्रि के कीतन			४८९ ख	
२३१	नवलनेह	१८५४ वि०	.	१०१	
२३२	नहुप नाटक	.	१९२३ वि०	[illegible]	
२३३	नागरीदास जी के कवित्त सग्रह		१८७३ वि०	१८४	
२३४	नागलीला		१८९० वि०	११[illegible]	
२३५	नागलीला		१८४३ वि०	३३१ ग	
२३६	नाम कुसुममाला	१७२० वि०		१९३	
२३७	नाममाला अनेकार्थ			१८८ ग	
२३८	नामरत्न स्तोत्र विवरण भापा			४८९ अ	
२३९	नारायण लीला		.	१३०	
२४०	नासकेत पुराण	१८८३ वि०	१८८३ वि०	३४९	
२४१	नासिकेतपाखान			२१९	
२४२	निघट मदनंद (वैद्यक)		१९०२ वि०	२२९	
२४३	नित्यभावना (सवा तथा स्वरूप की)		१८५५ वि०	४८९ ग	
२४४	नित्यसेवा शृंगार की भावना		१९५६ वि०	८८ ग	
२४५	निरमल की कथा	१७०४ वि०		१८६ ग	
२४६	निगुन लीला		१९१० वि०	१३० ग	
२४७	नीति रत्नाकर	१९२० वि०		१४८	
२४८	नीति विनोद भापा	.	.	४०२ ग	
२४९	नीतिविलास		१९२९ वि०	२३०	
२५०	नीलकठ स्तोत्र			२९१	
२५१	नैकाव्य कथा	१९०७ वि०	१९१० वि०	४४४ ग	
२५२	पचायत का न्यायपत्र	१७०१ वि०	१७०१ वि०	२२५	
२५३	पथपारख्या	.		१४६	
२५४.	पदनामा लुकमान	१७२१ वि०	.	१२६ घ	
२५५	पाडे लीला	.	१७११ वि०	२९३	
२५६	पिंगल	.	..	२९८	
२५७	पिंगल	..	..	३३७ T	
२५८	पद (?)	..	.	९	
२५९.	पद	..	१८९० वि०	२०२ क	
२६०.	पद	..	..	[illegible]	
२६१	पद	..	.	[illegible]	
२६२.	पद गुटका	१९०५ वि०	.	३९७	
२६३	पद स्वयवर के	..	..	१२९	
२६४	पदावली	..	..	३१९ क	
२६५.	पद्मपुराण (रामचद्र अश्वमेध)	..	१८३३ वि०	२५२	
२६६	परख विलास	..	१८७८ वि०	३३९	
२६७.	परमानद सागर	..	..	२०२ क	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
२६८	पशु मर्दन भाषा	.	१८६७ वि०	४५५	
२६९	पहुँप प्रकाश (पुष्प प्रकाश)	१८३६ वि०	१८३६ वि०	१६६	
२७०	पाराशरी जातक या (उडुदाय प्रदीप)	१८६८ वि०	१९०१ वि०	२००	
२७१	पाराशरी जातक या उडुदाय प्रदीप	१९२५ वि०		४७४	
२७२	पाहन परिछया	.	१७८४ वि०	१२६ थ	
२७३	पुष्टिदृढाव की वार्ता		..	४८६ ठ	
२७४	पुहुपवरिखा की कथा	१६८५ वि०	१७७८ वि०	१२६ ड	
२७५	पूर्ण पुरुषोत्तम को रूप तथा गुण नाम वर्णन	.	१८३० वि०	४०३ क	
२७६	पेमसागर (प्रेमसागर)	१६६४ वि०	१७७६ वि०	१२६ ट[1]	
२७७.	पेमनामा (प्रेमनामा)	१६७५ वि०		१२६ प[1]	
२७८.	पार्थी मं.मत के उतर		१८३२ वि०	७१	
२७९	प्रबोध चद्रोदय नाटक	..		१७३	
२८०	प्रयाग शतक भाषा	.	१९१६ वि०	२४८	
२८१	प्रह्लाद चरित्र		१९३८ वि०	१५६ क	
२८२	प्रह्लाद चरित्र		१८८० वि०	२१८	
२८३	प्रह्लाद चरित्र	.	१८४८ वि०	२५२ ख	
२८४	प्रह्लाद लीला		१८०२ वि०	१०४	
२८५.	प्रेमपच्चीसी			४७१ ख	
२८६	प्रेम प्रकाश	१८४८ वि०		२१२ क	
२८७	प्रेम रसाल	.		८५	
२८८	प्रेमविलास प्रेमलता कथा	१६६३ वि०	१९९६ वि०	१२४	
२८९	फाग	.		४८१	
२९०	फूलमजरी	१८४५ वि०		३१० क	
२९१	फूल मंजरी या पहुँप मजरी		.	२०६	
२९२	बनीस लक्षण (भगवदीय वैष्णवो के लक्षण)	.	..	८८ ह	
२९३.	बनिक प्रिया	..	.	४९१	
२९४	बरवै षट्ऋतु	.	..	४३८	
२९५	बलदेव पट्क		..	३२२	
२९६	बलूनिया बिरही की कथा	१०४४ हि०	१७७७ वि०	१२६ थ	
२९७	बहुला कथा	..	१७०३ वि०	३८०	
२९८.	बहुला लीला	.	१८४८ वि०	३६	
२९९	बाँदी नामा	..	..	१२६ ग[1]	
३००.	बाजनामा	..	..	१२६ घ[1]	
३०१	बाजनामा	..	१८२० वि०	३४६	
३०२.	बारहखड़ी	..	..	२१५	
३०३	बारहखड़ी	..	१९२६ वि०	४०१ ख	
३०४.	बारहखड़ी	..	१८३६ वि०	४६२	

क्रम संख्या	ग्रंथो का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३०५	वारहमासा	..	१७७८ वि०	१२६ ख	
३०६	वारहमासा	.		१२६ ग	
३०७	वारहमासी	..	.	२६५	
३०८	वारहमासी	..		२६६	
३०९	वारहमासी	..	.	३०२	
३१०	वारहमासी	..	..	३२६ ग	
३११	वारहमासी	.		४५२	
३१२	वारहमासी	.	१९४१ वि०	४६४ क	
३१३	वाराखडी	१८३५ वि०	१८४० वि०	३०५	
३१४	वाराखडी	..	.	३२१	
३१५	वालचरित्र	.		२८०	
३१६	विहारी सतसई (गोवर्द्धन सतमैया को सार)	..	१७८७ वि०	३९	
३१७	वुद्धिदाइक	..	..	१२६ न	
३१८	वुधिदीप	.	.	१२६ न	
३१९	वूढा रासो	१८३२ वि०	१९१४ वि०	१०३	
३२०	वैतममरद	.	.	४४३	
३२१.	वैतसमरद		.	२७६	
३२२	वोलार चरित्र	१८५३ वि०	१८५३ वि०	१६०	
३२३	ब्रह्माड लीला	..		८३	
३२४	भँवरगीत	.	१९२३ वि०	४३५	
३२५	भक्तिप्रकाशिका टीका		.	३९२	
३२६.	भक्ति विधान	१६८१ वि०	१७४८ वि०	३२३	
३२७	भगवत्गीता		१९३४ वि०	३४९	
३२८	भड्डुली ज्योतिप (टीका)	..	..	२५४	
३२९	भरतमिलाप या भरतविलाप	.	.	१४३	
३३०.	भविष्यदत्त कथा	१००० वि० (लगभग)		१६६	
३३१	भागवत		१९०७ वि०	८९	
३३२	भागवत (एकादश स्कध)		१८४० वि०	३४५	
३३३	भागवत भापा (पचम स्कध)			३०३	
३३४	भागवत भापा (दशम स्कध)	१८६१ वि०	१८९० वि०	३३३	
३३५	भागवत विलासिका	१८८१ वि०	१८८३ वि०	३३८ घ	
३३६	भाव कल्लोल	१७१३ वि०	.	१२६ ग	
३३७	भाव शतक		१९९९ वि०	२११	
३३८	भावसत	१६७१ वि०	१७५७ वि०	१२६ क	
३३९	भापा कोश (हिंदी संस्कृत मे)	..	.	३८९	
३४०	भापा चद्रोदय (व्याकरण)	१९२२ वि०	१९८८ वि०	४३३ क	
३४१.	भापा भक्ति चद्रिका	१८६४ वि०	१९०५ वि०	३८५	
३४२	भापा महावाक्य विवरण	..	.	३८९	
३४३.	भापा लीलावती	..	..	१०८	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३४४.	भाषा संग्रह	१८४७ वि०	१९०३ वि०	१११	
३४५	भास्वति भाषा टीका (ज्योतिष)	.		३११	
३४६	भूगोलपुरान	..	१८६२ वि०	२६२ ख	
३४७	भूषण महाकवि के कुछ नवीन छंद	..	.	२६३	
३४८.	भोज प्रबंध सार	..	१९३४ वि०	२२७	
३४९	मंगल शाखोच्चार	.	.	३३७ ख	
३५०	मधुकर मालती की कथा	१६६१ वि०	१७७८ वि०	१२६ श	
३५१	मधुराष्टक की टीका	.		४८६ क	
३५२.	मनोरथ मुक्तावली	.	.	१८१	
३५३	महाप्रबंध		१९२३ वि०	११८ क	
३५४.	महाभारत (शल्य पर्व)	.		६५	
३५५	महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व)	..	१८३२ वि०	६२	
३५६	महिम्न स्तोत्र भाषा	..	१८४० वि०	४५६	
३५७.	माधव विलास (माधवानल कामकंदला)	१८०० वि०	..	२६१	
३५८.	माधव सुयशप्रकाश (जयपुर का)	१८२५ वि०	..	११५	
३५९	मान बत्तीसी	..	..	३७४	
३६०	मान विनोद	..	१७७८ वि०	१२६ घ[१]	
३६१	माया को अंग		१८६६ वि०	१९४	
३६२	मुक्तिविलास (हठ प्रदीपिका)	१६५५ वि०		१४० ख	
३६३	मुमोक्ष शास्त्र	.	१९२२ वि०	६७	
३६४.	मुरली की लीला	..	.	२८६ क	
३६५	मूल ज्ञान	..	..	३२ च	
३६६	मूल बानी	..	..	३२ छ	
३६७	महाकपोत की लीला	.	१८८८ वि०	११२ क	
३६८.	मोहन हुलास	..	.	३०७ ग	
३६९	मोहनी	.	.	४२१	
३७०	मोहनी की कथा	१६६४ वि०	१७८४ वि०	१२६ ड	
३७१	यमकालंकार सतसैया या वृंद विनोद	१७६३ वि०	.	३६६	
३७२	यमुना नवरत्न	..	.	२१०	
३७३.	यमुना लहरी	.		१०५	
३७४	यसुफ जुलेखा	१८४७ वि०	१९५९ वि०	४२२	
३७५.	रसमंजरी	१८३३ वि०		३१० ख	
३७६.	रसनमंजरी	१६८७ वि०	१७७८ वि०	१२६ ग	
३७७	रसायनी	१६६१ वि०	१७८४ वि०	१२६ क	
३७८	रसयोग ग्रंथ	१७६६ वि०	१७७७ वि०	१२६ ठ[१]	
३७९	रसतरंगिनी	१७११ विन	१७७८ वि०	१२६ ड[१]	
३८०.	रसग्रसार	१८६७ वि०	१८०० वि०	१०	

क्रम सख्या	ग्रथो का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका सख्या जिल्द
३८१	रसमहोदधि	१९०७ वि०	१९४१ वि०	४८०
३८२	रस रत्नाकर	१७७३ वि०	.	१९५
३८३.	रसरासि पच्चीसी	..	.	३२३
३८४	रससिंधु	..	१८३५ वि०	२८१ क
३८५.	राग निर्णय	..	१८३५ वि०	१५४
३८६.	राग प्रकाश	१९१५ वि०	..	२९० क
३८७	रागमाला	१७०० वि०	.	१०२
३८८.	रागसकीर्ण रागमाला	.	१९२० वि०	४७३
३८९.	राजपोरिया लीला	.	.	३७२
३९०.	राधाकृष्ण	.	..	४१३
३९१.	राधाकृष्ण रूप युगल विलास (सचित्र)	१९३३ वि०	..	८
३९२	राधाविलास	..	.	३४७ प
३९३	राधे हरिमिलन सतसई	..	१८८० वि०	४१७ ख
३९४.	रामअक्षरी	..	.	४७२
३९५.	रामजन्म	..	१९२७ वि०	१८३ ग
३९६	रामतंतीसी	..	१८८३ वि०	३४२
३९७.	रामनाम गुण सागर	..	१७९५ वि०	२३८
३९८	रामरघुनाथ स्तोत्र	..	.	२६
३९९.	रामरहारी (लवकुश काड)	..	१८१९ वि०	४५८
४००	रार्मविवाह		१७६९ वि०	३७
४०१	रामविहार	१८६८ वि०		१८७
४०२	रामायण			४५ क
४०३.	रामायण	.	१८९३ वि०	४६६
४०४	रामायण (राम वैभव)	१८९४ वि०	१८९३ वि०	४८५ छ
४०५	रामायण माहात्म्य		१९३८ वि०	२८०
४०६.	रामायण माहात्म्य	१९२९ वि०	१९३६ वि०	४१९
४०७	रामाश्वमेध	१७३९ वि०	१९१५ वि०	१९१
४०८.	रामाश्वमेध	१८२८ वि०	.	१९२
४०९	रासपचाध्यायी			११
४१०.	रास पंचाध्यायी	...	...	५२
४११	रासपचाध्यायी	१८८९ वि०	.	३८६ य
४१२.	रुक्मिणी मगल	.	..	८२
४१३	रुक्मिणी मगल	..	..	२५२ क
४१४	रुक्मिणी मगल	१७१९ वि०	.	२३३
४१५	रुक्मिणी व्याह	.		३४१
४१६	रूपमंजरी	१९०८ वि०	१९२८ वि०	३६३
४१७	रूप मजरी	१६८५ वि०	१७८४ वि०	१८६ ड
४१८	रेखता तथा कीर्तन	..	.	२३८
४१९	लक्ष्मण शतक	.	..	४४० च
४२०.	लक्ष्मी चरित	..	१९३५ वि०	३६६ च
४२१.	लालदास की कथा	..	१९५५ वि०	१३६

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
४२२.	लीला प्रकाश	..	..	१८३	
४२३.	लैलैमजनू	१६६१ वि०	१७८४ वि०	१२६ ख	
४२४	वनयात्रा	..	१६१६ वि०	२०७ ग	
४२५	वनविहार माधुरी	..	..	२६१	
४२६	वरन चरित्र	..	१६३५ वि०	२७४	
४२७	वरस दिन के उत्सव को भाव	..	१६३६ वि०	४८६ ढ	
४२८	वर्णनावा	१६६३ वि०	१७७७ वि०	१२६ ख[१]	
४२९.	४वल्लभकुल कल्पवृक्ष (वल्लभीय भीमवश वृक्ष)	१७७६ वि०	१७७६ वि०	३३४	
४३०.	वल्लभाख्यान सटीक	..	.	४३० ख	
४३१.	ववुरवाहन	..	१८६७ वि०	५३	
४३२	वसतराज	.	..	४० क	
४३३	वसिष्ट वोध	.	..	३२ ड	
४३४	वस्तु वृ दनाम दीपिका	१८७४ वि०	१८६५ वि०	१४६ ड	
४३५.	वानी	..	..	४६७	
४३६	वा० भू०	.	..	२२४	
४३७	वाराणसी विलास	१८०७ वि०	१८०८ वि०	१६६	
४३८	विचारमाला की टीका	..	..	४३६	
४३९	विचित्रालकार (द्वैयर्थ कवित्त)	१७५० वि०	१७६८ वि०	३६८	
४४०	विजयाष्टक	..	१८६५ वि०	६०	
४४१	विदग्ध माधव	..	.	३६५	
४४२.	विद्याकुर	१६१७ वि०	१६१७ वि०	४३२ ख	
४४३	विद्रुम देस (रुक्मिणी विवाह)	..	..	५१	
४४४.	विनय के पद	..	..	४०१ क	
४४५.	विनय विहारी रूप उत्सवाष्टक	१६०८ वि०	१६०८ वि०	२६६	
४४६	वि नै पच्चीसी	..	..	३३६	
४४७	वियोग मालती	..	..	४२	
४४८	वियोग सागर	..	१७७८ वि०	४२१	
४४९.	वियोग सागर	१०६६ फ०	१७८४ वि०	१२६ ट[१]	
४५०.	विहर के पद	..	..	२०२ ङ	
४५१	विरही मत	१६७१ वि०	१७७७ वि०	१२६ द	
४५२	विरह की मनोरथ	१६६४ वि०	१७७८ वि०	१२६ न[१]	
४५३	विन्दावनी	..	..	४६	
४५४.	विवाह खेल	..	..	५६	
४५५	विवेकरत्नी	.	..	२३३	
४५६	विश्वरारत्न	१६०८ वि०	..	४५ ख	
४५७	विषिशय तथा स्फुट रसायन	..	..	२०६	
४५८.	वृंदावन वर्णन	..	१७८१ वि०	४००	
४५९.	वृहत्संहिता भाषार्थ	..	१८४८ वि०	२५३	
४६०	वेद गोस्वनाथ गा]	..	१८५६ वि०	१०० क	
४६१.	वैद्यक मत पंदनावा	१६६५ वि०	१७७३ वि०	१३६ ञ[१]	

क्रम संख्या	ग्रंथो के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
४६२	वैद्य जीवन	१९१४ वि०	१९१७ वि०	१०३	
४६३.	वैन बत्तीसी	१८१९ वि०	..	४६५	
४६४	वैराग्य शतक (विवेक दीपिका)	..	..	५८	
४६५	वैराग्य सदीपनी (टीका)	..	.	४५०	
४६६	वैष्णव लक्षण ग्रथ	..		८८ झ	
४६७	व्यजन प्रकार (पहला भाग)	..	१९२५ वि० मुद्रणकाल	१२५	
४६८	व्रज की वाललीला	..	१८४८ वि०	३६३	
४६९	व्रजमहात्म चद्रिका	..	१८०५ वि०	१५५	
४७०	व्रजलीला	.		४८२	
४७१	व्रजविलास	.	.	३६८ ग	
४७२	व्रजविहार (द्वितीय सोपान)		१८४४ वि०	२४८	
४७३	शकुनावली	..	.	७६	
४७४	शक्ति प्रभाकर या अद्भुत रामायण	१९१३ वि०	१९३६ वि०	८७ क	
४७५	शत्रुवश कुठार	.	१९०८ वि०	१२८	
४७६	शब्द	.	१९१६ वि०	८१	
४७७	शब्दयावानी	..	..	६६	
४७८	शब्द लीला	.	.	१५१ क	
४७९	शब्द विष्णुपद	.	.	९६	
४८०	शरदनिसा			५५	
४८१	शालिहोत्र		..	८६ ग	
४८२	शालिहोत्री (घोराल की वैदगई)	..	१८६९ वि०	४४६	
४८३	शिव अविका स्तोत्र	..	..	३०	
४८४	शिवस्तोत्र	..	.	४०६	
४८५	शृगार मंजरी	१८५२ वि०	..	२१८ ट	
४८६	शृगार रससिंधु	१७७० वि०	१७७२ वि०	२४५	
४८७	शृगार विलास	.	.	४७१ ग	
४८८	शृगार शत	१६७१ वि०	१७७७ वि०	१२६ ट	
४८९	शोक विनाश	१९१२ वि०	१९३३ वि०	८७ ग	
४९०.	श्री आचार्य जी की वशावली	..	..	६७	
४९१	श्री आचार्य जी महाप्रभु की (प्रागट्यवार्ता द्वादश कुज भवन)	..	..	८८ घ	
४९२.	श्रीकृष्ण अनन्य चद्रिका	१८७० वि०	..	१२६ घ	
४९३.	श्रीकृष्ण चरित्र	१८६४ वि०	१८७६ वि०	३०१	
४९४	श्री गिरधर लाल जी के वचनामृत ६२	१९३३ वि०	..	८६ ग	
४९५	श्री गुसाई जी की व्रज चोरासी कोस की वनयात्रा १६०० की	..	१८१३ वि०	८८ ग	

क्रम सख्या	ग्रथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका सख्या	विशेष
४९६	श्री गुसाई विट्ठलनाथ जी की वनयात्रा	..	.	४८३ ख	
४९७	श्री ठाकुर जी के षोडश चिह्न सचित्र	.	..	४८६ ड	
४९८	श्री द्वारिकाधीश के विचित्र विलास	१८१७ वि०		२१७ ख	
४९९	श्री द्वारिकाधीश के शृगार सवत् १८९४ के	..	१८९५ वि०	२०७ घ	
५००	श्री द्वारिकाधीश जी के घर की उत्सव मालिका (रीति)	१९३३ वि०	..	७९ क	
५०१.	श्रीनाथ जी की सेवाविधि	.	..	९३	
५०२	श्रीनाथ जी के शृगार के वस्त्रम के नारग	.	१९३५ वि०	९८ घ	
५०३.	श्रीपति के कवित्त		.	४३१	
५०४	श्री महाप्रभु जी के स्वरूप के चिंतन को पद	..	.	१९७	
५०५.	श्री महाप्रभु जी गुसाई जी स्वरूप विचार	.	.	८८ ख	
५०६.	श्रीराम गीतमाला	.	..	६३	
५०७	श्री वल्लभाचार्य की वशावली तथा स्वरूप वर्णन	..	१७८१ वि०	११९ ग	
५०८	श्लेषार्थ विशति	.	..	३१	
५०९.	षट्ऋतु मार्तंड	१८३० वि०	..	३२५	
५१०.	षट्ऋतु वर्णन	.	१७७८ वि०	१२६ छ	
५११	षट् षष्टि अवराधा	..	.	४८६ च	
५१२	सगीत दीपिका	..	.	४१०	
५१३.	सत विलास	१९२५ वि०	१९२८ वि०	३६०	
५१४.	सगुनौटी	..	१९२० वि०	७५	
५१५	सतकवि कुलदीपिका	.	१८९७ वि०	२५७	
५१६.	सतवती की कथा	१६७८ वि०	१७७७ वि०	१२६ व	
५१७	सतनावा	१६६३ वि०	१७७७ वि०	१२६ ख[1]	
५१८	सत्यवती कथा	..	.	२२	
५१९.	सद्गुरु महिमा	..	.	४२८	
५२०	सनेह लीलामृत पच्चीसी	..	..	४७५	
५२१.	सबदी	.		११३ ख	
५२२.	समस्कार	..	१९१२ वि०	२९४	
५२३	समर्पण श्लोक गद्यार्थ की टीका	..	..	७८	
५२४.	समय प्रबध सेवा सात समय की भावना	..	१८६३ वि०	१८६	
५२५	सम्मग्न	..	..	३९७	
५२६	सर्वांग परिसोनन	..	..	१४१ छ	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	टिप्पणी
५२७	सर्वोत्तम स्तोत्र की संस्कृत टीका का हिंदी पद्यों में अनुवाद	..	..	८०	
५२८	सलोक महल्लानो		.	१८६ ट	
५२९	सवैया या झूलना	.	१८७८ वि०	१८६ छ	
५३०	साँझी कीर्तन	.	१९६० वि०	८०८ ख	
५३१	सात स्वरूप के कीर्तन	..		१६८	
५३२	सारंगधर वैद्यक		१८६३ वि०	१०६	
५३३	सिंगार तिलक	१७०६ वि०	१७८८ वि०	१८६ ट	
५३४	सिंहासन बत्तीसी			३०८	
५३५	सिपग्रंथ			१८६ घ	
५३६	सिख सागर पदनावा	१६६५ वि०	१७८७ वि०	१८६ अ	
५३७	सीलवती की कथा	१६८४ वि०	१७७७ वि०	१८६ न	
५३८	सुंदर कांड	.		१८३	
५३९	सुंदर प्रबोध		१८८३ वि०	८५१ क	
५४०	सुकृत ध्यान	..	.	३८ ज	
५४१	सुखदेव लीला			३०१ ग	
५४२	सुखसागर पुराण	.	.	१४०	
५४३	सुदामा चरित्र	..	.	१८	
५४४	सुदामा चरित्र		१९१८ वि०	१४८	
५४५	सुदामा चरित्र	.		१०६	
५४६	सुभटराई की कथा	१७२० वि०	१७८४ वि०	१८६ म	
५४७	सुरतरंग (संगीत)	..		४६८	
५४८	सुद्धासितोत्तम (रामखंड)			३६१	
५४९	सूक्ष्मवेद	..	१८३७ वि०	१००	
५५०	सूरजमल की कृपाण	..	.	१४८	
५५१	सूर्य कांड	.	१९११ वि०	१४७	
५५२	सोनालोहा वाद	.	.	८४३	
५५३	सोमवंश की वंशावली		१८३१ वि०	१६५	
५५४	सौंदर्य लहरी (टीका)	.	..	३३५	
५५५	स्तुति	..	..	८६० ग	
५५६.	स्वामिनी जी को ब्याह	.	.	१६८ ग	
५५७	हनुमत बोध	..	.	३८ ज	
५५८	हनुमत वीर रक्षा	१९०४ वि०	१९०४ वि०	१६३ ग	
५५९	हनुमताष्टक	..	१८६५ वि०	६०	
५६०.	हनुमान जयति	..	..	३५४ ग	
५६१.	हनुमान पच्चीसी	..	..	४८६	
५६२.	हरसु ब्रह्म मुक्तावली	१९०४ वि०	..	३	
५६३.	हरितालिका व्रत कथा	१८३८ वि०	१८३८ वि०	९६३	
५६४	हरिनाथ विनोद	१९१६ वि०	..	३८	
५६५.	हरिलीला सोलह कला	१५४१ वि०	१७८६ वि०	८३६	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
५६६.	हरिविलासाख्य	..	..	४८८	
५६७.	होरी तथा डोल की भावना तथा तदात्मक वर्णन	..	..	४८६ ए	

परिशिष्ट–(ग)

प्रस्तुत खोज के सग्रह ग्रंथो मे आए कवियों की सूची

(सवत् २००१-२००३ वि०)

क्र स	कवियों के नाम	विशेषता
१	अकबर	
२	अचल दास	
३	अफजल	
४.	अलख निरजन	
५.	अरजुन	
६.	आरीदास	
७	इद्र कवि	
८.	उमराउ	
९.	कल्यान प्रभु	
१०.	कवि नाडक	
११	कवि प्रेम	
१२.	कवि मकरंद	
१३	कवि रत्न	
१४.	कवि सेखर	
१५	कस्यप	
१६.	कान्ह गुआल	
१७.	कुवलय	
१८.	कृपालाल	
१९.	कृष्ण सनेही	
२०.	केशव कृपा	
२१	केसो 'जन'	
२२.	गगाबाई	
२३.	गगाबाई	
२४	गुत्यानद	
२५	गुरु सहाय	
२६	गूदर	
२७.	गोकुल	
२८	गोकुल विहारी	
२९	गो० गोपालजी	
३०.	घासीराम तिवारी	
३१	चंद्रप्रभु	
३२.	चंद्रभाल	

क्र स.	कवियों के नाम	विशेषता
३३.	चतुर्भुज	
३४	चतुर भट्ट	
३५	चत्रभुज (दास)	
३६	छीतुराम	
३७	छोटेलाल	
३८.	जगतराय	
३९	जगदीश पाडेय	
४०	जगन्नाथ कविराज	
४१	जगन्नाथ घनजीवन माधो	
४२	जन किशोर	
४३	जन गग ग्वाल	
४४.	जन गोविद	
४५	जन तिलोक	
४६.	जन माधो	
४७	जन विचित्र	
४८	जन हरि	
४९	जमीर	
५०.	जानी	
५१	जंगीलाल	
५२.	जैवल्लभ	
५३.	भीखन	
५४.	[illegible] कवि	
५५	तान तरग	
५६.	त्रिविक्रम	
५७	दयानिधि	
५८.	दलपति	
५९.	दास गुपाल	
६०.	[illegible]	
६१	देवीनाथ	
६२	धीरज	
६३.	नदन [illegible]	
६४.	नरोत्तम	
६५.	[illegible]	

क्र.सं.	कवियों के नाम	विशेषता	क्र.सं.	कवियों के नाम	विशेषता
६६	निज जू		१०९	रतनपाल	
६७	पर्शी		११०	रसाल भट्ट	
६८	पीयदयाल		१११	रसिक गोपाल	
६९	पीय विहारी		११२	रसिक प्रीतम	
७०	पुरुषोत्तम जी		११३	रसिक रसाल	
७१.	पुरोहित व्रजलाल		११४	रसिक सखि	
७२	प्यारे गुपाल		११५	राजबहादुर	
७३	प्रवीन अली		११६.	रामचंद्र	
७४.	वछ कवि		११७	रामराइ प्रभु	
७५	वनवारी दास		११८	राम सनेही	
७६	वलदेव जी		११९	रिसीकेस	
७८	वलभद्र		१२०	रूप मरन	
७९	वहोरन दास		१२१	रोसन जमीर मिरजा	
८०	व्रजनाथ		१२२	लघु गोपाल	
८१.	वालक		१२३	लघुदास	
८२	वालकृष्ण		१२४	लघु मोहन	
८३	वालन		१२५	लछमी	
८४	वास		१२६	लाल उत्तमचद सभाती	
८५	विट्ठल गिरिधरन		१२७	लाल मकरद	
८६.	विगहिम		१२८	वनजू	
८७	विहारी दास		१२९	वल्लभ	
८८.	वृन्दादास		१३०	वल्लभदास	
८९.	वृहुमी		१३१.	वल्लभ राज	
९०.	भगवानप्रभु		१३२.	विर्ज राम	
९१	भामा गुजराती		१३३	विप्र	
९२	भूधर		१३४.	विश्राम	
९३	भागीलाल		१३५.	वीरन	
९४	मधु		१३६.	व्यास स्वामिनी	
९५	मस्तान		१३७	व्रजभूषण	
९६	महर गोपाल		१३८.	व्रजराय जी	
९७	माथुर वृद-मकुद चद		१३९	व्रज सुदरी	
९८	माधुरी		१४०.	व्रह्मदास	
९९	मानिक		१४१	शुभपाणि	
१००	मानिक चद		१४२	श्री गोपाल	
१०१	मिरजा मियाँ		१४३	श्री पुरुषोत्तम	
१०२	मीर		१४४	श्रीभट्ट	
१०३	मस्नी		१४५	श्री विट्ठल	
१०४	मोहनमून (?)		१४६	श्री विट्ठल गिरधरन	
१०५	मोहन विहारी		१४७.	श्री विट्ठलेश	
१०६	यदुनाथ		१४८	सगुनदास	
१०७	रघुनदन		१४९.	सगुन दास	
१०८.	रघुवीर गाड		१५०	सदारंग	

क्र स.	कवियों के नाम	विशेषता
१५१	सरमस्त	
१५२	स्यामकवि	
१५३	स्यामदास जन	
१५४	साहेव राम	
१५५	सिंहराव	
१५६	सुदर सवलस्याम	
१५७	सुकवि करीम	
१५८	सेठ लालभाई	
१५९	हर किसोर	
१६०	हरख जू	

क्रम	कवियों के नाम	विशेषता
१६१	हर जू	
१६२	हरिनारायन	
१६३	हरिनारायन स्यामदास	
१६४.	हरिराय जी	
१६५	हामिद	
१६६.	हित अनूप	
१६७	हित जुलकरण	
१६८	हित ध्रुव	
१६९	हीरादास	
१७०	हेम कवि	

परिशिष्ट—५

ग्रंथकार और उनके आश्रयदाताओं की सूची

(संवत् २००१-२०० वि)

क्रम सं०	रिपोर्ट सं०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
१.	२४	ईश्वर कवि	महाराज नरेंद्र सिंह, पटियाला नरेश और धौलपुर नरेश भगवत सिंह	
१	३१	कन्हैयालाल भट्ट	सिरदार नरेश (?)	
२	४२	किसनलाल	राजाराम सिंह (?)	
३.	५८	केशवदास (महाकवि)	राजा इंद्रजीत सिंह ओडछा	
४.	११५	छविनाथ	राजा माधवसिंह, जयपुर	सं० १८२५ वि० के लगभग
५.	११७	छैल	१. राजाराम कायस्थ २. शेख मुहम्मद या फतेह मुहम्मद	संभवत जौनपुर के निवासी
६.	१२१	जगदीश	सवाई जगतसिंह, जयपुर	१८६२ वि० के लगभग
७	१३५	टोडरमल कायस्थ	,, ,, ,,	१८६७ वि० के लगभग
८	१४६	थेघनाथ या थेघू	भानकुँवर, गोपाचल (ग्वालियर)।	ये तत्कालीन राजा मानसिंह के वंश में थे। पिता का नाम कीरतसिंह था।
९	१६३	देवीदत्त शुक्ल (पंडित, धीर)	मेहरबान सिंह और उनके पुत्र शिवप्रसन्न सिंह। होलागढ़ (प्रयाग) के राजा	संवत् १९०४–१९१० वि० के लगभग।
१०	१६५	देवीदास	राजा रतनपाल, करौली नरेश (मेवाड़)।	
११	१६६	देवेश्वर माथुर	राजा पद्दीप सिंह, वैली-गढ़ (भरतपुर)।	संवत् १८३९ वि० के लगभग। महाराज बदन सिंह के पुत्र महाराज प्रताप सिंह के पौत्र और महाराज बहादुर सिंह के पुत्र थे।
१२.	१७३	धौरन्न मिश्र	महाराज तेजसिंह, भरतपुर नरेश	संवत् १८५६ के लगभग

क्रम सं०	रिपोर्ट सं०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
१३	१८०	नरहरिदास बारहट	जोधपुर नरेश महाराज सूरसिंह, गजसिंह और जसवंतसिंह।	[illegible]
१४.	१९९	पचोली देवकर्ण	मेवाड के राणा जगतसिंह (द्वि०) के दीवान	सं० १८०३ [illegible]
१५	२१९	प्राणनाथ (स्वामी)	महाराजा छत्रसाल, पन्ना-नरेश	
१६	२३१	बलदेव कवि	राजा विक्रमसाहि बघेल, देवरानगर (?)	
१७	२३२	बलरामदास	राजा जगन्नाथ, नीलगिरि, उड़ीसा।	
१८	२६१	भीष्म	राजा गोविंदचंद, पुरावनी (?)	
१९	२६३	भूषण (महाकवि)	छत्रपति महाराज शिवाजी	[illegible] के आधार पर
२०.	२६४	भोलानाथ	नरहरिसिंह राजा, भरतपुर	
२१	२६५	मंडन	राजा मंगददेव, [illegible]	
२२	२६६	मतिराम	औरंगजेब, बूँदीनरेश भावसिंह, ओड़छानरेश महाराज स्वरूपसिंह और कुमाऊँनरेश राजा ज्ञानचंद	[illegible] के आधार पर
२३.	२७३	मनिकंठ	राजा फतेसिंह, रतनानगर, गाजीपुर।	सं० [illegible] में [illegible]
२४.	३०३	मुरलीधर कविराइ	राजा नवलसिंह, भरतपुर। ये सुजानसिंह महाराज के पुत्र थे।	सं० १८१८ में [illegible]
२५.	३०७	मोहन	जहाँगीर बादशाह	
२६	३१३	रघुनाथ बंदीजन	राजा बरिबंडसिंह, काशीनरेश	
२७.	३२३	रसरासि (रामनारायण)	सवाई प्रतापसिंह, जयपुरनरेश	
२८	३३५	राधाकृष्ण (कृष्णकवि)	राजराजा भीमसिंह, जयपुर	सं० [illegible]
२९.	३८६	विद्यारण्य तीर्थदेव	बाबू रामचंद्र सिंह, काशीनरेश के [illegible]।	सं० [illegible]
३०.	२८८	विष्णुकवि (विष्णुदास)	[illegible]	[illegible]
३१	३९६	वृंदकवि	महाराज [illegible]सिंह, [illegible] नरेश।	

क्रम सं०	रिपोर्ट सं०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
३२.	४०८	शंभूनाथ त्रिपाठी	राजा रघुनाथसिंह, कृष्णगढ नरेश । वगसर (?) ।	सं० १८०३ में वर्तमान 'वगसर' संभवत दौंरियाखेडा (अवध) के अंतर्गत है ।
३३	४१२	शिरोमणि	शाहजहाँ बादशाह	
३४.	४१४	शिवदत्त त्रिपाठी	राजा जवरेशसिंह, पाटीपुर, वनउधदेश (?)	
३५	४१६	शिवदास गदाधर	दिग्विजयसिंह, बलराम-पुर रियासत (गोंडा, अवध) ।	सं० १९१० के लगभग
३६	४४८	शिवुकवि (आनंद)	महाराना जगतसिंह, उदयपुर	सं० १८९८ के लगभग
३७	४४९	सिकंदर फिरंगी	आलमगीर बादशाह ।	

क्रम सं०	रिपोर्ट सं०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
३८.	४५९	सूरत मिश्र	जसवंतसिंह, जोधपुर-नरेश के शिक्षक ।	
३९	४६६	सेवाराम	राजा रामपाल (?)	
४०	४७१	सोमनाथ या शशिनाथ	महाराजकुमार प्रतापसिंह, भरतपुरनरेश	
४१	४७७	हरज् सुकवि	रामदत्त (? जौनपुर)	

—:००:—